स्वर्णिम बचपन

(ओशो की गौरव गाथा, ओशो के ही मौन शब्दों से)

अनुक्रम

सत्र—1 एक सुहानी शुरूआत 5

सत्र—2 जन्म का चुनाव 7

सत्र—3 ज्योतिषी की भविष्यवाणी........ 11

सत्र—4 खजुराहो........ 16

सत्र—5 नाना नानी के संग 21

सत्र—6 नानी—नानी का प्रेम.... 27

सत्र—7 जैन मुनि से संवाद 32

सत्र—8 विद्रोह धर्म की बुनियाद........ 36

सत्र—9 ऊँचे आकाश में निमंत्रण 41

सत्र—10 बुद्धत्व के भी पार........ 46

सत्र—11 भोपाल का महल 50

सत्र—12 जीवक और देव गीत 53

सत्र—13 मैं पागल आदमी हूं 56

सत्र—14 नीत्शे और एडोल्फ हिटलर 61

सत्र—15 मग्गा बाबा और मोज़ेज 65

सत्र—16 नानी प्रथम शिष्या और बुद्धत्व........ 73

सत्र—17 अजित सरस्वती मेरे महाकाश्यप है 79

सत्र—18 सेक्स या मृत्यु से मनोग्रस्त........ 84

सत्र—19 पिता के घर में........ 89

सत्र—20 स्कूल का प्रथम दिन और काना मास्टर........ 97

सत्र—21 शंभु बाबू से भेट........ 106

सत्र—22 शंभु बाबू से अंतिम बिदाई........ 112

सत्र—23 एकाकीपन या अकेलापन........ 117

सत्र—24 मित्रता—प्रेम से ऊंची 123
सत्र—25 शब्दों की अभिव्यक्त 128
सत्र—26 यायावर 134
सत्र—27 पागल बाबा और हरी प्रसाद 142
सत्र—28 पन्न लाल घोष और सचदेवा 149
सत्र—29 पागल बाब और रहस्य 155
सत्र—30 विजय भैया....मेरे लक्ष्मण थे 163
सत्र—31 मस्तो बाबा से मिलन 172
सत्र—32 भगवान—मस्तो बाबा का उद्घोष 180
सत्र—33 मस्तो का सितार बजाना—नानी का नवयौवना होना 189
सत्र—34 प्रोफेसर एस. एस. राय 194
सत्र—35 अल्लाउद्दीन खां और पं रविशंकर 202
सत्र—36 मैं क्या कह रहा था 212
सत्र—37 बे घर का मुसाफिर 220
सत्र—38 मोज़ेज और जीसस—पहलगाम (कश्मीर) में मरे 228
सत्र—39 पंडित जवाहरलाल नेहरू से भेट 238
सत्र—40 मैं 'कल्कि' अवतार नहीं हूं 244
सत्र—41 चौबीस तीर्थकर एक भेड़ परम्परा 248
सत्र—42 जवाहरलाल बोधिसत्व थे 254
सत्र—43 मृत्यु के बाद भी मैं उपल्बध रहूंगा 260
सत्र—44 मस्तो की भविष्य वाणी—मोरार जी देसाई प्रधानमंत्री बनेगा 265
सत्र—45 महात्मा गांधी से भेट 271
सत्र—46 सत्य साईं बाबा तो अति साधारण जादूगर 278
सत्र—47 स्कूल का हाथी फाटक और शरारत 284
सत्र—48 महर्षि महेश योगियों सबसे अधिक चालाक 290
सत्र—49 नीम का पेड़ और भूत 299

सत्र—50 निकलंक—दीवाना है 307

पीपल का वृक्ष और मेरे आंसू—(प्रकरण-1) 315

मृत्यु के प्रतीक्षा—(प्रकरण-2) 318

टोपी लगाए—(प्रकरण-3) 320

विश्वास चमत्कार और साईं बाबा—(प्रकरण-4) 322

सत्य का आचरण—(प्रकरण-5) 325

दादा और मेरी शरारतें—(प्रकरण-6) 326

''पिता का थप्पड़ मारना''—(प्रकरण-7) 328

ब्राह्मण की चोटी काटना—(प्रकरण-8) 330

मैं निर्वासित व्यक्ति था—(प्रकरण-9) 334

दंड या पुरस्कार—(प्रकरण-10) 336

ओम, ओम.....का नाद और दंड—(प्रकरण-11) 338

बहादुर या कायर मास्टर—(प्रकरण-12) 339

पूर्णत: मुक्ति—(प्रकरण-13) 342

बोतल का रहस्य— (प्रकरण-14) 346

पहली सतोरी नदी तीर—(प्रकरण-15) 348

तैरना एक युक्ति है—(प्रकरण-16) 349

सौ फीट के पूल से छल्लांग—(प्रकरण-17) 351

शिक्षक की शर्तें—(प्रकरण-18) 354

मौन की सुगंध—(प्रकरण-19) 355

मुहर्रम का त्योहार—और मेरी सूई—(प्रकरण-20) 356

मुझे सुझाव दे—आदेश नहीं—(प्रकरण-21) 358

मेरा पुस्तक प्रेम—(प्रकरण-22) 360

भट्टाचार्य की भूत से भेट—(प्रकरण-23) 362

झूठा ब्रह्मज्ञान—(प्रकरण-24) 367

रंगरेज खुदा बख्श—(प्रकरण-25) 368

मेरा शरीर से अलग होना--सूक्ष्म शरीर का अनुभव—(प्रकरण-26) 369

मेरे एथिक्स के प्रोफेसर और मेरे पंचानवे प्रतिशत अंक—(प्रकरण-27) 370

सत्र—1 एक सुहानी शुरूआत

बहुत सुंदर सुबह है। सूरज रोज-रोज उगता है और वह सदा नया है। वह कभी पुराना होता ही नहीं। वैज्ञानिक कहते है कि यह लाखों साल पुराना है। व्यर्थ की बात है, मैं तो राज उसे देखता हूं। वह हमेशा नया है। परंतु वैज्ञानिक तो गड़े मुर्दे उखाड़ने बाले होते है। इस लिए मैं कहता हूं कि वे इतने गुरु-गंभीर दिखते है। आज सुबह, फिर से अस्तित्व का चमत्कार, यह तो हर क्षण हो रहा है किंतु बहुत ही कम लोग, बहुत ही कम लोग उसका साक्षात्कार कर सकते है।

आज सूर्योदय इतना सुंदर है कि एक क्षण के लिए मुझे हिमालय के सूर्योदय के अनुपम सौंदर्य की याद आ गई। वहां जब बर्फ तुमको चारों और से घेरे होती है। और वृक्षों पर जब मानो बर्फ के सफेद फूल खिल जाते है और वे नई-नवेली दुलहनों की तरह सज जाते है, तो इस संसार के प्रधानमंत्रियों, राष्ट्रपतियों, राजाओं और रानियों का अस्तित्व केवल ताश के पत्तों में ही रह जाएगा क्योंकि उनका स्थान वहीं पर है। और राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ताश के 'जोकर' बन जाएंगे। इससे ज्यादा उनकी कीमत नहीं है।

वे पर्वतीय वृक्ष के सफेद फूलों के साथ.....और जब भी मैने उनकी पत्तियों से बर्फ को गिरते हुए देखा है मुझे अपने बचपन के एक पेड़ की याद आ गई है। वैसा पेड़ भारत में ही हो सकता है। उसका नाम है 'मधुमालती ' मधु अर्थात मीठा और मालती का अर्थ तुम्हें मालूम हैं कि मुझे सुगंध से एलर्जी है। इसलिए मुझे पता चलता है। मैं सुगंध के प्रति बहुत संवेदनशील हूं।

बर्फ से आच्छादित पेड़ सदा मुझे 'मधुमालती' की याद दिलाते है। निश्चित ही उनमें सुगंध नहीं होती। और मेरे लिए यह अच्छा है कि बर्फ में कोई सुगंध नहीं होता। अफसोस है कि अब मैं दुबारा मधुमालती के फूलों को अपने हाथों में न ले सकूंगा। मधुमालती की सुगंध इतनी तेज होती है कि वह मीलों तक फैल जाती है। और याद रखना कि मैं अतिशयोंक्ति नहीं कर रहा हूं। मधुमालती का सिर्फ एक पेड़ पूरे मोहल्ले को महक से भरने के लिए काफी होता है।

मुझे हिमालय बहुत प्रिय है। मैं वहीं मरना चाहता था। वह मरने के लिए अत्यंत सुंदर जगह है—निश्चित ही जीने के लिए भी। किंतु मरने के लिए यह अत्यंत उपयुक्त स्थान है। यहीं पर तो लाओत्से मरा था। बुद्ध, जीसस, मोजेज—ये सब लोग हिमालय की गोद में ही मरे थे। कोई और पर्वत मोजेज, जीसस, लाओत्से, बुद्ध, वोधिधर्म, मिलोरपा, मापा, तिलोपा और नरोपा जैसे हजारों लोगों को अंतिम आश्रय देने का दावा नहीं कर सकता है।

मैं वहीं पर मरना चाहता था। और आज सुबह जब मैं सूर्योदय देख रहा था तो मुझे यह सोच कर बहुत राहत महसूस हुई कि अगर मैं यहां पर मर जाऊँ तो यह भी ठीक है, खास कर आज जैसे सुंदर दिन। और मैं मरने के लिए ऐसा दिन चुनूंगा जब मुझे महसूस होगा कि मैं हिमालय का हिस्सा बन गया हूं। मृत्यु मेरे लिए एक अंत या पूर्ण विराम नहीं है। नहीं, मृत्यु मेरे लिए एक उत्सव है।

मैरा जन्म स्थान, कुच वाड़ा, एक ऐसा गांव था जहां कोई पोस्ट आफिस नहीं था, कोई रेलवे लाइन नहीं थी। वहां पर छोटी-छोटी पहाडियाँ थी या टीले थे और सुंदर झील थी और फूस की कुछ झोपड़ियों थी। ईंटों से बना पक्का मकान एक ही था जहां मेरी जन्म हुआ। और वह भी कोई बहुत बड़ा मकान नहीं था। एक छोटा से मकान था।

अभी मैं उसे देख सकता हूं और पूरा ब्योरा दे सकता हूं। लेकिन उस मकान और गांव से ज्यादा मुझे वहां के लोग याद है। मैं लाखों लोगों से मिला हूं किंतु उस गांव जैसे सरल लोग और कहीं नहीं है। क्योंकि वे ग्रामीण

लोग थे। उनको दुनिया के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उस गांव में एक भी अख़बार कभी नहीं आया। अंब तुम समझ सकते हो कि वहां कोई स्कूल क्यों नहीं था, प्राइमरी स्कूल तक नहीं था। क्या सौभाग्य था। आज के किसी बच्चे को यह सौभाग्य नहीं मिल सकता। उन वर्षो में मैं अशिक्षित ही रहा और बहुत सुंदर समय था। मैं अभी भी उस छोटे से गांव को देख सकता हूं—तालाब के पास थोड़ी सी झोपड़ियों और कुछ ऊंचे-ऊंचे पेड़ जिनके नीचे मैं खेलता था। गांव में कोई स्कूल नहीं था। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि लगभग नौ साल तक मैं बिलकुल पढ़ा लिखा नहीं था। यह समय(व्यक्ति के निर्माण के लिए) बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। ।फिर तुम कोशिश भी करों तो शिक्षित नहीं हो सकते। तो एक प्रकार से मैं अभी भी अशिक्षित हूं, यद्यपि ़डिग्रियां मेरे पास बहुत है। कोई भी अशिक्षित व्यक्ति यह कर सकता था। और साधारण डिग्री नहीं, एम. ए. की प्रथम श्रेणी की डिग्री—वह भी कोई भी बेवकूफ प्राप्त कर सकता है। इसका कोई महत्व नहीं है, क्योंकि प्रतिवर्ष हजारों बेवकूफ इसे प्राप्त करते है। महत्वपूर्ण केवल यह है कि अपने आरंभिक वर्षो में मुझे कोई शिक्षा नहीं मिली। बाद में उस गांव से दूर जाकर भी मैं उसी दुनियां में रहा—अशिक्षित। उस गांव के पास एक पुराना तालाब था, बहुत पुराना, और उसके चारों और बहुत पुराने वृक्ष लगे हुए थे—शायद सैकड़ों वर्ष पुराने—और चारों और बड़ी सुंदर चट्टानें थीं। और निश्चित ही मेंढ़क कूदते थे। दिन-रात छपाक की आवाज तुम बार-बार सुन सकते थे। मेढकों के कूदने की आवाज वहां की नीरवता को और बढ़ा देती थी, और अधिक अर्थपूर्ण कर देती थी। बाशो की यही विशेषता है: बिना वर्णन किए बहुत कुछ वर्णन कर सकता था। ‘छपाक’..... तालाब में मेढक कूदने की आवाज का वर्णन कोई भी शब्द नहीं कर सकता, परंतु ‘बाशो’ ने कर दिखाया।

उस गांव को बाशो की जरूरत थी। शायद उसने सुंदर चित्र बनाए होते, सुंदर हाइकू लिखे होते....। उस गांव के लिए मैने कुछ भी नहीं किया। तुम पुछोगे कि क्यों, मैं वहां दुबारा गया ही नहीं। एक बार काफी है। मैं किसी भी जगह दुबारा नहीं जाता। मेरे लिए नंबर दो है ही नहीं। मैने बहुत से गांव और बहुत से शहर छोड़े है, फिर वापस कभी नहीं। तो उस गांव में वापस नहीं गया। गांव वालों ने कई बार संदेश भेजे कि एक बार आओ। किंतु मैने संदेश लाने बालों के द्वारा यही उत्तर उन्हें भेजा कि मैं एक बार वहां रह चुका हुं दुबारा मैं कहीं जाता नहीं। बुद्ध पुरूष संसार के सौंदर्य को प्रतिबिंबित नहीं करना चाहते और संसार भी बुद्धो द्वारा प्रतिबिंबित नहीं होना चाहता, किंतु वह प्रतिबिंबित होता है। कोई भी कुछ करना नहीं चाहता, किंतु ऐसा होता है। और जब कुछ होता है तो बहुत सुंदर है। जब कुछ किया जाता है तो वह बिलकुल साधारण होता है। जब कुछ किया जाता है तो तुम केवल एक टेक्नीशियन होते हो। किंतु बिना प्रयास के घटना है, तो तुम मास्टर हो। बातचीत, कम्यूनिकेशन तकनीशियन के संसार का हिस्सा है; संवाद, कम्यूनियन गुरु के सान्निध्य की सुगंध है।

यह है संवाद।

सत्र—2 जन्म का चुनाव

सब लोग अपने सुनहरे बचपन बात करते हैं, पर कभी-कभार ही यह सच होता है। अधिकतर तो यह झूठ ही होता है। लेकिन जब बहुत लोग एक ही झूठ बोल रहे हों तो किसी को पता नहीं चलता कि यह झूठ है। कवि भी अपने सुनहरे बचपन के गीत गाते रहते हैं—उदाहरण के लिए वर्डसवर्थ—उसकी कविताएं अच्छी हैं, लेकिन सुनहरा बचपन बहुत ही दुर्लभ घटना हैं। साधारण से कारण से कि तुम इसे पाओगें कहां से। सबसे पहले तो व्यक्ति को अपना जन्म चुनना पड़ता है। जोकि बिलकुल ही असंभव है। जब तक तुम ध्यान की स्थिति में न मरे हो तब तक तुम अपने जन्म का चुनाव नहीं कर सकते। यह चुनाव तो केवल ध्यानी ही कर सकता है। वह होश पूर्वक मरता है, इसलिए होश पूर्वक जन्म लेने का अधिकार हासिल करता है। मैं होश पूर्वक मरा था। असल में मैं मरा नहीं था, मारा गया था। मैं तीन दिन के बाद मरने बाला था। पर वे लोग इंतजार न कर सके, तीन दिन का भी इंतजार न कर सके। लोग इतनी जल्दी में है। तुम्हें यह जान कर आश्चर्य होगा कि जिस आदमी ने मुझे मारा था वह अब मेरा संन्यासी है। वह फिर मुझे मारने आया था, संन्यास लेने नहीं आया था। पर अगर वह अपनी जिद नहीं छोड़ता तो मैं भी अपनी जिद छोड़ने वाला नहीं। संन्यासी होने के सात साल बाद उसने स्वयं स्वीकार किया। उसने कहा: 'प्यारे सदगुरू, अब मैं बिना भय के आपके सामने स्वीकार करता हूं कि अहमदाबाद में मैं आपको मारने आया था। मैंने कहा: 'हे परमात्मा, फिर से दुबारा?'

उसने कहा: 'दुबारा से आपका क्या मतलब है?'

मैंने कहा: ' यह दूसरी बात है। तुम अपनी बात कहो।'

उसने कहा: 'सात साल पहले अहमदाबाद में मैं आपकी मीटिंग में रिवाल्वर लेकर आया था। हॉल इतना भरा हुआ था कि संयोजकों ने लोगों को मंच पर बैठने दिया था।'

तो उस आदमी को, जो रिवाल्वर लेकर मुझे मारने आया था। मेरी बगल में बैठने दिया गया। कितना अच्छा अवसर था। मैने कहा: 'तुम इस अवसर को चूके क्यों?' उसने कहा: 'मैने आपको इससे पहले कभी सुना नहीं था। मैने सिर्फ आपके बारे में सुना था। जब मैने आपको सुना, तो मुझे लगा कि आपको मारने की बजाय आत्महत्या कर लेनी बेहतर है। इस लिए मैने संन्यास लिया—यहीं मेरी आत्महत्या है।' सात सौ साल पहले इस आदमी ने मेरी हत्या की थी। इसने मुझे जहर दिया था। उस समय भी यह मेरा शिष्य था.....लेकिन जुदास के बिना जीसस का होना बहुत मुश्किल है। मैं होश पूर्वक मरा। इसलिए मुझे होशपूर्वक जन्म लेने का अवसर मिला। मैंने अपने माता-पिता को चुना। पृथ्वी पर हजारों मूर्ख प्रतिक्षण संभोग कर रहे है और लाखों अजन्मी आत्माएं किसी भी गर्भ में प्रवेश करने को तैयार है। मैंने उपयुक्त क्षण की प्रतीक्षा में सात सौ साल इंतजार किया। और अस्तित्व का धन्यवाद कि वह क्षण मुझे मिल गया। लाखों वर्षो की तुलना में सात सौ साल कुछ भी महत्व नहीं रखते है। केवल सात सौ साल! हां मैं कह रहा हूं, केवल!

और, मैंने एक बहुत ही गरीब, लेकिन बहुत ही अंतरंग दंपति को चुना।

मेरे पिता के ह्रदय में मेरी मां के लिए इतना प्रेम था कि मैं नहीं सोचता हूं कि कभी उन्होंने किसी दूसरी स्त्री को उस दृष्टि से देखा हो। यह कल्पना करना भी असंभव है—मेरे लिए भी, जो कि कुछ भी कल्पना कर सकता है—कि मेरी मां ने स्वप्न में भी किसी और पुरूष के बारे में सोचा हो—यह असंभव है। मैंने दोनों को जाना है। वे इतने घनिष्ठ थे, एक-दूसरे के प्रति इतने प्रेमपूर्ण थे, इतने संतुष्ट थे, हालांकि गरीब थे—गरीब फिर भी अमीर। इस घनिष्ठता और परस्पर प्रेम के कारण ही वे गरीबी में भी इतने समृद्ध थे। जब मेरे पिता की मृत्यु हुई तो मैं अपनी मां के बारे में चिंतित था। मैं सोच भी नहीं सकता था कि वे जिंदा रह पाएंगी। उन दोनों ने

एक-दूसरे को इतना प्रेम किया था कि लगभग एक ही हो गए थे। वे बच पाईं क्योंकि वे मुझे प्रेम करती है। उनके बारे में मैं हमेशा चिंतित रहा हूं। मैं उन्हें अपने sपास ही रखना चाहता था, ताकि उनकी मृत्यु परम संतुष्टि में हो सके। अब तुम्हारे द्वारा एक दिन सारे संसार को मालूम होगा—कि वे बुद्धत्व को उपलब्ध हो गई है। मैं उनका अंतिम मोह था। अब उनके लिए कोई मोह नहीं रह गया है। वे एक संबुद्ध महिला हैं-- अशिक्षित, सरल, उनको तो यह भी नहीं मालूम कि बुद्धत्व क्या होता है। यही तो सौंदर्य है। कोई बुद्ध हो सकता है, बिना यह जाने कि बुद्धत्व क्या है। और इससे उल्टा भी हो सकता है: कोई बुद्धत्व के बारे में सब जान सकता है और फिर भी अबुद्ध बना रहा सकता है। मैंने इस दंपति को चुना—सीधे-सादे सरल ग्रामीण। मैं राजाओं और रानियों को भी चुन सकता था। यह मेरे हाथ में था। सब प्रकार के गर्भ उपलब्ध थे। पर मैं बहुत ही सरल और सादी रूचि का व्यक्ति हूं—मैं हमेशा सर्वोत्तम से संतुष्ट हो जाता हूं। यह दंपति गरीब थी, बहुत गरीब। तुम समझ न सकोगे कि मेरे पिता के पास केवल सात सौ रूपये थे। यही उनकी कुल संपत्ति थी। फिर भी मैंने उनको अपना पिता चुना। उनके पास एक संपन्नता थी, जिसे आंखें नहीं देख सकतीं; एक अभिजात्य था जो दिखाई नहीं देता। तुममें से बहुतों ने उन्हें देखा है और निश्चित ही उनके सौंदर्य को अनुभव किया होगा। वे सीधे, बहुत सीधे और सरल थे, तुम उन्हें ग्रामीण कह सकते हो। लेकिन वे समृद्ध थे—सांसारिक अर्थों में नहीं, लेकिन अगर कोई पारलौकिक अर्थ है...;। सात सौ रूपये, यहीं उनकी कुल पूंजी थी। मुझे तो पता भी न चलता लेकिन जब उनके व्यापार का दिवाला निकल रहा था। और वे बहुत प्रसन्न थे। मैंने उनसे पूछा: 'दद्दा'—'मैं उन्हें दद्दा कहता था।' आप जल्दी ही दिवालिया होने वाले है और आप खुश है, क्या बात है, क्या अफवाहें गलत है?' उन्होंने कहा: 'नहीं अफवाहें बिलकुल सही है। दिवाला निकलेगा ही। लेकिन मैं खुश हूं क्योंकि मैंने सात सौ रूपये बचा लिए है। जिससे मैने शुरूआत कि थी। और वो जगह तुम्हें दिखाऊ......वे सात सौ रूपये अभी भी जमीन में कहीं गड़े हुए है और वे वहीं गड़े रहेगें जब तक कि संयोगवश कोई उन्हें पा न लें। मैंने उनसे कहा, 'हालांकि आपने मुझे वो जगह दिखा दी है, लेकिन मैने देखा नहीं है।' उनहोंने पूछा: 'क्या मतलब है तुम्हारा?' 'मैं किसी भी विरासत का हिस्सा नहीं हूं—बड़ी या छोटी, अमीर या गरीब।' लेकिन उनकी और से वे बहुत ही प्यार करने बाले पिता थे। जहां तक मेरा सवाल है, मैं प्यार करने वाला बेटा नहीं हूं—'मुझे माफ करो।'

अच्छा है कि मेरे पिता अब नहीं है, नहीं तो मैं उन्हें परेशान करता। लेकिन उनके ह्रदय में इस आवारा बेटे के लिए इतना प्रेम था और इतनी करूणा थी। मैं तो आवारा ही हूं। मैंने अपने परिवार के लिए कभी कुछ नहीं किया। किसी भी प्रकार से वे मेरे प्रति ऋणी नहीं है। उन्होंने मेरे लिए सब कुछ किया। मैंने इस दंपति का चुनाव विशेष कारण से ही किया—उनमें घनिष्ठता, उनकी अंतरंगता के कारण। वे दो होते हुए भी एक ही थे। इस प्रकार सात सौ साल बाद मैंने पुन: शरीर में प्रवेश किया। मेरा बचपन सुनहरा था। मैं यूं ही नहीं कह रहा हूं। मैं फिर दोहरा दूँ, सभी कहते है कि उनका बचपन सुनहरा था, लेकिन ऐसा होता नहीं। लोग सिर्फ सोचते है कि उनका बचपन सुनहरा था। क्योंकि उनकी जवानी बेकार होती है और उनका बुढ़ापा तो और भी बदतर होता है। स्वभावत: बचपन सुनहरा हो जाता है। इस अर्थ में बचपन सुनहरा नहीं था। मेरी जवानी हीरे जैसी थी और अगर मैं बुढ़ापे तक जीवित रहा तो मेरा बुढ़ापा प्लैटिनम होगा। लेकिन मेरा बचपन निश्चित ही सुनहरा था—प्रतीक की तरह नहीं, सच में सुनहरा; काव्य की तरह नहीं बल्कि शब्दश::, तथ्यगत।

अपने आरंभिक वर्षो में मैं अधिकतर अपने नाना-नानी के घर रहा। वे वर्ष भुलाए नहीं जा सकते। अगर मैं स्वर्ग में भी पहुंच जाऊँ तो भी उन वर्षो को याद रखूंगा। एक छोटा सा गांव, गरीब लोग। पर मेरे नाना बहुत बड़े दिल के आदमी थे। अत्यंत उदार। वे गरीब थे, लेकिन उदारता में वे बहुत अमीर थे। उनके पास जो भी था, उन्होंने सबको दिया। मैंने भी देने की कला उन्हीं से सीखी। इतना मुझे स्वीकार करना पड़ेगा। मैंने उन्हें किसी

भिखारी को या किसी और को न कहते नहीं सुना। मेरी नानी भारतीय कम, युनानी अधिक दिखाई देती थी। जब 'मुक्ता' को हंसते देखता हूं तो मुझे उनकी याद आ जाती है। शायद इसीलिए मेरे ह्रदय में मुक्ता के लिए विशेष स्थान है। शायद उनमें कुछ यूनानी खून था। कोई भी जाती बिलकुल शुद्ध होने का दाव नहीं कर सकती। विशेषकर भारतीयों को तो शुद्ध खून का दावा बिलकुल नहीं करना चाहिए। हूणों ने, मुग़लों ने, यूनानियों ने, और दूसरी अन्य जातियों ने कई बार भारत पर आक्रमण किए, भारत को जीता और उस पर शासन किया। वे भारतीय खून में घुल-मिल गए। मेरी नानी में बिलकुल स्पष्ट था। उनके नैन-नक्श भारतीय नहीं थे। वे यूनानी दिखाई देती थी। और वे बहुत शक्ति शाली स्त्री थी—बहुत मजबूत। मेरे नाना पचास वर्ष के भी नहीं हुए थे कि उनकी मृत्यु हो गई। मेरी नानी अस्सी साल तक जीवित रहीं और वे पूरी तरह स्वस्थ थी। तब भी कोई नहीं सोचता था कि वे मरने बाली है। मैने उनसे एक वादा किया था कि जब वे मरेगी तो मैं आऊँगा। और वह परिवार में जाने का मेरा अंतिम मौका होगा। उनकी मृत्यु उन्नीस सौ सत्तर में हुई। मुझे अपना वादा पूरा करना पडा।

मैं अपने आरंभिक वर्षो में नानी को ही मां समझता था। यह समय था जब बच्चा धीरे-धीरे बड़ा होता है। उस समय मैं नानी के पास था। मेरी मां उसके बाद आईं। तब तक मैं बड़ा हो चुका था और एक खास ढंग में ढल चुका था। मुझे एक घटना याद आती है जो मैने इससे पहले कभी नहीं बताई। एक अंधेरी रात थी, बारिश हो रही थी और एक चोर हमारे घर में घुस आया। स्वभावत: मेरे नाना डर गए। सब देख सकते थे वे डरे गए है, लेकिन वे पूरी कोशिश कर रहे थे यह दिखाने की कि वे डरे नहीं है। चोर हमारे छोटे से घर के एक कोने में शक्कर की बोरियों के पीछे छुपा हुआ था। मेरे नाना हमेशा पान खाते रहते थे। वे सार दिन पान बनाते रहते और खाते रहते थे। तो उन्होंने पान खाना शुरू किया और कोने में छिपे हुए बेचारे चोर पर थूकने लगे। मैने यह गंदा दृश्य देखा और नानी से कहा: 'यह ठीक नहीं है। माना की वह चोर है, फिर भी इस तरह से उस पर थूकना नहीं चाहिए। हमें सज्जनता से व्यवहार करना चाहिए। थूकना...., या तो उससे लड़ों या थूकना बंद करो।'

मेरी नानी ने पूछा: 'तुम क्या करना पसंद करोगे?' मैंने कहा: 'मैं उसे थप्पड़ मार कर बाहर भगा दूँगा।' उस समय मैं नौ वर्ष का भी नहीं था। वे ऊंचे कद की थी। मेरी मां उन जैसी नहीं है—न ही शारीरिक सौंदर्य में और न ही आंतरिक साहस में। मेरी मां तो सीधी-सादी है, मेरी नानी साहसी थी। मैं तो हैरान रह गया, मैं तो भरोसा न कर सका, जब मैंने देखा कि चोर कोई और नहीं मुझे पढ़ाने आने वाला व्यक्ति ही था, मेरा टीचर, मैने जोर से उसे मारा, इसलिए नहीं कि वह मेरा टीचर था। मैंने उससे कहा: 'अगर तुम केवल चोर होत तो मैं तुम्हें क्षमा कर देता, लेकिन तुम मुझे बड़ी-बड़ी बातें सिखाते हो और रात में तुम ऐसी हरकतें करते हो। अब जितनी तेजी से हो सको भाग जाओ, इससे पहले कि मेरी नानी तुम्हें पकड़े, अन्यथा वे तुम्हारा भुरता बना देगी।' मुझे वह मास्टर याद है—गांव का पंडित, जो मुझे कभी-कभी पढ़ाने आता था। वह गांव के मंदिर का पुजारी था। उसने कहा: 'तुम्हारे नाना ने मुझ पर थूकते रहे। क्या हालत हो गई है मेरे कपड़ों की, उन्होंने मेरे कपड़े खराब कर दिए।' मेरी नानी हंसी और कहा: 'कल आ जाना। मैं तुम्हें नये कपड़े दे दूंगी।' और उन्होंने सचमुच उसे नये कपड़े दिए। वह तो नहीं आया, उसकी हिम्मत नहीं पड़ी। लेकिन नानी चोर के घर गईं, मुझे भी अपने साथ ले गई। और उसे नये कपड़े देते हुए कहा: 'हां मेरे पति ने तुम्हारे कपड़े खराब करने का भद्दा काम किया। यह ठीक नहीं है। तुम्हें जब भी कपड़ों की जरूरत हो तो मेरे पास आ सकते हो।' वह मास्टर दुबारा मुझे पढ़ाने नहीं आया....ऐसा नहीं कि किसी ने उसे आने के लिए माना किया, लेकिन उसे आने कि हिम्मत ही नहीं हुई।

मेरे नाना चाहते थे कि भारत के बड़े से बड़े ज्योतिषी मेरी जन्मपत्री बनाएं। हालांकि वे बहुत अमीर नहीं थे—अमीर ही नहीं थे, बहुत अमीर की तो बात अलग-लेकिन उस गांव में वे सबसे अमीर थे। मेरी जन्मपत्री

बनाने के लिए वे कुछ भी कीमत देने को तैयार थे। वे लम्बी यात्रा करके वाराणसी गए और वहां के प्रसिद्ध ज्योतिषियों से मिले। मेरे नाना द्वारा दी गई मेरी जन्मतिथि और जन्मस्थान आदि को देख कर सबसे ज्योतिषी ने कहा: 'मुझे दुख है, कि मैं यह जन्म-कुंडली केवल सात साल बाद ही बना सकता हूं। अगर यह बच्चा जीवित रहा तो मैं उसकी जन्म पत्री मुफ्त में बना दूँगा। पर मुझे नहीं लगता कि यह बचेगा। यदि यह बच गया तो यह चमत्कार होगा, क्योंकि तब उसके बुद्ध हो जाने की संभावना है।' मेरे नाना रोते हुए घर आए। मैने उनकी आंखों में आंसू कभी नहीं देखे थे। मैने पूछ: 'क्या बात है?' उन्होंने कहा: 'तुम्हारे सात साल के होने तक मुझे इंतजार करना पड़ेगा। कोन जानता है की तब तक मैं बचूगां भी या नहीं?' कौन जानता है कि वह ज्योतिषी खुद बचेगा कि नहीं, क्योंकि वह काफी बूढ़ा है। और मुझे तुम्हारी थोड़ी चिंता होती है।' मैंने कहा: 'इसमें चिंता की क्या बात है?' उन्होंने कहा: 'चिंता इस बात की नहीं है कि कहीं तुम मर न जाओ। मेरी चिंता इस बात की है कि कहीं तुम बुद्ध न हो जाओ।' मैं हंसा, और वे भी आंसुओं के बीच हंसने लगे। फिर उन्होंने खुद कहा: 'आश्चर्य है कि मुझे चिंता थी। हां बुद्ध होने में बुराई क्या है?' जब मेरे पिता ने सुना कि ज्योतिषियों ने मेरे नाना को क्या कहा, तो वे स्वयं मुझे वाराणसी ले गए। लेकिन उसकी चर्चा बाद में करेंगे। जब मैं सात साल का था तो एक ज्योतिषी मुझे खोजते हुए मेरे नाना के गांव आया। जब एक सुंदर घोड़ा हमारे घर के सामने रुका तो हम बाहर निकल आए। घोड़ा बहुत शानदार दिख रहा था और उसका सवार कोई और नहीं, वहीं प्रसिद्ध ज्योतिषी था जिसे मैं मिल चुका था। उसने मुझे कहा, 'तो तुम अभी तक जीवित हो, मैने तुम्हारी जन्म-कुंडली बना दी है। मैं डर रहा था, क्योंकि तुम्हारे जैसे लोग अधिक समय तक जीवित नहीं रहते।' मेरे नाना ने घर के जेवर बेच दिए, आस-पास के गांव को भोज देने के लिए कि मैं बुद्ध होने बाला हूं इसका उत्सव मनाने के लिए। और मुझको नहीं लगता कि उन्हें 'बुद्ध' शब्द का अर्थ मालूम था। वे जैन थे, और शायद उन्होंने इससे पहले कभी यह शब्द सुना भी न होगा। लेकिन वह बहुत खुश थे और नाच रहे थे, क्योंकि मैं बुद्ध होने बाला था। उस क्षण मैं विश्वास ही न कर सका कि सिर्फ बुद्ध शब्द से वे इतने प्रसन्न हो सकते है। जब सब लोग चल गये तो मैंने उनसे पूछा, 'बुद्ध शब्द का अर्थ क्या है, उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं मालूम। सुनने में अच्छा लगता है। और मैं तो जैन हूं किसी बौद्ध से पूछ लेंगे।' लेकिन वे बहुत प्रसन्न थे, क्योंकि ज्योतिषी ने कहा कि मैं बुद्ध बनूंगा। फिर उन्होंने मुझसे कहा: 'मेरा अनुमान है कि बुद्ध का मतलब बहुत बुद्धिमान व्यक्ति होना चाहिए।' बुद्धि का अर्थ होता है समझ, इसलिए उन्होंने सोचा कि बुद्ध का मतलब बुद्धिमान, समझदार व्यक्ति होना चाहिए। उनका अनुमान काफी सही था, वे अर्थ के बहुत करीब पहुंच गए—अफसोस कि अब वे जीवित नहीं हैं, नहीं तो वे देख लेते कि बुद्ध होने का क्या अर्थ है—शब्दकोश का अर्थ नहीं, वरन जीवित जाग्रत व्यक्ति के साथ साक्षात्कार। और उनका नाती बुद्ध हो गया है—इस खुशी में मैं उन्हें नाचते हुए देख सकता हूं। उनके समाधिस्थ होने के लिए यही पर्याप्त होता। लेकिन उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु मेरे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण अनुभव था। उसके बारे में बाद में बात करेंगे। रूकने का समय हो गया है। पर यह बहुत सुंदर रहा, और मैं बहुत आभारी हूं। धन्यवाद।

सत्र—3 ज्योतिषी की भविष्यवाणी

बार-बार सुबह का चमत्कार.....सूरज और पेड़ । संसार बर्फ के फूल की तरह हैं: इसको तुम अपने हाथ में लो और यह पिघल जाता है—कुछ भी नहीं बचता, सिर्फ गीले हाथ रह जाते है। लेकिन अगर तुम देखो, सिर्फ देखो, तो बर्फ का फूल भी उतना ही सुंदर है जितना संसार में कोई दूसरा फूल। और यह चमत्कार हर सुबह होता है, हर दोपहर, हर शाम, हर रात, चौबीस घंटे, दिन-रात होता है.....चमत्कार। और लोग परमात्मा को पूजने मंदिरों, मसजिदों और गिरजाघरों में जाते है। यह दुनिया मूर्खों से भरी हानि चाहिए—माफ करो, मूर्खों से नहीं वरन मूढ़ों से—असाध्य, इतने मंद बुद्धि लोगों से।

क्या परमात्मा को खोजने के लिए मंदिर जाने की जरूरत है, क्या वह अभी और यहीं नहीं है। खोज का खयाल ही मूढ़तापूर्ण है। खोज तो उसकी करते है जो दूर है। और परमात्मा तो इतने करीब है, तुम्हारी ह्रदय की घड़कना से भी अधिक करीब है। कोई स्त्रष्टा नहीं है, केवल सृजन की ऊर्जा है। लाखों रूपों में वह ऊर्जा प्रकट होती, पिघलती, मिलती, प्रकट होती, अदृश्य होती, एकत्रित होती और फिर बिखर जाती है। इस लिए मैं कहता हूं कि पुरोहित सत्य से बहुत दूर है और कवि बहुत नजदीक है। निश्चित ही कवि को भी वह उपलब्ध नहीं है। केवल रहस्यदर्शी ही उसे उपलब्ध करता है...; 'उपलब्ध' शब्द ठीक नहीं है, या यूं कहो कि उसे मालूम हो जाता है कि वह सदा से बही है। वह बूढ़ा ज्योतिषी आया। मेरे नाना अपनी आंखों पर विश्वास न कर सके। वह ज्योतिषी इतना प्रसिद्ध था कि अगर वह किसी राजा के महल में भी जाता तो वह राजा भी आश्चर्यचकित होता। और वह मेरे बूढ़े नाना के घर आया। उसे घर कहना पड़ता है, लेकिन ज्यादा कुछ था नहीं बस मिट्टी की दीवालों से बना मकान था। उसमें अलग गुसलखाना भी नहीं था।

तो वह हमारे घर आया और मैं तुरंत उस बूढ़े व्यक्ति का मित्र बन गया। उसकी आंखों में देखते हुए—यद्यपि मैं केवल सात साल का था। और एक शब्द भी नहीं पढ़ सकता था। लेकिन उसकी आंखें पढ़ सका, उसके लिए किसी पढ़ाई की जरूरत नहीं है—मैंने उस ज्योतिषी से कहा, 'बड़ी अजीब बात है कि आप इतनी दूर से मेरी जन्म–कुडली बनाने आए है।' उन दिनों, और आज भी, वाराणसी उस छोटे से गांव से बहुत दूर है। ज्योतिषी ने कहा: 'मैने वाद किया था, और वायदे को तो पूरा करना पड़ता है।' वह मुझे रोमांचित कर गया। तो यह जिंदा आदमी है। मैने कहा: 'यदि आप अपना वादा पूर करने आए है तो मैं आपके बारे में भविष्यवाणी कर सकता हूं।'

उसने कहां: 'क्या, तुम मेरा भविष्य बता सकते हो।'

मैने कहा: 'हां, निश्चित ही तुम बुद्ध तो नहीं बनोगे, लेकिन तुम एक भिक्षु, एक संन्यासी अवश्य बनोगे।'

वह हंसा और बोला: 'यह असंभव है।'

मैने कहा: 'आप शर्त लगा सकते है।'

उसने मुझसे पूछा: 'अच्छा ठीक है, कितने की शर्त।'

मैने कहा: 'उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। आप जितने की चाहे उतने की शर्त लगा लें। क्योंकि यदि मैं जीता तो मैं जीता; लेकिन यदि मैं हारा तो मैं कुछ भी नहीं हारू गा, क्योंकि मेरे पास कुछ है ही नहीं। आप सात साल के बच्चे के साथ शर्त लगा रहे है। क्या आप यह देख नहीं सकते कि मेरे पास कुछ भी नहीं है।'

तुम्हें जान कर आश्चर्य होगा कि मैं वहां नंगा खड़ा था। उस गरीब गांव में यह वर्जित नहीं था—कम से कम सात साल के बच्चे के लिए नंगे इधर-उधर भागना-दौड़ना वर्जित नहीं था। वह कोई इंग्लैंड का गांव नहीं था। सारा गांव इकट्ठा हो गया था और सब लोग हम दोनों की बातचीत सुन रहे थे। उस ज्योतिषी ने कहा: 'ठीक

है, यदि मैं संन्यासी बना, भिक्षु बना,--और उसने अपनी हीरे-जड़ी सोने की पाकेट-घड़ी दिखाई—मैं यह तुम्हे दे दूँगा, और यदि तुम हार गए ताक तुम क्या करोगे।'

मैने कहा: 'मैं बस हार जाऊँगा। मेरे पास कुछ नहीं है—आपको देने के लिए कोई सोन की घड़ी नहीं है। मैं केवल आपके धन्यवाद दूँगा।'

वह हंसा और चला गया।

मैं ज्योतिष में विश्वास नहीं करता। यह 99.9 बकवास है। लेकिन 0.1 बिलकुल सच है। कोई भी आंतरिक पवित्रता और अंतर्दृष्टि वाला व्यक्ति भविष्य को देख सकता है। क्योंकि भविष्य अस्तित्व-विहीन नहीं है, वह सिर्फ हमारी आंखों से छिपा है। शायद केवल विचारों का एक झीना सा पर्दा है जो वर्तमान और भविष्य को अलग करता है। लेकिन आश्चर्य है कि वह मेरा भविष्य देख सका—भले ही धुंधला-धुंधला सी, अस्पष्ट सा, अनेक संभावनाओं के साथ—लेकिन वह अपना भविष्य न देख सका। इतना ही नहीं, जब मैने कहा कि वह भिक्षु बनेगा, तो वह मेरे साथ शर्त लगाने को तैयार था।

मैं चौदह वर्ष का था और अपने दादा के साथ वाराणसी के आस पास घूम रहा था। वे कुछ काम से गए थे और मैन उनके साथ जाने की जिद की थी। वाराणसी और सारनाथ के बीच सड़क पर एक बूढ़े भिक्षु को मैने रोका और कहा, 'क्या आप मुझे पहचानते है।'

उसने कहा: 'मैने तो तुम्हें पहले कभी नहीं देखा, फिर पहचानने का सवाल ही—नहीं उठता।'

मैने कहा: 'आपको मेरी याद नहीं है, लेकिन मुझे तो आपकी याद है। वह हीरे से जड़ी सोने की घड़ी कहां है। मैं वही बच्चा हूं जिसके साथ आपने शर्त लगाई थी। अब समय आ गया है कि मैं पूछूं। मैने भविष्यवाणी की थी कि आप भिक्षु हो जाएंगे और अब आप हो गए है। अब वह घड़ी मुझे दे दीजिए।'

वह हंसा और अपनी जेब से उसने वह सुदंर घड़ी निकाली और मुझे दी। उसकी आंखें आंसुओं से भरी हुई थी और—तुम भरोसा नहीं करोगे—उसने मेरे पैर छुए। मैने कहा: 'नहीं-नहीं, आप भिक्षु है, संन्यासी है, आप मेरे पैर नहीं छू सकते।'

उसने कहा: 'वह सब छोड़ो, तुम मुझसे बड़े ज्योतिषी सिद्ध हुए। मुझे तुम्हारे पैर छूने दो।'

मैने वह घड़ी अपनी पहली संन्यासिन को दे दी। मेरी पहली संन्यासिन का नाम है, मा आनंद मधु*,हां, एक स्त्री, क्योंकि मैं चाहता था। जिस तरह मैने स्त्रियों को संन्यास दिया, किसी ने कभी नहीं दिया। इतना ही नहीं, मैं अपनी पहली संन्यास दीक्षा किसी स्त्री को ही देना चाहता था—संतुलन के लिए। स्त्री को संन्यास देने में बुद्ध तक हिचकिचाए—बुद्ध तक। उनके जीवन की सिर्फ यही एक बात मुझे कांटे की तरह खटकती है, और कुछ नहीं। बुद्ध झिझके...क्यों, उन्हें डर था कि स्त्री सन्यासिनियाँ उनके भिक्षुओं को डांवाडोल कर देगी। क्या बकवास है, एक बुद्ध और डरे। अगर उन मूर्ख भिक्षुओ को ध्यान भंग होता था तो होने देते। महावीर ने कहा कि स्त्री के शरीर से किसी को निर्वाण, परम मुक्ति नहीं हो सकती। अभी भी स्त्रियों को मस्जिद में आने की अनुमति नहीं है। सिनागॉग में भी स्त्रीयां गैलरी में अलग बैठती है, पुरूषों के साथ नहीं बैठती।

इंदिरा गांधी मुझे बता रही थी कि जब वे इसरायल की यात्रा पर थी और जेरूसलम गई, तो उन्हें भरोसा ही नहीं हुआ कि इजरायल की प्रधानमंत्री और वे स्वयं, दोनों बालकनी में बैठी हुई थी और सारे पुरूष नीचे मुख्य हॉल में बैठे हुए थे। उसे खयाल नहीं आया कि इजरायल की प्रधानमंत्री भी, स्त्री होने के कारण, मुख्य सिला गॉग में प्रवेश नहीं कर सकती थी। वे केवल बालकनी से देख सकती थी।

यह आदरपूर्ण नहीं है, यह अपमानजनक है।

मुझे मोहम्मद, मोजेज, महावीर, बुद्ध के लिए माफी मांगनी है। और जीसस के लिए भी, क्योंकि उनहोंने अपने खास बारह शिष्यों में एक भी स्त्री नहीं चुनी। और जब उन्हें सूली लगी तो वे बारह मूर्ख वहां नहीं थे, केवल तीन स्त्रीयां उनके पास थी—मेगदलीन, मेरी और मेगदलीन की बहन। पर इन तीन स्त्रियों को भी जीसस ने नहीं चुना; वे चुने खास शिष्यों में नहीं थी। चुने हुए खास शिष्य तो भाग गए थे। वे अपनी जान बचाने की कोशिश में थे। खतरे के समय केवल स्त्रीयां ही आई।

इन सब लोगों के लिए मुझे भविष्य से माफी मांगनी है, और मेरी पहली माफी थी कि स्त्री को संन्यास देना। तुम्हें पूरी कहानी जान कर खुशी होगी। आनंद मधु के पति चाहते थे कि सबसे पहले उनको दीक्षा दी जाए। यह हिमालय में हुआ। मैं मनाली में ध्यान शिविर ले रहा था। मैने पति को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि तुम द्वितीय हो सकते हो, प्रथम नहीं। वे इतने नाराज हो गए कि उसी समय शिविर से चले गए। इतना ही नहीं, वे मेरे दुश्मन हो गए और मोरारजी देसाई से मिल गए। बाद में जब मोरा जी देसाई प्रधानमंत्री थे तो इस आदमी ने उन्हें राज़ी करने की पूरी कोशिश की कि मुझे जेल भेज दिया जाए। लेकिन मोरा जी देसाई में उतनी साहस नहीं है। अपनी पेशाब पीने बाले व्यक्ति में इतना साहस हो भी नहीं सकता। वह तो महा मूर्ख है—फिर से माफ़ करना—महा मूढ़ है। 'मूर्ख' शब्द को तो मैंने केवल देव गीत के लिए छोड़ रखा है।

आनंद मधु अभी भी संन्यासिन है। वह हिमालय में रहती है—मौन, चुपचाप। तभी से हमेशा स्त्रियों को जितना हो सके उतना आगे लाने का मेरा प्रयास रहा है। शायद कभी-कभी मैं पुरूषों के प्रति अन्यायी भी दिखूं।

पहली महिला जिसको मैंने बहुत चाहा वह मेरी सास थी। तुम्हें आश्चर्य होगा कि क्या मैं विवाहित हूं? नहीं, मैं विवाहित नहीं हूं। वह स्त्री गुड़िया की मां थी। पर मैं मजाक में उसे अपनी सास कहता था। मेरी सास असाधारण महिला थी, खास कर भारत में। वह अपने पति को छोड़ पाकिस्तान चली गई और स्वयं ब्राह्मण होते हुए भी एक मुसलमान से शादी कर ली। उसमें साहस था। उसमें हिम्मत थी, क्योंकि तुम जितना साहस करते हो उतने ही तुम 'घर' के नजदीक आते हो। स्मरण रहे कि केवल दुस्साहसी लोग ही बुद्ध पुरूष बनते है। हिसाबी-किताबी लोग पैसा तो इकट्ठा कर लेते है, लेकिन बुद्धपुरूष् नहीं बन सकते।

मैं उस व्यक्ति का आभारी हूं जिसने मेरे बारे में केवल सात वर्ष की उम्र में ही भविष्य बाणी कर दी थी। सिर्फ मेरी जन्म-कुंडली बनाने के लिए उसने मेरे सात साल के होने तक प्रतीक्षा की—कितना धैर्य था, और इतना ही नहीं, वह वाराणसी से उतनी दूर गांव आया। न सड़कें थी, न रेलगाड़ी थी। उसे घोड़े पर सवारी करके इतनी लंबी यात्रा करनी पड़ी। उस ज्योतिषी की आंखों में मैने एक दिव्य असंतोष देखा, मैं देख सकता था कि इस संसार की कोई भी चीज तुम्हें संतुष्ट नहीं कर सकती है। जब आदमी को दिव्य असंतोष होता है, केवल तभी वह संन्यासी बनता है। हां, वह सुनहरा समय था। असल में सुनहरे से भी अधिक सुदंर। क्योंकि मेरे नाना न सिर्फ मुझसे प्रेम करते थे, बल्कि मैं जो कुछ भी करता उससे भी प्रेम करते थे। और मैने वह सब किया जिसे तुम उपद्रव कह सकते हो। मैं बहुत शैतान था। मैं लगातार उपद्रव करता रहता। उन्हें सारा दिन मेरे बारे में शिकायतें सुननी पड़ती, और उन शिकायतों को सुन कर उन्हें बड़ा मजा आता। उनकी यह एक बड़ी विशेषता थी। उन्होंने मुझे कभी दंड नहीं दिया। उन्होंने कभी यह तक नहीं कहा कि यह करो और यह मत करो। उन्होंने मंझे मेरे जैसा ही होने की पूरी छूट दे रखी थी। इस प्रकार, न जानते हुए भी, मुझे ताओ का स्वाद मिला।

वे आरंभिक वर्ष ऐसे थे। मुझे पूरी छूट थी। मेरे खयाल से हर बच्चे को वैसा समय मिलना जरूरी है। अगर दुनिया में हर बच्चे को हम वैसा समय दे सकें तो हम एक सुनहरी दुनिया बना सकते है।

उन दिनों एक भी क्षण खाली न जाता। कभी कुछ हो रहा है तो कभी कुछ, फुर्सत ही न रहती। इतनी बातें, इतनी घटनाएं जो कि मैंने कभी किसी को कहीं नहीं..... मैं झील में तैरता था। स्वभावत: मेरे नाना को

डर लगा रहता था। उन्होंने मेरी सुरक्षा के लिए एक अद्‌भुत आदमी को नाव में तैनात किया। उस पुराने गांव में तुम सोच भी नहीं सकते कि नाव का क्या मतलब है। उसे डोंगी कहते है। यह और कुछ नहीं एक पेड़ का खोखला तना होता है। यह सामान्य नाव जैसी नहीं होती, गोल होती है, और खतरा है, जब तक तुम कुशल न होओ तब तक उसे चला नहीं सकते। थोड़ा सा भी संतुलन बिगड़ा और तुम हमेशा के लिए गए।

डोंगी को खेकर ही मैने संतुलन सीखा। उससे ज्यादा सहायक और कुछ नहीं हो सकता है। मैंने मध्यमार्ग सीखा, क्योंकि तुम्हें ठीक मध्य में होना होता है। जरा सा भी इधर-अधर और तुम गए। तुम्हें श्वास भी नहीं ले सकते, और तुम्हें बिलकुल चुपचाप बैठना पड़ता है, केवल तभी तुम डोंगी खै सकते हो। जो आदमी मेरी रक्षा के लिए तैनात किया गया था उसे मैंने 'अद्‌भुत' कहा है।

क्योंकि उसका नाम भूरा था। और इसका अर्थ है गोरा आदमी। हमारे गांव में सिर्फ वही एक गोरा आदमी था। यह यूरोपियन नहीं था। सिर्फ संयोग से यह भारतीय जैसा नहीं दिखता था। शायद उसकी मां ब्रिटिश फौज की किसी छावनी में काम करती थी और गर्भवती हो गई थी। वह अच्छे ड़ील-ड़ोल का आदमी था। वह बचपन से ही मेरे नाना से पास काम करने लगा था। वह यदपि नौकर था, फिर भी उसे परिवार के सदस्य जैसा ही व्यवहार मिलता था।

मैंने उसे अदभुत इसलिए भी कहा, क्योंकि यद्यपि मैंने दुनिया में अनेक लोग देखे है, फिर भी भूरा जैसा कोई नहीं देखा। वह आदमी था जिस पर तुम भरोसा कर सकते हो, उससे कुछ भी कहा जा सकता है और वो गोपनीय रखेगा। इस बात का पता मेरे परिवार को तब चला जब मेरे नाना की मृत्यु हुई।

मेरे नाना ने घर की चाबियॉं, घर के सब काम काज जमीन की देख भाल भूर को सौंपी हुई थी। जैसे ही हम गाड़रवारा पहुंचे मेरे परिवार के लोगो ने मेरे नान के स्वामीभक्त नौकर से पूछा: 'चाबियां कहां है।'

उसने कहा: 'मेरे मालिक ने मुझसे कहा था। मेरे सिवाय कभी किसी को ये चाबियां मत देना। माफ़ करें, पर जब तक वह स्वयं मुझसे न कहे तब तक मैंचाबियां आपको नहीं दे सकता।

और चाबियां उसने कभी नहीं दी। इसलिए हम नहीं जानते कि चाबियां कहां छुपी थी।

बहुत वर्षो बाद, जब मैं बंबई में रह रहा था। तो भूरा का बेटा मेरे पास आया और चाबियां मुझे दी और कहा: 'हम लोग आपके आने का इंतजार करते रहे, लेकिन कोई नहीं आया। हमने जमीन की और फसल की अच्छी तरह से देखभाल की और उसके सारे पैसे भी अलग रखे है।'

मैंने चाबियां उसको वापस कर दी और कहा: 'अब सब कुछ तुम्हारा है

वाह, क्या आदमी था, भूरा। लेकिन वैसे लोग कभी इस जमीन पर होते थे। वे धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे है। और ऐसे लोगो की जगह सब तरह के चालबाज और धूर्त लोग लेते जा रहे है। भूरा जैसे लोग ही इस पृथ्वी का नमक है। मैं भूरा को अदभुत आदमी इसलिए कहता हूं क्योंकि इस चालाक दुनिया में सीधा होना अदभुत है। सीधा होना, इस दुनिया का नहीं, बल्कि अजनबी होना है। मेरे नाना के पास इतनी जमीन थी कि कोई सोच भी नहीं सकता है। क्योंकि उन दिनों भारत के उस भाग में जमीन बिलकुल मुफ्त था। तुमको बस राजधानी के सरकारी दफ्तर में जाकर जमीन लेने के लिए कहना होता था, उतना काफी था। हमारे पास चौदह सौ एकड़ जमीन पर खेती थी जिसकी देख भाल भूरा करता था। जब मेरे नाना मरणासन्न थे तो हम लोग उनको कुच वाड़ा से गाड़रवाड़ा ले गए, क्योंकि कुचवाड़ा में इलाज की कोई सुविधा नहीं थी। मेरे नाना का मकान ही एक मात्र मकान था उस गांव में। जब कुचवाड़ा छोड़ा तो भूरा ने चाबियां अपने बेटे को दे दी थी। गाडरवाड़ा जाते-जाते मेरे नाना की मृत्यु हो गई। और इस सदमे के कारण दूसरे दिन सुबह भूरा नींद से उठा ही नहीं, वह रात को ही मर गया। मेरी नानी और मेरे माता-पिता वापस कुच वाड़ा जाकर दुःखी नहीं होना चाहते थे। भूरा का

बेटा लगभग मेरी अम्र का है। अभी कुछ साल पहले मेरा भाई निकलंक और चैतन्य भारती उस घर के और तालाब के फोटो लेने वहां गए थे। जिस घर में मैं जन्मा था उस घर के लिए अब वे दस लाख रूपये मांग रहे है, यह सोच कर कि शायद मेरा कोई शिष्य खरीदने में इच्छुक हो। दस लाख, और तुम्हें पता है, जब मेरे नाना की मृत्यु हुई तब उसकी कितनी कीमत थी कुल तीस रूपये, वो भी बहुत ज्यादा ही थे। आश्चर्य है उतना भी हमें कोई देने को तैयार होता। मनुष्य को केवल अपने बैंक-बैलेंस की ही चिंता नहीं करनी चाहिए। वह तो बहुत ही क्षुद्र बात है। उसका अर्थ है कि मनुष्य मर गया है। उसे गाड़ दो उत्सव मनाओ, उसे जला दो, बैंक- बैलेंस ही मनुष्य नहीं है, मनुष्य को पहाड़ियों, चट्टानों, नदियों और फूलों की भाति होना चाहिए। मेरे नाना ने यह जानने में ही मेरी सहायता नहीं की कि सरलता क्या है, जीवन क्या हैं, वरन उन्होंने मृत्यु को जानने में भी मेरी सहायता की। उसकी मृत्यु मेरी गोद में हुई।

उसके बार में कभी बाद में।

सत्र—4 खजुराहो

मैं तुमसे उस उस समय कि बात कर रहा था जब ज्योतिषी से मिला जो अब संन्यासी हो गया था। उस समय मैं चौदह वर्ष का था और अपने दादा के साथ था। मेरे नाना अब नहीं रहे थे। उस वृद्ध भिक्षु, भूतपूर्व ज्योतिषी ने मुझसे पूछा, 'मैं धंधे से ज्योतिषी हूं, लेकिन शौक से मैं हाथ, पैर और माथे की रेखाएं इत्यादि भी पढ़ता हुं। तुम यह कैसे बता सके कि मैं संन्यासी बनुगां, पहले मैंने सन्यास के बारे में सोचा भी नहीं था। तुम्हीं ने इसका बीज मेरे भीतर डाला और तब से मैं केवल संन्यास के बारे में ही सोचता हूं। तुमने ये कैसे किया।'

मैंने अपने कंधे बिचकाए। आज भी यदि कोई मुझसे पूछे कि मैं कैसे करता हूं, तो मैं सिर्फ कंधे बिचका सकता हूं। क्योंकि मैं कुछ करता नहीं, कोई प्रयास नहीं करता। में तो बस जो हो रहा है उसे होने देता हूं। सिर्फ चीजों से आगे-आगे रहने की कला सीखने की जरूरत है, ताकि सब लोग समझें कि तुम उन्हें कर रहे हो। अन्यथा कोई कुछ कर नहीं रहा है, विशेषकर उस दुनिया में जिससे मेरा संबंध है। उस बूढ़े ज्योतिषी से मैंने कहा: 'मैंने बस तुम्हारी आंखों में झाँका और इतना पवित्रता देखी कि मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि तुम अभी तक संन्यासी नहीं हुए हो। अब तक तो तुम्हें हो जाना चाहिए था। पहले ही बहुत देर हो चुकी थी।'

एक अर्थों में संन्यास के लिए हमेशा बहुत देर हो जाती है और दूसरे अर्थों में संन्यास हमेशा समय से पहले होता है। और दोनों बातें एक साथ सच है। अब बूढ़े आदमी की बारी थी अपने कंधे बिचकाने की। उसने कहा: 'तुम मुझे उलझन में डाल रहे हो। मेरी आंखें कैसे तुम्हें बता सकती थी।'

मैंने कहा: 'अगर आंखें नहीं बता सकती तो फिर किसी ज्योतिष की कोई संभावना नहीं रह जाती।'

निश्चित ही, ज्योतिष शब्द का आंखों से संबंध नहीं है, उसका संबंध तारों से हे, लेकिन क्या अंधा आदमी तारे देख सकता है, नहीं तो तारे देखने के लिए आंखे चाहिए।

मैंने उस वृद्ध व्यक्ति से कहा: 'ज्योतिष तारों का विज्ञान नही है, वरन देखने का विज्ञान है। तारों को दिन के भरपूर प्रकाश में भी देखने का विज्ञान है।'

आज ही मुझे एक नई पुस्तक का अनुवाद मिला जिसे वे जर्मनी में प्रकाशित कर रहे है। मैं जर्मन नहीं जानता, इसलिए किसी को उस अंश का अनुवाद करना पडा जिसका मुझसे संबंध है। मैं इतना किसी भी चुटकुले पर कभी नहीं हंसा। और यह मजाक नहीं है, यह बहुत गंभीर पुस्तक है। लेखक ले पचपन पृष्ठों में यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि मैं केवल इल्युमिनेडेड़ हुं, एनलाइटेंड नहीं हूं। वाह, बहुत खूब, सिर्फ इल्युमिनटेड, एनलाइटेंड नहीं। और तुम्हें यह जान कर आश्चर्य होगा कि कुछ ही दिन पहले इसी श्रेणी के एक और मूढ़, एक डच प्रोफेसर की पुस्तक मुझे मिली थी। डच जर्मन से कोई विशेष अलग नहीं है, वे एक ही श्रेणी के लोग है। मैं सिर्फ एनलाइटेंड हूं, इल्युमिलटेड नहीं, अब इन दोनों मूढ़ों को मिलना चाहिए और कुश्ती लड़नी चाहिए और अपनी किताबों और अपने तर्कों से एक-दूसरे को मारना चाहिए। जहां तक मेरा सवाल है, मुझे हमेशा के लिए और अंतिम रूप से दुनिया से कह देना है: न तो मैं इल्युमिनेटेड हुं और न ही एनलाइटेंड हूं। मैं तो बस एक बहुत साधारण और बहुत सरल व्यक्ति हूं—बिना किसी विशेषण के और बिना किसी डिग्री के। मैने अपने सब सर्टिफ़िकेटों को जला दिया है। मुझे इससे कुछ लेना-देना नहीं कि तुम मुझे एनलाइटेंड मानते हो या नहीं। इससे क्या फर्क पड़ता है। लेकिन यह आदमी इतनी चिंतित है कि इसकी छोटी सी पुस्तक में पचास पृष्ठ केवल इस बात के लिए बर्बाद कर दिये कि मैं एनलाइटेंड हूं या नहीं। इससे एक बात तो पक्की सिद्ध होती हे यह प्रथम श्रेणी का मूढ़ है। मैं बस हूं, मुझे क्यों एनलाइटेंड या इल्युमिनटेड होना चाहिए, क्या विद्वता है इसमें, क्या

इल्युमिनेशन एनलाइटेनमेंट से भिन्न है। शायद बिजली की रोशनी हो तो तुम एनलाइटेंड होते हो और जब केवल मोमबत्ती की रोशनी होतो तुम सिर्फ इल्युमिनटेड होते हो।

मैं दोनो नहीं हूं। मैं तो स्वयं प्रकाश हूं—न एनलाइटेंड हूं, न इल्युमिनेटेंड हूं। इन शब्दों को मैने बहुत पीछे छोड़ दिया है। मैं उन्हें बहुत दूर उस रास्ते पा अभी भी उड़ती धूल की तर देख सकता हूं। जिस रास्ते पर मैं फिर कभी नहीं जाऊँगा। ये रेत पर छूट गए पद चिन्ह हैं।

मेरे नाना अचानक बीमार पड़ गए। अभी उनकी मृत्यु का समय नहीं था। वे पचास से अधिक उम्र के न थे, पचास से भी कम थे। शायद अभी मेरी जो उम्र है उससे भी कम। मेरी नानी सिर्फ पचास साल की थी, उसका सौंदर्य निखार पर था। तुम्हें जान कर आश्चर्य होगा कि उनका जन्म तांत्रिकों के प्राचीनतम गढ़ खजुराहो में हुआ था। वे मुझसे हमेशा कहा करती थी। ''तुम जब थोड़े बड़े हो जाओ तो खजुराहो जाना कभी ना भूलना। मैं नहीं सोचता कि कोई माता-पिता अपने बच्चे को ऐसी सलाह देंगे। लेकिन मेरी नानी अद्भुत थी, खजुराहो जाने के लिए मुझे फुसलाती रही। खजुराहो में मंदिरों में हजारों सुंदर मूर्तियां खुदी है—सब नग्न और संभोग रत। वही सैकड़ों मंदिर है। उनमें से अधिक तो खंडहर हो चूके है, लेकिन कुछ बच गए है, शायद क्योंकि लोग उन्हें भूल थे। महात्मा गांधी इन बचे हुए मंदिरों को भी मिटटी में दबा देना चाहते थे, क्योंकि ये मूर्तियां बहुत ही लुभावनी है। और फिर भी मेरी नानी मुझे खजुराहो जाने के लिए उत्साहित कर रही थी। वे स्वयं भी मूर्ति की भांति बहुत सुंदर थीं—हर प्रकार से यूनानी दिखाई देती थी। जब मुक्ता की बेटी सीमा मुझसे मिलने आई तो एक क्षण के लिए तो मैं भरोसा न कर सका, क्योंकि मेरी नानी का रंगरूप और चेहरा बिलकुल वैसा था। सीमा यूरोपियन दिखाई नहीं देती। उसका रंग थोड़ा गहरा है और उसकी कद—काठी और चेहरा मेरी नानी जैसा है। मैने सोचा, दुःख है कि मेरी नानी मर चुकी है, नहीं तो मैं सीमा को उनसे मिलवाना चाहता। और क्या तुम्हें मालूम है कि अस्सी साल की उम्र में भी वे बहुत सुंदर थी, जो कि असंभव ही है। जब मेरी नानी की मृत्यु हुई तो मैं बंबई से उन्हें देखने गया। मरने के बाद भी वे सुंदर थी। मैं विश्वास ही नहीं कर सका कि वे मर गई है। और अचानक खजुराहों की सारी मूर्तियां मेरे लिए जीवत हो गई। उनके मृत शरीर में मैने खजुराहो के समस्त दर्शन को देख लिया। उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने का यही एक मात्र तरीका था। कि मैं खजुराहो जाऊँ, अब खजुराहो पहले से भी अधिक सुंदर लगा, क्योंकि रह मूर्ति में, हर जगह मैं उनको देख सकता था। खजुराहो अनुपम है, अतुलनीय है, दुनिया में हजारों मंदिर हैं, लेकिन खजुराहो जैसा कोई भी नहीं है। मैं इस आश्रम में एक जिंदा खजुराहो बनाने की कोशिश कर रहा हूं। पत्थर की मूर्तियां नहीं वरन जीवित लोग, जिनमें प्रेम करने की क्षमता हो, जो सच में जीवित हो, इतने जीवित कि वे संक्रामक हों, कि सिर्फ उनको छूना काफी हो एक करंट, एक बिजली का शॉक अनुभव करने के लिए। मेरी नानी ने मुझे बहुत कुछ दिया—सबसे महत्वपूर्ण था उनका जोर देना कि मैं खजुराहो जरूर जाऊँ। उन दिनों खजुराहो को कोई जानता भी न था। लेकिन उन्होंने इतना जोर दिया कि मुझे जाना ही पडा। वे बहुत जिद्दी थी। शायद मैने भी यह गुण या तुम इसे अवगुण कह सकते हो—उन्हीं से पाया है।

उनके जीवन के अंतिम बीस वर्षो में मैं पूरे भारत में घूम रहा था। हर बार जब भी मैं उस गांव से गुजरता, वे मुझसे कहती, 'सुनो कभी भी चलती गाड़ी में चढ़ना मत और चलती गाड़ी से उतरना मत। दूसरी बात, यात्रा करते समय डिब्बे में किसी भी मुसाफिर से बहस मत करना। तीसरी बात, यात्रा करते समय सदा याद रखना कि मैं जिंदा हूं और तुम्हारे घर आने की प्रतीक्षा कर रही हूं। क्योंकि तुम सारे देश में घूमते फिर रहे हो जब कि मैं तुम्हारी फिक्र करने के लिए यहां प्रतीक्षा कर रही हूं। तुम्हें देखभाल की जरूरत है, और दूसरा कोई तुम्हारी इतनी अच्छी देखभाल नहीं कर सकता जितनी कि मैं।'

पहली बार जब खजुराहो गया था तो नानी के बार-बार कहने पर ही गया था, लेकिन उसके बाद मैं सैकड़ों बार वहां गया हूं। दुनिया में और किसी जगह मैं इतनी बार नहीं गया था। कारण सीधा साफ है। वह अनुभव तुम कभी भी पूरा नहीं कर सकते, वह असीम है, वह पूरा हो ही नहीं सकता। जितना ज्यादा जानो और अधिक जानने की इच्छा होती है। पूरा हो ही नहीं सकता। एक-एक मंदिर के कण-कण में रहस्य है। एक-एक मंदिर को बनाने में हजारों कलाकार और सैकड़ों वर्ष लगे होंगे। और खजुराहो के अलावा मैंने कुछ भी नहीं देखा जिसे कि परिपूर्ण कहा जा सके—ताजमहल भी नहीं। ताजमहल में भी कुछ कमियाँ है, लेकिन खजुराहो में कोई कमी नहीं है। और फिर ताजमहल सिर्फ एक सुंदर कलाकृति है, लेकिन खजुराहो नये मनुष्य का पूरा दर्शन और मनोविज्ञान है। जब मैंने उन ने किड़... मैं 'न्यूड' नहीं कह सकता, माफ करना। 'न्यूड' अश्लील है। नकिड़ बिलकुल ही अलग बात है। शब्दकोश में शायद उनका एक ही अर्थ हो, लेकिन शब्दकोश सब कुछ नहीं है। अस्तित्व में और बहुत कुछ है। वे मूर्तियां नेकिड़ है पर न्यूड नहीं। ....शायद कभी मनुष्य उसको उपलब्ध कर सकेगा। यह एक स्वप्न है, खजुराहो एक स्वप्न है। और महात्मा गांधी उसे मिट्टी से दबा देना चाहते थे। ताकि कोई भी उन सुंदर मूर्तियों से मोहित न हो सके। हम रवींद्रनाथ टैगोर के आभारी है जिन्होंने गांधी को ऐसा करने से रोका। उन्होने कहा: 'मंदिर जैसे है उन्हें वैसा ही रहने दो।' वे कवि थे और वे उनके रहस्य को समझ सकते थे। असल में, तुम्हें आश्चर्य होगा—तुम्हें मालूम है कि मैं कितना खतरनाक हूं—जिस पहरेदार को मैने रिश्वत दी, वह मेरा संन्यासी बन गया। अब किसने किसको रिस्वत दी। पहले मैने उसको रिश्वत दी यह कहने के लिए कि मैं भीतर नहीं हूं। फिर धारे-धीरे वह मुझसे और-और उत्सुक होने लगा। उसने मेरी दी हुई सारी रिश्वत वापस कर दी। वही शायद एक ऐसा आदमी है जिसने ली हुई सारी रिश्वत वापस कर दी। संन्यासी बनने के बाद वह उसे न रख सका।

खजुराहो—इस नाम से ही मुझमें आनंद की घंटियों बजने लगती है, जैसे कि वह स्वर्ग से पृथ्वी पर उतारा हो। पूर्णिमा की रात में खजुराहो को देखना ऐसे है जैसे, जो भी देखने योग्य है, सब देख लिया हो।

उस समय कि स्थिति का जब हम आने नाना को ले कर जा रहे थे करना चाहिए..... हम लोग बैलगाड़ी में अपने नाना के गांव से पिताजी के गांव जा रहे थे। क्योंकि एकमात्र अस्पताल वहीं था। मेरे नाना बहुत बीमार थे; बीमार ही नहीं बेहोश भी थे, करीब-करीब कोमा में थे। उनके अतिरिक्त केवल मैं और नानी बैलगाड़ी में थे। मेरे प्रति नानी की करूणा; को मैं समझ सकता हूं। वे अपने प्रिय पति की मृत्यु पर रोई भी नहीं, सिर्फ मेरे कारण; क्योंकि मैं ही अकेला वहां था। और मुझे सांत्वना देने के लिए कोई भी वहां नहीं था। मैंने कहा, 'चिंता मत करो। यदि तुम बिना आंसुओं के रह सकती हो तो मैं भी बिना आंसुओं के रह सकता हूं।' और विश्वास करो या न करो, एक सात साल का बच्चा बिलकुल नहीं रोया। यहां तक कि उन्हें भी आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा, 'तुम रो नहीं रहे।' मैने कहा, मैं तुम्हें दिलासा नहीं देना चाहता। उस बैल गाड़ी में अदभुत लोग इकट्ठे थे। भूरा, जिसका मैंने सुबह जिक्र किया, गाड़ी चला रहा था। वह जानता था कि उसके मालिक की मृत्यु हो गई है, लेकिन फिर भी उसने गाड़ी के भीतर नहीं देखा, क्योंकि वह सिर्फ नौकर था और मालिक के व्यक्तिगत मामलों में दखल देना उचित न था। यही उसने मुझसे कहा, 'मृत्यु निजी मामला है, मैं किसे देख सकता हूं, गाड़ी चलाते हुए अपनी जगह से मैने सब सुना। मैं रोना चाहता था। मैं उनसे बहुत प्रेम करता था। मैं अनाथ जैसा अनुभव कर रहा हूं। लेकिन मैं गाड़ी में पीछे मुड़ कर नहीं देख सकता था। अन्यथा वे मुझे कभी क्षमा नहीं न करते।' अनूठे लोग—और नाना मेरी गोद में थे। मैं सात साल का बालक मृत्यु के साथ था—कुछ सेकेंड के लिए नहीं लगातार चौबीस घंटे तक। वहां सड़क नहीं थी, और मेरे पिता के गांव तक पहुंचा मुश्किल था। चौबीस घंटे हम मृत शरीर के साथ रहे। सच मेरी नानी लोहे की बनी सच्ची स्त्री थी। जब पिता के गांव पहुंचे वो मेरे पिताजी ने

डाक्टर को बुलवाया। और क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि मेरी नानी हंसी, उन्होंने कहां; 'तुम पढ़े लिखे लोग सब मूर्ख हो। वे मर चूक हैं, अब उन्हें किसी डाक्टर की जरूरत नहीं है। पहले ही देर हो चुकी है जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी इनका दाह-संस्कार करों।'

ये शब्द सुन कर सब स्तब्ध रह गए सिवाय मेरे, क्योंकि मैं उन्हें जानता था। वे चाहती थी कि मृत-शरीर मूल तत्वों में विलीन हो जाए। तुम समझ सकते हो। जब उन्होंने कहा कि वे वापस उस गांव में रहने नहीं जा रहीं, तो उसका यह अर्थ भी था कि अब मैं उनसे मिलने वहां फिर नहीं जा सकता था। लेकिन वे मेरे पिता के परिवार के साथ भी नहीं रहीं। वे अलग थीं। जब मैंने अपने पिता के गांव में रहना शुरू किया तो मैं उस गांव में बहुत हिसाब से रहा, सार दिन अपने पिता के घर उनके परिवार के साथ बिताता और सारी रात मेरी नानी के साथ रहता। वे अकेली एक सुंदर बंगले में रहती थीं। वह छोटा सा घर था, लेकिन बहुत सुंदर था। मेरी मां मुझसे पूछती: 'तुम रात को घर पर क्यों नहीं रहते।'

मैंने कहा: 'यह असंभव है। मुझे नानी के पास ही जाना है, विशेषकर रात को, जब बिना नाना के वे बहुत अकेलापन महसूस करती है। दिन में तो ठीक है, वे काम-काज में व्यस्त रहती है और बहुत से लोग आस-पास होते है, लेकिन रात को अगर मैं वहां न होऊं तो अकेले कमरे में वे शायद रोना शुरू कर दें। मुझे वहां जाना ही है। मैं हमेशा वहां रहा, हर रात, बिना किसी अपवाद के।'

दिन में मैं स्कूल में रहता। केवल सुबह और दोपहर को मैं कुछ घंटे अपने परिवार के साथ बिताता—मेरे माता-पिता, मेरे चाचा। वह बड़ा परिवार था और वह मेरे लिए अजनबी ही रहा, वह कभी भी मेरा अंग न बना। मेरी नानी मेरा परिवार थी। और वे मुझे समझती थीं, क्योंकि मेरे बचपन से ही उन्होंने मुझे बढते देखा था। और कोई मुझे उतना नहीं जानता था जितना वे जानती थी, क्योंकि उन्होंने मुझे सब कुछ करने दिया....सब कुछ। भारत में जब दीवाली आती है तो लोग जुआ खेल सकते है। यह अजीब रिवाज है: तीन दिन के लिए जुआ खेलना गैर-कानूनी नहीं है। उसके बाद तुम पकड़े जा सकते हो और सज़ा हो सकती है। मैंने अपनी नानी से कहा: 'मैं जुआ खेलना चाहता हूं।'

उन्होंने मुझसे पूछा: 'कितने रूपये चाहिए तुम्हें।'

मैं भी अपने कानों पर विश्वास न कर सका। मैंने सोचा था कि वे कहेगी कि जुआ कभी नहीं खेलना। लेकिन उन्होंने कहा, 'अच्छा तो तुम जुआ खेलना चाहते हो, फिर उन्होंने मुझे सौ रूपये का नोट दिया और मुझसे कहा जाओ जहां खेलना हो खेलो।'

इस प्रकार से उन्होंने मेरी बहुत सहायता की है।

एक बार मैं एक वेश्या के पास जाना चाहता था। मैं सिर्फ पंद्रह वर्ष का था और मैंने सुना कि गांव में एक वेश्या आई है। मेरी नानी ने मुझसे पूछा: 'तुम वेश्या का मतलब समझते हो, मैंने कहा: मैं एक दम ठीक-ठीक तो नहीं समझता हुं।' तुम्हें जाकर देखना चाहिए, लेकिन पहले सिर्फ नाचते और गाते देखने के लिए जाओ।' भारत में वेश्याएं पहले नाचती और गाती है। लेकिन वह स्त्री इतनी कुरूप थी और उसका नाचना-गाना इतना भद्दा था कि मुझे उल्टी हो गई। नाचना-गाना खत्म हो और वेश्या वृति शुरू हो, उसके पहले ही बीच में ही मैं घर आ गया। मेरी नानी ने पूछा, 'तुम इतनी जल्दी घर आ क्यों आ गए।'

मैंने कहा: 'मुझे उलटी आ रही थी।'

बाद में जब ज्याँ पाल सार्त्र की पुस्तक नॉसिया पढ़ी, तब मेरी समझ में आया कि उस रात मुझे क्या हुआ था। लेकिन मेरी नानी ने मुझे वेश्या के पास जाने दिया। मुझे याद नहीं आता कि उन्होंने कभी मुझे न कहा हो।

मैं सिगरेट पीना चाहता था। उन्होंने कहा: ‘एक बात याद रखना सिगरेट पीना ठीक है, लेकिन हमेशा अपने घर में ही पीना।’

मैंने पूछा: ’क्यों।’

उन्होंने कहा: ‘दूसरों को शायद आपती हो। इसलिए तुम घर में पी सकते हो। मैं तुम्हें सिगरेट लाकर दूंगी। और वे तब तक मुझे सिगरेट लाकर देती रही जब तक मैने नहीं कहां।’

‘बस, मुझे और नहीं चाहिए।‘ मुझे स्वयं अनुभव प्राप्त हो, इसके लिए मेरी नानी किसी हद तक जाने को तैयार थी। जानने का रास्ता है: स्वयं अनुभव करना। बताने से कोई लाभ नहीं। यहीं माता-पिता से चिढ़ पैदा होती है: वे सदा तुम्हें बताते रहते है। बच्चा परमात्मा का पुनर्जन्म है। उसका आदर होना चाहिए और उसको बढ़ने और होने का पूरा मौका दिया जाना चाहिए—तुम्हारे हिसाब से नहीं, बल्कि उसकी अपनी क्षमताओं और संभावनाओं के अनुसार।

सत्र—5 नाना नानी के संग

जब बचपन में मैं अपने नाना के पास रहता था तो यही मेरा तरीका था, और फिर भी मैं सज़ा से पूरी तरह सुरक्षित था। उन्होंने कभी नहीं कहा कि यह करो और वह मत करो। इसके विपरीत उन्होंने अपने सबसे आज्ञाकारी नौकर भूरा के मेरी सेवा में मेरी सुरक्षा के लिए नियुक्त कर दिया। भूरा अपने साथ सदा एक बहुत पुरानी बंदूक रखता था। और थोड़ी दूरी पर मेरे साथ- साथ चलता था। लेकिन गांव वालों को डराने के लिए इतना काफी था। मुझे अपनी मनमानी करने का मौका देने के लिए इतना काफी था। कुछ जो भी तुम सोच सकते हो.....जैसे भैंस पर उलटी सवारी करना, और भूरा पीछे-पीछे चल रहा है। बहुत समय बाद विश्वविद्यालय के म्यूजियम में मैंने भेस पर उलटे बैठे हुए लाओत्से की मूर्ति देखी। मैं इतनी जोर से हंसा की म्यूजियम का निदेशक भागा हुआ आया कि क्या हो गया, क्या कुछ गड़बड़ है, क्योंकि मैं हंसी के कारण पेट पकड़ कर जमीन पर बैठा हुआ था। उसने पूछा 'क्या कोई तकलीफ है।' विशेष कर मेरे गांव में और पूरे भारत में कोई भी भेस की सवारी नहीं करता। लेकिन चीनी अद्‌भुत लोग है, और यह व्यक्ति लाओत्से तो सबसे अद्‌भुत था। लेकिन परमात्मा जाने—और परमात्मा ही जानता है, मुझे भी नहीं पता—कि कैसे मुझे बाजार में भेस पर उलटी सवारी करने की सूझी, मैं सोचता हूं शायद इसलिए क्योंकि मुझे बेतुकी बातें हमेशा बहुत पसंद रही है।

बचपन के वे दिन—अगर वे फिर से मुझे मिल सकें तो मैं दुबारा जन्म लेने को तैयार हो जाऊँगा, लेकिन तुम जानते हो और मैं भी जानता हूं कि कुछ भी पुनरुक्त नहीं होता और न किया जा सकता। इसीलिए मैं कह रहा हूं कि मैं दुबारा जन्म लेने को तैयार हो जाऊँगा, अन्यथा कौन चाहता है, चाहे वो दिन कितने ही सुंदर क्यों ने हो।

मैं गलत-नक्षत्र में पैदा हुआ था। मुझे दुःख है कि मैं बड़े ज्योतिषी से पूछना भूल गया कि मैं इतना शैतान क्यों था। मैं शैतानी के बीना जी नहीं सकता। वही मेरा पोषण है।

मैं अपने बूढे नाना को और मेरी शैतानी यों से उन्हें जो परेशानियां हुई उन्हें समझ सकता हूं। दिन भर वे अपनी गद्दी पर बैठे अपने ग्राहकों को कम और मेरी शिकायत करने बालों की अधिक सुनते। लेकिन वे उनसे कहते, 'उसने जो नुकसान किया हो उसका मैं हर्जाना देने को तैयार हूं, लेकिन या रखिए, मैं उसको सज़ा नहीं दूँगा।'

शायद उनका वह धैर्य, मेरे जैसे शैतान बच्चे के साथ.... यहां तक कि मैं भी सहन नहीं कर सकता। अगर वैसा बच्चा मुझे दिया जाता और सालों तक...हे भगवान, -- कुछ ही मिनटों के लिए भी, तो मैं उसे हमेशा के लिए घर से बाहर निकाल देता।

शायद वे वर्ष मेरे नाना के लिए चमत्कार साबित हुए। उस असीम धैर्य का परिणाम हुआ, वे और-और मौन होते गए। मैंने रोज-रोज इसे बढ़ते देखा। कभी-कभी मैं कहता, 'नाना आप मुझे दंड दे सकते है। आपको इतना सहनशील होने की जरूरत नहीं है।' और तुम भरोसा कर सकते हो, वे रोने लगते, उनकी आंखों में आंसू आ जाते, और वे कहते 'तुम्हें सज़ा दूँ, वह मैं नहीं कर सकता। मैं अपने आप को सज़ा दे सकता हूं, लेकिन तुम्हें नहीं।'

मैंने कभी एक क्षण के लिए भी उनकी आंखों में मेरे लिए गुस्से की परछाई तक नहीं देखी। और मेरा भरोसा करो, मैने वह सब किया जो हजार बच्चे कर सकते है। सुबह से, नाश्ते से भी पहले से लेकर देर रात ते मुझे शैतानी सूझती। कभी-कभी तो में रात को इतनी देर से घर आता-सुबह तीन बजे। लेकिन वे भी क्या आदमी थे। उन्होने कभी नहीं कहा, तुमने बहुत देर कर दी। यह एक बच्चे के घर आने का समय नहीं है। नहीं एक बार भी

नहीं। सच तो यह है कि मेरे सामने वे दिवाल पर लगी हुई घड़ी की तरु भी न देखते। इस तरह मैंने धार्मिकता सीखी। वे मुझे कभी मंदिर नहीं नहीं ते गए, जहां वे जाने थे। मैं भी उस मंदिर में जाता था, लेकिन सिर्फ तब जब वह बंद होता था। केवल प्रिज्म चुराने के लिए क्योंकि उस मंदिर में प्रिज्म से बने बड़े सुंदर फानूस लगे हुए थे। मैं सोचता हूं, धीरे-धीरे लगभग मैंने सब प्रिज्म चुरा लिए। जब मेरे नाना को यह बताया गया तो उन्होंने कहा, तो क्या हुआ, मैंने ये फानूस दान दिए थे। मैं और दे सकता हूं। वह कोई चोरी नहीं कर रहा है। यह तो उसके नाना की संपत्ति है। मैंने वह मंदिर बनवाया था।''

पुजारी ने शिकायत करनी बंद कर दी। क्या फायदा था? वह तो सिर्फ नाना का नौकर था। नाना रोज सुबह मंदिर जाते थे। फिर भी उन्होंने कभी नहीं कहा, 'तुम मेरे साथ चलो। 'उन्होंने कभी कोई सिद्धांत मेरे दिमाग में नहीं डाला। यह बहुत बड़ी बात है। कोई सिद्धांत न थोपना। एक असहाय बच्चे को जबरदस्ती अपनी मान्यताएं मनवाना बहुत सहज है। लेकिन वे प्रलोभन में नहीं आए.....हां, मैं इसे सबसे बड़ा प्रलोभन कहता हुं। जैसे ही तुम किसी को अपने पर किसी तरह से निर्भर देखते हो, वैसे ही शिक्षा देने लगते हो। उनहोंने मुझसे कभी यह तक नहीं कहा, 'तुम जैन हो।'

मुझे अच्छी तरह याद है—एक बार जब जनगणना हो रही थी, जनगणना अधिकारी हमारे घर आया। उसने बहुत तरह की पूछताछ की उसने नाना के धर्म के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि उनका धर्म जैन है। फिर उसने नानी के बारे में पूछा, मेरे नाना ने कहा: 'आप खुद उनसे पूछ सकते है। धर्म व्यक्ति गत मामला है। मैंने खुद कभी उनसे नहीं पूछा।' क्या व्यक्ति थे।

मेरी नानी ने उत्तर दिया, 'मैं किसी भी धर्म को नहीं मानती, सब धर्म मुझे बचकाने लगते है।' वह अफसर भौचक्का रह गया। मैं भी बहुत हैरान हुआ। वे किसी धर्म को में विश्वास नहीं करती। भारत में ऐसी स्त्री खोजना असंभव है जो किसी धर्म में विश्वास न करती हो। लेकिन वे खजुराहो में जन्मी थी, शायद तांत्रिकों के परिवार में, जो कभी किसी धर्म में विश्वास नहीं करते। वे ध्यान करते है, लेकिन वे किसी धर्म में कभी विश्वास नहीं करते। पश्चिमी मन को यह बहुत असंगत लगता है: बिना धर्म के ध्यान; हां...सच तो यह है कि अगर तुम किसी धर्म में विश्वास करते हो तो तुम ध्यान नहीं कर सकते। धर्म तुम्हारे ध्यान में बाधा है। ध्यान के लिए किसी परमात्मा, किसी स्वर्ग या नरक, किसी दंड के डर या सुख के लोभ की कोई आवश्यकता नहीं है। ध्यान का मन से कुछ लेना-देना नहीं है, ध्यान मन के पान है। और धर्म केवल मन के भीतर है। मैं जानता हूं कि नानी कभी मंदिर नहीं गई, लेकिन उन्होने मुझे कभी एक मंत्र सिखाया जो आज मैं पहली बार बताऊगां। वह जैन मंत्र है, लेकिन उसका संबंध केवल जैनियों से नहीं है। यह तो केवल संयोग है कि यह मंत्र जैन धर्म के साथ संबंधित है...... नमो अरिहंताणं नमो नमो। नमो सिद्धाणं नमो नमो। नमो उवज्झायाणं नमो नमो। नमो लोए सव्वसाहूणं नमो नमो। एसो पंच नमुक्कारो ओम् शांति शांति शांति .... यह मंत्र बहुत सुंदर है। अब मैं अनुवाद करने की कोशिश करता हूं, 'मैं अरिहंतों के चरणों में झुकता हूं, जैन धर्म में अरिहंत उसे कहते है जिसे बौद्ध धर्म में बोधिसत्व कहते है—जिसने परम सत्य को पा लिया, लेकिन किसी और कि चिंता नहीं करता। वह अपने धर पहुंच गया और संसार की और उसने पीठ कर ली। वह कोई धर्म नहीं बनाता, वह कोई उपदेश भी नहीं देता, वह कोई धोषणा भी नहीं करता। निश्चित ही सबसे पहले उसको ही याद किया जाना चाहिए। सबसे पहले उन सब लोगों का स्मरण जिन्होंने स्वयं को जाना और चुप रह गए। पहला आदर शब्दों के लिए नहीं, वरन मौन के लिए है, दूसरों की सेवा के लिए नहीं, वरन स्वयं को जानने के लिए है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दूसरों की सेवा होती है या नहीं, वह प्राथमिक नहीं है, गौण है। प्राथमिक है कि उसने स्वयं को जाना और इस दुनिया में स्वयं को जानना बहुत मुश्किल है। लाग कल्पनाओं में जी रहे है, वही उनका जीवन है—एक कल्पना मात्र, जो

कही है नहीं, होली घोस्ट, लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है कि घोस्ट होली है या अनहोली। असल में वह है ही नहीं। बेवकूफी की हद है कि ईसाई त्रिमूर्ति में होली घोस्ट को सम्मिलित किया गया है, परमात्मा, बेटा और होली घोस्ट। सिर्फ स्त्री से बचने के लिए उन्होंने होली घोस्ट को वहां रखा हुआ है। मां को हटा कर होली घोस्ट को वहीं रखा है। इस होली घोस्ट ने पूरी ईसाइयत को बरबाद किया है। क्योंकि एकदम शुरूआत से ही, एक दम बुनियाद से ही यह झूठ और भ्रमों पर आधारित है।

लेकिन इस होली घोस्ट जैसे घिनौना व्यक्ति को त्रिमूर्ति में सम्मिलित करने के लिए ईसाइयों को क्षमा नहीं किया जाएगा, और इस पवित्र घोस्ट ने बेचारी मेरी को गर्भवती बनाने का अपवित्र काम किया। किसने तुम सोचते हो बेचारे बढ़ई की पत्नी को गर्भ वती बनाया? होली घोस्ट ने, वाह, महान पवित्रता है, तो फिर अपवित्रता क्या होगी। एक बात निश्चित है कि ईसाइयत स्त्री से पूरी तरह बचने की, उसे पूरी तरह से मिटा देने की कोशिश करती रही है। उन्होंने एक परिवार तक बना दिया। अगर कोई बच्चा परिवार का चित्र बनाए—पिता, बेटा और होली घोस्ट—तो तुम कहोगे, यह क्या मूर्खता है, मां कहां है। बिना मां के पिता कैसे हो सकता है, बिना मां के बेटा कैसे हो सकता है, एक छोटा बच्चा भी तुम्हारे तर्क को समझ सकता है। लेकिन ईसाई धर्मशास्त्री नहीं वह बच्चा नहीं है, वह मंदबुद्धि बच्चा है। उसके दिमाग में कुछ गड़बड़ है, विशेषकर बाई और का उसका दिमाग या तो खाली है या उसमें कचरा भरा हुआ है।

जैन 'अरिहंत' उस व्यक्ति को कहते हैं जिसने स्वयं को उपलब्ध कर लिया है, और उस आत्म-अपलब्धि के सौंदर्य से इतना खोया हुआ है कि वह समस्त संसार को भूल गया है। अरिहंत शब्द का अर्थ है: जिसने शत्रु को मार डाला। और शत्रु है अहंकार, मंत्र के पहले भाग का अर्थ है: मैं उसके चरणों में झुकता हूं जिसने स्वयं को अपलब्ध कर लिया है। दूसरा भाग है: 'नमो सिद्धाणं नमो-नमो।'

यह मंत्र प्राकृत में है, संस्कृत में नहीं। प्राकृत जैनियों की भाषा है। यह संस्कृत से ज्यादा प्राचीन है। संस्कृत शब्द का अर्थ होता है परिष्कृत। तुम परिष्कृत शब्द से ही समझ सकते हो कि इसके पहले अवश्य कुछ रहा होगा, अन्यथा तुम किसे परिष्कृत करोगे? प्राकृत का अर्थ है बिना परिष्कृत के, स्वाभाविक, अनगढ़। और जैन का यह कहना बिलकुल ठीक है कि उनकी भाषा दुनियां में सबसे प्राचीन है। उनका धर्म भी अति प्राचीन है। हिंदुओं के ग्रंथ ऋग्वेद में जैनियों के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का उल्लेख है। निश्चित ही इसका मतलब हुआ कि वह ऋग्वेद से बहुत पुराना है। ऋग्वेद दुनिया में सबसे प्राचीन पुस्तक है। और इसमें जैन तीर्थंकर आदिनाथ का उल्लेख इतने आदर के साथ किया गया है की एक बात निश्चित है कि वे उन लोगों के समकालीन नहीं हो सकते जिन्होंने ऋग्वेद लिखा है। समकालीन गुरु को पहचानना बहुत मुश्किल है। उसकी किस्मत में तो निंदा ही होती है – चारों और से हर प्रकार की निंदा। उसको आदर नहीं मिलता। वह आदर योग्य व्यक्ति नहीं होता। समय लगता है, उसको क्षमा करने में लोगों को हजारों साल लगते है। केवल तभी वे उसका आदर दे पाते है। जब वे उसकी निंदा करने के अपराध-भाव से मुक्त होते है, तो वे उसका आदर करने लगते है, उसकी पूजा करने लगते है। मंत्र प्राकृत में है, अपरिष्कृत एवं अनगढ़। दुसरी पंक्ति है: 'नमो सिद्धाणं नमो नमो।'

मैं उसके चरणों में झुकता हूं जो अपने स्वभाव में पहुंच गया है। तो पहले और दूसरे में क्या अंतर है?

अरिहंत कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखता, कभी किसी प्रकार की सेवा की चिंता नहीं करता --क्रिश्चियन सेवा या कोई और सेवा। लेकिन सिद्ध कभी-कभी डुबती मानवता को बचाने के लिए अपना हाथ बढ़ा देता है। लेकिन कभी-कभी ही, हमेशा नहीं। यह कोई अनिवार्यता नहीं है, यह कोई जरूरी नहीं है। यह उसका चुनाव है कि वह ऐसा करे या न करे। इसलिए तीसरी पंक्ति है: 'नमो आयरियाणं नमो नमो।'

मैं आचार्यों, गुरूओं के चरणों में झुकता हूं। उन्होंने भी उसी को उपलब्ध किया है, लेकिन वे संसार की और मुख किए हुए हैं। वे संसार की सेवा करते है। वे संसार में रहते हुए भी नहीं रहते.....फिर भी संसार में है। चौथी ओम् शांति शांति शांति .... यह मंत्र बहुत सुंदर है। अब मैं अनुवाद करने की कोशिश करता हूं, 'मैं अरिहंतों के चरणों में झुकता हूं, जैन धर्म में अरिहंत उसे कहते है जिसे बौद्ध धर्म में बोद्धिसत्व कहते है—जिसने परम सत्य को पा लिया, लेकिन किसी और कि चिंता नहीं करता। वह अपने धर पहुंच गया और संसार की और उसने पीठ कर ली। वह कोई धर्म नहीं बनाता, वह कोई उपदेश भी नहीं देता, वह कोई धोषणा भी नहीं करता। निश्चित ही सबसे पहले उसको ही याद किया जाना चाहिए। सबसे पहले उन सब लोगों का स्मरण जिन्होंने स्वयं को जाना और चुप रह गए। पहला आदर शब्दों के लिए नहीं, वरन मौन के लिए है, दूसरों की सेवा के लिए नहीं, वरन स्वयं को जानने के लिए है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दूसरों की सेवा होती है या नहीं, वह प्राथमिक नहीं है, गौण है। प्राथमिक है कि उसने स्वयं को जाना और इस दुनिया में स्वयं को जानना बहुत मुश्किल है। लाग कल्पनाओं में जी रहे है, वही उनका जीवन है—एक कल्पना मात्र, जो कही है नहीं, होली घोस्ट, लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है कि घोस्ट होली है या अन होली। असल में वह है ही नहीं। बेवकूफी की हद है कि ईसाई त्रिमूर्ति में होली घोस्ट को सम्मिलित किया गया है, परमात्मा, बेटा और होली घोस्ट। सिर्फ स्त्री से बचने के लिए उन्होंने होली घोस्ट को वहां रखा हुआ है। मां को हटा कर होली घोस्ट को वहीं रखा है। इस होली घोस्ट ने पूरी ईसाइयत को बरबाद किया है। क्योंकि एकदम शुरूआत से ही, एक दम बुनियाद से ही यह झूठ और भ्रमों पर आधारित है।

लेकिन इस होली घोस्ट जैसे घिनौने व्यक्ति को त्रिमूर्ति में सम्मिलित करने के लिए ईसाइयों को क्षमा नहीं किया जाएगा, और इस पवित्र घोस्ट ने बेचारी मेरी को गर्भवती बनाने का अपवित्र काम किया। किसने तुम सोचते हो बेचारे बढ़ई की पत्नी को गर्भ वती बनाया? होली घोस्ट ने, वाह, महान पवित्रता है, तो फिर अपवित्रता क्या होगी। एक बात निश्चित है कि ईसाइयत स्त्री से पूरी तरह बचने की, उसे पूरी तरह से मिटा देने की कोशिश करती रही है। उन्होंने एक परिवार तक बना दिया। अगर कोई बच्चा परिवार का चित्र बनाए—पिता, बेटा और होली घोस्ट—तो तुम कहोगे, यह क्या मूर्खता है, मां कहां है। बिना मां के पिता कैसे हो सकता है, बिना मां के बेटा कैसे हो सकता है, एक छोटा बच्चा भी तुम्हारे तर्क को समझ सकता है। लेकिन ईसाई धर्मशास्त्री नहीं वह बच्चा नहीं है, वह मंदबुद्धि बच्चा है। उसके दिमाग में कुछ गड़बड़ है, विशेषकर बाई और का उसका दिमाग या तो खाली है या उसमें कचरा भरा हुआ है।

जैन 'अरिहंत' उस व्यक्ति को कहते हैं जिसने स्वयं को उपलब्ध कर लिया है, और उस आत्म-अपलब्धि के सौंदर्य से इतना खोया हुआ है कि वह समस्त संसार को भूल गया है। अरिहंत शब्द का अर्थ है: जिसने शत्रु को मार डाला। और शत्रु है अहंकार, मंत्र के पहले भाग का अर्थ है: मैं उसके चरणों में झुकता हूं जिसने स्वयं को अपलब्ध कर लिया है। दूसरा भाग है: 'नमो सिद्धाणं नमो-नमो।'

यह मंत्र प्राकृत में है, संस्कृत में नहीं। प्राकृत जैनियों की भाषा है। यह संस्कृत से ज्यादा प्राचीन है। संस्कृत शब्द का अर्थ होता है परिष्कृत। तुम परिष्कृत शब्द से ही समझ सकते हो कि इसके पहले अवश्य कुछ रहा होगा, अन्यथा तुम किसे परिष्कृत करोगे? प्राकृत का अर्थ है बिना परिष्कृत के, स्वाभाविक, अनगढ़। और जैन का यह कहना बिलकुल ठीक है कि उनकी भाषा दुनियां में सबसे प्राचीन है। उनका धर्म भी अति प्राचीन है। हिंदुओं के ग्रंथ ऋग्वेद में जैनियों के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का उल्लेख है। निश्चित ही इसका मतलब हुआ कि वह ऋग्वेद से बहुत पुराना है। ऋग्वेद दुनिया में सबसे प्राचीन पुस्तक है। और इसमें जैन तीर्थंकर आदिनाथ का उल्लेख इतने आदर के साथ किया गया है की एक बात निश्चित है कि वे उन लोगों के समकालीन नहीं हो सकते

जिन्होंने ऋग्वेद लिखा है। समकालीन गुरु को पहचानना बहुत मुश्किल है। उसकी किस्मत में तो निंदा ही होती है – चारों और से हर प्रकार की निंदा। उसको आदर नहीं मिलता। वह आदर योग्य व्यक्ति नहीं होता। समय लगता है, उसको क्षमा करने में लोगों को हजारों साल लगते है। केवल तभी वे उसका आदर दे पाते है। जब वे उसकी निंदा करने के अपराध-भाव से मुक्त होते है, तो वे उसका आदर करने लगते है, उसकी पूजा करने लगते है। मंत्र प्राकृत में है, अपरिष्कृत एवं अनगढ़। दुसरी पंक्ति है: 'नमो सिद्धाणं नमो नमो।'

मैं उसके चरणों में झुकता हूं जो अपने स्वभाव में पहुंच गया है। तो पहले और दूसरे में क्या अंतर है?

अरिहंत कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखता, कभी किसी प्रकार की सेवा की चिंता नहीं करता --क्रिश्चियन सेवा या कोई और सेवा। लेकिन सिद्ध कभी-कभी डुबती मानवता को बचाने के लिए अपना हाथ बढ़ा देता है। लेकिन कभी-कभी ही, हमेशा नहीं। यह कोई अनिवार्यता नहीं है, यह कोई जरूरी नहीं है। यह उसका चुनाव है कि वह ऐसा करे या न करे। इसलिए तीसरी पंक्ति है: 'नमो आयरियाणं नमो नमो।'

मैं आचार्यों, गुरूओं के चरणों में झुकता हूं। उन्होंने भी उसी को उपलब्ध किया है, लेकिन वे संसार की और मुख किए हुए हैं। वे संसार की सेवा करते है। वे संसार में रहते हुए भी नहीं रहते.....फिर भी संसार में है। चौथी पंक्ति हैं: 'नमो उवज्झायाणं नमो नमो।'

मैं उपाध्यायों, शिक्षकों, के चरणों में झुकता हूं। शिक्षक और गुरू के सूक्ष्म अंतर को तुम जानते हो। गुरु ने जाना है, और जो जाना है उसे वह दूसरों को बाँटता है। शिक्षक ने जानने बाल से प्राप्त किया है। और उसका ज्यों का त्यों संसार को दे देता है। लेकिन उसने स्वंय नहीं जाना है। इस मंत्र के रचयिता सचमुच अद्‌भुत है। वे उनके चरणों में भी झुकते है। जिन्होंने स्वयं नहीं जाना है। लेकिन कम से कम सद गुरूओं का संदेश लोगों तक पहुंचा रहे है। पाँचवीं पंक्ति उन सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण वाक्यों में से जिनसे संपर्क में मैं अपने जीवन में कभी भी आया। यह बड़ी अद्‌भुत बात है कि जब मैं छोटा सा बच्चा था तभी मेरी नानी ने इसे मुझे दिया। जब मैं तुम्हें यह समझाऊंगा तो तुम भी इसके सौदर्य को देखोगे। केवल उनमें ही इसको मुझे देने कि क्षमता थी। यद्यपि सब जैन इसको अपने मंदिरों में दोहराते है, लेकिन मैं किसी और को नहीं जानता जिसमें इसकी घोषणा करने का साहस रहा हो। लेकिन दोहराना एक बात है और अपने किसी प्रिय व्यक्ति के जीवन में इसे उतारना बिलकुल दूसरी बात है। 'नमो लाए सव्वसाहूणं नमो नमो।'

मैं उन सब लोगों के चरणों में झुकता हूं जिन्होंने स्वयं को जाना है।

बिना किसी भेद भाव के—चाहे वे हिंदू हो, चाहे वो जैन हो, चाहे बौद्ध, चाहे ईसाई, चाहे मुसलमान। मंत्र कहता है, मैं उन सबके चरणों में झुकता हूं जिन्होंने स्वयं को जाना है। जहां तक मैं जानता हूं, यही एकमात्र मंत्र है जो पूर्णत: धर्म निरपेक्ष है। जानने का कोई विषय नहीं है, जानने को कुछ नहीं है, केवल जानने वाला है। यह मंत्र एकमात्र धार्मिक बात थी--अगर तुम इसे धार्मिक कह सको—जो मुझे मेरी नानी द्वारा दी गई। और वह भी मेरे नाना के द्वारा नहीं, बल्कि मेरी नानी के द्वारा दी गई। क्योंकि एक रात मैंने उनसे पूछा।......एक रात उन्होंने कहा: 'तुम जागे हुए लगते हो, क्या नींद नहीं आ रही, क्या तुम कल करने वाली शैतानियों के बारे में सोच रहे हो।'

मैंने कहा: 'नहीं। लेकिन पता नहीं क्यों एक प्रश्न मुझमें उठ रहा है। सबका कोई न कोई धर्म होता है। और जब लोग मुझसे पूछते हैं कि तुम कौन से धर्म के हो। तो मैं कंधे बिचका देता हूं। अब कंधे बिचकाना तो कोई धर्म नहीं है। तो मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि मुझे क्या करना चाहिए।' उन्होंने कहा: 'मैं स्वयं किसी धर्म को नहीं मानती, लेकिन मुझे यह मंत्र बहुत प्रिय है और यही मैं तुम्हें दे सकती हूं। इसलिए नहीं की यह परंपरागत जैन मंत्र है, बल्कि सिर्फ इसलिए कि मैने इसके सौदर्य को अनुभव किया है। मैंने इसे लाखों बार दोहराया है और

हमेशा मुझे बहुत शांति मिली है। केवल इस भाव से कि उन सबको प्रणाम है जिन्होंने जाना है। यह मंत्र मैं तुम्हें दे सकती हूं। इसलिए इससे अधिक मेरे लिए संभव नहीं है।'

अब मैं कह सकता हूं कि वे सचमुच महान थी। क्योंकि जहां तक धर्म का संबंध है, सब झूठ बोल रहे है। ईसाई, यहूदी, जैन, मुसलमान, सब झूठ बोल रहे है। वे परमात्मा की, स्वर्ग और नरक की देवताओं की और सब तरह की बकवास करते है। जब कि पता उन्हें कछ नहीं है। वे महान थी। इसलिए नहीं कि वे जानती थी, बल्कि इसलिए कि वे एक बच्चे से झूठ नहीं बोल सकती थी। किसी को झूठ नहीं बोलना चाहिए—कम से कम बच्चे से झूठ बालना तो अक्षम्य है। सदियों से बच्चों का शोषण किया गया है, क्योंकि वे विश्वास करने को तैयार रहते है। बहुत आसानी से तुम उनसे झूठ बोल सकते हो। और वे तुम्हारा विश्वास कर लेते है, अगर तुम पिता हो, मां हो, तो वे सोचते हैं कि तुम सच ही बोलोगे। इसी तरह पूरी मनुष्यता भ्रष्टता में जीती है, झूठ के गहरी कीचड़ में, जो बच्चों से कह रहे है। अगर हम एक काम कर सकें, एक छोटा सा काम: हम बच्चों से झूठ न बोले और उनके सामने अपने अज्ञान को स्वीकार कर लें, तो हम धार्मिक हो जाएंगे और हम उन्हें धर्म के मार्ग पर ले आएंगे। बच्चे तो सरल होते है। उनके ऊपर अपना तथाकथित ज्ञान मत थोपों। लेकिन पहले तुम्हें स्वयं सत्य और सरल होना चाहिए, भले ही इससे तुम्हारा अहंकार टूटता हो—और इससे टूटे गा, ये तोड़ते ही वाला है। मेरे नाना ने मुझसे मंदिर जाने के लिए या उनके साथ चलने के लिए कभी नहीं कहा। मैं उनके पीछे बहुत बार जाता था, लेकिन वे कहते, 'अगर तुम मंदिर जाना चाहते हो तो अकेले जाओ। मेरे पीछे मत आओ।'

वे कठोर व्यक्ति नहीं थे, लेकिन इस बात पर वे बहुत सख्त थे। मैंने बहुत बार उनसे पूछा, क्या आप अपने कुछ अनुभव मुझे बता सकते है। और वे हमेशा टाल जाते। जब बैलगाड़ी में ते मेरी गोद में अंतिम साँसे ले रहे थे तो उनहोंने अपनी आंखे खोली और पूछा, समय क्या है, मैंने कहा: 'नौ बज रहे होंगे, एक क्षण के लिए वे चुप रहे और फिर उनहोंने कहां:'

''नमो अरिहंताणं नमो नमो। नमो सिद्धाणं नमो नमो। नमो उवज्झायाणं नमो नमो। नमो लोए सव्वसाहूणं नमो नमो। ओम् शांति: शांति: शांति:.....।''

इसका क्या अर्थ हुआ, इसका अर्थ हुआ ''ओम्''—ध्वनि रहित की परम ध्वनि। और वे सूर्य की पहली किरणों में ओस की बूंद की भांति लुप्त हो गए। वहां केवल शांति है, शांति है, शांति है......... अब मैं इसमें प्रवेश कर रहा हूं.......

सत्र—6 नानी—नानी का प्रेम....

लेकिन दुर्भाग्य से 'सैड' शब्द से फिर उस जर्मन आदमी एकिड़ सैड कि याद आ गइ, है भगवान, उसे मैं जीवन में फिर कभी कुछ कहने वाला नहीं था। मैं उसकी पुस्तक से यह जानने की कोशिश कर रहा था कि उसको मुझमें ऐसा क्या गलत दिखाई दिया कि जिसके आधार पर वह यह कह रहा है कि मैं एनलाइटेंड नहीं हूं। उत्सुकता वश मैं यह देखना चाहता था कि उसने क्यों इस तरह का निष्कर्ष निकाला। और जो मुझे मालूम हुआ वह सचमुच हंसने जैसा है। मैं इल्युमिनटेड हूं, ऐसा मानने का उसका कारण यह है कि मैं जो कह रहा हूं वह निश्चित ही समस्त मानवता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन मैं एनलाइटेंड नहीं हूं, ऐसा मानने का उसका कारण है मेरे बोलने का ढंग से मैं बोलता है। क्योंकि ऐसा लगता है जैसे कि यह व्यक्ति अनेक एनलाइटेंड लोगों से मिल चुका है। अनेक एनलाइटेंड लोगों को जानता है। मेरे बोलने के ढंग इसे उन लोगों जैसा नहीं लगता है। मैं उसके लिए एक अमरीकन शब्द का प्रयोग करना चाहता हूं: यह सन-ऑफ-ए-बिच, सिर्फ जड़बुद्धि है। वोधिधर्म को अगर यह अभिव्यक्ति मालूम होती तो वह चीन के सम्राट वू से जरूर कहता, 'यू सन-ऑफ-ए-बिच', जहन्नुम में जाओ और मुझे अकेला छोड़ दो।'' लेकिन उन दिनों यह अमरीकन अभिव्यक्ति थी ही नहीं। नहीं की अमरीका नहीं था। यह तो यूरोपियन मान्यता है कि कोलंबस ने अमरीका की खोज की, कई बार उसे खोजा जा चूका है, लेकिन हमेशा उसे दबा दिया गया। क्या मैं तुम्हें याद दिलाऊ कि मैक्सिको शब्द संस्कृत के मक्षिका शब्द से आता है। और मैक्सिको में ऐसे हजारों प्रमाण मिलते है जिनसे सिद्ध होता है। जिसस क्राइस्ट से बहुत पहले वहां पर हिंदू धर्म प्रचलित था—कोलंबस तो बहुत बाद में आया। सच तो यह है कि अमरीका, विशेषकर दक्षिण अमरीका एक ऐसे महाद्वीप का हिस्सा था जिसमें अफ्रीका भी सम्मिलित था। भारत ठीक मध्य में था। अफ्रीका नीचे था और अमेरिका ऊपर था वे। एक बहुत ही उथले सागर से विभक्त थे। तुम उसे पैदल चल कर पार कर सकते थे। पुराने भारतीय शास्त्रों में इसके उल्लेख है। वे कहते है कि लोग एशिया से अमरीका पैदल ही चले जाते थे। यहां तक कि शादियाँ भी होती थी। कृष्ण के प्रमुख शिष्य और महाभारत के प्रसिद्ध योद्धा अर्जुन ने मैक्सिको की एक लड़की से शादी की थी। निश्चित ही वे मैक्सिको को मक्षिका कहते थे। लेकिन उसका वर्णन बिलकुल मैक्सिको जैसा ही है। मैक्सिको में हिंदुओं के देवता गणेश की मूर्तियां है, इंग्लैड में गणेश की मूर्ति का मिलना असंभव है। कहीं भी मिलना असंभव है, जब वक कि वह देश हिंदू धर्म के संपर्क में न आया हो। जैसे सुमात्रा, बाली, और मैक्सिको में संभव है—लेकिन और कहीं नहीं, जब तक वहां हिंदू धर्म न रहा हो। मैं तो यह कुछ उल्लेख कर हरा हूं, अगर तुम इसके बारे में और अधिक जानकारी पाना चाहते हो तो तुम्हें भिक्षु चमन लाल की पुस्तक ''हिंदू अमरीका'' देखनी पड़ेगी, जो कि उनके जीवन भर का शोधकार्य है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि कोई भी उनकी पुस्तक पर ध्यान नहीं देता। ईसाई तो निश्चित ही ध्यान नहीं द सकते, लेकिन प्रतिभाशाली लोगों को कोई पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए। लेकिन एनलाइटेंड या इल्युमिनटेड व्यक्ति को कैसे बोलना चाहिए, इसका निर्णय करने बाले ये कोन है। क्या इन्होंने वोधिधर्म को जाना है, क्या इन्होंने उनके चित्र को देखा है? ये तो तुरंत इस नतीजे पर पहुंच जाएंगे कि एनलाइटेंड व्यक्ति ऐसा दिखाई नहीं दे सकता। वह बहुत ही डरावना दिखता है। उसकी आंखें जंगली शेर जैसी है। और वह तुम्हारी तरफ देखता है तो ऐसा लगता है मानो अभी यह चित्र में से कूदेगा और तुम्हारे उपर झपटेगा और तुम्हे मार डालगा। ऐसा वह था। लेकिन छोड़ो वोधिधर्म को, क्योंकि अब चौदह सदियां बीत गई है। मैं वोधिधर्म को व्यक्तिगत रूप से जानता था। मैंने उसके साथ कम से कम तीन महीने यात्रा की थी। जैसे मैं उसे प्रेम करता था वैसे ही वह मुझसे प्रेम करता था। तुम्हें यह जानने की उत्सुकता होगी कि यह मुझे क्यों प्रेम करता था। यह मुझे इसलिए प्रेम करता था क्योंकि मैंने उससे कभी कोई

प्रश्न नहीं पूछा। उसने मुझसे कहां, ''मुझे मिलने वालों में तुम ऐसे पहले व्यक्ति हो जो कोई प्रश्न नहीं पूछता। और मैं प्रश्नों से सिर्फ ऊबता हूं। तुम एकमात्र व्यक्ति हो जो मुझे बोर नहीं करते।'' मैंने कहा: ''इसका एक कारण है।''

उसने पूछा: ''क्या कारण है?'' मैने कहा: ''मैं केवल उत्तर देता हूं, मैं कभी प्रश्न नहीं पूछता। अगर तुम्हारे पास कोई प्रश्न हो तो तुम मुझसे पूछ सकते हो। अगर तुम्हारे पास प्रश्न नहीं है तो अपना मुहँ बंध रखो।'' हम दोनों हंसे, क्योंकि हम दोनों एक जैसे पागल थे। उसने मुझे अपने साथ यात्रा जारी रखने को कहां, लेकिन मैंने कहा, ''मुझे माफ करो। मुझे अपने रास्ते जाना है। और अब वह तुम्हारे रास्ते से अलग होता है।'' वह भरोसा न कर सका। उसने इससे पहले अपने साथ चलने के लिए कभी किसी को नहीं कहा था। वह वही आदमी था जिसने अस जमाने के सबसे बड़े साम्राज्य से महान चीनी सम्राट बू को भी ऐसे इनकार कर दिया था जैसेकि वह कोई भिखारी हो। वोधिधर्म को भरोसा नहीं आया कि मैंने उसके साथ निमंत्रण को अस्वीकृत कर दिया है।''

मैंने कहा: ''अब तुम्हें मालूम हुआ कि अस्वीकृत होने पर कैसा लगता है। मैं तुम्हें इसका स्वाद देना चाहता था। अलविदा'' लेकिन वह चौदह सौ साल पहले कि बात है।

या अगर उसे सिर्फ भारतीय बुद्धत्व से प्रयोजन है, जो एक मूर्खों को प्रभावित करता लगता है, अन्यथा भारत का इससे क्या लेना-देना है। बुद्धत्व तो सभी जगह घटा है। लेकिन अगर उसे केबल भारतीय बुद्धत्व से प्रयोजन है, तो रामकृष्ण हमारे बहुत निकट है। उनके शब्दों को भी ज्यों का त्यों प्रस्तुत नहीं किया गया है। क्योंकि वे देहाती थे और देहाती भाषा का ही प्रयोग करते थे। लोगों के अनुसार जिन शब्दों को प्रयोग समाधिस्थ व्यक्ति को नहीं करना चाहिए, वे सब निकाल दिए गए थे। मैंने बंगाल में धूम-धूम कर ऐसे लोगों से पूछा है जो अभी जीवित है कि रामकृष्ण कैसे बोलते थे। उन सब ने बताया कि वे भयंकर थे। वे ऐसे बोलते थे जैसे आदमी बोलना चाहिए—सीधा साफ, बिना लाग-लपटे के। मैं अपने नाना की मृत्यु के बारे में बसत कर रहा था। वह हमेशा के लिए बिछुड़ना था। हम दुबारा नहीं मिलेंगे। फिर भी इसमें एक सौंदर्य था। और उनहोंने मंत्र जाप से इसे सुंदर, और प्रार्थना पूर्ण बना दिया—इसमें सुगंध आ गई। वे बूढे थे और मर रहे थे, शायद जबरदस्त हार्ट-अटैक से। हमे इसके बारे में कुछ पता न था। क्योंकि गांव में कोई डाक्टर नहीं था, कोई दवा की दुकान तक नहीं थी। तो हमें उनकी मृत्यु का कारण नहीं मालूम। लेकिन मैं सोचता हूं कि वह जबरदस्त हार्ट-अटैक था। मैंने उनके कान में पूछा: ''नाना, विदा होने से पहले क्या आप मुझे कुछ कहना चाहते है। कोई अंतिम शब्द, या आप मुझे कुछ देना चाहते है। जो सदा आपकी याद दिलाता रहे।'' ़उन्होंने अपनी अंगूठी निकाल कर मेरे हाथ में रख दी। वह अंगूठी अब किसी संन्यासी के पास है। मैंने वह किसी को दे दी। लेकिन वह अंगूठी हमेशा एक रहस्य थी। वे बार-बार उस अंगूठी के भीतर देखते रहते थे। लेकिन अपने पूरे जीवन में उन्होंने कभी-कभी किसी को नहीं देखने दिया कि उसके भीतर क्या है। उस अंगूठी के दोनों और कांच की खिड़की थी जिसमें से देखा ज सकता था। ऊपर ऐ हीरा लगा हुआ था और दोनों और कांच की खिड़की थी। भीतर जैन तीर्थ कर महावीर की एक बहुत छोटी लेकिन बहुत सुंदर मूर्ति थी। और दोनों खिड़कियों में मैग्नीफ़ाइंग ग्लासेस थी। जिसके कारण वह बहुत बड़ी दिखाई देती थी। वह मेरे काम की न थी, क्योंकि पूरी कोशिश की लेकिन मुझे अफसोस है कि कभी महावीर से उतना प्रेम नहीं कर सका जितना मैं बुद्ध से करता हूं। यद्यपि वे दोनों समकालीन थे।

महावीर में कमी है, और उसके बिना मेरा ह्रदय उनके लिए नहीं धड़क सकता। वे बिलकुल पत्थर की मूर्ति जैसे दिखाई देते है। बुद्ध अधिक जीवंत दिखाई देते है, लेकिन मेरे स्तर की जीवंतता तक नहीं। इसीलिए मैं चाहता हूं कि वे ज़ोरबा भी बने। अगर कभी वे मुझे परलोक में कहीं मिले तो बडी मुश्किल होने बाली है। वे मुझ पर जोर से चिल्लाएंगे, तुम चाहते हो कि मैं ज़ोरबा बन जाऊँ। न तो ज़ोरबा अकेले बच सकता है—वह

हिरोशिमा में समाप्त हो जाएगा—न ही बुद्ध मनुष्य के भावी मनोविज्ञान को अध्यात्म और भौतिकवाद, पूर्व और पश्चिम के बीच एक सेतु होने की जरूरत है। किसी दिन संसार मेरा आभार मानेगा कि मेरा संदेश पश्चिम पहुंच रहा है। अन्यथा आज तक तो मुमुक्षु पूर्व जाते रहे है। लेकिन इस बार एक जीवित बुद्ध का संदेश पश्चिम में पहुंच रहा है। पश्चिम नहीं जानता की बुद्धो को कैसे पहचाना जाए, क्योंकि उसने कभी किसी बुद्ध को जाना ही नहीं। उसने आंशिक बुद्धो को जाना है। जीसस को, पाइथागोरस को, डायोजनीज को। उन्होंने कभी समग्र बुद्ध को नहीं जाना। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि वे मेरे बारे में वाद-विवाद

कर रहे है। क्या तुम्हें मालूम है कि भारतीय समाचार-पत्रों में वे क्या छाप रहे है। वे एक कहानी छाप रहे है कि शायद दुश्मनों ने मेरा अपहरण कर लिया है और मेरा जीवन खतरे में है। अब मैं यहां पर हूं और उनको मुझसे कोई मतलब नहीं है। भारत सड़ा-गला देश है। लगभग दो हजार वर्षो से यह सड़ा गला देश, दुर्गंध आती है इससे। भारतीय आध्यात्मिकता से अधिक दुर्गंध और किसी चीज से नहीं आती। यह लाश है और बहुत पुरानी लाश है—दो हजार वर्ष पुरानी।

लोग भी कैसी कहानियां गढ़ लेते है कि दुश्मनों ने मेरा अपहरण कर लिया है और अब मेरा जीवन खतरे में है। सच तो यह है कि पिछले पच्चीस वर्षो से लगातार मेरा जीवन खतरे में है। यह चमत्कार ही है कि मैं अभी तक जीवित हूं।

मैं तुम्हें कह रहा था मेरे नाना ने मृत्यु से पहले अपनी सर्वाधिक प्रिय वस्तु मुझे दी—महावीर की मूर्ति, जो अंगूठी में हीरे के पीछे छिपी हुई थी। आंखों में आंसू भर कर उन्होंने कहा, तुम्हें देने के लिए मेरे पास और कुछ नहीं है। क्योंकि जो कुछ भी मेरे पास है। तुमसे भी ऐसे ही छीन लिया जाएगा जैसे मुझसे छीन लिया गया है। जिसने स्वयं को जाना है, उसके प्रति अपना प्रेम ही मैं तुम्हें दे सकता हूं। यद्यपि मैंने उनकी अंगूठी अपने पास नहीं रखी, फिर भी मैंने उनकी इच्छा को पूरा कर दिया है। मैंने उस एक को जाना है, और मैंने उसे अपने भीतर जाना है। एक अंगूठी में होने से क्या फर्क पड़ता है। लेकिन बेचारे वृद्ध आदमी, उनहोंने अपने गुरु महावीर को प्रेम किया, और उन्होंने अपना प्रेम मुझे दिया। अपने गुरु के प्रति उनके प्रेम का मैं आदर करता हूं। नाना के होठों पर अंतिम शब्द थे: ''चिंता मत करो, क्योंकि मैं मर नहीं रहा हूं।'' हम सबने इंतजार किया कि शायद वे और कुछ कहेंगे, लेकिन वे अंतिम शब्द थे। उनकी आंखें बंद हुई और वे नहीं रहे।

अभी भी मुझे वह मौन याद है। बैलगाड़ी एक नदी के पाट में से गुजर रही थी। मुझे सब विस्तार से याद है। मैं कुछ नहीं बोला, क्योंकि मैं अपनी नानी को परेशान नहीं करना चाहता था। वे कुछ न बोली। कुछ क्षण बित गये, फिर मुझे उनकी कुछ चिंता हुई और मैंने कहा: 'कुछ बोलों, इतनी चुप मत रहो, यह असहनीय है।'

क्या तुम भरोसा कर सकते हो, उनहोंने एक गीत गाय, ऐसे मैंने सीखा कि मृत्यु का भी उत्सव मनाया जा सकता है, उन्होंने वो गीत गया जो मेरे नाना से पहली बार प्रेम हुआ था उस समय गया था। यह भी उल्लेखनीय है कि नब्बे वर्ष पहले, भारत में नानी में प्रेम करने का साहस था। वे चौबीस साल की उम्र तक अविवाहित रहीं। यह विरली बात थी। एक बार मैंने उनसे पूछा कि आप इतनी उम्र तक अविवाहित क्यों रहीं। वे इतनी सुंदर थी.......मैंने मजाक में उनसे कहा कि छतर पुर का राजा भी शायद आपके प्रेम में पड़ गया होता। वे बोली: 'आश्चर्य है, तुमने यह बात कैसे कही, क्योंकि वह मेरे प्रेम में पड़ गया था। लेकिन मैंने उसे इनकार कर दिया। और केवल उसको ही नहीं और बहुतों को भी। उन दिनों भारत में लड़कियों की शादी सात साल की उम्र में या ज्यादा से ज्यादा नौ साल की उम्र में कर दी जाती थी। प्रेम का भय....अगर वे बड़ी हुई तो शायद वे प्रेम में पड़ सकती है, लेकिन नानी के पिता कवि थे। उनके गीत अभी भी खजुराहो तथा आस-पास क गांवों में गाए जाते है। उन्होंने जोर दिया कि जब तक वह राज़ी नहीं होती तक वे उसकी किसी से शादी नहीं करेंगे। संयोग से

नानी का प्रेम मेरे नाना से हो गया। मैंने उनसे पूछा, 'यह और आश्चर्य की बात है कि आपने छतर पुर के राजा को इनकार कर दिया और इस गरीब आदमी के प्रेम में पड़ गई। किस लिए, निश्चित ही वे कोई बहुत सुंदर नहीं थे, और न किन्हीं और अर्थों में असाधारण थे। तुम उनके प्रेम में क्यों पड़ी?'

उन्होंने कहा: 'तुम गलत सवाल पूछ रहे हो, प्रेम में 'क्यों' नहीं होता। मैंने सिर्फ उनको देखा, और बस कुछ हो गया। मैंने उनकी आंखों देखी और मुझे गहन विश्वास पैदा हो गया—एक अटूट विश्वास जो आज तक डांवाडोल नहीं हुआ।'

मैंने अपने नाना से पूछा था, ''नानी कहती है कि उनको आपसे प्रेम हो गया था। उनकी तरफ से तो ठीक है, लेकिन आप क्यों विवाह के लिए राज़ी हो गए।'' उनहोंने कहां: 'मैं कवि या विचारक नहीं हूं, लेकिन मैं सौंदर्य को देखूं तो उसे पहचान सकता हूं।'

मैंने अपनी नानी से अधिक सुंदर स्त्री कभी नहीं देखी। मैं स्वयं उनके प्रेम में था, और उनके पूरे जीवन उनसे बहुत प्रेम करता रहा। अस्सी साल की अवस्था में जब उनकी मृत्यु हुई तो मैं तुरंत घर पहुंचा। वहां वे लेटी हुई थी—मृत। सब लोग मेरा इंतजार कर रहे थे। क्योंकि नानी ने उनसे कहा था कि जब तक मैं न पहुंच जांऊ तब तक उनका अंतिम संस्कार न किया जाए। और उन्होंने जोर देकर कहा था कि उनकी चिता को मैं ही अग्नि दूँ। तो वे मेरा इंतजार कर रहे थे। मैं अंदर गया और उनके चेहरे से कपड़ा हटाया.......और में अभी भी सुंदर थी। असल में पहले से भी सुंदर, क्योंकि सब बिलकुल शांत था—जीवन की भाग दौड़ समाप्त हो गई थी। श्वास की हलन-चलन भी बंद हो गई थी। वे केवल उपस्थिति मात्र थी। उनकी चिता को आग देना मेरे जीवन को सबसे कठिन काम था। यह वैसे ही था जैसे कि मैं लियोनार्डो या विन सेंट वान गॉग के सबसे सुंदर चित्र को आग लगा रहा होऊं। निश्चित ही, मेरे लिए वे मोना लिसा से भी अधिक मूल्यवान थी। क्लियोपैट्रा से भी अधिक सुंदर थी। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है। सौंदर्य की जो परख जो मेरे भीतर है यह उन्हीं की देन है। मैं जो हूं, वैसा होने में उन्होंने सब तरह से मेरी मदद की है। उनके बिना मैं शायद एक दुकानदार होता, या डाक्टर, या इंजीनियर होता। क्योंकि जब मैंने अपनी मैट्रिक की परीक्षा पास की तो मेरे पिता इतने गरीब थे कि मुझे विश्वविद्यालय भेजने के लिए कर्ज तक लेने को तैयार थे। उनका पूरा आग्रह था कि मैं विश्वविद्यालय जाऊँ। मैं जाना चाहता था, लेकिन मेडिकल कालेज नहीं जाना चाहता था और इंजीनियरिंग कालेज भी नहीं जाना चाहता था। मैंने डाक्टर या इंजीनियर बनने से साफ मना कर दिया। मैंने उनसे कहा, 'अगर आप सच जानना चाहते है तो सच यह है कि मैं संन्यासी बनना चाहता हूं, एक घुमक्कड़।'

उन्होंने कहा: 'क्या, एक घुमक्कड़?' मैंने कहा: 'हां, में विश्वविद्यालय दर्शनशास्त्र, ये फिलासफी पढ़ना चाहता हूं, ताकि मैं एक दार्शनिक घुमक्कड़ बन सकूँ।'

वे मना करते हुए बोले: 'इसके लिए तो मैं कर्ज के झंझट नहीं लूँगा।'

मेरी नानी ने कहा: 'बेटा, तुम फ़िकर न करो, तुम जाओ और जो करना चाहते हो करो। मैं जिंदा हूं। मैं अपना सब कुछ बेच-बाच कर भी तुम्हारी इच्छा पूरी करूंगी। मैं तुमसे कभी नहीं पूछूंगी कि तुम कहां जाना चाहते हो और क्या पढ़ना चाहते हो।'

उनहोंने कभी नहीं पूछा, और वे बराबर मुझे पैसे भेजती रही, तब भी जग मैं प्रोफेसर बन गया। मुझे उन्हें कहना पडा कि अब तो मैं स्वयं कमा रहा हूं और अब तो मुझे उनको पैसे भेजने चाहिए। लोग आश्चर्य करते थे, कि इतनी पुस्तकें खरीदने के लिए मेरे पास इतना पैसा कहां से आता है क्योंकि मेरे पास हजारों पुस्तकें थी। जब मैं हाईस्कूल में पढ़ता था उस समय भी मेरे घर में हजारों पुस्तकें थी। मेरा सारा घर पुस्तकों से भरा हुआ था। और सब आश्चर्य करते थे कि मेरे पास पैसा कहां से आता है। मेरी नानी ने मुझसे कहा हुआ था, कभी किसी को

मत बताना कि तुमको मुझसे पैसा मिलता है। वे मुझे बराबर पैसे भेजती रही। तुम्हें जान कर आश्चर्य होगा कि जिस महीने उनकी मृत्यु हुई उस महीने भी उन्होंने हमेशा की तरह मुझे पैसे भेजे। जिस दिन उनकी मृत्यु हुई उस सुबह उन्होंने चेक पर हस्ताक्षर किए थे। और तुम्हें यह जान कर और भी आश्चर्य होगा कि वही अंतिम रकम थी उनके बैंक में। शायद किसी तरह उन्हें मालूम था कि अब कोई कल नहीं होगा। मैं अनेक प्रकार से भाग्यवान हूं, लेकिन ऐसे नाना-नानी पाने के लिए विशेष भाग्यवान हूं ...... और वे सुनहरे आरंभिक वर्ष।

सत्र—7 जैन मुनि से संवाद

गुड़िया को मालूम है कि मैं नींद में बोलता हूं, लेकिन उसे यह नहीं मालूम कि मैं किससे बोलता हूं। सिर्फ मैं जानता हूं यह। बेचारी गुड़िया, मैं उससे बातें करता हु और वह सोचती है और चिंता करती है कि क्यों बोल रहा हूं और किससे बोल रहा हूं। लेकिन उसे पता नहीं कि मैं इसी तरह उससे बातें करता हूं। नींद एक प्राकृतिक बेहोशी है। जीवन इतना कटु है कि हर आदमी को रात में कम से कम कुछ घंटे नींद की गोद में आराम करना पड़ता है। और उसको आश्चर्य होता है कि मैं सोता भी हूं या नहीं। उसके आश्चर्य को मैं समझ सकता हूं। पिछले पच्चीस सालों से भी अधिक समय से मैं सोया नहीं हूं। देव राज, चिंता मत करो। साधारण नींद तो मैं सारी दुनिया में किसी भी व्यक्ति से अधिक सोता हूं—तीन घंटे दिन में और सात, आठ या नौ घंटे रात में—अधिक से अधिक जितना कोई भी सो सकता है। कुल मिला कर पूरे दिन में मैं बारह घंटे सोता हूं। लेकिन भीतर मैं जागा रहता हूं। मैं अपने को सोते हुए देखता हूं। और कभी-कभी रात के समय इतना अकेलापन होता है कि मैं गुड़िया से बात करने लगता हूं। लेकिन उसकी बहुत मुश्किलें है। पहली तो यह कि जब मैं नींद में बोलता हूं तो हिंदी में बोलता हूं। नींद में मैं अंग्रेजी में नहीं बोल सकता, मैं कभी नहीं बोलुगां, हालांकि अगर मैं चाहूं तो बोल सकता हूं, एक आध बार मैंने कोशिश भी की है और मैं सफल भी रहा हूं। लेकिन मजा किरकिरा हो जाता है। तुम्हें मालूम होगा मैं उर्दू की प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का एक गीत रोज सुनता हूं। रोज यहां आने से पहले मैं उसको बार-बार सुनता हू। इतनी बार सून कर तो कोई पागल हो जाएगा। मैं रोज गुड़िया पर उसी गीत की ड्रिलिंग करता हूं। उसे सुनना ही पड़ता है, उससे बचने का कोई उपाय नहीं है। जब मेरा काम पूरा हो जाता है। तो मैं फिर उस गीत को सुनता हूं। मैं अपनी भाषा को प्रेम करता हूं,...इस लिए नहीं की वो मेरी भाषा है, लेकिन वह इतनी सुंदर है कि अगर वह मेरी न भी होती तो भी मैं उसे सिखा होता। जो गीत वह रोज सुनती है और जो उसे बार-बार सुनना पड़ेगा, उसमें कहा है: 'तुम्हें याद हो के न याद हो, वह जो हममें तुममें करार था। कभी तुम कहा करते थे कि तुम दुनिया में सबसे खूबसूरत स्त्री हो। अब मुझे नहीं मालूम कि तुम मुझे पहचान पाओगें या नहीं। शायद तुम्हें याद नहीं, लेकिन मुझे अभी भी याद है। मैं न उस करार को भूल सकती हूं, न तुम्हारे शब्दों को जो तुमने मुझसे कहे थे। तुम कहा करते थे कि तुम्हारा प्रेम पावन है। क्या तुम्हें अभी भी याद है। शायद नहीं, लेकिन मुझे याद है—निश्चित ही पूरी तरह से नहीं, समय ने कुछ-कुछ भुला दिया है।'

'मैं तो जीर्ण शीर्ण महल हूं, लेकिन अगर तुम देखो, अगर तुम ध्यान से देखो तो पाओगें कि मैं वैसी ही हूं। मुझे अभी भी तुम्हारा करार और तुम्हारे शब्द याद है। वह करार जो कभी हमारे बीच था, क्या वह तुम्हे अभी भी याद है के नहीं? मैं तुम्हारे बारे में नहीं जानती, लेकिन मुझे अभी भी याद है।

मेरी नींद में जब मैं गुड़िया से बातें करता हूं तो फिर हिंदी में बोलता हूं, क्योंकि मुझे मालूम है कि उसका अचेतन अभी भी अंग्रेजी नहीं है। वह इंग्लैड में सिर्फ कुछ वर्षो तक ही थी। उसके पहले वह भारत में थी और अब वह फिर भारत में है। इन दोनों कालों के बीच जो घटा, वह सब मैं पोंछ डालने की कोशिश करता रहा हूं। इसके बारे में बाद में, जब समय आएगा....'

आज मैं जैन धर्म के बारे में कुछ कहने बाला था। मेरा पागलपन तो देखो। हां, मैं बिना किसी सेतु के एक शिखर से दूसरे शिखर पर कूद सकता हूं। लेकिन तुम्हें एक पागल आदमी को थोड़ा सहन करना पड़ेगा। तुम प्रेम में पड़े हो, यह तुम्हारी जिम्मेवारी है, मैं इसके लिए जिम्मेवार नहीं हूं। संसार में सबसे कठिन तपश्चर्या बाला धर्म जैन धर्म है, या दूसरें शब्दों में सर्वाधिक आत्मपीड़क और परपीडक धर्म जैन धर्म है। जैन मुनि स्वयं को इतना सताते है कि संदेह होने लगता है कि ये पागल तो नहीं है।

मैं चार या पाँच साल का रहा होऊगां जब मैंने पहली बार एक दिगंबर जैन मुनि को देखा। वह मरी नानी के घर पा आमंत्रित था। मैं अपनी हंसी न रोक सका। मेरे नाना ने मुझे कहा: 'चुप रहो, में जानता हूं कि तुम शरारती हो। जब तुम जब तुम पडोसियों को परेशान करते हो तो मैं तुम्हें माफ कर सकता हूं, लेकिन यदि तुमने मेरे गुरू के साथ कोई शैतानी की तो मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता। ये मेरे गुरु है। इन्होंने मुझे घर्म के आंतरिक रहस्यों में दीक्षा दी है।

मैंने कहा: 'आंतरिक रहस्यों से मेरा कोई संबंध नहीं हैं। मेरा तो दिलचस्पी बाहरी रहस्यों में है जो वह इतने साफ दिखा रहे है। ये नगन क्यों है। क्या ये कम से कम चडढी या लंगोटी नहीं पहल सकते है?'

मेरे नाना भी हंस पड़े। उन्होंने कहा: 'तुम समझते नहीं हो।'

मैंने कहा: 'ठीक है, मैं खुद ही उनसे पूछ लूंगा।' फिर मैंने अपनी नानी से पूछा, 'क्या मैं इस बिलकुल पागल आदमी से कुछ प्रश्न पूछ सकता हूं जो इस प्रकार पुरूष और स्त्रियों के सामने नग्न चले आते है?'

मेरी नानी ने हंस कर कहा: 'जो पूछना हो पूछो, और तुम्हारे नाना क्या कहते है, इसकी फ़िकर मत करो। मैं तुम्हें इजाजत देती हूं। अगर ते कुछ कहें तो तुम इशारा कर देना। मैं उन्हें ठीक कर दूंगी।'

नानी बहुत ही अच्छी थीं, बहुत साहसी थी; बिना किसी सीमा के पूर्ण स्वतंत्रता देने को तैयार थी। उनहोंने मुझसे यह भी नहीं पूछा कि मैं क्या पूछने जा रहा हूं। उन्होंने बस इतना ही कहा: 'जो पूछना हो पूछो।'

गांव के सब लोग जैन मुनि के दर्शन के लिए इकट्ठे हो गए थे। उनके तथाकथित उपदेश के बीच में मैं खड़ा हो गया। यह करीब चाल साल पहले की बात है। और तब से आज तक मैं निरंतर इन मूढ़ों से लड़ाई लड़ रहा हूँ। जिसका अंत मेरी मृत्यु के साथ ही होगा। शायद तब भी समाप्त न हो, मेरे लोग शायद उसे जारी रखें। मैंने सरल से प्रश्न पूछे, लेकिन वह उत्तर न दे सका। मुझे बडी हैरानी हुई और मेरे नाना को बहुत शर्म आई। मेरी नानी ने मेरी पीठ थपथपाई और कहा, 'शाबाश तुमने कर दिखाया। मुझे पता था कि तुम कर सकोगे।'

क्या पूछा था मैने? सिर्फ सीधा-सरल प्रश्न पूछे थे। मैंने पूछा था, 'आप दुबारा जन्म क्यों नहीं लेना चाहते, जैन धर्म में यह सरल सा प्रश्न है, क्योंकि जैन धर्म की कुल कोशिश है कि दुबारा जन्म न लेना पड़े। यह दुबारा जन्म को रोकने का पुरा विज्ञान है। तो मैने उससे बुनियादी प्रश्न पूछा। क्या आप दुबारा जन्म नहीं लेना चाहते?'

उसने कहा: 'नहीं, कभी नहीं।'

तो फिर मैंने पूछा: 'आप आत्महत्या क्यों नहीं कर लेते, आप अभी भी श्वास क्यों लिए जा रहे है। क्यों खाना, क्यों पानी पीना? खत्म करो, आत्महत्या कर लो। छोटी सी बात के लिए क्यों इतना उपद्रव करना।' वह चालीस साल से ज्यादा उम्र का न था। मैंने उससे कहा: 'अगर आप इस प्रकार चलते रहे तो शायद आपको और चालीस साल तक या उससे भी अधिक जीना पड़ेगा।'

यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि जो लोग कम खाते है वे लंबा जीते है। देवराज निश्चित ही मुझसे सहमत होगा, यह तो बार-बार प्रमाणित किया जा चूका है कि अगर आप किसी भी प्राणी को उसकी आवश्यकता से अधिक भोजन दें तो वे मोटे और सुंदर और सुडौल जरूर हो जाते है, लेकिन वे जल्दी मर जाते है। अगर आप उनकी आवश्यकता से आधा भोजन दें, ता यह आश्चर्य की बात है कि वे सुंदर तो नहीं दिखाई देते, लेकिन औसत आयु से करीब-करीब दुगुनी आयु तक जीवित रहते है। आधा भोजन और दुगुनी आयु: दुगुना भोजन और आधी आयु। तो मैंने जैन मुनि से कहा: 'ये सब तथ्य उस समय मुझे मालूम नहीं थे—अगर आप दुबारा पैदा नहीं होना चाहते तो आप जीवित क्यों है, क्या केवल मरने के लिए, तो फिर आत्महत्या क्यों नहीं कर लेते?'

मुझे नहीं लगता कि ऐसा प्रश्न उससे कभी किसी ने पूछा होगा शिष्टाचार की इस दुनिया में अभी कोई असली प्रश्न नहीं पूछता है। और आत्महत्या का प्रश्न सबसे असली प्रश्न है। 'अगर आप दुबारा पैदा नहीं होना चाहते तो, तो आप आत्महत्या कर ले, मैं आपको रास्ता बता सकता हूं। यद्यपि दुनिया के रास्तों के बारे में मैं अधिक नहीं जानता, लेकिन जहां तक आत्म हत्या का सवाल है मैं आपको कुछ सु1झाव अवश्य दे सकता हूं, आप गांव की पहाड़ी से कूद सकते है या आप नदी में छलांग लगा सकते है।'

मैंने जैन मुनि से कहा: 'बरसात के दिनों में आप मेरे साथ नदी में कूद सकते हो। थोड़ी देर हमारा साथ रहेगा, फिर आप मर सकते है, और में दूसरे किनारे पहुंच जाऊँगा। मैं अच्छा तैर सकता हूं।' वह बहुत चौड़ी नदी थी, विशेषकर बरसात के दिनों में तो मीलों चौडी, करीब-करीब समुद्र जैसी लगती था। जब उसमें खूब बाढ़ आती तब मैं उसमें कूद पड़ता—दूसरे किनारे पहुँचे के लिए या मरने के लिए, ज्यादा संभावना यही होती थी कि मैं दूसरे किनारे कभी नहीं पहुंचूंगा। उन्होंने मेरी और इतने गुस्से से देखा कि मुझे उनसे कहना पडा याद रखो, आपको दुबारा जन्म लेना ही पड़ेगा, क्योंकि आप में अभी क्रोध है। चिंताओं के संसार से मुक्त होने का यह तरीका नहीं है। आप इतने गुस्से से मुझे क्यों देख रहे है। मेरे प्रश्न का उत्तर शांति से दीजिए। सुखपूर्वक उत्तर दीजिए। अगर आप उत्तर नहीं दे सकते तो कह दीजिए कि मैं नहीं जानता। लेकिन इतना क्रोध मत कीजिए। उसने कह: 'आत्महत्या पाप है, मैं आत्महत्या नहीं कर सकता। लेकिन मैं चाहता हूं कि मेरा दुबारा जन्म न हो। सभी वस्तुओं का धीरे-धीरे त्याग करके मैं उस स्थिति को प्राप्त कर लूँगा।'

मैंने कहा: 'कृपया मुझे आप बताइए कि आपके पास है क्या। क्योंकि जहां तक मैं देख सकता हूं, आप नग्न हैं और आपके पास कुछ भी नहीं है।'

मेरे नाना ने मुझे रोकने की कोशिश की। मैंने अपनी नानी की और इशारा किया और उनसे कहा, 'याद रखिए, मैंने नानी से इजाजत ले ली है। और अब मुझे कोई भी रोक नहीं सकता, आप भी नहीं। मैंने नानी से आपके बारे में बात कर ली थी, क्योंकि मुझे डर था कि आप मुझसे नाराज हो जाएंगे। नानी ने कहा था बस मेरी तरफ इशारा कर देना। चिंता मत करों जैसे ही मैं उनकी तरफ देखूंगी, वे चुप हो जाएंगे।'

और आश्चर्य, ठीक ऐसा ही हुआ। नानी ने देखा भी नहीं और नाना चुप हो गए। बाद में मैं और मेरी नानी खूब हंसे। मैंने उनसे कहा: 'उन्होंने आप की तरफ देखा तक नहीं।'

असल में उन्होंने अपनी आंखे बंद कर ली, जैसे कि ध्यान कर रहे हो। मैंने उनसे कहा: 'नाना, बहुत खूब, आप क्रोधित हैं, उबल रहे है, आग जल रही है आपके अन्दर, फिर भी आप आंखें बंद करके ऐसे बैठे है, जैसे ध्यान कर रहे है। क्योंकि आपके गुरु अत्तर नहीं दे पा रहे है, लेकिन मैं कहता हूं कि यह आदमी जो यहां उपदेश दे रहा है, मूर्ख है।'

और मैं चार या पाँच साल से ज्यादा का न था। उसी समय से यही मेरी भाषा रही है। मैं मूढ़ को एकदम पहचान लेता हूं, वह कही भी हो, मेरी एक्सरे आंखों से कोई नहीं बच सकता है। मैं मानसिक-अपंगता को या किसी भी चीज को तुरंत देख लेता हूं। अभी उस दिन मैंने अपने एक संन्यासी को वह फाउंटेन पेन दिया जिससे मैंने उसका नया नाम लिखा था। सिर्फ यादगार के कि यही है वो पेन जिसका मैंने उसके नये जीवन की, संन्यास की शुरूआत में अपयोग किया था। लेकिन उसकी पत्नी भी वहां थी। मैंने उसकी पत्नी को भी संन्यास लेने के लिए आमंत्रित किया, वह राज़ी थी, और नही भी, डांवाडोल थी—वह हाँ कहना चाहती थी और फिर भी कह नहीं पा रही थी। फिर मैंने उसे फुसलाने की कोशिश की—मेरा मतलब है संन्यास के लिए। मैंने थोड़ी देर अपना खेल जारी रखा और वह हां कहने के बहुत करीब आ गई थी, अचानक मैं रूक गया। मैं भी तो उतना सीधा नहीं हूं जितना बाहर से दिखाई देता हूं। मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं जटिल हूं, मेरा मतलब यह है कि मैं चीजें

इतनी स्पष्ट देख सकता हूं कि कभी-कभी मुझे अपना सीधापन और उसका निमंत्रण वापस लेना पड़ता है। वह डर रहा था। मैं इस संन्यासी और उसकी पत्नी के आर-पार देख सकता था। उन दोनों के बीच कोई सेतु न था। और कभी रहा भी नहीं था, वे बस एक अंग्रेज दंपति थे, तुम जानते हो.....परमात्मा ही जाने कि उन्होंने शादी क्यों की थी? और परमात्मा तो है नहीं, मैं बार-बार यह दोहराता हूं, क्योंकि मुझे हमेशा लगता है कि तुम शायद सोचो कि परमात्मा सच में ही जानता है। परमात्मा नहीं जानता हैं, क्योंकि वह है ही नहीं। परमात्मा तो ऐसा शब्द है जैसे 'जीसस' इसका कोई अर्थ नहीं है। यह केवल एक विस्मयबोधक शब्द है। जीसस को अपना नाम कैसे मिला, उसकी ऐसी ही तो कहानी है। जोसेफ और मेरी अपने बच्चे के साथ बेथलेहम से घर वापस जा रहे है। मैरी बच्चे के साथ गधे पर बैठी है। जोसेफ गधे की रस्सी हाथ में पकड़े आगे-आगे चल रहा है। अचानक उसका पैर एक पत्थर से टकराया, उसे जोर की ठोकर लगी। वह चीख पडा, 'जीसस' और तुम स्त्रियों के ढंग तो जानते ही हो,...मैरी ने कहा, 'जोसेफ' मैं सोच रही थी कि अपने बच्चे का नाम क्या रखें। और अभी-अभी तुमने सही नाम ले दिया—'जीसस।'

इस प्रकार बेचारे बच्चे को अपना नाम मिला। यह संयोग नहीं है कि जब तुम गलती से अपने हाथ पर हथौड़ा मार लेते हो तो चिल्ला पड़ते हो—जीसस, ऐसा मत सोचो कि तुम कोई जीसस को याद कर हरे हो। चोट लगने से जोसेफ की भांति चिल्ला पड़ते हो—जीसस। मैं यह कह रहा था कि जिसस—यहां तक कि जीसस भी नाम नहीं है, बल्कि सिर्फ एक विस्मयबोधक शब्द है जिसे जोसेफ ने ठोकर लगने पर कहा था। इसी प्रकार है परमात्मा। जब कोई कहता है, 'हे भगवान' तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह भगवान में विश्वास करता है। वह तो केवल यह कह रहा है कि यह शिकायत कर रहा है—अगर यहां आकाश में कोई सुनने के लिए बैठा है तो। जब वह कहता है भगवान तो यह ऐसे ही है जैसे सरकारी कागजातों पर लिखा होता है—जिस किसी से भी संबंधित हो। 'हे भगवान।' का इतना ही अर्थ है—'जिस किसी से भी संबंधित हो।' और अगर वहां कोई नहीं है तो 'माफ करे, ये किसी से भी संबंधित नहीं है।' और इसका प्रयोग करने से मैं अपने को रोक नहीं सका'।

सत्र—8 विद्रोह धर्म की बुनियाद

दुनिया में केवल जैन धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है जो आत्महत्या का आदर करता है। अब यह हैरान होने की तुम्हारी बारी है। निश्चित ही वे इसे आत्महत्या नहीं कहते। वे इसको सुंदर धार्मिक नाम देते है—संथारा। मैं इसके खिलाफ हूं। खासकर जिस ढंग से यह किया जाता है—यह बहुत ही क्रूर और हिंसात्मक है। यह आश्चर्य की तो बात है कि जो धर्म अहिंसा में विश्वास करता है। वह धर्म संथारा, आत्महत्या का उपदेश देता है। तुम इसको धार्मिक आत्म हत्या कह सकते हो। लेकिन आत्महत्या तो आत्महत्या ही है। नाम से कोई फर्क नहीं पड़ता। आदमी तो मरता ही है। मैं इसके खिलाफ क्यों हूं, मैं किसी आदमी के आत्महत्या करने के अधिकार के विरोध में नहीं हूं। नहीं, यह तो मनुष्य का मूलभूत अधिकार होना चाहिए। अगर मैं जीवित रहना नहीं चाहता तो किसी दूसरे को मुझे जीवित रखने का कोई अधिकार नहीं है। मैं जैनियों के आत्महत्या के विचार के विरोध में नहीं हूं। लेकिन वह विधि...उनकी विधि है कुछ न खाना, खाना छोड़ देते है, बिलकुल नहीं खाते। इस प्रकार बेचारे आदमी को मरने में करीब-करीब नब्बे दिन लगते है। यह यातना है। सताना है, तुम इसे और नहीं सुधार सकते, इससे अधिक कष्ट सोचा भी नहीं जा सकता। अडोल्फ हिटलर को लोगो को सताने का बढ़ीया तरीका नहीं सूझा।

वे अपने बालों को कभी नहीं काटते, वे उन्हें अपने हाथों से उखाड़ते है1 देखो, कितना बढ़िया तरीका है।

हर साल जैन मुनि अपने बालों को उखाड़ता है—मुछ और दाढ़ी और शरीर के सभी बालों को अपने हाथों से उखाड़ता है। वे कोई यंत्र के, टेक्नोलॉजी के खिलाफ है। और वे इसे तर्क कहते है। किसी बात की तर्कित अंत तक जाना। अगर तुम उस्तरे का उपयोग करो तो वह टेक्नोलॉजी है। यहां तक कि ये तथाकथित पर्यावरण के हिमायती भी अपनी दाढ़ी बनाते रहते है। बिना यह जाने कि वे प्रकृति के विरूद्ध एक अपराध कर रहे है।

जैन मुनि अपने बाल उखाड़ता है—चुपचाप एकांत में नहीं, क्योंकि एकांत तो उन्हें कभी मिलता ही नहीं। कोई भी बात गुप्त न रखना, पूरी तरह से सार्वजनिक होना, अपने आपको सताने का हिस्सा है। वे बाजार में नग्न खड़े होकर अपने बाल उखाड़ते है। भीड़ निश्चित ही ताली बजा-बजा कर सराहना करती है। और जैन, यद्यपि उनको बडी हमदर्दी अनुभव होती है......तुम उनकी आंखों में आंसू भी देख सकते हो। अचेतन में उन्हें भी बड़ा मजा आता है—और बीना टिकट बिना पैसे के।

लेकिन किसी को भी या स्वयं को कष्ट पहुंचाना, सताना एक अपराध है। इसके साथ तुम समझ पाओगें कि में कोई अपमानजनक, कोई अशिष्ट व्यवहार नहीं कर रहा था। मैं बहुत ही संगत, प्रासंगिक प्रश्न पूछ रहा था। उस दिन से मैंने जीवन भर के लिए सब प्रकार की मूख्रताओ, अंधविश्वासों—संक्षिप्त से धामिर्क कचरा, बुलशिट—के खिलाफ झगड़ा किया। बुलशिट शब्द अच्छा है, बहुत कुछ कह देता है, संक्षिप्त में। उस दिन मैंने अपना जीवन एक खेल, विद्रोही की तरह शुरू किया और मैं अपनी अंतिम सांस तक विद्रोही ही बना रहूंगा—या शायद उसके बाद भी, किसे पता है। जब मेरे पास शरीर नहीं होगा तो मेरे पास मेरे प्रेमियों के हजारों शरीर होंगे। में उन्हें उकसा सकता हूं—और तुम जानते हो कि मैं बहकाने बाला हूं। आने वाली सदियों तक मैं उनके दिमाग में विचार डाल सकता हूं। ठीक वही मैं करने बाला हूं। इस शरीर की मृत्यु के साथ मेरा विद्रोह नहीं मर सकता। मेरी क्रांति और भी अधिक तीव्रता से चलती रहेगी, क्योंकि तब इसे आगे बढ़ाने के लिए अनेक शरीर होगें, अनगिनत हाथ होंगे और बहुत आवाजें होंगी। वह दिन बहुत महत्वपूर्ण था, ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण था। उस दिन के साथ मैंने हमेशा उस दिन को याद किया है जब जीसस ने यहूदियों के मंदिर में रबाईयों से बहस की थी। वे मुझसे कुछ बड़े थे, शायद आठ साल के या नौ साल के। उन्होंने जिस प्रकार से बहस की उसने उनके समस्त जीवन-प्रवाह को निर्धारित किया। मुझे जेन मुनि का नाम याद नहीं है, शायद उसका नाम शांति

सागर था। निश्चित ही वह शांति का सागर नहीं था। इसलिए उसका नाम तक मैं भूल गया। उसका अर्थ हो सकता है शांति, या मौन। ये वे बुनियादी अर्थ है। उसमें दोनों नहीं थे। न तो वह शांत था। न ही मौन था। बिलकुल भी नहीं। न ही तुम कह सकते हो कि उसमें कोई तूफान न था। क्योंकि वह इतना क्रोधित हो गया कि उसने चिल्ला कर मुझे बैठ जाने को कहा। मैंने कहा: 'मुझे अपने घर में बैठ जाने के लिए कोई नहीं कह सकता। हाँ में आपको जाने के लिए कह सकता हूं। लेकिन मैं आपको जाने के लिए भी नहीं कहूंगा, क्योंकि अभी कुछ और प्रश्न पूछने है। कृपया नाराज न हो। याद रखें आना नाम, शांति सागर –शांति और मौन के सागर। आप छोटे बच्चे से इतना परेशान मत होइए।'

वे शांत थे कि नहीं इसकी फ़िकर किये बिना मैंने अपनी नानी से पूछा, जो इस बात चीत को सुन कर बहुत हंस रही थी। आप क्या कहती है नानी। क्या मुझे इनसे और प्रश्न पूछने चाहिए या इन्हें अपने घर से जाने के लिए कहूं, नानी ने कहा: 'तुम जो पुछना है पूछ सकते हो अगर ये अत्तर न देते इन्हें कह दो दरवाजा खुला है, वे जा सकते है।'

यही वह महिला थी जिन्हें मैंने प्रेम किया। यही वह महिला थी जिन्होंने मुझे विद्रोही बनाया। यहां तक कि मेरे नाना भी भौचक्के रह गए कि इस प्रकार उन्होंने मेरा साथ दिया वह तथाकथित तुरंत चुप हो गया जिस क्षण उसने देखा कि मेरी नानी मेरे पक्ष ले रही है। केबल वे ही नहीं, सारे गांव के लोग तुरंत मेरे पक्ष में हो गए। बेचारा जैन मुनि बिलकुल ही अकेला रह गया। मैंने उससे कुछ और प्रश्न पूछे: 'आपने कहा किसी बात में तब तक विश्वास नहीं करना जग तक कि तुमने स्वयं उसका अनुभव न किया हो। मुझे इसमें सच दिखाई देता है इसलिए यह प्रश्न.........'

जैनी मानते है कि सात नरक है। छठवें नरक तक वापस आने की संभावना है, लेकिन सातवां शाश्वत है। शायद सातवां ईसाइयों का नरक है, क्योंकि वहां भी एक बार तुम उसमें गए तो हमेशा के लिए गए। मैंने कहा: 'आपने सात नरकों की बात की, इसलिए प्रश्न उठता हैं कि क्या आपने सातवें नरक की यात्रा की है, क्या आप सातवें नरक में गए है? अगर वहां गए होते तो यहां नहीं हो सकते थे। अगर आप वहां गए तो किस अधिकार से कहते है कि सातवां नरक है, या अगर आप सात पर जोर देना चाहते है तो यह सिद्ध करें कि कम से कम एक आदमी शांति सागर सातवें नरक से वापस आया है।' उसकी तो बोलती बंद हो गई। वह अवाक रह गया। वह विश्वास ही न कर सका कि एक बच्चा ऐसे प्रश्न पूछ सकता था। आज मुझे भी विश्वास नहीं हो सकता। मैं कैसे इस प्रकार का प्रश्न पूछ सका। इसका एक ही उत्तर में दे सकता हूं कि मैं अशिक्षित था, बिलकुल ही अज्ञानी था। ज्ञान, जानकारी तुम्हें बहुत चालबाज बना देती है। मैं चालाक नहीं था। मैंने वही प्रश्न पूछा जो कोई भी कोई बच्चा पूछ सकता था अगर वह शिक्षित न होता तो शिक्षा मासूम बच्चों के प्रति किया गया सबसे बड़ा अपराध है। शायद बच्चों की स्वतंत्रता इस संसार की अंतिम स्वतंत्रता होगी।

मैं बिलकुल ही अज्ञानी, अंजान और सरल था। मैं पढ-लिख नहीं सकता था। अंगुलियों से ज्यादा गिन भी नहीं सकता था। यहां तक कि आज भी जब मुझे कुछ गिनना हाता है तो अपनी अंगुलियों से शुरू करता हूं। और अगर ऐ अंगुलि छूट गई तो गड़बड़ हो जाती है। वह उत्तर नहीं दे सका। मेरी नानी खड़ी हुई और कहा: 'आपको उत्तर देना ही होगा। ऐसा मत सोचो कि एक बच्चा पूछ रहा है। मैं भी पूछ रही हूं, और आपकी मेजबान हूं।'

अब फिर से मुझे एक अन्य जैन परंपरा के बारे में बताना पड़ेगा। जब जेन मुनि भोजन लेने के लिए किसी के घर आता है तो भोजन करने के बाद वह आशीर्वाद के रूप में परिवार को उपदेश देता है। उपदेश गृहिणी को संबोधित होता है। मेरी नानी ने कहा कि 'आज आपने हमारे यहाँ भोजन किया है, इस घर की गृहिणी होने के कारण मैं भी यही प्रश्न पूछ रही हूं। क्या आप सातवें नरक में गए है। लेकिन तब आप यह नहीं कह सकते कि

सात नरक है।' बेचारा मुनि मेरी नानी जैसी सुंदर स्त्री का सामना न कर सका। वह इतना घबरा गया कि वह उठ कर घर के बहार जाने लगा। मेरी नानी ने चिल्ला कर कहा: 'रुको, जाओ मत। मेरे बच्चें के प्रश्न का अत्तर कौन देगा? वह और भी कुछ पूछना चाहता है। आप किस तरह के आदमी हैं। बच्चें के प्रश्नों से भाग रहे है।' चारों और सन्नाटा छा गया—ठीक जैसा यहां पर है—किसी ने कुछ न कहा मुनि ने आंखें झुका ली और तब फिर मैंने कहा कि मुझे कुछ नहीं पुछना। मेरे पहले दो प्रश्नों का अत्तर नहीं दिया गया और तीसरा मैंने इसलिए नहीं पूछा क्योंकि मैं घर के मेहमान को लज्जित नहीं करना चाहता। मैं पीछे हटता हुं। और मैं सच में ही वहाँ से चला दिया और मुझे यह देख कर बडी खुशी हुई कि मेरी नानी भी मेरे पीछे-पीछे चली आई। मेरे नाना ने मुनि को विदा किया। लेकिन जैसे ही वह घर से बाहर निकला मेरे नाना तुंरत घर के भीतर आए और मेरी नानी से पूछा, 'तुम पागल तो नहीं हो गई हो, पहले तो तुमने इस लड़के का साथ दिया जो जन्मजात मुसीबत खड़ी करने वाला लड़का है। और फिर तुम मेरे गुरु को बिना प्रणाम किए ही इसके साथ चली गई।' मेरी नानी ने कहा: 'वह मेरा गुरु नहीं है। और जिसे तुम जन्म जात मुसीबत खड़ी करने बाला समझ रहे हो वह तो अभी बीज है। कोई नहीं जानता की वह आगे चल कर क्या बनेगा।' अब मुझे मालूम हे कि उस बीज ने कौन सा रूप धारण किया। जब तक कोई पैदाइशी उपद्रवी न हो तब तक वह बुद्ध पुरूष नहीं बन सकता।

और मैं कोई गौतम बुद्ध जैसा पारंपरिक बुद्ध ही नहीं हूँ, वे तो बहुत पारंपरिक है। मैं ज़ोरबा दि बुद्धा हूं। मैं पूर्व और पश्चिम का मिलन हूं, सच तो यह ही कि मैं पूर्व और पश्चिम में उचे और नीचे में, पुरूष और स्त्री में, अच्छे और बुरे में, परमात्मा और शैतान में बाँटता ही नहीं हूं। नहीं, हजार बार नहीं। मैं कभी किसी चीज को खँड़-खंड नहीं करता। अभी तक जो खंड़-खंड़ किया गया है। मैं उसे मिलाता हूं, यहीं मेरा काम है।' मेरे पूरे जीवन में क्या हुआ, इसे समझने के लिए वह दिन बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि जब तक तुम बीज को न समझोगे, तुम वृक्ष और फूलों और शाखाओं से झाँकते हुए चाँद से चूक जाओगे। उसी दिन से मैं हमेशा हर प्रकार की यातना के खिलाफ रहा हूँ। मैं हर तरह की तपश्चर्या के खिलाफ रहा हूं। निश्चित ही ये शब्द मैंने काफी बाद में जाने, पर शब्दों से क्या फर्क पड़ता है। मुझे तब भी कुछ बदबू आ रही थी। तुम जानते हो कि मुझे सब तरह की यातनाओं से एलर्जी है मैं चाहता हूं कि हर मनुष्य पूरी तरह से जीए। जीवन का पूरी तरह से भोग करे। न्यूनतम पर जीना मेरा ढंग नहीं है। मैं तो चाहता हूं कि हर व्यक्ति जीने के अंतिम बिंदु को छू ले। और वह अंतिम बिंदु के पार जा सके तो और भी अच्छा है। आगे बढ़ो। इंतजार मत करो, इंतजार में समय बरबाद मत करो।

न्यूनतम तो कायर का तरीका है। अगर मेरा बस चले तो उनकी अधिकतम सीमा को न्यूनतम सीमा बना दूँ। हम तारों पर पहुंचने की कोशिश कर रहे है। फ़िज़िक्स का भी यही लक्ष्य है, अंतत: हमारी गति प्रकाश की गति के बराबर हो जाए। अगर उस गति को हमने प्राप्त न किया तो हम नष्ट हो जाएंगे। अगर हम प्रकाश की गति उपलब्ध कर लें तो हम किसी भी मरती हुई पृथ्वी से या ग्रह से हट सकते है। एक न एक दिन हर पृथ्वी, हर ग्रह, हर तारा मरेगा, नष्ट होगा। इससे तुम कैसे बचोगे, तुम्हें बडी तीव्र टैकनॉलॉजी की जरूरत होगी। यह पृथ्वी सिर्फ चार हजार वर्ष में मर जाएगी। तुम कुछ भी करो, इसे बचाया नहीं जा सकता। प्रतिदिन यह अपनी मृत्यु के करीब आ रही है......और तुम एक घंटे में तीस मील की गति से जाने की कोशिश कर रहे हो। अरे, प्रति सेकेंड एक सौ छियासी हजार मील की गति से चलने की कोशिश करो। यही प्रकाश की गति है। मैं जीवन को समाप्त कर देने के खयाल के खिलाफ नहीं हूं, अगर कोई अपने जीवन का अंत कर देना चाहता है तो निश्चित ही यह उसका अधिकार है। लेकिन इसके लिए शरीर को लंबे समय तक पीडित करने और सताने के मैं बिलकुल खिलाफ हुं। जब ये शांति सागर मरे तो इन्हें मरने के लिए कम से कम एक सौ दिन भूखा रहना पड़ेगा। एक सामान्य स्वस्थ आदमी को नब्बे दिन तक भूखा रहने की क्षमता है। अगर वह असाधारण रूप से स्वस्थ तो वह

और भी अधिक दिन तक भूखा रह सकता है। तो याद रखो कि मैं उस व्यक्ति के साथ कठोर नहीं था। उस संदर्भ में मेरा प्रश्न बिलकुल उचित था—शायद और भी उचित था, क्योंकि वह उत्तर नहीं दे सका था। और आश्चर्य है आज तुम्हें बताना कि वह सिर्फ मेरे प्रश्न पूछने की ही शुरूआत नहीं थी बल्कि लोगों के उत्तर ने देने की भी शुरूआत थी। पिछले पैंतालीस वर्षो में किसी ने भी मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं दिया। मैं अनेक तथाकथित आध्यात्मिक लोगों से मिला हूं, लेकिन किसी ने कभी भी मेरे कोई भी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। एक प्रकार से उस दिन ने ही मेरे समस्त जीवन कि दिशा को निश्चित कर दिया।

शांति सागर बहुत नाराज हो गए, लेकिन मैं बहुत खुश था। और मैंने इसे मैंने अपने नाना से छिपाया नहीं। मैंने उनसे कहा: 'नाना, वे भले ही नाराज हो गए, लेकिर मुझे तो बिलकुल सही लग रहा है। आपका गुरु साधारण योग्यता का आदमी है। आपको उससे अधिक अच्छे गुरु की खोज करनी चाहिए।'

यहां तक वे हंस पड़े और उन्होंने कहा: 'शायद तुम ठीक कहते हो, लेकिन अब इस उम्र में गुरु बदलना बहुत व्यावहारिक नहीं होगा।' उन्होंने मेरी नानी से पूछा: 'क्यों तुम्हारा क्या विचार है।' मेरी नानी—जैसी कि वे स्पष्ट वक्ता थी—ने कहा: 'बदलने के लिए कभी देर नहीं होती। इसमें देर-अबेर का कोई सवाल ही नहीं उठता। अगर आप देखते हो कि आपने जो चुना है वह सही नहीं है, तो उसे बदल डालों। जल्दी करों उतना अच्छा है, अब तुम बूढे हो गये हो। ऐसा मत करो कि कहो कि मैं बूढा हो रहा हूं इसलिए बदल नहीं सकता। एक युवक न बदले तो चलेगा, लेकिन बूढा आदमी ऐसा नहीं कर सकता—और तुम काफी बूढे हो गए हो।' और बस कुछ वर्ष बाद ही वे गुजर गये। लेकिन वे अपना गुरु बदलने का साहस न कर सके। वे उसी पुरानी लीक पर चलते रहे।

मेरी नानी ऐ अदभुत प्रभावशाली शक्ति बन सकती थी। वे सिर्फ ऐ गृहिणी बनने के लिए नहीं थी। वे उस छोटे से गांव में सीमित रहने के लिए नहीं बनी थी। उनके बारे में पूरे विश्व को जानना चाहिए था। शायद मैं उनका माध्यम हूं। शायद उनहोंने स्वयं को मुझमें उड़ेल दिया हो। उनका मुझसे इतना गहरा प्रेम था कि मैंने अपनी असली मां को कभी असली मां नहीं समझा मैं हमेशा अपनी नानी को ही अपनी असली मां समझता रहा। नानी ने ही मुझे पहली बार यह बताया कि सही भी गलत आदमी के हाथ में गलत हो जाता है। और गलत भी सही आदमी के हाथ में सही हो जाता है। इसलिए तुम इसकी चिंता मत करो कि तुम क्या कर रहे हो। केवल एक ही बात याद रखो कि तुम क्या हो रहे हो। ''करना'' और ''होना'' यही एकमात्र प्रश्न है। सभी धर्म करने पर जोर देते है, लेकिन में तो होने को महत्व देता हूं। अगर तुम्हारा होना, तुम्हारी बीइंग सही है। तो फिर तुम जो भी करोगे वह सही हो्गा। तब फिर तुम्हारे लिए कोई और आदेश नहीं है। केवल एक यही है कि तुम्हारा मात्र 'होना' इतनी समग्रता से हो कि उसमें कोई छाया भी न आ सके। तब तुम कुछ भी गलत नहीं कर सकते हो। सारी दुनिया भले ही कहे कि यह गलत है, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता, केवल तुम्हारी अपनी बीइंग, अपनी आत्मा ही महत्वपूर्ण है।

मुझे इसकी चिंता नहीं कि क्राइस्ट को सूली लगी। क्योंकि मुझे मालूम है कि सूली पर भी वे अपने भीतर पूर्ण विश्राम में थे। वे इतने विश्राम में थे कि वे प्रार्थना कर सके: 'हे पिता, सच तो यह है कि उन्होंने पिता भी नहीं कहा। 'अब्बा' जो कि और भी सुंदर शब्द है। 'अब्बा। इन लोगो को माफ़ कर देना, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे है।'

फिर करने पर जोर दिया जा रहा है, अफसोस कि वे सूली पर लटके हुए इस आदमी के 'होने' को देख सके। केवल ये होना ही महत्वपूर्ण है।

मैं नहीं मानता कि मैंने उस जेन मुनि से इस प्रकार के अजीब और परेशान करने बाले प्रश्न पूछ कर कोई गलती की। शायद मैंने उसकी सहायता ही की। शायद एक दिन उसकी समझ में आ जाए, और अगर उसमें साहस होता तो वह समझ जाता, लेकिन वह कायर था, वह भग खड़ा हुआ। और तब से मेरा अनुभव है कि ये सब तथाकथित महात्मा और संत कायर है। मैंने आज तक कोई ऐसा महात्मा—हिंदू, मुसलमान, ईसाई, या बौद्ध—नहीं देखा, जो कहा जो सके कि सच में विद्रोही है। जब तक कोई विद्रोही न हो तक कोई धार्मिक नहीं हो सकता। विद्रोह धर्म की बुनियाद है।

सत्र—9 ऊँचे आकाश में निमंत्रण

समय वापस नहीं जा सकता, लेकिन मन जा सकता है। ऐसा मन जो कभी कुछ भी भूल सकता एक ऐसे व्यक्ति को देना जो स्वयं को ता अमन की स्थिति में पहुंच ही गया है साथ ही दूसरों को भी इससे छुटकारा पाने के लिए कह रहा है, कितना व्यर्थ है। जहां तक मेरे मन का प्रश्न है—या रखना कि मेरा मन, मैं नहीं—वह वैसा ही यंत्र है, जैसा यहां पर इस्तेमाल किया जा रहा है। मेरे मन का अर्थ है सिर्फ एक मशीन, पर एक अच्छी मशीन, जो ऐसे व्यक्ति को दी गई है जो उसे फेंक देगा। इस लिए मैं कहता हूं कि यह कितनी बरबादी है। लेकिन मुझे कारण मालूम है। जब तक तुम्हारे पास बढ़िया मन न हो तब तक उसे फेंक देने की समझ तुम्हारे भीतर नहीं हो सकती। जीवन विरोधाभासों से भर हुआ है। यह कोई बुरी बात नहीं है। इसके कारण जीवन अधिक रंगीन हो जाता है।

कल मैं तुम्हें उस घटना के बारे में बता रहा था जो जैन मुनि और मेरे बीच घटी। वह कहनी वही समाप्त नहीं हुई। क्योंकि दूसरे दिन फिर उसे अपने भोजन भिक्षा के लिए मेरे नाना के घर आना था। तुम लोगे के लिए समझना मुश्किल होगा कि जब वह मुनि इतने गुस्से में हमारे घर से चला गया तो उसे दुबारा क्यों आना था। मुझे इसके संदर्भ में बताना पड़ेगा। जैन मुनि केवल जैन परिवार से ही भिक्षा ले सकता है, और किसी से भी नहीं। और उसके दुर्भाग्य से उस छोटे से गांव में केवल हमारा ही परिवार जैन था। अपने भोजन के लिए वह और कहीं भी जा नहीं सकता था। हालांकि वह कहीं और जाना पसंद करता, लेकिन यह उसके धार्मिक नियमों के विरूद्ध था। इसलिए न चाहते हुए भी वह विवशता में फिर दूसरे दिन भी हमारे घर आया। मैं और मेरी नानी, दोनों ऊपर इंतजार कर रहे थे, खिड़की से देख रहे थे, क्योंकि हमें पता था कि उसे आना पड़ेगा। मेरी नानी ने मुझसे कहा: 'देखो वह आ रहा है। अब आज तुम उससे क्या पूछने बाले है? मैंने कहा: मुझे नहीं मालूम। पहले कम से कम उसे खाना खा लेने दो। उसके बाद अपनी पुरानी प्रथा के अनुसार वह इस परिवार तथा अन्य एकत्रित लोगों को उपदेश देगा।'

वह अत्यंत सावधानी से और बहुत संक्षेप में बोला। साधारणत: इतने संक्षेप में ये बोलते नहीं है। लेकिन तुम चाहे बोलों या न बोलों, अगर कोई प्रश्न पूछना चाहे तो पूछ ही सकता है। वह तुम्हारे मौन के बारे में ही प्रश्न पूछ सकता है। वह मुनि अस्तित्व के सौंदर्य के बारे में बोल रहा था। उसने सोचा कि शायद इस पर न कोई प्रश्न उठेगा और न कोई झंझट होगी। लेकिन झंझट हो गई, मैं खड़ा हो गया। मेरी नानी कमरे के पीछे बैठी हंस रही थी—अभी भी मैं उनकी हंसी सुन सकता हूं। मैंने उन मुनि से पूछा:' इस सुन्दर विश्व का सृजन किस ने किया।'

जैन परमात्मा को नहीं मानते। पश्चिमी ईसाई विचारधारा के लोगों के लिए यह समझना बहुत मुश्किल है कि कोई धर्म ऐसा भी हो सकता है जो परमात्मा को न मानें, जैन धर्म ईसाई धर्म से अधिक परिष्कृत है, अधिक ऊँचा है, कम से कम वह परमात्मा और होली घोस्ट और सारी बकवास बातों में विश्वास नहीं करता। तुम मानो या न मानो, जैन धर्म नास्तिक धर्म है। क्योंकि नास्तिक होते हुए भी धार्मिक होना विरोधाभासी लगता है। जैन धर्म शुद्ध नैतिकता है, इसमें कोई परमात्मा नहीं है। इसलिए जब मैंने जैन मुनि से पूछा कि इस सौंदर्य का सृजन किसने किया, साफ था कि वह कहेगा किसी ने नहीं।

इसी का मैं इंतजार कर रहा था। तो मैंने कहा: 'क्या ऐसा सौंदर्य कोई नहीं बना सकता है।'

उसने कहा: 'कृपया मुझे गलत मत समझो, इस बार वह पूरी तैयारी करके आया था। इस लिए वह कुछ आश्वस्त दिखाई दे रहा था। कोई नहीं से मेरा तात्पर्य किसी विशेष से नहीं है।'

तुम लोगों ने एलिस थ्रू दि लुकिंग ग्लास' कहानी याद होगी। रानी एलिस से पूछती है। यहां आते समय क्या तुम्हें कोई मुझसे मिलने के लिए आते हुए मिला था।' एलिस ने कहा: 'मुझे कोई नहीं मिला।'

रानी परेशान दिखाई देती है, और कहती है, 'आश्चर्य है, तब तो 'कोई नहीं' को तुमसे पहले यहां आ जाना चाहिए था, लेकिन वह अभी तक आया क्यों नहीं।'

एलिस एक अंग्रेज महिला की तरह भीतर ही भीतर हंसी, लेकिन उसका चेहरा गंभीर बना रहा और उसने कहा: 'महोदया, 'कोई नहीं' कोई नहीं है।'

रानी ने कहा: 'हां मैं जानती हूं कि 'कोई नहीं' कोई नहीं है। लेकिन उसे इतनी देर क्यों हो रही है? लगता है कि 'कोई नहीं' तुमसे आहिस्ता चलता है।'

एलिस कुछ तैश में आकर कहती है, 'मुझसे तेज कोई नहीं चलता है।'

तो रानी कहती है, 'यह तो और भी अजीब बात है। अगर 'कोई नहीं' तुमसे तेज चलत है, तो वह अभी तक आया क्यों नहीं। तब एलिस अपनी गलती समझती है, लेकिन अब देर हो चुकी थी। उसने दुबारा कहा: 'महोदया कोई नहीं कोई है।'

रानी ने उत्तर दिया: 'हां मैं जानती हूं कि 'कोई नहीं काई नहीं', लेकिन प्रश्न यह है कि वह अभी तक आया क्यों नहीं।'

मैंने जैन मुनि से कहा: 'मुझे मालूम है कि 'कोई नहीं कोई नहीं' लेकिन आप अस्तित्व की इतनी प्रशंसा, इतनी सराहना कर रहे है कि मुझे आश्चर्य हो रहा है, क्योंकि जैन ऐसा नहीं करते। ऐसा लगता है कि कल के अनुभव के कारण आपने अपना ढंग ही बदल लिया है। आप अपनी चाल, अपनी नीति बदल सकते है लेकिन आप मुझे नहीं बदल सकते। मैं फिर पूछता हूं कि अगर जगत को किसी ने नहीं बनाया तो यह बना कैसे?'

उसने इधर-उधर देखा। सब चुप थे सिवाय मेरी नानी के जो जोर से हंस रही थी। मुनि ने मुझसे पूछा: 'क्या तुम्हें मालूम है किसने बनाया है।'

मैंने कहा: 'यह सदा से यहां है, इसके कहीं से आने या बनाने की जरूरत नहीं है।'

आज भी मैं पैंतालीस साल के बाद उस वाकय की पुष्टि कर सकता हूं। बुद्धत्व और फिर न-बुद्धत्व के बाद, इतना सब पढ़ने-लिखने और उसे पूर्णत: भूल जाने के बाद, उसे जान कर "जो है" तथा फिर भी उसकी और ध्यान न देकर मैं अभी भी उस छोटे बच्चे की तरह यह कह सकता हूं—विश्व सदा से यहां है, इसके सृजन की या कहीं से आने की कोई जरूरत नहीं है। यह सिर्फ है।

जैन मुनि तीसरे दिन नहीं आया। वह हमारे गांव से दूसरे गांव चला गया जहां पर एक और जैन परिवार था। लेकिन मुझे उसे श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए। अनजाने ही उसने एक छोटे बच्चे को सत्य की यात्रा पर चला दिया। तब से मैं न जाने कितने लोगों से वही सवाल पूछा है और उसी अज्ञान से सामना हुआ है, कोई उत्तर न मिला। बड़े-बड़े विद्वान, पंडित, ज्ञानी और महात्मा–जिनकी हजारों लोग पूजा करते है—और फिर भी एक बच्चे द्वारा पूछे गये साधारण से प्रश्न का अत्तर नहीं दे पाते। सच तो यह है कि किसी भी मूलभूत प्रश्न का उत्तर कभी दिया ही नहीं गया। और मैं कहता हूं कि किसी भी मूलभूत प्रश्न का उत्तर कभी दिया नहीं जाएगा। कयोंकि जब तुम मूल भूत प्रश्न पर आते हो तो उसका उत्तर होता ही नहीं। होता है सिर्फ मौन—किसी पंडित, या साधु या महात्मा का मूर्खतापूर्ण मौन नहीं, बल्कि तुम्हारा अपना मौन। अपितु वह मौन जो तुम्हारे भीतर विकसित होता है। उसके सिवाय और कोई उत्तर नहीं। इस जगत में ऐसे बहुत से मौन को उपलब्ध लोग हुए है जो दूसरों की कोई सहायता नहीं कर सके। जैन उनको अरिहंत कहते है। और बौद्ध उन्हें अर्हत कहते है। दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है।

अरिहंत और अर्हत तो बहुत हुए है लेकिन जब कि इन्हें उतर मिल गया, फिर भी ये उसकी धोषणा न कर पाए। और जब तक तुम उसकी धोषणा करने योग्य न होओ, घर की छत से घोषणा न कर सको, तब तक तुम्हारे अतर को मूल्य नहीं है। भीड़ में, जहां सब प्रश्नों से भरे हुए है, यह सिर्फ एक व्यक्ति का अत्तर है। जल्द ही अरिहंत की मृत्यु के साथ उसका मौन भी समाप्त हो जाता है। वह ऐसे खो जाता है जैसे कोई पानी पर लिखता रहा हो। तुम लिख सकते हो, लेकिन तुम लिख भी न पाओगें कि वे हस्ताक्षर खो जाएंगे।

असली सदगुरू सिर्फ जानता ही नहीं है वह लाखों लोगो की सहायता करता है। उसका ज्ञान निजी नहीं है। वह उन सबके लिए खुला है, उपलब्ध है जो उसे ग्रहण करने के लिए तैयार है। मैंने उतर जान लिया है। प्रश्न तो मेरे साथ हजारों साल से, कई जन्मों से, कई शरीरों के साथ चल रहा था लेकिन अब पहली बार उतर घटा है। यह हुआ है क्योंकि मैं निरंतर, बिना किसी परिणाम के भय के प्रश्न को पूछता ही रहा हूं। मैं इन प्रसंगों को इसलिए याद कर रहा हूं ताकि तुम्हें यह बता सकूँ कि जब तक कोई पूछता नहीं है। जब कोई सब द्वारों से धकेल दिया जाता है, तब सब द्वार बंद हो जाते है, तब हम अंत में अपने भीतर मुड़ते है। और वहीं उतर है। वह लिखा हुआ नहीं है। तुम्हें बाइबिल कोई तोरा, कोई कुरान, कोई गीता, कोई धम्मपद या ताओ तेह किंग नहीं मिलेगी। न कोई परमात्मा न परम पित जो मुस्कुराए और पीठ थप थपा कर कहे कि 'शाबाश बेटे, तुम घर आ गए। मैं तुम्हारे सब पाप क्षमा कर देता हूं।' नहीं वह तुम्हे कोई नहीं मिलेगा। वहाँ पर मिलेगा अदभुत मौन, परम मौन —इतना सधन कि लगता है उसको छू लें.......एक सुंदर स्त्री की तरह। उसे सुंदर स्त्री की तरह अनुभव किया जा सकता है। पर बहुत ही सघन और स्पर्शनीय। मैंने सदा सौंदर्य से प्रेम किया है। जहां कहीं भी सौंदर्य दिखाई दिया—तारों में, मनुष्य के शरीर में, फूलों में, या पक्षी की उडान में—जहां कहीं भी। क्योंकि मेरी समझ में यह नहीं आता की सौंदर्य को प्रेम किए बिना कोई सत्य को कैसे जान सकता है। सत्य की दिशा में सौंदर्य एक राह है, और राह और मंजिल दो नहीं हो सकते। तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं होगा कि सताईस वर्ष की उम्र में—मैं पहले ही बुद्ध हो चुका था—अपनी सुन्नत कराई, सिर्फ सूफी मत में प्रवेश पाने के लिए। जहां वे लोग बिना सुन्नत के व्यक्ति को स्वीकार नहीं करते थे। मैंने कहा: 'ठीक है, करो। यह शरीर तो आखिर नष्ट होने ही वाला है और तुम तो थोड़ी सी चमड़ी काटने वाले हो।'

यहां तक कि उन्हें भी मेरी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैंने कहा, मेरा भरोसा करो, और जब मैंने तर्क करना शुरू किया तो उन्होने कह, सुन्नत कराने के लिए तुम तुरंत तैयार हो गए, और अब जो कहते है उसे स्वीकार करने को बिलकुल तैयार नहीं हो। मैंने कहा: 'मेरा यही तरीका है। अनावश्यक और गौण बातों को मैं स्वीकार करने के लिए हमेशा तैयार हूं, लेकिन सारभूत और महत्वपूर्ण बातों के लिए मैं अड़ जाता हूं, उनके लिए कोई भी मुझसे हां नहीं करा सकता।'

निश्चित ही उन्हें अपने तथाकथित सूफी मत से मुझे निष्कासित करना पडा। लेकिन मैंने उनसे कहा: 'मुझे निकाल कर तुम लोगों ने दुनिया को यह सिद्ध कर दिया है कि तुम नकली सूफी हो। एक मात्र असली सूफी को तुम निकाल रहे हो। सच तो यह है कि मैं तुम सब को निष्कासित करता हूं।'

हैरान होकर उन्होंने एक-दूसरे को देखा। लेकिन यही सच है। बचपन से ही मुझे तर्क करने में बहुत मजा आता था। अच्छा वातावरण मिलना कितना मुश्किल है। मैं यह पहली बार स्वीकार कर रहा हूं—मैंने सूफी मत में प्रवेश किया और उन मूर्खों और उन को भी सुन्नत करने दी। अफसोस कि अपने पूरे जीवन में मैं कोई सच्चा सूफी न खोज सका, लेकिन यह सिर्फ सूफियों के लिए ही सही नहीं है; मुझे कोई सच्चा ईसाई या सच्चा हमीद, भी नहीं मिला। जे. कृष्णमूर्ति ने मिलने के लिए मुझे बंबई से आमंत्रित किया था। जो व्यक्ति संदेश लेकर आए वे हम दोनों के मित्र थे, परमानंद। मैंने उनसे कहा, परमानंद वापस जाइए और कृष्णमूर्ति से कहिए कि अगर वे मुझसे

मिलना चाहते है तो उन्हें यहां आना चाहिए। वही उचित है बजाय इसके कि वे मुझे वहां बुला रहे है। परमानंद ने कहा: 'लेकिन वे आपसे कई वर्ष बड़े है।'

मैंने कहा: 'आप उनके पास जाएं और उनकी और से उतर न दे। यदि व कहते है कि वे मुझसे बड़े है तो फिर मेरा वहां जाना बेकार है, क्योंकि जागरण न तो बड़ा होता हो सकता है न छोटा; वह सदा एक सा है— नित नूतन, सनातन।'

वे गए और कभी लोट कर नहीं आए, क्योंकि कृष्णमूर्ति जैसे वयोवृद्ध व्यक्ति मुझसे मिलने कैसे आ सकता थे। फिर भी वे मुझसे मिलना चाहते थे। यह बड़ी मजेदार बात है, नहीं क्या? मैं उनसे कभी नहीं मिलना चाहता था। अन्यथा मैं उनके पास चला गया होता। वे मुझसे मिलना चाहते थे और फिर भी चाहते थे कि मैं उनके पास जाऊँ। तुम्हें मानना चाहिए कि वह जरा ज्यादती थी। परमानंद उतर लेकर कभी वापस नहीं आए। दूसरी बार जब वे आए तो मैंने पूछा, क्या हुआ।' उन्होंने कहा: 'कृष्णमूर्ति बहुत नाराज हो गए; इतने गुस्से कि मैंने दुबारा कभी उनसे अब पूछा ही नहीं।'

इसके कारण उनके मन में मेरे प्रति विरोध भाव पैदा हो गया। तब से वे मेरे खिलाफ बोलते रहे है। जैसे ही वे मेरे किसी संन्यासी को देखते है तो वे ठीक साँड़ जैसा व्यवहार करते है। अगर तुम किसी साँड़ को लाल झंडा दिखा दो, तो तुम जानते हो क्या होगा। ठीक वही होता है जब वे मेरे किसी संन्यासी को लाल में देखते है तो, एक दम गुस्से से पागल हो जाते है। मैं कहता हूं कि अपने पिछले जनम में वे अवश्य सांड रह होंगे, इसलिए वे लाल रंग से अपनी दुश्मनी नहीं भूले है। जे. कृष्णमूर्ति मेरे विरोध में है, लेकिन में कहता हूं मैं उनके विरोध में नहीं हूं। मैं अभी भी उनसे प्रेम करता हूं। वे बीसवीं सदी के सबसे सुंदर व्यक्ति है। मुझे ऐसा कोई जीवत व्यक्ति दिखाई नहीं देता जिसके साथ मैं उनकी तुलना कर सकूँ। लेकिन उनकी एक सीमा है और वही सीमा उनकी बाधा बन जाती है। सीमा यह है कि वे अति बौद्धिक होने कि कोशिश करते है। और अगर ऊपर उठना हो, अगर शब्दों और संख्याओं के पार जाना हो तो संभव नहीं है। कृष्णमूर्ति को इसके पार होना चाहिए। लेकिन वे विक्टोरिया के समय की बौद्धिकता से बंध गए है। उनकी बौद्धिकता आधुनिक भी नहीं है, एक शताब्दी पुरानी है। वे कहते है कि यह उनका सौभाग्य है कि उनहोंने उपनिषद, गीता, कुरान को नहीं पढ़ा है। तब फिर वे क्या पढ़ते है, आपको बताता हूं, वे घटिया जासूसी उपन्यास पढ़ते है। कृपा करके यह किसी को कहना मत, नहीं तो वे अपना सिर दीवाल पर पटकन लगेंगे। मुझे उनके सिर की चिंता नहीं है, मुझे दीवाल की चिंता है। जहां तक उनके सिर का सवाल है, पिछले पचास वर्षो से भी अधिक से उनके सिर में माइग्रेन है। वह मेरी उम्र से ज्यादा समय है। माइग्रेन का दर्द असह्य होता है। अपनी डायरी में उन्होंने लिखा है कि दर्द के कारण कई बार अपना सिर दीवाल पर पटकना चाहते थे। हां, मुझे दीवाल की चिंता है। उनको माइ्ग्रेन का दर्द क्यों होता है। बहुत बुद्धिवादिता के कारण, और कुछ नहीं। यह मेरी कुर्सी बनाने बाले बेचारे आशीष की तरह नहीं है। लेकिन उनका दर्द शारीरक है। और जे. कृष्णमूर्ति का माइग्रेन आध्यात्मिक है। जे. कृष्णमूर्ति के प्रवचन को सुन कर अगर तुम्हारे सिर में दर्द न हो तो इसाक मतलब है कि या तो तुम संबुद्ध हो या तुम्हारे पास सिर ही नहीं है। दूसरी संभावना अधिक है। पहला कारण तो थोड़ा मुश्किल है।

मैं यह कह रहा था कि दिगंबर जैन मुनि से मेरा जो पहला सामना हुआ उसी से तथाकथित साधुओं और महात्माओं के साथ सामना करने का मेरा सिलसिला आरंभ हुआ। इन सब को बुद्धिवाद को तकलीफ है और मैं इनको खींच कर ठोस धरातल पर ले आने के लिए पैदा हुआ था। लेकिन इन्हें समझदार बनाना बहुत ही मुश्किल है, शायद ये कुछ समझना ही नहीं चाहते क्योंकि उन्हें डर है। शायद नासमझ बने रहने में ही इनको फायदा है। इनको धार्मिक लोगों की तरह आदर मिलता है। मेरे लिए तो ये सिर्फ गोबर-गणेश है।

मेरी नानी ठेठ भारतीय स्त्री नहीं थी। उनके लिए तो पश्चिम भी थोड़ा कम विदेशी होता। और याद रखो, वे पूर्णत: अशिक्षित थी। शायद इसीलिए वे बहुत दूरदर्शी थी। शायद वे मुझमें कुछ देख सकती थीं जिसके बारे में उस समय मैं बिलकुल अनजान था। शायद इसीलिए वे मुझसे इतना प्रेम करती थी।....मैं कह नहीं सकता....अब वे जीवित नहीं है। एक बात मैं जानता हुं कि अपने पति की मृत्यु के बाद वे उस गांव कभी वापस नहीं गई। वे मेरे पिता के गांव में ही रही। मुझे उन्हें वहीं छोड़ना पडा। लेकिन जब मैं वापस गया तो मैं उनसे बार-बार पूछता, 'नानी, क्या हम लोग गांव वापस चल सकते है।'

तो वे हमेशा कहती, 'क्या करने, तुम तो यहां हो।'

वे तीन सीधे'- साधे शबद संगीत की तरह मेरे भीतर गूँजते रहते है। कि 'तुम यहां हो' मैं भी तुमसे यहीं कहता हूं।....वे मुझसे बहुत प्रेम करती थीं.....ओर तुम्हें मालूम है कि कोई भी तुम्हें मुझसे ज्यादा प्रेम नहीं कर सकता। यह सुंदर है। तुम 'यहां' कभी नहीं आए। काश कि मैं तुम्हें भी ऊंचे आकाश में निमंत्रित कर सकता।

सत्र—10 बुद्धत्व के भी पार

मेरे पास एक नहीं बल्कि चार घोड़े थे। एक मेरा अपना था और तुम्हें मालूम है कि मैं कितना ‘फसी’ जिद्दी हूं, आज भी रॉल्स रॉयसेस में कोई दूसरा नहीं बैठ सकता। यह सिर्फ फसीनेस, जिद्दी पन है। उस समय भी मैं ऐसा ही था। कोई नहीं यहाँ तक कि मेरे नाना भी मेरे घोड़े पर सवार नहीं हो सकते थे। निश्चित ही मैं दूसरों के घोड़ों पर सबरा हो सकता था। दोनों मेरे नाना और नानी के पास एक-एक घोड़ा था। भारतीय गांव की स्त्री का घुड़सवारी करना कुछ अजीब सा फासले पर मेरे पीछे-पीछे बंदूक लिए चलता था। नियति भी अजीब है, मैंने अपने जीवन में किसी का कोई नुकसान नहीं किया—अपने सपने में भी नहीं। मैं तो शुद्ध शाकाहारी हूं। लेकिन भाग्य का खेल देखो कि बचपन से ले कर अब तक मेरी रक्षा के लिए एक पहरेदार सदा साथ रहा है। न जाने क्यों लेकिन भूरा से लेकर अब तक मैं कभी बिना पहरेदार के नहीं रहा। आज भी या तो मेरे आगे चलते है या मेरे पीछे पर सदा साथ ही रहते है। भूरा ने सारा खेल आरंभ किया। तब भी जब मैं बच्चा था, मैं समझ सकता था कि घोड़े पर सवार भूरा कुछ फासले पर मेरे पीछे क्यों चलता है। क्योंकि दो बार मेरे अपहरण की कोशिश की गई थी। मैं नहीं जानता कि किसी को मुझमें इतनी दिलचस्पी क्यों थी। अब कम से कम मैं समझ सकता हूं। मेरे नाना हालांकि पश्चिमी मुल्कों के स्तर से तो बहुत अमीर नहीं थे, लेकिन उस गांव में वे बहुत अमीर थे। डकैत...यह अँग्रेजी शब्द नहीं है। यह हिंदी शब्द डाकू से बना है। लेकिन उस अर्थ में अंग्रेजी भाषा दुनिया की सब भाषाओं से उदार भाषा है। हर वर्ष यह दूसरी भाषाओं के आठ हजार शब्दों को अपनाती जाती है। एक दिन यह सारी दुनिया की भाषा बन जाएगी, कोई इसे रोक नहीं सकता। दूसरी तरफ अनय भाषाएं बहुत झिझकती है, सिकुड़ती जा रही है। वे शुद्धता में भरोसा करती है। कि कोई दूसरी भाषा के शब्दों का प्रवेश न हो जाए। स्वभावत: वे छोटी और अविकसित रह जाती है। अंग्रेजी का शब्द डकैत, इसका अर्थ है लुटेरा। सिर्फ साधारण चोर नहीं पर जब हथियारों से लैस होकर कुछ लोगों का दल बड़े संगठित ढंग से लूटपाट करता है, तब वह डकैती करते है। तब भी मैं छोटा था..;भारत में अमीरों के बच्चों को चुराना आम बात थी, और फिर उनके मां-बाप को धमकी दी जाती थी कि अगर वे डाकुओं को पैसा नहीं देंगे तो बच्चे के हाथ काट दिए जाएंगे। दो बार उन्होंने मेरा अपहरण करने की कोशिश की । दो कारणों से मैं बच गया। एक था मेरा घोड़ा, जो बहुत ताकतवर था अरबी घोड़ा और दूसरा हमारा नौकर, भूरा। मेरे नाना ने उसे हवा में बंदूक चलाने को कहा हुआ था। अपहरण करने बालों पर नहीं, क्योंकि वह जैन धर्म के विरूद्ध है। लेकिन उन्हें डराने के लिए तुम हवा में बंदूक चला सकते हो। मेरी नानी ने भूरा के कान में कहा, मेरे पति तुमसे जो कह रहे है उस पर ध्यान मत देना। पहले तुम हवा में गोली चला सकते हो लेकिन अगर उससे काम न चले, तो याद रखना, अगर तुमने उन पर गोली न चलाई तो मैं तुम्हें गोली मार दूंगी। और सच वे अच्छी निशानेबाज थी। मैंने उन्हें बंदूक चलाते देखा है। मुझे मालूम था, भूरा को मालूम था क्योंकि यद्यपि उन्होंने यह बात भूरा के कान में धीरे से कहीं था, लेकिन वह कानाफूसी नहीं थी, इतने जोर से भी की सारे गांव ने इसे सुन लिया था। वे जो कहती है वह करती भी है। मेरे नाना तो दूसरी और देखने लेंगे। वे इतने दम खम वाली स्त्री थी कि अगर जरूरत पड़ती तो मेरे नाना को भी गोली मार सकती थी, मेरा अर्थ शाब्दिक से भी खतरनाक होता है।

तभी से, यह अजीब है... मुझे बहुत आश्चर्य होता है कि मैंने तो कभी किसी का नुकसान नहीं किया, फिर भी कई बार मेरे जीवन खतरे में पडा है। कई बार मुझे मारने की कोशिश की गई है। मुझे आश्चर्य होता है कि एक न एक तो जीवन का अपने आप अंत होना ही है। फिर क्यों कोई इस को बीच में ही समाप्त करना चाहते है। इससे उन्हें क्या मिलेगा? अगर कोई एक बार मुझे समझा दें कि इससे उन्हें क्या लाभ होगा तो मैं इसी क्षण

श्वास लेना बंद कर दूँ। जिस आदमी ने मुझे मारना चाहा था, उससे एक बारह् मैंने पूछा था—अंत में वह मेरा संन्यासी बन गया था इसलिए मुझे उससे यह पूछने का अवसर मिला गया। मैंने पूछा, अब हम दोनों अकेले है, बताओ कि तुम मुझे क्यों मारना चाहते थे।

उन दिनों बंबई में वुड लैंड में मैं लोगों से अपने कमरे में अकेले ही संन्यास देता था। मैंने कहां, हम दोनों यहां अकेले है। मैं तुम्हें संन्यास दे सकता हूं, इसमें कोई समस्या नहीं है। पहले संन्यासी बन जाओ। फिर मुझे बताओ के मुझे क्यों मारना चाहते थे, तुम्हारा उदेश्य क्या था। अगर तुम मुझे इस का करण बता दो तो मैं अभी और यहां तुम्हारे सामने श्वास लेना बंद कर दूँगा। यह सुन कर वह रोने लगा उसने मेरे पैर पकड़ लिए। और मैंने कहा कि: 'इससे काम नहीं चलेगा। तुम्हें बताना पड़ेगा कि मुझे मार डालने का उदेश्य क्या था।'

उसने कहां: 'मैं सिर्फ बेवकूफ था। मैं क्या बताऊ? बताने के कुछ भी नहीं है, मैं पागल हो गया था।'

शायद इसी कारण से मुझे जैसे निरीह व्यक्ति पर कई बार हमले हुए और मुझे जहर भी दिया गया।

लेकिन जब उन्होंने भूरा को कहा था कि 'अगर कोई मेरे बच्चे को हाथ भी लगाए तो तुम सिर्फ हवा में गोली नहीं चलाओगे, क्योंकि हम जैन धम्र में विश्वास करते है...वह विश्वास ठीक है लेकिन सिर्फ मंदिर में ही। बाजार में हमें वैसा ही व्यवहार करना पड़ेगा जैसा दूसरे लोग करते है। और सारा संसार तो जैनी नहीं है, हम कैसे हमारे जैन धर्म के अनुसार व्यवहार कर सकते है।'

मैं उनके इस सीधे साफ तर्क समझ सकता हुं। अगर तुम ऐसे आदमी से बात कर रहे हो जो अंग्रेजी नहीं जानता, तो तुम उससे अंग्रेजी में बात नहीं कर सकते हो। अगर तुम उसकी ही भाषा में बात करो तो संवाद की ज्यादा संभावना है। विभिन्न दर्शन, विभिन्न भाषाएं है। यह साफ-साफ नोट हो जाने दो (। विभिन्न दर्शन या फिलासफियों का अर्थ कुछ और नहीं है, वे केवल भाषाएं है। और जब मैंने मेरी नानी को भूरा को कहते सूना, 'जब कोई डाकू मेरे बच्चे को चुराना चाहे तो उसके साथ उसी भाषा में बोलों जिस भाषा को वह समझता है। उस क्षण जैन धम्र को भूल जाओ।' तो उस क्षण यह बात मेरी समझ में आ गई। मेरे नाना परिस्थिति को अच्छी तरह से समझ ही गए। क्योंकि उन्होंने अपनी आंखे बंद कीं और अपना मंत्र जपने लगे। नमो अरिहंताणम् नमो नमो नमो सिद्धाणम् नमो नमो.... मेरी नानी में भी यही सदा सही होने का गुण था। उन्होंने भूरा से कहा, 'क्या तुम सोचते हो कि ये डाकू जैन धर्म को मानते है? और ये तो सठिया गए है—उन्होंने मेरे नाना की और इशारा किया जो उस समय अपना मत्रं दोहरा रहे थे। उन्होंने कहा: वे तुम्हें सिर्फ हवा में गोली चलाने को कह रहे है क्योंकि हमें किसी को मारना नहीं चाहिए। उन्हें अपना मंत्र पढने दो। उनसे मारने के लिए कौन कह रहा है? तुम तो जैन नहीं हो।' उस क्षण मुझे ऐसा लगा की भूरा अगर जैन होता तो आज इसकी नौकरी गई। उसने कहा मैं जैन नहीं हु, इसलिए मुझे कोई परवाह नहीं है। मेरी नानी ने कहा कि, 'तब मैंने जो कहा है उसे याद रखना और इस बूढे बेवकूफ की बात को भूल जाना।' तुम्हें आश्चर्य होगा की मेरे सब भाई बहन जो कि करीब एक दर्जन है, मुझे छोड़ कर सभी मेरी मां को मां कहते है, लेकिन मैं अकेला ही उन्हें भाभी कहता हूं। भारत में सब लोगों को इस बात पर बहुत हैरानी होती थी, कि मैं अपनी मां को भाभी कहता हूं। क्योंकि इसका अर्थ है, बड़े भाई की पत्नी। हिंदी में बड़े भाई को भैया कहते है, और की पत्नी बड़े भाई की पत्नी को भाभी कहते है। मेरे चाचा उन्हें भाभी कहते है, जो बिलकुल ठीक है। फिर मैं उन्हें अभी तक भी भाभी क्यों कहता हूं। मेरा उन्हें भाभी पुकारने का कारण यह है कि मैं नानी को मां मानता था। बचपन में अपनी नानी को अपनी मां समझने के बाद किसी और को मां कहना मुश्किल था। मैंने हमेशा उनको नानी कहा है और मैं यह भी जानता हूं कि वे मेरी असली मां नहीं थी, लेकिन उन्होंने ही मुझे सदा मातृत्व का दुलार दिया है। मेरी वास्तविक मां तो मुझसे कुछ दूर रहीं—कुछ बेगानी सी, यद्यपि मेरी नानी मर गई है, फिर भी वे मेरे बहुत नजदीक है। यद्यपि मेरी मां अब

संबुद्ध हो गई है, फिर भी कहता हूं। मैं उनको मां कह ही नहीं सकता। क्योंकि ऐसा कहना एक प्रकार से मेरी मृत नानी के प्रति विश्वासघात करना है। नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरी नानी किसी तरह मेरी आत्मा का अंग बन गई है। एक बार जब एक चोर हमारे घर में घुस आसा तो वे निहत्थी उसके साथ लड़ी। तब मुझे मालूम हुआ कि ऐ स्त्री कितनी भयंकर हो सकती है। अगर मैं बीच-बचाव न करता तो वे उस बेचारे आदमी को मार ही डालती। मैंने कहा, नानी आप क्या कर रही है। मेरी खातिर इसे छोड़ दो, उन्होंने उस आदमी को छोड़ दिया। वह बेचारा भरोसा ही नहीं कर था, कि थोड़ा सा और गला दबाती तो बेचारा मर जाता। जब उन्होंने भूरा से कहा तो मुझे मालूम था कि वे जो कह रही है करेंगी भी। भूरा भी जानता था कि उनके शब्दों का यही अर्थ है जो वे कह रही है। तब मेरे नाना ने मंत्र जपना शुरू कर दिया तो मुझे मालूम हो गया कि वे भी समझ गए कि नानी के कहने का अर्थ है। दो बार मुझ पर हमले हुए। और मुझे तो बड़ा मजा आया, मेरे लिए वह रोमांचक अनुभव था। सच तो यह है कि गहरे में मैं जानता चाहता था कि अपहरण का क्या मतलब होता है। वही हमेशा मेरे चरित्र कि विशेषता रही है कि मुझे जोखिम उठाने में या खतरे का सामना करने में हमेशा बहुत मजा आता है। मैं अपने घोड़े पर सवार होकर नाना के जंगलों में घूमा करता था, नाना ने वायदा किया था कि वे अपना सब कुछ अपनी वसीयत में मेरे नाम कर देंगे। और उन्होंने ऐसा किया भी। उन्होंने और किसी को एक पैसा भी नहीं दिया। उनके पास हजारों एकड़ जमीन थी। हां उन दिनों उसका कोई मूल्य नहीं था। लेकिन मूल्य से मुझे क्या मतलब नहीं है। उसका सौंदर्य अनूठा था। वे बड़े-बड़े वृक्ष, बडी झील और गर्मी में पके हुए आमों की सुगंध, मैं वहां अपने घोड़े पर इतनी बार जाता था कि घोड़ा भी रास्ते को पहचान गया था। अभी भी मैं वैसा ही हूं, और अगर कोई जगह मुझे पसंद न आए तो मैं दुबारा वहां नहीं जाता। मैं मद्रास केवल एक बार गया हूं। सिर्फ एक बार, क्योंकि मुझे वह शहर और खास कर वहां की भाषा बिलकुल पसंद नहीं आई। उस भाषा को सुन कर ऐसा लगता था जैसे कि सब लोग एक-दूसरे से झगड़ा कर रहे हों। मुझे ऐसी भाषा पसंद नहीं है। इसलिए मैंने मेजबान से कहा: 'यहां ठहरने का यह मेरा पहला और अंतिम अवसर है।'

उन्होंने पूछा: 'ऐसा क्यों कह रहे हैं कि यह अंतिम अवसर है।'

मैंने कहा: 'मुझे इस तरह की भाषा पसंद नहीं है, सब लड़ते हुए से लगते है। मैं जानता हूं कि वे झगड़ नहीं रहे, वे ऐसा बोलता ही है।'

कृष्णमूर्ति को मद्रास पसंद है, लेकिन वह उनकी बात है। वे हर वर्ष वहां जाते है। वे तमिल है। सच तो यह है कि उनका जन्म मद्रास के निकट हुआ था। वे मद्रासी है, इसलिए उनका वहां जाना एकदम तर्कयुक्त है। मैं बहुत जगहों पर जाता था। क्यों? का कोई सवाल ही नहीं हे। मुझे सिर्फ जाने में मजा आता था। मुझे घूमते रहने मैं मजा आता है। तुम्हें आया? घुमक्कड़, मैं ऐसा व्यक्ति हूं जिसे कोई धंधा नहीं है—यहां वहां, मैं सिर्फ घुमक्कड़ हूं। बिना वजह घूमते रहता हूं।

मैं अपने घोड़े पर जाता था और राजकुमारी डायना के विवाहा के जुलूस के घोड़ों को देख कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इंग्लैंड में भी ऐसे घोड़े हो सकते है। महारानी तो बिलकुल साधारण है, सभ्यता वश मैं कुरूप नहीं कहना चाहता। और राजकुमार चार्ल्स भी राजकुमार जैसा दिखाई नहीं देता। उसके चेहरे को देखो। उस तरह के चेहरे को तुम राजकुमार करोगे? शायद इंग्लैड में...ओर मेहमान, बड़े-बड़े लोग खास कर सबसे बड़ा पुरोहित, क्या कहते हो तुम उसे इंग्लैड में?

'दि आर्चबिशप ऑफ केंट बरी' कहते है। आर्चबिशप, वाह, क्या नाम है। एक...(डैश डैश डैश) के लिए। अन्यथा वे कहेंगे कि क्योंकि मैं ऐसे शब्दों का प्रयोग करता हूं कि मैं एनलाइटेंड नहीं हो सकता। लेकिन मैं सोचता हूं कि दुनियां में सभी लोग समझ जाएंगे कि 'डैश डैश डैश' का मेरा क्या मतलब है—आर्चबिशप भी

समझ जाएगा। या क्या पता, शायद एलजी रही भी हो तो उस समय मुझे उसका पता नहीं था। चह एक अजीब संयोग है कि जिस वर्ष मैं बुद्धत्व को प्राप्त हुआ उसी साल मुझे एलर्जी हुई। अब तो मैंने बुद्धत्व को भी छोड़ दिया है।

मैं अस्तित्व से कहता हूं कि इस एलर्जी को अब दूर कर दो, ताकि में फिर से घोड़े की सवारी कर सकूँ। वह दि सिर्फ मेरे लिए ही नहीं लेकिन मेरे संन्यासियों के लिए भी बड़ा महत्वपूर्ण होगा। सिर्फ एक फोटो हे जिसमे मैं कश्मीरी घोड़े पर सवार हूं। सारी दुनिया में इस फोटो को छापा जा रहा है। यह सिर्फ एक फोटो है, असल में मैं सवारी नहीं कर रहा था, लेकिन चूंकि फोटोग्राफर घोड़े पर मेरी फोटो लेना चाहता था, और मुझे वह आदमी, फोटोग्राफर पसंद आया। में उसे न न कर सका। वह घोड़े और सामान लेकर आया था। तो मैंने कहा, ठीक है। मैं सिर्फ घोड़े पर बैठ गया। और तुम फोटो में भी देख सकते हो कि मेरी मुसकुराहट असली नहीं है। वह तो फोटोग्राफर के अनुरोध पर लाई गई झूठी मुस्कुराहट है। परंतु अगर मैं समाधि के पार जा सकता हूं तो कौन जानता है कि शायद मैं कम से कम घोड़ों की एलर्जी के भी पार हो जाऊँ। और तब मेरे चारों और वही दुनिया हो सकती है। वही झील... वही पर्वत, वही नदी...केवल नाना की कमी मुझे महसूस होगी।

सत्र—11 भोपाल का महल

जिस गांव में मेरा जन्म हुआ था वह ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा नहीं था। वह एक छोटी सी रियासत थी जिस पर एक मुसलमान बेगम शासन करता थी। अभी मैं उसे देख सकता हूं। बड़ी अजीब बात है, वह भी इंग्लैंड की महारानी जैसी ही सुंदर थी, बिलकुल वैसी ही सुन्दर। लेकिन एक अच्छी बात यह थी कि वह मुसलमान थी। लेकिन इंग्लैंड की महारानी मुसलमान नहीं थी। ऐसी औरतों को हमेशा मुसलमान होना चाहिए, क्योंकि उन्हें एक पर्दे के पीछे, बुरक़े में छिपे रहना होता है। वह बेगम कभी-कभी हमारे गांव आती थी। और उस गांव में केवल मेरा घर ही ऐसा थी जहां वह ठहर सकती थी। और इसके अतिरिक्त वह मेरी नानी को बहुत प्रेम करती थी। मेरी नानी और वह, दोनों आपस में बातें कर रही थी जब पहली बार मैंने उस महारानी को बिना बुरक़े के देखा थी। मुझे तो विश्वास ही न हो सका कि यह घरेलू सी दिखाई देने बाली अति साधारण औरत महारानी है। तब मेरी समझ में आया कि बुरक़े का उद्देश्य क्या है, इसे हिंदू पर्दा कहते है। यह कुरूप औरतों के लिए अच्छा है। इससे अच्छी दुनिया में यह कुरूप पुरुषों के लिए भी अच्छा रहेगा। कम से कम तब तुम अपनी कुरूपता से दूसरों पर आक्रमण तो नहीं करोगे।

मैं तो उस बेगम के सामने ही हंस पड़ा। उसने पूछा: 'तुम क्यों हंस रहे हो।'

मैंने कहा: 'मैं इसलिए हंस रहा हूं कि मैं हमेशा सोचता था कि इस पर्दे का, इस बुरक़े को उद्देश्य क्या है। आज मेरी समझ में आया।' मैं नहीं सोचता कि उसकी समझ में आया, क्योंकि वह मुसकराई। यद्यपि वह कुरूप थी लेकिन मुझे मानना पड़ेगा कि उसकी मुस्कान बहुत सुंदर थी।

इस दुनिया में बड़ी अजीब बातें होती हैं1 मैंने ऐसे अनेक सुंदर लोगों को देखा हे जिनके चेहरे मुस्कराते समय कुरूप हो जाते है। मैंने अपने बचपन में महात्मा गांधी को देखा है। वे बहुत ही कुरूप थे। उनकी कुरूपता बेजोड़ थी। लाजवाब थी, लेकिन उनका सौंदर्य उनकी मुस्कान में थी। वे जानते थे कि कैसे मुस्कराना चाहिए। उसमें उनसे मेरा कोई विरोध नहीं है। हां, अन्य बातों में मैं उनका विरोध करता हूं, क्योंकि उनकी मुस्कुराहट को छोड़ कर बाकी उनकी सब बातें फिजूल थी। सचमुच वे महान 'बोधि गार्बेज' थे। उनकी तुलना में हमारा बोधि गार्बेज कुछ नहीं है। मैंने सुना है कि लोग स्वामी बोधि गर्भ को बोधि गार्बेज कहते है। मुझे यह पसंद आया। उन्होने उस नाम के साथ कुछ जोड़ दिया है। सच तो यह है कि उन्होंने उसे वहीं पर रख दिया है जहां पर वह है। मैंने उसे बोधि गर्भ नाम दिया है जो सिर्फ उसका भविष्य हो सकता है। लेकिन लोगों को तो वही दिखाई देता हे जो उनकी आँख के सामने होता है। वे उसे बोधि गार्बेज कहते है। शायद यह नाम महात्मा गांधी के लिए भी उपयुक्त होता। मैं यह कह रहा था कि मेरा गांव एक छोटी सह रियासत, बहुत छोटी, भोपाल में था और वह ब्रिटिश राज्य का हिस्सा नहीं था। भोपाल की बेगम कभी-कभी वहां आती थी। मैं उस समय का जिक्र कर रहा था जब मैं उस औरत की कुरूपता और उसके बुरक़े की सुंदरता पर हंस पड़ा थी। उसका बुरक़ा बहुत ही सुंदर था। वह हीरे-मोतियों से जड़ा हुआ थी। वह मेरी नानी से इतनी प्रभावित थी कि उसने उनको राजधानी के आगामी वार्षिकोत्सव के लिए आमंत्रित किया। मेरी नानी ने कहा: 'मेरा जाना संभव नहीं है, क्योंकि मैं अपने बच्चे को इतने दिन के लिए छोड़ नहीं सकती।' इस पर बेगम न कहा: 'यह तो कोई समस्या नहीं है। इसे भी साथ ले आइए। मुझे भी यह बहुत प्यारा लगता है।'

मेरी समझ में न आया कि वह मुझ से क्यों प्यार करती है। मैंने तो कोई गलती नहीं की कि जिसकी मुझे यह सज़ा मिले। उस औरत के प्रेम करने के विचार मात्र से ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते है। उस समय वह चुड़ैल जैसी दिखाई देती थी। गोंद जैसी चिपचिपी, अपने जीवन में अगर मुझे किसी से डर लगा है तो केवल उस औरत

से। लेकिन राजधानी में बेगम का मेहमान बन कर जाना और उसके उस आलीशान महल में ठहरना जिसके बारे में सैकड़ों कुहनियाँ सुनी हुई थी। इतना रोमांचक था कि मैं अपनी नानी के साथ वहां वार्षिकोत्सव देखने गया। हालांकि मैं उस औरत को फिर कभी देखना नहीं चाहता था। मुझे वह महल याद है। वह भारत में सबसे सुंदर महल था। एक हजार एकड़ में वह फैला हुआ था। पाँच सौ एकड़ में पेड़-पौधों का जंगल था और पाँच सौ एकड़ की झील थी। बेगम ने हमारी बहुत खातिर की, क्योंकि हम उसके मेहमान थे। लेकिन मैंने पूरी कोशिश की कि मैं उसके चेहरे को न देखूं। शायद वह अब भी जीवित है, क्योंकि उस समय वह अधिक उम्र की न थी। बाद में उस महल के बारे में एक अजीब संयोग की बात हुई। हां, मैं उसे संयोग ही तो कह सकता हूं। जिस दिन मैं हिमालय में रहने के लिए तैयार हो गया उसी दिन भोपाल बेगम के बेटे ने फोन किया कि अगर हमें पसंद हो तो वे अपना यह महल हमें देने के लिए तैयार है—वही महल जिसके बारे में मैं तुम्हें बता रहा हूं। वह महल...कुछ देर के लिए तो मुझे इस बात पर विश्वास ही न हुआ। उनकी सारी रियासत का विलय भारत में हो चुका था। उसका सब कुछ खो गया था। उनके पास केवल एक हजार एकड़ जमीन और यह महल ही बचा थी। लेकिन राज्य का यह बचा हुआ भाग भी बहुत सुंदर था। पाँच सो एकड़ में लगे हुए प्राचीन पेड़ और पाँच सौ एकड़ की झील असल में भोपाल की बड़ी झील के ही हिस्से थे। भारत में भोपाल की झील ही सबसे बड़ी झील है। यह इतनी बड़ी है कि मेरे ख्याल में संसार की किसी भी झील की तुलना इससे नहीं की जा सकती। मुझे याद नहीं है कि कितने मील चौडी है, लेकिन इतना मालूम हे कि एक किनारे से दूसरा किनारा दिखाई नहीं देता। महल की पाँच सौ एकड़ जमीन भी इसी झील का अंश है और ये सब महल के अंतर्गत है। मैंने कहा: 'अब तो बहुत देर हो गई है। राजकुमार और उनकी मां अगर अब भी जिंदा है तो उनसे कहना कि हम उनके बहुत आभारी है। लेकिन अब मैंने हिमालय जाने का निर्णय कर लिया है, सात से मैं कुछ हजार एकड़ जमीन लेने की कोशिश कर रहा था। लेकिन ये राजनीतिज्ञ सदा कोई न कोई अड़ंगा लगा देते है। राजकुमार से कहना कि मुझे याद है कि में आपकी मां का मेहमान बन कर आपके महल में ठहरा था। अभी वे जीवित हैं या नहीं, मुझे मालूम नहीं। मुझे वह महल बहुत ही अच्छा लगा था। और अभी भी वह मुझे पसंद है। आप इसे मुझे भेंट करना चाहते हैं, इसके लिए मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूं, लेकिन अब मैं हिमालय जा रहा हूं।'

मेरी सैक्रेटरी को भी बड़ा आश्चर्य हुआ। और उसने कहा: 'वे आपको यह महल मुफ्त में भेंट कर रहे है और आप अस्वीकार कर रहे है। उसकी कीमत तो करोड़ो की होगी।'

मैंने कहा: 'दस-बीस करोड़ का तो कोई सवाल नहीं उठता। मेरा धन्यवाद इस रकम से कहीं अधिक मूल्यवान है। उनसे कह दो कि वे आपको धन्यवाद देते है। आपका ये प्रस्ताव कुछ घंटे देर से मिला। अगर पहले यह प्रस्ताव आता तो शायद स्वीकार कर लिया जाता। अब तो कुछ नहीं किया जा सकता।'

जब राजकुमार ने मेरा यह संदेश सुना, तो उसको सहज विश्वास ही न हुआ कि कोई इतने बड़े महल को मुफ्त में लेने से भी इनकार कर सकता है। उससे केवल इतना ही कहा गया, ''खेद है, धन्यवाद''।

मैं उस महल को जानता हूं। एक बार बचपन में मैं वहां मेहमान बन कर गया थी और फिर बाद में भी दुबारा एक बार गया था। मैंने उसे एक बच्चे की दृष्टि से देखा और फिर एक नवयुवक की दृष्टि से भी देखा है। जब बच्चा था तो इसके अनुपम सौंदर्य के बारे में मुझे कोई धोखा नहीं हुआ था—उस समय मैं इसके बारे में जो समझ सका था। वह महल उससे कहीं अधिक सुंदर था। बच्चे की दृष्टि और उसकी समझ की अपनी सीमाएं होती है। वह तो केवल उसी को देख सकता है जो उसके ठीक सामने होता है। अपनी युवावस्था में जब मैं उस महल में फिर से मेहमान की तरह गया तो मुझे ऐसा लगा कि यह इस संसार में सबसे सुंदर इमारत है, विशेषकर जिस प्रकार इसका स्थान निर्धारण किया गया है। लेकिन मुझे इनकार करना पड़ा। कभी-कभी इन्कार करना भी

अच्छा लगता है। क्योंकि मुझे मालूम था कि अगर मैंने इस प्रस्ताव को स्वीकार भी कर लिया तो सैकड़ों मुसीबतें शुरू हो जाएगी। यह महल मेरा महल न हो सकेगा। अशिक्षित, अनैतिक, भ्रष्टाचारी राजनीतिज्ञ, जो इतने शक्तिशाली बन गए है, अवश्य ही बीच में कूद कर बना-बनाया काम बिगाड़ देते। जब कि मैंने महल को लेने से इनकार कर दिया था फिर भी वे इसमें कूद ही पड़े, क्योंकि उन्होंने समझा कि राजकुमार झूठ बोल रहा है। क्योंकि इस प्रकार के प्रस्ताव को कौन ठुकरा सकता है।

मुझे पता चला है कि वे अब राजकुमार को हर संभव तरीके से परेशान कर रहे है। यह जानने के लिए कि उसने वह महल मुझे क्यों भेंट किया। मैंने उसे स्वीकार नहीं किया। असलियत में कुछ हुआ नहीं। केवल एक टेलीफोन आया और बस वह काफी हो गया। राजनीतिज्ञ तो सब देशों में होते है, लेकिन भारत कि राजनीतिज्ञों जैसे कहीं नहीं है। भारत के राजनेता इस दुनिया में सबसे बुरे है। इसका कारण स्पष्ट है। दो हजार साल तक भारत गुलाम रहा है। सौभाग्य से उन्नीस सौ सैंतालीस में यह स्वतंत्र हो गया। मैंने सौभाग्य से इसलिए कहा, क्योंकि अभी भारत इस स्वतंत्रता के योग्य नहीं है, इसका सारा श्रेय तो इंग्लैंड़ के उस समय के प्रधामंत्री एटली को जाता है। वह समाज वादी था, एक तरह का स्वप्न देखने बाला था। वह स्वतंत्रता और समानता आदि आदर्शों के बारे में सोचता था। भारतीय-स्वतंत्रता का वास्तविक पिता तो वही था। भारत ने उसको अर्जित नहीं किया, न उसमें इसकी योग्यता थी। केवल भाग्य से उस समय इंग्लैंड का प्रधानमंत्री एटली था। दो हजार वर्षों की गुलामी के कारण भारतीय बहुत चालाक हो गए है, अपने को जीवित रखने के लिए, अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए गुलाम को चालाक होना ही पड़ता है। भारत की गुलामी तो चली गई, लेकिन चालाकी बच गई, कोई एलटी उसे नष्ट नहीं कर सका। यह किसी के हाथ में नहीं है। पूरे देश में यह फैली हुई है। इस शताब्दी के अंत में भारत की जनसंख्या इस संसार में सबसे अधिक होगी। इसके विचार मात्र से मेरी तो नींद उड़ जाती है। जब कभी मैं सोना नहीं चाहता तो मैं इस सदी के अंत में भारत की दशा के बारे में सोचता हूं। चह काफी है, तब तो नींद की गोलियां भी दे दो तो मुझे पर कोई असर नहीं होगा। भारत की जनसंख्या की समस्या और इन छोटे-छोटे राजनेताओं की भरमार के विचार मात्र से मैं डर जाता हूं। क्या तुम इससे बढ कर कोई और दुःख स्वप्न सोच सकते हो?

मैंने उस सुंदर महल को लेने से इनकार किया। मुझे अभी भी दस बात का अफसोस है कि मुझे एकमात्र ऐसे आदमी को इनकार करना पड़ा जो बदले में बिना पैसे माँगें मुझे ऐसी भेंट देना चाहता था। लेकिन मैं भी क्या करता, मुझे उसके लिए अफसोस है। मुझे मना करना पड़ा, क्योंकि तब तक मैं निर्णय ले चुका था। और एक बार निर्णय कर लेने के बाद—चाहे वह ठीक हो या गलत—मैं उसे बदल नहीं सकता, न ही उसे रद्द कर सकता हूं। यह मेरे खून में ही नहीं है। यह एक प्रकार की हठधर्मी पन है, जिद्दी पन है।

सत्र—12 जीवक और देव गीत

बुद्ध का वैद्य, जीवक, सम्राट बिंब सार ने बुद्ध को दिया था। एक और बात है कि बिंब सार बुद्ध का संन्यासी नहीं था, वह केवल उनका हितैषी था, शुभ चिंतक था। उसने बुद्ध को जीवक क्यों दिया? जीवक बिंब सार का निजी वैद्य था, उस समय का सबसे प्रसिद्ध, क्योंकि एक दूसरे राजा से उसकी प्रतियोगिता चल रही थी, जिसका नाम प्रेसनजित था। प्रसेनजित ले बुद्ध से कहा था, आपको जब भी आवश्यकता हो, मेरा वैद्य आपकी सेवा में उपस्थित हो जाएगा। यह बिंबसार के लिए बहुत बड़ी बात थी। अगर प्रसेनजित यह कर सकता है, तो बिंबसार उसे दिखएगा कि वह बुद्ध को अपना सबसे प्रिय निजी वैद्य भेंट कर सकता है। इसलिए यद्यपि बुद्ध जहां-जहां गए जीवक उनके साथ-साथ गया, लेकिन याद रखना, वह उनका शिष्य नहीं था। वह हिंदू ब्राह्मण ही बना रहा था।

अजीब बात थी—बुद्ध का वैद्य, जो निरंतर उनके साथ दिन-रात उनकी छाया की तरह रहता था, वह ब्राह्मण ही बना रहा। लेकिन इस तथ्य से यह सिद्ध होता है कि जीवक को राजा से वेतन मिलता था। वह राजा की नौकरी करता था। अगर राजा चाहता था कि वह बुद्ध के साथ रहे, तो ठीक था। एक नौकर को अपने स्वामी की आज्ञा माननी ही पड़ती है और बुद्ध के पास भी वह कभी-कभार ही रहता था, क्योंकि बिंबसार बूढ़ा था और उसको बार-बार अपने वैद्य की जरूरत पड़ती थी, इसलिए वह जीवक को प्राय: राजधानी में बुलाता रहता था।

देवराज, तुमने तो इस बारे में सोचा भी न होगा, लेकिन मुझे अफसोस हुआ की मैं तुमसे कुछ ज्यादती कर बैठा। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। तुम ऐसे अनूठे हो जैसा कोई हो नहीं सकता। जहां तक किसी बुद्ध के वैद्य होने का सवाल है किसी की भी तुलना तुम्हारे साथ नहीं की जा सकती, न अतीत में न भविष्य में। क्योंकि ऐसा आदमी कभी नहीं होगा जो इतना सरल और इतना पागल हो कि अपने आप को ज़ोरबा दि बुद्ध कहता हो। पर अजीब बात है कि होश उस चीज से और भी स्पष्ट हो जाता है जो शरीर को गायब करने में सहायक हो। में इस कुर्सी को सिर्फ इसलिए पकड़े हुए हूं ताकि मुझे याद रहे कि शरीर अभी है। ऐसा नहीं की मैं उसे बनाए रखना चाहता हूं। लेकिन सिर्फ इसलिए कि कहीं तुम लोग पागल न हो जाओ। इस कमरे में तो इतनी जगह नहीं है कि चार पागल आदमी उसमें समा सकें। हां, अपने भीतर के पागलपन के लिए कोई सीमा नहीं होती। वाराणसी में कृष्णमूर्ति जिन मित्र के यहां ठहरते थे। उन्होंने भी यही बात पूछी। दिल्ली के मित्रों ने भी यहीं पूछा। इसलिए यह गलत नहीं हो सकता। अलग-अलग स्थानों के अलग-अलग लोग बार-बार एक ही प्रश्न पूछते हे। बहुत लोगों ने उन्हें हवाई जहाज की यात्रा करते समय भी उन्हें जासूसी उपन्यास पढ़ते देखा है। सच तो यह है कि बंबई से दिल्ली की हवाई जहाज से यात्रा करते समय मैंने भी उन्हें जासूसी उपन्यास पढ़ते देखा है। संयोगवश हम दोनों एक ही हवाई जहाज से यात्रा कर रहे थे। इसलिए मैं अधिकारपूर्वक कह सकता हूं कि वे जासूसी उपन्यास पढ़ते है। मुझे किसी गवाह की जरूरत नहीं है। मैं खुद इसका गवाह हूं। क्योंकि मैं बंबई में जिस घर में ठहरा था वे भी वहीं ठहरते थे। हमारे मेजबान, उस घर के मालकिन न मुझसे पूछा: 'मैं आपसे एक बात पूछना चाहती हूं कि मैंने आपको कभी जासूसी उपन्यास पढ़ते नहीं देखा, क्या बात है? उसने कहा: मैं समझती थी कि सभी संबुद्ध लोगों को जासूसी उपन्यास पढ़ना चाहिए।'

मैंने आश्चर्य से उसे कहा: 'तुम्हारे दिमाग में ऐसा मूर्खतापूर्ण विचार कहां से आया?'

उसने कहा: 'कृष्णमूर्ति से। वे भी यहां ठहरते हैं, मेरे पति उनके अनुयायी है। मैं भी उनसे बहुत प्रेम करती हूं। उनको मानती हूं, मैंने उन्हें घटिया जासूसी उपन्यास पढ़ते देखा है। मैंने सोचा, शायद आप भी जासूसी उपन्यास छुपा कर पढ़ते होगें। आज सुबह मैं उस समय की बात कर रहा था जब भोपाल की बेगम हमारे गांव

आई जो उनकी रियासत में ही था। और उसने हमें वार्षिकोत्सव पर अपना मेहमान बनने के लिए आमंत्रित किया। जब वह हमारे गांव में ठहरी हुई थी तो उस समय उसने नानी से पूछा कि आप इस लड़के को राजा क्यों कहते है?

उस रियासत में राजा की उपाधि तो केवल उस रियासत के मलिक के लिए ही आरक्षित थी। बेगम के पति को भी राजा नहीं कहा जाता था। उसे केवल राजकुमार ही कहा जाता था। ठीक जिस प्रकार इग्लैंड में बेचारे फिलिप को सम्राट न कह कर प्रिंस फिलिप ही कहा जाता है। और मजेदार बात तो यह है कि केवल प्रिंस फिलिप ही राजा जैसा दिखाई देता है। न तो इग्लैंड की महारानी जैसी दिखाई देती है। जो व्यक्ति सचमुच राजा जैसा दिखाई देता है उसे

ये लोग राजा नहीं कहते, वह सिर्फ प्रिंस फिलिप कहलाता है। मुझे उसके लिए बहुत अफसोस होता है। इसका कारण है कि उसका इस परिवार से खून का रिश्ता नहीं है और इनके मूढ़ संसार में केवल खून को ही महत्व दिया जाता है। लेकिन प्रयोगशाला में तो राजा या रानी के खून में कोई अलग विशेषता नहीं होती।

इसी प्रकार उस समय छोटी सी उस रियासत की मालकिन वह औरत थी और इसलिए उसे रानी या बेगम कहा जाता था। लेकिन कोई राजा नहीं था। उसके पति को केवल राजकुमार कहा जाता था। इसलिए स्वभावत: उसने मेरी नानी से पूछा कि आप अपने इस बेटे को राजा क्यों कहते है। तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा कि उस रियासत में किसी का राजा नाम रखना गैर-कानूनी था। मेरी नानी ने हंस कर कहा: 'वह मेरे ह्रदय का राजा है और जहां तक कानून का सवाल है, हम जल्दी ही इस रियासत को छोड़ देंगे। लेकिन में इसका नाम नहीं बदल सकती।'

मैं भी यह सुन कर बहुत हैरान हुआ कि हम जल्दी ही रियासत को छोड़ देंगे—केवल मेरे नाम को बचाने के लिए। मैंने नानी से उस रात कहा: 'नाना, क्या आप पागल हो गई है, केवल इस नाम को बचाने कि लिए, अरे किसी भी नाम से काम चल सकता है। हमें यहां से चले जाने की कोई जरूरत नहीं है। और निजी तौर से आप मुझे राजा ही कहती रहिए।'

नानी ने कहां: 'मुझे भीतर से ऐसा लगता है, कि हमें जल्दी ही इस रियासत को छोड़ना पड़ेगा। इसलिए मैंने यह खतरा उठाया है।'

और यही हुआ। यह प्रसंग उस समय का है जब मैं आठ साल का था और ठीक एक साल बाद हमने उस रियासत को सदा-सदा के लिए दिया। लेकिन उन्होंने मुझे राजा कहना कभी बंद नहीं किया। बाद में मैंने अपना नाम बदल लिया, सिर्फ इसलिए क्योंकि राजा नाम बहुत ही वाहियात लगता था। और मैं नहीं चाहता था कि इस नाम से स्कूल में मेरा मजाक उड़ाए जाए। और उससे अधिक मैंने कभी नहीं चाहा कि कोई और मुझे राजा पुकारें, सिवाय मेरी नानी के। वह हमारा निजी मामला था। लेकिन बेगम को यह नाम अच्छा नहीं लगा, वह बुरा मान गई। बेचारे राजा-रानी, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री कितने गरीब है। कितने खोखले है, और फिर भी ये शक्तिशाली है। इनकी मूढता का कोई अंत नहीं, साथ ही इनकी शक्ति का भी कोई अंत नहीं, बड़ी अजीब दुनिया है यह। मैंने अपनी नानी से कहा: 'जहां तक मैं समझता हूं वह सिर्फ मेरे नाम से ही नाराज नहीं हुई है, उसे आपसे बहुत ईर्ष्या भी हो गई है। मैं इतना स्पष्ट देख सकता था कि संदेह का कोई प्रश्न ही न था। और मैंने उनसे कहा: मैं आपसे यह नहीं पूछ रहा कि मैं गलत हूं या सही हूं।'

सच तो यह है कि मेरी इस बात ने ही मेरे समस्त जीवन के ढंग को निश्चित कर दिया। मैंने कभी किसी से नहीं पूछा कि मैं गलत हूं या सही। गलत या सही, अगर मैं कुछ करना चाहता हूं तो करना चाहता हूं और मैं उसे सही कर देता हूं। अगर वह गलत है तो मैं उसे सही कर देता हूं, लेकिन मैंने कभी किसी को अपने काम में दखल

देने का अधिकार नहीं दिया। आज जो कुछ भी मेरे पास है, इसी कारण है। इस दुनिया की धन-दौलत नहीं, लेकिन जो सच मैं मूल्यवान है वह सब मेरे पास है—सौंदर्य, प्रेम, सत्य और शाश्वत का रसा स्वाद। संक्षिप्त में स्व का आस्वाद, आनंद।

मैं कह रहा था कि एक साल बाद हमने उस गांव को और रियासत को छोड़ दिया। मैं पहले ही तुम्हें यह बता चुका हूं कि रास्ते में ही मेरे नाना की मृत्यु हो गई थी। मृतयु के साथ वह मेरा पहला साक्षात्कार था। और वह सामना बहुत सुदंर था। वह किसी भी प्रकार से कुरूप नहीं था। जैसा कि कम या ज्यादा इस दुनिया के हर बच्चे के लिए यह सामना बहुत डरावना होता है। मेरे नाना की मृत्यु धीरे-धीरे हुई और सौभाग्य से मैं उस समय उनके साथ कई घंटे तक रहा। मैं महसूस कर सका की धीरे-धीरे मृत्यु घट रही है। और मैं मृत्यु के महा मौन को देख सका। यह भी मेरा सौभाग्य था कि उस समय मेरी नानी मेरे पास थीं। शायद उनके बिना मैं मृत्यु के सौंदर्य को न देख सकता। क्योंकि प्रेम और मृत्यु बहुत समान है, शायद दोनों एक है। नानी मुझसे प्रेम करती थी। उन्होंने अपना प्रेम मेरे ऊपर बरसाया और मृत्यु धीर-धीरे घट रही थी। एक बैलगाड़ी.....मैं अभी भी उसकी आवाज सुन सकता हूं—कंकड़ों पा उसके पहियों का खड़खड़ाना—भूरा का बार-बार बैलों पर चिल्लाना, उनको चाबुक से मारने की आवाज—अभी भी मैं सब सुन सकता हूं। यह सब मेरे अनुभव में इतना गहरा अंकित हो गया है कि मैं सब सुन सकता हूं। यह सब मेरे अनुभव में इतना गहरा अंकित हो गया है कि मैं नहीं सोचता कि मेरी मृत्यु भी इसे मिटा सकती है। मरते समय भी शायद मैं फिर उस बैलगाड़ी की आवाज को सुनुगां। मेरी नानी ने मेरा हाथ पकड़ा हुआ था और मैं बिलकुल हक्का-बक्का सा बैठा था—समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है—मैं उस क्षण में पूरी तरह से उपस्थित था। मेरे नाना का सिर मेरी गोद में था। मेरे हाथ उनकी छाती पा थे और धीरे-धीरे उनकी श्वास बंद हो गई। जब मुझे लगा कि अब वह श्वास नहीं ले रहे, तो मैंने अपनी नानी से कहा, ‘नानी, मुझे दुःख है, पर ऐसा लगता है कि अब वे श्वास नहीं ले रहे है।‘ उन्होंने कहा: ‘यह बिलकुल ठीक है। तुम चिंता मत करो। वे काफी जी लिए, इससे अधिक मांगने की जरूरत नहीं है। उन्होंने मुझसे यह भी कहा, ‘याद रखना, क्योंकि ये क्षण भूलने के क्षण नहीं हैं। अधिक की मांग मत करो। जो है वह काफी है।‘ यह सब काफी है?

सत्र—13 मैं पागल आदमी हूं

मैं जीसस को नहीं भूल सकता। मैं उन्हें दुनिया के किसी भी ईसाई से कहीं अधिक याद करता हूं। जीसस कहते है, 'धन्य भागी हैं वे' जो छोटे बच्चे जैसे है, क्योंकि प्रभु का राज्य उनका है। यहां पर जो याद रखने बाला सबसे अधिक महत्वपूर्ण शब्द है वह है क्योंकि। जीसस के उन सब वक्तव्य में से जो 'जो धन्य भागी है से आरंभ होता है और समाप्त होता है, 'प्रभु के राज्य ' के साथ। उनमें से केवल यही एक वक्तव्य अनोखा है। क्योंकि शेष सब वक्तव्य कहते है। 'धन्यभागी है वे जो विनम्र है, दीन-हीन है, क्योंकि वे प्रभु के राज्य के उतराधिकारी होंगे।' वे वक्तव्य तर्कपूर्ण है और वे भविष्य का वादा करते है—भविष्य, जिसका कोई अस्तित्व नहीं है। यही एकमात्र वक्तव्य है जो कहता है,.....क्योंकि प्रभु का राज्य उनका है।' इसमें न कोई भविष्य है, न तर्क है, न किसी लाभ का कोई वादा है। तथ्य का शुद्ध वक्तव्य है या यूं कहिए कि तथ्य का सीधा-सरल वक्तव्य है। मैं इस वक्तव्य से सदा बहुत प्रभावित रहा हूं, बहुत हैरान हूं। मैं विश्वास ही कर सकता कि कोई तीस साल तक एक ही वक्तव्य पर बार-बार हैरान हो सकता हो । हां तीस साल तक यह वक्तव्य निरंतर मेरे ह्रदय को आनंद से कंपित करता रहता है। 'क्योंकि प्रभु का राज्य उनका है।' कितना तर्कहीन और फिर भी कितना सच्चा। उस दिन मैं बता रहा था कि मेरे नाना कि मृत्यु ही मेरा मृत्यु से प्रथम साक्षात्कार था। हां, साक्षात्कार और कुछ और भी। केवल साक्षात्कार ही नहीं अन्यथा मैं इसके वास्तविक अर्थ से चूक जाता। मैंने मृत्यु को देखा, इसके अतिरिक्त कुछ और भी जो कि मर नहीं रहा था। जो उसके ऊपर तैर रहा था। जो शरीर से पलायन कर रहा था, छूट रहा था....वे तत्व। इस साक्षात्कार ने मेरे समस्त जीवन-प्रवाह को निश्चित कर दिया। इसने मुझे एक विशेष दिशा दी या यूं कहो कि मुझे एक ऐसा नया आयाम दिया जिसे मैं पहले नहीं जानता था। मैंने दूसरे लोगों की मृत्यु के बारे में सुना था, लेकिन केवल सुना था, मैंने देखा नहीं था। और अगर देखा भी होता तो उसका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था। जब तक कोई अपना प्रिय न मरे तब तक तुम सही में मृत्यु का साक्षात्कार नहीं कर सकते। इन शब्दों को रेखांकित कर लो, 'मृत्यु को साक्षात्कार केवल किसी प्रिय की मृत्यु के समय ही होता है।'

जब प्रेम तथा मृत्यु, दोनों एक साथ तुम्हें घेर ले तब परिवर्तन होता है। वह रूपांतरण इतना तीव्र होता है जैसे कि नये व्यक्ति का जन्म हो इसके बाद तुम पहले जैसे नहीं रहते। लेकिन लोग प्रेम नहीं करते और क्योंकि वे प्रेम नहीं करते इसलिए उन्हें मृत्यु का अनुभव वैसा नहीं होता जैसा अनुभव मुझे हुआ। बिना प्रेम के मृत्यु तुम्हें अस्तित्व की कुंजियों नहीं देती। प्रेम हो तो वह तुम्हें उस सबकी कुंजी दे देती है जो है। मृत्यु का मेरा पहला अनुभव कोई सरल साक्षात्कार नहीं था। वह कई प्रकार से जटिल था। जिनसे मैं प्रेम करता था वे मर रहे थे। उनको मैंने अपने पिता की तरह जाना था। उन्होंने मेरे पालन-पोषण के समय मुझे पूरी स्वतंत्रता दे रखी थी। मेरे लिए कोई आदेश नहीं था। कोई निषेध नहीं था। कोई दमन नहीं था। उन्होंने मुझसे कभी नहीं कहा कि 'यह मत करो, या वो मत करो'। उनको आंतरिक सौंदर्य अब मेरी समझ में आता है। एक बूढे आदमी के लिए बहुत मुश्किल है किसी बच्चे को इस तरह कि हिदायत न देना। लेकिन उन्होंने ऐसा कभी नहीं कहा। जहां तक मुझे याद है, जब उन्हें लगता कि मैं कुछ गलत कर रहा हूं तो, वे अपनी आंखे बंद कर लेते और इस प्रकार वे अपने को वहाँ से हटा देते। एक बार मैंने उनसे पूछा: 'नाना, जब मैं आपके पास बैठता हूं तो कभी-कभी आप अपनी आंखें क्यों बंद कर लेते हो।'

उनहोंने कहा: 'आज यह तुम्हारी समझ में नहीं आएगा, लेकिन शायद किसी दिन समझ जाओगे। मैं अपनी आंखें बंद कर लेता हूं ताकि तुम जो भी कर रहे हो उसे मैं रोकू न। चाहे वह गलत हो चाहे ठीक, तुम्हें किसी भी बात से रोकना मेरा काम नहीं है। मैंने तुम्हें तुम्हारे माता-पिता से ले लिया है। और अगर मैं तुम्हें

स्वतंत्रता नहीं दे सकता तो तुम्हें माता-पिता से लेने का फायदा? इसीलिए तो मैंने तुम्हें उनसे ले लिया था ताकि वे तुम्हारे जीवन में कोई दखल ल दें। तो फिर मैं कैसे दखल दे सकता हूं।'

'कभी-कभी तुम हद कर देते हो और तब मुझे अपने आपको रोकना मुश्किल हो जाता है। मुझे यह मालूम नहीं था, नहीं तो यह खतरा मोल न लेता। किसी तरह खोज-खोज कर, गलत काम करने में तुम बहुत कुशल हो। मुझे आश्चर्य होता है, कैसे तुम गलत करने के लिए ढेर सारी चीजें खोजते रहते हो। या तो मैं पागल हूं या तुम पागल हो।'

मैंने कहा: 'नाना, आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। अगर कोई पागल है तो मैं हूं।' और उसी दिन से मैं लोगों से कह रहा हूं, मुझसे परेशान मत होओ। मैं पागल आदमी हूं।

यह तो मैंने नाना को दिलासा देने के लिए कहा था और अभी भी मैं यह उन लोगों को दिलासा दिलाने के लिए कहता हूं जो सचमुच पागल है। लेकिन जब तुम पागलख़ाने में होओ और सिर्फ अकेले तुम ही पागल न होओ तुम सिर्फ पागलोंसे यह कहने के अलावा और कर भी क्या सकते हो कि घबड़ाएं मत, परेशान न हों, मैं पागल हूं, उसे गंभीरता से न लें। जीवन भर मैं यहीं करता रहा हूं। लेकिन कभी-कभी मैं अति कर बैठता था। उदाहरण के लिए एक दिन मैं अपने नौकर, भूरा की सवारी कर रहा था। मैंने उसे घोड़ा बनने के लिए कहा तो पहले वह थोड़ा घबड़ाया। लेकिन मेरी नानी ने उससे कहा: 'तुम घोड़े जैसा अभिनय नहीं कर सकत, घोड़ा बनने में क्या मुश्किल है? सो उस बेचारे को घोड़ा बनना पडा और मैं उस पर सवार हो गया। नाना यह सहन न कर सके, उन्होंने अपनी आंखें बंद कर लीं और अपना मंत्र दोहराने लगे: नमो अरिहंताणं नमां.....नमो सिद्धाणं नमो।
'

मैंने खेल बंद किया, क्योंकि जब उन्होंने अपने मंत्र को जाप करना शुरू किया तो इसका अर्थ था कि उनकी सहन शक्ति समाप्त हो रही है। यह खेल बंद करने का समय था। मैंने उनको झकझोरते हुए कहा, नाना, वापस आ जाओ। अपने मंत्र के जपने की जरूरत नहीं हे। मैंने खेल बंद कर दिया है। क्या आप देख नहीं सकते कि यह सिर्फ एक खेल था। उन्होंने मेरी आंखों में देखा और मैंने उनकी आंखों में देखा। एक क्षण के लिए मौन छा गया। उन्होंने पहले मेरे बोलने का इंतजार किया, फिर उन्होंने कहा: 'अच्छा मुझे ही पहले बोलना चाहिए।'

मैंने कहा: 'हां, यह ठीक है। क्योंकि अगर आप चुप रहते तो मैं जीवन भर चुप रहता। यह अच्छा हुआ कि आप बोले इसलिए अब मैं आपको उत्तर दे सकता हूं। आप क्या पुछना चाहते है।'

उनहोंने कहा: 'मैं तुमसे सदा एक ही बात पूछना चाहता हूं कि तुम इतने शैतान क्यों हो।' मैंने कहा: 'यह प्रश्न तो आपको भगवान से पूछने के लिए रखना चाहिए। जब आपकी भेंट भगवान से हो तब आप उनसे पूछना: आपने इस बच्चे को इतना शैतान क्यों बनाया? आप यह मुझसे नहीं पूछ सकते। मुझसे पूछना तो ऐसे है जैसे कि कहा जाए: तुम, तुम क्यों हो। अब इसका उत्तर क्या हो सकता है। जहां तक मेरा सवाल है मुझे तो इसकी कोई चिंता नहीं है। मैं अपने जैसा हूं। इस घर में अपने जैसा होने की इजाजत है या नहीं?'

हम लोग बाहर बग़ीचे में बैठे थे। उन्होंने मेरी और फिर से देखा और पूछा, 'क्या मतलब है तुम्हारा।'

मैंने कहा: 'आपको अच्छी तरह से मालूम है कि मेरा क्या मतलब है। अगर मैं अपने जैसा नहीं हो सकता तो मैं इस घर में प्रवेश नहीं करूंगा। सो आपको यह बात साफ करनी होगी कि यस तो मैं अपने जैसा रह कर इस घर के भीतर जाऊँ या इस घर को भूल केर मैं आवारा घुमक्कड़ बन जाऊँ। साफ-साफ बताइए कि मुझे क्या करना है—जल्दी बताइए।'

उन्होंने हंस कर कहा: 'तुम घर के भीतर जा सकते हो। यह तुम्हारा घर है। अगर मैं तुम्हारे जीवन में दखल देने से अपने आप को न रोक सका तो मैं घर छोड़ दूँगा। तुम्हे घर छोड़ने जरूरत नहीं।'

उन्होंने ऐसा ही किया। इस वार्तालाप के सिर्फ दो महीने बाद वे संसार से ही चल बसे। उनहोंने सिर्फ अपना घर ही नहीं, अपना शरी भी छोड़ दिया जोकि उनका वास्तविक घर था। मैं नाना से बहुत प्रेम करता था, क्योंकि उनको मेरी स्वतंत्रता बहुत प्रिय थी। मैं तभी प्रेम कर सकता हूं जब मेरी स्वतंत्रता का आदर किया जाए। अगर स्वतंत्रता देकर मुझे प्रेम मिले तो मुझे यह सौदा स्वीकार नहीं। कमजोर लोगों के लिए यह ठीक हो सकता है, लेकिन समझदार व्यक्ति किसी कीमत पर अपनी स्वतंत्रता को नहीं खोएगा।

इस संसार में प्राय: हर व्यक्ति यह समझता है कि वह प्रेम करता है, लेकिन अगर तुम इन प्रेमियों को देखो तो ये प्रेमी एक-दूसरे के कैदी है। यह कैसा अजीब प्रेम जो एक-दूसरे को बंधन में डाल देता है। क्या प्रेम भी कभी बंधन हो सकता है? लेकिन निन्यानवे दशमलव नौ प्रतिशत ऐसा ही होता है, क्योंकि आरंभ से ही प्रेम वहां नहीं था। सच तो यह है कि सामान्यत: लोग समझते हैं कि वे प्रेम करते है, लेकिन वे प्रेम नहीं करते। क्योंकि तब प्रेम होता हे तो फिर कहां मैं और कहां तू? प्रेम के साथ आता है स्वतंत्रता का भाव, जिसमें अधिकार का भाव नहीं होता। लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा प्रेम दुर्लभ है। अगर प्रेम में स्वतंत्रता बनी रहे तो तुम राजा या रानी से कम नहीं हो। वही तो परमात्मा का सच्चा राजय है—प्रेम स्वतंत्रता के साथ। प्रेम तुम्हारी जड़ें जमीन में मजबूत करता है और स्वतंत्रता तुम्हें पंख देती है। मेरे नाना ने मुझे ये दोनों दिए। मुझे उनसे जितना प्रेम मिला उतना तो नानी को या मेरी मां को भी नहीं मिला। साथ-साथ ही उन्होंने मुझे स्वतंत्रता भी दी, जो सबसे बड़ा उपहार है। जब वे मर रहे थे तो उन्होंने मुझे अपनी अंगूठी दी और आंखों में आंसू भर कर कहा: 'तुम्हें देने को मेरे पास और कुछ नहीं है।'

मैंने कहा: 'नाना आपने मुझे पहले से ही सबसे मूल्यवान उपहार दिया है।'

उन्होंने अपनी आंखें खोली और पूछा, 'वह क्या है।'

मैंने हंसते हुए कहा: 'आप भूल गए, आपने मुझे अपना प्रेम दिया और स्वतंत्रता भी दी। आपने जैसी स्वतंत्रता मुझे दी वैसी तो किसी बच्चे को नहीं। मुझे और क्या चाहिए, आप और क्या दे सकते है, मैं आपका आभारी हूं, अब आप शांति से विदा हो सकते है।' इसके बाद मैंने कई लोगों को मरते देखा है, लेकिन शांतिपूर्वक मरना बहुत मुश्किल है। मैंने केवल पाँच लोगों को शांतिपूर्वक मरते देखा है। पहले थे मेरे नाना, दूसरा था मेरा नौकर भूरा, तीसरी थी मेरी नानी, चौथे थे मेरे पिता और पांचवां था विमल कीर्ति।'

भूरा सिर्फ इसलिए मरा क्योंकि वह अपने मालिक के बिना इस संसार में जीने की सोच भी न सकता था। वह मर गया, सहजता से मर गया। वह हमारे साथ मेरे पिता के गांव आया था। क्योंकि वह बैलगाड़ी चला रहा था। जब उसे कुछ समय के लिए बैलगाड़ी के पर्दे के भीतर से कुछ भी सुनाई नहीं दिया तो उसने मुझसे पूछा: 'बेटा सब ठीक है न,' बार-बार भूरा ने पूछा, 'सब चुप क्यों है' कोई बोल क्यों नहीं रहा। वह पर्दे के बहार बैठा हुआ था, और उसने पर्दे को उठा कर देखने की कोशिश नहीं कि। वह ऐसी धृष्टता कैसे कर सकता था। क्योंकि भीतर नानी बैठी हुई थी। इसलिए वह बार-बार पूछ रहा था कि क्या बात है, सब चुप क्यों है, मैंने कहा: 'बात तो कुछ भी नहीं हम लोग मौन का मजा ले रहे है। नाना चाहते है कि हम चुप रहें।'

यह झूठ था। क्योंकि नाना तो मर गए थे। लेकिन एक प्रकार से यह सच भी था, नाना चुप थे और वहीं उनका संदेश था हमारे लिए चुप रहने का। आखिर मैंने भूरा को कहा: 'सब ठीक है, लेकिन नाना चले गए है।' वह विश्वास न कर सका, उसने कहा: 'तब सब ठीक कैसे हो सकता है? उसके बिना मैं जिंदा नहीं रह सकता। और चौबीस घंटे के भीतर वह मर गया। ठीक ऐसे जैसे खिला हुआ फूल बंद हो जाता है और फिर दुबारा खुलने को तैयार नहीं होता। अब हम मेरे पिता के शहर में थे, जो कुछ बड़ा था, इसलिए हमने भूरा को बचाने की बहुत कोशिश की।'

भारत के लिए मेरे पिता का शहर एक छोटा सा शहर था। वहां की जनसंख्या केवल बीस हजार थी। वहां पर एक अस्पताल का डाक्टर आश्चर्यचकित था, उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि भूरा भारतीय है, क्योंकि भूरा बिलकुल यूरोपीय दिखाई देता था। शायद वह जीव-विज्ञान का विचित्र उदाहरण था, मुझे पता नहीं। कुछ ठीक हो गया होगा। प्रचलित मुहावरे के अनुसार तो कहा जाता है, कुछ गड़बड़ हो गई होगी। लेकिन मैंने अपना मुहावरा बनाया है: 'कुछ ठीक हो गया होगा।' गड़बड़ ही क्यों कहा जाए?' अपने मालिक की मृत्यु से भूरा को बहुत गहरा सदमा पहुंचा। जब तक हम शहर नहीं पहुंचे तब तक हम उसे झूठ बोलते रहे। शहर पहुंचने पर जब शव को बैलगाड़ी से बाहर निकाला गया तब भूरा ने देखा कि क्या हुआ है। उसने अपनी आंखें बंद कर ली और फिर कभी नहीं खोली। उसने कहा: 'मैं अपने मालिक को मरा हुआ नहीं देख सकता।' और यह था सिर्फ मालिक नौकर का संबंध, लेकिन उन दोनों के बीच एक ऐसा गहरा संबंध, एक ऐसी गहरी घनिष्ठता पैदा हो गई थी, जिसको परिभाषित नहीं किया जा सकता। इतना तो मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि उसने दुबारा अपनी आंखें नहीं खोली। नाना के मरने के बाद वह कुछ घंटे ही जीवित रहा। मरने से पहले वह बेहोश हो गया, कोमा में चला गया। मरने से पहल नाना ने नानी से कहा था: 'भूरा का ख्याल रखना। मुझे मालूम है कि तुम राजा की देखभाल अच्छी तरह से करेगी, उसके बारे मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना, लेकिन भूरा का ध्यान रखना। उसने जैसी मेरी सेवा की है वैसी कोई नहीं कर सकता था।'

मैंने डाक्टर से कहा: 'क्या आप इन दोनों के बीच प्रेम और विश्वास को समझ सकते हो, डाक्टर ने मुझसे पूछा, 'क्या यह यूरोपियन था।'

मैंने कहा: 'दिखाई तो ऐसा ही देता है।'

डाक्टर ने कहा: 'चालाकी मत करों, तुम हो तो सात-आठ साल कि बच्चे, लेकिन हो बहुत शैतान और चालाक। दूसरे को चक्कर में डाल देते हो। जब मैंने तुमसे पूछा कि क्या तुम्हारे नाना मर गए है, तो तुमने कहा कि नहीं। और वह सच नहीं था।'

मैंने कहा: 'नहीं वह सच था। वे मरे नहीं है। इतना प्रेमपूर्ण व्यक्ति' मर ही नहीं सकता। अगर प्रेम मर सकता है ता दुनिया के लिए कोई आशा नहीं है। मैं तो विश्वास ही नहीं कर सकता कि जिस आदमी ने मेरी स्वतंत्रता का—एक छोटे बच्चे की स्वतंत्रता का इतना आदर किया वह मर गया है। सिर्फ इसलिए क्योंकि अब वह श्वास नहीं ले सकता। मैं मृत्यु और श्वास लेने को बराबर नहीं मानता। नहीं लेने का अर्थ मर जाना है।

उस यूरोपियन डाक्टर ने शंकालु दृष्टि से मुझे देखा और मेरे चाचा से कहा: 'या तो यह लड़का दार्शनिक बनेगा या पागल हो जाएगा।'

उसकी बात गलत हो गई, क्योंकि मैं दोनों एक साथ हूं—'या' का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। मैं सोरेन कीर्कगार्ड नहीं हूं—या यह वह का कोई प्रश्न ही नहीं है। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि वह मेरी बात पर विश्वास क्यों नही कर सका। बात तो सीधी और सरल थी। लेकिन सरल बातों पर विश्वास करना बहुत मुश्किल है। मुश्किल बातों पर विश्वास करना सबसे आसान है। विश्वास क्यों करो? तुम्हारा मन कहता है, यह तो इतना सरल है। इसमें कोई जटिलता नहीं है। इस पर विश्वास करने का तो कोई कारण ही नहीं है।' जब तक तम तरतूलियनर न होओ—जिसका वक्तव्य मुझे बहुत प्रिय है।

संसार की सभी भाषाओं के साहित्यों में से अगर मुझे एक वक्तव्य चुनना हो तो मुझे खेद हे कि जीसस क्राइस्ट से नहीं चुनूंगा, और मुझे खेद है कि गौतम बुद्ध से नहीं चुनूंगा, मोजेज, मोहम्मद, या च्वांगत्सु, या लाओत्से से भी नहीं चुनूंगा। मैं तो चुनूंगा इस अजीब आदमी से जिसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम—तरतूलियनर। इस नाम का सही उच्चारण तो मैं नहीं जानता, इसलिए इसके अक्षरों का उच्चारण इस प्रकार

करता हूं। तर-तू-लियन। मुझे सबसे प्रिय इसका उदाहरण है—'क्रेडो कुआ एबसर्डम।' अर्थात--मैं विश्वास करता हूं, क्योंकि यह बेतुका है, असंगत है।' क्षण भर को तरतूलियनर को भूल जाओ। उस पर पर्दा गिरा दो इन गुलाबों को देखो। इनको तुम क्यों प्रेम करते हो। इनसे प्रेम करने का कोई कारण तो नहीं है। क्या यह बेतुकापन नहीं है। अगर कोई बार-बार तुमसे पूछे कि तुम गुलाबों को क्यों प्रेम करते हो, तो अंत में तुम अपने कंधे बिचका दोगे। यही कंधे बिचकाना—'क्रेड़ो कुआ एबसर्डस।' तरतूलियनर फिलासफी का यही अर्थ है। मेरी समझ में नहीं आ सका कि वह डाक्टर इस बात पर विश्वास क्यों नहीं कर सका कि मेरे नाना नहीं मेरे। मैं जानता था और वह भी जानता था कि जहां तक शरीर का प्रश्न है वह तो समाप्त हो गया था—इसमें तो कोई संदेह नहीं था, लेकिन शरीर के अतिरिक्त भी कुछ है, शरीर में होते हुए भी वह शरीर का अंश नहीं है। प्रेम उसको उदघाटित करता है, स्वतंत्रता उसे आकाश में ऊंची उडान के लिए पंख देती है।

सत्र—14 नीत्शे और एडोल्फ हिटलर

त्वदीयं वस्तु गोविंदम्, तुभ्यमेव समर्पयेत।

हे प्रभु,' यह जीवन जो तुमने मुझे दिया वह तुम्हें आभार सहित वापस समर्पित करता हूं। ये मरते समय मेरे नाना के अंतिम शब्द थे।

हालांकि उन्होंने परमात्मा में कभी विश्वास नहीं किया और पे हिंदू नहीं थे। यह वाकय, सह सूत्र हिंदू सूत्र है। लेकिन भारत में सब चीजें घुल मिल गई है। विशेषकर अच्छी बातें। मरने से पहले अन्य बातों के बीच उन्होंने एक बात बार-बार कहीं, 'चक्र को रोको।'

उस समय तो मैं यह नहीं समझ सका अगर हम गाड़ी का चाक रोक दें और उस समय वहां पर तो केवल बैलगाड़ी का चक्र-चाक था। तो हम अस्पताल कैसे पहुंच सकेंगे। जब उन्होंने बार-बार कहा कि चक्र को रोको तो मैंने अपनी नानी से पूछा 'क्या नाना जी का दिमाग खराब हो गया है।'

वे हंस पड़ी। उनकी यही विशेषता मुझे बहुत पसंद थी। मेरी तरह वे भी जानती थीं कि मृत्यु बहुत निकट है। जब मुझे तक मालूम था तो यह कैसे हो सकता है कि उनको नहीं मालूम था। यह तो साफ दिखाई दे रहा था कि उनकी श्वास कभी भी बंद हो सकती है। फिर भी वे बार-बार चक्र को बंद करने के लिए कह रहे थे। नानी हंसी, मैं उनको अभी भी हंसते हुए देख सकता हूं। उस समय वे पचास साल से ऊपर न थी। लेकिन मैंने हमेशा यह देखा है कि जो स्त्रीयां बनावटी श्रृंगार द्वारा अपने आपको सुंदर बनाती है वे पैंतालीस की उम्र में बहुत ही कुरूप दिखाई देती है। तुम सारी दुनिया में घूम लो कि मैं जो कह रहा हुं वह सच है या झूठ। उनकी लिपस्टिक, मेकअप, कृत्रिम भवें और न जाने क्या-क्या, है भगवान। भगवान ने जब यह दुनिया बनाई तो उसने भी इन चीजों के बारे में नहीं सोचा था। कम से कम बाईबिल में तो यह नहीं लिखा गया कि पांचवें दिन उसने लिपस्टिक बनाई और छठ वें दिन उसने कृत्रिम भवें बनाई, आदि। अगर स्त्री सचमुच सुंदर है तो पैंतालीस वर्ष की आयु में उसका सौंदर्य चरम सीमा पर होता है। मेरा देखना है कि पुरूष पैंतीस साल की आयु में अपनी चरम सीमा पर होता है। स्त्री की आयु पुरूष से दस वर्ष अधिक होती है। और यह गलत या अनुचित भी नहीं है, बच्चों को जन्म देते समय उसे इतना कष्ट उठाना पड़ता हे कि अगर उसे थोड़ी अतिरिक्त जीवन मिला तो वह उचित है।

मेरी नानी पचास साल की थीं फिर भी उनका यौवन तथा सौंदर्य चरम सीमा पर थे। में उस क्षण को कभी नहीं भूला—वह ऐसा क्षण था, मेरे नाना मर रहे थे और हमें चक्र को रोकने के लिए कह रहे थे। मैं कैसे चक्र को रोक सकता था। हम लोगों को अस्पताल पहुंचने की जल्दी थी।

मेरे नाना ने कहां: 'राजा चक्र को रोको। क्या तुमने सुना नहीं? अगर मैं तुम्हारी नानी की हंसी सुन सकता हूं तो तुम भी मुझे सुन सकते हो। मुझे मालूम है कि वह बहुत अद्‌भुत महिला है और मैं उसे कभी नहीं समझ सका।'

मैंने उनसे कहा: 'नाना, जहां तक में जानता हूं वे सबसे सरल महिला है—हालांकि अभी मैंने दुनिया को अधिक नहीं देखा है। लेकिन अब मैं तुमसे कह सकता हूं कि इस जमीन पर शायद ही कोई ऐसा आदमी हो, मृत या जीवित, जिसने स्त्रियों को उतना देखा हो जितना मैंने देखा है। लेकिन मरते हुए नाना को दिलासा देने के लिए मैंने उनसे कहा: 'उनकी हंसी की आप चिंता न करें। में उनको जानता हूं। आप जो कह रहे है उस पर वे नहीं हंस रही है। मैंने उन्हें चुटकला सुनाया था, वे उस पर हंस रही है।'

उन्होंने कहा: ठीक है, अगर वे तुम्हारे चुटकुले पर हंस रही हे, तो हंसना बिलकुल ठीक है। लेकिन इस चक्र का क्या होगा।' अब में जानता हूं। लेकिन उस समय मैं इस पारिभाषिक शब्दावली से बिलकुल अपरिचित था। यह चक्र जीवन और मृतयु के चक्र का प्रतीक है और भारतीय विचारधारा इससे इतनी अभिभूत है, इतनी ग्रसित है कि हजारों वर्षों से लाखों लोग यही प्रयास कर रहें है कि इस चक्र को कैसे रोका जाए। वे बैलगाड़ी के चाक के बारे में नहीं कह रहे थे—उसे रोकना तो बहुत ही आसान था, बल्कि उसे चलाना मुश्किल था। वहां कोई सड़क न थी। उस समय ही नहीं थी, अब भी नहीं है। पिछले साल मेरा एक दूर का चचेरा भाई आश्रम आया था, उसने कहा: 'मैं तो अपना सारा परिवार आपके चरणों में लाना चाहता था, लेकिन असली कठिनाई तो उस सड़क की है।'

मैंने कह: 'अभी भी।'

करीब पचास साल बीत गए है, लेकिन भारत ऐसा देश है कि वहां समय ठहर गया है। वह आगे बढ़ता ही नहीं। न जाने घड़ी कब बंद हो गई। लेकिन वह ठीक बारह बजे बंद हुई—दोनों सूइयाँ एक साथ, यह सुंदर है घड़ी ने सही समय तय किया। जब कभी भी यह हुआ हो—और हजारों साल पहले हुआ होगा, जब कभी भी हुआ हो—घड़ी या तो संयोग से या फिर किसी कंप्यूटराइज् समझ से बारह बजे रुक् गई, दोनों सूइयाँ एक साथ। वे दोनों ये हो गई, दो तो दिखाई नहीं देती। शायद रात के बारह बजे होगें, क्योंकि देश इतने अंधेरे में हैं और इतना खराब है।' सिर्फ इन सड़को के कारण शायद वे मुझसे कभी नहीं मिल सकेंगे। उस समय कोई सड़क नहीं थी और आज भी उस गांव से कोई रेलवे लाइन नहीं जाती। वह बहुत ही गरीब गांव है। और जब मैं बच्चा था तब तो वह गांव और भी गरीब था। उस समय मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि नाना बार-बार ऐसा क्यों कह रहे हैं। शायद वह बैलगाड़ी—क्योंकि वहां कोई सड़क नहीं थी—बहुत आवाज कर रही थी। सब कुछ खड़खड़ रहा था और उन्हें इतना कष्ट हो रहा था। इसलिए स्वाभाविक है कि वे पहिए को रोकना चाहते थे। लेकिन मेरी नानी हंस पड़ीं। अब मुझे मालूम है कि वे क्यों हंसी थी। नाना जिस पहिए या चक्र की बात बार-बार कर रहे थे वह जीवन और मृत्यु का चक्र हे जो निरंतर चलता रहता है। नाना भी जीवन और मृतयु के चक्र से अभिभूत इस भारतीय मानसिकता की अभिव्यक्ति कर रहे थे। पश्चिम में केवल नीत्शे ने ही शाश्वत पुनरावृति के बारे में बोलने को साहस या पागलपन किया था। वह भी इसी पूर्वीय विचारधारा से प्रभावित था और यहीं से उसने इस विचार को उधार लिया था। यह दो ग्रंथों से बहुत प्रभावित था। पहला ग्रंथ है, मनु-स्मृति। यह मनु के वचनों को संकलन हे और बहुत महत्वपूर्ण हिंदू-शास्त्र है। मुझे इससे धृणा है। इसके महत्व को तुम समझ सकते हो। किसी भी साधारण चीज से में धृणा नहीं करता। यह तो असाधारण रूप से कुरूप है। अगर मुझे कहीं मनु मिल जाए तो मैं सारी अहिंसा को भूल कर उसे गोली मार दूँगा। वह इसी के योग्य है।'' मनु-संहिता, मनु-स्मृति—मैं इसको दुनिया कि सबसे कुरूप पुस्तक क्यों कहता हूं? क्योंकि वह स्त्री और पुरूष को विभक्त करती है। स्त्री और पुरूष को ही नहीं यह तो मनुष्य को भी चार वर्गों में विभक्त करती है। और कोई एक वर्ग दूसरे वर्ग में नहीं जा सकता। इसने ऊंची-नीची श्रेणियां बना दी है। तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा कि एडोल्फ हिटलर अपनी मेज पर अपने बिस्तर के पास सदा मनु-संहिता की एक प्रति रखता था1 वह इस पुस्तक का आदर बाइबिल से भी अधिक करता था। अब तो तुम समझ गए होगें कि मैं क्यों इससे धृणा करता हूं। मेरे पुस्तकालय में मनु-संहिता नहीं रखी गई है। मुझे इसकी कम से कम एक दर्जन प्रतियां भेंट की गई थी। लेकिन मैंने हमेशा उनको जला दिया। वही उनके साथ करने जैसा था। हां, बड़े आदर से उनको जलाया।

नीत्शे को दो पुस्तकें बहुत प्रिय थी और उनसे उसने बहुत कुछ अपनाया....। एक थी मनु-संहिता और दूसरी थी महाभारत। महाभारत बहुत विशाल ग्रंथ है। इसका आकार इतना बड़ा हे कि इसकी बराबरी दूसरी

कोई ग्रंथ नहीं कर सकता—न बाइबिल, न कुरान, न धम्म पद, न ताओ तेह किंग। अगर महाभारत को ऐनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के पास रखा जाए, तो उसकी तुलना में ऐनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका बहुत छोटी दिखाई देगी। निश्चित ही यह बड़ा काम है। लेकिन भद्दा है, कुरूप है। वैज्ञानिक जानते हे कि इस पृथ्वी पर विगत काल में बड़े विशाल जानवर हुआ करते थे। करीब-करीब पर्वत जितने बड़े, लेकिन भद्दे। महाभारत भी वैसे ही पशुओं जैसा है। ऐसा नहीं है कि तुम इसमें कुछ भी सुंदर नहीं खोज सकते, यह इतनी बड़ी हे कि अगर उस पहाड़ को खोद कर उसकी गहराई में देखा जाए तो कहीं-कहीं पर सौंदर्य भी दिखाई देगी।

उन दो पुस्तकों ने नीत्शे को बहुत प्रभावित किया। शायद फ्रेड्रिक नीत्शे के काम में इन दो किताबों से अधिक और कुछ जिम्मेवार नहीं है।एक मनु द्वारा लिखी गई और दुसरी महाभारत व्यास द्वारा। दोनों पुस्तकों ने बहुत काम किया है, गंदा काम। अगर ये दोनों पुस्तकें न लिखी जातीं तो अच्छा होता। फ्रेड्रिक नीत्शे इन दोनों ग्रंथों को इतना आदर से याद करता था कि तुम्हें आश्चर्य होगा कि यह वही व्यक्ति है जिसने अपने आपको क्राइस्ट विरोधी कहा था। लेकिन इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं भी है। ये उसके विरूद्ध है—सत्य-विरोधी, प्रेम-विरोधी, यह मात्र संयोग नहीं है कि नीत्शे को ये बहुत प्रिय लगीं। उसको लाओत्से और बुद्ध कभी अच्छे नहीं लगे, लेकिन मनु और कृष्ण अच्छे लगे। यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है। उसे मनु अच्छा लगा, क्योंकि उसे मनु द्वारा ऊंच-नीच पर आधारित किया गया लोगों का वर्गीकरण अच्छा लगा। वह प्रजातंत्र, स्वतंत्रता और समानता को विरोधी थी। संक्षेप में वह सभी सच्चे मूल्यों के विरूद्ध था। उसे व्यास की पुस्तक महाभारत भी बहुत पसंद थी। क्योंकि उसमें इस विचार का प्रतिपादन किया गया है कि कवल युद्ध ही सुंदर है। एक बार उसने अपनी बहन को पत्र लिखा था, 'इस समय मैं असीम सौंदर्य से घिरा हुआ हूं, ऐसा सौंदर्य मैंने पहले कभी नहीं देखा। उसके इन शब्दों से तो लगता है कि शायद उसने ईड़न गार्डन में प्रवेश कर लिया हो। लेकिन नहीं, वह तो मिलिट्री परेड देख रहा था। सूर्य के प्रकाश से नंगी तलवारें चमक रही थी। और जिस आवाज को वह बहुत मधुर कह रहा था, वह बीथोवन या मोझर्ट या वेजनर को भी संगीत नहीं था। बल्कि कूच करते हुए जर्मन सैनिकों के जूतों की आवाज थी।'

वेजनर नीत्शे को मित्र था, और सिर्फ यही नहीं, इससे अधिक नीत्शे अपने मित्र की पत्नी से प्रेम करता था। उसको अपने मित्र के बारे में तो कुछ सोचना चाहिए था। लेकिन नहीं, उसको तो जर्मन सैनिकों क जूतों की आवाज वेजनर, मोझर्ट, और बीथोवन के संगीत से कहीं अधिक अच्छी लगी। उसके लिए तो सूरज की रोशनी में चमकती तलवारें और परेड करते हुए सैनिकों की आवाज अत्यंत आकर्षक थी और इनमें उसे सौंदर्य की चरम सीमा दिखाई दी। इसे कहते हैं सौंदर्य-बोध। और याद रखना कि मैं फ्रेड्रिक नीत्शे को विरोधी नहीं हूं। मैं उसकी सराहना करता हूं—जब कभी सह सत्य के निकट पहुंचता है। लेकिन सत्य मेरा मापदंड है। जब वह सूरज में चमकती तलवारों और सैनिकों के जूतों की आवाज का वर्णन करते समय सत्य से दूर चला जाता है तब तो नंगी तलवार मैं उसके सिर पर मारूंगा। यह तो उसके शिष्य एडोल्फ हिटलर ने किया।

हिटलर ने मनु के विचारों को नीत्शे से प्राप्त किया। हिटलर मनु के बार में नहीं जान सकता था। वह तो बौना था। नीत्शे निश्चित ही प्रतिभाशाली व्यक्ति था, लेकिन वह भटक गया। वह बुद्ध हो सकता था, लेकिन खेद कि वह पागल होकर मरा। मैं तूम लोगों को भारतीय सनक के बारे में बता रहा था। और उस संदर्भ में मुझे नीत्शे की याद आई। पश्चिम में सबसे पहले उसी ने शाश्वत-पुनरावृति के विचार को समझा। लेकिन वह इनामदार नहीं था। उसने यह नहीं कहां कि यह विचार उधार लिया गया है। उसने मौलिक होने

का दिखावा किया मौलिकता का दावा करन बहुत आसान है, इसमें बुद्धि की कोई आवश्यकता नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह बहुत प्रतिभाशाली था, लेकिन उसने अपनी इस प्रतिभा द्वारा कोई नई खोज नहीं

की। उसने अपने विचारों को ऐसे स्रोतों से उधार लिया जिनके बारे में संसार को बहुत कम जानकारी थी। मनु ने इसे लिखा था1 और महाभारत की कोन फ़िकर करता है। कोन पढ़ता है, यह इतनी बड़ी पुस्तक हे कि जब तक कोई पागल ही होना न चाहें, कोई पढ़ेगा नहीं। लेकिन ऐसे भी लोग है जो ऐनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका पढ़ते है। मैं ऐसे एक आदमी को जानता हूं। वह मेरा व्यक्तिगत मित्र था। यह ऐसा क्षण हे कि जब कम से कम मुझे उसका नाम याद करन चाहिए। शायद वह अभी भी जीवत हो—यह मुझे डर है। लेकिन फिर भी डरने की कोई कारण नहीं है, क्योंकि वह सिर्फ ऐनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका पढ़ता है। मैं जो कह रहा हूं वह उसे कभी नहीं पढ़ेगा—कभी नहीं, उसके पास समय ही नहीं है। वह ऐनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका को पढ़ता ही नहीं याद भी करता है। और यहीं उसको पागलपन है। अन्यथा वह बिलकुल नार्मल, सामान्य लगता है। लेकिन जैसे ही कोई ऐनसाइक्लोपीडिया के किसी अंश का उल्लेख कर दे तो तत्क्षण वह असामान्य हो जाता है। और एक के बाद एक पृष्ठ उद्धाटित करने लगता है। फिर वह इसकी परवाह नहीं करता कि तुम सुनना चाहते हो या नहीं। सिर्फ ऐसे ही लोग महाभारत पढ़ते है। यह हिंदू ऐनसाइक्लोपीडिया है। इसे ऐनसाइक्लोपीडिया इंडियाना कहना चाहिए1 स्वभावत: यह ऐनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका से बड़ा होने ही बाला है। ब्रिटेन तो सिर्फ ब्रिटेन है भारत के एक छोटे से राज्य से बड़ा नहीं है। उतने बड़े तो कम से कम भारत में तीन दर्जन राज्य है। और वह सारा भारत नहीं है, क्योंकि आधा भारत तो अब पाकिस्तान बन गया है। अगर तुम सारे भारत की तस्वीर चाहो तो तुम्हें उसमें कुछ और भाग जोड़ने पड़ेंगे। एक समय बर्मा भारत का हिस्सा था। सिर्फ इस सदी के आरंभ में ही इसेभारत से अलग किया गया । अफ़ग़ानिस्तान भी एक समय भारत का हिस्सा था। यह तो एक महाद्वीप है। इसलिए महाभारत, जो ऐनसाइक्लोपीडिया इंडियाना है। ऐनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका से हजार गुना बड़ा होने बाला है। इसके तो केवल बतीस खँड़ है। यह तो कुछ भी नहीं है। मैं ने जो बोला है उसको अगर तुम संग्रहीत करो तो वह उससे ज्यादा होगा। किसी और ने गिनती की है। मुझे पक्का नहीं पता क्योंकि मैं ऐसे व्यर्थ के काम नहीं करता। लेकिन उन्होंने अंदाज लगाया है कि आज तक मैंने तीन सौ तैंतीस पुस्तकें लिखी है। वाह, वह व्यक्ति जिसने गिनती की है1 उसको थोड़ा और इंतजार करना चाहिए, क्योंकि अभी तो बहुत सी पांडुलिपियाँ अप्रकाशित है। और बहुतों का मूल हिंदी से अनुवाद नहीं हुआ है। इन सबको जब एकत्रित किया जाएगा तो यह सच में ऐनसाइक्लोपीडिया रननीशीका होगा। लेकिन महाभारत सचमुच बहुत बड़ा है और वह सदा दुनिया का सबसे बड़ा ग्रंथ बना रहेगा—मेरा मतलब उसके आकार और वज़न से हे।

इसका उल्लेख मैंने इसलिए किया क्योंकि मैं जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त होने की भारतीय मानसिकता की बात कर रहा था। महाभारत में विशद-रूप से बस इसी भारतीय मनोग्रस्ति हे बारे में लिखा गया है। मनुष्य का जन्म बार-बार होता है। इसीलिए मेरे नाना कह रहे थे। 'चक्र को रोको।' अगर मैं रोक सकता, तो मैं उस चक्र को उनके लिए ही नहीं, सबके लिए रोक देता। में केवल रोकता ही नहीं, उसको सदा के लिए नष्ट भी कर देता, ताकि दुबारा उसे कोई न चलाए। लेकिन यह मेरे हाथ में नहीं है। उनकी मृत्यु के उस क्षण में मुझे बहुत सी बातों का बोध हुआ। उस क्षण में जिन बातों के प्रति मैं सजग हुआ, जिनका मुझे बोध हुआ, उनके बारे में मैं बात करूंगा, क्योंकि उस बोध ने ही मेरे समस्त जीवन को निधार्रित कर दिया।

सत्र—15 मग्गा बाबा और मोज़ेज

जब मैं कमरे से बाहर जा रहा था तो तुम मुस्कुरा रहे थे। लेकिन तुम्हारी मुस्कुराहट में उदासी थी। मैं इसको नहीं भूल सका। जब कि मैं सब कुछ आसानी से भूल जाता है। लेकिन जब कभी मैं कठोर हाता हूं तो मैं इसे नहीं भूल सकता। में दुनिया में सबको क्षमा कर सकता हूं, लेकिन अपने आप को नहीं कर सकता। शायद मेरे न सोने का यही कारण था। मेरी नींद तो सिर्फ एक पतली पर्त है। उसके नीचे मैं सदा जागता रहता हूं। इस झीनी सी पर्त बड़ी आसानी से विचलित किया जा सकता है। लेकिन केवल मैं ही ऐसा कर सकता हूं कोई और नहीं। मुझे थोड़ा अफसोस हुआ। मैं 'थोड़ा' कह रहा हूं, क्योंकि मेरे लिए थोड़ा अफसोस भी बहुत ज्यादा हो जाता है। मेरा सिर्फ एक आंसू ही बहुत है। मुझे घंटों रो-रो करा अपने बाल नोचने की जरूरत नहीं है जो कि अब हैं ही नहीं। कभी किसी ने यह नहीं सुना कि कोई अपनी दाढ़ी नोचता है। मैं नहीं सोचता कि किसी भी भाषा में, यहां तक कि हिब्रू में भी ऐसा कोई मुहावरा है, अपनी दाढ़ी नोचना और तुमको मालूम है कि यहूदियों और उनके बाइबिल के सब पैगंबरों की दाढ़ियां थी। यह तो एक प्राकृतिक नियम है कि अगर किसी को दाढ़ी है तो वह गंजा हो जाएगा, क्योंकि प्रकृति सदा संतुलन बनाए रखती है। अब मुझे फिर अपनी नानी की याद आ गई। जब मैं छोटा था तब मुझसे कहा करती थी, 'सुनो राजा, कभी दाढ़ी मत बढ़ाना। मैं उन्हें कहता, आप इसकी बात क्यो करती है? मैं सिर्फ दस वर्ष का ही हूं और मेरी दाढ़ी अभी आई नहीं है। तो इसकी बात क्यों करती है। उन्होंने कहा: 'घर में आग लगने से पहले ही कुआँ खोद लेना चाहिए।'

मैंने कहा: 'यह तो बड़ी अजीब बात है। जब आप पहले से ही जानती है तो इसे रोकने की कोशिश क्यों कि जा रही है? उन्होंने कहा: 'मैं अपनी पूरी कोशिश कर रही हूं लेकिन मुझे मालूम है कि तुम अवश्य दाढ़ी रहोगे। तुम्हारे जैसे लोग हमेशा दाढ़ी रखते है। मैं तुम्हें ग्यारह साल से जानती हूं। इसका कोई कारण तो होगा, और वे इसके बारे में सोचने लगी।'

इसका कोई विशेष कारण नहीं है, बस इतनी सी बात है कि कोई हर रोज 'शेव' करने के लिए मूर्खों की तरह दर्पण के सामने खड़े रह कर अपना समय बरबाद नहीं करना चाहता है। जरा सोचो कि अगर कोई दाढ़ी वाली औरत आईने में अपने को देख रही हो तो वह कैसी दिखाई देगी। बिना दाढ़ी का पुरूष बिलकुल वैसा ही दिखाई देता है। बात सीधी सी है कि इससे समय की बचत होती है। और तुम बेवकूफ दिखाई देने से भी बच जाते हो—अपने ही दर्पण मैं। लेकिन एक बात तो निश्चित है कि जब तुम दाढ़ी बढाना शुरू करते हो तो सिर गंजा होने लगता है। प्रकृति संतुलन बनाए रखना कभी नहीं भूलती। उसने तुम्हें बालों की एक निश्चित संख्या दी है और अगर तुम दाढ़ी बढ़ाने लगे तो बजट को कहीं से तो कम करना पड़ेगा। किसी से भी पूछ लो—यह तो अर्थशास्त्र का सीधा सा नियम है।

मुझे देव गीत की थोड़ी चिंता हो रही थी, मुझे लग रहा था कि मैंने उसे ठेस पहुँचाई है। शायद मैंने पहुँचाई थी...शायद इसकी जरूरत थी। इसलिए मेरी नींद की चिंता मत करो। अगर जरूरत हो तो मैं किसी भी क्षण अपने जीवन को खो देने के लिए तैयार हूं...किसी राष्ट्रीय उद्देश्य के लिए नहीं; किसी राज्य या जाति के लिए नहीं, वरन ऐसे किसी भी व्यक्ति के लिए जिसका ह्रदय अभी भी धड़क रहा हो, जो अभी भी महसूस करता हो और जो अभी भी बच्चों जैसी हरकतें करता हो। याद रखो, मैं कह रहा हुं जो बच्चों जैसी हरकतें करता हो। मेरा अर्थ है जो अभी भी बच्चा है। अगर विकसित और परिपक्व हो सकता है भीतर से अखंड, इंटीग्रेटड़ हो जाए तो इसके लिए मैं अपना जीवन न्योछावर करने को तैयार हूं। जब भी मैं इंटीग्रेशन शब्द को प्रयोग करता हूं तो हमेशा मेरा तात्पर्य है बुद्धि सहित प्रेम। बुद्धि और प्रेम का जोड़ अखंडता है। अब यह बहुत बड़ा फुट नोट हो

गया। अगर जार्ज बर्नाड़ शा को माफ किया जा सकता है तो....सिर्फ माफ़ ही नहीं किया, नोबल-प्राइज़ भी दिया, तो तुम मुझे माफ़ कर ही सकते हो। और मैं तो नोबल प्राइज़ भी नहीं मांग रहा। अगर वे मुझे दें तो भी मैं लेने से इनकार करूंगा। इसको मैं नहीं ले सकता, क्योंकि यह खून से भरा हुआ है। नोबल प्राइज़ के साथ जो पैसा दिया जाता है। वह खून से सना होता है। क्योंकि नोबल नामक यह आदमी बम बनाता था और पहले महायुद्ध में इसने दोनों पक्षों को हथियार बेच कर अपार धनराशि इकट्ठी की थी। मैं तो उसके पैसे को हाथ नहीं लगाना भी पसंद नहीं करूंगा। सच तो यह है कि कई बरसों से मैं ने पैसे को हाथ ही नहीं लगाया। क्योंकि मुझे हाथ लगाने की जरूरत ही नहीं है। हमेशा कोई मेरे लिए पैसे की फ़िकर करता है। और पैसा हमेशा गंदा होता है। सिर्फ नोबल प्राइज़ को पैसा ही नहीं। जिस आदमी ने नोबल प्राइज़ की स्थापना की वह अपराध-भाव से भरा हुआ था। सिर्फ अपराध-भाव से छुटकारा पाने के लिए उसने नोबल प्राइज़ की स्थापना की। यह बहुत अच्छा काम था। लेकिन यह तो ऐसा है कि जैसे पहले किसी को मार ड़ालो और फिर कहो कि सर, खेद है, कृपया मुझे माफ़ कर दो। खून से सने इस पैसे को मैं स्वीकार नहीं करुंगा।

जार्ज बर्नार्ड शा का बहुत आदर किया जाता था। उसको नोबल प्राइज़ भी दिया गया था। उसकी छोटी-छोटी पुस्तकों की लंबी-लंबी भूमिकाएँ है। समझ में नहीं आता कि पुस्तक भूमिका के लिए लिखी गई थी या भूमिका पुस्तक के लिए लिखी गई थी। मुझे तो ऐसा लगता है कि पुस्तक भूमिका के लिए लिखी गई। और मेरे विचार में यह बहुत ही सराहनीय ह। वह यक एक लंबा प्रस्तावना नोट हो गया है। और मेरे नींद के बारे में चिंता मत करो। लेकिन याद रखो कि अगर मैं कठोर हो जाऊँ तो इसमें परेशान होने की कोई बात नहीं है।

हालांकि तुम सबको यह मालूम है कि किसी बात से भी मेरे भीतर परिवर्तन नहीं हो सकता, कुछ चींजे मेरे शरीर और मन में अवश्य परिवर्तन कर सकती है। मैं न तो शरीर हूं ओर न मन हूं, लेकिन इन दोनों के माध्यम से मुझे काम करना होता है। इस समय तो देख सकता हूं कि मेरे ओंठ सूखे है। अब इतना बाहर से भी किया जा सकता है। मैं बोल रहा हूं, लेकिन यह सूखे होठ परेशान कर रहे है। मैं काम चला लुंगा, लेकिन ये बाधा डाल रहे है। टुट जाएगा और मैं आरंभ कर सकता हूं। धन्यवाद। अब वह कहानी। मृत्यु अंत नहीं है लेकिन वह सिर्फ समस्त जीवन का चरम बिंदु है, पराकाष्ठा है। ऐसा नहीं है कि तुम समाप्त हो गए, बल्कि तुम दूसरे शरीर में चले गए। पूर्व के लोग इसी को चक्र कहते है। यह घूमता रहता है, घूमता रहता है। हां, इसको रोका जा सकता है, लेकिन इसको रोकने का उपाय मरते समय नहीं किया जा सकता। नाना की मृत्यु से मैंने सबसे बड़ा पाठ यहीं सीखा। वे रो रहे थे और आंखों में आंसू भर कर वे हमें चक्र को रोकने के लिए कह रह रहे थे। हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, चक्र को कैसे रोके। अब उनका चक्र तो उनका चक्र था। हमें तो वह दिखाई भी नहीं दे रहा था। यह तो उनकी अपनी चेतना थी और वे ही इसे करा सकते थे। इसलिए उनके आंसू वह रहे थे और उसे रोकने को हमसे बार-बार कह रहे थे। जैसे कि हम बहरे हो, हमने उनसे कहा: 'नाना आपकी बात को सुन लिया है और हम समझ रहे है। कृपया आप चुप हो जाइए।'

उस क्षण कुछ हुआ, कुछ घटा। मैंने इसके बारे में कभी किसी को कुछ नहीं बताया। शायद इससे पहले समय उपयुक्त नहीं था। मैं उनसे कह रहा था, 'आप चुप हो जाइए।'...उस कच्ची ऊबड़-खाबड़ सड़क पर बैलगाड़ी खड़खड़ करती हुई चल रही थी और वे कह रहे थे, राजा, चक्र को रोको, तुम सुन रहे हो। चक्र को रोको।' मैं भी उनसे बार-बार कह रहा था, कृपया आप चुप हो जाइए और मैं आपकी सहायता करने की कोशिश करूंगा। मेरी नानी तो हैरान हो गई। उन्होंने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से आश्चर्यचकित होकर मुझे देखा कि मैं क्या कह रहा हूं। और में कैसे उनकी सहायता कर सकता हैं?

मैंने कहा: 'इतना हैरान होने की कोई बात नहीं है। अचानक मुझे अपने पिछले एक जीवन की याद आ गई है। इस मृत्यु को देख कर मुझे अपनी एक मृत्यु की याद आ गई है।'

मेरा वह जन्म और मृत्यु तिब्बत में हुआ था। वही एकमात्र ऐसा देश है जो वैज्ञानिक ढंग से जानता हे कि इस चक्र को कैसे रोका जा सकता है। इसके बाद मैंने कुछ जपना आरंभ कर दिया। न तो मेरी नानी समझ सकी, न मरते हुए नाना और न मेरा नौकर भूरा जो बहार बैठा हुआ बड़े ध्यान से सुन रहा था। बारह-तेरह वर्ष के बाद मेरी समझ में आया कि वह क्या था। इतना समय लगा उसको खोजने में। तिब्बत के इस कर्मकांड को "बारदो-थोड़ाल" कहते है। तिब्बत में जब कोई आदमी मरता है तो वे लोग एक विशेष मंत्र का जाप करते है। उस मंत्र को बारदो कहते है। वह मंत्र उस मरते हुए आदमी से कहता है, 'शांत हो जाओ, मौन हो जाओ, अपने केंद्र पर जाओ और वहीं रहो। शरीर को कुछ भी हो, तुम केंद्र से मत हटो। केवल साक्षी बने रहो। जो हो रहा है उसे होने दो, बीच में बाधा मत ड़ालो। याद रखो, याद रखो, कि तुम केवल साक्षी हो और वही तुम्हारा सच्चा स्वभाव है। अगर उसे याद रखते हुए तुम मरोगे तो यह चक्र रूक जाएगा।'

मैंने अपने मरते हुए नाना को बारदो-थोड़ाल का जाप किया, बिना यह जाने कि मैं क्या कर रहा हूं। अजीब बात तो यह थी की मैं जब इस मंत्र का जप रहा था तो मेरे नाना इसको सुन कर बिलकुल शांत हो गए। शायद तिब्बत भाषा का एक शब्द भी इससे पहले न सुना हो । उनको तो शायद यह भी नहीं मालूम था कि तिब्बत नाम को कोई देश भी है। मृत्यु के समय में भी वे चुप और एकाग्र हो गए। बारदो ने अपना काम किया, हालांकि वे उसे समझ नहीं सके। कभी-कभी वे बातें काम कर देती है जो समझ में नहीं आती, क्योंकि तुम उन्हें नहीं समझ पाते इसलिए वे काम कर देती है।

बड़े से बड़े सर्जन भी अपने बच्चे का आपरेशन स्वयं नहीं कर सकता। क्यों? कोई बड़े से बड़ा सर्जन अपनी प्रेमिका का आपरेशन स्वयं नहीं कर सकता। प्रेमिका को पत्नी के रूप में परिवर्तित कर देना अपराध है। कानून तो इसकी सज़ा नहीं देगा, लेकिन प्रकृति खुद इसकी सज़ा देती है। इसलिए कानून की कोई जरूरत नहीं है। इस प्रकार प्रेमी को पति बना देने से इस संबंध का सौंदर्य नष्ट हो जाता है। हसबेंड़, पति शब्द ही भद्दा है। यह उसी धातु से बना है जिससे हसबेंड्री, 'कृषि कर्म' शब्द बना है। हसबेंड़, पति वह हे जो बीज बोने के लिए स्त्री का उपयोग खेत की तरह करता है। दुनिया की हर भाषा से हसबेंड़, पति शब्द मिटा देना चाहिए। यह शब्द अमानवीय है। प्रेमी तो समझ में आता है, लेकिन पति नहीं। मैं बारदो को दोहरा रहा था। हालांकि में उसका अर्थ नहीं समझ रहा था। न ही मुझे मालूम था कि वह कहां से आ रहा है। क्योंकि मैंने तब तक इसको नहीं पढ़ा था। लेकिन जब मैं उसका जाप कर रहा था तो उन विचित्र शब्दों की आवाज से ही मेरे नाना शांत हो गए। उस मौन में ही उनकी मृत्यु हुई। मौन में जीना तो सुंदर है ही, लेकिन मौन में मरना उससे भी अधिक सुंदर है। क्योंकि मृत्यु हिमालय की सबसे ऊंची चोटी एवरेस्ट जैसी है। जब कि किसी ने मुझे सिखाया नहीं फिर भी मौन के उस क्षण में मैंने बहुत कुछ सीखा। मैंने अपने आपको अजीब शब्द दोहराते हुए देखा। इसके शाक ने मेरी चेतना को नए स्तर पर पहुंचा दिया और मुझे एक नये आयाम में प्रविष्ट कर दिया। मैं एक नई खोज पर निकल पडा—एक नई तीर्थयात्रा पर। इस तीर्थयात्रा में मेरी भेंट जिन असाधारण, अद्‌भुत लोगो से हुई उनकी संख्या उन अनोखे लोगों से कहीं अधिक है जिनका उल्लेख गुरजिएफ ने अपनी पुस्तक 'मीटिंग विद दि रिमार्केबल मैंने' में किया गया है। बाद में धीरे-धीरे मैं उनके बारे में बात करूंगा। आज मैं एक ऐसे ही अनोखे व्यक्ति के बारे में बात करना चाहता हूं। न तो उनका असली नाम मालूम है और न उनकी असली उम्र। लेकिन उनको लोग मग्गा बाबा कहते थे। मग्गा यानी एक बड़ा कप। वे अपने हाथ में सदा एक मग्गा रखते थे। और उसका उपयोग वे हर काम के लिए करते थे। चाय, दूध और भोजन तो उसमें डाला ही जाता था। इसके अतिरिक्त लोगों द्वारा दिए

गए पैसे भी उसमें रखे रहते थे। आवश्यकतानुसार वे उस मग्गे का उपयोग कर लेते थे। जायदाद के नाम पर उनके पास यही एकमात्र मग्गा था। इसलिए उनको मग्गा बाबा कहा जाता था। बाबा आदरसूचक शब्द है जिसका अर्थ है दादा अर्थात पिता का पिता। हिंदी में मां के पिता को नाना कहते है और पिता के पिता को बाबा कहा जाता है। मग्गा बाबा इस धरती पर रहने बाले अनोखे व्यक्तियों में से एक थे। चुने हुए लोगो में उनकी गिनती की जा सकती है। जीसस, बुद्ध, लाओत्से के साथ उनकी गणना की जा सकती है। मैं उनके बचपन या उनके माता-पिता के बारे में कुछ नहीं जानता। किसी को नहीं मालूम कि वे कहां से आए थे। उस शहर में वे अचानक एक दिन दिखाई दिए थे। वे बोलते नहीं थे। लोग उनसे कई प्रकार के प्रश्न पूछते रहते थे। या तो बस चुप रहते थे। या लोग उनके पीछे ही पड़ जाते तो वे चिल्ला-चिल्ला की निरर्थक शब्द बोलने लगते। लोग समझते कि वे कोई ऐसी भाषा बोल रहे है जिसे ये नहीं जानते। वे भाषा को प्रयोग कतई नहीं कर रहे थे। वे तो केवल अजीब तरह की आवाजें निकालते थे। जिसे—'हिगलल, हूं, हूं गूलू हीगा ही ही।' फिर वे रुकते और फिर कहते 'ही ही ही' सुनने बाले समझते कि वे पूछ रहे हे कि क्या तुम समझ सके? तो वे कहते, हां, बाबा। हां। तक वे अपने मग्गे को दिखा कर इशारा करते। भारत में इस इशारे का मतलब होता है। पैसा, पुराने जमाने में जब असली सोने और चाँदी के रूपये चलते थे तब से यह इशारा प्रचलित है। लोग रुपयों को जमीन पर फेंक कर उसकी आवज से पता लगाते थे कि रूपया असली है या नहीं। असली सोने की आवाज अलग ही होती थी, किसी दूसरे सिक्के की आवाज वैसी नहीं हाँ सकती थी। तो मग्गा बाबा एक हाथ में अपने मग्गे को पकड़ कर दूसरे हाथ से इशारा करते कि अगर तुम समझ गए हो तो इसमें पैसे डालों, और लोग उन्हें पैसे देते। यह सब देख कर मुझे इतनी हंसी आती कि मेरी आंखों में आंसू आ जाते, क्योंकि असल में उन्होंने कुछ भी नहीं कहा था। उनको पैसे का कोई लालच नहीं था। वे एक आदमी से लेकर दूसरे को दे देते थे और उनका मग्गा हमेशा खाली रहता था। कभी-कभार ही उसमें कुछ रहता था। वह एक मार्ग था—पैसे उसमें आते चले जाते, भोजन उसमें आता और चला जाता, वह मग्गा खाली का खाली ही रह जाता। वे उसको सदा साफ करते रहते। मैंने उन्हें सुबह, शाम और दोपहर को इसको साफ करते देखा है।

मैं तुम लोगों के सामने—'तुम' से मेरा मतलब 'दुनिया' से है—यह स्वीकार करना चाहता हूं कि मैं अकेला व्यक्ति था जिससे वे बात करते थे ओर वह भी जब वे बिलकुल अकेले होते थे। जब दूसरे लोग वहां नहीं होते थे। मैं बहुत रात बीते, शायद दो बजे सुबह उनके पास जाता था। क्योंकि उस समय उनको अकेले पाएजाने की संभावना होती थी। सर्दी की रातों में वे आग के पास अपने पुराने कंबल में लिपटे लेटे थे। मैं चुपचाप उनके पास जाकर बैठ जाता और कुछ न बोलता, उन्हें परेशान न करता। यह एक कारण था कि वे मुझसे बहुत प्रेम करते थे। जब कभी करवट बदलते समय उनकी आँख खुलती, वे मुझे वहां बैठा हुआ देखते, तो वे अपने आप बोलने लगते। वे हिंदी भाषी नहीं थे। इसलिए लोग समझते थे उनसे गात करना मुश्किल है। लेकिन यह सच नहीं था। वे निश्चित ही हिंदी भाषी नहीं थे, लेकिन वे हिंदी ही नहीं और भी अनेक

भाषाएं जानते थे। सबसे अधिक तो वे मौन की भाषा जानते थे और प्राय: सारा जीवन वे मौन ही रहे। दिन के समय वे किसी से बात नहीं करते थे। लेकिन रात को जब मैं बिलकुल अकेला होता तो वे मुझसे बोलते थे। उनके कुछ शब्दों को सुनना सौभाग्य था। मग्गा बाबा ने अपने जीवन के बारे में कभी कुछ नहीं कहा, लेकिन जीवन के बारे में उन्होंने बहुत सी बातें बताई। वे पहले व्यक्ति थे जिसने मुझसे कहा कि जीवन जितना दिखाई देता है उससे कहीं अधिक है। इसके बाहरी रूप पर ही मत रूक जाओ, इसकी गहराई में जाकर इसकी जड़ों तक पहुँचों। वे अचानक बोलने लगते और अचानक रूक जाते। यही उनका ढंग था। उन्हें बोलने के लिए राज़ी करने का कोई रास्ता नहीं था। अपनी इच्छा से वे कभी बोलते थे। कभी नहीं बोलते थे। किसी प्रश्न का वे उतर नहीं

देते थे। और हम दोनों के बीच का वार्तालाप बिलकुल गुप्त रहता था। इसके बारे में कोई नहीं जानता था। पहली बार में इसके बारे में बता रहा हूं।

मैंने बड़े-बड़े वक्ताओं को सुना है, उनकी तुलना में ये कुछ भी नहीं थे। लेकिन उनके शब्द शुद्ध शहद थे—मीठे और पौष्टिक—इतने अर्थपूर्ण, लेकिन उन्होंने मुझसे कहा, 'जब मैं मर जाऊं तब तक तुम किसी से यह नहीं कहोंगे कि मैं तुमसे बातें करता हूं। क्योंकि बहुत से लोग समझते हे कि मैं बहरा हूं यह मेरे लिए अच्छा है कि वे ऐसा समझते है। बहुत से सोचते है कि मैं पागल हूं। जहां तक मेरा सवाल है यह और भी अच्छा है। बहुत से बौद्धिक लोग यह समझने की कोशिश करते है कि क्या कह रहा हूं। मैं तो कुछ भी नहीं कहता, जिबरिश, ऊटपटांग या ऊलजलूल शबद बोल देता हूं। और उसमें से ये लोग जो अर्थ निकालते है उन्हें सुन कर मैं हैरान रह जाता हूँ और मैं अपने से कहता हूं कि हे भगवान, जब इन प्रोफेसर, विद्वानों, पंडितों और बौद्धिक लोगो की यह हालत है तो बेचारे जनसाधारण की क्या दशा होगी? मैंने तो कुछ कह नहीं और फिर भी दन लोगो ने अपनी व्याख्या तैयार कर ली।' न जाने क्यों वे मुझसे प्रेम करते थे—शायद अकारण ही। सौभाग्य से मुझे बहुत से अद्‌भुत लोगों से प्रेम प्राप्त हुआ है। और मेरी इस सूची में प्रथम नाम मग्गा बाबा का है। दिन भर लोग उनको घेरे रहते थे। वे सचमुच एक स्वतंत्र व्यक्ति थे, फिर भी वे एक इंच भी इधर-उधर नहीं जा सकते थे। क्योंकि लोग उनको पकड़े रहते। वे उनको रिक्शा पर बैठा कर जहां चाहते वहां लें जाते। और वे इनकार भी न करते, क्योंकि वक बहरे या गूँगे या पागल होने काक ढोंग करते थे। और वे कभी ऐसा कोई शब्द नहीं बोले जो किसी शब्दकोश में पाए जा सके। न वे हां कहते थे न वे ना—बस चले जाते।

एक दो बार तो उनको चुरा लिया गया। महीनों तक वे गायब रहें, क्योंकि दूसरे शहर के लोग उनको चुरा ले गए थे। जब पुलिसवालों ने उन्हें खोज लिया और उनसे पूछा कि क्या वे वापस जाना चाहते हे। तो उन्होंने ऊटपटांग कुछ बोल दिया, 'यडल, फडल, शडल।'

पुलिसवालों ने कहा: ''यह तो पागल आदमी है, हम अपनी रिपोर्ट में क्या लिखे गे, यडल, फडल, शडल...इसका क्या अर्थ है, तो वे उस शहर में तब तक रहें जब तक मूल शहर के लोग उनको चुरा कर न ले आए। वह मेरा शहर था जहां पर मैं अपने नाना की मृत्यु के बाद रहता था। मैं तो नियमित रूप से रोज रात को उनके पास जाता था। एक नीम के पेड़ के नीचे वे रहते थे। वहीं रात को वे सोते थे। जब मैं बीमार होता और मेरी नानी मुझे बाहर न जाने देती तब भी रात को वे सो जातीं तो मैं चुपके से बाहर निकल जाता। मैं दिन में एक बार मग्गा बाबा के पास जरूर जाता, मुझे जाना ही पड़ता, क्योंकि उनसे मुझे आध्यात्मिक पौष्टिकता प्राप्त होती थी। जब कि उन्होंने कभी मेरा पथ-प्रदर्शन नहीं किया, कोई दिशा-निर्देश नहीं किया, फिर भी उनके होने मात्र से, उनकी उपस्थिति से ही मुझे बड़ी सहायता मिली। मेरी भीतर की सुप्त, अज्ञात शक्तियां उनकी उपस्थिति से जाग्रत हो उठीं। उनके बारे में तो मैं भी नहीं जानता था। मैं मग्गा बाबा का बहुत कृतज्ञ हूं। उस समय मैं तो एक छोटा सा बच्चा था और वे केवल मुझसे ही बात करते थे। यह मेरा धन्य भाग था। उनके साथ बिताए गए वे निजी क्षण मेरे लिए बहुत ही मूल्यवान थे। क्योंकि उनसे मेरा अंतर परिपुष्ट हो रहा था। और एक प्रकार से वे मेरे लिए जीवनदायी सिद्ध हो रहे थे। वे और किसी से बात नहीं करते थे। कभी मेरे उनके पास जाने पर अगर कोई दूसरा आदमी उनके पास होता वे कुछ ऐसी हरकत करने लगते कि वह वहां से भाग जाता। जैसे किसी चीजों को फेंकने लगते या पागल आदमी की तरह नाचने-कूदने लगते। और यह सब आधी रात के समय। यह देखकर कोई भी डर जाता। आखिर आपकी बीबी, छह बच्चें है, नौकरी है, और यह आदमी तो बिलकुल पागल लगता है। यह कुछ भी कर सकता है। और जब वह आदमी वहां से चला जाता तो हम दोनों खूब हंसते। इतना मैं और किसी के साथ कभी नहीं हंसा और मैं नहीं सोचता कि इस जीवन में दुबारा ऐसा कभी होगा। और

मेरा कोई जीवन नहीं है। चक्र रूक गया है। हां जो थोड़ा-बहुत चल रहा है वह विगत गति के जोर से चल रहा है। उसमें नई ऊर्जा डाली जा रही है। मग्गा बाबा इतने सुंदर थे कि मैं उनकी तुलना किसी और के साथ नहीं कर सकता। वे तो रोमन मूर्तिकला के उत्कृष्ट नमूने थे—उससे भी बढ़ कर थे, क्योंकि वे इतने जीवंत थे, जीवन से भरे हुए। और मुझे इसकी इच्छा भी नहीं है। क्योंकि एक मग्गा बाबा पर्याप्त है। उन्होंने इतना परितुष्ट कर दिया कि और पुनरावृति की किसे फ़िकर है। मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि कोई भी उनसे अधिक ऊँचाई पर नहीं जा सकता।

में स्वयं उस बिंदु पर पहुंच गया हूं जहां से और अधिक ऊंचे नहीं चढा जो सकता। आध्यात्मिक विकास में एक क्षण ऐसा आता है जिसको पार नहीं किया जो सकता। कितने ही ऊंचे चढ़ जाओ, फिर भी तुम उसी ऊँचाई पर रहोगे। बड़ी विचित्र बात है कि ऐसे क्षण को अनुभवातीत, ज्ञानातीत कहते है।

जिस दिन मग्गा बाबा हिमालय के लिए रवाना हुए उस दिन पहली बार उन्होंने मुझे बुलाया। रात के समय कोई हमारे घर आया और हमारा दरवाजा खटखटाया। मेरे पिता जी ने दरवाजा खोला। उस आदमी ने कहा कि मग्गा बाबा ने मुझे बुलाया है। मेरे पिताजी ने आश्चर्य से कहा: 'मग्गा बाबा, मेरे बेटे से उनको क्या काम है? और वे तो कभी बोलते ही नही है, तो उन्होंने इसे बुलाया कैसे?'

उस आदमी ने कहा: 'मुझे इससे कोई मतलब नहीं है। मुझे यह संदेश देना था सो मैंने दे दिया। अगर यह आपके बेटे के लिए है तो मैं क्या कर सकता हूं।'

इतना कह कर वह चला गया। मेरे पिताजी ने आधी रात को मुझे उठा कर कहा: 'बड़ी अजीब बात है। मग्गा बाबा ने तुम्हें बुलाया है, लेकिन वे तो बोलते नहीं है।'

मैं हंस पडा, क्योंकि वे मुझसे बोलते थे, लेकिन मैंने यह बात पिताजी को नहीं बताई। उन्होंने आगे कहा: 'उन्होंने तुम्हें इसी समय आधी रात को बुलाया है। तुम क्या करना चाहते हो? क्या तुम इस पागल आदमी के पास जाना चाहते हो।'

मैंने कह: 'हां, मुझे तो जाना ही पड़ेगा।'

उन्होंने कहा: 'कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता है कि तुम भी पागल हो। अच्छा, जाओ, और बहार से दरवाजे पर ताला लगा देना, ताकि जब वापस आओ तो मुझे न उठना पड़े।'

में भागा-भागा गया। यह पहली बार था जब उन्होंने मुझे बुलाया था। जब मैं उनके पास पहुंचा तो मैंने उनसे पूछा कि क्या बात है?' उन्होने कहा: 'यह मेरी अंतिम रात है यहां पर। शायद मैं सदा के लिए जा रहा हूं। तुम अकेले हो जिससे मैंने बात कि है। माफ करना, जिस आदमी को तुम्हारे पास मैंने भेजा, उससे अवश्य बोलना पडा। लेकिन वह कुछ नहीं जानता। उसे मालूम ही नहीं कि मैं आध्यात्मिक व्यक्ति हूं। वह एक अजनबी था। और मैंने उसे एक रूपया दिया ताकि वह तुम्हारे घर जाकर मेरा संदेश तुम्हें दे दे।'

उन दिनों एक सोने का रूपया या मोहर बहुत मूल्यवान माने जाते थे। चालीस साल पहले भारत में एक सोने के रूपये में बड़े आराम से एक महीने तक जीवन-निर्वाह किया जा सकता था। क्या तुम्हें मालूम है कि अंग्रेजी शब्द 'रूपी' हिंदी के रूपया शब्द से बना है, जिसका अर्थ है सुनहरा, कागज के नोट को रूपया नहीं कहना चाहिए, क्योंकि वह सुनहरा नहीं होता है। हां, ये मुर्ख उस पर सुनहरा रंग लगा सकते थे। लेकिन उनहोंने ऐसा भी नहीं किया। उन दिनों का एक रूपया आज के सात सौ रूपये के बराबर है। चालीस साल में इतना परिवर्तन हो गया है। चीजें सात सौ गुना महंगी हो गई है। उन्होंने कहा: 'मैंने उसको एक रूपया दिया और कहा कि वह तुम्हें संदेश दे दे। रूपया देख कर वह इतना हैरान हो गया कि उसने मेरी और देखा भी नहीं। वह अजनबी था मेंने उसे पहले कभी नहीं देखा।'

मग्गा बाबा ने कहा: ‘मैं जा रहा हूं, और तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं है जिससे मैं विदा लू।’

उनहोंने प्यार से मुझे गले लगाया और मेरा माथा चूमा, विदा कहा और बस यूं ही चले गए। मग्गा बाबा अपने जीवन में कई बार गायब हो चुके थे, लोग उनको ले जाते और वापस भी छोड़ जाते। इसलिए इस बार जब वे गायब हुए तो किसी ने कोई खास ध्यान नहीं दिया। कुछ महीनों के बाद ही लोगों ने खयाल किया कि मग्गा बाबा सचमुच गायब हो गए है, कई महीने से वापस नहीं आए है। उन्होंने उन्हें उस सब जगहों पर खोजना शुरू किया जहां पर वे पहले गए थे। लेकिन किसी को उनके बारे में कुछ नहीं पता था।

उस रात गायब होने से पहले उन्होंने मुझसे कहा, ‘मैं शायद तुम्हें खिल कर फूल बनते न देख सकूँ, लेकिन मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ रहेगा। मेरे लिए वापस आना शायद संभव न होगा। मैं हिमालय जा रहा हुं, मेरे बारे में किसी को कुछ मत बताना कि मैं कहां गया हूं।’

जब वे मुझे बता रहे थे कि वे हिमालय जा रहे है, तो वे बहुत खुश और आनंदित थे। हिमालय सदा से ऐसे लोगों का घर रहा है। जिन्होनें खोजा और पाय। मुझे नहीं मालूम था कि वे कहां गए, क्योंकि हिमालय दुनिया की सबसे बड़ी पर्वत श्रंखला है। लेकिन एक बार हिमालय में यात्रा करते समय मैं उस जगह पहुंच गया जहां उनकी कब्र थी। बड़ी अजीब बात है कि वह मोजेज और जीसस की कब्र के पास ही थी। ये दोनों व्यक्ति भी हिमालय में ही दफन हुए है। मैं वहां पर जीसस की कब्र देखने गया था। और संयोगवश मुझे मोज़ेज और मग्गा बाबा की कब्रें भी मिल गई। मुझे बडा आश्चर्य हुआ, क्योंकि मैं सोच भी नहीं सकता था कि मग्गा बाबा का मोज़ेज और जीसस से कोई सबंध है। लेकिन वहां उनकी कब्र को देख कर तुरंत समझ गया कि उनका चेहरा इतना सुंदर क्यों था और वे क्यों मोज़ेज जैसे ज्यादा दिखाई देते थे। हिंदू जैसे नहीं। शायद वे उस खोए हुए कबीले के थे जिसे मोज़ेज ने इजराइल जाते हुए खो दिया था। उस खोए हुए कबीले के लोग हिमालय में, कश्मीर में बस गए। और मैं अधिकारपूर्वक कह सकता हूं कि सही इजराइल खोजने में यह कबीला मोजेज से अधिक सफल रहा। मोज़ेज ने जो इजराइल खोजा वह तो बिलकुल रेगिस्तान था। बिलकुल बेकार था। इन्होंने जो कश्मीर में खोजा वह वास्तव में प्रभु का बग़ीचा था।

मोज़ेज वहां पर अपने खोए हुए कबीले को खोजते हुए पहुंच गए थे। जीसस वहां पर अपनी तथाकथित सूली लगने के बाद गए थे। मैं इसको तथाकथित कह रहा हूं। कयोंकि वस्तुत: ऐसा हुआ नहीं, वे जीवित रहे। क्रास पर छह घंटे लटकने के बाद जीसस मरे नहीं थे। सूली पर चढ़ाने का यहूदियों का तरीका इतना आदिम और जंगली था कि आदमी को मरने में छत्तीस घंटे लगते थे। जीसस के एक अमीर शिष्य ने किसी प्रकार यह व्यवस्था कर दी थी उनको शुक्रवार को सूली पर चढ़ाया जाए। यह सब व्यवस्थित था, क्योंकि शनिवार को यहूदी कोई काम नहीं करते, न किसी काम को लंबित रखते है। क्योंकि शनिवार उनका पवित्र दिन है। इसलिए जीसस को अस्थायी तौर पर सूली से उतार कर एक गुफा में कुछ समय के लिए अर्थात सोमवार तक के लिए रख दिया गया। लेकिन इस बीच गुफा में से वे चुरा लिए गए। ईसाई यही कहानी कहते है। सच बात तो यह है कि सूली पर से उतारे जाने के बाद रात को जब वे गुफा में थे तो उनको इजराइल से बाहर ले जाया गया। उनका बहुत खून बह गया था फिर भी वे जीवित थे। उनको ठीक होने में कुछ दिन लगे, लेकिन वे बिलकुल अच्छे हो गए और वे कश्मीर के एक छोटे से गांव पहल गाम में एक सौबारह वर्ष तक जीवित रहे। उन्होंने पहल गाम को इसलिए चुना, क्योंकि उन्हें मोज़ेज की कब्र यहां पर मिली। उनसे पहले मोज़ेज वहाँ गए थे अपने खोए हुए कबीले को खोजने। कबीला तो मिल गया और कश्मीर को देखने के बाद उनको मालूम हुआ कि कश्मीर की तुलना में इजराइल कुछ भी नहीं है। कोई दूसरी जगह नहीं है जिसकी कश्मीर से तुलना की जा सके। वे वहीं पर बस गए और वहीं पर मरे, मेरा मतलब है मोज़ेज। और जब जीसस अपने प्रिय शिष्य थॉमस के साथ कश्मीर

गए तो उन्होंने थॉमस को भारत में अपने मार्ग का प्रचार करने के लिए भेज दिया। वे स्वयं कश्मीर में मोज़ेज की कब्र के पास रूक गए और आजीवन वहीं पर रहे। इसी पहल गाम नामक छोटे से गांव में मग्गा बाबा को दफन किया गया है। जब मैं पहल गाम में था, मुझे उस विचित्र संबंध-सूत्र का पता चला जो मोज़ेज से आरंभ होकर जीसस और मग्गा बाबा के माध्यम से मुझ तक पहुंचा। मेरे गांव को छोड़ने से पहले मग्गा बाबा ने मुझे अपना कंबल देते हुए कहा: 'मेरे पास बस यही एकमात्र चीज है और तुम अकेले हो जिसे मैं यह देना चाहता हुं।'

मैंने कहा: 'वह ठीक है, लेकिन मेरे पिता इस कंबल को घर के अंदर मुझे नहीं ले जाने देंगे। वह हंसे, मैं हंसा और हम दोनों बहुत खुश हुए। उनको भी यह अच्छी तरह से मालूम था कि मेरे पिता इतने गंदे कंबल को घर के भीतर नहीं जाने देंगे। मुझे इस बात को अफसोस है कि मैं उस कंबल को सुरक्षित न रख सका। था तो वह एक दम गंदा सा चीथड़ा ही, लेकिन वह बुद्ध और जीसस जैसे जाग्रत पुरूष का था। मैं उसे अपने घर नहीं ले जा सकता था, क्योंकि मेरे पिताजी कपड़े के व्यापारी थे और वे कपड़ों पर बहुत ध्यान देते थे। मुझे अच्छी तरह से मालूम था कि वे मुझे उस कंबल को घर में नहीं रखने देंगे। मैं उसे नानी के घर भी नहीं ले जा सकता था। वे भी उसे घर में नहीं लाने देतीं, क्योंकि वे सफाई का बहुत खयाल रखती थी। मैंने सफाई कि यह सनक उन्हीं से विरासत में पाई है। यह उनकी गलती है, मेरी कोई जिम्मेवारी नहीं है। मैं किसी भी गंदी यह इस्तेमाल की गई चीज को बरदाश्त नहीं कर सकता। मैं मजाक में उनसे कहता, 'आप मुझे बिगाड़ रही है।'

लेकिन यह सच है। उन्होंने हमेशा के लिए मुझे बिगाड़ दिया, लेकिन इसके लिए में उनका आभारी हूं। उन्होंने मुझे स्वच्छता, शुद्धता और सौंदर्य के पक्ष् में बिगाड़ा। मेरे लिए मग्गा बाबा बहुत महत्वपूर्ण थे, लेकिन अगर मुझे मग्गा बाबा और मेरी नानी में चुनाव करना पड़ता तो मैं अपनी नानी को ही चुनता। हालाकि उस समय वे संबुद्ध नहीं थी और मग्गा बाबा संबुद्ध थे। कभी-कभी समाधि-विहीन व्यक्ति इतना प्यारा और सुंदर होता है। कि उसके लिए हम जाग्रत पुरूष के विकल्प को भी छोड़ने के लिए तैयार हो जाते है। निश्चित ही अगर मैं दोनों को चुन सकता तो दोनों को चुनता। अगर संसार के करोड़ों लोगों में से मुझे दो को चुनाव होता तो मैं इन का चुनाव कर लेता। मग्गा बाबा बाहर...वे मेरी नानी घर के भीतर न जाते। वे बाहर नीम के पेड़ के नीचे ही रहते। और निश्चित ही मेरी नानी मग्गा बाबा के पास कभी नहीं जाती। उनके बारे में वह नाक भौ सिकोड़ कर कहती, 'वह आदमी, अरे भूल जाओ उस आदमी के बारे में और कभी उसके पास भी न जाना। अगर उसके नजदीक से भी गुजरना पड़े तो तुरंत नाह लेना।'

नाना को डर था कि मग्गा बाबा को जुए पड़ी हुई है, क्योंकि उन्हें कभी-कभी किसी ने नहाते हुए नहीं देखा था। शायद वे ठीक कहती थी। मैंने भी कभी नहाते हुए नहीं देखा था। सच तो यह है कि वे दोनों एक साथ नहीं रह सकते थे। उन दोनों का सह-अस्तित्व असंभव था। लेकिन हम लोग कोई न कोई इंतजाम कर ही लेते। मग्गा बाबा बाहर आँगन में नीम के पेड़ के नीचे रह सकते थे। और नानी घर में रानी बनी रह सकतीं। और मुझे बिना चुनाव किए दोनों को प्रेम मिल सकता था। मुझे यह या वह आदि का चुनाव बिलकुल पसंद नहीं है।

सत्र—16 नानी प्रथम शिष्या और बुद्धत्व

संसार में छह बड़े धर्म है। इनको दो वर्गों में बटा जा सकता है। पहला वर्ग है: यहूदी, ईसाई, और इस्लाम धर्म है। ये एक ही जीवन में विश्वास करते है। तुम सिर्फ जीवन और मृत्यु के बीच हो—जन्म और मृत्यु के पार कुछ भी नहीं है—यह जीवन ही सब कुछ है। जब कि ये स्वर्ग, नरक और परमात्मा में विश्वास करते है। फिर भी ये इनको एक ही जीवन का अर्जन मानते है। दूसरे वर्ग के अंतर्गत हैं: हिंदू, जैन, और बौद्ध धर्म। वे पुनर्जन्म के सिद्धांत में विश्वास करते है। आदमी को तब तक बार-बार जन्म होता है। जब ते कि वो बुद्धत्व, एनलाइटेनमेंट, पाप्त नहीं कर लेता है, और तब यह चक्र रूक जाता है। मरते समय मेरे नाना यही कह रहे थे, लेकिन उस समय मैं इसके महत्व को, इसके अर्थ को नहीं जानता था। हालांकि मैंने मशीन की तरह बारूदों को दोहराया, बिना यह समझे कि में क्या कह रहा हूं। या क्या कर रहा हूँ। मैं नाना की चिंता को समझ सकता हूं—इसको तुम चरम या अंतिम चिंता भी कह सकते हो। अगर यह रोग बन जाता है, जैसा कि पूर्व में हो गया है, तब यह एक सनक और मनो ग्रस्तता है और तब इसकी मैं निंदा करता हूं। तब यह एक तरह का रोग है तब यह सराहनीय नहीं बल्कि निंदनीय है। किसी चीज की निंदा करनी हो तो उसे मनोवैज्ञानिक रूप से सनक या मनोग्रस्त कहा जाएगा। इसलिए मैंने इस शबद का प्रयोग किया है। पूर्व में हजारों वर्षों से लोग इस रोग से पीडित है। इसने ही उन्हें धनवान, संपन्न और वैभवशाली होने से रोका है, क्योंकि उनकी एकमात्र चिंता यही थी कि इस चक्र को कैसे रोका जाए। तब कौन इसको चालू हालत में, सफलतापूर्वक चलाए रखने के लिए इसमें ग्रीस, तेल लगाएगा?

भारतीयों पर तो सदा यह सनक सवार रहती है कि कैसे जन्म और मृत्यु के चक्र को रोका जाए। यह उनकी आत्मा का रोग बन गया है। उनको चक्र हमेशा बैलगाड़ी की याद दिलाता है। उसको अगर वे रोकना चाहते हों तो मैं उनसे बिलकुल सहमत हूं। लेकिन उनसे अच्छे पहिए भी है। उन्हें रोकने की कोई जरूरत नहीं है। दुबारा जन्म न लेने का विचार सिर्फ यह बताता है कि तुमने जीवन को अच्छी तरह नहीं जिया। तुम्हें भले ही यह बात विरोधाभासी लगे, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि जिसने जीवन को भरपूर जिया हो वहीं जीवन और मृत्यु के चक्र को रोक सकता है और जो रोकना चाहते है वह वही लोग है जिन्होंने जीवन को जिया ही नहीं। वे कुत्ते की मौत मरेंगे।

मैं कुत्तों के विरूद्ध नहीं हूं—कृपया इसे नोट करो। मैं तो केवल एक कहावत को प्रयोग कर रहा हूं। और यह अर्थपूर्ण होगी क्योंकि हिंदी और अंग्रेजी दोनों में यह कहावत एक जैसी है। सिर्फ यही एक कहावत है जो एक जैसी है। एक जैसी ही नहीं बल्कि एक ही है। हिंदी में कहते है: 'कुत्ते की मौत। और अँग्रेजी में कहते है: ए डॉग्स डेथ। 'ये बिलकुल समान है। इसमें जरूर कोई रहस्य है जिसे खोजने के लिए मुझे तुम लोगों को एक कहानी सुनानी पड़ेगी। कहा जाता है कि जब परमात्मा ने यह दुनिया बनाई...याद रखना कि यह केवल कहानी है....जब परमात्मा ने यह दुनिया बनाई—स्त्री, पुरूष, पशु और पेड़ और सब—तो सबको उसने बीस वर्ष की आयु दी, बीस वर्ष। मुझे आश्चर्य होता है कि बीस वर्ष ही क्यों? शायद परमात्मा भी अपनी अंगुनियों पर ही गिनती करता है—और सिर्फ हाथ की ही नहीं पैर की भी, सब मिला कर बीस होती है। मैं अपनी खोज खुद करता हूं, तुमने भी कभी अपने बाथ-टब में अपने हाथ और पैर की उंगलियों को साफ करते हुए उन्हें गिना होगा। शायद किसी दिन परमात्मा ने भी गिना होगा और उसी समय उसे यह विचार आया होगा कि सबको बीस वर्ष की आयु दे दो। वह कवि मालूम होता है। और वह साम्यवादी भी मालूम होता है। अब अमरीकनों को यह सुन कर बहुत बुरा लगेगा। लगने दो, मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है। जब मैंने दुनिया में किसी और की

परवाह नहीं की तो अमरीकनों की क्यों करूं? और जीवन की इस अवस्था में मैं पहले से कहीं अधिक उग्र और प्रचंड होना चाहता हूं। मैं निश्चित रूप से जानता हूं कि अगर जीसस को कुछ दिन और प्रचार करने दिया जाता तो वे इतने उग्र और प्रखर न रहते और दुनिया की थोड़ी समझ उनमें आ जाती। अखीर थे तो वे यहूदी, धीरे-धीरे समझ जाते और फिजूल की बातें न करते....'प्रभु का राज्य'—और वे बारह मूर्ख, जिनको जीसस ने या उन्होंने स्वंय मान लिया कि वे प्रमुख शिष्य है। जीसस ने जरूर उन्हें कोई संकेत किया होगा, अन्यथा वह वे माह मूर्ख थे, स्वयं तो वे ऐसा सोच नहीं सकते थे।

जीसस की बातें इतनी उग्र, इतनी ठेस पहुंचाने बाली थी कि उस समय का सबसे बड़ा क्रांतिकारी, जॉन दि बैपटिस्ट, जो कि जीसस का गुरु भी था और जो कारागृह में बंद था, उसने अपनी कालकोठरी से भी जीसस को संदेश भेजा था, 'तुम्हारे वक्तव्यों को सुन कर मुझे संदेह होता है कि क्या तुम सचमुच वही मसीहा हो जिसकी हम लोग प्रतीक्षा कर रहे थे? क्योंकि तुम्हारे वक्तव्य इतने उग्र और चौंका देने बाले है।'

अब इसको मैं प्रमाणीकरण कहता हूं। जॉन दि बैपटिस्ट संसार के महान क्रांतिकारियों में से एक था। जीसस सिर्फ उसके अनेक शिष्यों में से एक शिष्य थे। यह एक ऐतिहासिक दुर्घटना है कि जॉन दि बैपटिस्ट को तो लोग भूल गए हैं और जीसस को आज भी याद किया जाता है। जॉन दि बैपटिस्ट शुद्ध आग थे, आग। उनका सिर काट दिया गया था। रानी ने आदेश दिया था कि उनका सिर एक प्लेट में रख कर उन्हें भेट किया जाए, तभी उसे लगेगा कि देश चैन से रह पाएगा। और यही किया गया जान दि बैपटिस्ट के सिर को काट कर, एक सुंदर सोने की प्लेट में रख कर रानी को भेंट किया गया। जॉन दि बैपटिस्ट जैसा आदमी भी जीसस के उग्र वक्तव्यों को सुन कर चिंतित हो उठा था। और मैं कहता हुं कि कभी-कभी उन्हें संपादित करने की भी आवश्यकता होती है। हां, यहां ते कि मैं भी यह करता हूं। इसलिए नहीं कि वे उग्र या प्रखर थे, बल्कि इसलिए कि वे मूखतापूर्ण होने लगते है। चौंका देने बाले हों तो बिलकुल ठीक, लेकिन मूर्खतापूर्ण, नहीं बिलकुल नहीं। जरा सोचों, जीसस का अंजीर के पेड़ को अभिशाप देना, क्योंकि वे और उनके शिष्य भूखे थे और पेड़ पर फल नहीं लगे हुए थे। यह उनका मौसम नहीं था। इसमें पेड़ को कोई दोष नहीं था। लेकिन जीसस इतने नाराज हो गए कि उन्होंने अंजीर के पेड़ को यह अभिशाप दिया कि वह सदा बदसूरत रहेगा। अब मैं इसे मूर्खतापूर्ण कहता हूं। मुझे इसकी फ़िकर नहीं कि यह जीसस ने कहा यह किसी और न। उग्रता धार्मिकता का अंश है, लेकिन मूर्खता नहीं। शायद अगर जीसस कुछ दिन और उपदेश देते...जब उनको सूली लगी तब वे केवल तैंतीस वर्ष के थे। मैं सोचता हूं, सच्चे यहूदी होने के बतौर सत्तर वर्ष की आयु में वे अवश्यक कुछ शांत हो जाते। तब उन्हें सूली लगाने की कोई भी जरूरत न होती। लेकिन यहूदी बहुत जल्दी में थे। मेरे विचार में यहूदियों को ही जल्दी नहीं थी....क्योंकि यहूदी ज्यादा जानते है...शायद रोमन लोगों ने जीसस को सूली दी। ये लोग सदा बचकाने और बेवकूफ रहे। इनकी जाति के इतिहास में शायद ही कोई जीसस, बुद्ध, और लाओत्से जैसा व्यक्ति हुआ हो। केवल एक ही आदमी मुझे याद आता है और वह था सम्राट आरेलियस उसने मेडिटेशंस नामक एक पुस्तक लिखी थी। निश्चित ही यह वह नहीं है जिये मैं मे़डिटेशन कहता हुं। मेरा मे़डिटेशन सदा एक वचन होता है। वह बहुवचन नहीं हो सकता। उसके मेडिटेशंस तो असल में चिंतन-मनन है। वह एकवचन नही हो सकता। समस्त रोमन इतिहास में मुझे केवल मार्कस आरेलियस का नाम ही उल्लेखनीय मालूम होता हे। लेकिन वह भी कुछ विशेष नहीं है। बेचारा कोई भी बाशो उसे हरा सकता था। कोई भी कबीर इस सम्राट को चोट करके उसे अपनी समझ के पास ले जा सकता है।

मुझे नहीं मालूम कि किसी को उसकी समझ के पार ले जान तुम्हारी भाषा में चलता है। यह नहीं, 'किसी को समझदार बनाना तो चलता है।' लेकिन वह मेरा काम नहीं है। वह तो कोई भी कर सकता है। समझदार

बनाने के लिए तो सड़क पर पड़े हुए पत्थर की चोट ही काफी है। उसके लिए किसी बुद्ध की जरूरत नहीं होती। बुद्ध की आवश्यकता तो होती है तुम्हें समझ के पार ले जाने के लिए बाशो, कबीर या लल्ला और राबिया जैसी कोई भी महिला बेचारे इस सम्राट को उस पार पहुंचा देती। रोमन लोगों से बस इतना ही मिला है। कुछ विशेष नहीं, लेकिन फिर भी कुछ तो है। किसी को बिलकुल अस्वीकार नहीं करना चाहिए। मैं आरेलियस को संबुद्ध या जाग्रत व्यक्ति तो नहीं मानता, लेकिन शिष्टाचार वश मैं उसे एक अच्छा आदमी मानता हूं। अगर संयोग से उसकी भेंट वोधिधर्म की आँख मार्कस आरेलियस की आँख से मिल जाती तो काम बल जाता। तब पहली बार उसे मालूम होता कि ध्यान क्या है। तब वह अपने घर जाकर अपना लिखा हुआ सब जला देता। शायद तब वह रेखाचित्रों का एक संग्रह छोड़ जाता—उड़ता हुआ पक्षी, मुरझाता हुआ गुलाब, आकाश में उड़ता हुआ अकेला बादल, कुछ वाक्य इधर-उधर लिखे हुए, जो अधिक कुछ नहीं कहते, लेकिन जो पढ़ने वाले में विचार कि प्रक्रिया आरंभ करने के लिए यथेष्ट है। जब वह मे़डिटेशन की सही नोटबुक होती लेकिन मेडिटेशंस की नहीं। ध्यान का बहुवचन संभव नहीं है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा यह कहा जा सकता है कि पूर्व, विशेषकर भारत, मृत्यु से नहीं वरन आत्मघात के विचार से भी ग्रसित है। एक तरह से मनोवैज्ञानिक गलत नहीं है। जब तक आदमी जीवित है तब उसे पूरी तरह से जीना चाहिए, मृत्यु के बारे में सोचने की कोई जरूरत नहीं। और जब मृत्यु आए तो पूरी तरह मर जाना चाहिए तब पीछे की और मुड़ कर देखने की कोई जरूरत नहीं है। हर क्षण में पूरी तरह से होना चाहिए—जीने में, प्रेम करने में, मृत्यु मैं—इसी तरह जाना जाता है। क्या जाना जाता है? 'क्या' नहीं लेकिन 'वह' जानने वाला। 'क्या' तो विषय है और 'वह' आत्म परकता, आतम निष्ठता है। जब मेरे नाना मरे तो मेरी नानी हंस रही थी—हंसी की अंतिम झलक। तब उन्होंने अपने आपको नियंत्रित किया। वे स्वयं को नियंत्रित करने बाली महिला थीं। लेकिन मैं उनके इस नियंत्रण से नहीं वरन उनकी हंसी से प्रभावित हुआ था। यह देख कर कि वे मृत्यु के क्षण में हंस सकती है। मैंने बार-बार उनसे पूछा: 'नानी, क्या आप मुझे बता सकती है कि जब मृतयु इतनी निकट थी तब आप इतने जोर से क्यों हंसी। अगर मेरे जैसे बच्चे को भी मृत्यु का आभास हो रहा था तो यह संभव नहीं कि आपको आभास न हुआ है। उन्होंने कहा: 'अहसास मुझे हो रहा था, इसीलिए मैं हंसी थी। मुझे उन बेचारों पर हंसी आई जो अकारण और बिना किसी जरूरत के इस चक्र को रोकने की कोशिश कर रहे थे। क्योंकि परम अर्थों में तो जीवन और मृत्यु का कोई अर्थ नहीं होता।' मुझे उस समय की प्रतीक्षा करना पड़ी तब मैं स्वयं उनसे पूछ सकता था या तर्क कर सकता था। मैंने सोचा कि जब मुझे समाधि अपलब्ध होगी तो मैं उनसे पूछूंगी। और यहीं मैंने किया। इक्कीस वर्ष की आयु में संबुद्ध होने के बाद पहला काम मैंने जो किया वह यह था। अपने पिता के गांव जल्दी से जल्दी पहुंचना, जहां मेरी नानी रहती थीं। उन्होंने उस स्थान को कभी नहीं छोड़ा जहां उनके पति की चिता जली थी। वहीं उनका घर गया। वे अपनी सब सुख-सुविधाओं को भूल गई। उनहोंने कहा: ' क्या करना है वहां जाकर, मेरे पति मर गए है और जिस बच्चे को में प्रेम करती हूं वह यहां पर है। बात खतम हो गई। संबोधी के तुरंत बाद दो आदमियों से मिलने कै लिए मैं भागा-भागा गांव गया। पहले थे मग्गा बाबा जिनके बारे में पहले मैं बता चुका हूं। तुम जानना चाहोगे कि क्यों? क्योंकि मैं चाहता था कि कोई दूसरा मुझसे कहे कि मैं संबुद्ध हो गया हूं। मैं तो जानता था, लेकिन मैं इसके बारे मैं बाहर से भी सुनना चाहता था। उस समय मगगाबाबा ही ऐसे व्यक्ति थे जिनसे मैं पूछ सकता था। मैंने सुना था कि वे अभी-अभी गांव वापस आ गए है। गांव स्टेशन से दो मील दूर था। तुम अंदाज नहीं लगा सकते कि मैं कितनी तेजी से उनके पास उस नीम के पेड़ के नीचे पहुंचा।

नीम शब्द का अनुवाद नहीं हो सकता। क्योंकि मैं नहीं सोचता कि नीम के पेड़ जैसा पश्चिम में कुछ है। नीम का पेड़ अजीब पेड़ है। अगर तुम पतियों का स्वाद लो तो बहुत कडुवा होता है। तुम भरोसा नहीं करोगे कि

जहर भी इतना कड़ुवा हो सकता है। लेकिन बिलकुल उलटा है, नीम जहरीला नहीं है। अगर इसके कुछ पत्ते रोज खाए जाएं...जो कि बहुत मुश्किल है। मैंने बरसों तक इसके पचास पत्ते सुबह और पचास पत्ते शाम को शाम को खाए है। अब नीम के पचास पत्ते खाने के लिए ऐसा चाहिए जो खुद को मारने पर तुला हो। यह बहुत कड़ुवा है, लेकिन खून को शुद्ध करता है और संक्रामक रोगों से मुक्त रखता है—भारत जैसे देश में भी जो कि चमत्कार है। ऐसा माना जाता है कि नीम के पत्तों से गुजरती हुई हवा अनय हवा की तुलना में ज्यादा शुद्ध हवा हो जाती है। लोग अपने घर के चारों और नीम के पेड़ लगा लेते है। ताकि उन्हें शुद्ध हवा मिलती रहे। यह तो वैज्ञानिक तथ्य है कि नीम सब प्रकार की छूत की बीमारियों को दूर रखता है। उनसे वातावरण को सुरक्षित रखता है।

मैं भागा-भागा उस पेड़ के पास गया जहां पर मग् बाबा बैठे थे। और जैसे ही उनहोंने मुझे देखा, मालूम है उन्होंने क्या किया? मैं स्वयं भी विश्वास न कर सका, उन्होंने मेरे पैर छुए और रो पड़े। मुझे बहुत संकोच लगा, क्योंकि लोगों की भीड़ वहां जमा हो गई थी। उन्होंने समझा कि मग्गा बाबा अब सचमुच ही बिलकुल पागल हो गए है। अभी तक तो उनका दिमाग थोड़ा खराब था, लेकिन अब तो बिलकुल खराब हो गया है। लेकिन मग्गा बाबा हंसे और पहली बार उन्होने लोगो के सामने मुझसे कहा: 'मेरे बेटे, आखिर तुमने कर दिया, मुझे मालूम था कि एक दिन तुम अवश्य कर लोगे।

मैंने उनके पैर छुए। पहली बार उन्होंने ऐसा करने से यह कहते हुए कि 'नहीं-नहीं, अब मेरे पैर मत छुओ, 'मुझे रोकने की कोशिश की। पर उनके काफी रोकने पर भी मैंने उनके पैर छुए। बिना फ़िकर किए। मैंने कहा: 'आप अपना काम कीजिए और मुझे अपना काम करने दीजिए। अगर मैं संबुद्ध हो गया हूं—जैसा कि आप कहते है—तो एक संबुद्ध व्यक्ति को आपके पैर छूने से मत रोकिए।' वे फिर हंसने लगे और कहा: 'शैतान, तुम संबुद्ध तो अवश्य हो, लेकिन बहुत शैतान हो।' फिर इसके बाद मैं नानी के घर पहुंचा—अपने पिता के घर नहीं। मैं नाना को बताना चाहता था कि क्या घटा। लेकिन अस्तित्व का ढंग विचित्र है। वे द्वार पर खड़ी मुझे बड़ी हैरानी से देख रही थी। उन्होंने कहा: 'तुम्हें क्या हुआ है? तुम पहले जैसे नहीं हो।' वे स्वयं संबुद्ध नहीं थी, लेकिन उनमें इतनी समझ थी कि वे मेरे आंतरिक परिवर्तन को देख सकीं। मैंने कहा: 'हां, मैं पहले जैसा नहीं हूं और जो अनुभव मुझे हुआ है उसे मैं बांटने आया हूं। उन्होंने कहा: 'जहां तक मेरा सवाल है, हमेशा मेरे राजा ही बने रहो —मेरे छोटे बच्चे।'

इसलिए मैंने उनसे कुछ नहीं कहा। एक दिन बीत गया। फिर आधी रात को उन्होंने मुझे जगाया। आंखों में आंसू भर कर उन्होंने कहा: 'माफ करना, अब तुम वही नहीं हो। तुम भले ही पहले जैसा होने का अभिनय करो, लेकिन मैं सब समझ रही हूं। अभिनय की कोई आवश्यकता नहीं है। अब तुम बता सकते हो कि तुम्हें क्या घटा है। जिस बच्चे को मैं जानती थी वह तो न जाने कहां खो गया। अब तुम केबल मेरे ही नहीं रहे। लेकिन उससे फर्क नहीं पड़ता। अब तो लाखों लोग तुम्हें अपना मानेंगे और हरेक को लगेगा कि तुम उसी के हो। तुम पर मेरा जो अधिकार था वह मैं वापस लेती हूं। लेकिन अब तुम मुझे भी मार्ग बताओ।'

यह पहली बार है जब मैं किसी को बता रहा हूं: 'मेरी नानी मेरी प्रथम शिष्या थी। मैंने उन्हें मार्ग बताया। मेरा मार्ग बहुत सरल है: मौन होना और अपने भीतर के साक्षी को अनुभव करना और विषय या दृश्य में नहीं खोना। जानने बाले को जानना और जो जाना गया है उसे भूल जाना। मेरा मार्ग सरल है, उतना ही सरल है जितना लाओत्से, च्वांगत्सु, कृष्ण, क्राइस्ट, मोजेज और जरथुस्त्र का। सिर्फ नाम अलग'-अलग है, मार्ग वही है। सिर्फ यात्री अलग-अलग है, यात्रा एक ही है। और सत्य, प्रक्रिया बहुत सरल है।

यह मेरा सौभाग्य था कि मेरी नानी मेरी प्रथम शिष्य बनी, क्योंकि मैंने और किसी को उनके जैसा सरल नहीं देखा। यू तो मैंने बहुत से सरल लोग देखे है जो सरलता के निकट पहुंचते हैं, लेकिन उनकी सरलता की गहराई ऐसी थी कि कोई भी उसके पास नहीं जा सका। मेरे पिता भी नहीं। वे सरल थे, बहुत सरल थे, और बहुत गहन भी थे, लेकिन नानी जैसे नहीं। मुझे खेद से कहना पड़ता है कि वे उनसे बहुत दूर थे। और मेरी मां तो और भी दूर है। वे तो मेरे पिता की सरलता के भी निकट नहीं पहुँचती। तुम्हें जान कर आश्चर्य होगा—और मैं पहली बार यह घोषित कर रहा हूं कि मेरी नानी सिर्फ प्रथम शिष्य ही नहीं थी, वे मेरी प्रथम संबुद्ध शिष्य भी थी। और मेरे लोगों की संन्यास की दीक्षा देने के बहुत पहले वे संबुद्ध हो चुकी थी। वे संन्यासिन नहीं थी। वे उन्नीस से सत्तर में मरी। इसी साल मैंने लोगों को संन्यास की दीक्षा देना आरंभ किया। वे मृत्यु शय्या पर थीं जब उन्होंने मेरे इस आंदोलन के बारे में सुना। हालांकि मैंने स्वय तो यह नहीं सुना, लेकिन मेरे एक भाई ने मुझे बताया कि ये उनके अंतिम शब्द थे। जैसे कि वे आप से बातें कर रही हों—नानी ने कहा: 'राजा, अब तुमने संन्यास देना आरंभ किया है। लेकिन अब तो बहुत देर हो गई है। मैं तुम्हारी संन्यासिन नहीं बन सकती, क्योंकि जब तक तुम यहां पहुंचोगे तब तक मैं इस शरीर में नहीं रहूंगी। लेकिन कोई तुम्हें बता देगा कि मैं तुम्हारी संन्यासिन बनना चाहती थी।'

मेरे वहां पहुंचने के ठीक बारह घंटे पहले उनकी मृत्यु हो चुकी थी। बंबई से उस गांव का सफर बहुत लंबा था। नानी की इच्छा थी कि जब तक मैं वहां न पहुंच जाऊँ तब तक कोई भी उनके शरीर को हाथ न लगाए। फिर मैं जो निर्णय करूं, वैसा ही किया जाए। अगर मैं उनके शरीर को दफनाना चाहूं तो ठीक होगा। अगर उनके शरीर को जलाना चाहूं तो वह ठीक होगा। और अगर मैं कुछ और करना चाहूं तो वह भी ठीक होगा।

जब मैं घर पहुंचा तो मैं अपनी आंखों पर विश्वास न कर सका। उस समय वे अस्सी साल की थी, लेकिन फिर भी जवान दिखाई दे रही थीं। वे बारह घंटे पहले मर चुकी थीं। लेकिन फिर भी उनका शरीर विकृत नहीं हुआ था। वैसा का वैसा ताजा था। मैंने उनसे कहा: 'नानी, में आ गया हूं। मैं जानता हूं, इस बार तुम मुझे कोई जवाब न दे सकोगी, लेकिन फिर भी मैं तुम्हें बता रहा हूं मैं आ गया हूं।' अचानक एक चमत्कार सा हुआ। वहां पर मैं ही नहीं, मेरे पिताजी, मेरा सारा परिवार और अड़ोस-पड़ोस के लोग भी उपस्थित थे। सबने देखा कि नानी की बाईं आँख से एक आंसू ढलक गया.... बारह घंटे के बाद, देवराज नोट कर लो कि ड़ाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया था। अब मरा हुआ आदमी तो नहीं रोता। जीवित भी कभी-कभार ही रोते है। मृत आदमी का क्या कहना, नानी की आँख से आंसू गिरा और मुझे लगा कि मुझे अत्तर मिल गया। इससे अधिक की क्या आशा हो सकती थी। मैंने उनकी चिता को आग दी। यही उनकी इच्छा थी। मैंने तो अपने पिता का भी दाह-संस्कार नहीं किया। भारत में यही नियम है कि सबसे बड़ा बेटा पिता की चिता को आग देता है। मैंने ऐसा नहीं किया। जहां तक मेरे पिता का सवाल है, मैं तो उनके दाह संस्कार तक में नहीं गया। नानी का दाह-संस्कार अंतिम दाह-संस्कार था जिसमें मैं गया था। उसी दिन मैंने अपने पिता से कहा: 'दद्दा, मैं आपकी अंतिम-क्रिया से समय उपस्थित नहीं हो पाऊगा।'

उन्होंने कहा: 'क्या मूर्खतापूर्ण बात कर रहे हो? 'अभी तो मैं जिंदा हूं।'

मैंने कहा: 'मुझे मालूम हे कि अभी आप जिंदा है, लेकिन कितने दिन कि लिए? अभी कल तक तो नानी भी जीवित थीं। कल शायद आप भी न रहें। मैं अभी से स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैंने तय कर लिया है कि नानी के बाद अब मैं और किसी के दाह संस्कार में नहीं जाऊँगा। इसलिए मैं आपसे क्षमा मांग रहा हूं। मेरी बात समझ गए होगें।'

उन्हें थोड़ा आश्चर्य जरूर हुआ, लेकिन वे मेरी बात को समझ गए, उन्होंने कहा: 'अगर यही तुम्हारा फैसला है तो ठीक है। लेकिन जब फिर मेरी चिता को आग कौन देगा?' भारत में यह बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है। इस संदर्भ में सामान्यत: सबसे बड़ा बेटा ही पिता की चिता को आग देता है। मैंने उनसे कहा: 'आप जानते है कि मैं इधर-उधर भटकने वाला घुमक्कड़ हूं। मेरे पास कुछ नहीं है। यद्यपि मग्गा बाबा बहुत गरीब थे तथापि उनके पास दो चीजें तो रहती थीं—एक उनका कंबल और दूसरा उनका मग्गा। मेरे पास कुछ भी नहीं है। मैं राजाओं की भांति रहता जरूर हूं, लेकिन मेरा अपना कुछ नहीं है। अगर किसी दिन कोई आकर मुझसे कहे कि इस जगह को तुरंत छोड़ दो, तो मैं तुरंत छोड़ दूँगा। मुझे सामान बांधने की जरूरत भी न पड़ेगी, क्योंकि मेरा तो कुछ भी नहीं है। मैंने बंबई को इसी तरह से छोड़ था। लोगों को यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैं इतनी आसानी से चल पडूंगा—एक बार पीछे देखे बीना। मैं अपने पिताजी के दाह-संस्कार में शामिल नहीं हो सका। लेकिन नानी की अंतिम क्रिया के समय मैं इसकी अनुमति उनसे पहले ही ले चुका था। मेरी नानी संन्यासिन नहीं थी, लेकिन वे दूसरे अर्थों में संन्यासिन थीं। मैंने उनको गेरूआ वस्त्र पहनने को नहीं कहा था, लेकिन जिस दिन वे संबुद्ध हुई उस दिन से उन्हें सफेद कपड़े पहनने छोड़ दिए। भारत में विधवा को सफेद कपड़े पहनने होते है। और कोई पूछे कि विधवा को ही क्यों? इसलिए कि वह सुंदर न दिखाई दे। यह सीधा तर्क है। उसके सिर के बाल भी घोट दिए जाते है। अब इन दुष्टों की चालाकी देखो। स्त्री को बदसूरत बनाने के लिए रंगीनी उससे छीन लेते है। वह किसी उत्सव में, किसी खुशी के अवसर पर सम्मिलित नही हो सकती। यहां तक कि अपने बेटे या बेटी की शादी में भी नहीं। उसके जीवन से सारी रंगीनी छीन ली जाती।

जिस दिन मेरी नानी को समाधि उपलब्ध हुई, मुझे याद हैं—मैंने इसे लिख कर रखा हुआ है, वह कहीं न कही होगा—वह दिन था सोलह जनवरी उन्नीस सौ सड़सठ। बिना किसी झिझक के मैं यह कहता हूं कि नानी मेरी प्रथम शिष्या थी—और यही नहीं, वे मेरी प्रथम संबुद्ध शिष्या थी। तुम दोनों डाक्टर हो और तुम दोनों अजित सरस्वती को अच्छी तरह से जानते हो। पिछले करीब बीस वर्ष से वे मेरे साथ है। और मैं किसी और को नहीं जानता जो इतना सच्चे दिल से मेरे साथ रहा हो। तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा कि वे बाहर खड़े इंतजार कर रहे है। और पूरी संभावना है कि वे समाधि के बहुत निकट है। वे यहां कम्यून में रहने आए है। उनके लिए यह बहुत मुश्किल रहा होगा, विशेषकर एक भारतीय के लिए अपने बीबी-बच्चों और अपने काम को छोड़ना बहुत मुश्किल है। लेकिन वे मेरे बिना नहीं रह सकते थे। वे सब कुछ छोड़ने को तैयार है। वह बाहर इंतजार कर रहे है। यह उनका पहला साक्षात्कार होगा और मुझे लगता है कि यह उनका संबोधी का भी अनुभव होगा। उन्होंने इसे बड़े श्रम से अर्जित किया है। भारतीय होकर समग्र रूपेण मेरे साथ होना आसान काम नहीं है।

सत्र—17 अजित सरस्वती मेरे महाकाश्यप है

पिछली रात अजित सरस्वती ने जो पहले शब्द मुझसे कहे, वे थे: 'ओशो मुझे आशा नहीं थी कि मैं कभी भी ऐसा कर पाऊगा।'

जो लोग वहां उपस्थित थे उन्होंने सोचा कि वे कम्यून में आकर रहने की बात कर रहे है। एक प्रकार से यह भी सच था। क्योंकि मुझे याद है बीस वर्ष पहले जब वे पहली बार मुझसे मिलने आए थे तब मुझसे कुछ मिनट मिलने कि लिए उनको अपनी पत्नी से इजाजत लेनी पड़ी थी। इसलिए जो उपस्थित थे स्वभावत: उन्होंने समझा होगा कि उन्हें इस बात की आशा नहीं थी कि वे अपना काम-धाम और बीबी-बच्चों को छोड़ कर यहां आ जाएंगे—सब कुछ छोड़-छाड़ कर सिर्फ यहां मेरे साथ होने के लिए। इसी को सच्चा त्याग कहते है। लेकिन उनका यह अर्थ नहीं था। और मैं समझ गया।

मैंने उनसे कहा: 'अजित, मैं भी हैरान हूं। ऐसा नहीं कि मुझे इसकी आशा नहीं थी—मुझे तो सदा इस क्षण की आशा, इच्छा और अपेक्षा थी। और मैं खुश हूं कि तुम आ गए।'

दूसरे लोगों ने फिर सोचा होगा कि मैं उनके यहां आकर रहने की बात कर रहा हुं। मैं तो कुछ और ही कहा रहा था। लेकिन वे समझ गए। मुझे उनकी आंखों में दिखाई दे रहा था—उनकी आंखे बच्चे जैसी सरल होती जा रही थी। मैं देख रहा थी कि वह समझ गए है कि गुरु के पास आने का सही अर्थ क्या होता है। इसका अर्थ है: 'स्व' में पहुंचना। इसका अर्थ है: स्व-बौध। उनकी मुस्कान बिलकुल नई थी। मैं उनके बारे में चिंतित था। वे दिन प्रतिदिन गंभीर होते जा रहे थे। मुझे फ़िकर थी, क्योंकि मेरे लिए गंभीरता सदा एक गंदा शब्द रहा है। एक बीमारी, कैंसर से भी अधिक खतरनाक और किसी भी बिमारी, कैंसर से भी अधिक खतरनाक और किसी भी बिमारी से कहीं अधिक संक्रामक। लेकिन मैं ने राहत कि सांस ली और एक बड़ा बोझ मेरी छाती से उतर गया। वे उन थोड़े से लोगों में से है जो मेरे मरने से पहले अगर समाधिस्थ न हुए तो मुझे चक्र को दोबारा चलाना पड़ेगा, मुझे फिर से जन्म लेना पड़ेगा। हालांकि चक्र को दुबारा चलाना असंभव है—और इसको चलाने की यांत्रिक टेक्नीक की मुझे कोई जानकारी नहीं है—विशेषकर समय के चक्र की। मैं मैकेनिक नहीं हूं, मैं टेक्नीशियन नहीं हूं। इसलिए चक्र को दुबारा चलाना मेरे लिए बहुत ही कठिन हो जाता। जब इक्कीस वर्ष का था, तब से यह चला ही नहीं है। इकतीस साल पहले चक्र बंद हो गया था। अब तो उसको जंग लग गया होगा। अगर तुम तेल भी ड़ालो तो भी कोई फायदा नहीं होगा। यहां तक कि मेरे संन्यासी भी इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते। लेकिन अजित जैसे व्यक्ति के लिए मैं किसी भी कीमत पर वापस आने की कोशिश करता। मैंने निश्चय किया है। कि जब तक मेरे एक हजार एक शिष्य संबुद्ध नहीं हो जाते तब तक मैं शरीर नहीं छोड़ूगा। देवराज इसे याद रखना। यह बहुत मुश्किल नहीं है। बुनियादी काम कर दिया गया है, केवल थोड़ा सा धैर्य चाहिए। जब मैं भीतर आ रहा था ता यह सुन कर कि अजित सुबुद्धि हो गए है, गुड़िया ने कहा, 'बड़ी अद्‌भुत बात है। इधर-उधर, सब जगह बुद्धत्व घटित हो रहा है।'

हां, ऐसा ही होगा। यही मेरा काम है। और वे एक हजार एक लोग किसी भी क्षण बुद्धत्व को उपलब्ध होने के लिए करीब-करीब तैयार है। जरा सा हवा का झोंका और फूल खिल उठता है या सूर्य की पहली किरण और कली अपना हृदय खोल देती है।

अब वह क्या था जिससे अजित को सहायता मिली? पिछले बीस वर्ष से मैं उन्हें जानता हूं और उन पर प्रेम बरसाता रहा हूं। मैंने कभी उनकी पिटाई नहीं की—इसकी कभी जरूरत ही नहीं पड़ी। मेरे कुछ कहने से पहले ही वे समझ लेते है। मेरे कुछ कहने से पहले ही वे सुन लेते है। पिछले बीस सालों में वे मेरे साथ जितना

करीब हो सके उतना करीब चलते रहे है। वे मेरे 'महा काश्यप' है। पिछली रात क्या हुआ? कैसे हुआ, क्योंकि वे हर क्षण सिर्फ मेरे बारे में सोच रहे थे और जैसे ही उन्होंने मुझे देखा, वे सारे विचार रूक गए—और यही एक विचार उनको बादल की तरह घेर हुए था। और मैं नहीं सोचता कि वे स्वयं भी अपने शब्दों के ठीक अर्थ को समझ सके। कुछ समय लगता है और शबद तो अचानक प्रकट हो जाते है। बिना सोचे-समझे अचानक उन्होंने कहा: 'मुझे कभी यह आशा नहीं थी, कभी यह अपेक्षा नहीं थी कि मैं इसे कर पाऊगा।'

मैंने कहा: 'चिंता मत करो, मुझे हमेशा पूरा विश्वास था कि देर-अबेर एक न एक दिन ऐसा अवश्य घटेगा।'

वे थोड़ा असमंजस में पड़ गए थे। वे आने की बात कर रहे थे और मैं घटना घटने की बात कर रहा था। तभी, जैसे कि एक खिड़की खुली और तुम देखते हो—ठीक उसी प्रकार—एक खिड़की खुल गई और उन्होंने देखा। उन्होंने मुस्कराते हुए, आंखों से आंसू भर कर मेरे पैर छुए। आंसू और मुस्कुराहट को एक साथ घुलते-मिलते देखना एक सुदंर अनुभव है। यह अपने आप में एक बहुत ही सुंदर अनुभव है। अजित सरस्वती के कारण मैं उस कहनी को पूरा न कर सका जिसे मैंने आरंभ किया था। काफी लंबे समय तक वे मेरे इतने निकट रहे है कि मुझे उनकी आदत पड़ गई है। तुम्हें याद है न जब उस दिन मैं 'तंत्रा आर्ट एण्ड तंत्रा पेंटिंग' पुस्तकों के सुप्रसिद्ध तंत्र लेखक अजित मुखर्जी के बारे में बोल रहा था, मैंने कहा...अपने नोट को देख सकते हो.....जब मैंने अजित कहा तो मुखर्जी न कह सका। मेरे लिए सदा अजित का अर्थ होता है, अजित सरस्वती , जब मैंने अजित मुखर्जी की बात की ताक पहले मैंने कहा अजित सरस्व...ओर फिर मैंने अपनी गलती को सुधारा। मैंने सरस्वती कहना शुरू किया ही था और सरस्व..तक पहुंचने पर तुरंत मैंने पलट कर मुखर्जी कहा। वे, बिना कोई दखल डाले, चुपचाप प्रतीक्षा करते रहे है। ऐसी श्रद्धा दुर्लभ है। यद्यपि इसी तरह की श्रद्धा के साथ मेरे साथ हजारों संन्यासी है। जाने या अनजाने—श्रद्धा का होना बहुत आवश्यक है। अजित सरस्वती की पृष्ठभूमि हिंदू है। इसलिए उनके लिए ऐसी श्रद्धा रखना स्वाभाविक है। लेकिन उनकी शिक्षा पश्चिम में हुई थी। शायद इसलिए वे मेरे इतने निकट आ सके। हिंदू पृष्ठभूमि और पश्चिमी वैज्ञानिक बुद्धि—इन दोनों का एक साथ होना दुर्लभ घटना है। वे अनूठे व्यक्ति है। और गुड़िया, और भी संबुद्ध होने बाले है, इधर-उधर, यहां-वहां, सब जगह संबुद्ध होंगे। इन्हें जल्दी पैदा होना होगा, क्योंकि मेरे पास अधिक समय नहीं है। लेकिन अस्तित्व में जब मनुष्य फूटता है तो ऐसा होता है तो उसकी आवाज 'पॉप म्यूजिक' जैसी नहीं होती, शास्त्रीय संगीत जैसी भी नहीं होती, वह तो ऐसा शुद्ध संगीत है जिसे किसी वर्ग में नहीं डाला जा सकता-उसे सुना नहीं, महसूस किया जाता है। अब तुम बेवकूफी देखते हो, मैं ऐसे संगीत की बात कर रहा हूं जिसको सुना नहीं महसूस किया जाता है। हां, मैं इसी के बारे में बात कर रहा हूं। इसी को समाधि कहते है। सब मौन हो जाता है—जैसे कि बाशो का मेंढ़क उस प्राचीन तालाब के कभी कुदा ही नहीं—कभी नहीं—मानों तालाब में तरंगें उठती ही नहीं और वह सदा आकाश को प्रतिबिंबित करता है अविचल भव से। बाशो का यह हाइकू बहुत सुदंर है। मैं इसे कई बार दोहराता हूं, क्योंकि यह सदा नया है और इसमे से नये-नये अर्थ निकलते है। मैं यह पहली बार कह रहा हूं कि मेंढ़क ने छलांग नहीं लगाई और न छपाक की आवाज आई। वह प्राचीन तालाब ने तो प्राचीन है, न नवीन—वह समय के बारे में कुछ नहीं जानता। उसकी सतह पर कोई तरंगें नहीं है। उसमें तुम्हें तो तारे दिखाई देते है वे आकाश के तारों से कहीं अधिक भव्य और शानदार है। तालाब की गहराई उनके वैभव को बढा देती है। वे सपनों की दुनियां के अंग बन जाते है।

जब कोई समाधि में फूटता है तो उसे मालूम होता है कि मेढक ने छलांग नहीं लगाई—प्राचीन तालाब प्राचीन नहीं था। तब मालूम होता है जो है।

यह सब तो मैंने यूं ही कह दिया। लेकिन इससे पहले कि मैं फिर भूल जांऊ ...उस कहानी को जो मैंने कल शुरू की थी..। तुम लोगों ने शायद सोचा भी नहीं होगा कि मैं उसे याद करूंगा। लेकिन मैं सब कुछ भूल सकता हूं। सिवाय एक सुंदर कहानी के। मेरे मरने के बाद भी अगर तुम चाहो कि मैं कुछ बोलूं तोकिसी कहानी के बारे में पूछना—ईसप की कहानियां, पंच तंत्र, जातक कथाएं, या जीसस की नीति-कथाएं। की मैं कह रहा था—वह सब शुरू हुआ 'कुत्ते की मौत' कहावत से। मैंने कहा कि बेचारे कुत्ते का इससे कोई लेना देना नहीं है। लेकिर इस कहावत के पीछे एक कहानी है जो कि समझने लायक है। क्योंकि लाखों लोग कुत्ते कि मौत मरने वाले है। शायद तुम लोग भी उस कहानी को सुन चुके हो। शायद हर बच्चे ने इसे सुना है। इतनी सरल है। परमात्मा ने दुनिया बनाई—पुरूष, स्त्री, पशु, पेड़, पक्षी, पर्वत आदि सब कुछ। शायद वह साम्यवादी था। अब यह ठीक नहीं है, कम से कम परमात्मा को तो साम्यवादी नहीं होना चाहिए। अब अगर उसे कामरेड परमात्मा कहा जाए तो अच्छा तो नहीं लगेगा। यह सुनने में कैसा लगेगा, 'कामरेड परमात्मा, तुम कैसे हो?' यह अच्छा नहीं लगता। लेकिन कहानी कहती है कि उसने सबको बीस वर्ष की आयु दी। सबको एक जैसी आयु दे दी, जैसी उम्मीद की जानी चाहिए, पुरूष ने तुरंत खड़े हो कर कहां—'केवल बीस वर्ष? इतनी काफी नहीं है।'

इससे पुरूष के बारे में पता चलता है—उसके लिए कुछ भी काफी नहीं है, पर्याप्त नहीं है। स्त्री खड़ी नहीं हुई। इससे स्त्री के बारे में पता चलता है। वह छोटी-छोटी चीजों में भी संतुष्ट है। उसकी इच्छाएं बिलकुल मानवीय है। वह चाँद-तारों को पाने की कोशिश नहीं करती है। सच तो यह है कि जब पुरूष एवरेस्ट पर या चाँद पर या मंगल पर पहुंचने का प्रयास करता है तो वह उस पर खूब हंसती है। उसे पुरूष के से सब काम मूर्खतापूर्ण लगते है। यह सोचती है कि इन बातों में क्या रखा है। इस समय तो बैठ कर टेलीविजन देखना चाहिए। जहां तक मैं जानता हुं, टेलिविजन देखना...आशु नीचे देख रही है। शर्माओ मत। मैं औरतों के टेलीविजन देखने के खिलाफ नहीं हुं। मैं तो बस.. इस कहनी में स्त्री ने खड़े हो कर परमात्मा से नहीं कहा, 'क्या, केवल बीस बरस।' सच तो यह है कि जब पुरूष खड़ा हुआ तो जरूर स्त्री उसे खींच कर नीचे बिठाना चाहती होगी यह कह कर: 'बैठ जाओ। क्यों शिकायत कर रहे हो, हमेशा शिकायत करते रहते हो, बैठ जाओ। '

परंतु पुरूष अपनी बात पर अड़ा ही रहा। और कहा, 'सह बीस बरस की सीमा मुझे मंजूर नहीं है। मुझे इससे अधिक चाहिए।'

परमात्मा असमंजस में पड़ गया। साम्यवादी परमात्मा होने के कारण वह करता भी क्या? उसने तो सबको एक समान आयु दी थी। पर पशु इस साम्यवादी साथी से कहीं अधिक समझदार थे।

हाथी ने हंस कर कहा: 'चिंता मत करो। तुम मेरे जीवन से दस वर्ष ले सकते हो। क्योंकि बीस वर्ष का समय बहुत लंबा होता है। बीस साल की मैं क्या करूंगा, मेरे लिए तो दस वर्ष ही बहुत है।'

तो आदमी को हाथी के जीवन के दस वर्ष मिल गए। यह उसके बीस और तीस वर्ष के बीच का समय है। जब आदमी का व्यवहार हाथी जैसा होता है। यह समय है जब हिप्पी, यिप्पी और उनके जैसी जातियों का जन्म होता है। दुनिया में सभी जगह ऐसे लोगों को हाथी कहना चाहिए, इस उम्र में वे अपने आप को बहुत महान समझते है। फिर शेर ने उठ कर कहा: 'कृपया दस वर्ष मेरी आयु में से ले लीजिए। मेरे लिए तो दस वर्ष भी बहुत है।'

तीस और चालीस की उम्र के बीच आदमी शेर की तरह दहाड़ता है जैसे कि वह सिकंदर महान हो। जब सिकंदर ही असली शेर न था तो दूसरों का क्या कहना, तीस और चालीस के बीच हर आदमी शेर जैसा व्यवहार करता है। फिर बाघ ने उठ कर कहा: 'जब लोग इस बेचारे आदमी को कुछ न कुछ दे रहे है तो मैं भी अपनी आयु के दस वर्ष उसे देता हूं।'

चालीस और पचास वर्ष के बीच आदमी बाघ जैसा व्यवहार करता है। जो कि शेर की तुलना में बहुत कम हो जाता है—अधिक शालीन हो जाता है और एक बड़ी बिल्ली से ज्यादा नहीं होता, लेकिन शेखी बघारना और डींग हांकने की पुरानी आदत वैसी की वैसी बनी रहती है। फिर घोड़े ने उठ कर अपने दस वर्ष दे दिए। पचास और साठ वर्ष के बीच आदमी घोड़ की तरह सब प्रकार का बोझ ढोता है। उस समय वह एक साधारण घोड़ा नहीं, वरन असाधारण घोड़ा बन जाता है, जिस पर चिंताओं के पहाड़ लदे रहते हैं। और वह अपने दृढ़ निश्चय से किसी न किसी प्रकार अपने आपको घसीटते हुए चलता रहता है।

साठ साल की आयु में कुत्ते ने अपने दस वर्ष दे दिए। और इसीलिए कुत्ते की मोत कहावत प्रसिद्ध है। यह कहानी बहुत सुदंर नीति-कथा है। साठ और सत्तर वर्ष के बीच आदमी कुत्ते की तरह जीता है—वह सब चीजों पर भोंकता रहता है। वह भोंकने का बहाना खोजता रहता है।

यह कहानी सत्तर वर्ष तक ही बात करती है। उसके बाद की नहीं, क्योंकि यह उस समय कहीं गई थी जब आदमी सत्तर वर्ष से अधिक जीने की आशा नहीं करता था। सत्तर वर्ष परंपरागत आयु है। अगर आप रूढ़ि या परंपरा को मानने बाले व्यिक्त है ता कैलंडर देख कर सत्तर वर्ष में मर जाना चाहिए। उससे अधिक जाना तो थोड़ा आधुनिक हो जाएगा। अस्सी, नब्बे या सौ तक जीना तो अति आधुनिक हो जाएगा। वह तो क्रांतिकारी होगा, वह तो भटक जाना होगा। क्या तुम्हें मालूम है कि अमरीका में कुछ लाइलाज बीमारी वाले लोगों को टंकियों में बर्फ की तरह जमा कर जड़ कर दिया गया हे। आज उनकी बीमारी का कोई इलाज नहीं है। लेकिन शायद बीस वर्ष के बाद उसका इलाज खोजा लिया जाएगा। यद्यपि इस बीमारी के साथ वे कुछ वर्ष और जीवित रह सकते थे, फिर भी उन्होंने, अपने खर्च पर बर्फ में जमे हुए मृतप्राय है। लेकिन फिर भी अपना खर्च दे रहे है। आने वाले बीस वर्षो का खर्च उन्होंने पहले से ही दे दिया है। ताकि उनके शरी निरंतर बर्फ में जमे रहें। यह मामला है तो बहुत महंगा। केवल बहुत अमीर ही इतना खर्च कर सकते है। मेरे खयाल में बर्फ में जमे हुए शरीर की देखभाल का खर्च एक दिन में एक हजार डालर के लगभग है। उनको आशा है—या यूं कहिए कि उनको आशा थी—कि जब उनकी बीमारी का इलाज खोज लिया जाएगा तो उनको पिघला कर, वापस जीवित करके, उनका इलाज कर दिया जाएगा। वह इंतजार कर रहे है। यह बेचारे अमीर लोग। अमरीका में इस प्रकार के कम से कम कुछ सौ लोग प्रतीक्षा कर रहे है। इससे प्रतीक्षा या इंतजार का अर्थ ही बदल गया है। यह बिलकुल नये ढंग की प्रतीक्षा है—श्वास नहीं ले रहे, लेकिन प्रतीक्षा कर रहे है। यह वास्तव में 'वेटिंग फॉर गोडोट' है और खर्च भी दे रहे है। यह कहनी पुरानी है। इसलिए कहावत से सत्तर वर्ष। कुत्ते की मौत को सीधा-सादा अर्थ है कि उस आदमी की मोत जो कुते की तरह जिया। अगर तुम कुत्तों के प्रेमी हो तो बुरा मत मानना। इसका कुत्तों से कोई लेना देना नहीं है। कुत्ते बहुत अच्छे होते है। लेकिन कुत्ते की तरह जीने का अर्थ है केवल भौंकने के लिए जीना, हर वक्त भौंकने का मोका खोजते रहना और भौंकने का मजा लेना। कुत्ते की तरह जीने का अर्थ है कि मनुष्य की तरह नहीं जीना—मनुष्य से नीचे के स्तर पर जीना, मनुष्य से कम जीना। और जो कुत्ते की तरह जीएगा वह कुत्ते की मौत ही तो मरेगा। तुम्हें वह मौत मिलेगी जो तुमने अर्जित की है।

मैं इन शब्दों को दोहराना चाहता हूं—तुम्हें वह मौत नहीं मिल सकती जो तुमने अर्जित नहीं कि हो। जिसके लिए तुमने सारा जीवन मेहनत नहीं की है। मृत्यु या तो दंड है या पुरस्कार, सब कुछ तुम पर निर्भर करता है। अगर तुम उथले-उथले जीए हो तो तुम कुत्ते की मौत मरोगे। कुत्ते बहुत बौद्धिक, बहुत मस्तिष्क प्रधान होते है। अगर तुम ह्रदय से, अंतर्बोध से, प्रगाढ़ता से जीए हो, बुद्धि से नहीं, प्रतिभा से, अगर हर काम पूरे प्राणों से किया है, तो तुम परमात्मा की मौत मर सकते हो। डॉग्स डेथ, 'कुत्ते की मौत' मुहावरे के विपरीत मैंने एक नया मुहावरा बनाया है: गॉड्स डेथ, 'परमात्मा की मौत' अब अंग्रेजी भाषा में गॉड़ और डॉग शब्दों के उन्हीं

अक्षरों का प्रयोग किया जाता है। लेकिन उनके लिखे जाने के क्रम अलग होता है। डी ओ जी से 'डॉग' और अगर इनको उल्टा कर दिया जाए, जी ओ डी, तो 'गॉड' बन जाता हे। अस्तित्व का सार, तुम्हारा 'होना' तो वही है—चाहे तुम सिर के बल खड़े हो जाओ या पैर पर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। हां, एक तरह से फर्क पड़ता है। अगर तुम सिर के बल चलोगे तो तुम अपने आपको सातवें नर्क में देखोगे। लेकिन तुम कूद कर अपने पैरों पर खड़े हो सकते हो। कोई तुम्हें रोक नहीं रहा। कूदो, छलांग लगाओ, यही तो मेरी शिक्षा है—सिर के बल नहीं, अपने पैरों पर खड़े हो जाओ। स्वाभाविक बनो। तब तुम परमात्मा की तरह जीओगे। और परमात्मा परमात्मा की तरह ही मरता है। वह परमात्मा की तरह जीता है और परमात्मा की तरह ही मरता है। और परमात्मा से मेरा सीधा सा अर्थ है: ''जो अपना स्वामी।''

सत्र—18 सेक्स या मृत्यु से मनोग्रस्त

पूरब मृत्यु से मनोग्रस्त है और पश्चिम सेक्स से। पदार्थवादी को सेक्स से मनोग्रस्त होना ही चाहिए और आध्यात्मिक को मृत्यु से । और ये दोनों मनोग्रस्तताएं ही है। और किसी भी मनोग्रस्तता के साथ जीवन जीना—पूर्वीय या पश्चिमी—न जीने के समान है, यह पूरे मौके को चूकता है। पूरव और पश्चिम एक ही सिक्के के दो पहलु है। और इसी प्रकार मृत्यु और सेक्स है। सेक्स ऊर्जा है—जीवन का आरंभ; और मृत्यु जीवन का चरम बिंदु है, पराकाष्ठा है।

यह केवल संयोग नहीं है कि हजारों लोगों को कभी ऑर्गेज़म का कोई अनुभव नहीं होता। इसका सीधा सा कारण यह है जब तक तुम मृतयु जैसे अनुभव में से गुजरने के लिए तैयार नहीं होते तब तक तुम ऑर्गेज़म को नहीं जान सकते। और कोई मरना नहीं चाहता; सब जीना चाहते है। बार-बार जीवन को आरंभ करना चाहते है। पूरब में विज्ञान विकसित नहीं हो सका, क्योंकि जब लोग चक्र को रोकने की कोशिश कर रहे है तो विज्ञान का अध्ययन कोन करेगा, कौन सुनेगा? कौन इसकी चिंता करेगा, किस लिए, चक्र को रोकना है। अब यह तो कोई भी बेवकूफ इसके रास्ते में पत्थर रख कर सकता है। चाक को रोकने के लिए किसी टेक्नोलॉजी की जरूरत नहीं पड़ती, लेकिन उसे चलाने के लिए विज्ञान चाहिए।

विज्ञान में सतत यह प्रश्न उठाया जाता है। कि अस्तित्व की गति को मूल कारण क्या है? या अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि इसकी खोज की जाती है कि ऐसी कौन सी यांत्रिकी-व्यवस्था है जो बिना ईंधन के अपने आप सतत चलती रहती है जिसे किसी प्रकार की ऊर्जा की आवश्यकता नहीं होती। क्योंकि यह ऊर्जा देर-अबेर चुक जाती है। और तब चाक रूक जाएगा। विज्ञान ऐसी विधि की खोज में है जिसमे कि चक्र सदा चालू रहे और ऐसी गति की खोज में जो किसी ऊर्जा पर निर्भर न हो।

पूरब में तो विज्ञान की कभी शुरूआत ही न हो सकल, कार कभी शुरू ही न हुई। कार को चालू करने में किसी को कोई दिलचस्पी ही नहीं था। उन्हें उसे रोकने की बहुत चिंता थी। क्योंकि वह नीचे खिसक रही थी। पूरब में एक बिलकुल ही भिन्न प्रकार की घटना घटी जो कि पश्चिम में कभी भी नहीं घटी और वह है तंत्र। पूरब बिना किसी डर के बिना किसी झिझक के सेक्स ऊर्जा की गहनतम खोज कर सका। पूरब को सेक्स की बिलकुल चिंता नहीं थी। मैं नहीं सोचता कि जो कहानी मैंने तुम्हें सुनाई वह सच थी।

मुझे तो लगता है कि सिग्मंड़ फ्रायड अपने बाथरुम में दर्पण के सामने खड़े होकर अपने आप से बात कर रहा होगा। कोच पर लेटा हुआ बूढा आदमी कोई और नहीं स्वयं सिग्मंड़ फ्रायड है। अगर तुम उसकी पुस्तक पढ़ो तो जो मैं कह रहा हुं उस पर तुम्हें विश्वास हो जाएगा। फ्रायड के चिंतन का एकमात्र विषय था सेक्स। हर चीज को वह सेक्स में परिवर्तित कर देता। मनुष्य के समस्त इतिहास में वह सर्वाधिक सेक्स से मनोग्रस्ति व्यिक्त था। और इन क्षेत्रों में इसको पिता का पद मिल गया है। अजीब बात तो यह है सिग्मंड़ फ्रायड जैसा आदमी, जो सब प्रकार के डर और भय से ग्रसित था, इस शताब्दी का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गया। वह इस शताब्दी पर छा गया। वह बहुत भयभीत रहता था। यह स्वाभाविक है। अगर तुम किसी चीज से—सेक्स या मृत्यु से मनोग्रस्त हो—ये दो मुख्य वर्ग है..इस दुनिया में हजारों चीजें है, लेकिन उनको इन दोनों वर्गों में ही विभाजित किया जा सकता है। अगर तुम इन दोनों में से किसी एक से मनोग्रस्त हो तो तुम बिलकुल अज्ञानी हो, और तुम भयभीत रहोगे—प्रकाश से भयभीत, क्योंकि तुमने अपने अंधकार में सिद्धांतों और धर्मो की अपनी काल्पनिक दुनिया बना ली है। तुम्हें प्रकाश से डर लगेगा...लैंप लाने वाले आदमी से डर लगेगा...डायोजनीज जैसा आदमी जब सूर्य के प्रकाश में लैंप के साथ नग्न रूप से प्रवेश करेगा। कभी-कभी मैं सोचता हूं कि यह अच्छा होता, सिग्मंड़ फ्रायड

के लिए यह अच्छा होता अगर डायोजनीज अपनी जलती हुई लैंप के साथ उसके तथाकथित मनोविश्लेषण के आफिस में नग्न प्रवेश कर जाता। वह सदा नग्न ही रहता था। इन दोनों की भेंट भी मूल्यवान होती।

फ्रायड जैसे लोग प्रकाश से डरते है, इसीलिए तो डायोजनीज अपने साथ लैंप लेकर चलता था। जब भी कोई उससे पूछता कि दिन के समय वह अपने साथ लैंप क्यों रखता है, तो वह उत्तर देता कि मैं 'मनुष्य' को खोज रहा हूं, और वह अब तक मुझे नहीं मिला। मरने के एक क्षण पहले किसी ने उससे पूछा: 'डायोजनीज अपना शरीर छोड़ने से पहले कृपया हमें बताओ कि क्या तुमने मनुष्य को खोज लिया है?'

डायोजनीज ने हंस कर कहा: 'खेद है कि मैं उसे नहीं खोज सका, लेकिन बड़ी बात तो यह है कि वह लैंप अभी भी मेरे पास है और किसी ने उसे चुराया नहीं है।' सिग्मंड़ फ्रायड तो मनोग्रस्त था और वह पश्चिमी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता था। इसीलिए कार्ल गुस्ताख जुंग उसके साथ बहुत देर तक न रह सका। कारण स्पष्ट है। जुंग सेक्स से नहीं, मृत्यु से मनोग्रस्त था। उसको पश्चिम के नहीं, पूरब के गुरु की आवश्यकता थी। लेकिन उसे पश्चिम पर इतना गर्व था कि जब वह भारत आया और किसी ने उसे यह सुझाव दिया कि वह महर्षि रमण से मिल—महर्षि रमण उस समय जीवित थे—लेकिन जुंग नहीं गया। वहां जाने में हवाई जहाज से केवल एक घंटा लगता। वह दूसरी सब जगहों पर गया। वह भारत में एक महीने रहा। लेकिन उसके पास रमण महर्षि से मिलने का समय नहीं था। फिर कारण साफ है: रमण जैसे लोगों से मिलने के लिए हिम्मत चाहिए। वे एक दर्पण है। वे तुम्हें तुम्हारे असली चेहरा दिखा देंगे। वह तुम्हारे सब मुखौटे हटा देंगे। मुझे इस आदमी से, जुंग से बहुत धृणा है। भले ही मैं सिग्मंड़ फ्रायड की निंदा करू, लेकिन मैं उससे घृणा नहीं करता। यह शायद गलत था, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि वह बहुत प्रतिभाशाली था। सचमुच वह प्रतिभाशाली था। यद्यपि वह जो कर रहा था उसका मैं समर्थन नहीं कर सकता, क्योंकि मुझे मालूम है कि वह ठीक नहीं है। लेकिन फ्रायड की तुलना में जुंग तो उसके सामने बौना है। इसके अतिरिक्त वह जुदास था। उसने अपने गुरु को धोखा दिया, उसके प्रति विश्वासघात किया।

यह बात दूसरी है कि गुरु स्वयं गलत था। गलत या सही, फ्रायड ने अपना मुख्य शिष्य बनाने के लिए जुंग को चुना था और फिर भी वह जुदास बन गया। उसमें फ्रायड जैसी योग्यता नहीं थी। उनके अलग हो ने का वास्तविक कारण—और फ्रायड या जुंग के अनुयायियों में से किसी ने नहीं किया है, मैं पहली बार बता रहा हुं—यह था कि जुंग मृत्यु से मनोग्रस्त था और फ्रायड सेक्स से। वे देर तक एक साथ नहीं रह सकते थे। उन्हें अलग होना पडा। हजारों वर्षों से पूरब रूग्ण है इस विचार से कि जीवन से छुटकारा कैसे पाया जाए। हां, मैं इसे रोग कहता हूं। मुझे तथ्य जैसा दिखाई देता है। वैसा ही मैं उसे कह देता हूं। इस रूग्णता के कारण पूर्व की बहुत हानि हुई है। जन्म से ही यह विचार पकड़ लेता है कि जीवन से छुटकारा कैसे पाया जाए। मेरे खयाल में यह दुनिया की सबसे पुरानी मनोग्रस्तता है। सिग्मंड़ फ्रायड जैसी योग्यता वाले हजारों लोग इस विचार से ग्रसित थे और उन्होंने इसे परिपुष्ट किया है।

मुझे तो ऐसा एक भी आदमी याद नहीं आता जिसने इसका विरोध किया हो। यद्यपि दुसरी बातों पर वे असहमत थे, तथापि इस बात पर तो वे सब सहमत थे। मनु, महावीर, कणाद, गौतम, शंकर, नागराजन, इनकी सूची बहुत लंबी है और यह सब सिग्मंड़ फ्रायड, सी जी जुंग या एडलर और अन्य बहुत से नालायक, जिनको ये पीछे छोड़ गए है—से कहीं श्रेष्ठ है। लेकिन केवल प्रतिभाशाली, महान प्रतिभाशाली होने का यह अर्थ नहीं है कि तुम सही हो। कभी-कभी तो एक साधा-सादा किसान भी एक विद्धान से कहीं अधिक सही हो सकता है। एक माली एक प्रोफेसर से अधिक सही हो सकता है। जीवन सचमुच अद्‌भुत है। यह सदा सरलतम और प्रेमपूर्ण लोगों के पास जाता है। पूरब तो चूक गया है और पश्चिम भी चूक रहा है। दोनों अधूरे असंतुलित है।

मुझे इसके बारे में बात करनी पड़ी, क्योंकि मेरा बुनियादी योगदान यही है कि आदमी को सेक्स या मृत्यु की चिंता नहीं करनी चाहिए। उसको इन दोनों प्रकार की मनोग्रस्तताओं से मुक्त रहना चाहिए। और तभी वह जान पाता है....ओर अजीब बात ता यह है कि तब उसे मालूम होता है कि ये दोनों अलग नहीं है। गहन प्रेम का हर क्षण मृतयु का क्षण है। हर आॅर्गाज्म एक प्रकार का अंत है, ठहराव है। ऊँचाई तक पहुंचता है, तारों को छूता है और फिर दोबारा कभी वैसा नहीं होता—चाहे कुछ भी कर लो। सच तो यह है कि कोशिश करने से वह और दूर हो जाता है। लेकिन आदमी करीब-करीब चूहे की तरह जीता है, अपने बिल में छिपा रहता है। चाहे तुम इसे पूर्वीय, पश्चिमी, ईसाई या हिंदू कहो, सभी तरह के चूहों के लिए हजारों तरह के बिल उपलब्ध है। लेकिन बिल तो बिल ही है—चाहे कितना ही सुंदर क्यों न हो और भले ही उसे चर्च, मंदिर या मस्जिद की तरह सजाया गया हो। उसके भीतर रहने का अर्थ है धीरे-धारे आत्मघात करना। क्योंकि तुम्हें चूहा नहीं बनाया गया—मनुष्य बनो। पुरूष बनो, स्त्री बनो।

अभी तक तो सब कुछ अचेतन ढंग से होता रहा है, प्रकृति द्वारा। लेकिन अब प्रकृति इससे अधिक कुछ नहीं कर सकती। क्या तुम यह नहीं देख सकते हो? डार्विन कहता है कि बंदर से मनुष्य का जन्म हुआ है। शायद यह ठीक है। मैं ऐसा नहीं मानता, इसलिए मैंने कहा, शायद वह ठीक है। लेकिन फिर क्या हुआ, बंदर तो आदमी नहीं बन रहे। डार्विन के सिद्धांत के अनुसार कभी किसी प्रकार बंदर को अचानक आदमी नहीं बनते देखा गया है। किसी बंदर को चार्ल्स डार्विन में कोई दिलचस्पी नहीं है। उन्होंने तो उसकी नीरस पुस्तकों को भी नहीं पढ़ा। मेरा तो खयाल है कि बंदर डार्विन के इस विचार से नाराज है कि मनुष्य विकसित हुआ है। कोई बंदर यह नहीं मान सकता कि आदमी उससे अधिक विकसित है। मैं तो सब प्रकार के लोगों—जिनमें बंदर सम्मिलित हैं—के संपर्क में रहा हूं। मेरा विश्वास करो कि सब बंदर यह मानते है कि मनुष्य बंदर का पतन है। पेड़ पर से नीचे गिर गया है। इसको वे विकास नहीं मान सकते है। मैं जिस नये शब्द का प्रयोग करता हूं उससे तुम्हें सहमत होना पड़ेगा, वह है; अंतर-विकास। शायद डार्विन सही था। लेकिन फिर क्या हुआ, बंदरों को भूल जाओ। हमें उनसे कोई मतलब नहीं है।

आदमी को क्या हुआ, लाखों वर्ष बीत गए है और मनुष्य वैसा का वैसा ही है। क्या विकास रूक गया? इसका क्या कारण है। मैं नहीं सोचता कि कोई भी डार्विन इसका उत्तर दे सकता है। मुझे यह अच्छी तरह मालूम है। मैंने डार्विन और उसके अनुयायियों का जितनी गहराई से संभव हो सके उतनी गहराई से अध्ययन किया है। मैं कहता हूं, जितनी गहराई से संभव हो सके, क्योंकि कोई खास गहराई है ही नहीं। मैं क्या कर सकता हूं? लेकिन डार्विन के सिद्धांत को मानने वाला एक भी व्यक्ति बुनियादी प्रश्न का उतर नहीं देता: 'अगर विकास अस्तित्व का नियम है तो मनुष्य विकसित होकर अतिमानव या महा मानव क्यों नहीं बन गया। अच्छा महा मानव न सही, वह बहुत बड़ा शबद लगता है। लेकिन मनुष्य पहले से अच्छा क्यों नहीं हुआ।'

शताब्दियों से उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इतिहासकारों की जानकारी के अनुसार तो मनुष्य आज की तरह हमेशा बुरा और घृणित रहा है। अगर कोई परिवर्तन हुआ है तो यही कि वह और बुरा बन गया है। हां जो कह रहा हूं वह और कोई नहीं कहता, राजनीतिज्ञ यह नहीं कह सकते क्योंकि राजनीतिज्ञों को बंदरों के वोट चाहिए। तथाकथित फिलासफर भी नहीं कह सकते, क्योंकि उनको नोबल प्राइज़ प्राप्त करने की आशा है। और उस कमेटी में तो सब बंदर ही बंदर ही है। अगर कोई सच्ची बात कहे तो मेरी तरह वह भी मुसीबत में पड़ जाएगा। जब से मैंने होश सम्हाला है तब से मेरा एक भी दिन बिना मुसीबत के नहीं बीत। मेरे भीतर तो कोई मुसीबत नहीं है। वहां सब मुसीबतें समाप्त हो गई है। लेकिन बाहर का हर क्षण मुसीबत से

भरा है। अगर किसी का मेरे साथ कोई संबंध है तो वह भी मुसीबत में पड़ जाएगा। अभी उस दिन मुझे खबर मिली कि हमारे एक केंद्र पर लोगों ने हमला किया। खिड़कियाँ तोड़ दी और सब कुछ लूट कर ले गए। और उसके बाद एक केंद्र को आग लगा दी गई।

अब मेरे लोगों ने किसी का कुछ बिगाडा नहीं है। वे सिर्फ वहां मिलते थे, ध्यान करते थे। पुलिसमैन ने भी यही कहा कि यह अजीब बात है, हम इनको दो बरस से देख रहे है। ये लोग बिलकुल बेकसूर है। त तो ये किसी राजनीतिक पार्टी के है, ना ये किसी विशेष सिद्धांत का प्रचार करते है। यक अपने आनंद में मस्त रहते है। इनके मकान क्यों जला दिए गए, इसका कोई कारण समझ में नहीं आता। पुलिस शायद इसका कारण न जान पाएगी, क्योंकि कारण तो यहां है, डेंटल चेयर पर लेटा हुआ।

हम लोगों ने कभी किसी का कोई नुकसान नहीं किया। फिर भी हर रोज कोई न कोई मुसीबत खड़ी हो जाती है। मैंने किसी का कुछ नहीं बिगाडा, मेरे लोगों ने किसी का कोई नुकसान नहीं किया...पर शायद यही हमारा कसूर है। माफिया ठीक है; में नहीं, तुम नहीं। रहेगी अगर हम स्वस्थ, पुष्ट मनुष्य चाहते है तो हमे अपने दृष्टि को बदल कर नये ढंग से सोचना पड़ेगा। पहली बात जो मैं कहना चाहता हूं वह यह है कि जो कुछ भी पहले से मौजूद है, उसे स्वीकार करो। परमात्मा का शुक्र है कि तुमने सेक्स का सृजन नहीं किया। नहीं तो हर व्यिक्त उलग-उलग ढंग के यंत्र का उपयोग करता। और इसके कारण बहुत निराशा भी होती, क्योंकि वे यंत्र ठीक ने बैठते। जब बिलकुल एक जैसे होने पर भी वे 'फिट' नहीं होते, स्वर सामंजस्य के बावजूद भी वे संगीत पूर्ण नहीं होते, अगर सब लोग अपनी-अपनी कामवासना का सृजन करते बहुत गड़बड़ हो जाता। तुम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। यह तो अच्छा है कि तुम पहले से तैयार होकर ही आए हो, तुम पहले से ही अपनी संभावना को लेकर आए हो। और मृतयु भी तो स्वाभाविक चीज है। एक क्षण के लिए यह कल्पना करो कि तुम सदा जीवित रहोगे। तब तुम क्या करोगे, याद रखो कि तुम आत्महत्या नहीं कर सकोगे। मुझे सिकंदर की शाश्वत जीवन की खोज बहुत अच्छी लगती है।....अंत में उसे वह अरब के रेगिस्तान में मिला। वह अत्यंत आनंदित हुआ —चह तो खुशी से नाच उठा होगा। लेकिन उसी समय एक कौए ने कहा, 'ठहरो, पानी पीने से पहले थोड़ा रूक जाओ। यह साधारण पानी नहीं है। मैंने इसे पी लिया था और अफसोस कि अब में मर भी नहीं सकता। सब उपाय कर लिए मैंने , लेकिन कोई काम नहीं आया। जहर मुझे मार नहीं सकता। मैंने अपने सिर को चट्टान पर पटका। चट्टान तो टूट गई, लेकिन मुझे कुछ नहीं हुआ। इस पानी को पीने से पहले तुम अच्छा तरह से सोच लो। कहानी कहती है कि सिकंदर इस डर से वहा से भाग गया कि कहीं वह उस पानी को पी न ले।'

सिकंदर का गुरू था महान अरस्तू जो यूरोपीय फिलासफी और तर्क का पिता माना जाता है। सचमुच महान पिता, उसके बिना विज्ञान न होता और न होता हिरोशिमा या नागासाकी, बिना अरस्तू के पश्चिम के बारे में सोच भी नहीं जा सकता। अरस्तू सिकंदर का शिक्षक था। और मुझे शिक्षक सदा दयनीय लगते है।

अपने बचपन में मैंने एक पुस्तक देखी थी—मुझे याद नहीं है कि वह कौन सी थी, शायद सह सिनेमा था। उसमें दिखाया गया था कि अरस्तू सिकंदर को पढ़ा रहा है और उस बच्चे सिकंदर ने कहा, 'अभी मैं कुछ नहीं पढ़ना चाहता। मैं घोड़े पर सवार होना चाहता हूं। आप मेरा घोड़ा बन जाओ।' सो बेचारे अरस्तू को घोड़ा बनना पडा। वह हाथों और घुटनों के बल बैठ गया और सिकंदर उसकी पीठ पर सवार हो गया। और यही है वह आदमी जो पश्चिमी फिलासफी का पिता बना। कैसा पिता। सुक़रात को पश्चिमी फिलासफी की पिता कभी नहीं कहा जाता। सुक़रात प्लेटों का गुरु था और प्लेटों अरस्तू का गुरु था। लेकिन सुक़रात को जहर पिलाया गया, क्योंकि यह रुचिकर नहीं था। उसको पचाना आसान न था। पश्चिम उसके बारे में सब कुछ भूल जाना चाहता था। शायद वह उस समन्वय को प्रस्तुत करता जिसकी मैं बात करता हूं। अगर उसको जहर न दिया जात और

अगर उसकी बात को सुना जाता और उसकी सत्य की खोज को आधार बनाया जाता तो हम एक दूसरे ही तरह की दुनिया में जी रहे होते। प्लेटों को भी पिता नहीं माना गया, कयोंकि खतरनाक सुक़रात के साथ उसका नजदीकी संबंध था। सुक़रात के बारे में हम केवल वही जानते है जो प्लेटों ने उसके बारे में लिखा है। जिस प्रकार देव गीत नोट लिखता है। ठीक उसी प्रकार प्लेटों ने उसके बारे में लिखा, नोट करता रहा होगा। प्लेटों को स्वीकार नहीं किया गया, क्योंकि वह सुक़रात की छाया मात्र था। अरस्तू प्लेटों का शिष्य था, लेकिन जुदास था। वह आरंभ में उसका शिष्य था और उसने अपने गुरु से सब कुछ सीख लिया और बाद में स्वय गुरु बन गया। लेकिन कैसा बेचारा गुरु था। सम्राट ले उसे वेतन देकर अपने बेटे का शिक्षक नियुक्त किया था। वह जान कर कितना बुरा लगता है कि वह सिकंदर का घोड़ा बनने के लिए तैयार था। कौन किसे पढ़ा रहा है और वास्तविक गुरु कौन है?

मैं विश्वविद्यालय में शिक्षक था। मैं जानता हुं कि सिकंदर का अरस्तू पर सवार होना यह सिद्ध करता है कि वह पश्चिमी फिलासफी का पिता नहीं था। अगर वह पिता हे तो पश्चिम की सारी फिलासफी उस अनाथ बच्चे जैसी है जिसे ईसाई मिशनरियों ने गोद ले लिया—शायद कलकते की मदर टेरेसा ने। वह महान महीना कुछ भी कर सकती है। अरस्तू पर मुझे दया आती है। उसके लिए मुझे दूसरा कोई शब्द नहीं सूझता। उसके कारण मुझे लज्जित होना पड़ता है, क्योंकि मैं भी प्रोफेसर था। हर रोज अपनी क्लास के विद्यार्थियों से मैं सबसे पहले यही कहता था, 'याद रखो' यहां मैं गुरु हूं। अगर तुम मुझे नहीं सुनना चाहते तो तुरंत चले जाओ। अगर सुनना चाहते हो तो चुपचाप सुनो। मैं तुम्हारे सब प्रश्नों के उत्तर देने को तैयार हूं। लेकिन मैं किसी प्रकार की कोई आवाज बरदाश्त नहीं करूंगा—फुसफुसाहट भी नहीं। अगर तुम्हारी गर्ल-फ्रैंड यहां है तो तुम अभी बाहर चले जाओ, और मैं तुम्हें अपनी गर्ल-फ्रैंड के साथ जाने की अनुमति देता हूं। जब मैं बोल रहा हूं तो केवल मैं ही बोल रहा हूं। और तुम सुन रहे हो। अगर तुम कुछ कहना चाहते हो तो अपना हाथ उठा दो और उठाए रहो, क्योंकि इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम जब पूछना चाहो तभी मैं उत्तर दे दूँ। मैं यहां पर तुम्हारा नौकर नहीं हूं। मैं अरस्तू नहीं हूं। सिकंदर भी मुझे घोड़ा नहीं बना सकता।' हर रोज बस यही मेरा परिचय होता। और मुझे खुशी है कि वे समझ जाते उन्हें समझना ही पड़ता था। इसीलिए कभी-कभी मैं तुमसे देव गीत कठोर हो जाता हूं कि तुम्हें बटन दबाने पड़ते हैं और उससे आवाज तो होगी ही, तुम क्या कर सकते हो, मुझे यह अच्छी तरह से मालूम है। यह सिर्फ मेरी पुरानी आदत है। मैं जब भी बोला गहन मौन में बोला। तुम तो जानते हो। वर्षों से तुम सुन रहे हो। तुम बुद्धा-हॉल के मौन से परिचित हो। केवल उस मौन में....तुम्हारा अंग्रेजी का यह मुहावरा बहुत अर्थपूर्ण है कि मौन इतना गहन है कि जमीन पर सूई के गिरने की आवाज भी तुम सुन सकते हो। इस लिए मैं जानता हूं लेकिन मुझे मौन की आदत है।

उस दिन जब मैं कमरे से बाहर जा रहा था तो तुम खुश नहीं दिखाई दे रहे थे। उसके बाद मुझे बहुत बुरा लगा, बहुत पीडा हुई मुझे। मैं तो कभी भी किसी तरह तुम्हारा दिल दुखाना नहीं चाहता था। यह तो सिर्फ मेरी पुरानी आदत है और अब तूम नई बातें मुझे नहीं सिखा सकते। सीखने की सीमा के मैं पार चला गया हूं।

सत्र—19 पिता के घर में

नाना की मृत्यु के बाद मुझे फिर नानी से दूर रहना पडा, लेकिन मैं जल्दी ही अपने पिता के गांव वापस आ गया। मैं वापस आना तो नहीं चाहता था, लेकिन वह इस के ओ. के. की तरह था जो कि मैंने शुरूआत में कहा, नहीं के मैं ओ. के. कहना चाहता था। लेकिन में दूसरों की चिंता की उपेक्षा नहीं कर सकता। मेरे माता-पिता मुझे अपने मृत नाना के घर भेजने को तैयार नहीं थे। मेरी नानी भी मेरे साथ जाने को तैयार नहीं थी। और मैं सिर्फ सात साल का बच्चा था, मुझे इसमें कोई भविष्य नहीं दिखाई दे रहा था। बार-बार मैं कल्पना में अपने आप को उस पुराने घर को वापस जाते देखता, बैलगाड़ी में अकेले....भूरा बैलों से बात करते हुए। कम से कम उसको तो संग-साथ मिल जाता। मैं बैलगाड़ी के भीतर अकेले बैठे हुए भविष्य के बारे में सोच रहा होता। वहां मैं करूंगा भी क्या? हां, मेरे घोड़े वहां पर है। लेकिन उनको खिलाएगा कौन? और मुझे भी कौन खिलाएगा? मैं तो एक कप चाय भी नहीं बना सकता। एक दिन गुड़िया छुट्टी पर चली गई। चेतना उसका काम कर रही थी। मेरी देखभाल कर रही थी। सुबह जब मैं उठता हूं तो अपनी चाय के लिए बटन दबाता हूं। चेतना ने चाय का कप लाकर मेरे बिस्तरे के पास रख दिया और फिर मेरे तौलिए और टूथ-ब्रश आदि को तैयार रखने के लिए वह बाथरूम में चली गई। क्या तुम्हें मालूम है, इस बीच दस बरस में पहली बार आदमी को छोटे-मोटे काम भी सीखने पड़ते है—मैंने कप को जमीन से उठाने की कोशिश की, और वह गिर गया।

चेतना दौड़ी हुई आई और थोड़ा डर गई। मैंने कहा, ‘फ़िकर मत करो। मेरी जिम्मेवारी थी। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। मुझे कप को जमीन से उठाने की कभी जरूरत ही नहीं हुई। दस साल से गुड़िया मुझे बिगाड़ रही है। अब एक दिन में तुम मुझे सुधार तो नहीं सकती।’

कई बरस तक मुझे बिगड़ा गया था, हां मैं इसको बिगाड़ना ही कहूंगा, क्योंकि उनहोंने मुझे कभी कुछ करने ही नहीं दिया। मेरी नानी तो गुड़िया से भी बढ़ कर थी। वे मेरे दाँत भी साफ करती थीं। मैं उनसे कहता, नानी मैं अपने दाँत खुद बुश कर सकता हूं। वे कहती, ‘चुप रहो राजा, जब मैं कोई काम कर रही होती हूं तो तुम बीच में मत बोला करो।’

मैं अपना सिर हिला कर कहता, यह भी कोई बात है, ‘आप मुझ पर कुछ कर रही है। और मैं आपसे यह भी नहीं कह सकता, कि मैं अपना काम खुद कर सकता हूं।‘

सिवाय स्वयं होने के, सिर्फ अपने ढंग से जीने के अलावा मैं एक भी चीज याद नहीं कर सकता जो मुझे करने की जरूरत पड़ी है। और उसका अर्थ सारी शैतानी यों की जड़ था। क्योंकि बच्चे के पास बहुत ऊर्जा होती है। जब उससे कुछ नहीं कराया जाता तो अपनी इस ऊर्जा को यह कहीं तो खर्च करेगा ही। गलत या सही का सवाल नहीं उठता। खर्च करने का सवाल होता है। और शैतानी सबसे अच्छा उपाय है। इसलिए मैंने अपने आस-पास के लोगो के साथ सब तरह की शैतानियां कीं। मैं ड़ाक्टरों के सूटकेस की तरह एक छोटा सा सूटकेस अपने पास रखता था। मैंने एक बार एक डाक्टर को अपने गांव से गुजरते देखा था। और मैंने अपनी नानी से कहा: ‘जब तक मुझे वह सूटकेस नहीं मिलेगा, मैं खाना नहीं खाऊंगा। न जाने कहां से मैने न खाने की बात सीखी। मैंने अपने नाना को चौमासे में, विशेषत: जैनियों के त्योहार के समय उपवास करते देखा था। रूढ़िवादी लोग दस दिन तक नहीं खाते। इसीलिए मैंने कहा: जब तक वह सूटकेस नहीं मिलेगा तब तक मैं खाना नहीं खाऊंगा।’

मालूम है नानी ने क्या किया? इसीलिए तो अब तक मैं उनसे बहुत प्रेम करता हूं। उन्होंने भूरा से कहा: ‘अपनी बंदूक लेकर डाक्टर के पीछे दौड़ों और उसका बैग छीन लो। अगर इस बैग को लेने के लिए उसे गोली भी मारनी पड़े तो मार दो, तुम कोई चिंता मर करना अदालत में हम तुम्हे बचा लेंगे।’

भूरा अपनी बंदूक लेकर भागा। मैं उसके पीछे यह देखने के लिए भागा कि क्या होता है। भूरा को बंदूक के साथ देख कर उस डाक्टर ने समझा कि कोई अंग्रेज आ रहा है। उन दिनों बंदूक लिए हुए अंग्रेज को देख कर लोग डर जाते थे। सो वह डाक्टर भी मारे डर के हवा में पत्ते की तरह कांपने लगा। भूरा ने उससे कहा: कांपने की जरूरत नहीं है। अपना बैग दे दो और जहां जाना चाहो चले जाओ। 'डाक्टर ने कांपते हुए वह बैग भूरा को दे दिया।'

मुझे मालूम नहीं देवराज कि तुम डाक्टर के इस बैग को क्या कहते हो। क्या इसको सूटकेस कहा जाता है या कुछ ओर? देव गीत तुम इसको क्या कहते हो?

शायद इसे विजिटिंग बैग कहते है।

विजिटिंग बैग? यह बैग जैसा नहीं तो नहीं दिखाई देता। देवराज, क्या तुम कोई नाम बता सकते हो? इससे अच्छा और कोई शब्द नहीं है?

'मुल बैग तो गलैडस्टोन बैग कहलाता था। वह काला बैग होत था।'

वह क्या है? गलैडस्टोन बैग, हां उसी के बारे में मैं सोच रहा था। लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा था। लेकिन इस बैग के लिए यह नाम मुझे पसंद नहीं है। मैं तो इसको डाक्टर का सूटकेस ही कहूंगा। हालांकि मुझे यह नाम पसंद नहीं है। खेर कोई बात नहीं, अब तक सब समझ गए है कि मेरा मतलब क्या है। उस डाक्टर को कांपते हुए देख कर पहली बार मेरी समझ में आया कि सारी शिक्षा निरर्थक है। अगर यह तुम्हें निर्भय नहीं बना सकती तो इसका क्या फायदा है? दाल-रोटी कमाने के लिए तुम कांपने लगोंगे। तब तो तुम कांपते हुए दाल-रोटी से भरे बोरे बन गए। वह तो अचानक मुझे डाक्टर ईचलिंग की याद दिलाता है। मैंने सुना है—गॉसिप, गप्प हे और मुझे तो गौसपल्स से अधिक गॉसिल्स, गप्पें प्रिय है। गॉसपल्स भी तो गप्पें ही है। गॉस्पल को नमक-मिर्च लगा कर सही ढंग से नहीं कहा गया। मैंने सुना है, इसी प्रकार बुद्ध की गॉस्पल आरंभ होती है, मेरा मतलब है कि बुद्ध कि गप्पें शुरू होती है। मैंने सुना है....कितना अच्छा मुहावरा है... मैंने सुना है कि डाक्टर ईचलिंग की प्रेमिका...मैं तो उसे ईकलिंग ही कहना चाहता हूं—लेकिन मैंने सुना है कि उसका नाम ईकलिंग नहीं है बलकि ईचलिंग है।

मैं इस आदमी को जानता नहीं हूं। मैंने समझा कि वह मर गया है, क्योंकि मैंने उसे संन्यास देकर शून्यो नाम दिया। मुझे मालूम नहीं कि शून्यो को क्या हुआ और डाक्टर ईचलिंग कैसे पुन जीवित हो गया। लेकिन अगर जीसस हो सकते है तो ईचलिंग क्यों नहीं? खेर, वह अभी भी वहां है। या तो वह बच गया या पुन जीवित हुआ, इससे कोई फर्क नहीं? गप्प यह है कि उसकी प्रेमिका किसी दूसरे संन्यासी के साथ भाग गई और वह इस नये आदमी से प्रेम करने लगी। जब वे वापस आए तो डाक्टर ईचलिंग को लव-अटेक हुआ। मुझे यह जान कर बड़ी हैरानी हुई कि यह कैसे हुआ? क्योंकि लव-अटेक के लिए पहले ह्रदय का होना जरूरी है। हार्ट-अटैक लव अटेक नहीं है। हार्ट-अटैक तो शारीरिक है और लव-अटेक मनोवैज्ञानिक है—ह्रदय के गहरे हिस्से से। लेकिन पहले तुम्हारे पास ह्रदय तो होना चाहिए।

अगर तुम बी. एफ. स्कैनर के या पावलफ के अनुयायी हो.....पावलफ जो स्किनर का दादा या शायद परदादा था और जो फ्रायड का समकालीन और उसका सबसे बड़ा विरोधी भी था....तब मन उपयुक्त शब्द नहीं है। जब आप मस्तिष्क कह सकते है। लेकिन मस्तिष्क मन का शरीर है, एक यंत्र जिसका माध्यम से मन काम करता है। इसको चाहे मन कहो चाहे मस्तिष्क कहो, कोई फर्क नहीं पड़ता है। महत्वपूर्ण बात यही है कि सब को केंद्र वहीं पर है। डाक्टर ईचलिंग...मैं उसको शून्यो नहीं कह सकता, क्योंकि मद्रास में उसके आफिस के बाहर जो बोर्ड लगा हुआ है उस पार लिखा है: डा. ईचलिंग का आफिस। अगर उसे फोन किया जाए तो उसका

सहायक कहता है, डा. ईचलिंग अभी मिल नहीं सकते, मीटिंग में है। मैं तो शून्यो तभी कहूँगा जब बोर्ड भी गायब हो जाएगा। लेकिन यह कहानी या गप्प तुम लोगों को यह बताने के लिए सुनाई कि पहले सब कुछ मन में रहता है, उसके बाद शरीर में आता है। शरीर मन का विस्तार है, पदार्थ के रूप में। मस्तिष्क इस विस्तार का आरंभ है और शरीर उसका पूर्ण प्रकटीकरण है। लेकिन बीज तो मन में ही होता है। मन में सिर्फ इस शरीर का ही बीज रहता है, इसमें कछ भी बनने की संभावना होती है—इसकी संभावना असीम है। मनुष्यता का सारा अतीत इसमें समाया हुआ है—और सिर्फ मनुष्यता का अतीत ही नहीं वरन पूर्व-मनुष्यता का भी। बच्चा जब मां के गर्भ में नौ महीने रहता है तो वह एक प्रकार से तीस लाख साल के विकास के क्रम को पार करता है—इतनी तेजी से वह पार करता है कि जैसे किसी फिल्म को तेजी से चलाया जाए तो ठीक से कुछ भी दिखाई नहीं देता, सिर्फ कुछ झलकियाँ दिखाई देती है। नौ महीने में बच्चा निश्चित रूप से जीन के आरंभ ओर उसके बाद के समस्त क्रम से गुजरता है। आरंभ में—बाइबिल से उद्धत नहीं कर रहा, मैं तो हर बच्चे के जीवन के तथ्यों को बता रहा हूं —आरंभ में हर बच्चा मछली होता है, ठीक वैसे ही जैसे समस्त जीवन समुद्र में आरंभ हुआ था। अभी भी मनुष्य के शरीर में उतनी ही नमक है जितना समुद्र के पानी में होता है। मनुष्य का मन इस नाटक को बार-बार खेलता है: जन्म का नाटक, मछली से अंतिम श्वास के लिए तड़पते हुए बूढे आदमी तक।

मैं गांव वापस जाना चाहता था, लेकिन जो खोया जा चुका था उसे वापस पाना असंभव था। उसी समय से मैं यह समझ गया कि कहीं भी दुबारा वापस न जाना ही अच्छा है। उसके बाद मैं कई जगहों पर गया, लेकिन दुबारा कहीं नहीं गया। एक बार जब किसी स्थान को छोड़ देता हुं तो सदा के लिए छोड़ देता हूं। बचपन की इस घटना से मेरे जीवन का एक विशेष ढांचा तैयार हो गया। मैं जाना चाहता था, लेकिन जाने के लिए कोई सहारा ही नहीं मिल रहा था। मेरी नानी ने साफ कह दिया, 'मैं उस गांव वापस नहीं जा सकती। जब मेरे पति ही वहां नहीं है तो मैं वहां जाकर क्या करूंगी'? मैं उस गांव वापस नहीं जा सकती। जब मेरे पति ही वहां नहीं है तो,.. मैं उनके कारण वहां था, गांव के कारण नहीं। अगर मुझे कहीं जाना भी होगा तो मैं खजुराहो जाऊंगी।

लेकिन वह संभव नहीं था, क्योंकि उनके माता पिता मर चुके थे। बाद में मैंने उस घर को भी देखा जहां वे पैदा हुई थी। वह खंडहर हो चूका था। वापस वहां जाने की कोई संभावना नहीं थी। केवल भूरा ही ऐसा आदमी था जो वापस जाने के लिए तैयार हो सकता था। लेकिन वह तो अपने मालिक की मृत्यु के चौबीस घंटे बाद ही मर गया था।

इतने कम समय में इन दोनों की मृत्यु के लिए कोई तैयार नहीं था। विशेषकर मैं जिसे ये दोनों बहुत ही प्रिय थे। भले ही भूरा सिर्फ मेरे नाना का आज्ञाकारी नौकर था, लेकिन मेरे लिए वह दोस्त था। हम दोनों प्राय: एक साथ रहते—खेतों में, जंगल में, झील पर—सब जगह। भूरा तो मेरे साथ मेरी छाया की तरह बना रहता, कभी किसी बात में दखल न देता और मदद करने के लिए सदा तैयार रहता—और इतने बड़े दिल के साथ। इतना गरीब होते हुए भी इतना अमीर था। उसने कभी मुझे अपने घर आमंत्रित नहीं किया। एक बार मैंने उससे पूछा: 'भूरा तुम मुझे अपने घर क्यों नहीं बुलाते?'

उसने कहा: 'मैं इतना गरीब हूं कि चाहते हुए भी मैं तुम्हें अपने घर बुला नहीं सकता। मेरी गरीबी आड़े आती है। मैं अपना वह भद्दा और गंदा घर तुम्हें नहीं दिखाना चाहता। इस जीवन में तो मैं अपने घर कभी आंमत्रित नहीं कर सकूंगा। इसलिए अब मैं इसके बारे में सोचता भी नहीं।'

वह बहुत गरीब था। उस गांव में दो भाग थे, एक ऊंची जातियों के लिए, और एक दूसरा गरीबों के लिए, जो झील के उस पार था। वहीं भूरा भी रहता था। हालांकि मैंने कई बार उसके घर जाने की कोशिश की, परंतु मैं सफल नहीं हो सका, क्योंकि भूरा छाया की तरह हमेशा मेरे साथ ही रहता था। उस दिशा की और कदम

बढ़ाने से पहले ही वह मुझे रोक देता था। मेरा घोड़ा भी उसी का कहना मानता था। मैं जब उसके घर की और जाने की कोशिश करता तो भूरा कहता, 'नहीं मत जाओ।' घोड़ा उसकी बात समझता था, क्योंकि उसने उसको बड़ा किया था। उसके आदेश को वह मानता और रूक जाता। घोड़ा भूरा के घर की और तो क्या, उस गांव की गरीब बस्ती की और भी न मुड़ता। मैंने तो दूसरी और से ही उसे देखा था। उस और से जहां पर ऊंची जाति में जिनमें, समृद्ध और धनी ब्राह्मण और जैन आदि अन्य लोग रहते थे। भूरा तो बेचारा शूद्र था। शूद्र का अर्थ है: जो जन्म से ही अशुद्ध है, उसे किसी प्रकार से भी शुद्ध नहीं किया जा सकता। यह मनु की कृपा है। इसीलिए तो मुझे उससे इतनी धृणा है और उसकी निंदा करता हूं। और मैं चाहता हूं कि इस मनु नामक व्यिक्त के बारे में सारी दुनिया को पता लगे; क्योंकि जब तक हम ऐसे लोगों के बारे में नहीं जानेंगे तब तक हम उनसे मुक्त नहीं हो सकेंगे। वे किसी न किसी रूप मैं प्रभावित करते रहेगें। यहां तक कि अमेरिका में भी, अगर तुम नीग्रो हो, तो तुम शूद्र हो, एक निगर हो, अछूत हो। चाहे कोई नीग्रो हो चाहे सफेद चमड़ी वाला, दोनों को मनु की विक्षिप्त फिलासफी से परिचित होना चाहिए। मनु ने अति सूक्ष्म ढंग से दोनों महा युद्धों को प्रभावित किया है। और शायद तीसरे और अंतिम महायुद्ध का भी कारण वही होगा—सचमुच वह बहुत प्रभावशाली आदमी है। डेल कार नेगी की पुस्तक 'हाउ टू विन फ्रेंडस एण्ड इनफलुएंस पीपुल' के लिखे जाने के पहले मनु को इन बातों की जानकारी थी। हमें यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि डेल कारनेगी के कितने मित्र थे और उसने कितने लोगों को प्रभावित किया। निश्चित रूप से वह कार्ल मार्क्स, सिग्मंड़ फ्रायड और महात्मा गांधी जैसा नहीं था। और ये सब लोग दूसरों को प्रभावित करने के विज्ञान से बिलकुल अंजान थे। उन्हें जानने की जरूरत भी नहीं था, क्योंकि यह तो उनकी स्वाभाविक विशेषता था। मेरे खयाल में तो मनुष्यता को मनु ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। आज भी वह—चाहे तुम्हें उसके नाम की जानकारी हो या न हो—तुम्हें प्रभावित करता है। गोरी चमड़ी या काली चमड़ी होने के कारण, अथवा पुरूष या स्त्री होने के कारण अगर तुम अपने आप को श्रेष्ठ मानते हो तो इसका अर्थ है कि किसी ने किसी प्रकार मनु तुम्हें प्रभावित कर रहा है। मनु का बिलकुल त्याग देना चाहिए। मैं तो कुछ ही कहना चाहता था, लेकिन गलत कदम के साथ मैंने आरंभ कर दिया। मेरी नानी हमेशा यही कहती थी। कि बिस्तर से बाहर निकलते समय पहले अपना दायां पैर नीचे रखो। और तुम्हें यह जान कर हैरानी होगी कि आज मैंने उनकी यह सलाह नहीं मानी और सब कुछ गलत हो रहा है। मैंने गलत ओ. के. कह दिया है और जब आरंभ में ही तुम ओ. के. नहीं हो तो बाद में सब कुछ गड़बड़ हो जाएगा। मैं गांव जाना चाहता था, लेकिन दूसरा कोई भी जाने को तैयार नहीं था। और बिना अपने नाना-नानी और भूरा के मैं अकेला कैसे रह सकत था ? नहीं, यह संभव नहीं था। इसलिए बेमन से मैने कह दिया, अच्छा मैं पिता के गांव में ही रहूंगा। स्वभावत: मेरी मां चाहती थी कि मैं नानी के साथ नहीं बल्कि उसके साथ रहूँ। नानी ने तो पहले से ही यह साफ कर दिया था कि वे उस गांव में रहेंगी लेकिन अलग रहेंगी। नदी के पास एक बड़े सुंदर स्थान में एक छोटा सा मकान उनके लिए खोज लिया गया। मेरी मां ने आग्रह किया कि मैं उनके साथ ही रहूँ, क्योंकि सात साल से मैं अपने परिवार के साथ नहीं रहा था। मेरा परिवार कोई छोटा-मोटी बात नहीं थी। वह तो बहुत बड़ा था—कई प्रकार के बहुत से लोग थे: मेरे चाचा, चाचियां, उनके बच्चे और मेरे चाचाओं के रिश्तेदार आदि, आदि। भारत में परिवार पश्चिम जैसे नहीं होते। पश्चिम में तो केवल एक इकाई होती है—पति, पत्नी और एक दो या तीन बच्चे —अधिक से अधिक परिवार में पाँच सदस्य होते है। भारत में तो लोग पाँच की संख्या सुन कर हंसेगे। भारत में परिवार में सैकड़ों सदस्य होत है। मेहमान जब आते है तो जाने का नाम ही नहीं लेते। और कोई उनसे यह नहीं कहता कि अब आपने जाने का समय हो गया है। क्योंकि सच तो यह हे कि किसी को मालूम ही नहीं कि कौन किसका मेहमान है। पिता सोचता है कि शायद ये मेरी पत्नी के रिश्तेदार है। इसलिए चुप रहना ही ठीक है। मां

सोचती है कि शायद ये मेरे पति के सगे-संबंधी है। भारत में तो तुम ऐसे घर में प्रवेश कर सकते हो जहां तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं है। और अगर तुम अपना मुहँ बंद रख सको तो तूम वहां पर वर्षों ते रह सकते हो। कोई भी तुम्हें चले जाने के लिए नहीं कहेगा। क्योंकि हर सदस्य यहीं सोचगा कि किसी दूसरे ने तुम्हें आमंत्रित किया है। तुम्हें सिर्फ चुप रहना होगा और मुसकुराते रहना होगा।

मेरे पिताजी का परिवार भी बहुत बड़ा था। मैंने अपने दादा को कभी पंसद नहीं किया। वे मेरे नाना से बिलकुल उलटे थे—बहुत बेचैन, अशांत और झगड़ालु, किसी से भी झगड़ा करने के लिए हर समय तैयार रहते थे। झगड़ा तो उनके लिए आवश्यक कसरत के समान था। उनका झगड़ा निरंतर चलता रहता था। शायद ही कभी झगड़ा किए बिना रहते। लेकिन अजीब बात तो यह है कि कुछ लोग ऐसे भी थे जो उनको प्रेम करते थे। मेरे पिता जी की छोटी सी कपड़े की दुकान थी। मैं कभी-कभी वहां बैठ कर देखता कि लोग क्या करते है। उनके व्यवहार को देखने में मुझे बड़ा मजा आता। सबसे दिलचस्प बात तो यह थी कि कुछ लोग आकर मेरे पिताजी से पूछते 'बाबा कहा है? हमें अनेक साथ धंधा करना है। ' यह सुन कर मुझे बडी हैरानी होती, क्योंकि मेरे पिता बहुत ही सीधे-साधे सरल और ईमानदार थे। वे जब किसी को कोई कपड़ा दिखाते तो उसी समय कह देते, 'यह आप निर्भर है कि आप कितना मुनाफा देना चाहते है। यह मैं आप पर ही छोड़ देता हूं। लागत कि कीमत तो कम कर नहीं सकता। अब यह आप ही तय कर लें कि आप उसको किस कीमत पर खरी देंगे।' वे ग्राहक से कहते, 'मेरी लागत की कीमत बीस रूपये है। आप एक दो रूपये अधिक दे सकते है। दो रूपये का मतलब है दस प्रतिशत लाभ, और मेरे लिए वह काफी है। लेकिन विचित्र बात तो यह थी कि लोग आते ही पूछते, बाबा कहा है? उनके बिना धंधा करने का मजा ही नहीं आता।'

पहले तो मुझे उनकी बात पर विश्वास ही नहीं होता था। लेकिन बाद में इसका कारण मेरी समझ में आया, कारण था: मोल-भाव करने का रस। एक-एक पैसे के लिए घंटो खींचातानी करना। बहस करना। ग्राहक को इसी में मजा आता था। अगर कपड़ा बीस रूपये का होता तो मेरे बाबा उसकी कीमत पचास रूपये से शुरू करते। फिर घंटों चलता मोल भाव का चक्कर जिसमें दोनों पक्षों को बहुत मजा आता। तब अंत में दोनों पक्ष तीस रूपये पर सहमत हो जाते। यह सब देख कर मैं हंसता और ग्राहम चला जाता तो बाबा मुझसे कहते, 'ऐसे वक्त पर तुम्हें हंसना नहीं चाहिए। तुम्हें तो ऐसा गंभीर चेहरा बनाना चाहिए जेसे कि हमारा बहुत नुकसान हो रहा है। हालांकि हमारा नुकसान नहीं होता। वे मुझसे कहते थे कि चाहे चाकू खरबूजा पर गिरे, चाहे खरबूजा चाकू पर गिरे—बात तो एक ही है। कटना तो खरबूजा को ही है। चाकू को तो कुछ नहीं होता। इसलिए तुम्हें यह देख कर हंसना नहीं चाहिए कि जिस चीज को तुम्हारा पिता बीस रूपये में तीस रूपये में बेच देता हूं। तुम्हारा पिता तो बेवकूफ है।

हां, मेरे पिता सीधे-सादे थे और मेरे दादा बहुत चालाक और चतुर थे। जब उनके बारे में सोचता हूं, तो मुझे सियार की याद आती है। कभी वे सियार ही रहे होगें। इसलिए वे सियार ही थे। वे अपने सब काम बहुत हिसाब-किताब लगा कर करते थे। वे शतरंज के अच्छे खिलाड़ी हो सकते थे। क्योंकि वे पाँच कदम आगे की सोच कर चलते थे। सचमुच वे बहुत काइयां आदमी थे। मैंने बहुत से चालाक आदमी देखे है। लेकिन बाबा जैसा शायद ही और कोई हो। मुझे यह सोच कर बड़ी हैरानी होती कि न जाने कैसे मेरे पिता इतने सीधे और सरल थे, इतना भोलापन उन्हें कहां से मिला? शायद प्रकृति का यही नियम है कि यह सदा संतुलन बनाए रखती है। इसी लिए बाबा जैसे चालाक आदमी को उसने पिताजी जैसे भोलाभाला बेटा दिया।

चालाकी में बाबा बहुत चतुर थे। सारा गांव उनसे डरता था। किसी को यह मालूम नहीं होता कि वे कब क्या करने बाले है। सच में वे ऐसे आदमी थे—और यह तो मैंने कई बार देखा कि अगर मैं और बाबा नदी की

और जा रहे होते और रास्ते में कोई पूछ लेता, बाबा कहां जा रहे हो? सारा गांव उन्हें बाबा कह कर पुकारता था। हम नदी जा रहे होते और मजा तो यह कि सब लोग जानते कि हम कहां जो रहे है। लेकिन वह आदमी अपनी आदत के अनुसार कहता, कि ''हम स्टेशन जा रहे है'' मैं अचरज से उनकी और देखता और वे मुझे देखते और आँख मार देते। मुझे बड़ी हैरानी हो कि ऐसा तो महत्वपूर्ण काम नहीं हो रहा कि जिसे गुप्त रखने के लिए बाबा झूठ बोल रहे है। पूछने बाले आदमी के चले जाने के बाद जब मैं उनसे पूछता, 'बाबा तुमने आँख क्यों मारी और बिना किसी कारण के उस आदमी से आपने झूठ क्यों बोला? यह भी तो कह सकते थे कि हम नदी जा रहे है। उस आदमी को और सब लोगों को मालूम है कि यह सड़क स्टेशन नहीं नदी की और जाती है। आपको भी यह मालूम है और फिर भी कहते हो स्टेशन।' तो वे कहते, 'तुम अभी नहीं समझ सकते। लगातार अभ्यास करना पड़ता है।'

मैंने पूछा: 'किसका अभ्यास?'

उनहोंने उत्तर दिया: 'अपने व्यापार का लगातार अभ्यास करना पड़ता है। यह सीधा सा सच मैं नहीं बता सकता। क्योंकि फिर एक दिन धंधा करते समय अनजाने ही मैं सही कीमत बता दूँगा। और तुमको इससे क्या मतलब? इसीलिए तो मैंने तुम्हें आँख मारी कि तुम चुप रहो। यह सड़क स्टेशन की और जाती है या नहीं जाती, इससे मुझे कोई मतलब नहीं, हम तो स्टेशन ही जा रहें है। अगर वह आदमी कहता कि यह सड़क स्टेशन नहीं जाती, तो मैं उससे कहता कि हम नदी की और से स्टेशन जा रहे हे। अरे, यह तो मेरी मर्जी है कि मैं कहां से कहां जाने चाहता हूं।' थोड़ा ज्यादा समय लगेगा, और क्या। ऐसे थे मेरे दादा। वे अपने सभी बच्चों के साथ वहां रहते थे—मेरे पिताजी, उनके भाई और बहनें, और उनके पति। वहां इकट्ठे हुए सब लोगों को जानना मुश्किल था। मैं लोगों को आते तो देखता, लेकिन जाते कभी नहीं देखता। हम बहुत अमीर नहीं थे, लेकिन सबके खाने के लिए पर्याप्त था। मैं इस परिवार में नहीं रहना चाहता था और मैंने अपनी मां से कहा, 'या तो मैं अकेला ही गांव चला जाऊँगा—बैलगाड़ी तैयार है, और मैं रास्ता जानता हूं, किसी ने किसी तरह मैं वहां पहुंच ही जाऊँगा। उस गांव के लोगों को जानता हूं। वे सब इस बच्चें की देखभाल करेंगे ही और कुछ वर्षो की ही तो बात है। बाद में उनका सब अहसान चुका दूँगा। लेकिन मैं इस परिवार में नहीं रह सकता। यह परिवार नही बाजार है।'

और सचमुच वह बाजार ही था, हर वक्त लोगों का शोरगुल होता रहता। न शांति मिलती न खुला स्थान। उस प्राचीन तालाब में अगर कोई हाथी भी कूद पड़ता तो किसी को छपाक की आवाज सुनाई न देती। मैंने तो साफ इनकार कर दिया यह कह कर, अगर मुझे यहां रहना है तो में नानी के पास रहूंगा।' यह सुन कर मेरी मां को दुःख तो अवश्य हुआ और तब से लेकर आज ते न जाने कितनी बार मैंने उन्हें दुःख पहुंचाया है, लेकिन मैं भी क्या करता। असहाय था। परिस्थिति ही ऐसी थी। कि इतने वर्षो तक पूर्ण स्वतंत्रता, शांति और खुले अवकाश में मुक्त रहने के बाद मैं ऐसे वातावरण में नही रह सकता था। नाना के घर में नाना से बात करने वाला मैं ही था। नाना दिन भर मंत्र का जाप करते रहते। नानी से बात करने वाला दूसरा कोई नहीं, वर्षों सदा शांति में रहने के बाद यहाँ रहने बाद तथाकथित परिवार में रहना असंभव था। इस परिवार में असंख्य अपरिचित चेहरे थे—चचेरे भाई, चाचा ताऊ, उनके ससुर—मेरी समझ में ही न आत कि किसके साथ क्या रिश्ता है और कोन क्या है? बाद में मुझे विचार आया कि मेरे परिवार पर एक छोटी सी पुस्तिका लिखी जानी चाहिए कि किसके साथ क्या रिश्ता है?

जब में प्रोफेसर था तो लोग मेरे पास आकर कहते, तुम मुझे नहीं पहचानते? मैं तुम्हारी मां का भाई हूं।' मैं उससे कहता, कुछ और बताते तो अच्छा होता, जहां तक मुझे मालूम है कि मेरी मां के कोई भाई ही नहीं था। ' इतना तो मैं अपने परिवार के बारे में जानते हूं। तब उस आदमी ने कहा: 'तुम ठीक कहते हो, लेकिन में उनका

चचेरा भाई हूं।' मैंने कहा: अच्छा ठीक है। आपको क्या चाहिए? मेरा मतलब है कि कितना चाहिए? आप उधार रूपये मांगने आए होंगे? यह सुन कर उसने कहा: 'अरे तुमने तो मेरे मन की बात कैसे जान ली? मैंने कहा यह तो बहुत आसान है, अब आप बताइए आपको कितना चाहिए।'

उसने मुझसे बीस रूपये उधार लिए और मैंने अपने मन में सोचा कि शुक्र है भगवान का, एक रिश्तेदार से तो मेरा छुटकारा हुआ। अब यह आदमी दुबारा मुझे अपनी चेहरा कभी नहीं दिखायेगा। और सचमुच ऐसा ही हुआ। मैंने उसका चेहरा फिर कभी नहीं देखा। सैकड़ों लोगों ने मुझसे पैसे उधार लिए और कभी नहीं लोटाए। मुझे इससे खुशी होती, क्योंकि अगर वे लौटा देते तो दूसरी बार और बड़ी रकम मांगने आ जाते। मैं गांव जाने चाहता थे लेकिन नहीं जा सका। मुझे अपनी मां कि साथ समझोता करना पडा ताकि उनके दिल का ठेस न लगे। लेकिन मुझे मालूम है कि मैं उनको दुःख देता रहा हूं। उनहोंने जो भी चाहा, मैंने ठीक उसका उलटा किया। इसलिए धीरे-धीरे उन्होंने यह स्वीकार कर लिया कि वे मुझे खो चुकी है। कई बार ऐसा हुआ कि मैं उनके सामने बैठा रहता और वे मुझसे पूछती, तुमने किसी को देखा? क्योंकि मैं उसको सब्जी लाने के लिए बाजार भेजना है। बाजार दूर नहीं था। छोटा सा गांव था। बाजार पहुचने में दो मिनट लगते थे—और वे मुझसे पूछती, तुमने किसी को देखा?

मैं कहता : 'नहीं, मैंने किसी को नहीं देखा। घर तो बिलकुल खाली है—ये सब रिश्तेदार कहां गायब हो गए है? जब भी कोई काम होता है तो ये दिखाई ही नहीं देते। लेकिन वह मुझसे सब्जी लाने के लिए न कहती। एक दो बार कह कर वे पछताई थी। उसके बाद उनहोंने मुझे फिर कभी नहीं कहा।'

एक बार उन्होंने मुझसे केले खरीदने को कहा। लेकिन मैं रस्ते में भूल गया कि क्या खरीदना है और मैं टमाटर ले आया। मैंने तो याद रखने की बहुत कोशिश कि थी और रास्ते में बार-बार याद कर रहा था—केले, केले, और उसी समय एक कुत्ता भौंका या किसी ने पूछा कि कहां जा रहें हो? लेकिन मैं बोलता रहा, केले, केले, पूछने वाले ने कहा: 'क्या तुम पागल हो गए हो? मैने कहा: मैं नहीं तुम पागल हो गए हो। दूसरे लोंगो के काम में गड़बड़ कर रहे हो।' लेकिन तब तक में भूल गया मुझे क्या खरीदना है। सो मेरा समझ में जो आया वह मैंने खरीद लिया। मैं टमाटर ले आया। अब जैन घर में टमाटर तो कभी लाए ही नहीं जाते। मां ने उन्हें देखा तो अपना माथा ठोक कर कहा, 'क्या ये केले है? कब तुम्हारी समझ में आएगा'?

मैंने कहा: 'हे भगवान, क्या आपने केले खरीदने के लिए कहा था। मैं तो भूल गया मुझे अपनी गलता पर अफसोस है।'

मैं ने कहा: 'अगर तुम भूल गये थे टमाटर के अलावा कुछ और नहीं ला सकते थे। तुम्हें पता है कि इस घर में टमाटर नहीं खाये जाते। इनकी मनाही है। कारण यह है कि टमाटर लाल रंग के होते है। और मांस जैसे दिखाई देते है। जैन घर में लाल रंग खून और मांस की याद दिलाता है। इसलिए जैन लोग टमाटर को देख कर ही परेशान हो जाते है।'

बेचारे टमाटर, इतने सीधे-साधे और इतने ध्यान में डूबे हुए। उनको देख कर तो घुटे हुए। सिर बाले बौद्ध भिक्षुओं की याद आती है और इतने ध्यान में डूबे हुए दिखाई देते हे कि जैसे सारा जीवन ध्यान में डूबे हो। लेकिन जैस उन्हें पसंद नहीं करते। सो मुझे उन टमाटरों को भिखारियों को देना पडा। वे हमेशा मुझे देख कर खुश हो जाते है। सिर्फ भिखारी ही मुझे देख कर हमेशा खुश होते थे, क्योंकि जब भी मुझसे कुछ भी घर से बहार फेंकने के लिए कहा जाता तो में उसे कभी न फेंकता, बाहर जाकर उसे भिखारियों को दे देता। मैं परिवार में उनके अनुसार नहीं रह सकता था। सभी बच्चे पैदा कर रहे थे। हर औरत सदा गर्भवती दिखाई देती। जब भी मुझे अपने परिवार की याद आती है तो मेरा दिमाग खराब हो जाता है। सचमुच नहीं होता, लेकिन सोचता हूं कि

खराब हो जाएगा। सब औरतों के पेट सदा बढ़े रहते। एक बच्चा पैदा होते ही दूसरा गर्भ में आ जाता। और इतने बच्चे थे। नहीं, मैंने अपनी मां से कहा: 'मुझे मालूम हे कि आपको बुरा लगेगा, और मुझे अफसोस है, लेकिन मैं यहां पर नहीं रह सकता। मैं तो अपनी नानी के साथ ही रहूंगा। एक वही तो है जो मुझे अच्छी तरह से समझ सकती है। मुझसे प्रेम भी करती है और पूरी स्वतंत्रता भी देती है।'

एक बार मैंने अपनी नानी से पूछा: 'आपने केवल मेरी मां को ही क्यों जनम दिया? उन्होने कहा: 'यह भी कोई प्रश्न है।' मैंने कहा: 'इस परिवार में तो हर औरत सदा गर्भवती दिखाई देती है। आपने केवल मेरी मां को ही क्यों पैदा किया। उनके लिए कम से कम एक भाई तो होना चाहिए था।' उसके उत्तर में नानी न जो कहा वह मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। तुम्हारे नाना को बच्चा चाहिए था इसलिए मैंने उनसे यह समझौता कर लिया कि केवल एक बच्चा होगा। अब यह लड़की होगी या लड़का, यह आपके भाग्य पर निर्भर है।' उनको बैटा चाहिए था, लेकिन यह अच्छा हुआ कि लड़की हुई, नहीं तो तुम कैसे मिलते हां, अच्छा हुआ कि मैंने किसी दूसरे बच्चे को जनम नहीं दिया, अन्यथा तुम्हें यह जगह भी पसंद न आती, यहां भी भीड़ हो जाती। मैं ग्यारह साल तक अपने पिता के गांव में रहा और मुझे जबरदस्ती स्कूल भेजा गया। और वह कोई एक दिन की बात नहीं थी। यह तो हर रोज की बात थी, हर सुबह मुझे जबरदस्ती स्कूल भेजा जाता। कोई एक चाचा मुझे स्कूल ले जाता और स्कूल के बाहर तब तक खड़ा रहता जब तक किसी मास्टर के सुपुर्द न कर देता। रोज सुबह यही क्रम दोहराया जाता, मुझे पकड़-धकड कर स्कूल भेजा जाता। स्कूल पहुंच कर मुझे किसी जायदाद की भांति या किसी कैदी की तरह किसी को सौंप दिया जाता। शिक्षा का तरीका आज भी वहीं है—हिंसात्मक और जोर जबरदस्ती वाला। हर पीढी दूसरी पीढ़ी को भ्रष्ट करती है। यह तो निश्चित रूप से एक प्रकार का बलात्कार है—आध्यात्मिक बलात्कार, छोटा बच्चा अपने से अधिक बलशाली माता-पिता के सामने बिलकुल असहाय होता है। उसको उनकी इच्छा के अनुसार चलना ही पड़ता है। मैंने तो उसी—पहले दिन से विद्रोह कर दिया जिस दिन मुझे जबरदस्ती स्कूल ले जाया गया। स्कूल के फटक को देखते ही मैंने पिताजी से पूछा, 'ये जेल है या स्कूल?' पिताजी ले कहा: 'ये कैसा सवाल है?' अरे भाई, यह स्कूल है। तुम ड़रो मत। मैंने कहा: 'मैं डर नहीं रहा। मैं जानना चाहता हूं कि मेरा अपना रवैया कैसा होना चाहिए। इतने बड़े फाटक की क्या जरूरत है?'

जब सब बच्चे कैदियों की तरह भीतर चले जाते तो फाटक बंद कर दिए जाते। फिर बज शाम को बच्चों को बाहर निकालना होता तो वे खोल दिए जाते। मुझे तो अभी भी वह फाटक दिखाई देता है। मुझे अभी भी स्पष्ट दिखाई देता है कि उस भद्दे स्कूल के सामने मैं अपने पिताजी के साथ कैसे खड़ा था—अपना नाम दर्ज कराने के लिए। स्कूल तो जैसा था वैसा था ही लेकिन उसका फाटक तो और भी अधिक बदसूरत था। उस बड़े फाटक को हाथी-द्वार कहा जाता था। वह इतना बड़ा था कि उसमें से एक हाथी निकल सकता था। शायद वह सर्कस के हाथियों के लिए ठीक रहता और वह सर्कस ही तो था। छोटे बच्चों के लिए वह बहुत बड़ा था। इन नौ सालों के बारे में मुझे तुम्हें बहुत कुछ बताना है।

सत्र—20 स्कूल का प्रथम दिन और काना मास्टर

मैं अपने प्राइमरी स्कूल के हाथी-द्वार के सामने खड़ा था.....ओर उस फाटक ने मेरे जीवन में बहुत सह बातों को आरंभ किया। मैं वहां अकेला नहीं खड़ा था। मेरे पिता भी मेरे साथ खड़े थे। वह मुझे स्कूल में भरती कराने आए थे। उस बड़े फाटक को देखते ही मैंने उनसे कहा: 'नहीं।'

अभी भी मुझे वह शब्द सुनाई देता है। एक छोटा बच्चा जो सब कुछ खो चुका है, मैं अभी भी उस छोटे बच्चे के चेहरे पर अंकित प्रश्न-चिह्न को देख सकता हूं—वह सोच रहा हे कि अब क्या होने बाला है। मैं खड़े-खड़े फाटक की और देखता रहा और मेरे पिता ने पूछा: 'क्या तुम इस बड़े फाटक से इतने प्रभावित हो गए? '

अब इस कहानी को मैं अपने हाथ में लेता हूं। मैंने पिता से कहा: 'नहीं।'

प्राइमरी स्कूल में भरता होने से पहले मेरा प्रथम शबद यही था 'नहीं' और तुम्हें यह जान कर आश्चर्य होगा कि विश्वविद्यालय से विदा लेने के बाद मेरा अंतिम शब्द भी यहीं था—'नहीं'। पहली घटना के समय मेरे अपने पिता मेरे साथ खड़े थे। उस समय वे बहुत अधिक उम्र के नहीं थे। लेकिन मेरे जैसे छोटे बच्चे को वे बहुत बड़े लग रहे थे। दुसरी घटना के समय उससे भी बड़े फाटक पर मैं ऐ वयोवृद्ध सज्जन के साथ खड़ा था। विश्वविद्यालय का वह पुराना फाटक सदा के लिए गिरा दिया गया है। लेकिन वह मेरी स्मृति में है। अभी भी मैं उसे देख सकता हूं—पुराना दरवाजा, नया नहीं। नये वाले के साथ मेरा कोई संबंध नहीं है। नये फाटक को देख कर तो मुझे रोना आ गया, क्योंकि पुराना फाटक सचमुच भव्य और शानदार था। सीध-सादा सा, लेकिन भव्य। नया फाटक तो बहुत भद्दा और बदसूरत है। शायद वह आधुनिक है। लेकिन समस्त आधुनिक कला भद्दी और कुरूप है। पुराने जमाने में कुरूपता को स्वीकार नहीं किया गया था। शायद कुरूपता को अपनाना क्रांतिकारी माना गया है। लेकिन यदि क्रांति कुरूप हो तो यह क्रांति नहीं, प्रतिक्रिया है। नये फाटक को मैंने केवल एक बार देखा था और बाद मैं उस सड़क से बहुत बार गुजरा लेकिन हमेशा अपनी आंखें बंद कर लीं। बंद आँखो से मैं पुराने फाटक को फिर से देख सकता था।

विश्वविद्यालय का पुराना फाटक बहुत ही साधारण सा था। वह उस समय बना था जब विश्वविद्यालय अभी शुरू ही हो रहा था और वे कोई शानदार इमारत नहीं बना सकें थे। सब लोग मिलिट्री बैरकों में रहते थे, क्योंकि विश्वविद्यालय बहुत जल्दी में शुरू किया गया था। और होस्टल यह पुस्तकालय बनाने का भी समय नहीं था। वह मिलिट्री की खाली कह गई जगह थी। लेकिन वह जगह अपने आप में बहुत सुंदर थी। वह एक छोटी पहाड़ी पर थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय वहां पर सेना ने, शत्रु पर निगरानी रखने के लिए राडार लगा रखा था। छोटी पहाड़ी पर बना यह स्थान बहुत सुंदर था। मुझे तो यह बहुत पसंद था। सेना ने इसे छोड़ दिया, क्योंकि अब वहां पर उनका कोई काम नहीं था। उनका उस स्थान को छोड़ना मेरे लिए वरदान बन गया, क्योंकि मैं इसके सिवाय किसी और विश्वविद्यालय में शायद ही पढ सकता। इसका नाम था, सागर विश्वविद्यालय। सागर का अर्थ: समुद्र। सागर में अति सुंदर झील है और वह इतनी बड़ी है कि उसे झील न कह सागर कहा जाता है। सचमुच यह सागर जैसी ही दिखाई देती है। इसमें इतनी बड़ी लहरें उठती है कि विश्वास ही नहीं होता कि यह झील है। इतनी बड़ी लहरों वाली मैंने केवल दो झीलें देखी है, ऐसा नहीं है कि मैंने केवल दो ही झील ही देखी है। मैंने बहुत सी सुंदर झीलें देखी है—कश्मीर में, दार्जिलिंग में, नैनीताल में, और बहुत सी दक्षिण भारत में, नंदी हील्स में। लेकिन इतनी बड़ी समुद्र जैसी लहरों वाली मैंने केवल दो झील देखी है—सागर की झील और भोपाल की झील। भोपाल की तुलना सागर की झील छोटी है। भोपाल कि झील तो शायद संसार में सबसे बड़ी झील होगी। उसमें तो मैंने बारह से पंद्रह फिट ऊंची लहरें उठती देखी है। किसी और झील में ऐसा

नहीं होता। वह बहुत बड़ी है। एक बार मैंने नाव में उसका पूरा चक्कर लगाने की कोशिश कि और इसमें मुझे सत्रह दिन लगे। मैं उतनी रफ्तार से जा रहा था जितनी तुम कल्पना कर सकते हो और इसलिए भी क्योंकि वहाँ कोई पुलिस वाले न थे और न ही कोई रफ्तार की सीमा थी। इस यात्रा की समाप्ति पर मैंने अपने आप से कहा: 'हे भगवान, कितनी सुंदर झील है। और वह सैकडों फिट गहरी थी।'

सागर की झील भी ऐसी ही है, लेकिन वह छोटी है। लेकिन दुसरें अर्थों में, इसमें जो सौंदर्य है वह भोपाल की झील में नहीं है। सागर की झील के चारों और पहाड़ियां है, बहुत बड़ी नहीं, लेकिन बहुत सुंदर। खासकर सुबह सूर्योदय के समय और शाम को सूर्यास्त के समय अत्यंत आकर्षक और मनमोहक दिखाई देती है। और अगर पूर्णिमा की रात हो तो तुम जानोगे कि सुंदरता किसे कहते है। पूर्णिमा की रात को इसमें नौका विहार करते समय ऐसा लगता है बस अब कुछ और नहीं चाहिए। वह बहुत ही सुंदर स्थान है। लेकिन वहां पर उस पुराने फाटक के न रहने का मुझे बहुत अफसोस है। मुझे मालूम था कि एक न एक दिन उसे वहां से हटा दिया जाएगा, क्योंकि विश्वविद्यालय का उदघाटन करने कि लिए उसे जल्दी से अस्थायी ढंग से तैयार किया गया था। यह दूसरा फाटक था जो मुझे याद है। जब मैंने विश्वविद्यालय छोड़ा तो मैं इस फाटक पर अपने प्रोफेसर श्रीकृष्ण सक्सेना के साथ खड़ा था। कुछ सालों पहले वे मर चुके है। उन्होंने मुझे संदेश भेजा था कि वे मुझसे मिलना चाहते है। मुझे भी उनसे मिलना बहुत अच्छा लगता, लेकिन अब कुछ नहीं किय जा सकता है? हां, अगर वे जल्दी ही किसी संन्यासिन के गर्भ में जन्म ले लें ताकि वे मुझ तक पहुंच सकें तो मैं तुरंत उन्हें पहचान लुंगा—इतना वादा मैं करता हूं। प्रोफेसर सक्सेना अनोखे गुणों वाले व्यक्ति थे। मैं अनेक प्रोफेसर, अध्यापकों और रीडरों को जानता हूं। लेकिन इन सब में से केवल वहीं मुझे पहचान सके। और वे मानते थे कि उनके इस शिष्य को शिष्य नहीं अपितु उनका गुरु होना चाहिए था। वे फाटक पर खड़े मुझे यह समझाने की कोशिश कर रहे थे कि मुझे विश्वविद्यालय नहीं छोड़ना चाहिए। वह मुझसे कह रहे थे, तुम्हें इस समय नहीं चाहिए, खासकर तब तक विश्वविद्यालय ने तुम्हें पी. एँच. डी. स्कौलरशिप दी है। तुम्हें इस अवसर को खोना नहीं चाहिए।' वे घुमा-फिरा कर बार-बार यही कह रहे थे कि में उनका सबसे प्रिय छात्र हुं। उन्होंने कहा: 'सारी दुनिया में मेरे छात्र है, विशेषत: अमरीका में (अमरीका में उनहोंने बहुत समय तक पढ़ाया था) उनके भविष्य से मेरा कोई संबंध नहीं है। उनका भविष्य उनका भविष्य है। और आंखों में आँसू भर कर वे बोले, जहां तक तुम्हारा प्रश्न है, तुम मेरे भविष्य हो।' उनके इन शब्दों को मैं कभी नहीं भूल सकता। मुझे उन्हें दोहराने दो। उन्होंने कहा: 'इन दूसरे विद्यथिर्यों का भविष्य उनका अपना भविष्य था, तुम्हारा भविष्य मेरा भविष्य है।'

मैंने उनसे पूछा: 'क्यों?' मेरा भविष्य आपका भविष्य क्यों है?' उन्होंने कहा: 'उसके बारे में मैं तुम्हें कुछ नहीं बता सकता। और वे रोने लगे।'

मैंने कहा: 'मैं समझता हूं। कृपया आप रोइए मत। मेरी इच्छा के विरूद्ध कुछ भी करने के लिए मुझे समझाया नहीं जा सकता और मेरा मन अलग ही आयाम में चलता है। आपको निराश करते हुए मुझे बहुत दुःख हो रहा है। मुझे यह भी अच्छी तरह मालूम है कि आपको मुझसे बहुत आशा थी। समस्त विश्वविद्यालय में प्रथम आने के कारण जब मुझे गोलडमेडल मिला था (जो आपको भी नहीं मिला था।) तो आप एक छोटे बच्चे की तरह कितने खुश हुए थे।'

उस गोल्ड़-मेडल का मेरे लिए कोई महत्व नहीं था। मैंने तो डाक्टर श्री कृष्ण सक्सेना के सामने ही उस मैडल को इतने गहरे कुएं में डाल दिया कि अब दुबारा उसको कोई खोज नहीं सकता। उन्होंने कहा: 'तुम क्या कर रहे हो? मैं तो मैडल को कुएं में फेंक चुका था। और मुझे स्कौलरशिप मिलने पर उन्हें बहुत खुशी हुई थी और उसकी अवधि दो से पाँच बरस तक थी।

उन्होंने कहा: 'फिर से सोचों, कुछ समझने की कोशिश करो।'

पहला फाटक था हाथी-द्वार जिसके सामने मैं अपने पिता के साथ खड़ा था और जिसके भीतर मैं नहीं जाना चाहता था और अंतिम फाटक भी हाथी-द्वार था। जिसके सामने मैं अपने बूढ़े प्रोफेसर के साथ खाड़ा था। और उसके भीतर भी मैं दुबारा प्रवेश नहीं करना चाहता था। एक ही बार काफी था—दुबारा बहुत ज्यादा हो जाता। प्रथम फाटक से जो बहस शुरू हुई वह दूसरे फाटक तक चलती रही। जो 'नहीं' मैंने पिता से कहा वही 'नहीं' मैंने अपने प्रोफेसर से कहा। वे मेरे लिए अपने पिता जैसे ही थे। उन्होंने मेरी देखभाल पिता से भी बढ़ कर की। जब मैं बीमार पड़ता तो वे रात भर न सोते और मेरे बिस्तर के पास बैठे रहते। मैं उनसे कहता, आप बूढे हो गए है, डाक्टर—मैं उन्हें डाक्टर कहता था—कृपा करके अब आप सो जाइए।' तब वे कहते, 'मैं तब तक नहीं सोऊंगा जब तुम मुझसे यह वादा नहीं करोगे कि कल तुम बिलकुल ठीक हो जाओगे।' और मुझे वादा करना पड़ता—जैसे कि बीमार या ठीक होना मेरे वायदे पर निर्भर था। लेकिन एक बार मैंने उनसे यह वादा किया था और मैं अच्छा हो गया था। इसीलिए तो में कहता हूं कि इस दुनिया में जादू जैसा कुछ है। वह 'नहीं' तो मेरे अस्तित्व की विशेषता बन गया था, मैंने अपने पिता से कहा था, 'नहीं, मैं इस फाटक के भीतर नहीं जाना चाहता। यह स्कूल नहीं है, यह जेल है, कारागृह है। इसका यह फाटक और इस इमारत का यह रंग। बडी हैरानी की बात तो यह है कि भारत में जेल और स्कूल दोनों एक ही रंग के होते है। दोनों लाल ईंटों के बने होते है। इसलिए मालूम ही नहीं होता कि यह स्कूल है या जेल। ऐसा लगता है कि किसी ने अच्छा खाया मजाक किया है।'

मैंने कहा: 'इस स्कूल को तो देखिए, आप इसको स्कूल कहते है? यह कैसा फाटक है, और आप चाहते है कि मैं इसके भीतर चार साल के लिए भरती हो जाऊँ। '

इस समय जो वार्तालाप शुरू हुआ वह कई वर्षों तक चलता रहा और तुम इसे कई बार सुनो गे, क्योंकि कहानी में यह कहीं न कहीं पर आ ही जात है। मेरे पिता ने कहा: 'मुझे हमेशा इसी बात का डर था।' और हम लोग फाटक के बाहर खड़े थे, क्योंकि मैं अभी तक उनके साथ भीतर जाने के लिए राज़ी नहीं हो रहा था। वे कहते गए, मुझे डर था कि तुम्हारे नाना, और विशेषत: तुम्हारी नानी तुम्हें अपने लाड़-प्यार से बिगाड़ देंगे। मैंने कहा: 'आपका यह शक या डर बिलकुल ठीक था। अब तो मैं बिगड़ ही चुका हूं। अब कोई कुछ नहीं कर सकता। इसलिए चलिए घर वापस चलें।'

मेरे पिता ने कहा: 'क्या कहा? तुम्हें शिक्षित तो होना ही है।'

मैंने कहा: 'शिक्षा की यह कैसी शुरूआत है? मुझे हां या नहीं कहने की भी स्वतंत्रता नहीं है। क्या इसे शिक्षा कहते है। अगर आप यहीं चाहते हैं तो मुझसे पूछिए ही मत, यह रहा मेरा हाथ, इसे पकड़ कर आप मुझे भीतर घसीट लें। इससे मुझे यह संतोष तो होगा कि इस भद्दी संस्था में मैंने अपनी इच्छा से प्रवेश नहीं किया। इतना कृपा तो आप मुझ पर कर ही सकते है।' मेरे पिता परेशान होकर मुझे भीतर घसीटने लगे। वे थे तो सीधे आदमी, लेकिन वे तुरंत समझ गए कि ऐसा करना ठीक नहीं है। उन्होंने मुझसे कहा: 'मैं तुम्हारा पिता हुं, लेकिन मेरा तुम्हें घसीट कर भीतर ले जाना उचित नहीं है।'

मैंने कहा: 'इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं है। आपने जो किया है बिलकुल ठीक किया है। क्योंकि जब तक कोई मुझे घसीट कर भीतर न ले जाता मैं अपन आप नहीं जाउंगा। मेरा फैसला है: नहीं आप मुझ पर अपना फैसला थोप सकते है, क्योंकि मैं सब प्रकार से आप पर आश्रित हूं—भाजन, कपड़े और मकान के लिए आप पर निर्भर हूं। आप मुझसे जबरदसती कर सकते है।'

वाह, कैसा प्रवेश था स्कूल में—घसीट कर ले जाने का, इसके लिए मेरे पिता अपने आप को कभी माफ न कर सके। जिस दिन उन्होंने संन्यास लिया उस समय पहली बात जो उन्होंने मुझसे कही थी वह यह थी, मुझे माफ करना। मैंने कई बार, जाने-अनजाने, तुम्हारे साथ गलत व्यवहार किया है—उन सबके लिए मैं तुमसे माफी चाहता हूं।' उस स्कूल में प्रवेश करने के साथ ही मेरे नये जीवन की शुरूआत हुई। इससे पहले तो मैं वर्षों तक जंगली पशु की भाति स्वच्छंद और मुक्त घूमता रहा। मैं जंगली मनुष्य की भांति नहीं कह सकता, क्योंकि कोई जंगली मनुष्य नहीं है। कभी-कभार कोई आदमी जंगली मनुष्य सा मुक्त हो जाता है—जैसा अब मैं हूं, बुद्ध थे, जरथुस्त्र थे, जीसस थे। लेकिन उस समय सह कहना बिलकुल सच था कि में कई सालों तक जंगली पशु की भाति रहता था। लेकिन वह जीवन एडोल्फ हिटलर, बेनी टो मुसोलिनी, नेपोलियन, सिकंदर महान से कही ऊँचा था। मैं सबसे बुरों के नाम ले राह हूं। बुरे इस अर्थ में कि वे समझते थे कि वे सबसे अधिक सभ्य है। सिकंदर महान समझता था कि वह अपने समय का सबसे अधिक सभ्य आदमी है। एडोल्फ हिटलर अपनी आत्म कथा 'माई स्ट्रगल' में....मुझे नहीं मालूम कि जर्मन लोग इसके शीर्षक का उच्चारण कैसे करते है। मुझे तो यही याद है: मैन केम्प। शायद यह गलत है, होगा ही, क्योंकि यह जर्मन भाषा मैं है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इसका उच्चरण क्या है। मुझे तो हैरानी हुई यह जान कर कि इस पुस्तक में हिटलर यह सिद्ध करने की कोशिश करता है कि जिस अतिमानव की स्थिति को प्राप्त करने के लिए मनुष्य हजारों वर्षों से प्रयास कर रहा है, उसने उस स्थिति को उपलब्ध कर लिया है। और हिटलर कह पार्टी, नाजी, और हिटलर की जाति, नॉर्डिक-आर्य समस्त संसार पर शासन करेंगे। और यह शासन एक हजार वर्ष तक चलेगा। ये सब पागल आदमी की बातें है। लेकिन यह पागल आदमी बहुत शक्तिशाली था। जब वह बोलता था—चाहे वह बकवास ही हो—तो लोगों को उसे सुनना ही पड़ता था। वह समझता था कि वह सच्चा आर्य है और नॉर्डिक जाति शुद्ध खून वाली जाति है। लेकिन वह तो स्वप्न देख रहा था। मनुष्य तो शायद ही कभी अतिमानव बना है। 'अति' या 'परा' का अर्थ उच्च नहीं है। सच्चा अतिमानव तो उसको कहा जाता हे जो अपने कार्यों, विचारों और भावों के प्रति सजग रहता है, जो अपने जीवन तथा। मृत्यु और प्रेम को होशपूर्वक देखता है।

उस दिन से जो वार्तालाप मेरे और पिता के बीच शुरू हुआ और जो बीच-बीच में भी चलता रहा और उसका अंत तभी हुआ जब वे संन्यासी बने। उसके बाद तो तर्क का कोई सवाल ही नहीं उठा, क्योंकि उनहोंने समर्पण कर दिया था। जिस दिन उनहोंने संन्यास लिया में मेरे पैर पकड़ कर रो रहे थे। मैं खड़ा था और क्या तुम भरोसा कर सकते हो कि मेरे सामने बचपन का यह दृश्य बिजली की तरह कौंध गया—वह स्कूल, वह हाथी-द्वार और उसके सामने खड़ा छोटा बच्चा जो भीतर नहीं जाना चाहता और मेरे पिता उसको जबर्दस्ती खींच रहे हैं। उस दृश्य की याद आते ही मैं मुस्कुरा उठा। पिता ने पूछा: 'क्यों मुस्कुरा उठा।'

मैंने कहा: 'मुझे यह देख कर खुशी हो रही है कि आखिर वह संघर्ष समाप्त हो गया है।'

और यही तो हो रहा था।

मुझे इस बात की खुशी है कि मुझे जबरदस्ती खींच कर भीतर ले जाया गया, मैं अपने आप अपनी स्वेच्छा से कभी नहीं गया। वह स्कूल बहुत ही भद्दा था। असल में सभी स्कूल ऐसे ही होते है। परिस्थिति तो ऐसी निर्मित करनी चाहिए कि जहां बच्चे स्वयं ही कुछ सीखें, लेकिन उन्हें शिक्षित करना ठीक नहीं है। शिक्षा तो कुरूप होगी ही। और स्कूल में पहली चीज मैंने क्या देखी? वह पहली चीज थी मेरी प्रथम कक्षा का अध्यापक, मैंने सुंदर लोग देखे है और कुरूप लोग भी देखे है, लेकिन वैसी चीज मैंने दुबारा कभी नहीं देखी। 'चीज' को रेखांकित करो। उस 'चीज' को मैं 'कोई' नहीं कह सकता? कैसा अद्‌भुत आदमी जो आदमी जैसा दिखाई ही नहीं देता था। मैंने अपने पिता की और देख कर कहा: 'इसके लिए आप मुझे भीतर घसीट कर भीतर लाए हैं'?

मेरे पिता ने कहा: 'चुप रहो।' लेकिन वह इतने धीमे से बोल कि वह चीज कहीं सुन न ले। वह मास्टर मुझे पढ़ाने बाला था। मैं तो उस आदमी को देख भी नहीं सकता था। परमात्मा ने उसका चेहरा बड़ी ही जल्दबाजी में बनाया होगा। ऐसा लगता है कि परमात्मा को बाथरूम जाने की जल्दी थी, इसलिए उसने जल्दी में इस आदमी को बना दिया। कैसा अद्‌भुत आदमी बनाया, उसके केवल एक आँख थी और नाक टेढ़ी थी। वह एक आँख ही गजब की थी और उसके साथ वह टेढ़ी नाक उसके चेहरे को और भी भद्दा बना रही थी। और वह विशालकाय था। सात फिट ऊँचा था। और उसका वज़न कम से कम चार सौ पौंड रहा होगा।

देवराज, तुम बताओ कि ये मेडिकल शोध को इस प्रकार चुनौती केसी देते है? उसका वज़न चार सौ पौंड था, लेकिन फिर भी बहुत स्वस्थ था। न उसने कभी छुट्टी ली, न कभी वह डाक्टर के पास गया। शहर के सब लोग कहते थे कि वह लोहे का बना हुआ है। उसे लोहा तो नहीं कहूँगा वरन कांटेदार लोहे की तार कहना चाहिए। वह इतना बदसूरत था कि मैं उसके बारे में और कुछ नहीं कहना चाहता। हालांकि कुछ बातें तो मुझे कहनी ही पड़ेगी, लेकिन उसके बारे में सीधे मुझे कुछ नहीं कहना है। वह मेरा पहला मास्टर था। मेरा मतलब अध्यापक था। क्योंकि भारत में स्कूल के अध्यापक को भी मास्टर ही कहा जाता है। इसलिए मैं कहता हूं कि वह मेरा पहला मास्टर था। आज भी अगर मैं उस आदमी को देख लू तो मैं कांपने लगूंगा। उसको तो आदमी नहीं, घोड़ा कहना चाहिए। मैंने अपने पिता को कहा: 'पहले कि आप साइन करें इस आदमी को तो देख लें।' उन्होंने कहा, 'क्या हुआ है इसे, इसने मुझे पढ़ाया है, मेरे पिता को पढ़ाया है—यह तो पीढ़ियों से यहां पर पढ़ा रहा है।'

उनकी बात बिलकुल सच थी। इसीलिए तो कोई उसकी शिकायत नहीं करता था। अगर कोई अपने पिता से उसकी शिकायत करता तो उत्तर में वे कहते, 'मैं इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता। वह मेरी भी अध्यापक था। अगर मैं उसके पास शिकायत लेकर जाऊँ तो वह मुझे भी सज़ा दे सकता हे।'

सो मेरे पिता ने कहा: 'वह ठीक ही तो है। कुछ भी गलत नहीं है। और उन्होंने कागजात पर हस्ताक्षर कर दिए। तब मैंने अपने पिता से कहा: 'आप अपनी मुसीबतों पर हस्ताक्षर कर रहे है इसलिए बाद में मुझे दोष मत देना।'

उन्होंने कहा: 'तुम अजीब लड़के हो।'

मैंने कहा: 'निश्चित ही हम एक-दूसरे के लिए अजनबी है। मैं आपसे कई वर्षों तक दूर रहा हूं। और मेरी मित्रता तो थी आम और देवदार के पेड़ों से, पहाड़ों से, नदियों से और समुद्रों से। मैं व्यापारी नहीं हूं और आप व्यापारी हैं। आपके लिए पैसा ही सब कुछ है और मैं तो उसे गिन भी नहीं सकता।'

आज भी....मैंने कई वर्षों से पैसे को हाथ नहीं लगाया। ऐसी जरूरत ही नहीं हुई। यह मेरे लिए बहुत अच्छा है कयोंकि इस दुनिया के गणित को मैं बिलकुल नहीं जानता। मैं तो अपने ही ढंग से चलता हूं। मैं उसके आर्थिक नियमों के अनुसार नहीं चलता, चल ही नहीं सकता—उन्हें मेरा अनुसरण करना पड़ता है। मैंने पिता से कहा: 'आप पैसे की भाषा को समझते है और मैं नहीं समझता। हमारी भाषा ही अलग-अलग है। और याद रखिए, आपने मुझे गांव जाने से रोका है, अब कोई संघर्ष हो तो मुझे दोष मत देना। मैं तो समझता हूं वह आप नहीं समझते और आप जो समझते है वह मैं नहीं समझता ओ समझना भी नहीं चाहता। दद्दा, हम दोनों एक-दूसरे के लिए नहीं बने। हम दोनों का तालमेल हो ही नहीं सकता।'

हम दोनों के बीच जो फासला था उसे मिटाने के लिए उनको जीवन भर का समय लग गया लेकिन यह यात्रा उन्ही को करनी पड़ी। इसीलिए मैं कहता हुं कि में बहुत जिद्दी हूं—मैं तो एक इंच भी इधर से उधर नहीं होता। और यह सारा बखेड़ा शुरू हुआ हाथ-द्वार से। मैरा पहला अध्यापक—मैं उसका असली नाम नहीं जानता, स्कूल का कोई भी बच्चा नहीं जानता था। वे उसे काना मास्टर कहते थे। काना अर्थात एक आँख वाला।

हिंदी में काना का अर्थ होता है। एक आँख वाला तो हाता ही है साथ मैं कोसने के लिए भी इसका प्रयोग किया जात है। इसलिए उसकी उपस्थिति में तो हम लोग मास्टर कहते थे लेकिन जब वह वहां नहीं होता था तब हम केवल काना कहते थे।

वह स्वयं तो कुरूप था ही, साथ ही वह जो भी करता था वह भी कुरूप होता था। स्कूल में मेरे प्रथम दिन ही कुछ न कुछ तो घटने ही वाला था—कोई न कोई बखेड़ा खड़ा होत है। वह मास्टर बड़ी बेरहमी से बच्चों को सज़ा देता था। बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार करते मैंने न किसी को देखा न सुना है। मैं ऐसे कई लोगो को जानता था जिन्होंने इसके कारण स्कूल छोड़ दिया था और वे बेचारे अशिक्षित ही रह गए। वह बहुत ज्यादती करता था। तुम लोग तो सोच भी नहीं सकते कि वह क्या-क्या करता था। और अब मैं बताता हूं कि पहले ही दिन मेरे साथ क्या हुआ और उसके बाद तो बहुत कुछ होने वाला था।

वह गणित पढ़ा रहा था। मैं थोड़ा बहुत गणित जानता था कयोंकि मेरी नानी ने मुझे घर पर ही थोड़ा बहुत गणित और भाषा सिखा दी थी। वह मैं खिड़की से बाहर सूरज की रोशनी में चमकते हुए सुंदर पीपल के पेड़ को देख रहा था। दूसरा ऐसा कोई पेड़ नहीं है जो सूरज की रोशनी में इतना अच्छा चमकता हो। क्योंकि हर एक पत्ता अपना नृत्य अलग करता है। और दूसरी और हजारों चमकते हुए पत्ते एक साथ नाचते और गीत गात है जिसके कारण समस्त पेड़ वाद्यवृंद बन जाता है। अलग-अलग स्वर का सामूहिक संगीत बन जाता है। पीपल का वृक्ष बड़ा विचित्र वृक्ष है, क्योंकि बाकी सब पेड़ तो दिन के समय कार्बन डाइआकसाइड को अपने भीतर खींच लेते है। और आक्सीजन को बाहर छोड़ते है...अब जो भी

हो, तुम लोग ठीक कर लो, क्योंकि न तो मैं पेड़ हूं, न वैज्ञानिक, और न ही कैमिस्ट। लेकिन पीपल का पेड़ चौबीस घंटे आक्सीजन छोड़ता है। पीपल के पेड़ के नीचे तुम सो सकते हो, लेकिन दूसरे पेड़ों के नीचे नहीं। क्योंकि वे सेहत के लिए खतरनाक है। मैने हवा में नाचते पीपल के पत्तों को देखा, हर पत्ते पर सूरज चमक रहा था। और सैकडों तोते एक शाखा से दूसरी शाखा पर कूद रहे थे। और अकारण खुश हो रहे थे। क्यों न होते? उनको तो स्कूल नहीं जाना था। मैं खिड़की से बाहर देख रहा था। बस, वह काना मास्टर मुझ पर बरस पडा। उसने मुझको कहा: 'पहले से ही बात साफ हो जानी चाहिए।'

मैंने कहा: 'हाँ आप ठीक कह रहे है, मैं भी इस बात से सहमत हूं, आरंभ से ही बात साफ हो जानी चाहिए, सब कुछ सही और ठीक तरह से होना चाहिए।'

उसने पूछ: 'जब में गणित पढ़ा रहा था तो तुम खिड़की के बाहर क्यों देख रहे थे?'

मैंने उत्तर दिया: 'गणित को देखना नहीं सुना जाता है। मुझे आपके सुंदर चेहरे को नहीं देखना। उससे बचने के लिए ही मैं खिड़की के बाहर देख रहा था। जहां तक गणित का सवाल है, मैंने सुन लिया है और मुझे मालूम है। आप मुझसे उसके बारे में पूछ सकते है।'

उसने मुझसे पूछा और यहीं से शुरू हुई लंबी मुसीबत—मेरे लिए नहीं, उसके लिए। मुसीबत यह थी कि मैंने सही उत्तर दिया। उसे तो विश्वास ही नहीं हुआ और उसने कहा: 'तुम सही हो या गलत। मैं तो तुम्हें सज़ा दूँगा ही क्योंकि जब अध्यापक पढ़ा रहा हो उस समय खिड़की से बहार देखना ठीक नहीं है। मुझे उसने अपने सामने बुलाया। मैने उसके सज़ा देने के तरीकों के बारे में सुन रखा था। वह तो ''मार्क्विस दि सादे'' जैसा आदमी था। अपने डेस्क से उसने पेंसिलों का डिब्बा निकाला। मैं उसकी इन पेंसिलों के बारे में सुन चुका था। वह पेंसिल को हर उँगली के बीच में फंसा कर हाथ को जोर से दबा कर पूछता, 'और दबाऊ?' और जोर से दबाऊ? छोटे बच्चों के साथ वह ऐसा करता। वह तो तानाशाह था। मेरे इस वक्तव्य को रिकार्ड कर लेना चाहिए, 'जो लोग

शिक्षक बनते है उनमें कोई कमी होती है, उनके भीतर कुछ गलत होता है। शायद उनमें दूसरे पर शासन करने को इच्छा होती है। या शक्ति पाने की लालसा होती है शायद वे सब थोड़े बहुत तानाशाह होते है।'

मैंने उस पेंसिलों को देख कर कहा: 'मैंने इन पेंसिलों के बारे में सुना है। लेकिन इनको मेरी अंगुलियों में डालने से पहले इतना याद रखिए कि यह काम आपको बहुत महंगा पड़ेगा—शायद आपको अपनी नौकरी से भी हाथ धोना पड़े। वह राक्षस की भाति हंसा और उसने कहा, कौन मुझे रोक सकता है?'

मैं न कहा: 'सवाल यह नहीं है। मैं तो यह पूछना चाहता हुं कि जब गणित पढ़ाया जा रहा हो तो क्या खिड़की से बाहर देखना अपराध है? और जो पढ़ाया जा रहा था उसके विषय में पूछे गए प्रश्न का उत्तर जब मैंने दे दिया है और जब उसके हर शब्द को मैंने दोहरा दिया हे तो तब खिड़की से बाहर देखना कोई अपराध है? जब उस क्सालरूम में इस खिड़की को बनाने का क्या प्रयोजन है? इसको क्यों बनाया गया है? दिन भर इस कमरे में कोई न कोई कुछ न कुछ तो पढ़ाता ही रहता है। रात को तो खिड़की की कोई जरूरत नहीं होती क्योंकि उस समय तो इसमें से देखने बाला कोई नहीं होता।'

उसने कहा: 'तुम मुसीबत की जड़ हो।'

मैंने कहा: 'हां, बिलकुल ठीक कहा। मैं अभी हेड मास्टर के पास यह पूछने जा रहा हूं, कि जब मैंने आपको सही उत्तर दे दिया है तो क्या आपका मुझे सज़ा देना वैध है'? न्यायसंगत है?' यह सुनते ही वह कांप उठा, थोड़ा नरम पडा। मुझे यह देख कर हैरानी हुई क्योंकि मैंने सुना हुआ था कि वह किसी भी तरह दबने बाला नहीं है। फिर मैंने कहा: 'इसके बाद में म्यूनिसिपैलिटी कमेटी के सभापति के पास जाऊँगा, क्योंकि वह इस स्कूल को चलाता है। कल मैं पुलिस कमिश्नर को लेकर यहाँ आऊँगा ताकि वह अपनी आंखों से देख ले कि यहां पर कैसा गलत व्यवहार किया जाता है।'

उसका कांपना दूसरों को तो दिखाई नहीं दिया, लेकिन मैं उन सब चीजों को देख सकता हूं जिन पर दूसरों का ध्यान नहीं जाता। मैंने उससे कहा: 'तूम मानो गे तो नहीं लेकिन तुम कांप रहे हो। खैर, अभी तो हेड मास्टर के पास जा रहा हूं।'

मैं हेड मास्टर के पास गया और उसने कहा: 'मुझे मालूम है कि यह आदमी बच्चों बहुत यातना देता है। जो गैर-कानूनी है। लेकिन मैं इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता हूं, क्योंकि वह इस शहर का सबसे पुराने अध्यापक है। और प्राय: सब लोगो के पिता या दादा इसके शिष्य रह चुके है। इसलिए कोई भी उस पर अंगुलि नहीं उठा सकता।' मैंने कहा: 'मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है।'

मेरे पिता और दादा भी इसके शिष्य थे, लेकिन मुझे अपने पिता या दादा की भी परवाह नहीं है। मैं तो इस परिवार का ही नहीं हूं। मैं इनसे दूर रहा हूं। मैं यहां पर विदेशी हूं।' हेड मास्टर ने कहा: 'यह तो मैं तुरंत ही समझ गया कि तुम यहां पर अजनबी हो। लेकिन बेटे, इस मुसीबत में न पड़ो तो अच्छा है, क्योंकि यह तुम्हें बहुत सताएगा।'

मैंने कहा: 'यह इतना आसान नहीं है। सब प्रकार के अत्याचारों के विरूद्ध मेरे संघर्ष की शुरूआत यहीं से होगी। मैं जी-जान से लडूंगा। और मैंने उसकी मेज को मुक्के से मारा—छोटे बच्चे का मुक्का—और उससे कहा: 'शिक्षा की मुझे कोई परवाह नहीं है। लेकिन अपनी स्वतंत्रता की मुझे चिंता है। कोई मुझे आकारण परेशान नहीं कर सकता। आप मुझे शिक्षा की नियमावली दिखाइए। में पढ़ नहीं सकता लेकिन आपको मुझे यह बताना पड़ेगा कि जब मैंने सब प्रश्नों के उत्तर सही दिए है ता मेरा खिड़की से बाहर देखना क्या गैर-कानूनी है?''

उसने कहा: 'अगर तुमने सही उत्तर दिए है तो इसका सवाल ही नहीं उठता कि तुम कहां देख रहे थे।'

मैंने कहा: 'आप मेरे साथ आइए।'

वे शिक्षा नियमावली की पुरानी सी किताब को अपने साथ लेकर आए, जिसे शायद कभी किसी ने नहीं पढ़ा था। हेड मास्टर ने काने मास्टर से कहा: 'अच्छा होगा कि इस बच्चे को परेशान मत करो। वह इतनी जल्दी हार मानने वाला नही है। और शायद तुम्हारे लिए ही मुसीबत खड़ी हो जाएगी।' वह काना मास्टर डर तो गया लेकिन इसके कारण वह और भी आक्रामक हो गया। उसने कहा: 'आप फ़िकर मत करें। मैं इस बच्चें को दिखा दूँगा। इस नियमावली की चिंता कौन करता है? मैं जीवन भर यहाँ पर अध्यापक रहा हूं और आज यह बच्चा मुझे नियम सिखाने आया है?'

मैंने कह: 'कह या तो मैं इस स्कूल की इमारत में रहूंगा या तुम, हम दोनों एक साथ नहीं रह सकते। सिर्फ कल तक इंतजार करो।'

मैं जल्दी से घर गया और पिता को सब बता दिया। उन्होंने कहा: मुझे तो पहले से ही यह डर था कि स्कूल में दाखिल हो तुम दूसरों को और स्वयं को तो मुसीबत में ड़ालोगे ही साथ ही मुझे भी उसमें घसीटोगे।' मैंने कहा: 'नहीं, मैं तो केवल आपको बता रहा हुं कि क्या हुआ, ताकि बाद में आप मुझसे यह न कहा सकें कि मैंने आपको अंधेरे में रखा।'

मैं पुलिस कमिश्नर के पास गया। वह बहुत अच्छा आदमी था। मैं तो सोच भी नहीं सकता था कि कोई पुलिसवाला आदमी इतना अच्छा हो सकता है। उसने कहा: 'मैंने इस आदमी के बारे में सुना है। मेरे अपने बेटे को इसने परेशान किया है। लेकिन आज तक किसी न शिकायत नहीं कि। सताना या यातना देना गैर-कानूनी है, लेकिन आज तक किसी नह शिकायत नहीं करे तब तक कुछ नहीं किया जा सकता। मैं खुद भी इसकी शिकायत नहीं कर सकता, क्योंकि मुझे डर है कि यह मेरे बेटे को फेल कर देगा। इसलिए वह जो करता है उसे करने दो। कुछ महीनों की ही बात हे, तब मेरा बेटा दूसरी क्लास में चला जाएगा।'

मैंने कहा: 'मैं यहां पर शिकायत करने आया हूं। मुझे दूसरी क्लास में जाने की कोई चिंता नहीं है। मैं तो इस क्लास में अजीवन रहने को तैयार हूं। उसने मेरी और देखा। मरी पीठ थपथपाई और कहा, 'तुम जो कर रहे हो ठीक कर रहे हो। मैं कल आऊँगा।'

इसके बाद मैं म्यूनिसिपैलिटी कमेटी के सभापति के पास गया, जो गोबरगणेश निकाला। उसने कहा: 'मुझे सब मालूम है, लेकिन कुछ किया नहीं जा सकता। तुम्हें उसको सहन करना होगा। उसके साथ जीना सीखना पड़ेगा।'

मैंने उससे कहा: 'और वे शब्द आज तक मुझे याद है। मैंने कहा: मेरे अंत: करण को जो गलत लगता है उसे मैं कदापि सहन नहीं कर सकता।'

उसने कहा: 'मैं कुछ नहीं कर सकता तुम उप सभापति के पास जाओ। शायद वह तुम्हारी कुछ मदद कर सके।'

इस सुझाव के लिए मैं उस गोबरगणेश का आभारी हूं, क्योंकि उस गांव के उप सभापति शंभु दुबे, मेरे अनुभव में उस पूरे गांव में एक अकेले मूल्यवान व्यक्ति सद्धि हुए। जब मैंने उसने दरवाजे को खटखटाया—तब मैं केवल आठ या नौ साल का था। और वे उप सभापति थे। वह उनहोंने कहा: 'हां, अंदर आ जाइए,' उनहोंने समझा कि कोई वयस्क आदमी उनसे मिलने आया है। इसलिए मुझे देख कर वे थोड़ा अचकचा गए।'

मैंने कहा: 'माफ कीजिएगा, मैं बहुत बड़ा नहीं हूं, न पढ़ा-लिखा ही हूं, लेकिन मैं उस काने मास्टर की शिकायत करने आया हूं।'

जैसे ही उन्होंने मेरी कहानी सुनी कि वह मास्टर प्रथम श्रेणी के बच्चों को कैसे सताता है, उनकी अंगुलियों में पेंसिल दबा कर अपने हाथ से उनको दबाता है। और उनके नाखूनों के नीचे पिन चुभाता है—यह सात फीट

ऊँचा आदमी है और उसका वज़न चार सौ पौंड है—उनको तो इन बातों पर विश्वास ही न हुआ। उन्होंने कहा: 'मैंने इस आदमी के इन कारनामों के बारे में सुना तो है लेकिन किसी ने आज तक उसकी शिकायत क्यों नहीं की?' मैंने कहा: 'लोगों ने उसकी शिकायत इसलिए नहीं कि क्योंकि उनको डर है कि उनके बच्चों को और अधिक सताया जाएगा।'

उन्होंने कहा: 'क्या तुम्हें डर नहीं है?'

मैंने कहा: 'नहीं, क्योंकि मैं फेल होने को तैयार हुं और वह ज्यादा से ज्यादा यही कर सकता है।'

मैंने कहा: 'मैं फेल हो न को तैयार हूं मुझे सफल होने की चिंता नहीं है। लेकिन मैं आखिर मैं आखिर दम तक लड़ूंगा। या तो वह आदमी या मैं, उस इमारत में हम दोनों एक साथ नहीं रह सकते।'

शंभु दुबे ने मुझे अपने पास बुलाया और मेरा हाथ पकड़ कर उन्होंने मुझसे कहा: 'मुझे हमेशा विद्रोही लोग बहुत अच्छे लगते है। लेकिन मैंने कभी सोचा भी न था कि तुम्हारी उम्र का बच्चा भी विद्रोही हो सकता है। मैं तुम्हें बधाई देता हूं।'

बस उसी समय से हम मित्र बन गए और यह मित्रता उनकी मृत्यु तक बनी रही। उस गांव की जनसंख्या बीस हजार थी। लेकिन भारत में उसे गांव ही माना जाता है। भारत में जब तक किसी स्थान की जनसंख्या एक लाख न हो जब तक उसे नगर नहीं मान जाता। जब जनसंख्या पंद्रह लाखा की होती है तो उसे शहर माना जाता है। अपने सारेजीवन में मैंने उस गांव में शंभु दुबे जैसे गुणों वाला और उस जैसी योग्यता वाला और कोई दूसरा आदमी नहीं देखा, मेरा यह कहना तुम्हें अतिशयोक्ति जैसा लगेगा लेकिन सच तो यही है कि समस्त भारत में मुझे कोई दूसरा शंभु दुबे नहीं मिला। वे अनूठे थे दुर्लभ थे। जब मैं सारे भारत में यात्रा कर रहा था तो वे महीनों मेरी प्रतीक्षा करते थे कि कब में एक दिन के लिए उस गांव में आऊं। उस गांव से जब भी मेरी ट्रेन गुजरती तो केवल वे ही स्टेशन पर मुझसे मिलने आते। हां, मैं अपने माता-पिता को नहीं सम्मिलित कर रहा हूं, वे भी आते, लेकिन उनको तो आना ही था। लेकिन शंभु दुबे मेरे रिश्तेदार नहीं थे, वे मुझसे प्रेम करते थे। और प्रेम आरंभ हुआ उस दिन से जब मैं उनके पास काने मास्टर की शिकायत करने गया। शंभु दुबे म्यूनिसिपैलिटी कमेटी के उप सभापति थे। उन्होंने मुझसे कहा: 'तुम चिंता मत करों। इस आदमी को सज़ा मिलनी चाहिए। उसका सेवा काल समाप्त हो गया है। उसने उसे बढ़ाने के लिए प्रार्थना-पत्र दिया है। लेकिन हम उसे नहीं बढ़ाएंगे। कल से तुम उसको स्कूल में नहीं देखोगे।'

मैंने उनसे कहा: 'क्या यह वादा है?

हम ने एक-दूसरे की आंखों में देखा।

उन्होने हंस कर कहा, 'हां' यह वादा है।' दूसरे दिन काना मास्टर चला गया। उसके बाद तो वह मेरी और देख भी नहीं सकता था। मैंने कई बार उससे मिलने की कोशिश की, उसको विदा देने के लिए कई बार उसके दरवाजे को खटखटाया, लेकिन वह तो कायर था—शेर की खाल में भेड़ था।

स्कूल के उस पहले दिन ने बहुत सी बातों को आरंभ कर दिया।

सत्र—21 शंभु बाबू से भेट

ठीक है.....जिन सज्जन के बारे में मैं बात करने जा रहा हुँ, उन का पूरा नाम पंडित शंभु रत्न दुबे। हम उनको शंभु बाबू कहते थे। वे कवि थे, बहुत ही अनोखे, क्योंकि वे अपनी कविताओं को प्रकाशित नहीं करना चाहते थे। किसी कवि में ऐसा गुण बहुत ही दुर्लभ है। मैं सैकड़ों कवियों से मिला हूं, वे अपनी कविताओं को प्रकाशित करने के लिए इतने उत्सुक रहते है कि उनके लिए काव्य रचना गौण हो जाती है। किसी भी प्रकार से महत्वाकांक्षी लोगों को मैं राजनीतिज्ञ कहता हूं। और शंभु बाबू महत्वाकांक्षी नहीं थे। वे निर्वाचित उप सभापति भी नहीं थे। क्योंकि निर्वाचित होने के लिए कम से कम चुनाव में खड़ा होना पड़ता है। वे सभापति द्वारा मनोनीत थे। वह सभापति खुद तो गोबरगणेश था, जैसा कि मैंने पहले कहा। उसे कुछ आता-जात नहीं था। इसलिए उसे एक ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उसके सब काम कर दे। सभापति एकदम गोबरगणेश था और वह इस पद पर कई वर्षो से था। दूसरे गोबरगणेश ने बार-बार उसको र्निवाचित किया था।

भारत में गोबरगणेश होना बहुत बड़ी बात है, ऐसे गोबरगणेश महात्मा बन जाते है। यह सभापति भी अन्य बोगस महात्माओं जैसा ही था। कोई भी प्रतिभाशाली और सृजनशील व्यक्ति भी इस प्रकार का महात्मा बनना पसंद नहीं करेगा, न वह चाहेगा कि उसकी पूजा की जाए। मैं तो उस गोबरगणेश के नाम का भी उल्लेख नहीं करना चाहता। अपने जीवन में उसने केवल एक ही समझदारी का काम किया था और वह था शंभु बाबू को उप सभापति बनाना। शायद वह नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा है। गोबरगणेश लोग सजग नहीं होते।

जिस क्षण शंभु बाबू और मैंने एक दूसरे को देखा, कुछ हुआ। उसी क्षण हम दोनों के ह्रदय एक हो गए—विचित्र मिलन हो गया। जिसे कार्ल गुस्ताव जुंग सिन्क्रॉनिसिटी कहता है। मैं छोटा सा जंगली बच्चा—अशिक्षित और अनुशासन विहीन, हम दोनों में कोई साम्य नहीं था। वे थे अति शक्तिशाली और अत्यंत सम्मानित व्यक्ति। लोग डरते थे कि अगर उनके प्रति आदर न दिखाया गया तो इसके लिए एक न एक दिन अवश्य पछताना पड़ेगा, क्योंकि उनकी स्मरण शक्ति बहुत तेज थी। और में तो सिर्फ एक बच्चा था। ऊपर से हम दोनों के बीच कुछ भी समानता न थी। वे सारे गांव के उप सभापति थे। वकीलों की एसोसिएशन और रोटरी क्लब आदि के भी सभापति थे। वे कई समितियों के सभापति और उप सभापति थे। वे प्राय: सब स्थानों या पदों पर थे। वे अत्यंत शिक्षित थे। उन्होंने कानून की उच्चतम डिग्री प्राप्त की थी। लेकिन वे उस गांव में वकालत नहीं करते थे।

विज्ञान थोड़ा बहुत शैतान का रूप है। तुम लोगों को मेडिकल ट्रेनिंग मिली है, सो तुम भी एक प्रकार के बील्जबब की टेकनालॉजी के हिस्से हो। उन बेचारे लोगों को माफ कर दो। वे अपनी और से पूरी कोशिश कर रहे है। और जहां तक मेरा सवाल है मैं जब बोलने लगता हुं तो कोई बाधा नहीं डाल सकता। मैं कहा रहा था—इस पृष्ठभूमि को देखो और उस मौन को। अगर इसको कोई समझ जाए तो बील्जबब को नौकर की तरह उपयोग किया जा सकता है। मैं शंभु बाबू के बारे में बता रहा था कि वे कवि थे, लेकिन वे जब तक जीवित रहे उनहोंने अपनी कविताओं को प्रकाशित नहीं किया। वे बहुत अच्छे कहानी लेखक भी थे। और संयोग से एक फिल्म डायरेक्टर उनसे और उनकी एक कहानी पर आधारित जो महान फिल्म बनी है उसका नाम है: ''झांसी की रानी '' इस पिक्चर को अनेक राष्टीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले है। लेकिन अफसोस कि अब वे नहीं है। वहां पर वे ही मेरे एकमात्र मित्र थे। एक बार जब निर्णय हो गया कि मैं वहीं पर रहूंगा—वहां रहने की योजना सात साल की थी, लेकिन असल में मैं वहां ग्यारह साल रहा। शायद मुझे वहां रहने को राज़ी करने के लिए उन्होंने सात साल कहे होगें। या शायद शुरू से ही उनका यही इरादा था। शायद यही उनकी इच्छा थी और वे मुझसे

झूठ नहीं बोल रहे थे। लेकिन एक दूसरा तरीका भी था और वही हुआ। चार वर्ष के बाद तुम उसी पद्धति पर ही अपनी आगे की पढाई कर सकते हो। या मिडिल स्कूल में दाखिल हो सकते थे। पहली पद्धति के अनुसार चलते रहने के अनुसार अंग्रेजी नहीं सीख सकते थे। प्राथमिक शिक्षा सात साल के बाद समाप्त हो जाती थी। और सिर्फ स्थानीय भाषा में पूरी तरह शिक्षित हो जाते थे। और भारत में तीस भाषाओं को मान्यता मिली हुई है। लेकिन चौथे बरस के बाद छात्र के लिए विकल्प था, वह अंग्रेजी स्कूल में दाखिल हो सकता था। मिडिल स्कूल में जा सकता था। वह भी चार साल का पाठ्यक्रम था। और उसी क्रम में पढाई करते रहने पर और तीन साल के बाद मीट्रिक की परीक्षा पास कि जा सकती थी।

हे भगवान, जीवन के इतने सुंदर वर्षों को इतनी बेरहमी से, इतनी क्रूरता से नष्ट कर दिया जाता है। कुचल दिया जाता है। मीट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद ही विश्वविद्यालय में दाखिल हो सकते थे। फिर विश्वविद्यालय में छ: साल का पाठ्यक्रम होता था। इस प्रकार मुझे चार साल प्राइमरी स्कूल में, चार साल मिडिल स्कूल में, तीन साल हाई स्कूल में और छ: साल विश्विद्यालय में—मेरे जीवन के कुल सत्रह बरस बरबाद करने पड़े। यह कैसी व्यवस्था है। नासमझी और मूर्खता की कोई सीमा नहीं। सत्रह वर्ष, मैं आठ या नौ साल का था जब मैंने इस मूर्खता को आरंभ किया। विश्वविद्यालय को छोड़ते समय मैं छब्बीस बरस का था। मैं बहुत खुश था, इसलिए नहीं कि मैं ''गोल्ड मैडलिस्ट'' था। बल्कि इसलिए क्योंकि अंत में अंक मैं मुक्त हो गया था। अब मैं फिर स्वतंत्र था। वहां से जाने के लिए मैं इतना उतावला हो रहा था कि मैंने अपने प्रोफसर से कहा: 'आप मेरा समय बरबाद मत कीजिए। इस फाटक के भीतर पुन: प्रवेश करने के लिए कोई भी मुझे राज़ी नहीं कर सकता। जब मैं नौ बरस का था तब भी मेरे पिता को मुझे घसीट कर भीतर ले जाना पडा था। लेकिन अब कोई घसीट नहीं सकता। अगर कोई कोशिश भी करे तो मैं उसे घसीट कर बहार ले आऊँगा।' और सचमुच मैंने उस बेचारे सज्जन को घसीट ही लिया। जो मुझे वहाँ रोकने की पूरी कोशिश कर रहे थे। वे मुझे समझा रहे थे कि पी.एच. डी.के लिए ऐसी छात्रवृति बड़ी मुश्किल से मिलती है। और फिर मैं इसी तरह से डी.लिट. भी कर सकता हूं। मैंने कहा: 'मेरा समय बरबाद मत कीजिए क्योंकि मेरी बस छूट रही है। बस वहां दरवाजे पर खड़ी था। मुझे दौड़ कर उसे पकड़ना था। मुझे खेद है कि मैं उन्हें धन्यवाद भी न दे सका। मेरे पास समय न था। बस छूट रही थी और मेरा सामान बस पर चढ़ चुका था और उसका ड्राइवर जैसा कि ड्राइवर करते है, बड़ी बेसब्री से हॉर्न बजा रहा था।'

केवल मैं ही ऐसा मुसाफिर था जो बस के बाहर खड़ा था और मेरे वृद्ध प्रोफेसर मेरी मिन्नत कर रहे थे कि मैं न जाऊँ। जब शंभु बाबू से मेरी मित्रता आरंभ हुई तो शंभु बाबू तो अत्यंत शिक्षित थे और में था अशिक्षित। उनका अतीत सुनहरा था और कोई अतीत न था। सारे गांव को हमारी मित्रता पर आश्चर्य होता था। लेकिन शंभु बाबू को इस मित्रता से कोई संकोच नहीं होता था। इस विशेषता कर मैं बहुत आदर करता हूं। हम दोनों हाथ में हाथ डाले घूमते थे। वे मेरे पिता की उम्र के थे और उनके बच्चे भी मुझसे बड़े थे। मेरे पिता की मृतयु के दस साल पहले उनकी मृत्यु हुई। उस समय शायद वे पचास बरस के थे। सह समय हमारी मित्रता के लिए उपयुक्त होता। उस समय मुझे ठीक से पहचानने वाले केवल शंभु बाबू ही थे। उस गांव में उनका बड़ा दबदबा था और उनकी मित्रता ने मेरी बडी सहायता की। काना मास्टर तो फिर कभी स्कूल में देखा न गया। सेवा निवृति होने से पहले उसको छुट्टी पर भेज दिया गया। सेवा-काल बढ़ाने का उसका आवेदन पत्र नामंजूर कर दिया गया। इसलिए गांव में उत्सव मनाया गया। काना मास्टर उस गांव में उस समय बहुत प्रभावशाली माना जाता था। लेकिन मैंने एक ही दिन में उसका पत्ता काट दिया। यह बहुत बड़ी बात थी। लोग मुझे सम्मान की दृष्टि से देखने लगे। मैंने उनसे कहा कि मैंने तो कुछ नहीं किया, मैने तो केवल उसके गलत कामों को उजागर

किया है। मुझे हैरानी होती है यह सोच कर कि कैसे उसने जीवन भर छोटे-छोटे बच्चों को सताया। उस समय लोगों की यह धारणा थी कि बिना मारे-पीटे बच्चों को पढ़ाया नहीं जा सकता। अभी भी बहुत से भारतीय ऐसा ही सोचते है--वे इस बात को मानें या न मानें।

तो मैंने लोगों यह कहा: 'मेरे प्रति आदर का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। शंभु बाबू से मेरी जो मित्रता है उसमें आयु से अंतर से कोई अड़चन नहीं होती। वास्तव में वे मेरे पिता के मित्र थे।'

मेरे पिताजी को भी इस मित्रता पर बहुत आश्चर्य होता था। इन्होंने शंभु बाबू से पूछा: 'इस शैतान लड़के से आपकी इतनी दोस्ती क्यों है?' शंभु बाबू ने हंसते हुए कहा: इसके बारे में अभी तो मैं कुछ नहीं कह सकता, लेकिन एक न एक दिन आप अवश्य समझ जाएंगे।'

उनके सौदर्य पर मुझे सदा आश्चर्य हाता था। यह उनके सौंदर्य का हिस्सा था कि वे कहा सके कि मैं उत्तर नहीं दे सकता, एक दिन आप खुद समझ जाएंगे फिर एक दिन उन्होंने मेरे पिता जी से कहा, इस लड़के से मुझे दोस्ती नहीं वरन इसके प्रति मुझे आदर प्रकट करना चाहिए। उनके इन शब्दों को सुन कर मैं भी चौंक उठा। जब हम दोनों अकेले थे तो मैंने उनसे पूछा, शंभु बाबू आपने पिताजी से क्या कह रह रहे थे। आपको सम्मान करना चाहिए। इसका क्या मतलब है।

उन्होंने कहा: 'हां, मैं तुम्हारा आदर करता हूं, क्योंकि में देख सकता हूं बहुत साफ-साफ नहीं लेकिन एक धुँधले परदे के पीछे से दिखाई देता है कि एक दिन तुम क्या बनोगें।'

इस पर मैंने अपने कंधे बिचकाते हुए कहा: 'भला मैं क्या बनूंगा। में तो अभी भी वही हूं।'

उन्होंने कहा: 'यही , तुम्हारी इन्ही बातों पर तो मुझे हैरानी होती है। तुम बच्चे हो। सारा गांव हमारी मित्रता पर हंसता है। उनकी समझ में नहीं आता कि हम दोनों आपस में क्या बातें करते है। लेकिन उन्हें नहीं मालूम कि वे क्या चूक रहे है।'

मुझे मालूम है: 'उन्होंने कुछ जोर देकर कहा, हां मुझे मालूम है कि मैं क्या चूक रहा हूं। मैं उसे कुछ-कुछ महसूस कर सकता हूं लेकिन मैं उसको स्पष्ट नहीं देख सकता हूं। मुझे धुंधला सा दिखाई देता है। शायद एक दिन जब तुम बड़े हो जाओगे तब मैं अच्छी तरह से देख सकूंगा कि तुम क्या हो।'

और आज मैं यह स्वीकार करता हूं कि मग्गा बाबा के बाद शंभु बाबू दूसरे आदमी थे जो यह समझ सके कि मेरे साथ कुछ अवर्णनीय घटा है। वे रहस्य दर्शी तो नहीं थे, लेकिन बहुत अच्छे कवि थे। और कवि को कभी-कभी अचानक रहस्य की झलक मिल जाती है। वे महान व्यक्ति थे। क्योंकि उन्होंने किसी कवि सम्मेलन में भाग नहीं लिया। बड़ा अजीब लगता था कि वे अपनी कविता मुझे, नौ साल के बच्चे को, सुनाते थे और मेरी राय पूछते थे कि कविता अच्छी है या नहीं। अब उनकी कविताएं प्रकाशित हुई है। लेकिन अब वे नहीं रहे। उनकी स्मृति में इन्हें प्रकाशित किया गया है। लेकिन इनमें उनकी बढ़िया कविताओं को संकलित नहीं किया गया। उनकी कविताओं का चुनाव तो कोई रहस्य दर्शी ही कर सकता था। संकलन करने वाले तो कवि भी नहीं थे। जो भी उन्होंने लिखा था वह मैंने देखा है। बहुत ज्यादा नहीं था—कुछ लेख थे, कुछ कहानियां थी, कुछ कविताएं थी। लेकिन अजीब बात तो यह है कि उन सबका विषय एक ही है और वह है ''जीवन'' दार्शनिक जीवन नहीं काल्पनिक जीवन नहीं—जीवन जैसा है वैसा—क्षण-क्षण में जो जिया जाए, ऐसा जीवन अंग्रेजी के शब्द 'लाइफ ' (जीवन) को वे बड़े एल से नहीं, छोटे एल के साथ लिखते थे, क्योंकि वह अंग्रेजी में बड़े अक्षर के प्रयोग के विरूद्ध थे। अंग्रेजी के वाक्य के आरंभ में भी वे छोटा अक्षर ही लिखते थे। एक दिन मैंने उनसे पूछा: 'बड़े अक्षरों में क्या गलती है, आप बड़े अक्षरों के विरूद्ध क्यों है।'

उन्होंने कहा: 'मैं उनके विरूद्ध नहीं हूं। मुझे सुदूर भविष्य से नहीं, वर्तमान से प्रेम है। मुझे प्रेम है छोटी-छोटी चीजों से, और इनको बड़े अक्षरों में नहीं लिखा जो सकता। जैसे चाय का प्याला, नदी में तैरना, आराम से लेट कर धूप सेंकना..।' मैं उन्हें अच्छी तरह समझता हूं। यद्यपि वे सुबुद्ध या जाग्रत गुरु नहीं थे—किसी भी प्रकार से उन्हें गुरु नहीं कहा जा सकता—फिर भी मैं उनका स्थान मग्गा बाबा के बाद द्वितीय मानता हूं। क्योंकि उन्होंने मुझे तब पहचाना जब कि पहचानना असंभव था। बिलकुल ही असंभव था। उस समय तो शायद में भी अपने आपको नहीं पहचान पाता। लेकिन शंभु बाबू ने मुझे पहचान लिया। जब मैंने पहली बार उनके उप सभापति के आफिस में प्रवेश किया और हम दोनों की आंखें मिली तो एक क्षण के लिए तो मौन छा गया, फिर वे खड़े हो गए और उनहोंने मुझसे कहा, 'कृपया बैठिए।'

मैंने कहा: 'लेकिन आपको खड़े होने की क्या जरूरत है?'

उन्होंने कहा: 'जरूरत का सवाल ही नहीं है, तुम्हें देख कर खड़े होने का मन हुआ, मुझे खुशी हुई, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। मैं गवर्नर जैसे अन्य शक्तिशाली लोगों के सामने भी खड़ा हुआ हूं। नई दिल्ली में मैंने वाइसराय को भी देखा है। लेकिन उन्हें देख कर भी में ऐसा विस्मय से नहीं भरा जैसा तुम्हें देख कर हुआ है। यह बात किसी को बताना मत।'

और मैंने चालीस बरस तक इस बात को गुप्त रखा है। आज पहली बार मैं इसे बता रहा हूं। और इसका उल्लेख करते हुए मुझे संतोष हो रहा है।

शंभु बाबू एक ऐसे व्यक्ति थे कि जो संबुद्ध हो सकते थे, लेकिन चूक गए। अपनी अतिबौद्धिकता के कारण वे चूक गए। वे महा मनीषी थे। वह एक क्षण के लिए भी चुप नहीं रह सकते थे। उनकी मृत्यु के समय मैं उनके पास था। वह विचित्र संयोग है कि मुझे उन सब लोगों की मृत्यु देखनी पड़ी जिनसे मैं प्रेम करता था। मरने से पहले उन्होंने मुझे टेलिफोन किया कि ''जल्दी आ जाओ। मैं शायद ही कुछ दिन जीवित रह सकूंगा।'' जबलपुर उस गांव से अस्सी मील दूर था। मैं तुरंत चल पडा और दो घंटे में वहां पहुंच गया। वह मुझे देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने मुझे उसी दृष्टि से देखा जैसे उन्होंने मुझे पहली बार देखा था जब में नौ बरस का था। कुछ कहा नहीं गया, लेकिन सब कुछ सुन लिया गया—उस समय का मौन बहुत मुखर था। उनका हाथ पकड़ कर मैंने कहा: 'आप आंखें बंद कर लीजिए, खुली मत रखिए।'

उन्होंने कहा: 'आंखें तो जल्दी ही अपने आप बंद होने बाली है। तब मैं उनको खोल नहीं सकूंगा। तुम मुझे आंखे बंद करने को मत कहो। इस समय मैं तुम्हें देखना चाहता हूं। इसके बाद शायद मैं तुम्हें दुबारा देख नहीं सकूंगा, क्योंकि एक बात निश्चित है कि इसके बाद तुम जन्म नहीं लोगे। काश, मैंने तुम्हारी बात मानी होती, तुमने कितनी बार मुझसे मौन होने को कहा, लेकिन में सदा टालता रहा। अब तो टालने का भी समय नहीं रहा।
'

उनकी आंखों में आंसू भर आए। मैं उनके पास चुपचाप बैठा रहा। उन्होंने आंखे बंद की और उनके प्राण निकल गए। उनकी आंखें बहुत ही सुंदर थी। उनका चेहरा बहुत ही प्रतिभापूर्ण था। मैं बहुत से सुंदर लोगों को जानता हूं। लेकिन उनके जैसा सुंदर व्यक्ति दूसरा नहीं दिखा। उनका सौंदर्य दिव्य था। वे मेरे बहुत प्रिय थे और अभी भी है। अभी तक उनहोंने शरीर धारण नहीं किया है और मैं उनकी प्रतीक्षा कर रहा हूं।

इस कम्यून के कई उद्देश्य है। कुछ उद्देश्यों को तो तुम जानते हो और कुछ की जानकारी केवल मुझे ही है। कम्यून के व्यवस्थापकों को यह नहीं मालूम कि मैं कुछ आत्माओं की प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैं कुछ ऐसे दंपतियों को भी तैयार कर रहा हूं जो उन आत्माओं को ग्रहण कर सकेंगी। शंभु बाबू जल्दी ही यहां आ जाएंगे। इस व्यक्ति से संबंधित इतनी स्मृतियाँ है कि मुझे बार-बार उनका उल्लेख करना पड़ेगा। लेकिन आज तो मैं केवल उनकी

मृत्यु के बारे में ही बताना चाहता हूं। बड़ी अजीब बात तो यह है कि मैं पहले उनकी मृत्यु की चर्चा कर रहा हूं और दूसरी बातों की बाद में। जहां तक मेरा प्रश्न है, मुझे यह अजीब नहीं लगता, क्योंकि मुझे मालूम है कि मृत्यु के क्षण में व्यक्ति पूर्णत: खिल जाता है, प्रस्फुटित हो जाता है। प्रेम में भी ऐसा चमत्कार नहीं होता। हो सकता है, लेकिन प्रेमी इसे रोक देते है। इसमें बाधा डाल देते है। प्रेम में दो व्यक्ति की आवश्यकता होती है। मृत्यु में तो व्यक्ति अकेला ही पर्याप्त है। मृत्यु में दूसरा कोई अड़चन, कोई बाधा नहीं डाल सकता। मैंने शंभु बाबू को इतने आनंद और इतनी शांति से मरते हुए देखा है कि मैं उनके चेहरे को कभी भूल नहीं सकता।

तुम्हें जाना कर आश्चर्य होगा कि उनका चेहरा अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति निकसन से मिलता था। निकसन की कुरूपता उनमें नहीं थी। अन्यथा शंभु बाबू भी भारत के राष्ट्रपति बन जाते। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे भारत के राष्ट्रपति संजीव रेड्डी से कहीं अधिक प्रतिभाशाली थे। लेकिन मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि देखने में तो वे ऐसे दिखाई देते थे जैसा निकसन अपनी कम उम्र में दिखाई देता था। सच तो यह है कि जब आत्माएं भिन्न होती है तो बाह्य रूप के साम्य के बावजूद चेहरे का आभा मंडल अलग ही होता है। इसलिए मुझे गलत मत समझना। क्योंकि तुम सब लोग तो रिचर्ड निकसन को जानते हो और केवल मैं ही शंभु बाबू को जानता हूं। इस लिए गलतफहमी हो सकती है। अब यह भूल जाओ कि मैंने कहा कि वे एक जैसे दिखाई देते है। भूल जाओ, अच्छा यही है कि तुम शंभु बाबू के चेहरे को बिलकुल न जानों, बजाए इसके की तुम उन्हें रिचर्ड निकसन की तरह सोचने लगो।

जब निकसन अमरीका का राष्ट्रपति बना, तो मैंने सोचा, वहाँ, कम से कम शंभु बाबू जैसा दिखाई देने बाला आदमी अमरीका का राष्ट्रपति बन गया। हां, इन दोनों के चेहरों के साम्य से ही मुझे संतोष हो गया। जब निकसन ने वह कांड किया तो मुझे बहुत शर्म आई, क्योंकि वह शंभु बाबू जैसा दिखाई देता था। जब उसने राष्ट्रपति के पद से त्याग पत्र दिया तो मैं उदास हो गया—उसके कारण नहीं, उससे तो मेरा कोई संबंध नहीं था। इसलिए कि अब मैं समाचार पत्रों में शंभु बाबू का चेहरा न देख सकूंगा। अब तो यह समस्या भी नहीं रही, क्योंकि अब मैं समाचार पत्र नहीं पढ़ता। कई वर्षो से मैंने उन्हें पढ़ा ही नहीं। एक समय था जब मैं चार समाचार-पत्रों को एक मिनट में पढ लेता था। लेकिन पिछले दो साल से मैंने एक भी अख़बार नहीं पढ़ा। अब मैं किताबें भी नहीं पढ़ता—कुछ भी नहीं पढ़ता। अब मैं पुन: अशिक्षित हो गया हूं। जैसा मैं सदा होना चाहता था। अगर मेरे पिता जबरदस्ती मुझे घसीट कर स्कूल के भीतर न ले जाते....लेकिन उन्होंने घसीटा तो था ही। और इन सब स्कूलों, कलेजों और विश्वविद्यालयों ने मुझे जो सिखाया उसको भुलाने में, उसको मिटाने में मरी बहुत ऊर्जा बहुत शक्ति खर्च हुई। लेकिन ऐसा करने में मैं सफल हुआ। समाज ने मुझे जो भी सिखाया उसको मैंने बिलकुल मिटा दिया है और अब मैं दुबारा अशिक्षित गंवार लड़का बन गया हूं। अंग्रेजी में इसके लिए कोई शब्द नहीं है। लेकिन हिंदी में गांव के आदमी को गंवार कहते है। देहात को गांव कहा जाता है। और देहाती को गंवार। लेकिन गंवार का अर्थ मूर्ख भी होता है। और ये दोनों अर्थ इतने घुल मिल गए है कि अब यह कोई नहीं सोचता कि गंवार का अर्थ देहाती होता है। सभी सोचते है कि इसका अर्थ मूर्ख ही होता है।

मैं तो गांव से उस कोरे कागज जैसा आया था जिस पर कुछ भी नहीं लिखा गया था। गांव से दूर रहने पर भी मैं जंगली लड़का ही बना रहा। मैंने कभी किसी को मुझ पर कुछ लिखने नहीं दिया। लोग तो सदा तैयार रहते है—तैयार ही नहीं, वे आग्रह करते है कि किसी न किसी प्रकार तुम पर कुछ लिख दिया जाए। मैं तो गांव से बिलकुल खाली आया था। और सच तो यह है कि मैंने उस दीवाल को ही गिरा दिया जिस पर दुबारा कुछ लिखा जा सकता। शंभु बाबू भी ऐसा कर सकते थे। मुझे मालूम है कि वे बुद्ध होने के योग्य थे। लेकिन हुए नहीं। शायद दनका पेशा—वे वकील थे—बाधा बन गया। मैने अनेक प्रकार के लोगों का बुद्ध होना सुना है। लेकिन

आज तक कभी किसी वकील को बुद्ध होते नहीं देखा। इस पेशे का आदमी तब तक बुद्ध नहीं हो सकता जब तक वह अपनी समस्त शिक्षा का परित्याग न कर दे। शंभु बाबू इतना साहस न कर सके। मुझे उनके लिए बहुत ही अफसोस हाता है। किसी दूसरे कि लिए मुझे कोई अफसोस नहीं है। क्योंकि ऐसा कोई दूसरा मुझे मिला ही नहीं जिसमें इतनी योग्यता हो और फिर भी छलांग न लगा सके।

मैं बार-बार पूछता: 'शंभु बाबू, क्या झिझक है?'

और वे सदा एक ही उत्तर देते: 'क्या बताऊ? कैसे बताऊ? मुझे खुद ही नहीं मालूम कि अड़चन क्या है।'

मुझे मालूम है कि अड़चन क्या थी? उनको भी मालूम था। लेकिन उन्होने कभी यह माना नहीं कि उनको यह मालूम था। वे यह भी जानते थे कि मैं जानता हूं कि उनको मालूम है। जब भी मैं उनसे यह प्रश्न पूछता तो वे आंखे बंद कर लेते। लेकिन मैं भी कम जिद्दी नहीं हूं। मैं उनसे बार-बार पूछता, 'बताइए' अड़चन क्या है? वे अपनी आंखे बंद कर लेते, क्योंकि वे मेरी आंखों से आँख नहीं मिलाना चाहते थे। क्योंकि तब वे झूठ नहीं बोल सकते थे, तब वे वकीलों का झूठ नहीं बोल सकते थे। अब तो वे जीवित नहीं है। अब मैं यह कह सकता हूं कि यद्यपि वे बुद्ध नहीं थे, तथापि वे बुद्धत्व के बहुत निकट थे। किसी और के बारे में मैं ऐसा कभी न कहता। 'बुद्धत्व के निकट' होने का विशेष वर्ग मैंने केवल शंभु बाबू के लिए ही रखा है।

सत्र—22 शंभु बाबू से अंतिम बिदाई

आज सुबह मैंने कार्ल गुस्ताव जुंग के शब्द सिन्क्रॉनिसिटी का उल्लेख किया था। मुझे वह आदमी अच्छा नहीं लगता, लेकिन उसने जिस नए शब्द को चालू किया वह मुझे बहुत पसंद है। उसके लिए तो उसको हर संभव श्रेय मिलना चाहिए। और किसी भी भाषा में सिन्क्रॉनिसिटी जैसे शब्द नहीं है। सब शब्द न किसी के द्वारा तो बराए ही गए है। इसलिए किसी शब्द के गढ़ने में कोई बुराई तो नहीं है। विशेषत: तब वह शब्द किसी ऐसे अनुभव को अभिव्यक्त करता हो जिसको सदियों से कोई नाम न दिया गया हो। केवल इस एक शब्द, सिन्क्रॉनिसिटी के लिए जुंग को नोबल पुरस्कार मिलना चाहिए था। हालांकि था तो एक दम अति साधारण। परंतु जब इतने सारे साधारण लोगों को नोबल पुरस्कार मिला है तो एक को और मिल जाता तो इसमें क्या गलत था। और वे नोबल पुरस्कार तो मरणोपरांत भी देते है तो कृपया इस बेचारे कार्ल गुस्ताव जुग को भी नोबल पुरस्कार दे दो। मैं मजाक नहीं कर रहा। इस शबद के लिए मैं सचमुच आभारी हूं, क्योंकि मनुष्य की बुद्धि इसको कभी ठीक से नहीं पकड़ पाई, यह सदा उसकी समझ के बाहर रहा है। मैं तुम लोगों से शंभु बाबू के साथ अपनी अजीब दोस्ती के बारे में चर्चा कर रहा था। वह कई अर्थों में अजीब थी। पहली तो बात कि वे मेरे पिता से भी बड़े थे या शायद उसी उम्र के थे, लेकिन जहां तक मुझे याद है वे अधिक बूढे लगते थे और मैं था केवल नौ साल का। अब बताओ कि यह कैसी दोस्ती था। वह कानून के सफल विशेष्ज्ञ थे, सिर्फ उस गांव में ही नहीं वरन हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में भी वकालत करते थे। वे कानून के उच्चतम अधिकारियों में से एक थे। और वे एक अशिक्षित, अनुशासनहीन, जंगली और ग्रामीण बच्चे के मित्र थे। मैं पहली मुलाकात में जब उन्होंने मुझसे कह कि बैठिए, तो मैं तो बस हैरान रह गया। मैं सोच भी नहीं सकता था कि उप सभापति स्वयं उठ कर मेरा स्वागतक करेंगे और कहेंगे कि बैठिए।

मैंने उनसे कहा: 'पहले आप बैठिए, आप बुजुर्ग है, शायद आप मेरे पिता से भी बड़े है। आपसे पहले बैठने में मुझे संकोच होता है।'

उनहोंने कहा: 'इसकी फ़िकर मत करो। मैं तुम्हारे पिता का मित्र हूं। आराम से बैठ कर मुझे बताओ कि तुम यहां क्यों आए हो।'

मैंने कहा: 'यह तो मैं आपको बाद में बताऊंगा कि मैं यहां क्यों आया हूं, लेकिन पहले ..' उन्होंने मेरी और देखा और मैंने उनकी और देखा, हम दोनों की आंखें मिलीं और उस क्षण में जो घटा वही मेरा पहला प्रश्न बन गया। मैंने उनसे पूछा: 'पहले मुझे यह बताइए कि अभी-अभी हमारी आंखों के बीच क्या घटा?'

उन्होंने अपनी आंखें बंद कर लीं और शायद दस मिनट बीत गए फिर उनहोंने आंखें खोली। उन्होंने कहा: 'माफ करन। मेरी समझ में नहीं आया कि क्या हुआ, लेकिन कुछ घटा अवश्य है।'

उस समय से हम मित्र बन गए। यह उन्नीस सौ चालीस की बात है। उन्नीस सौ साठ में उनकी मृत्यु हुई। उनके मरने के एक साल पहले—हमारी मित्रता के बीस बरस बाद—अजीब मित्रता थी—मैं उन्हें वह शब्द बता सका जिसे वे बरसों से खोज रहे थे। और यह शब्द कार्ल गुस्ताव जुंग द्वारा गढ़ा गया अंग्रेजी का शब्द सिन्क्रॉनिसिटी था। हम दोनों में यही हुआ था। उनको भी मालूम था कि क्या हुआ और मुझे भी मालूम था कि क्या हुआ, पर इसे अभिव्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिल रहा था। सिन्क्रॉनिसिटी शब्द के एक साथ कई अर्थ है। यह बहुआयामी शब्द है। इसका अर्थ हो सकता है: एक खास लयबद्ध भाव। इसका अर्थ हो सकता है: जिसको लोग सदा से प्रेम कहते है। इसका अर्थ हो सकता है: मित्रता, इसका अर्थ हो सकता है दो ह्रदय का अकरण एक हो जाना, एक साथ धड़कना...यह एक रहस्य है। संयोगवशात कभी ऐसा कोई व्यक्ति मिल जाता है

जिसके साथ पटरी ठीक बैठ जाती है; सारी जिग्सा पज़ल हल हो जाती है। पज़ल के हिस्से जो ठीक नहीं बैठ रहे थे, सब अपने आप सही बैठ जाते है।

तब मैंने अपनी नानी को बताया कि इस गांव के उप सभापति से मेरी दोस्ती हो गई है, तो उन्होंने पूछा, 'क्या तुम्हारा मतलब शंभु रत्न दुबे के साथ ?'

मैंने कहा: 'हां, लेकिन नानी आपको क्या हो गया है'? आपको इतना आश्चर्य क्यों हो रहा है।' उनकी आंखों से आंसू गिरने लगे। उन्होंने कहा: 'तब तुम्हें इस दुनिया में बहुत मित्र न मिलेंगे। मुझे चिंता इसी बात कह है। अगर शंभु बाबू तुम्हारे दोस्त बन गए है तो इस दुनिया में तुम्हें बहुत मित्र न मिलेंगे। और सिर्फ यही नहीं, तुम्हें तो शायद मित्र मिल भी जाएं क्योंकि तुम बहुत छोटे हो, लेकिन शंभु बाबू को इस संसार में निश्चित ही कोई मित्र नहीं मिलेगा क्योंकि वे उम्र में बहुत बड़े है।'

मेरी कहानी में नानी का उल्लेख उनकी अनोखी अंतर्दृष्टि के साथ बार-बार आएगा। जब मेरी समझ में आता है कि उन्होंने क्या देखा और वे क्यों रोई। अब मैं यह अच्छी तरह से जानता हूं शंभु बाबू के, सिवाय मेरे, कोई मित्र नहीं था।

मैं अपने गांव साल में एक दो बार ही जाता था। और जैसे-जैसे मैं अपने काम मैं—जिसे तुम निष्क्रियता भी कह सकते हो—संन्यास आंदोलन और ध्यान शिविरों में व्यस्त होता गया, वैसे-वैसे मेरा गांव जाना और भी कम होता गया। सच तो यह है कि उनके मरने के कुछ साल पहले मैं तब तक ही गांव में रुकता था तक स्टेशन पर मेरी गाड़ी रुकती थी। स्टेशन मास्टर मेरा संन्यासी था। इसलिए जब तक मैं चाहता तब तक मैं गाड़ी को वहां रोक सकता था। क्योंकि दुसरी गाड़ी स्टेशन के बहार इंतजार करती खड़ी रहती थी। वहीं मेरी उनसे मुलाकात हाथी थी। दस, बीस, अधिक से अधिक तीस मिनट इससे अधिक मेरी गाड़ी को रोक सकना संभव नहीं था। वे सब लोग अर्थात मेरे माता-पिता, शंभु बाबू तथा बहुत से अन्य मित्र, जो मुझसे प्रेम करते थे, मुझसे मिलने स्टेशन पर आ जाते थे। मैं उनके एकाकीपन को समझ सकता हूं। उनका और कोई मित्र नहीं था। प्राय: हर रोज वे मुझे ऐ पत्र लिखते थे—ऐसा बहुत कम होता है—और लिखने को कुछ था नहीं कभी-कभी तो वे लिफाफे में कोरा कागज रख कर भेज देते थे। में वह भी समझ जाता था। वे बहुत ही अकेला महसूस करते थे और उन्हें मेरे साथ होने की इच्छा थी। मैं वहां जाने की यथासंभव कोशिश करता था। उनके कारण ही मैं वहां जाने की तकलीफ उठाता था। उनकी मृत्यु के बाद तो मैं वहां बहुत कम गया हूं। मैं यह बहाना बना देता था कि मुझे शुभ बाबू की याद आती है। इस लिए मैं वहां नहीं जाता। पर सच बात तो यही थी कि अब वहां जाने का कोई अर्थ नहीं था। जब वे वहां नहीं थे तो मेरा वहां जाने का कोई मतलब ही नहीं था। वे रेगिस्तान में हरियाली के समान थे। मेरे कारण शंभु बाबू की जो निंदा और आलोचना हो रही थी उससे वे बिलकुल नहीं डरते थे। उन दिनों में भी मुझसे संबंधित होना कोई अच्छी बात नहीं थी। यह खतरनाक था। लोग उनको यही समझाते थे कि इस लड़के की दोस्ती के कारण कोई आपका आदर नहीं करेगा। उन लोगों ने आपको उप सभापति से सभापति बनाया है। अंततः मैंने उनसे कहा: 'शंभु बाबू आपकी मेरी दोस्ती और इस बेवकूफ गांव के सभापति होने में चुनाव करना होगा।'

उन्होंने सभापति के पद से त्याग पत्र दे दिया। उन्होंने मुझसे एक शब्द भी न कहा। मेरे सामने ही उन्होंने त्यागपत्र लिख दिया। मुझसे उन्होंने मुझसे कहा: 'तुम्हारे भीतर जो अपरिभाषित है मुझे उससे प्रेम है। इस गांव के सभापति होने का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं है। में तो तुम्हारे लिए सब कुछ छोड़ने को तैयार हूं। हां, सब कुछ।'

लोगों ने कोशिश की कि वे त्यागपत्र वापस ले लें, लेकिन उन्होंने उसको वापस नहीं लिया। मैंने उनसे कहा: 'शंभु बाबू आपको मालूम है कि मुझे इन सभापति और उप सभापति आदि पदों से बहुत धृणा है—चाहे वे

म्यूनिसिपैलिटी के हो और चाहे वे राष्ट्र के हों। मैं आपसे नहीं कह सकता कि आप अपना त्यागपत्र वापस ले लीजिए। मैं तो यह अपराध नहीं कर सकता। लेकिन अगर आप इसे वापस लेना चाहें तो आप स्वतंत्र है।'

उनहोंने कहा: 'अब मैं वापस नहीं ले सकता। जो होना था सो हो गया। तुमने अच्छा किया जो इसके लिए मुझ पर कोई दबाव नहीं डाला।'

वे एकाकी ही रहे। उनके पास आराम से रहने के काफी पैसा था। उन्होंने सभापति के पद से तो त्यागपत्र दिया ही साथ ही वकालत भी छोड़ दी। उन्होंने कहा: 'मेरे पास काफी पैसा है, फिर मैं क्यों परेशान होता रहूँ और वकालत तथा सच के नाम पर क्यों निरंतर झूठ बोलता रहूँ।

उनकी इस विशेषताओं से ही मुझे प्रेम था। बिना कुछ सोचे-विचारे उन्होंने एक क्षण में त्याग पत्र लिख दिया और दूसरे दिन से उन्होंने वकालत भी छोड़ दी। उनके कारण ही मुझे कभी-कभी गांव जाना पड़ता था। उनको अपने साथ कुछ दिन रहने के लिए बीच-बीच में अपने पास भी बुला लेता था। कभी कभार वे आ जाते थे। वे बहुत प्रामाणिक व्यक्ति थे। किसी प्रकार के नतीजे से वे डरते नहीं थे। एक बार उन्होंने मुझसे पूछा, 'तुम क्या करोगे? मेरा खयाल नहीं है कि तुम युनिवर्सिटी में प्रोफेसर का काम अधिक समय तक करोगे?'

मैंने कहा: 'शंभु बाबू, मैं कभी योजना नहीं बनाता। अगर मैंने यह काम छोड़ दिया तो मुझे विश्वास है कि मेरे लिए कोई दूसरा काम तैयार होगा। अगर परमात्मा...'और इस 'अगर' को याद रखना, क्योंकि वे आस्तिक नहीं थे। उनकी यह विशेषता भी मुझे बहुत प्रिय थी। वे कहा करते थे जब तक मैं स्वयं न जान लू तब तक मैं कैसे विश्वास कर सकता हूं।

मैने उनसे कहा: 'अगर परमात्मा सब प्रकार के लोगों के लिए काम खोज सकता है—पशुओं के लिए और वृक्षों के लिए—तो वह मेरे लिए भी अवश्यक कोई न कोई काम खोज लेगा। और अगर वह न खोज सका तो यह उसकी समस्या है, मेरी नहीं।' उन्होंने हंस कर कहां: 'हां, यह बात बिलकुल ठीक है, अगर वह कहीं है तो यह उसकी समस्या है। लेकिन सवाल यह है कि अगर वह नहीं है तब क्या होगा?'

मैंने कहा: 'तब भी मेरे लिए कोई समस्या नहीं होगी। अगर मेरे लिए कोई काम नहीं है तो में एक गहरी सांस लेकर अस्तित्व से विदा ले लुंगा। यही इस बात का प्रमाण बन जाएगा की मेरी आवश्यकता नहीं है। अगर मेरी आवश्यकता नहीं है तो मैं जबरन अपने आपको अस्तित्व पर नहीं थोपूगां।'

अगर हमारी बातचीत और हमारे तर्कों को दुबारा उसी प्रकार प्रस्तुत किया जाए तो वे प्लेटों के वार्तालापों से कहीं अच्छे सिद्ध होंगे। शंभु बाबू बहुत ही तर्कयुक्त व्यक्ति थे। मैं जितना तर्कहीन हूं उतने ही वे तर्कसंगत थे। और यही सबसे ज्यादा आश्चर्यजनक बात है कि उस गांव में हम दोनों ही एक-दूसरे के मित्र थे। सब लोग मुझसे यही पूछते थे कि वे तो तार्किक है और तुम बिलकुल तर्कहीन, तुम दोनों के बीच पुल क्या है? संबंध-सूत्र क्या है?

मैने कहा: 'आप लोगों के लिए यह समझना मुश्किल होगा। क्योंकि आप दोनों में से एक भी नहीं हो। उनका तर्क उनको तर्क उनको अंतिम छोर तक पहुंचा देता है। मैं तर्कहीन हूं। मैं जन्म से ही तर्क हीन नहीं हूं। कोई भी जन्म से तर्क हीन नहीं होता। मैं इस लिए तर्क हीन हूं क्योंकि मैने तर्क की व्यर्थता को देख लिया है। क्योंकि मैंने देख लिया है कि तर्क कितना अर्थहीन है। मैं उनके तर्क के अनुसार उनके साथ काफी दूर तक जाता हूं। और फिर एक बिंदु पर पहुंच कर उससे आगे बढ़ जाता हूं। तब वे डर कर रूक जाते है और यही बात हमारी मित्रता को बनाए रखती है। क्योंकि वे जानते है कि उनको उस बिंदु के पार जाना है और वे ऐसे किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं जानते जो इसमें उनकी सहायता कर सके। आप सब....मेरा मतलब गांव के लोगों से था...सोचते है कि वे मेरी सहायता करते है। आप गलत है। आप उनसे पूछ सकते है। मैं उनकी सहायता करता हूं। तुम्हें

आश्चर्य होगा कि एक दिन तो कुछ लोग यह पूछने के लिए उनके घर पहुंच गए, 'क्या यह सच है कि यह छोटा सा लड़का आपका पथ-प्रदर्शक है या किसी प्रकार से सहायता करता है।'

उन्होंने कहा: 'निश्चित ही। इसमें कोई संदेह नहीं है। आप मुझसे पूछने क्यों आए है। आप उसी से क्यों नहीं पूछ लेते, आपके नजदीक ही तो वह रहता है।'

उनकी अंतर्दृष्टि बहुत स्पष्ट थी। तुमको यह जान कर बहुत आश्चर्य होगा कि अपने सारे जीवन में मुझे कोई मित्र नहीं मिला सिवाय शंभु बाबू के। अगर वे न होते तो मुझे यह कभी मालूम ही न होता कि मित्र का क्या अर्थ होता है। परिचित तो बहुत लोग थे—स्कूल, कालेज और युनिवर्सिटी में सैकड़ों लोगों से मेरा परिचय हुआ। तुमने और उन लोगों ने भी शायद समझा होगा कि वे मेरे मित्र है। लेकिन सिवाय शंभु बाबू के और मैंने किसी को मित्र के रूप में नहीं पाया। किसी से परिचित होना तो बहुत आसान है, परिचय तो बहुत साधारण है। लेकिन मित्रता साधारण जगत की बात नहीं है। तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा कि जब भी मैं बीमार पड़ता —और उस गांव से मैं अस्सी मील दूर रहता था—तो तुरंत ही शंभु बाबू का फोन आ जाता और वे अत्यंत चिंतित हो कर मेरा हाल-चाल पूछते। वे परेशान होकर पूछते, 'तुम ठीक तो हो।'

मैं कहता: 'आप इतने चिंतित क्यों हो रहे है, आपकी आवज से लगता है कि आप बीमार है।'

वे कहते: 'नहीं मैं बीमार नहीं हूं, मुझे ऐसा लगता है कि तुम बीमार हो। तुम मुझसे छीपा नहीं सकते। अब मुझे मालूम तो हो गया है कि तुम ठीक तो नहीं हो।'

ऐसा कई बार हुआ। तुमको विश्वास नहीं होगा कि केवल उनके कारण मैंने कारण मैंने टेलीफोन का प्राइवेट नंबर लिया। एक टेली फोन तो मेरे सैक्रेटरी के लिए था। जो देश भर में मेरे काम की व्यवस्था करता। लेकिन मेरा एक गुप्त निजी टेलीफोन भी था, जो केवल शंभु बाबू के लिए था। ताकि वे जब चाहें मुझे फोन कर सकते थे। जो केवल शंभु बाबू के लिए था। ताकि वे जब चाहे मुझे फोन कर सकते थे—आधी रात को भी। देश भर में सफर करते समय अगर मैं बीमार हो जाता तो मैं स्वयं ही उनको सूचित कर देता कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है लेकिन आप चिंता मत करना। इसको कहते है: सिन्क्रॉनिसिटी। कहीं अंतर की गहराई में हम दोनों एक-दूसरे से जुड़ हुऐ थे। जिस दिन उनकी मृत्यु होने वाली थी उस दिन मैं बिना पूछताछ किए ही उनके पास गया। मैं कार लेकर गांव के लिए रवाना हो गया। मुझे वह सड़क कभी पसंद न थी और कार चलाना अच्छा लगता है, लेकिन जबलपुर से गाडर वारा जाने वाली वह सड़क बहुत ही खराब थी। उससे खराब सड़क तो तुम्हें कहीं न मिलेगी। उसकी तुलना में तो एंटी लोप से रैंच को जोड़ने बाली हमारी सड़क सुपर हाईवे है। जर्मनी में इसे क्या कहते है, 'ऑटो बान'

हां, ओशो' युनिवर्सिटी से शंभु बाबू के घर तक की सड़क की तुलना में हमारी यह सड़क ऑटो बान है। मैं तेजी से गया...गहरे में मुझे आशंका हो रही थी। मैं हमेशा ही गाड़ी तेज चलाता हूं। तेज गति से मुझे चलना बहुत अच्छा लगता है। लेकिन उस सड़क पर तो एक घंटे में बीस मील की गति से अधिक नहीं चलाया जा सकता। इससे अधिक संभव नहीं है। अब तुम अनुमान लगा सकते हो कि वह सड़क कैसी होगी। जब तक तुम कहीं पहुँचों तब तक अगर तूम मरे नहीं तो अधमरे तो हो ही जाओगे। लेकिन एक बात बहुत अच्छी है कि शहर के भीतर प्रवेश करते ही नदी मिलती है। वहां नहा सकते हो, अपने को ताजा करने के लिए आधा घंटा तैर सकते हो और अपनी कार को भी अच्छी तरह से नहला सकते हो। इसके बाद जब शहर पहुँचेंगे तो तुम भूत जैसे दिखाई नहीं दोगे। मैं भागा। अपने जीवन में इतनी जल्दी मैंने कभी नहीं की—अभी भी नहीं जब कि अब मुझे जल्दी करनी चाहिए क्योंकि समय तेजी से बीत रहा है और वह दिन दुर नहीं है ज मुझे तुम लोगों से विदा लेनी

होगी—हालांकि शायद मैं कुछ दिन और रूकना चाहता । मेरे हाथ में तो कुछ भी नहीं है सिवाय इस कुर्सी के दोनों हाथों के और तुम देख सकते हो कि मैं उनको कैसे पकड़े हुए हूं—उनको महसूस करना चाहता हूं ताकि मुझे मालूम हो कि मैं अभी भी शरीर में हूं— चिंता मत करो—अभी भी थोड़ा समय है। उस दिन तो मुझे जल्दी करनी पड़ी—मेरी आशंका सच थी—अगर मुझे कुछ मिनटों की भी देरी हो जाती तो मैं शंभु बाबू की आंखों को फिर कभी न देख पता—मेरा मतलब है जीवित—वैसे ही मेरी तरफ देखते हुए जैसे उन्होंने मुझे पहली बार देखा था। मैं उनकी उस प्रथम दृष्टि को अंतिम बार देखना चाहता था। उस सिन्क्रॉनिसिटी को देखना चाहता था। और उनकी मृत्यु से पहले उस आधे घंटे में हम दोनों में शुद्ध कम्यूनियन, संवाद हुआ। मैंने उनसे कहा कि वे जो भी कहना चाहते है अवश्य कह दें। उन्होंने सबके बाहर भेज दिया। निश्चित ही उनको बुरा लगा। उनके भाइयों, बेटों और पत्नी को बुरा लगा। लेकिन उनहोंने स्पष्ट कह दिया, 'तुम लोगों को अच्छा लगे या न लगे, मैं चाहता हूं कि तुम सब जल्दी बहार चले जाओ, क्योंकि मेरे पास खराब करने के लिए अधिक समय नहीं है।'

स्वभावत: वे सब डर कर बहार चले गए। हम दोनों हंस पड़े। मैने कहा: 'आप मुझसे जो भी कहना चाहते है कह दें।'

उन्होंने कहा: 'मेरे पास कुछ नहीं है तुमसे कहने के लिए। बस तुम मेरे हाथों को अपने हाथों में ले लो। मैं तुम्हें महसूस करना चाहता हूं। कृपा करके मुझे अपनी उपस्थिति से भर दो। वे कहते गए, 'मैं घुटनों के बल बैठ कर तुम्हारे पैर नहीं छू सकता। ऐसा नहीं कि मैं वैसा करना न चाहूंगा, लेकिन मेरा शरीर बिस्तरे से उठने की स्थिति में नहीं है। मैं हिल भी नहीं सकता। अब मेरे पास कुछ ही मिनट बचे है।'

मुझे दिखाई दे रहा था कि मृत्यु द्वार तक पहुंच गई है। मैंने उनके हाथों को अपने हाथों में लिया और कुछ बातें कहीं जो उन्होंने बड़े ध्यान से सुनी। अपने बचपन में मैंने केबल दो ही ऐसे व्यक्तियों को जाना है जिनसे मुझे मालूम हुआ कि सच में एकाग्रता क्या है। पहली तो मेरी नानी थी। शंभु बाबू के साथ उनकी गिनती करते हुए मुझे अफसोस होता है। जब कि उनकी एकाग्रता शंभु बाबू जैसी थी, फिर भी उनमें कई और आयाम भी थे। सच तो यह है कि मुझे यह नहीं कहना चाहिए था कि दो लोग थे। लेकिन मैं यह कह ही चुका हूं। अब मुझे इसको जितनी अच्छी तक रसक हो सके उतनी अच्छी तरह से समझाने दो।

रोज रात को मेरी नानी के लिए यह एक धार्मिक कृत्य के समान था—ठीक उस तरह जिस तरह तुम लोग रात को और सुबह इंतजार करते हो...

सत्र—23 एकाकीपन या अकेलापन

मैं तुम्हें बता रहा था एक विशेष संबंध के बारे में जो एक करीब नौ साल के बच्चे और शायद पचास वर्ष के प्रौढ़ व्यक्ति में घटा। दानों की आयु में अंतर था, लेकिन प्रेम सब प्रकार की रुकावटों को पार कर जाता है। अगर चह पुरूष और स्त्री के बीच घट सकता है तो दूसरी इससे बड़ी क्या रूकावट और क्या हो सकती है। लेकिन इस संबंध को 'प्रेम' नहीं कहा जा सकता और यह था भी नहीं। मुझे अपना बेटा या पोता समझ कर भी प्रेम कर सकते थे, लेकिन ऐसा नहीं था।

जो घटा वह फ्रेंडलीनेस, मैत्री थी। और इस बात को रिकार्ड कर लो, मैं फ्रेंडलीनेस, मैत्री को प्रेम से कहीं अधिक मूल्य देता हूं। मैत्री, फ्रेंडलीनेस से ऊँचा और कुछ नहीं है। तूम लोगों ने देखा होगा कि मैंने फ्रेंडशिप मित्रता शबद का प्रयोग नहीं किया। कल तक तो इसका प्रयोग कर रहा था। लेकिन अब समय आ गया है जब मैं तुमको फ्रेंडशिप, मित्रता से भी कहीं महान फ्रेंडलीनेस, मैत्री के बारे में बताऊ। प्रेम की भांति मित्रता भी अपने तरीके से ऐ बंधन बन सकती है। मित्रता में भी ईर्ष्या, जलन, एकाधिकार का भाव, अपने प्रिय को खो देने का डर और इस डर के कारण ही इतना संघर्ष, झगड़ा, और दुःख होता है। सच तो यह है कि लोग सदा अपने प्रेमियों से झगड़ते रहते है। बड़े आश्चर्य की बात है, विश्वास नहीं होता इस पर, लेकिन ऐसा होता है। मनुष्य जो भी महसूस करता है या जानता है, उससे मैत्री कहीं उँची जाती है। यह तो अपने होने की सुगंध है। या तुम उसे होने की खिला वट कह सकते हो। दो आत्माओं के बीच कुछ घटता है। मैत्री तो इन सब तुच्छ, नगण्य और निरर्थक बातों से मुक्ति है, उस सबसे जिसे हम परिचित है, बहुत अच्छे से परिचित हैं। मैं समझ सकता हूं कि मेरी नानी ने शंभु बाबू से मेरी मित्रता होने पर क्यों आंसू बहाए। वे सही थी, जब उन्होंने कहा कि मुझे शंभु बाबू की चिंता है, वे बूढ़े है और अधिक समय तक जीवित नहीं रहेंगे। और आश्चर्य तो यह है कि शंभु बाबू मेरी नानी के मरने के पहले ही मर गए—ठीक दस साल पहले, जब कि मेरी नानी उम्र में उनसे बड़ी थी। अभी भी मुझे उस महीना की अंतर्दृष्टि पर आश्चर्य होता है। उन्होंने कहा था, वे तो जल्दी मर जाएंगे, फिर तुम्हारा क्या होगा? मेरा ह्रदय तो तुम्हारे लिए रोता है। तुम्हें अभी बहुत समय तक जीना है। तुम्हें शंभु बाबू जैसे गुणों वाले लोग बहुत नहीं मिलेंगे। उनकी मित्रता को तुम अपना मापदंड मत बनाओ—नहीं तो तुम्हें बहुत एकाकी जीवन जीना पड़ेगा।

मैंने कहा: 'नानी शंभु बाबू भी मेरे मापदंड से नीचे हैं। इसलिए आप चिंता मत करों, मैं तो अपनी दृष्टि के अनुसार अपने ही ढंग से रहूंगा—जहां भी जीवन ले जाए—शायद कहीं भी नहीं।' फिर मैंने कहा: 'लेकिन एक बात निश्चित है और मैं आपसे सहमत हूं' कि मुझे बहुत मित्र नहीं मिलेंगे।

और यह बात बिलकुल सच थी। स्कूल के दिनों में मेरा कोई दोस्त नहीं था। कालेज के दिनों में मुझे अजीब समझा जाता था। और विश्वविद्यालय में हां, लोगों ने सदा मेरा बहुत आदर किया है। लेकिन वह मित्रता नहीं है। मैत्री तो बहुत दूर की बात है। बड़ा विचित्र भाग्य है मेरा, बचपन से ही मुझे बहुत आदर मिला है। पर अगर आज मेरी नानी जीवित होती तो वे मेरे मित्रों को देखती, मेरे इन संन्यासियों को देखती। हजारों लोगों को देखती जिनके साथ मेरे ह्रदय के तार जुड़े हुए है। जिनके साथ मेरी सिन्क्रॉनिसिटी है। लेकिन नानी जीवित नहीं है। शंभु बाबू भी नहीं है। पूर्ण खिला वट ऐसे समय हुई जब वे सब जो मेरे सच्चे हितैषी और शुभचिंतक थे, इस दुनिया में नहीं रहे।

नानी ने मुझसे ठीक ही कहा था कि मुझे अकेले ही जीवन बिताना होगा। लेकिन उनकी यह बात एक प्रकार से गलत भी थी। क्योंकि दूसरों की तरह वे भी यही समझती थीं की लोनलिनेस, एकाकीपन और अलोननेस पर्यायवाची है। ये पर्यायवाची नहीं है। दोनों में बहुत अंतर है।

एकाकीपन तो निषेधात्मक स्थिति है। जब तुम अपने साथ नहीं रह सकते और दूसरे की संगत की, दूसरे के साथ होने की मांग करते हो तब यह एकाकीपन है। दूसरे का साथ मिले या न मिले—इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम एकाकी ही रहोगे। मैं जो कह रहा हूं उसकी सचाई तुम सारी दुनिया के हर मकान में देख सकते हो। मैं 'हर घर' नहीं कह रहा हूं, मैं डरता हूं 'हर मकान'।वास्तविक अर्थ में तो 'घर' बहुत कम मिलेंगे। 'घर' नहीं कहां जा सकता,जहां एकाकीपन संपरिवर्तित होकर 'अकेलापन' बन जाता है—इकट्ठा पन नहीं।

लोग समझते है कि जब दो लोग इकट्ठे होते है तो एकाकीपन मिट जाता है। यह इतना आसान नहीं है। याद रखना, यह इतना आसान बात नहीं है—सच तो यह है कि कठिनाई और भी बढ़ जाती है। जब दो एकाकी लोग मिलते है तो एकाकीपन और भी अधिक बढ़ जाता है। सिर्फ दो गुना ही नहीं,कई गुणा बढ़ जाता है। जो की बहुत की कुरूप है। यह एक अष्टभुज की तरह है। अलग-अलग कारणों से, अलग-अलग नामों से यह झगड़ा निरंतर चलता हहर रहता है। पर तुम अगर सब आवरणों को हटा दो तो नीचे सिवाय एकाकीपन के और कुछ भी दिखाई नहीं देगा। यह अकेलापन नहीं है। अकेलापन तो स्वयं की खोज है।

मेरी नानी से बहुत बार कहा कि अकेले होने की स्थिति बहुत सुंदर है। वे हंस कर कहती, बकवास बंद करो। एकाकी जीवन क्या होता है। ये मैं अच्छी तरह से जानती हूं,मैं एकाकी जीवन जी रही हूं। तुम्हारे नाना चले गए, उन्होंने मुझे धोखा दिया। यह भी नहीं बताया कि वे कहां जा रहे है। जीवन के इस कडुवे अनुभव की शिकायत करते हुए उनहोंने कहा: 'तूम भी मुझे छोड़ कर विश्विद्यालय चले गए और तुम साल भर में एक या दो बार ही आते हो। महीनों इंतजार करती हूं। तब तुम कहीं एक या दो दिन के लिए आते हो, और वे दो दिन भी पलक झपकते बीत जाते है। तुम्हें क्या मालूम एकाकीपन क्या होता है। मुझे मालूम है।

यद्यपि वे रो रही थीं। मैं हंसा। मैं भी उनके साथ रोना चाहता था। लेकिन रो न सका। रोने की बजाए हंस दिया।

उन्होंने कहा: 'तुम मुझे बिलकुल नहीं समझते।'

मैंने कहा: 'मैं समझता हूं। इसीलिए तो हंस रहा हूं। आप बार-बार कहती है कि एकाकीपन और अकेलापन एक ही बात है और मैं पक्का, निश्चित रूप से कहता हूं कि ये दोनों एक नहीं है। और अगर आपको अपने एकाकीपन से छुटकारा पाना है तो आपको अकेलापन समझना होगा। सिर्फ अपने प्रति खेद प्रकट करके आप इससे छुटकारा नहीं पा सकतीं और मेरे नाना से नाराज मत होओ...।

यह एकमात्र अवसर है जब मैंने नानी के विरूद्ध नाना का पक्ष लिया। मैंने कहा: 'वे करते भी क्या। उन्होंने आपको धोखा नहीं दिया, हालांकि आपको लग सकता है कि धोखा दिया गया, वे अलग बात है। जीवन और मृत्यु किसी के हाथ में नहीं है। जितने विवश वे पैदा हुए, उतने ही विवश मृत्यु में भी गए....ओर क्या आपको याद नहीं आ रहा कि वे कितने विवश थे। वे बार-बार पुकार रहे थे। 'इस चक्र को रोको, राजा आखिर वे चाहते क्या थे। स्वतंत्र होना चाहते थे। वे कह रह थे कि मैं अपनी इच्छा के विरूद्ध जन्म नहीं लेना चाहता और मैं अपनी इच्छा के विरूद्ध मरना भी नहीं चाहता। बस वे केवल 'होना' चाहते थे। वे शायद ठीक तरह से अपने भाव भी प्रकट नहीं कर सके। लेकिन उनके शब्द का ठीक अर्थ यही कहता हूं। वे न तो जन्म लेना चाहते थे। न जबरन मरना चाहते थे। वे इसके खिलाफ थे। वे सिर्फ होना चाहते थे।

और क्या तुम्हें मालूम है कि उस 'चरम' के लिए भारतीय शब्द मोक्ष है। मोक्ष का अर्थ है: पूर्ण स्वतंत्रता। किसी भी भाषा में मोक्ष जैसा शबद नहीं है। विशेषित: अंग्रेजी में, क्योंकि अंग्रेजी ईसाइयत से बहुत प्रभावित है।

अभी उस दिन मुझे जर्मनी के एक केंद्र से एक फोटो एलबम मिला। उस एलबम में उस सुंदर स्थान की और उसके उदघाटन समारोह की तस्वीरें है। उसके नजदीक के चर्च के पादरी ने भी उस समारोह में भाग लिया। उसने जो कहा वह मुझे बहुत पसंद आया। उसने कहा: 'ये लोग बहुत सुंदर है, अच्छे है, मैंने देखा है कि ये आजकल के लोगों से कहीं अधिक काम करते हे। और इतने खुशी-खुशी से काम करते हे कि इनको देखने वाला भी प्रसन्न हो जाए। लेकिन से लोग थोड़े पागल है।

उसने जो कहा यह ठीक ही कहा, लेकिन उसने यह क्यों कहा,ये लोग थोड़े पागल है। यह ठीक नहीं है। हां, पागल है—वह जितना सोच भी नहीं सकता उससे ज्यादा पागल। लेकिन उसने उन्हें पागल कहा, क्योंकि वे अनेक जन्मों में विश्वास करते है। उन्हें पागल कहने का कारण यही था।

सच तो यह है कि अगर कोई पागल है तो मेरे लोग नहीं, उनको पागल समझने वाले लोग असल में पागल है। प्यार से मैं अपने लोगों को पागल कहता हूं। यह अधिकार मेरा है। मेरे लिए यह निंदा का शब्द नहीं है। सब कवि पागल होते है, सब चित्रकार पागल होते है। सब संगीतकार पागल होते है। नहीं तो वे कवि, संगीतज्ञ, और चित्रकार बन ही नहीं सकते। अगर चित्रकारों, संगीतज्ञों, और नर्तकों के बारे में यह सच है तो रहस्यदर्शियों के बारे में क्यों नहीं सच होगा। वह एन सबसे कहीं अधिक पागल होगें। और मेरे संन्यासी तो पागल होने की राह पर ही है। क्योंकि इस पागल दुनियां में स्वस्थ होने का और कोई दूसरा तरीका मुझे मालूम नहीं है।

मेरी नानी बिलकुल ठीक कहा था। कि न मुझे मित्र मिलेंगे और न शंभु बाबू को मित्र मिलेंगे। शंभु बाबू के बारे में तो बिलकुल सही थीं,लेकिन मेरे बारे तो वह उस समय तक ठीक था जब तक मैंने लोगों को संन्यास देना आरंभ नहीं किया था। जब मैंने हिमालय में संन्यासियों के पहले ग्रुप को संन्यास दिया तो उसके कुछ दिन बाद तक नानी जीवित थी। मैंने इसके लिए हिमालय के सबसे सुंदर भाग कुल्लू-मनाली को चुना था। इसे कहा जाता है: 'दि वैली ऑफ दि गॉड्स' और निश्चित ही यह परमात्मा की घाटी है। जब घाटी में खड़े हों तब भी यह इतनी सुंदर जगह हे कि भरोसा ही नहीं आता। यह अविश्वसनीय सच है। मैंने पहले इक्कीस लो्ंगो की संन्यास दीक्षा के लिए कुल्लू-मनाली को चुना था। इसके कुछ दिन बाद ही मेरी मां अर्थात नानी की मृत्यु हुई। माफ करना, मैं बार-बार उन्हें मां कहता हूं और फिर सुधारता हुं। मैं क्या कर सकता हूं। असल में नानी को ही मैंने अपनी मां के रूप में देखा था। जीवन भर मैंने इस गलती को सुधारने की कोशिश की, लेकिन सुधार न सका। अभी भी मैं अपनी मां को मां नहीं कहता। मैं अभी भी उनको भाभी कहता हूं। मां नहीं। और भाभी का अर्थ होता है बड़े भाई कि पत्नी। मेरे सब भाई मुझ पर हंसते है। वे पूछते है कि मैं मां को भाभी क्यों कहता हूं। और निश्चित ही पिताजी जी मेरे बड़े भाई नहीं है। लेकिन में क्या कर सकता हूं,आरंभिक वर्षो में ही मैंने नानी को अपनी मां समझा। और जीवन से ये आंरभिक वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते है। शायद इसी को वैज्ञानिक 'इम प्रिंट' छाप कहते है।

जब पक्षी अपने अंडे से बहार आता है और अपनी मां को देखता है। तो उस पहली बार के देखने में ही एक छाप बन जाती है। लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि जब पक्षी अंडे के बाहर आए और आपने उसकी मां की जगह कुछ और रख दिया है तो उस पर दूसरी प्रकार का इम प्रिंट बैठ जाता है।

ठीक ऐसा ही हुआ था जब इम प्रिंट शब्द का प्रयोग आरंभ हुआ। एक वैज्ञानिक इसी काम पर कार्य कर रहा था, कि पहली बार अंडे के बाहर जब पक्षी आता है तो क्या होता है। उसने अंडे के आस पास से सब कुछ

हटा दिया, लेकिन वह भूल गया कि वह स्वंय तो वहां पर है। पक्षी बाहर निकला, उसने चारों और देखा और उसने उस वैज्ञानिक के जूते देखे। जो वहां पर खेड़े हो कर पक्षी का अंडे से बाहर निकलते हुए देख रहा था। वह पक्षी उन जूतों को पास देख कर, उनके पास आया और बड़े प्रेम से उनके साथ खेलना आरंभ कर दिया। उस वैज्ञानिक को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन बाद में उसके लिए मुसीबत खड़ी हो गई क्योंकि वह पक्षी निरंतर उसके दरवाजे को खटखटाता रहता—उसके लिए नहीं, उसके जूतों के लिए। उसको अपने जूते पक्षी के घोंसले के पास रखने पड़े। और विचित्र बात तो यह हुई कि जब वह पक्षी बड़ा हुआ तो उसने उन जूतों से प्रेम किया। वहां पर बहुत से मादा-पक्षी थे, लेकिन उसने प्रेम नहीं किया। उस पर एक विशेष इम प्रिंट बन गया था। कि उसके प्रेम का लक्ष्य कैसा होगा। वह तो केवल उन जूतों से ही प्रेम कह सकता है।

मैं अपनी नानी के पास बरस रहा और उन्हीं को ही अपनी मां समझता रहा। और इसके कारण मैं घाटे में नहीं रहा। मैं तो यही चाहता था। कि वे मेरी मां हों। अब तो मेरे दूसरे जन्म की संभावना नहीं है। अगर होती तो मैं उन्हीं को अपनी मां चुनता। मैं इस बात पर जोर देने के लिए ऐसा कह रहा हूं। मेरे दूसरे जन्म की अब कोई संभावना नहीं है। मेरा चक्र तो बहुत पहले ही रूक गया है। लेकिन मेरी नानी को यह कहना ठीक नहीं था। कि मुझे कोई दोस्त नहीं मिलेंगे। हाई स्कूल कालेज या विश्वविद्यालय में मेरा कोई मित्र नहीं था। यद्यपि बहुत से लोग समझते थे कि वे मेरे मित्र है। तथापि वे केवल मेरे प्रशंसक थे। ज्यादा से ज्यादा परिचित थे या बहुत ही ज्यादा अनुयायी थे। लेकिन वे मित्र नहीं थे।

जिस दिन मैंने दीक्षा देना शुरू किया उस दिन मुझे सिर्फ एक डर था। कि क्या मैं अपने अनुयायियों को कभी अपने मित्रों में बदल सकूंगा। संन्यास देनेवाले दिन से पहले में रात भर सो नहीं सका। बार-बार यही सोचता रहा कि मैं यह कैसे करुंगा। अनुयायी को तो मित्र नहीं माना जा सकता। हिमालय में कुल्लू-मनाली में उस रात मैंने अपने आप से कहा, चिंतित या गंभीर होने की कोई जरूरत नहीं है। यद्यपि तुम प्रबंध-विज्ञान का क ख ग भी नहीं जानते, फिर भी तुम सब कुछ कर सकते हो।

मुझे याद आ रही है की पुस्तक: 'दि मैनेजीरियल रेवोल्यूशन।' मैं इसके रेवोल्यूशन शब्द से आकर्षित नहीं हुआ था। मैंने इसे पढ़ा क्योंकि इसके शीर्षक में मैनेजीरियल शब्द था। यह पुस्तक तो मुझे पसंद नहीं आई, लेकिन इसे पढ़ कर थोड़ा निराशा हुई क्योंकि इसमें मुझे वह

नहीं बताऊंगा, क्योंकि उसने मुझसे विश्वासघात किया था। और जिसने मेरे साथ विश्वासघात किया और वह अभी कुछ भी न मिला जिसको मैं खोज रहा था। मैं तो कभी कोई इंतजार नहीं कर सका, कोई प्रबंध नहीं कर सका। सो कुलू-मनाली की उस रात मैं हंस पडा।

एक आदमी—मैं उस का नाम जीवित है। उसका नाम न लेना ही अच्छा है—मेरे कमरे मैं सो रहा था। मेरी हंसीसे वह जाग गया था।

मैंने उससे कहा: 'तुम सो जाओ। चिंता की कोई बात नहीं है। मैं जितना पागल हूं उससे ज्यादा पागल नहीं हो सकूँगा।'

उसने कहा: ' सिर्फ एक सवाल, अन्यथा मैं सो नहीं पाऊगा। आप क्यों हंसे।

मैंने कहा: ' मैं अपने आपको एक चुटकुला सुना रहा था। वह भी हंसा और बिना यह पूछे कि वह चुटकना क्या था, वह सो गया। उसी क्षण मुझे मालूम हो गया कि वह किस प्रकार का खोजी है। सच तो यह है कि बिजली की कौंध की तरह मुझे यह दिखाई दिया कि यह आदमी मेरे साथ बहुत दिन तक नहीं रहेगा। इसलिए मैंने उसको संन्यास में दीक्षित नहीं किया, हालांकि वह इसके लिए आग्रह कर रहा था। दूसरे लोगों को यह देख

कर आश्चर्य हो रहा था, क्योंकि मैं दूसरों को संन्यास में छलांग लेने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था। और यह व्यक्ति छलांग लेना चाहता था, लेकिन मैं इसे थोड़ा देर और प्रतीक्षा करने के लिए कह रहा था।

दो महीनों के अंदर ही सबको साफ हो गया कि मैंने उसे संन्यास क्यों नहीं दिया, दो महीनों में ही वह छोड़ कर चला गया। छोड़ कर चले जाना कोई समस्या नहीं है, लेकिन वह तो मेरा दुश्मन गया। मैं सोच भी नहीं सकत कि कोई मरे दुश्मन हो सकता है। मैने तो अपने जीवन मे कभी किसी का कोई नुकसान नहीं किया। मुझसे अधिक निरीह और असहाय जीव तुम नहीं खोज सकते। फिर कोई मेरा दुश्मन कैसे बन सकता है। जरूर उसके भीतर ही उसका कारण होगा वह मेरा उपयोग पर्दे की तरह कर रहा होगा।

मैं नानी को संन्यास देना पंसद करता, लेकिन वे गाडर वारा गांव में थी। मैंने उनसे संपर्क करने की कोशिश भी की, लेकिन कुल्लू-मनाली तो गाडर वारा से करीब दो हजार मील दूर है।

गाडर वारा भी अजीब नाम है। मैं इससे बचना चाहता था। लेकिन किसी न किसी तरह इसका नाम आना ही था। जब आ ही गया तो इस पर दो शब्द कह देना ही ठीक है इसका अर्थ है: 'गडरियों का गांव' आश्चर्य की बसत तो यह है कि कश्मीर में जिस जगह पर जीसस दफनाएं गए है उसे पहल गाम कहते है। इसका भी अर्थ है: ' गडरिया का गांव' पहल गाम के बारे ते तो यह अर्थ ठीक है, लेकिन मेरा गांव क्यो? यहां पर तो मैंने न कभी भेड़ें देखी है,न कभी गडरिये देखे है। फिर क्यों इसको गडरियों का गांव कहा जाता है? वहां पर ईसाई भी बहुत नहीं थे, केवल एक ही है। और तुम्हें आश्चर्य होगा, वह छोटे से चर्च को पादरी था और उसे सुनने वाली केवल मैं होता था।

एक बार उसने मुझसे पूछा, बड़ी अजीब बात है कि तुम ईसाई नहीं हो, फिर तुम हर रविवार को नियमित रूप से ठीक समय पा क्यों आते हो? चाहे पानी बरसता हो, चाहे ओले पड़ते हों,मुझे यह सोच कर यहां आना पड़ता है कि तुम मेरा इंतजार कर रहे होओ गे—और तुम यहां पर अवश्य होते हो। क्यों?' मैंने कहा: ' आप मुझे नहीं जानते हो। मुझे लोगो को सताने में बड़ा मजा आता है। आपको सुनने का अर्थ है कि आप घंटे भर तक अपने आप को परेशान करते हो। आपको ऐसी बातें कहनी पड़ती है जिनमें आपको कोई विश्वास नहीं, और जिसमें विश्वास है वह आप कह नहीं सकते। यह देख कर मुझे बड़ा मजा आता है। मैं तो यहां आऊँगा ही, चाहे सारा गांव जल रहा हो। ठीक समय पर पहुंच जाऊँगा। आप मुझ पर भरोसा रख सकते है।

तो निश्चित ही ईसाइयों का उस गांव से कोई संबंध नहीं है। केवल एक ही ईसाई वहां पर रहता था। और उसका चर्च भी कोई खास नही था। एक छोटा सा मकान था। आक ऊपर एक क्रास लगा दिया गया था। और उसके नीचे लिख दिया गया था। यह ईसाई चर्च है।

मैं सद इस पर आश्चर्य करता था कि इस गांव को गडरियों का गांव क्यों कहा जाता है?

और जब मैं कश्मीर के पहल गाम मैं जीसस की कब्र को देखने गया तो यह प्रश्न प्रासंगिक हो गया।

बडी अजीब बात है कि पहल गाम का नक्शा ठीक मेरे गांव जैसा है। हो सकता है कि यह सिर्फ संयोगवश हो। जब कुछ समझ में नहीं आता तो हम कह देते है कि ऐसा संयोगवश है। लेकि मैं इतनी आसानी से किसी चीज का पीछा छोडने वाला नहीं हूं। मैंने इसकी अच्छी तरह से खोज-बीन की।

जीसस गाडर वारा भी आए थे। और गांव के बाहर वह स्थान है जहां पर वे ठहरे थे। इसके खंडहरों की अभी भी पूजा की जाती है। किसी को नहीं मालूम की ये क्यों पूजे जाते है। उसके एक पत्थर पर लिखा हुआ है कि ईशु नामक एक आदमी यहां आया था और यहां ठहरा था। उसने इस गांव के और आस पास के लोगो का परिवर्तन किया था। और इसके बाद वह पहल गाम वापस चला गया। भारत के पुरातत्व विभाग ने उस पत्थर को यहां लगाया था। इसलिए वह बहुत पुराना नहीं है।

मुझे उस पत्थर को साफ करने में बड़ी मेहनत करनी पड़ी। यह कठिन था क्योंकि इससे पहले उसकी और किसी का ध्यान नहीं गया था, यह पत्थर एक छोटे से किले के भीतर था। उस किले के भीतर जाना भी खतरनाक था। वहां कोई रहता नहीं था। मेरी नानी मुझे वहां पर जाने नहीं देती थी। क्योंकि वह कभी भी गिर सकता है। वे ठीक कहती थी क्योंकि जब थोड़ी सी हवा तेज चलती थी तो उसकी दीवालें हिलने लगती थी। जब अंतिम बार में उसे देखने गया वे वह गिर गया था। में उस जगह भी गया था जहां पर जीसस नामक एक आदमी ठहरा था।

हिब्रू भाषा का 'जोशुआ' ऐर मैक भाषा में 'येशु' बन गया और उससे 'ईश' बना। हिंदी में जीसस को 'ईशा' कहते है और प्रेम से उनको 'ईशु' कहा जाता है। शायद जिस आदमी से मैं बहुत प्रेम करता हूं वह वहां आया था —उस गांव में। इस विचार से ही में आनंदित हो जाता हूं कि जीसस उन गलियों में घूम थे। ऐसा हुआ या नहीं, इसको ऐतिहासिकता को सिद्ध करने के लिए मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है। अगर आप मुझसे पूछे गे, तो में आपके कान में कहूंगा—'हां' यह सच है। इससे अधिक मुझसे मत पूछो.......'

सत्र—24 मित्रता—प्रेम से ऊंची

मैं तुमसे यह कह रहा था फ्रेंडशिप, मित्रता, प्रेम से ऊंची है। किसी ने पहले ऐसा नहीं कहा। और मैं यह भी कहता हूं कि फ्रेंडशिप,मैत्री, मित्रता से भी ऊंची है। किसी ने यह भी कहा। निश्चित ही मुझे यह समझाना पड़ेगा।

प्रेम कितना भी सुंदर हो, इस धरातल के ऊपर नहीं उठता। यह पेड़ की जड़ों के समान है। प्रेम अपनी अंतर्निहित विशेषताओं तथा अन्य अंशों—शरीर—के साथ धरती के उपर उठने की कोशिश करता है। तो लोग कहते है कि वह प्रेम में गिर गया। अंग्रेजी में कहा जाता है कि 'फॉलन इन लव'। जहां तक मुझे मालूम है, सब भाषाओं में प्रेम के लिए इन्हीं शब्दों का प्रयोग होता है। इसके बारे में अनेक देशों के लोगों से पूछ ताछ कि है मैंने। मैंने सभी दुतावासों को पत्र लिख कर पूछा कि क्या उनकी भाषा में भी 'प्रेम में उठना' जैसा शब्दों का प्रयोग है। उन सबने कहां नहीं, ऐसे पागलों को कोन उत्तर देगा जो ये पूछ रहा है प्रेम में उठना जैसा मुहावरा है।

किसी भी भाषा में ऐसा प्रयोग नहीं है। और यह सिर्फ संयोगवश नहीं है। अगर एक या दो भाषाओं में न होता तो कोई बात नहीं थी। लेकिन तीन हजार भाषाओं में इनका न होना केवल संयोगवश नहीं हो सकता। और तीन हजार भाषाओं ने मिल कर ऐसा मुहावरा बनाया जिसका हमेशा अर्थ हो ' प्रेम में गिरना' असल में कारण यह है कि मूलतः: प्रेम इस धरातल का है। चह थोड़ा बहुत कूद सकता है। या जिसको तुम जॅगिंग कहते हो, वह कर सकता है।

मैं तुम्हें कह रहा था कि कभी-कभी प्रेम थोड़ा कूदता है और उसे लगता हे कि जेसे वह पृथ्वी से मुक्त हो गया है। लेकिन पृथ्वी ज्यादा अच्छे से जानती है। जल्दी ही जब वह धडाम से नीचे गिरता है। तो उसे होश आता है। प्रेम उड़ नहीं सकता। वह मोर जैसा है। उसके पंख बहुत सुंदर है, लेकिन वे उड़ नहीं सकता। हां, मोर जॉगिंग कर सकता है।

प्रेम तो पार्थिव है। फ्रेंडशिप, मित्रता इससे थोड़ी ऊंची है। इसके पंख तो है, लेकिन तोते जैसे है। तुम जानते हो, तोता कैसे उड़ता है, वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर या एक बग़ीचे से दूसरे बग़ीचे या एक झुरमुट से दूसरे झुरमुट तक उड़ान भर सकता है। लेकिन वे सितारों की और नहीं उड़ते। वे अच्छी तरह से उड़ना नहीं जानते।

फ्रेंडलीनेस, मैत्री सबसे अधिक मूल्यवान है। क्योंकि मैत्री में कोई गुरुत्वाकर्षण नहीं होता है। इसमें तो केवल ऊपर उठना है। अंग्रेजी में मैं इसको लेविटेशन कहूंगा। मुझे नहीं मालूम कि अंग्रेजी भाषा के पंडित इस शब्द को मानेंगे या नहीं। इसका अर्थ है ' गुरूत्व के विरूद्ध', गुरुत्वाकर्षण नीचे की और खींचती है। और लेविटेशन ऊपर की और खींचता है। लेकिन पंडितों की किसे परवाह है। वह तो गुरु गंभीर होते है। उनके पेर कब्र में पहुच गए है।

मैत्री तो सीगल है—हां, जॉन थान की तरह। यह तो बादलों के भी ऊपर उठती है। जो मैं कह रहा हूं। उससे संबंध जोड़ने के लिए मैं ये सब बातें बोल रहा हैं।

यह सोच कर मेरी नानी रोने लगी। मुझे मित्र नहीं मिलेंगे। एक प्रकार से वे ठीक थी और एक प्रकार से वे गलत थी। जहां तक मेरा स्कूल कालेज और युनिवर्सिटी के दिनों का संबंध है, वे सही थी। लेकिन जहां तक मेरा संबंध है वे गलत थी। अपने स्कूल के दिनों में भी यद्यपि सर्वमान्य अर्थ में मेरे मित्र नहीं थे। फिर भी असाधारण

अर्थ में मेरे मित्र थे। शंभु बाबू के बारे में मैंने तुम्हें बताया। नानी के बारे में भी बताया है। सच तो यह है कि इन दोनों ने ही मुझे बिगाड़। और ऐसा बिगाडा कि मेरे सुधरने की कोई संभवना नहीं रही।

पहले तो मेरी नानी आती है, समय क्रम के अनुसार भी। हर वक्त उनका ध्यान मेरा और रहता। वे मेरा सब बकवास को मेरा इधर-अधर की गप्प को इतने ध्यान से सुनती कि मुझे भी लगता कि मैं बिलकुल सच बोल रहा हुं।

दूसरे थे शंभु बाबू, वह तो मरी बात सुनते समय अपनी आंखों को भी झपकाते नहीं थे। मैंने तो और किसी को बिना आँख झपकाए सुनते नहीं देखा। हां, ऐसे एक आदमी को और मैं जानता हुं। और वह मैं हूं। मैं साधारण कारण से फिल्म नहीं देख सकता, क्योंकि जब मैं देखता हूं तो पलक झपकना भूल जाता हूं। मैं फिल्म देखता ही नहीं, कयोंकि दो घंटे तक पलक न झपकाने के कारण मेरे सिर में दर्द हो जाता है। और आंखें दुख नें लगती है। इतनी दुखती है कि मैं सो नहीं सकता। अगर थकावट बहुत अधिक हो जाए तो सोना भी मुश्किल है। लेकिन शंभु बाबू पलक झपकाए मेरी बातों को सुनते रहते थे। कभी-कभी में उनके कहता, शंभु बाबू, पलक

झपकाए। जब तक आप झपकाएंगे नहीं तब तक में बो लुंगा नहीं। तब वे अपनी पलकों को दो-तीन बार जल्दी-जल्दी झपकाते और कहते, ‘ अच्छा, अब आगे बोलों और बीच में मत रुको।‘

बर ट्रेड रसल ने लिखा है कि समय ऐसा आएगा जब मनोविश्लेषण सबसे बड़ा पेशा बन जाएगा। क्यों? क्योंकि सिर्फये लोग ही बात को ध्यान से सुनते है और सभी को कभी-कभी किसी सुनने वाले कि जरूरत होती है। लेकिन अपनी बातें सुनाने के लिए एक आदमी को पैसे देना। जरा एक बेतुकापन को तो सोचो—अपनी बात सुनाने के लिए मनोविश्लेषण को पैसा देना, सुनता तो मनोविश्लेषण भी नहीं है। यह सुनने का बहाना करता है। इसीलिए भारत में मैं पहला आदमी था जिसने लोगों से कहा कि अगर मुझे सुनना है तो इसके पैसे दो। यह तो मनोविश्लेषण का ठीक उल्टा है। और यह अर्थपूर्ण है। अगर तुम मुझे समझना चाहते हो तो इसके पैसे दो। और पश्चिम में लोग अपनी बात को सुनाने के लिए पैसे देते है।

सिग्मंड़ फ्रायड ने पक्के यहूदी ने नाते दुनिया में सबसे बड़ा जो आविष्कार किया वह मनो विश्लेषक का काउच है। सचमुच बहुत बड़ा आविष्कार है। बेचारा मरीज काउच पर लेट जाता है—ठीक वैसे ही जेसे में यहां पर लेट जाता हुं—लेकिन में मरीज नहीं हुं। यही मुश्किल है। मरीज नोट लिख रहा है। उसका नाम है डाक्टर देव गीत। उसको डाक्टर कहा जाता है, लेकिन वह सिग्मंड़ फ्रायड जैसा नहीं है। वह यहां पर डाक्टर की हैसियत से नहीं है। अजीब है, मेरे साथ तो सब कुछ अजीब ही होता है। डाक्टर तो काउच पर लेटा है। और मरीज डाक्टर की कुर्सी पर बैठा हुआ है। मेरा अपना डाक्टर मेरे पैरों के पास बैठा है। क्या तुमने कभी किसी डाक्टर को अपने मरीज के पैरों के पास बैठते देखा है ?

यहां की दुनियां तो निराली है। मेरे साथ तो सब कुछ सही है। में नहीं कह सकता कि सब कुछ उल्टा-पुलटा है।

मैं मरीज नहीं हुं, लेकिन मुझमें बहुत धीरज है। यद्यपि मेरे ड़ाक्टरों के पास डाक्टरी की उपाधि है। फिर भी यह डाक्टर नहीं है। ये मेरे संन्यासी हे, मेरे मित्र है। यही तो कहा रहा हूं कि मैत्री तो चमत्कार है। वह तो कीमिया है। मरीज डाक्टर बन जाता है और डाक्टर मरीज बन जाता है—इसको कहते है कीमिया।

प्रेम यह नहीं कर सकता। प्रेम अच्छा होते हुए भी पर्याप्त नहीं है। अगर किसी अच्छी चीज को भी अधिक खाया जाए तो उससे नुकसान होता है—उससे पेट में दर्द होने लगता है। या पेचिश हो जाती है। और न जाने क्या-क्या। प्रेम सब कुछ कर सकता है, सिर्फ अपने पार नहीं जा सकता। वह नीचे और नीचे की और ही खिसकता जाता है। प्रेम लड़ाई-झगड़े और कलह में परिवर्तित हो जाता है। हर प्रेम अगर स्वाभाविक रूप से

अपने तर्कसंगत अंत की और जाए तो उसका अंत तलाक में होगा। अगर तर्कसंगत न हो तो बात अलग है, फिर तुम फंसे। फिर लोग एक दूसरे को झेलते है, एक-दूसरे को सहन करते है। और किसी को फंसे देखना बहुत ही भयानक होता है। तुम्हें इसके लिए कुछ कहना चाहिए। लेकिन ये फंसे हुए लोग अगर कोई इनकी मदद करना चाहे तो दोनों जम कर उसका विरोध करते है।

मुझे याद आया कि अभी कुछ सप्ताह पहले एंथनी का एक मित्र संन्यास लेने के लिए इंग्लैड से आया। और तुम तो जानते हो ही कि अंग्रेज सज्जन कैसे होते है। वह तो गले तक फंसा हुआ था। तुम कुछ नहीं देख सकते थे, वह कीचड़ मैं इतना डूबा हुआ था—तुम सिर्फ उसके थोडे से बाल ही देख सकते थे। थोड़े से ही, क्योंकि वह मरी तरह गंजा था। अगर वह पुरी तरह गंजा होता,तो ज्यादा अच्छा होता कम से कम कोई उसकी और ध्यान न देता। मैने उसे बाहर निकालने की कोशिश की। लेकिन किसी आदमी को जिसके सिर्फ थोडे से बाल दिख रहे हो , कोई कैसे कीचड़ से बाहर निकाले? मेरे भी तरीके है।

मैंने एंथनी और उत्तमा से उस बेचारे की मदद करने को कहा। उन्होने मुझसे कहा, 'वह अपनी पत्नी से अलग होना चाहता है।' मैंने उसकी पत्नी को भी देखा था, क्योंकि उसने आग्रह किया था कि वह भी उस समय उपस्थित रहेगी जब वह संन्यास लेगा। वह देखना चाहती थी कि वह किस प्रकार सम्मोहित किया गया है। मैंने उसको यहां पर उपस्थित रहने की इजाजत दे दी थी, क्योंकि यहां पर तो सम्मोहन किया जा रहा था। वह तो स्वंय भी संन्यास में उत्सुक हो गई। मैंने उसको आमंत्रित करते हुए कहा, ''तुम क्यों नहीं संन्यास ले लेती? उसने कहा: मैं इसके बारे में सोचुगी, मैंने कहा मेरा सिद्धांत तो यह है कि सोचने से पहले ही छलांग लगाओ। लेकिन अगर तूम सोचना चाहती हो तो सोचो। तुम्हारे सोच लेने के बाद अगर मैं यहीं पर रहा तो मैं तुम्हारी मदद के लिए तैयार रहूंगा।'

लेकिन मैंने एंथनी और उत्तमा से कहा—जो दोनों मेरे संन्यासी है ओर उन कुछ थोडे से लोगों में से है जो मेरे बहुत निकट हैं—कि वे अपने मित्र की सहायता करें। मैंने कहा कि उनकी पत्नी और बच्चों के लिए ऐसी सब व्यवस्था कर दें जिससे उनको कोई तकलीफ न हो, कोई नुकसान हो लेकिन आध्यात्मिक रूप से उसके पति को अब और कष्ट नहीं होना चाहिए। अगर उसे अपना सब कुछ भी अपनी पत्नी को देना पड़े तो वह दे दे। उसके लिए तो मैं अकेला ही पर्याप्त हूं।

मैंने उस आदमी को देखा और उसके सौंदर्य को भी देखा। उसमें बच्चे जैसी सरलता थी। धरती पर पहली वर्षा होने से जो सोंधी सुगंध आती है और धरती आनंदित होती है। वही सुगंध ओर आनंद उसमें दिखाई दे रहा था वह संन्यासी होने में बड़ा खुश था।

अभी कुछ दिन पहले मुझे यह संदेश मिला कि वह निरंतर सो ही रहा है। सिर्फ अपनी पत्नी के डर की वजह से। वह जागना ही नहीं चाहता। जो ही उसकी नींद खुलती है वह फिर नींद की गोलियां खा लेता है। मैंने एंथनी से कहा कि उसको कहो कि यह नींद उसकी मदद नहीं करेगी। यह उसे मार भी सकती है लेकिन यह उसकी पत्नी की मदद नहीं करेगी। उसे सत्य का सामना करना चाहिए।

बहुत कम लोग सत्य का सामना करते है। जिसे वे प्रेम करते है वह जो शारीरिक है, निन्यानवे प्रतिशत प्रेम शारीरिक है। मित्रता निन्यानवे प्रतिशत मनोवैज्ञानिक है और मैत्री निन्यानब प्रतिशत आध्यात्मिक है। प्रेम में एक प्रतिशत जो बचता है वह मित्रता के लिए है। मित्रता में एक प्रतिशत जो बचता है वह मैत्री के लिए है। और मैत्री में एक प्रतिशत जो बचता है वह उसके लिए हे जिसका कोई नाम नहीं है। उपनिषदों ने उसे कहा है: ' तत्व मसि।' तुम वही हो। 'वह' , उसे में क्या कहूं ? नहीं, उसको मैं कोई नाम नहीं देता। सब नामों ने मनुष्य को

धोखा दिया है। सब नाम बिना अपवाद के मनुष्य के शत्रु सिद्ध हुए है । इसलिए में उसे कोई नाम नहीं देना चाहता।

मैं अपनी अंगुलि से उसकी और केवल इशारा करता हूं। और मैं उसको कोई नाम दु या न दूँ, उसका कोई नाम नहीं है। वह अनाम है। सब नाम हमारे ही आविष्कार है। कब हम इस सीधी सह बात को समझेंगे ? एक गुलाब, केवल गुलाब, और केवल गुलाब होता है। तुम इसको किसी भी नाम से पुकारों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि गुलाब शब्द भी इसका नाम नहीं है। वह बस है। जब तूम अपने और अस्तित्व के बीच में से भाषा को हटा देते है तो अचानक विस्फोट होता है......आनंद विरेक।

प्रेम सहायता कर सकता है, इसलिए में प्रेम के विरूद्ध नहीं हूं। वह तो ऐसा होगा जैसे कि मैं सीढी के उपयोग के विरूद्ध हूं। सीढी अच्छी है, लेकिन उस पर सावधानी से चलना चाहिए ,विशेषत: जब वह पुरानी हो। और याद रखना कि प्रेम सबसे प्राचीन है। आदम और ईव इससे गिर गए थे। लेकिन गिरने की कोई आवश्यकता नहीं थी। अगर उन्होंने खुद इसका चुनाव किया होता—लेकिन गिरने की कोई आवश्यकता नहीं थी। लेकिन अपनी स्वतंत्रता से गिरना एक बात है और दंड स्वरूप गिराना बिलकुल ही दुसरी बात है।

अगर मैं बाइबिल को दुबारा लिखता तो भरोसा करो, मैं ऐसी मूर्खता न करता। मैं यह कह रहा हूं कि अगर मैं लिखता तो मैं आदम और इव को सज़ा के कारण नहीं बल्कि अपने चुनाव से अपनी इच्छा से गिराता।

प्रेम अच्छा है। लेकिन तुम्हें पंख देने के लिए यह पर्याप्त नहीं है। उसके लिए मित्रता चाहिए। और प्रेम उसकी इजाजत नहीं देता। तथाकथित प्रेम मित्रता के बहुत विरूद्ध है। वह मित्रता से बहुत डरता है। क्योंकि जो ऊँचा होता है। वह खतरनाक होता है। और मित्रता ऊंची है।

जब किसी पुरूष या स्त्री की मित्रता से खुशी प्राप्त हाथी है, तो पहली बार मालूम होता है कि प्रेम तो धोखा है। तब इस बात का अफसोस होता है। कि समय बर्बाद हो गया है। लेकिन मित्रता तो सिर्फ एक पुल है उसके ऊपर से गुजर जाना चाहिए और उसके ऊपर रहना शुरू नहीं करना चाहिए। पुल रहने के लिए नहीं होता। यह पुल मैत्री पर ले जाता है।

मैत्री तो शुद्ध सुगंध है, अगर प्रेम जड़ है और मित्रता फूल, तो मैत्री सुगंध है। जिस आँख नहीं देख सकती। उसका स्पर्श भी नहीं किया जा सकता, उसे हाथ से पकड़ा नहीं जा सकता। खासकर उसको मुट्ठी में बिलकुल नहीं रखा जा सकता है। हां, खुले हाथ पर उसे रखा जा सकता है। लेकिन बंद हाथ में नहीं।

प्राचीनकाल में रहस्य दर्शी जिसे प्रार्थना कहते थे, मैत्री वह प्रार्थना है। मैं इसको प्रार्थना नहीं कहना चाहता, क्योंकि यह शब्द गलत हाथों में गलत लोगों से संबंधित है। यह शब्द सुंदर है, लेकिन गलत संगत में पड़ कर खराब हो गया है। संगत का बुरा असर तो पड़ता है ही। जैसे ही प्रार्थना कहते हो वैसे ही सब लोग डर कर सावधान और सजग हो जाते है। मानों किसी जनरल ने अपने सैनिकों को सावधान होने के लिए कहा हो और सब अचानक मूर्तियों जैसे हो गए हों।

क्या होता है जब कोई 'प्रार्थना', 'परमात्मा' या ' स्वर्ग' जैसे शब्दों का उल्लेख करता है। इन शब्दों को सुनते ही तुम बिलकुल बंद क्यों हो जाते हो? ऐसा कह कर में तुम्हारी बुराई नहीं कर रहा हूं, मैं तो तुमको यह बताना चाहता हूं कि इन तथाकथित धार्मिक लोगों ने इन सुंदर शब्दों को बहुत गंदा कर दिया है। इन्होंने बहुत ही अधार्मिक काम किया है। मैं उन्हें क्षमा नहीं कर सकता हूं।

जीसस कहते है: ' अपने शत्रुओं को क्षमा करों।' यह मैं कर सकता हूं। लेकिन उन्होंने यह नहीं कहा कि अपने पुरोहितों को क्षमा करों। अगर उन्होंने यह कहा होता तो भी में उन्हें उनसे कहता चुप रहो। मैं पुरोहितों को क्षमा नहीं कर सकता। मैं न तो उन्हें क्षमा कर सकता हूं और न ही भूल सकता हूं। अगर में उन्हें भूल जाऊँ तो

मिटाएगा कौन ? और अगर मैं उन्हें क्षमा कर दूँ तो इन्होंने जो मनुष्यता कर जो नुकसान किया है उसे कौन मिटाएगा। नहीं, जीसस नहीं। शत्रुओं को में समझ सकता हूं, उन्हें क्षमा किया जाना चाहिए क्योंकि वह नहीं जानते की वे क्या कर रहे है। लेकिन पंडित-पुरोहित ? मत कहो कि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे है। वे भली भाति जानते है। कि वे क्या कर रहे है। इसीलिए न तो मैं उन्हें क्षमा कर सकता हूं, न मैं भूल सकता हूं। मैं तो अपनी अंतिम श्वास तक लड़ता रहूंगा।

प्रेम तो एक कदम है—अगर यह मित्रता की और ले जाये तभी उसको प्रेम कहा जा सकता है। अगर यह मित्रता की और जाता है तो फिर यह वासना है, प्रेम नहीं है। अगर यह मित्रता की और ले जाए तो आभार मानना, लेकिन इसको अपनी स्वतंत्रता में बाधा न बनने देना। हां, इससे सहायता अवश्य मिली, लेकिन इसको यह अर्थ नहीं है कि अब अड़चल भी डाले। क्योंकि नाव ने तुम्हें दूसरे किनारे पर पहुंचा दिया है, उसको अपने कंधे पर उठा कर मत ढोआ। बेवकूफी मत करो। माफ। करना देव गीत। यह शब्द तो मैने तुम्हारे लिए रख छोड़ा है। मैं कहना चाहता था। मूढ़ मत बनो। लेकिन में बार-बार भूल जात हूं और दूसरों के लिए में ''"बेवकूफ" शब्द का प्रयोग कर देता हूं। प्रेम अच्छा है। इसके पार जाओ, क्योंकि यह तुम्हें अधिक अच्छे की और जे जा सकता है, मित्रता की ओ ले जा सकता है। और अगर कोई कवि हो तो यह हाइकू यह रूबाइयात लिखता है। और अगर कोई न संगीतज्ञ हो न कवि,तो वह नाच सकता है, चित्र बना सकता है या चुपचाप बैठ कर आकाश की और देख सकता है। इससे अधिक ओर क्या किय जो सकता है। अस्तित्व तो कर चुका है।

प्रेम से मित्रता और मित्रता से मैत्री—बस इसे ही मेरा सारा धर्म कहा जा सकता है। मित्रता तो एक संबंध है, एक प्रकार का बंधन है—बहुत सूक्ष्म, प्रेम से भी सूक्ष्म,लेकिन है तो। और इसमे ईर्ष्या हे और प्रेम की सब बीमारियां है। ये सूक्ष्म ढंग से आ गई है। लेकिन मैत्री में दूसरे से स्वतंत्रता है। इसलिए इसमें संबंध का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

प्रेम दूसरे के प्रति होती है। मित्रता भी दूसरे के प्रति होता है। लेकिन मैत्री तो अस्तित्व के प्रति तुम्हारे ह्रदय का खुल जाना है.... अचानक किसी विशेष क्षण में तुम किसी पुरूष यह स्त्री यह पेड़ यह सितारे के प्रति खुल जाते हो। आरंभ में तुम पूरे आस्तित्व के प्रति नहीं खुल सकते ।अंत में अवश्य तुम्हें अपना ह्रदय पूर्ण के प्रति,समग्र के पति खोलना पड़ता है—किसी विशेष को संबोधित किए बिना। वही क्षण हे, वही विशेष क्षण है। इसे सिर्फ ' क्षण ही कहने दो' हमें बुद्धत्व,समाधि, क्राइस्ट-चेतना जैसे शब्दों को भूल जाना चाहिए और सिर्फ उसे कहना चाहिए: ' वह क्षण। इसे बड़े अक्षरों में लीखों ।

यह बहुत सुंदर रहा। मुझे मालूम है कि अभी समय है, लेकिर यह कितना अच्छा था। कितना सुंदर था। और इससे अघिक की मांग नहीं करनी चाहिए। अधिक तो बरबाद कर देता है।

सत्र—25 शब्दों की अभिव्यक्त

मैं बर्ट्रेंड रसल को उद्धृत की रहा था—इस उद्धरण से मेरी बात को पुष्टि होगी उसने कहा है कि देर-अबेर सब लोगों को मनोविश्लेषण की आवश्यकता होगी। क्योंकि तुम्हारी बात सुनने के लिए या तुम पर ध्यान देने के लिए किसी को खोजना बहुत कठिन हो गया है।

और सब चाहते है कि उनकी और ध्यान दिया जाए। इसके लिए वे पैसे देने को भी तैयार है। कि कोई मेरी बात को ध्यान से सुनें। भले ही सुनने वाले ने कानों में रूई डाल रखी हो। कोई मनोविश्लेषण दिन-रात मरीजों की बकवास को नहीं सुन सकता। फिर उसकी भी यही आवश्यकता है कि कोई दूसरा उसकी बातें सुने।

तुम्हें जान कर आश्चर्य होगा कि सब मनोविश्लेषण एक दूसरे के पास जाते है। अपने पेशे के शिष्टाचार के कारण वे एक दूसरे से पैसे नहीं लेते। दिमाग पर जो बोझ इक्कठ्ठा हो जाता है। उसे उतारना जरूरी होता है। नहीं तो वह परेशान कर देता है।

अपनी कहानी से संबंध जोड़ने के लिए मैंने बर्ट्रेंड रसल को उद्धृत किया ताकि में उसे आगे बढा सकूं। हालांकि बर्ट्रेंड रसल बहुत दिनों तक जीवित रहा। फिर भी उसे स्वंय नहीं मालूम था कि जीवन क्या था? पर कई बार जो लोग नहीं जानते उनके शब्दों का प्रयोग बड़े महत्वपूर्ण संदर्भ में ऐसे लोगों द्वारा किया जा सकता है जो सकते है।

तुम लोगों ने इस उद्धरण को शायद न देखा हो, क्योंकि यह उस पुस्तक में है जिसे कोई नहीं पढ़ता। तुम्हें भरोसा नहीं होगा कि बर्ट्रेंड सरल ने ऐसी किताब भी लिखी ।यह छोटी कहानियों की पुस्तक है। रसल ने तो सैकडों पुस्तकें लिखी है और उनमें से कई तो बहुत प्रसिद्धि है और लोग उनको पंसद करते है, पढ़ते है। वे बहुत प्रचलित है। लेकिन यह पुस्तक अनोखी है, क्योंकि चह सिर्फ छोटी कहानियों का संकलन है। वह इसको प्रकाशित नहीं करना चाहता था। वह छोटी कहानियों का लेखक तो था नहीं। और उसकी कहानियों का स्तर बहुत नीचा है। लेकिन इन निम्न स्तर की कहानियों में कहीं-कहीं पर ऐसा एकाध वाक्य मिल जाता है जिसको केवल रसल ही लिख सकता है। यह उद्धरण उसी पुस्तक से है।

मुझे कहानियां बहुत प्रिय है और यह सिलसिला शुरू हुआ नानी से। उनको भी कहानियां बहुत पसंद थी। नहीं कि वे मुझे कहानी सुनाती थीं। बिलकुल उल्टा, वे मुझे उकसाती थी कि मैं उन्हें कहानी सुनाऊं—सब तरह की कहानियां और दुनिया भर की गप्पें। वे मरी इन कहानियों को इतने ध्यान से सुनती कि उन्होंने मुझे कहानी कहने वाला बना दिया। उनके लिए मैं कोई न कोई दिलचस्प बात खोज ही लेता,क्योंकि वे मेरी कहानी सुनने के लिए दिन भर इंतजार करती। जब मुझे कोई दिलचस्प बात न मिलती तो मैं कपोल-कल्पना से कोई न कोई कहानी तैयार की लेता। वे जिम्मेवार है, सारा श्रेय या दोष जो भी तुम कहो, उनको जाता है। मैंने उन्हें सुनाने के लिए कहानियां गढ़ी ताकि वे निराश न हों और मैं तुमसे वादा करता हूं कि सिर्फ उनके लिए मैं सफल कहानी कहने वाला बन गया।

जब मैं प्राइमरी स्कूल में अभी बच्चा ही था जब से मैं स्कूल की प्रतियोगिताओं में जीतता था। और यह क्रम तब तक चलता रहा जब तक मैंने विश्वविद्यालय नहीं छोड़ा। मैंने बहुत से पुरस्कार—मैडल, पदक, और शील्ड जीती। इनको देख कर मेरी नानी खुश हो जाती, उनका उत्साह बढ़ जाता और वे नवयुवती सह दिखाई देने लगती। वे जब मेरे इन पुरस्कारों को किसी को दिखाती तो उनके चेहरे का उल्लास देखने योग्य होता। उनका बुढ़ापा गायब हो जाता और नव-यौवन की झलक दिखाई देने लगती। उनका सारा घर अजायबघर बन गया था। मैं उनको अपने पुरस्कार भेजता रहता। हाईस्कूल तक तो मैं उनके साथ ही रहता था। हां, दिन के

समय शिष्टाचार वश मैं अपने माता-पिता के पास जाता था। लेकिन रात को तो मैं नानी के पास ही रहता, क्योंकि उस समय मैं उनको सुनाता था।

अभी भी में देख सकता हूं कि मैं उनके बिस्तर के पास बैठा हूं और वे बड़ी एकाग्रता से मेरी बातों को सुन रही है। मैं जो कहता था उसका एक-एक शब्द वे इस प्रकार आत्मसात करती थी, मानों वे बहुत ही मूल्यवान हों। वे उन शब्दों को इतने प्रेम और आदर से ग्रहण करती थी कि वे मूल्यवान हो जाते थे। जब वे मेरे द्वार पर आते तो भिखारी होते, लेकिन नानी के घर में प्रवेश करते तो वे वैसे ही न रह जाते। जैसे ही मेरी नानी मुझसे कहती, राजा, बताओ तो आज तुम्हारे साथ क्या हुआ—सब बताओ। कुछ भी न छोड़ना, इसका वादा करो। वैसे ही भिखारी से वह सब गिर जाता जिससे वह भिखारी दिखता था। और वह राजा बन जाता। हर रोज मैं उनसे यह वादा करता और दिन भर की सारी घटनाएं सुनाता। फिर भी वे कहती, ' अच्छा और बताओ या वह बात फिर से बताओ।'

कई बार मैं उनसे कहता, ' तुम मुझे बिगाड़ दोगी; तुम और शंभु बाबू दोनों मुझे सदा के लिए बिगाड़ रहे हो।' और सचमुच उन्होंने अपना काम बड़े अच्छे से किया।

मैंने सैकडों पुरस्कार प्राप्त किए। सारे प्रदेश में ऐसा कोई हाईस्कूल नहीं था। जहां पर बोल कर मैंने पुरस्कार प्राप्त न किया हो—एक बार को छोड़ कर। केवल एक बार मैं नहीं जीता और कारण बिलकुल साधारण था। सब लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। जो लड़की जीती थी उसे हैरानी हुई। उसने भी मुझसे कहा, ' मैं तो यह सोच भी नहीं सकती कि तुम्हारे विरोध में मैं जीत सकती हूं।' पूरा हॉल—और उस हॉल में कोई दो हजार छात्र रहे होंगे, वे सब इसकी चर्चा करने लगे कि यह निर्णय गलत है, अन्याय किया गया है। इस प्रतियोगिता का सभापतित्व करने वाले प्रिंसिपल ने भी यही कहा। उस कप का हारना मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गया। सच तो यह है कि अगर मैं न हारता तो मैं बड़ी मुसीबत में पड जाता। उसके बारे में मैं तुम्हें समय आने पर बताऊंगा।

उस प्रिंसिपल ने मुझे बुलाकर कहा: ' मुझे बहुत अफसोस है। विजेता तो तुम्हीं हो।' और उन्होंने अपनी घड़ी मुझे देते हुए कहा: ' यह घड़ी उस लड़की को दिए कप से कहीं अधिक मूल्यवान है।'

और सचमुच वह घड़ी बहुत कीमती थी। वह सोने की घड़ी थी। मुझे हजारों घड़ियाँ मिली है, लेकिन उतनी सुंदर घड़ी तो कभी नहीं मिली। वह प्रिंसिपल अनोखी और दुर्लभ चीजों का संग्रह करते थे। और यह घड़ी भी बहुत अनोखी थी। अभी भी मैं उसे देख सकता हुं।

मुझे बहुत घड़ियाँ मिलीं थी उन्हें मैं भूल गया हूं। उनमें से एक घड़ी तो विचित्र ढंग से चलती है। जब मुझे उसकी जरूरत पड़ती है तो वह बंद हो जाती है। बाकी समय वह ठीक चलती है, सिर्फ रात को तीन और पांच बचे के बीच रूक जाती है। बाकी समय वह ठीक चलती है। क्या ये अजीब बात नहीं है! क्योंकि यह ठीक वही समय है जब मेरी आँख खुलती है। यह मेरी पुरानी आदत है। अपनी युवावस्था में मैं सुबह तीन बजे उठ जाता था। यह मेरा क्रम इतने बरसों तक चला कि अब नहीं भी उठता हूं तो भी मेरी नींद खुल जाती है और मैं करवट बदल कर फिर सो जाता हूं। यही समय है जब मैं घड़ी देखना चाहता हूं कि मैं उठ जांऊ या थोड़ी और सो जांऊ। और आश्चर्य तो यह है कि घड़ी ठीक इसी वक्त बंद हो जाती है।

आज सुबह यह ठीक चार बजे बंद हो गई। मैंने घड़ी देखी और सोचा कि अभी बहुत जल्दी है और मैं दुबारा सो गया। एक घंटा सोने के बाद मैंने फिर घड़ी देखी, तो तब भी चार ही बजे थे। मैंने अपने से कहा, अच्छा हो, आज रात कभी समाप्त ही नहीं होने वाली। मैं फिर सो गया बिना सोचे—तूम मुझे जानते हो, मैं सोचने वाला नहीं हूं—बिना सोचे कि शायद घड़ी बंद हो गई होगी। मैंने सोचा, यह रात अंतिम रात लगती है।

अब मैं सदा के लिए सो सकता हूं। और मैं यह सोच कर बहुत खुश हो गया कि रात समाप्त ही नहीं होगी। और मैं फिर सो गया। दो घंटे बाद जब फिर घड़ी देखी तो उस समय भी चार ही बजे थे। मैंने कहा, वाह, सिर्फ रात ही लंबी नहीं है, इसके साथ समय भी रूक गया है।

उस प्रिंसिपल ने अपनी घड़ी मुझे देते हुए कहा: माफ करना, क्योंकि जीते तो तुम्हीं हो, और मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि यह निर्णायक इस लड़की से प्रेम करता है, इसलिए उसने उसके पक्ष में निर्णय दिया है। वह प्रोफेसर है और मेरा सहयोगी है, लेकिन बेवकूफ है। मैं उसे अभी नौकरी से निकाल देता हूं। इस कालेज में उसका सेवाकाल अब समाप्त हो गया है। बेवकूफी की भी हद होती है। मैं सभापति की कुर्सी पर बैठा हुआ था और सार हॉल हंस रहा था। सबने देखा था कि वह लड़की कुछ भी नहीं बोल सकी। और जो थोड़ा बहुत बोली वह भी सिर्फ उसके प्रेमी, उस प्रोफेसर को छोड़ कर किसी की समझ में नहीं आया। लेकिन तुम जानते हो, प्रेम तो अंधा होता है।

मैंने कहा: आपने बिलकुल ठीक कहा कि प्रेम अंधा होता है। खासकर जब यह लड़की प्रतियोगिता में भाग ले रही थी, तो आपने इस अंधे आदमी को निर्णायक क्यों बनाया। मैं तो यह बात सबको बता दूँगा।

और मैंने यह सारी कहानी समाचार-पत्रों को बता दी। बेचारे प्रोफेसर की तो बड़ी दुर्गति हुई। वह अपनी नौकरी और प्रतिष्ठा तो खो ही बैठा, साथ ही उस लड़की को भी खो बैठा जिसके लिए उसने यह गलत काम किया था। उसकी प्रेम कहानी समाप्त हो गई।

वे अभी भी जीवित है। अब बूढे हो गए है। एक दिन वे मेरे पास आए और उन्होंने यह स्वीकार किया कि मुझे अपने किए पर बहुत अफसोस है। गलती अवश्य की,लेकिन यह मुझे नहीं मालूम था कि यह घटना ऐसा रूप लें लेगी।

मैंने उनसे कहा: यह तो कोई जानता कि एक साधारण सी घटना इस दुनिया में क्या ले आएगी। और अफसोस मत करिए। आप अपनी नौकरी और प्रेमिका दोनों को खो बैठे हे। मैंने तो क्या खोया, सिर्फ एक शील्ड ही तो खोई। लेकिन उसकी मुझे कोई परवाह नहीं, क्योंकि मेरे पास बहुत शील्ड है।

सच तो यह है कि मेरी नानी का घर मेरे इन कपों, मेडलों और शील्डों के लिए धीरे-धीरे एक अजायबघर बन गया था। लेकिन वे बहुत प्रसन्न होती थी। इस कचरे से भरने के लिए वह घर छोटा था लेकिन वे बहुत खुश थी कि मैं कालेज और युनिवर्सिटी से अपने पुरस्कारों को उन्हें भेजता रहता था। मैं वाद-विवाद प्रतियोगिता, कहानी प्रतियोगिता, कविता-पाठ प्रतियोगिता में अनेक पुरस्कार प्राप्त करता और इन सबको नानी के पास भेज देता। हर वर्ष मुझे दर्जनों पुरस्कार मिलते। लेकिन एक बात मैं तुमसे कहूं कि नानी और शंभु बाबू इन दोनों ने मेरी बातों पर पूरा ध्यान देकर मुझे बहुत बिगाड़ दिया। बिना सिखाए ही उनहोंने मुझे बोलने की कला सिखा दी। जब कोई इतने ध्यान से सुन रहा हो तो तुम अनायास ही कुछ ऐसा कह देते हो जिसके बारे में पहले न सोचा था न कल्पना की थी। यह ऐसे है जैसे कि दूसरे का ध्यान चुंबक बन जाता है। और वह आकर्षित करता है। उसको जो तुम्हारे भीतर छिपा हुआ है, और तब शब्द प्रवाहित होने लगते है।

मेरा अपना अनुभव यह है कि यह दुनिया रहने के लिए तब तक सुंदर स्थान नहीं बन सकती जब तक लोग एकाग्र मन से, ध्यान से दूसरे की बात सुनना न सीख जाएं। अभी तो को ध्यान नहीं देता। जब लोग यह दिखाते भी है कि वे सुन रहे है। तब भी सुन नहीं रहे होते है। वे हजार दूसरी चीज कर रहे होते है। बड़े पाखंडी होते है—कहते कुछ है और दिखाते कुछ है। ध्यान से सुनने की बात ही कुछ और होती है। ध्यान से सुनने बाला तो पूरी तरह से खुला रहता है। केवल ध्यान, केवल एकाग्रता और कुछ नहीं। ध्यान देने की कला स्त्रैण गुण है।

और जो ध्यान देने की कला जान लेता है वह एक विशेष अर्थ में स्त्रैण हो जाता है, इतन सुकुमार इतना कोमल कि तुम उसको अपने नाखूनों से खरोंच सकते हो।

मेरी नाना दिन भर प्रतीक्षा करतीं रहती कि में कब उनके पास आऊँगा और उनको कहानी सुनाऊं गा। और तुम्हें यह जान कर आश्चर्य होगा कि उन्होंने अनजाने ही कैसे मुझे उस काम के लिए तैयार कर दिया जो मैं बाद में करने वाला था। बहुत सी कहानियां जो मैंने तुम्हे सुनाई, नानी ने ही उन्हें सबसे पहले सुना था। उन्हें ही बिना किसी डर के मैं कुछ भी सुना सकता था।

दूसरे व्यिक्त, शंभु बाबू मेरी नानी से बिलकुल भिन्न थे। नानी का अंतबोर्ध बहुत प्रखर था। लेकिन वे बौद्धिक नहीं थी। शंभु बाबू में भी अंतर्बोध था, लेकिन वे बौद्धिक भी थे। वे तो प्रथम श्रेणी के बौद्धिक थे। मैं बहुत से बुद्धिजीवियों से मिला हूं—कुछ प्रसिद्ध और कुछ बहुत प्रसिद्ध—लेकिन उनमें कोई भी शंभु बाबू की बराबरी नहीं कर सकता। उनमें अंतर्बोध और बुद्धि, दोनों का मेल था, और थोड़ा बहुत नहीं बहुत मात्रा में था। असा गोली उनसे खुश हो जाता।

वे भी मेरी बातों को बड़े चाव से सुनते थे। रोज स्कूल के बाद मैं उनके पास जाता था। और वे दिन भर प्रतीक्षा करते कि कब मेरे स्कूल कि छुटटी होगी। जैसे ही मैं स्कूल की कैद से छूटता, मैं पहले शंभु बाबू के पास जाता। वे मेरे लिए चाए और मेरी पसंद की मिठाइयों तैयार रखते। यह बात मैं इसलिए बता रहा हूं, क्योंकि बहुत कम लोग दूसरों के बारे में सोचते है। शंभु बाबू सदा दूसरे का खयाल रख कर ही नाश्ते का इंतजाम करते। मैंने कभी किसी और को उनके जैसा दूसरे का ध्यान रखते हुए नहीं देखा। अधिकांश लोग, हालांकि वे दूसरों के लिए तैयारी करते है। पर अपनी रूचि के अनुसार ही दूसरों को खिलाते-पिलाते है और अपनी पंसद की चीजों को ही दूसरों को पसंद करने के लिए मजबूर करते है।

शंभु बाबू ऐसा नहीं करते थे। वे हमेशा दूसरों की पसंद के बारे में सोचते थे। उनकी इस बात को में प्रेम करता था। और उसका आदर करता था। उनके मरने के बाद मुझे मालूम हुआ कि दुकानदारों से पूछ कर उन्ही चीजों को खरीदते थे जिनको मेरी नानी ख़रीदती थी। बाद में दुकानदारों और हलवाई यों ने मुझे बताया कि शंभु बाबू एक बड़ा अजीब प्रश्न पूछते थे। वे जो बूढी महिला नदी के पास अकेली रहती है, वे तुमसे क्या ख़रीदती है। उस समय तो हमने ध्यान दिया कि वे ऐसा क्यों पूछते है। लेकिन मालूम हुआ कि वे तुम्हारी पसंद जानना चाहते थे।

मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य होता था कि वे सदा मेरी पसंद की चीजें मेरे सामने रखते थे। वे कानून के आदमी थे, इसलिए उन्होंने मेरी पसंद को जानने को ये तरीका खोज लिया। स्कूल से मैं भागा-भागा उनके घर पहुंचता,चाय पीता और मिठाइयों खाता। अभी में नाश्ता खत्म भी नकारता कि वे मेरी बातें सुनने के लिए तैयार हो जाते। वे कहते, तुम जो चाहो वह कहो। तुम क्या कहते हो, इससे मुझे कोई मतलब नहीं में तो केवल सुनना चाहता है। उनहोंने स्पष्ट कह दिया था कि बोलने कि मुझे पूरी स्वतंत्रता है। किसी विशेष विषय का कोई आग्रह नहीं है। में जो चाहूं वह बोलूं। और वे यह भी कहते कि अगर तूम मौन रहना चाहो तो मौन रहो। मैं तुम्हारे मौन को सुन लूंगा।

और कभी कभी ऐसा भी होता कि मैं चुप रह जाता, कुछ न बोलता। और जब में अपनी आंखें बंद करता तो वे भी अपनी आंखे बंद कर लेते और हम दोनों क्वेकर्स की तरह मौन में बैठे रहते। एक बार मैने उनसे कहा: शंभु बाबू आप एक बच्चे की बातें सुनते है। बड़ा अजीब लगता है। होना तो यह चाहिए कि आप बोले और में सुनु। उन्होंने हंस कर कहा: यह असंभव है। और कभी कुछ नहीं कहूंगा। मैं तुमसे कुछ नहीं कह सकता, क्योंकि मैं कुछ नहीं जानता। और मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूं। क्योंकि तुमने मुझे अपने अज्ञान का बोध करा दिया है।

इन दोनो व्यिक्तयों न मुझे इतना ध्यान दिया कि अपने बचपन में ही में जीवन के इस तथ्य की समझ गया कि अपने प्रति दूसरे का ध्यान अपने लिए एक प्रकार का भोजन है, एक प्रकार कि पौष्टिकता है। मनोवैज्ञानिक तो अब इसकी चर्चा कर रहे है। बच्चे की देखभाल अच्छी तरह से की जाए,लेकिन अगर उसको ध्यान न मिला तो शायद वह बचेगा नहीं। अपनी पौष्टिकता के लिए ध्यान बहुत आवश्यक चीज है। इस अर्थ में मैं बहुत भाग्यशाली रहा। मेरी नानी और शंभु बाबू ने अनजाने ही मुझे जिस दिशा कि और प्रेरित किया, मैं उस और बढ़ता ही गया, बढ़ता ही गया।

भाषण की कला सीखें बिना ही मैं वक्ता बन गया। अभी भी मुझे भाषण देना नहीं आता और हजारों लोगों से बोल रहा हूं। लेकिन मैं नहीं जानता कि भाषण को आरंभ कैसे किया जाता है। क्या तुम इसका मजा देखते हो। मैं अभी इक्यावन वर्ष का हूं और शायद मनुष्य के इतिहास में सबसे अधिक बोला होऊंगा। मैंने बहुत जल्दी बोलना शुरू कर दिया था। लेकिन पश्चिमी जगत में जिसको वक्ता कहते है। वह मैं किसी भी तरीके नहीं हूं। वैसा वक्ता नहीं जो भाषण को आरंभ करते है—सज्जनों और महिलाओं। और वह बकवास वे अपने अनुभव के आधार पर नहीं बोलते। उनके शब्द और विचार सब उधार होते हे। मैं उस प्रकार का वक्ता नहीं था। मैं तो अपने ह्रदय की गहराई से अपने अनुभव के आधार पर बोलता था। जिसके कारण मेरे शब्द अंगारे बन जाते थे। मेरा बोलना कोई सीखी हुई कला नहीं बल्कि मेरा जीवन था। मेरे स्कूल के दिनों से ही सुनने वालों को यह पता लग गया था और किसी एक को नहीं, बहुतों को—कि मेरा बोलना ह्रदय से आता है। मैं तोतों की तरह रटा-रटाया भाषण नहीं देता। उसी समय वहां पर मेरे में विचार आते या ह्रदय में जो भाव उठता उनको सहज ढंग से अभिव्यक्त कर देता। बोलते समय मेरे शब्द सहज-स्फूर्त होते।

जिस प्रिंसिपल ने मुझे घड़ी दी थी और जो तुम्हारे लिए इस सारी मुसीबत को ले आया, उसका नाम था बी. एस. औधोलिया। मुझे आशा है कि वे अभी जीवित है। जहां तक मुझे मालूम है वे अभी जीवित है। जब मैं आशा करता हूं तो उसका अर्थ है कि ऐसा ही है।

उस रात उन्होंने कहा: मुझे बहुत अफसोस है। और सचमुच उनको बहुत अफसोस था। उन्होंने उस प्रोफसर को नौकरी से निकाल दिया। बी. एस. औधोलिया ने मुझ से यह भी कहा कि मुझे जब भी किसी चीज की जरूरत हो तो मैं सिर्फ उन्हें तुरंत सुचित कर दूँ। और अगर उनकी ताकत के अंदर हुआ तो वे उसे पूरा करेंगे। बाद में जब भी मुझे कोई जरूरत होती तो मैं उन्हें एक नोट लिख कर भेज देता और वे तुरंत उस आवश्यकता की पूर्ति करते। उन्होंने मुझसे कभी नहीं पूछा कि यह चीज क्यों चाहिए। एक बार मैंने उनसे स्वयं पूछा कि आप यह क्यों नहीं कभी पूछते कि तुम्हें इस चीज की जरूरत क्यों है। उन्होंने कहा: में तुम्हें जानता हूं। अगर तुमने किसी चीज कि मांग कि है तो मेरा क्यों पूछना निहायत बेवकूफी होगी। अगर तुमने कोई चीज मांगी है तो यह मानना असंभव है कि बिना जरूरत के तुम किसी चींजे कि मांग कर सकते हो। मैं तुम्हें जानता हूं और तुम्हे जानना काफी है।

मैने उनकी और देखा। मुझे आशा नहीं थी कि ऐ नामी कालेज का प्रिंसिपल इतना समझदार हो सकता है। उन्होंने हंस कर कहा: यह सिर्फ संयोग कि बात है कि मैं प्रिसिंपल हूं। मुझे होना नहीं चाहिए था। लेकिन शासकों कि गलती से मैं नियुक्त हो गया।

मैंने तो उनसे कुछ भी नहीं पूछा था, लेकिन उन्होंने मेरे चेहरे के भाव पढ़ लिए थे। उसी दिन से मैंने अपनी दाढ़ी बढानी शुरू कर दी। दाढ़ी के कारण तुम ज्यादा कुछ नहीं पढ़ सकते। अगर इतनी आसानी से चीजें पढ़ी जा सकें तो यह खतरनाक है। कुछ तो करना पड़े ताकि लोग चेहरे को समाचारपत्र कि तरह से पढ़ सकें। छह महीने के बाद जब वे मुझे फिर से मिले तो उन्होंने कहा कि तुमने दाढ़ी बढानी क्यों शुरू कर दी।

मैंने कहा: आपके कारण, आपने कहा था कि आपने मेरे चेहरे को पढ़ लिया। अब मेरा चेहरा इतनी आसानी से नहीं पढ़ा जा सकता।

उन्होंने कहा: तुम छिपा नहीं सकते, तुम्हारी आंखे तुम्हारे भावों को प्रकट कर देगी। अगर तुम सच मूच में छिपाना चाहते हो तो रंगीन चश्मे लगाना क्यों नहीं शुरू कर देते।

मैंने कहा: रंगीन चश्मा नहीं लगा सकता, क्योंकि मैं अपने और आस्तित्व के बीच कोई बाधा नहीं डालना चाहता। आंखें ही तो दोनों के बीच सेतु, पुल का काम करती है।

इसीलिए अंधे आदमी के प्रति सभी लोगों को सभी जगह सभी लोगों क मन में इतनी सहानुभूति होती है। उसके लिए कोई पुल नहीं रहा। इसलिए उसका संपर्क टूट गया है। अब शोधकर्ता कहते है कि अस्सी प्रतिशत अस्तित्व के साथ हमारा संपर्क आंखों के माध्यम से होता है। शायद वे ठीक कहते है। शायद जितना वे सोचते है उससे भी ज्यादा लेकिन अस्सी प्रतिशत तो निशचित है और शायद उससे भी अधिक सिद्ध हो, शायद नब्बे प्रतिशत या निन्यानवे प्रतिशत। आँख ही आदमी को अभिव्यक्त करती है।

बुद्ध कि आंखें एडोल्फ हिटलर जैसी नहीं हो सकती.....या तुम्हारा क्या खयाल है कि ऐसा हो सकता है। अच्छा, इन दोनों को छोड़ो, ये समकालीन नहीं थे। जीसस और जुदास समकालीन थे। समकालीन ही नहीं वरन गुरू और शिष्य थे। फिर भी मैं कहता हूं कि दोनों की आंखें एक जैसी नहीं हो सकतीं। जीसस की आंखे बच्चे जैसी सरल होंगी। हालांकि उस समय शारीरिक रूप से वे बच्चे नहीं थे। मनोवैज्ञानिक रूप से वे बच्चे ही थे। सूली पर मरते समय भी वे ऐसे दिखाई दे रहे थे, मानों वे अभी गर्भ में ही हो। इतने ताजा दिखाई दे रहे थे मानों फूल खिल ही न पाया हो और कली के रूप में ही ठहर गया हो। और उसको चारों और फैली हुई कुरूपता कि कोई जानकारी न हो। जीसस और जुदास एक साथ रहते थे। एक साथ घूमते थे। लेकिन मेरा ख्याल नहीं है कि जुदास ने कभी जीसस की आंखों में देखा हो। अगर देखा होता तो घटनाक्रम बदल जाता।

अगर जुदास एक बार भी जीसस की आंखों में देखने का साहस जुटा पाता, तो न जीसस को सूली लगती और न क्रासियनिटी होती—मेरा मतलब है, न क्रिश्चियनिटी होती। क्रिश्चिनिटी के लिए क्रासयानिटी ही मेरा शब्द है। जुदास चालाक था।

जीसस इतने सरल थे कि उनको बुद्धू भी कहा जा सकता है। अपने उपन्यास ''द ईडियट'' में फयोदोर दोस्तोवस्की ने यह कहा है।

जब वे जीसस के बारे में नहीं लिखा गया, फिर भी दोस्तोवस्की जीसस से इतना प्रभावित था कि किसी न किसी प्रकार जीसस भीतर से आ ही जाता था। उपन्यास का मुख्य चरित्र, ''द ईडियट'' असल में कोई और नहीं जीसस ही है। उनका उल्लेख कहीं नहीं किया गया। उनका नाम भी नहीं आता, उनसे कोई साम्य भी नहीं है। लेकिन जब इस उपन्यास को पढ़ो तो ह्रदय में जो गूंज उठती है उसके कारण तुम्हें मुझसे सहमत होना पड़ेगा। यह सहमति मस्तिष्क से नहीं होगी। यह सहमति कल्पना जहां तक जा सकती है उससे गहरी होगी, ह्रदय कि गहराई से होगी—सही सहमति।

सत्र—26 यायावर

मुझे चक्करों में जाना पड़ेगा—चक्कर के भीतर चक्कर, चक्कर के भीतर चक्कर, क्योंकि जीवन ऐसा है। और खासकर मेरे लिए। पचास वर्षो में मैंने कम से कम पचास जीवन जी लिए है। जीने के अतिरिक्त मैंने और कुछ किया ही नहीं है? और लोगों को तो बहुत काम धंधे है, लेकिन मैं तो बचपन से ही यायावर रहा, कुछ नहीं करता था, सिर्फ जिया। जब तुम कुछ नहीं करते, सिर्फ जीते हो तो जीवन का आयाम बदल जाता है। यह सपाट नहीं चलता, उसमें गहराई आ जाती है।

देव गीत, अच्छा हुआ कि तुम कभी मेरे छात्र न थे, नहीं तो तुम कभी डेंटिस्ट न बन पाते। मैं तुम्हें कभी प्रमाणपत्र न देता। लेकिन यहां पर तुम हंस सकते हो यह सोच कर कि मैं आराम से बैठा हूं और कोई समस्या नहीं है। लेकिन याद रखो कि अगर में मर भी जांऊ तो भी तुम्हारे ऊपर चिल्लाने के लिए में कब्र से उठ कर आ सकता हूं। जीवन भर मैं यहीं तो करता रहा हूँ।

मैंने पैसे कमाने, बैंक में पैसा जमा करने, या राजनीति के क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण पद प्राप्त करने के अर्थ में कभी कुछ भी नहीं किया। मैं अपने ही ढंग से जीता रहा हूं! और जीने के मेरे इस ढंग का अनिवार्य अंग था पढ़ना। इसलिए यहां भी, माफ करना, मैं उसे भूल नहीं सकता। मैं सदा गुरु हूं। तुम जानते हो, मैं जानता हूं इस कमरे में सब लोग जानते है कि तुम मेरे नीचे हो। और मैं डेंटल चेयर में बैठा हुआ हूं। तुम नहीं। अगर मैं हंसू तो क्षमा किया जा सकता है यह सोच कर कि बूढा आदमी अपने आपका मजा ले रहा है। बहुत खुश है। आशु भी यही सोच रही है। अन्यथा वह तो गंभीर महिला है, बहुतही गंभीर। स्त्रीयां जब अध्यापिका, टाइपिस्ट या नर्स बन जाती है तो कुछ गड़बड़ हो जाती है, वे बहुत गंभीर हो जाती है।

यहीं तो मैं कह रहा था कि जीवन चक्कर के भीतर चक्कर, चक्कर के भीतर चक्कर है—और मेरे जीवन में तो ऐसा ही है। जैसे जीवन की दूसरों से अपेक्षा की जाती है वैसा जीवन मैं नहीं जिया। मैंने कुछ और किया ही नहीं। हां, मैं सिर्फ जिया और कुछ नहीं किया सिवाय जीने के। यह इतना परिपूर्ण है कि इसका एक क्षण भी अनंत काल जैसा प्रतीत होता है। जरा सोचो तो....

मैं तो अपने ही ढंग से जीता रहूंगा। तुम लोगों को ही मुझसे मेल बिठाना होगा, और कोई रास्ता नहीं है। मैंने कभी अपने आपको कभी किसी दूसरे के अनुसार ढालने की कोशिश नहीं कि, न किसी से कोई समझौता ही किया। इसलिए मुझे नहीं पता कि कैसे करना और अगर अब मैं सीखना भी चाहूं तो बहुत देर हो गई है। लेकिन तुम लोग तो जीवन भर दूसरों से मेल बिठाते रहे हो।

मैं तो अपने माता-पिता या चाचाओं, आदि के अनुसार न चला,जो कि सब मुझे प्यार करते थे। और मेरी सहायता करते थे। न ही मेरे अध्यापक जो मेरे दुश्मन न थे और प्रोफेसर जो मेरे बावजूद सदा मेरी सहायता करते थे। लेकिन फिर भी मैं इनमें से किसी के साथ मेल न बैठा सका। उनको ही मेरे अनुसार चलना पड़ता। यह सदा से एकतरफा मामला रहा है। और अभी है।

तुम मुझसे मेल बिठा सकते हो, मैं उपलब्ध हूं। लेकिन मैं तुमसे मेल नहीं बिठा सकता। दो कारणों से—एक, तो तुम अपलब्ध नहीं हो, उपस्थित नहीं हो। अगर मैं तुम्हारा दरवाजा खटखटाऊं भी तो भीतर कोई नहीं हे। दरवाजे पर ताला लगा हुआ है। किसी को यह भी नहीं मालूम कि यह ताला किसने लगाया और चाभी कहा है। शायद खो गई है। अगर मैं चाबी खोज भी लू या ताला तोड़ भी दूँ—जो की अधिक आसान है। इससे फायदा क्या होगा। घर में तो वह व्यक्ति है ही नहीं। तुम मुझे वहां पर मिलोंगे नहीं, तूम सदा कहीं और रहते हो। अब कैसे तुम्हें खोजूं और कैसे तुम्हारे साथ मेल बिठाऊं। यह तो असंभव है। दूसरे अगर यह संभव भी हो, सिर्फ तर्क

के लिए, तो भी मैं नहीं कर सकता। मैंने कभी किया ही नहीं है। मुझे इसकी तरकीब मालूम ही नहीं। मैं तो अभी भी गांव का जंगली लड़का हूं।

अभी उस रात मेरी सैक्रेटरी रो रही थी और मुझसे कह रही थी, आप मुझ पर इतना भरोसा क्यों करते है, ओशो। मैं इस योग्य नहीं हूं, में तो आपको अपना चेहरा दिखाने के योग्य नहीं हूं।

मैने कहा: योग्यता और अयोग्यता की चिंता कौन करता है। और निर्णय भी कौन करेगा। कम से कम मैं तो नहीं करूंगा। तुम रो क्यों रहीं हो?

उसने कहा: '' केवल इस विचार से कि आपने आप काम करने के लिए मुझे चुना है..... यह इतना बड़ा काम है।''

मैंने कहा: '' यह तो भूल जाओ कि काम बड़ा है और मैं जो कहता हूं बस उसे सुनो।''

मैंने स्वयं तो कभी कुछ किया नहीं। इसलिए स्वभावत: मैं कभी इसकी फ़िकर ही नहीं करता कि वह कर भी पाएगी या नहीं। मैं तो सिर्फ उससे कहता हूं कि सुनो और जब मैं कहता हूं तो उसे सुनना ही पड़ेगा है। अब यह कैसे करती है यह मेरी समस्या नहीं है। न ही यह उसकी समस्या है। वह उसका इंतजाम कर लेती है। क्योंकि मैंने उसको ऐसा कहा था। और मैंने इसलिए कहा कयोंकि मैं प्रबंध के बारे में इंतजाम के बारे में कुछ नहीं जानता। अब तुम देखते हो कितना सही मैंने उसको चुना? यह फिट हो जाती है और मैं मिस फिट हो जाता हूं।

मेरी नानी सदा चिंतित रहती थी । वे बार-बार मुझसे कहती थीं, राजा तुम कहीं भी फिट न हो सकोगे। मैं तुमसे कहती हूं। तुम सदा मिस फिट रहोगे।

मैं हंस कर उनसे कहता था कि यह मिस फिट शब्द इतना सुंदर है कि मैं इसके प्यार में पड़ गया हूं, मुझे बहुत पसंद है। अब अगर मैं फिट हो जाऊँ तो याद रखना, मैं तुम्हारे सिर पर चोट मारूंगा—और जब मैं यह कहता हूं तो तुम जानती हो कि मेरा क्या अर्थ है। मैं सचमुच ही सिर पर चोट करूंगा, अगर तुम जीवित रही तो। अगर तुम जीवित न रही, तो मैं तुम्हारी कब्र पर आऊँगा,पर मैं निश्चित ही कुछ न कुछ उपद्रव करूंगा। आप मेरा भरोसा रखो। वे और जो से हसंती और कहती, मैं चुनौती स्वीकार करती हूं। मैं फिर से कहती हूं कि तुम सदा मिस फिट रहोगे, चाहे मैं जिंदा रहू या न रहूँ। और तुम कभी मेरे सिर पर चोट न कर सकोगे,क्यों कि तुम कभी भी फिट न हो सकोगे। और वे सचमुच सही थीं। सचमुच सब जगह मैं मिस फिट रहा।

जिस विश्वविद्यालय में मैं पढ़ाता था, वहां जब सारे स्टाप का वार्षिक फोटो लिया जाता था तो मैं उसमें कभी सम्मिलित नहीं हुआ। एक बार उप कुलपति ने मुझसे पूछा, मैंने देखा कि तुम अकेले ऐसे स्टाप के सदस्य हो जो इस वार्षिक फोटो के लिए कभी नहीं आते। बाकी सब आते है। क्योंकि इस फोटो को प्रकाशित किया जाता था। और कौन अपनी फोटो को प्रकाशित नहीं करवाना चाहता।

मैने कहा: '' निश्चित ही मैं इतने सारे इन गधों के साथ अपनी फोटो छपवाना नहीं चाहता। और ऐसी फोटो तो मेरे नाम पर सदा के लिए एक धब्बा रहेगी कि मेरी संगत कभी ऐसे लोगो से थी।

उनको बहुत धक्का लगा और उन्होने कहा: तुम इन सबको गधा कहते हो? और मुझे भी सम्मिलित करते हो।

मैंने कहा: हां, आप भी। मेरी तो यही विचार है। और अगर आप अपनी प्रशंसा सुनना चाहते है तो आपने गलत आदमी को बुला लिया। किसी एक गधे को बुला लीजिए।''

जब मैं नौकरी करता था तब की एक भी ऐसी फोटो नहीं है। जिनमें मेंने हिस्सा लिया हो। मैं बिलकुल मिस फिट था। मैंने सोचा कि ऐसे लोगों के साथ न जुड़ना ही ठीक है जिनमे और मुझमें कुछ भी समानता नहीं है।

विश्वविद्यालय में मेरा संबंध सिर्फ एक पेड़ से हुआ, एक गुलमोहर का पेड़। मुझे नहीं मालूम कि पश्चिम में गुलमोहर का पेड़ होता है या नहीं। लेकिन पूरब में तो यह एक बहुत सुंदर पेड़ माना जाता है। इसकी छाया बहुत ठंडी होती है। यह बहुत ऊंचा नहीं हाता लेकिन इसकी शाखाएं चारों और दूर-दूर तक फैल जाती है। कभी-कभी तो एक पुराने गुलमोहर पेड़ की शाखाओं की छाया के नीचे पाँच सौ लोग आसानी से बैठ सकते है। और गर्मी में जब यह खिलता है तो हजारों फूल एक साथ खिल उठते है। यह कंजूस नहीं है कि जिसके फूल एक के बाद एक खिलते है। इसकी कलियाँ रात को फूटती है और सुबह यह देख कर आश्चर्य होता है कि हजारों फूल खीलें हुए है। और इन सबका रंग मेरे संन्यासियों का रंग है। बस यही मेरा मित्र था।

वर्षो तक मैं अपनी गाडी को उसके नीचे खड़ी करता था। धीरे-धीरे सब लोग जान गए कि यह मेरी जगह है। इसलिए वे अपनी गाड़ी वहीं नहीं रखते थे। मुझे किसी से कुछ कहना नहीं पड़ा, लेकिन धीरे-धीरे सबने यह मान लिया। उस पेड़ से कोई छेड़छाड़ नहीं करता था। अगर मैं वहां न जाता तो वह पेड़ मेरी प्रतीक्षा करता रहता। वर्षो तक मैंने उसे पेड़ के नीचे गाड़ी पार्क की। जब मैने विश्वविद्यालय को छोड़ा तो मैं उप कुलपति से विदा लेने गया। इसके बाद मैंने उनसे कहा: '' अब मुझे जाना चाहिए। अंधरा हो रहा है, सूर्यास्त के पहले मेरा पेड़ कहीं सो न जाएं। मुझे उससे विदा लेनी है।

उप कुलपति ने मेरी और देखा जैसे कि में पागल हूं, पर कोई और भी ऐसे ही देखता। मिस फिट को इसी प्रकार देखा जाता है। उनको मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ। इसलिए जब मैं गुलमोहर से विदा ले रहा तो वे अपनी खिड़की से देख रहे थे।

मैंने पेड़ का आलिंगन किया और एक क्षण के लिए हम इसी प्रकार गले मिलते रहे। यह देख कर उप कुलपति दौड़ें हुए वहां आए और उन्होंने मुझसे कहा: '' क्षमा करना। मैंने कभी किसी को पेड़ से आलिंगन करते हुए नहीं देखा, लेकिन अब मुझे समझ आया कि सब लोग कितना कुछ चूक रहे है। मैंने कभी किसी को पेड़ से इस प्रकार विदा लेते या सुबह उसका अभिवादन करते नहीं देखा है। लेकिन तुमने सिर्फ मुझे यह पाठ ही नहीं पढ़ाया बल्कि अब यह बात अच्छे से मेरी समझ में आ गई है।''

दो महीने बाद उन्होंने मुझे फोन करके बताया कि यह दुखद है और बड़ी अजीब बात है कि जिस दिन तुम यहां से गए हो, उस दिन से ही तुम्हारे पेड़ को कुछ हो गया है"—अब वह पेड़ मेरा हो गया था।

मैंने पूछा: '' क्या हुआ?''

उन्होंने कहा: '' वह मरने लगा है। अब अगर तुम आओ तो सिर्फ मृत पेड़ को देखोगे, न उस पर पत्ते है, न फूल है। उसको क्या हो गया है। मैंने इस लिए फोन किया है।''

मैंने कहा: ' पेड़ के लिए मैं कैसे जवाब दे सकता हूं? आप पेड़ को ही फोन करके पूछ लेते।''

वे थोड़ी देर चुप रहे फिर बोले, मुझे सदा ही ऐसा लगता था कि तूम पागल हो।

मैंने कहा: '' आपको अभी भी विश्वास नहीं हो रहा। नहीं तो पागल आदमी को कौन फोन करता है। आपको तो पेड़ को फोन करना चाहिए था। और वह पेड़ तो आपको खिड़की के बाहर है, फोन करने की जरूरत ही नहीं है।

उन्होंने फोन रख दिया। मैं हंसा, लेकिन दूसरे दिन सुबह, विश्वविद्यालय के किसी मुर्ख के पहुंचने से पहले मैं पेड़ को देखने गया। उस समय उसके फूलने का मौसम था। लेकिन उस पर एक भी फूल न था। सिर्फ फूल ही

नहीं, पत्ते भी नहीं थे। फूल और पत्ते विहीन सिर्फ उसकी नंगी शाखाएं वहां खड़ी थी। मैंने उस पेड़ का फिर आलिंगन किया और मुझे मालूम हो गया कि वह मर गया है। पहली बार जब उसको गले लगाया था तो उसकी और से मुझे उत्तर मिला था। लेकिन अब उसकी और से मुझे कोई उत्तर नहीं मिला। पेड़ का शरीर तो खड़ा था लेकिन उसके प्राण निकल गए थे। उसका यह निर्जीव शरीर शायद इस प्रकार कई बरस तक खड़ा रहा, शायद अभी भी खड़ा हो लेकिन अब तो केवल एक मृत लकड़ी थी।

मैं कही भी फिट नहीं हो सका। जब मैं विद्यार्थी था तो बड़ा उपद्रवी था। मुझे पढ़ाने वाले हर प्रोफेसर के लिए मैं एक सज़ा के समान था। वह समझता था कि भगवान ने उसे इस रूप में सज़ा दी है। भगवान का संदेशवाहक बनने का मैंने बड़ा मजा लिया, पूरी तरह इसका मजा लिया है। कोन इसका मजा न लेता। और अगर वे सोचते थे कि मैं एक सज़ा के समान हूं, तो मैं जितना वे सोचते उससे भी बढ़ कर अपने को सिद्ध करता था।

इनमें से कुछ एक अभी कुछ दिन पहले मुझे मिले है। उन्होंने कहा, हम तो विश्वास ही नहीं कर सकते कि तुम संबुद्ध हो गए हो। तुम तो मुसीबत की जड़ ही थे। तुम्हारे साथ पढ़ने वाले सब छात्रों को हम भूल गए हैं। लेकिन अभी भी तुम कभी-कभी रात को हमें दुख स्वप्न में दिखाई देते हो।

मैं इस बात को समझ सकता हूं। मेरा कहीं भी मेल नहीं बैठता था। वे जो कुछ भी मुझे पढ़ाते थे वह इतना घटिया होता था कि मुझे उसका विरोध करना पड़ता था। मुझे उनसे कहना पड़ता था कि यह बहुत घटिया है। अब कल्पना करो कि कई दिनों की तैयारी के बाद जब कोई प्रोफेसर लेक्चर देता है तो वह आशा करता है कि छात्र उसकी सराहना करेंगें। लेकिन उसके लेक्चर के अंत में एक छात्र खड़ा होकर कहता है कि यह सब तो बहुत साधारण है। यह जानकारी बहुत मामूली है।

मैं तो बड़ा अजीब छात्र था। पहली बात याद रखने की यह है कि मेरे बाल लंबे थे—और उन लंबे बालों का इतिहास और भी लंबा था। इसके बारे में मैं बाद में किसी दिन किसी चक्कर में बताउंगा। चक्कर में घूमने का यही मजा है। अलग-अलग रास्तों पर बार-बार एक ही बिंदु पर पहुंच जाते है—जैसे पर्वत के शिखर पर जाते समय गोल-गोल घूम कर तुम विभिन्न तलों से एक ही दृश्य को देखते हो। हर बार कुछ अलग होता है क्योंकि तुम नई जगह पर खड़े होते हो, लेकिन दृश्य वही होता है। वह ज्यादा सुंदर हो जाता है। बहुत ज्यादा सुंदर भी हो सकता है।

क्योंकि तुम अधिक देख सकते हो....इसके बारे में कभी बात करूंगा, लेकिन आज नहीं।

खास तौर पर आज मैं कहना चाहता था कि ध्यान एक प्रकार कि दुधारी तलवार है। दुधारी, क्योंकि यह दोनों और से काटती है। एक और से सुनने वाले को और दूसरी और से बोलने वाले को। इन दोनों को जोड़ भी देती है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। अगर व्यक्ति ध्यान दे—किसी चीज पर भी....क ख ग—किसी पर भी, तो ध्यान देने की प्रक्रिया में ही वह पूर्ण हो जाता है। क्रिस्टलाइजेशन हो जाता है। एक चीज पर ध्यान केंद्रित करने से वह अपने भीतर अपने होने पर केंद्रित हो जाती है।

लेकिन यह बात अधूरी है। जो आदमी ध्यान से सुन रहा है वह निश्चित ही विभक्त नहीं रहता, अखंड हो जाता है। पूरब के सभी ध्यान-स्कूलों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है। किसी भी चीज पर ध्यान केंद्रित करना काम कर जाता है। अमरीकियों के लिए तो कोकाकोला की बोतल भी ध्यान का केंद्र बन सकती है। सिर्फ कोका कोला की बोतल को ध्यान से देखते रहो तो महर्षि महेश योगी के भावातीत-ध्यान का रहस्य समझ में आ जाता है। यह केवल अर्ध-सत्य है अर्ध-सत्य झूठ से अधिक खतरनाक होता है।

अगर पुस्तक को पढ़ते रहो या मंत्र का जाप करते रहो या किसी मूर्ति को देखते रहो, तो आधा सत्य संभव है। दूसरा आधा सत्य तो संभव हो सकता है। जब तुम्हारा किसी जीवित व्यक्ति के साथ ह्रदय लयबद्ध हो जाए। मैं इसको प्रेम नहीं कहता,क्योंकि इसका तुम गलत अर्थ लगा लोगे। इसको मित्रता भी नहीं कहता, क्योंकि तब तुम सोचो गे कि यह तो तुम पहले से ही जानते हो। मैं इसको सिन्क्रॉनिसिटी कहता हूं ताकि तुम इसकें बारे में थोड़ा सोचों और अपने होने का कुछ अंश दे सको।

जब ध्यान पूरा दिया जाता है। जब व्यक्ति लीन हो जाता है। तो सिन्क्रॉनिसिटी घटती है। हो सकता है कि फूल को या सूर्यास्त को देखते समय तुम उसमें लीन हो जाओ यह बच्चों के खेलने की खुशी से तुम भी खुश हो जाओ....बस एक विशेष प्रकार का लयबद्धता चाहिए। जब ऐसा होता है तो ध्यान घटता है। अगर यह गुरु और शिष्य के बीच में घटे तब तुम्हारे हाथ में अमूल्य हीरा आ जाता है।

मैंने तुम्हें बताया है कि मैं भाग्यशाली रहा हूं, लेकिन मुझे नहीं मालूम कि ऐसा क्यों है। कुछ बातें होती है। जिनके बारे में केवल यही कहा जा सकता था। वे है, क्यों है, उसका कोई कारण नहीं होता। तारे है, गुलाब है, विश्व है—या यूं कहना चाहिए कि अनेक विश्व है। अस्तित्व को विश्व नहीं बल्कि बहु-विश्व कहना चाहिए। बहुआयामी विचार को प्रचालित करने की जरूरत है।

न जाने कब से मनुष्य, एक के विचार से ग्रसित रहा है। और मैं तो पैगाम हूं: मैं एक भगवान में विश्वास नहीं करता, मैं भगवानों में विश्वास करता हूं। मेरे लिए तो पेड़ परमात्मा है, पर्वत परमात्मा है, मनुष्य परमात्मा है, लेकिन हमेशा नहीं। उसमें उसकी संभावना है। स्त्री परमात्मा है लेकिन हमेशा नहीं, ज्यादातर तो यह झंझटी होती है। लेकिन यह उसका चुनाव है। उसको ऐसा चुनाव करने की कोई जरूरत नहीं थी। किसी ने ऐसा करने को उसे बाध्य नहीं किया था।

साधारणत: पुरूष हसबेंड़ अर्थात पति होता है। हर भाषा में यह शब्द बहुत कुरूप है। हसबेंड़ शब्द हसबेंड्री से आया है अर्थात बागवानी, कृषि, खेती। यही तो मेरे संन्यासी कर रहे है। और जब तुम किसी को अपना हसबेंड़ कहते हो तो क्या तुम्हें मालूम है कि तुम क्या कह रहे हो। क्या उस बेचारे आदमी को मालूम है कि तुमने उसको किसान के स्तर पर खड़ा कर दिया है। मूल विचार तो अलग में यही है कि पुरूष है किसान और स्त्री है खेत। कितना महान विचार है।

पुरूष सामान्यत: सांसारिक कामों में उलझा रहता है और स्त्री तो उससे भी अधिक। वह

हर बार में पुरूष से बढ़ कर है। वह पीछे बैठ कर गाड़ी चलाती है, मगर चलाती वही है।

एक पुरूष तेज गाड़ी चलाते हुए पकड़ा गया। सिपाही को बहुत गुस्सा आया। क्योंकि वह सिर्फ गाड़ी ही तेज नहीं चला रहा था बल्कि उसके पास लाइसेंस भी न था। और उसने लाइसेंस की जगह सिनेमा के टिकट दिखा दिए जो वे देखने जा रहा था। यह तो ज्यादती थी। सिपाही ने कहा कि अब में तुम्हें असली टिकट दूँगा। पत्नी पति पर चिल्लाने लगी, मैं तुमसे शुरू से कह रही थी, लेकिन तुम कभी मेरी बात सुनते हो। और वह इतने जौर से चिल्लाई कि सिपाही भी चालान लिखते-लिखत रूक गया। और सुनने लगा कि क्या हो रहा है। पत्नी ने कहा: तुम्हारा चशमा कहां है। तुम देख तो सकते नहीं और गाड़ी चला रहे हो, और तूम पर कोई असर ही नहीं हो रहा। और उपर से तुमने नशा भी कर रखा है। तुम्हें मालूम ही नहीं हो रहा की मैं कितने जोर से लात मार रही हुं। फिर उसने सिपाही की तरफ मुड़ कर कहा: आफिसर, आप इसको जेल भेज दीजिए। आप इसे छह महीने की कड़ी सज़ा दीजिए। इससे पहले कम में यह कभी सुधरेगा नहीं।

पुलिस भी नहीं समझ सका कि इतनी कड़ी सजा, सिर्फ तेज गाड़ी चलाने के लिए, उसने उस आदमी से कहा: आप जा सकते है। ऐसी पत्नी देकर भगवान ने पहले ही आपको काफी सज़ा दे दी है। वह काफी है। मुझे भी

आप पर दया आती है, अब मुझे मालूम हुआ की आपकी नजर क्यों खराब हो गई। ऐसी औरत को कौन देखना चाहेगा। वह बार-बार आपको पैरों से मार रही थी इसलिए आपको गाड़ी तेज चलानी पड़ी। मुझे आपसे पूरी हमदर्दी है आप गाड़ी तेज चलाते रहिए लेकिन वह हमेशा वहां रहेगी—इतनी तेज चलाइए कि वह पीछे बहुत पीछे छूट जाए। स्त्री और पुरूष दोनों , कुरूप, बहुत कुरूप जीते है। एक बार मेरे गांव से मेरे एक प्रोफेसर की पत्नी जा रही थी। मैंने उसे एक बार बताया था कि मेरी नानी और मेरा सारा परिवार वहां रहता है। वह आपसे मिल कर बहुत खुश होगें। मैंने नानी से उसका परिचय कराया। जब वह चली गई तो हम दोनों हंस पड़े। नानी ने हंस कर कहां—यह ता कुछ भी नहीं है। तुम्हें तो उसके को सहन करना पड़ता है। अगर यह ऐसी है तो वह कैसा होगा।

मैंने कहा: मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूं—वह पासपोर्ट फोटो से भी अधिक कुरूप लगता है।

मैं जीवन भर पढ़ाता रहा हूं। अपने स्कूल के दिनों में भी में शायद ही कभी उपस्थित रहता था। उन्हें मुझसे छुटकारा पाने के लिए मुझे पचहतर प्रतिशत अस्थिति देनी पड़ती थी। यह भी सरसर झूठ था। मैं तो निन्यानवे प्रतिशत गैर-हाजिर रहता था। प्राइमरी स्कूल में, हाई स्कूल में और कालेज में मेरा यही रवैया रहा।

कालेज में तो प्रिंसिपल बी. एस. अधौलिया के साथ मैंने यह समझोता किया था। वे बहुत ही अच्छे आदमी थे। वे मध्य भारत में स्थित जबलपुर के एक कालेज के प्रिंसिपल थे। जबलपुर में बहुत से कालेज है और उनका कालेज बहुत नामी था। एक कालेज से मैं निकाल दिया गया था, क्योंकि एक प्रोफेसर ने कहा था कि जब तक मुझे निकाला न जाएगा वे वहां पर काम नहीं करेंगे। उनकी यही शर्त थी। और वे सम्मानित प्रोफेसर थे। इस कहानी को में शायद विस्तार से बाद में बताउंगा।

सो स्वभावत: मुझे निष्कासित किया गया। एक बेचारे गरीब छात्र की कौन परवाह करता है। और वे प्रोफेसर थे पीएचडी., डी. लिट. आदि। और उन्होंने जीवन भर उस कालेज में पढा़या था। अब मेरे कारण उनको कैसे निकाला जा सकता है। मैं ठीक था या गलत, यह तो सवाल ही न था। मुझे निष्कासित करने से पहले उन प्रिंसिपल ने मुझसे यही कहा था। वे अपना स्पष्टीकरण देना चाहते थे। उनहोंने मुझे बुलाया उन्होंने सोचा होगा कि मैं अन्य साधारण छात्रों की तरह निकले जाने के डर से कांप रहा होऊंगा। उनहोंने यह सोचा भी न होगा कि मैं उनके आफिस में भूकंप की तरह प्रवेश करूंगा।

इससे पहले कि वे मुझसे कुछ कहते, मैंने चिल्ला कर उनसे कहा: आप तो गोबरगणेश निकले, और मैने उनकी मेज पर इतने जोर से घूंसा मारा कि वे एकदम खड़े हो गए। मैने कहा: क्या आपकी मेज में स्प्रिंग लगे है। मैं इसको मारता हूं। तो आप खड़े हो जाते है। बैठ जाइए। मैने इतने जोर से कहा कि वे चुपचाप बैठ गए। उनको डर लगा कि मेरी आवाज दूसरे लोग सुन लें और अंदर न आ जाएं, खासकर दरवाजे पर खड़ा दरबान भीतर न आ जाए।

उन्होंने कहा: अच्छा मैं बैठ जाता हूं। अब कहो, तुम्हें क्या कहना है।

मैने कहा: यह अच्छी बात है। आपने मुझे बुलाया है और आप मुझसे पूछ रहे है कि मुझे क्या कहना है। मैंने कहा: आपको चाहिए कि आप डाक्टर एस.एन.एल. श्रीवास्तव को निकाल दें। अपनी पी. एच डी. और डी. लिट. डिग्रियों के बावजूद वे मूर्ख है। मैंने उनका कोई नुकसान नहीं किया। मैने उनसे केवल प्रश्न पूछे थे जो कि बिलकुल लाज़मी है। वह हमें लाजिक पढ़ाते है। सो अगर उनकी क्लास में तर्क न करूं तो कहां करूं। आप ही बताइए।

उन्होंने कहा: हां, बात तो ठीक है कि अगर वे तर्क पढ़ाते है तो तुम्हें तर्कपूर्ण होना चाहिए।

तो मैंने कहा: आप उन्हें बुला कर देखिए कि कौन तर्कपूर्ण है।

लेकिन जैसे ही डाक्टर श्रीवास्तव ने सुना कि मैं प्रिंसिपल के आफिस में हुं और उनका बुलाया जा रहा है। वैसे ही वे अपने घर भाग गए। वे तीन दिन तक आए ही नहीं। मैं तीन दिन तक लगातार उनका इंतजार करता रहा। आफिस के खुलते ही में वहां पहुंच जाता और उसके बंद होने तक वहां बैठा रहता। अंत में उन्होंने प्रिंसिपल को पत्र लिख दिया कि ऐसा कब तक चल सकता है। में इस लड़के का सामना नहीं करना चाहता। या तो इस लड़के को कालेज से निकाल दीजिए या मुझे नौकरी से जवाब दे दीजिए।

प्रिंसिपल न वह पत्र मुझे दिखाया। मैंने कहा: अब ठीक है, वे तो आपको उपस्थिति में भी सिर्फ एक बार मेरा सामना नहीं करना चाहते। नहीं तो आपको मालूम हो जाता कि कौन तर्कपूर्ण है। और इस पत्र से यह प्रमाणित होता है कि वे कायर है। मैं नहीं चाहता कि उनको नौकरी से निकाल दिया जाए। उनके बीबी बच्चे है और दूसरी भी जिम्मेदारियाँ है। मैं ह्रदय हीन नहीं हूं। आप मुझे कालेज से निकाल दीजिए। लेकिन यह आदेश लिख कद दीजिए।

उन्होने मेरी और देखा और कहा: अगर मैं तुम्हें निष्कासित करता हूं तो तुम्हें दूसरे किसी कालेज में दाखिला मिलना बहुत मुश्किल हो जाएगा।

मैंने कहा: यह मेरी समस्या है। मैं तो मिस फिट हूं। इसलिए मुझे ऐसी समस्याओं का सामना करना ही पड़ेगा।

इस घटना के बाद मैंने शहर के सब प्रिंसिपल के दरवाजे खटखटाए—यह शहर कॉलेजों का शहर है— और उन सबने कहा, अगर तुम निष्कासित किए गए हो तो हम यह खतरा मोल नहीं लेना चाहते। हमने सुना है कि पिछले आठ महीनों से तुम निरंतर डाक्टर श्रीवास्तव से बहस करते रहे हो और उनको पढ़ाने ही नहीं दिया।

जब मैंने यह सारी कहानी श्री बीएस. अधौलिया को सुनाई तो उन्होंने कहा, मैं यह खतरा उठाता हूं। लेकिन एक शर्त है। वह बहुत अच्छे और उदार आदमी थे लेकिन उनकी भी सीमाएँ थी। मुझे किसी से असीम उदारता की अपेक्षा नहीं है। लेकिन सच तो यह है कि असीम उदारता के बीना तुम जीवन के ऐ सुंदरतम अनुभव से वंचित रह जाते हो। मुझे दाखिल करके उन्होंने जो उदारता दिखलाई उस शर्त के कारण उसका महत्व कम हो गया। मेरे लिए तो वह शर्त अच्छी सिद्ध हुई, लेकिन उनके लिए नहीं। उनके लिए तो वह एक अपराध था और मेरे लिए वह स्वतंत्र होने का अवसर था।

उन्होंने एक एग्रीमेंट पर मुझसे हस्ताक्षर करवाए कि मैं फिलासफी की क्लास में उपस्थित नहीं होऊंगा। मैंने कहा, यह तो बहुत अच्छा है। सच तो यह है कि इससे ज्यादा में और क्या मांग सकता था। यही तो मैं कहना पंसद करता कि उन मूर्खों के लेक्चर में न जाता। मैंने कहा कि मैं हस्ताक्षर करने को तैयार हूं, लेकिन आपको भी एक एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर करने होंगे कि आप मुझे पचहतर प्रतिशत उपस्थिति देंगे। उनहोंने कहा: यह वादा है मैं लिख कर नहीं दे सकता, क्योंकि उससे काफी जटिलता पैदा हो जाएगी,पर यह मेरा वादा रहा।

मैंने कहा: मैं आपकी बात मान लेता हूं, और मैं आप पर भरोसा करता हूं। और उन्होंने अपना वायदा पूरा किया। और मुझे नब्बे प्रतिशत उपस्थिति दी, हालाकि में उनके कालेज की एक भी फिलासफी की क्लास में कभी नहीं गया।

मैं प्राइमरी स्कूल में भी ज्यादा उपस्थित नहीं रहता था। क्योंकि वहां की नदी बहुत सुंदर और आकर्षक थी। तो सदा मैं दूसरे छात्रों के साथ उस नदी के किनारे पहुंच जाता। आ नदी के पार बहुत सुंदर जंगल था। और वहां खोज करने को जीवंत भूगोल था। स्कूल के उस गंदे नक्शे की कौन फ़िकर करता। कॉन्स्टेंटिनोपाल कहां है। यह जानने में मेरी कोई दिलचस्पी न थी। मैं नदी और जंगल की खोज में लग जाता। करने को तो और भी बहुत से काम थे।

उदाहरण के लिए जेसे-जैसे मेरी नानी ने धीरे-धीरे मुझे पढ़ना सिखाया मैने पुस्तकें पढ़नी शुरू कर दी। उस शहर के पुस्तकालय का जितना उपयोग मैंने किया उतना मुझसे पहले या बाद में शायद ही किसी ने किया हो अब तो वे बड़े चाव से दिखाते है कि मैं वहां पर कहां बैठता था। कहां बैठ कर पढ़ता था और नोट लिखता था। लेकिन सच बात तो यह है कि उन्हें अब यह बताना चाहिए कि यह वही जगह है जहां से वे मुझे बाहर फेंकना चाहते थे। यह धमकी तो उन्होंने कई बार मुझे दी थी।

लेकिन एक बार जब मैंने पढ़ना आरंभ किया तो नये-नये आयाम खुलते गए। मैंने तो सारे पुस्तकालयों चाट लिया। जो पुस्तकें मुझे प्रिय थी उनको में रात को अपनी नानी को पढ कर सुनाता था। तुम्हें इस बात पर विश्वास नहीं होगा कि पहली पुस्तक जो मैने नानी को पढ कर सुनाई वह थी: '' दि बुक ऑफ मिरदाद'' इसके बाद तो अनेक पुस्तकें सुनाई। कभी-कभी बीच में वे मुझसे किसी वाक्य या पैराग्राफ या सारे अध्याय का सारांश में अर्थ पूछती।

मैं उनसे कहता: नानी मैं तो पढ़ कर आपको सुना रहा था, क्या आपने सुना नहीं।

वह कहती: जब तूम पढ़ कर आपको सुना रहा था, तुम्हारी आवाज में इतनी लीन हो जाती हूं कि मैं भूल ही जाती हूं कि तुम क्या पढ़ रहे हो। मेरे लिए तो तुम्हीं मेरे मिरदाद हो। जब तक तुम इसे मुझे समझाओगे नहीं तब तक मैं मिरदाद से अपरिचित ही रह जाऊंगी।

फिर में उनको अच्छी तरह समझता। इस प्रकार यह मेरा प्रशिक्षण हो गया। दूसरों को समझाने की मेरी आदत हो गई। जो व्यक्ति अपनेआप अर्थ की गहराई में नहीं जा सकता उसका हाथ पकड़ कर धीरे-धीरे मैं शब्दों की थाह में ले जाता हूं। जीवन भर यही करता रहा हूं। मैंने यह काम स्वयं नहीं अपनाया, न किसी दूसरे ने ही इसे मेरे लिए चुना जैसाकि कृष्ण मूर्ति के लिए चूना गया था। कृष्ण मूर्ति पर तो यह काम दूसरों द्वारा थोपा गया था। आरंभ में तो उनके भाषण भी एनीबीसेंट और लीड बीटर द्वारा लिखे गए थे। और कृष्ण मूर्ति केवल उन्हें दोहरा देते थे। उनके लिए सारी योजना पहलेसे ही तैयार कर ली गई थी। उनकी निजता पर कुछ नहीं छोड़ा गया उनका सार काम व्यवस्थित था। पूर्व-नियोजित था।

मैं तो कोई योजना नहीं बनाता। इसीलिए अभी तक गंवार हूं। कभी-कभी मुझे खुद आश्चर्य होता है कि में यहां क्या कर रहा हूं, लोगों को संबुद्ध होना सिखा रहा हूं। और जब वे संबुद्ध हो जाते है तो मैं तुरंत उन्हें फिर से असंबुद्ध होने का ढंग सिखाने लगता हूं।

मुझे मालूम है कि वह समय करीब आ रहा है जब मेरे बहुत से संन्यासी समाधिस्थ हो जाएंगे। और अभी से मैंने तैयारी कर ली है कि इतने जाग्रत लोगों को कैसे दुबारा असंबुद्ध बताऊंगा। यही तो मैं करता रहा हूं। बड़ी अजीब काम है, लेकिन इसका पूरा मजा लिया है और अभी भी ले रहा हूं,इसलिए ऐसा कर सकता हूं। मैं अंतिम सांस तक लुंगा—शायद उसके बाद भी। मैं थोड़ा सनकी आदमी हूं, इसलिए ऐसा कर सकता हूं। अभी तक किसी दूसरे सनकी ने ऐसा कभी किया नहीं। लेकिन किसी न किसी को कभी न कभी तो करना ही पड़ेगा। किसी को तो शुरूआत करनी ही होगी।

सत्र—27 पागल बाबा और हरी प्रसाद

यहां आने से पहले मैं सुप्रसिद्ध बांसुरी वादकों में से एक, हरि प्रसाद की बांसुरी सुन रहा था। इससे बहुत सी यादें ताजा हो गई।

संसार में अनेक प्रकार की बांसुरियां हैं। सबसे महत्वपूर्ण अरबी है और सबसे सुंदर है जापानी—ओर, और भी कई है। लेकिन भारत की छोटी सा बांस की बांसुरी की मधुरता की तुलना दुसरी कोई बांसुरी नहीं कर सकती। और बांसुरी वादक का जहां तक सवाल है तो उस पर तो हरि प्रसाद का पूर्ण अधिकार है। उन्होंने एक बार नहीं, कई बार मेरे सामने बांसुरी बजाईं है। जब कभी उनके भीतर पूरी तरह डूब कर, उच्चतम बांसुरी बजाने का भाव उठता तो मैं जहां कही भी होता वे वहां आ जाते—कभी-कभी तो हजारों मील का सफर तय करके मेरे पास पहुंचते, सिर्फ अकेले में घंटे भर मुझे जी भर कर अपनी बांसुरी सुनाने के लिए।

मैने उनसे पूछा: हरि प्रसाद, आप अपनी बांसुरी कहीं भी बजा सकते हो। इतना लंबा सफर करने की क्या आवश्यकता है। और भारत में एक हजार मील पश्चिम के बीस हजार मील के बराबर है। भारतीय रेलगाड़ियाँ अभी भी दौड़ती नहीं,चलती है। जापान में ट्रेन चार सौ मील प्रति घंटा की गति से चलती है। और भारत में तो चालीस मील प्रति घंटा की गति बहुत तेज है। और बसें और रिक्शे.....मेरे बेडरूम के केवल एक घंटा बांसुरी बजाने के लिए....मैंने उनसे पूछा क्यों।

उन्होंने कहा; क्योंकि प्रशंसक तो मेरे हजारों है, लेकिन स्वरहीन स्वर को, नाद हीन नाद को कोई नहीं समझता। जब तक कि कोई स्वरहीन स्वर को समझे, बांसुरी की सही सरहना नहीं होती। इसलिए मैं आपके पास आता हूं, और आपके सामने एक घटा बांसुरी बजा कर मुझे जो आत्म पुष्टि होती है उसके कारण मैं कई महीनों तक नाना प्रकार के मूर्खों के सामने बजा सकता हूं, गवर्नर, मुख्यमंत्रियों, और सब प्रकार के तथा कथित बड़े लोगों के सामने। जब मैं दी मूर्खों से थक जाता हूं, बहुत परेशान हो जाता हूं। तो मैं दौड़ा हुआ सीधे आपके पास आ जाता हूं। इसलिए कृपा करके इस एक घंटे के समय से इनकार मत करना।

मैंने कहा: '' आपकी बांसुरी को, आपके गीत को सुनना बहुत ही आनंददायक है। बड़े सौभाग्य से ऐसा संगीत सुनने को मिलता है। विशेषत: इसलिए भी कि यह मुझे उस व्यक्ति की याद दिलाता है जिसने हमारा परिचय कराया था। क्या आपको उस व्यक्ति की याद है।

हरि प्रसाद तो बिलकुल भूल गए थे कि किसने उनको मुझसे परिचित करवाया था। और मैं इसे समझ सकता हूं,...क्योंकि यह करीब चालीस साल पहले कि बात थी, मैं छोटा सा बच्चा था और वे नवयुवक थे। उन्होंने याद करने कि बहुत कोशिश की, लेकिन उन्हें याद नहीं आई। उन्होंने कहा: '' माफ करना, ऐसा लगता है कि मेरी याददाश्त ठीक से काम नहीं करती है। मुझे वह आदमी याद ही नहीं आ रहा जिसने मुझे आपसे परिचित करवाया था। अन्य बातों को मैं भूल जाऊँ यह तो ठीक है, लेकिन इस व्यक्ति की तो मुझे याद आनी चाहिए।''

जब मैंने उनको उस आदमी की याद दिलाई तो उनकी आंखों में आंसू आ गए। आज में तुम लों्गो से उसी व्यक्ति की बात करना चाहता हूं।

पागल बाबा उन अत्यंत असाधारण व्यक्तियों में से एक थे जिनके बारी में मैं चर्चा करूंगा। वे मग्गा बाबा की श्रेणी के थे। वे पागल बाबा के नाम से जाने जाते थे। वे सदा अचानक आंधी की तरह आते थे और उसी प्रकार अचानक गायब भी हो जाते थे।

मैंने उन्हें नहीं खोजा था। उन्होंने मुझे खोजा था। मैं नदी में तैर रहा था जब वे वहां से गूजरें। उन्होंने मेरी और देखा, मैंने उनकी और देखा और वे नदी में कूद पड़े और हम दोनों एक साथ तैरते रहे। मुझे नहीं मालूम कि हम कब तक तैरते रहे, लेकिन में ''बस'' कहने बालों में से नहीं था। वे उस समय भी माने हुए संत थे। मैंने उनको पहले भी देखा था, लेकिन इतने नजदीक से नहीं। मैंने उनको धार्मिक-सम्मेलन में भजन, परमात्मा के गीत गाते हुए देखा था। और उनके लिए मेरे ह्रदय में एक विशिष्ट भाव था, लेकिन इसको मैंने अपने तक ही रखा था। इसके बारे में मैंने एक शब्द भी नहीं कहा था। कुछ बातें ऐसी होती है, जिनको ह्रदय में रखना ही अच्छा होता है। वहां वे जल्दी बढ़ती हे, क्योंकि वह उपयुक्त जमीन है।

उस समय वे काफी वृद्ध थे और में बारह बरस से अधिक का नहीं था। इसलिए उनको पड़ा, अब रुके, मैं थक गया हूं। मैंने कहा: आप जब भी कहते में तैरना बंद कर देता। लेकिन जहां तक मेरा सवाल हे, मैं नदी में मछली की तरह हूं।

हां, मेरे शहर में सब लोग मुझे इसी तरह जानते है। सुबह चार बजे से लेकर दस बजे तक लगातार छह घंटे और कोन तैरता। जब सब लोग सोए रहते, गहरी नींद मैं, तो हर रोज नदी पर पहुंच जाता था। सब लोग चले जाते तब भी मैं नदी पर ही होता। हर रोज दस बजे मेरी नानी आती तब मुझे पानी से बाहर निकलना पड़ता, क्योंकि वह मेरे स्कूल जाने का समय था। लेकिन स्कूल के तुरंत बाद मैं फिर नदी में घुस जाता।

जब मैंने पहली बार हरमन हेस का उपन्यास ''सिद्धार्थ'' पढ़ा,तो मुझे भरोसा न हुआ कि उसने नदी के बारे में जो लिखा है उसको तो मैं कई बार जान चुका हूं। और मुझे यह भी अच्छी तरह से मालूम था कि हेस केवल कल्पना कर रहा है। कल्पना अच्छी थी, क्योंकि वह बुद्ध बनने से पहले मर गया। वह '' सिद्धार्थ'' की रचना कर सका लेकिन स्वयं '' सिद्धार्थ'' न बन सका। लेकिन जब मैंने उसके द्वारा लिखा गया नदी का वर्णन पढ़ा—नदी के भाव, नदी के परिवर्तन, उसकी विभिन्न आंतरिक दशाएं, तो मेरा ह्रदय द्रवित हो उठा, पुलकित हो उठा। बजाय किसी और बात के उसके नदी के वर्णन से मैं बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ। न जाने कब से मैं नदी से प्रेम करता था। ऐसा लगता था जैसे नदी के पानी में मेरा जन्म हुआ हो।

नानी के गांव में भी या तो में झील में तैरता रहता या नदी में। नदी थोड़ी दूर थी, शायद दो मील की दूरी हो। इसलिए अधिकतर मुझे झील में ही जाना पड़ता। लेकिन कभी-कभी में नदी पर भी चला जाता, क्योंकि नदी और झील के गुण बिलकुल अलग-अलग है। झील तो एक प्रकार से मृत है। वह बहती नहीं, कहीं जाती नहीं, स्थिर रहती है। मृत्यु का यही अर्थ है। झील गतिशील नहीं है।

नदी सदा आगे बढ़ती जाती है, किसी अज्ञात लक्ष्य की और दौड़ती है। शायद उसे लक्ष्य का पता भी नहीं होता, लेकिन जाने-अनजाने वह अपने लक्ष्य पर पहुंच ही जाती है। झील तो जहां है वहीं स्थिर रहती है। कहीं आती-जाती नहीं, रोज-रोज मरती जाती है। वह पुनरुज्जीवित नहीं होती। लेकिन नदी कितनी ही छोटी हो, वह सागर जितनी बड़ी है, क्योंकि देर-अबेर वह सागर ही बन जाती है।

मुझे नदी की जीवंतता, उसकी गतिशीलता, उसकी निरंतर प्रवाहित होना,आगे बढते रहना बहुत पसंद है। उसके बहाव को देख कर मैं रोमांचित हो जाता हूं। इसलिए, हालांकि नदी दो मील दूर थी, फिर भी उसका आनंद लेने के लिए मैं कभी-कभी वहां चला जाता था।

लेकिन मेरे पिता के शहर में नदी बहुत नजदीक थी। मेरी नानी के धर से केवल दो मिनट का रास्ता था। छत के ऊपर से उसका वैभव और सौंदर्य देखा जा सकता था। उसका आकर्षण अदभुत था। उसके निमंत्रण को अस्वीकार करना मुश्किल था।

स्कूल से वापस आकर मैं जल्दी से नदी जाता। हां एक क्षण के लिए में नानी के घर पर रूक कर, अपनी किताबें वहां पटकता। वे बड़ी मुश्किल से मुझे चाय पीने के लिए मनाती और कहती, इतनी भी क्या जल्दी है। नदी कहीं भागी नहीं जाती। वह ट्रेन तो नहीं है जो चल पड़ेगी। बार-बार वे यही कहती, याद रखो कि ट्रेन नहीं है जो छूट जाएगी। पहले अपनी चाय पी लो, फिर जाओ। और अपनी किताबों को इस तरह मत फेंको।

मैं कुछ न कहता, क्योंकि इससे और देरी होती। इस पर नानी को बड़ी हैरानी होती। वे कहती, हमेशा तो तुम बहस करने के लिए तैयार रहते हो, लेकिन जब तुम्हें नदी पर जाना होता है तो मैं चाहे कितनी ही बेतुकी बात क्यों ना बोल दूँ, तुम ऐसे चुपचाप सुन जाते हो जैसे कि बड़े आज्ञाकारी बच्चे हो। नदी जाते समय तुम्हें क्या हो जाता है।

मैंने कहां: नानी, आप मुझे जानती है। आपको अच्छी तरह से मालूम है कि मैं समय बरबाद नहीं करना चाहता। नदी मुझे बुला रही है। चाय पीते समय मैं उसकी लहरों की आवाज को सुन सकती हूं।

गर्म चाय पीने से कई बार मैंने अपने होठों को जलाया है। मैं जल्दी में होता था और कप को खाली करना हाता था। चाय पीए बिना नानी मुझे जाने न देती।

वे गुड़िया जैसी नहीं थी, मुझे टोकने का गुड़िया का अपनी खास ढंग है। वह हमेशा कहती है, जरा रुकिए। चाय बहुत गर्म है। शायद मेरी पुरानी आदत है। जब कप को अपने हाथ में लेता हूं तो उसे कहना पड़ता है, रुकिए, यह बहुत गरम है। मुझे मालूम है कि वह ठीक कह रही है। इसलिए मैं तब तक इंतजार करता हूं जब तक वह आपत्ति न करें। इसके बाद मैं चाय पीती हूं। शायद यह मेरी पुरानी आदत अभी भी है—जल्दी-जल्दी चाय पीकर नदी की और भाग जाना।

नानी को मालूम था कि मैं जल्दी से जल्दी नदी पर पहुंचना चाहता हूं। फिर भी वे कोशिश करती कि मैं कुछ खा लू। मैं उनसे कहता,सब कुछ मुझे दे दो। मैं अपने खीसे में डाल लूगा और रास्ते में खा लुंगा। मुझे हमेशा काजू पसंद रहे है। खासकर नमकीन काजू और वर्षों तक मैं अपने खीसे काजुओं से भरता रहा हूं। उस समय मैं शर्ट्स पहनता था। मुझे ट्राउजर्स बिलकुल पसंद नहीं थे। क्योंकि मेरे सब अध्यापक ट्राउजर्स, लंबी पैंट पहनते थे। और मुझे उनसे धृणा थी। तो लंबी पैंट का संबंध उनसे जुड़ गया होगा। इसलिए मैंने शर्ट्स ही पहने।

भारत में जलवायु के हिसाब से शार्ट्स ट्राउजर्स से ज्यादा उचित है। मेरे शार्ट्स के दोनों जेब काजुओं से भरे रहते थे। और तुम्हें आश्चर्य होगा कि काजुओं के कारण अपने दर्जी से कहता था कि दो खीसे मेरी कमीज में लगा दो। मेरी कमीज में हमेशा दो जेब रहती थी। मेरी समझ में नहीं आता था कि कमीज में केवल एक जेब क्यों लगाई जाती है और पतलून या शर्ट्स में भी एक ही क्यों नहीं होती। शर्ट में सिर्फ एक क्यों होती है। इसका कारण बहुत साफ नहीं था। लेकिन मुझे मालुम है। कमीज की जेब हमेशा बाई और लगाई जाती है। ताकि दायां हाथ आसानी से उसमें चीजें डाल सके या निकाल सकें। और बेचारे जेब बांए हाथ के लिए किसी जेब की जरूरत नहीं होती। गरीब आदमी बेचारा जेब का क्या करेगा।

बांया हाथ शरीर के दमित अंगों में से एक है। मैं जो कह रहा हूं उसको आजमा कर देखो तो तुम्हें मालूम हो जाएगा कि बायां हाथ भी उन सब कामों को कर सकता है जो दायां हाथ करता है। यहां तक कि लिख भी सकता है, शायद अधिक अच्छा लिख सकता हे। तीस चालीस साल की आदत के बाद, आरंभ में तो तुम्हे बांए हाथ से काम करना मुश्किल लगेगा, क्योंकि बांए हाथ की उपेक्षा कि गई है। और उसे अशिक्षित रखा गया है।

बायां, हाथ तुम्हारे शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि यह तुम्हारे दिमाग के दांए भाग का प्रतिनिधित्व करता है। तुम्हारा बांया हाथ तुम्हारे दांए दिमाग से जुड़ा है और तुम्हारा दाया हाथ तुम्हारे बांए दिमाग से जुड़ा हुआ है। क्रास की तरह। दाया असल में बांया है और बांया असल में दाया है। बांए हाथ की

उपेक्षा करने का मतलब है कि तुम दांए दिमाग कि उपेक्षा कर रहे हो और दिमाग के दांए भाग में एकत्रित है वह सब कुछ जो अत्यंत मूल्यवान है—हीरे, पन्ने,माणिक, पुखराज, वह सब जो मूल्यवान है—सारे इंद्रधनुष, फूल, और तारे। दिमाग के दाएँ भाग में रहते है सब प्रवृतियां और अंतर्बोध। या यूं कहा जा सकता है कि दिमाग का दायां भाग स्त्रैण है। दाया हाथ तो पुरूष जैसा कठोर है।

तुम लोगों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि जब मैंने लिखना आरंभ किया तो मैंने बांए हाथ से लिखता शुरू किया था। इसके लिए सब लोगों ने मेरा विरोध किया सिवाय मेरी नानी के। वे अकेली थीं जिन्होंने कहा, अगर वह बांए हाथ से लिखना चाहता है तो इसमे हर्ज क्या है। सवाल तो लिखने का है। इससे क्या फर्क पड़ता है कि वह किस हाथ का उपयोग करता है। वह बाएं हाथ से कलम को पकड़ता है और तुम दाएं हाथ से कलम को पकड़ते हो, इसमे समस्या क्या है। लेकिन किसी ने मुझे बांए हाथ को इस्तेमाल न करने दिया। और वे सब जगह तो मेरे साथ नहीं हो सकती थी। स्कूल में सब अध्यापक और सब विद्यार्थी मेरे बांए हाथ के उपयोग के खिलाफ थे। दायां हाथ ठीक है और बांया गलत हे।

अभी भी मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों। शरीर के बांए भाग को क्यों अस्वीकार किया जाता है। और इस प्रकार उसके उपयोग को क्यों सीमित रखा गया है। और क्या तुम्हें मालूम है कि दस प्रतिशत लोग बांए हाथ से लिखना चाहते है। उन्होंने बांए हाथ से ही लिखना आरंभ किया था, लेकिन ऐसा करने से उनका रोका गया।

मनुष्य के साथ घटी प्राचीनतम दुर्घटना यही है कि उसका आधा हिस्सा उसको उपलब्ध नहीं है। हमने अजीब ढंग का आदमी बना दिया है। यह उस बैलगाड़ी जैसा है जिसका एक ही चाक है। दूसरा चाक है, लेकिन वह अदृश्य है। उसका उपयोग बहुत कम करते है—अगर किया भी जाता है तो दिखाई नहीं देता। यह गंदी बात है। मैंने आरंभ से ही इसका विरोध किया। आपने अध्यापक और हेड मास्टर से पूछा कि आप मुझे बताइए कि मैं क्यों दाएं हाथ से ही लिखू। इसका कारण क्या है। इस पर उन्होंने अपने कंधे उचका दिए। मैंने कहा इस प्रकार कंधे उचकाने से तो काम नहीं चलेगा। आपको इसका उत्तर देना पड़ेगा। अगर में अपने कंधे उचकांऊ तो आपको यह स्वीकार न होगा। तो मैं क्यों स्वीकार करूं। आपको मुझे इसका कारण बताना ही पड़ेगा।

लेकिन वे लोग न तो मुझे समझ सके, न वे मुझे समझा सके। इसलिए मुझे स्कूल के बोर्ड में भेजा गया। सच में वे मुझे अच्छे से समझते थे, जो कह रहा थे, मैं जो कह रहा था वह सीधा साफ़ था। अपने बांए हाथ से लिखने में क्या गलती है। अगर मैं अपने बांए हाथ से सही उत्तर लिखू तो क्या वह उत्तर गलत हो सकता है। कयोंकि वह बांए हाथ से लिखा गया है।

उन्होंने कहां: तुम तो पागल हो ही और हम सब को भी पागल बना दोगे। इसलिए तुम स्कूल क बोर्ड में जाकर ही अपना यह सवाल पूछो।

स्कूल—बोर्ड था म्यूनिसिपैलिटी—कमेटी जो सारे स्कूलों का नियंत्रण करती थी। उस शहर में चार प्राइमरी स्कूल और दो हाई स्कूल थे—एक लड़कियों का और एक लड़कों का। कैसा शहर था जहां लड़के और लड़कियों को अलग-अलग रखा जाता था। प्राय: सभी विषयों के बारे में अंतिम निर्णय इसी बोर्ड लिया जाता था। इसलिए मुझे भी वहीं भेजा गया। बोर्ड के सदस्यों ने मेरी बात को ध्यान से सुना जैसे कि में खूनी हूं और वे मुझे फांसी पर लटकाने बाले न्यायाधीश है। मैंने उनसे कहा: इतनी गंभीरता की जरूरत नहीं है। आराम से मेरी बात सुनिए। मैं तो केवल यही पूछना चाहता हूं कि अगर मैं बांए हाथ से लिखता हूं तो इसमें गलत क्या है। उन्होंने एक दूसरे की और देखा। मेंने कहा इस तरह से काम नहीं चलेगा। आपको मुझे उत्तर देना होगा, मुझे टालना इतनी आसान नहीं है। आप अपनी उत्तर लिख कर दीजिए, क्योंकि मुझे आप पर कोई भरोसा नहीं है।

आप जिस तरह एक दूसरे को देख रहे है। इससे आपकी चालबाजी और राजनीति झलक रही है। इसलिए अच्छा तो यही हे कि आप अपने उत्तर को लिख कर दें। कृपया लिख कर बताइए कि बांए हाथ से सही उत्तर लिखने में क्या गलती है।

वे लोग तो मूर्तियों की तरह चुपचाप बैठे हुए थे। किसी ने भी मुझसे कुछ नहीं कहा। लिखने के लिए भी तैयार नहीं थे। उनहोंने केवल यहीं कहा: इस पर हमे सोचना पड़ेगा।

मैंने कहा: जरूर सोचिए। मैं यहां पर खड़ा हूं। मेरे सामने सोचने से आपको कोन रोक रहा है। किसी प्रेम-संबंध की तरह क्या यह कोई निजी मामला है। और आप सब आदरणीय नागरिक है। कम से कम एक ही प्रेम-प्रसंग से छह आदमियों को कैसे संबंधित नहीं होना चाहिए। यह तो ग्रुप-सेक्स जैसा होगा।

उन्होंने चिल्ला कर मुझसे कहा: चुप रहो, ऐसे शबद का प्रयोग मत करो।

मैने कहा: मैं क्या करू, आपको उकसाने के लिए मुझे ऐसे शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है। अन्यथा आप तो मूर्तियों की तरह बैठे रहेगें। कम से कम अब आपने कुछ कहा तो अब आप भलीभाँति सोचिए। इसमें मैं कोई अड़चन नहीं डालुगां। आपकी सहायता ही करूंगा।

उन्होंने कहा: कृपा करके बहार जाओ। हम तुम्हारे सामने सोच नहीं सकते, क्योंकि तुम इसमें अवश्य दखल ड़ालोगे। हम तुम्हें जानते है और इस शहर का हर आदमी तुम्हें जानता है। अगर तुम नहीं जाओगे तो हम चले जाएंगे। मैने कहा: सज्जनता तो इसी में है कि पहले आप जाएं। उनको मेरे सामने ही अपने कमेटी रूम से बहार जाना पडा। निर्णय अगले दिन आया। अध्यापक सही है आपको दांए हाथ से लिखना चाहिए।

इस प्रकार का झूठापन सब जगह प्रभावी है। मैं तो समझ भी नहीं सकता कि यह किस प्रकार की मूर्खता है। और ताकत ऐसे लोगों के पास है—दांए हाथ वाले पुरूष तान शा हों के पास। कवि शक्तिशाली नहीं है, न संगीतज्ञ.....

अब इस व्यक्ति हरी प्रसाद चौरासिया को ही देखिए, कितनी सुंदर बांस की बांसुरी बजाते है। लेकिन उसका सारा जीवन गरीबी में ही बीता। वे पागल बाबा को याद न कर सके जिन्होंने उसका परिचय मुझसे कराया था यहाँ ऐसा कहना बेहतर होगा कि मेरा परिचय उनसे कराया था, क्योंकि उस समय मैं बच्चा था और उस समय हरी प्रसाद सुविख्यात बांसुरी बादक थे—जहां तक बांस की बांसुरी का सवाल है वे उसके जाने-माने अधिकारी थे।

पागल बाबा ने मुझे और भी बांसुरी वादकों से परिचय करवाया था, खासकर पन्ना लाल घोष से। मैंने उनका बांसुरी वादन भी सुना, लेकिन हरी प्रसाद की तुलना में वे कुछ भी नहीं थे। पागल बाबा ने मुझे इन लोगो से क्यों परिचित करवाया। वे स्वयं बहुत अच्छे बांसुरी बादक थे। लेकिन वे लोगो के सामने नहीं बजाते थे। हां, वे मुझ बच्चे के सामने बजाते थे या हरि प्रसाद या पन्ना लाल घोष के सामने बजाते थे। लेकिन उन्होंने हमसे वादा लिया था कि यह बात हम किसी को नहीं बताएँगे। वे अपनी बांसुरी को अपने झोले में छिपा कर रखते थे।

अंतिम बार जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने अपनी बांसुरी मुझे दी और कहा: अब दुबारा हम नहीं मिलेंगे—ऐसा नहीं की तुमसे मिलना नहीं चाहता, बल्कि इसलिए कि यह शरीर अब अधिक दिन तक नहीं चल सकता। उस समय वे लगभग नब्बे वर्ष के होंगे। में तुम्हें यह बांसुरी अपने स्मृति चिन्ह की तरह दे रहा हूं। और मैं तुमसे यही कहना चाहता हूं कि अगर तुम इसका अभ्यास करो तो तुम महान बांसुरी वादक बन जाओगे। मैने कहा: लेकिन मैं बड़ा बांसुरी बादक बनना भी नहीं चाहता। बांसुरी वादन का एक ही आयाम है। इससे मुझे पूर्णता का अनुभव नहीं हो सकता। वे मेरी बात को समझ गए। उन्होंने कहा: जैसी तुम्हारी मर्जी।

मैंने उनसे कई बार पूछा कि जब वे मेरे गांव आते थे तो सबसे पहले मुझसे ही क्यों संपर्क करते थे। उन्होने कहा: तुम पूछते हो, क्यों, अरे तुम्हें तो यह पुछना चाहिए कि मैं इस गांव में क्यों आता हूं। सिर्फ तुमसे मिलने के लिए ही यहाँ आता हूं। और किसी कारण से मैं नहीं आता। एक क्षण के लिए मैं चुप रह गया, कुछ न बोल सका। धन्यवाद भी नहीं।

हिन्दी में अंग्रेजी के थे क्यू जैसा कोई शब्द नहीं है। इसके लिए धन्यवाद शब्द का प्रयोग किया जाता है। लेकिन धन्यवाद का वास्तविक अर्थ है: भगवान तुम्हारा कल्याण करें। अब एक बच्चा नब्बे साल के आदमी से यह कैसे कह सकता है कि भगवान आपका कल्याण करे। मैने कहा:: बाबा, मुझे मुश्किल में मत ड़ालो। में आपको धन्यवाद भी नहीं दे सकता। उनके थे क्यू कहने के लिए मैंने उर्दू के शब्द शुक्रिया का प्रयोग करना पडा। शुक्रिया का अर्थ होता है आभार। और यह अँग्रेजी के थे क्यू के बहुत निकट है। मैने कहा: आपने मुझे यह बांसुरी दी है। यह मुझे सदा आपकी याद दिलाएगी, यह आपकी यादगार है, मैं इसको बजाने का अभ्यास भी करूंगा। शायद आप मेरे भविष्य को मुझसे अधिक जानते है। शायद यह बांसुरी वादन ही मेरा भविष्य है, लेकिन अभी तो मुझे इसमें कोई भविष्य दिखाई नहीं दे रहा।

उन्होंने हंस कर कहा: '' तुमसे बात करना बहुत मुश्किल है। बांसुरी अपने पास ही रखो और इसे बजाने की कोशिश करना। अगर कुछ हो गया तो ठीक है अगर कुछ नहीं हुआ तो इसको मेरी याद की तरह रखना।

मैंने उसे बजाना शुरू कर दिया और मुझे बजाना बहुत अच्छा लगा। मैंने वर्षों तक बांसुरी बजाईं और में इसमें बहुत कुशल हो गया। मैं बांसुरी बजाता था और मेरा एक मित्र—उसको मित्र नहीं, परिचित ही कहना चाहिए—तबला बजाता था। हम दोनों को तैरने का बहुत शौक था, इसलिए हम दोनों की जान-पहचान हो गई।

एक साल जब नदी में बाढ आई हुई थी और हम दोनों उसे पार करके दूसरे किनारे पर पहुंचने की कोशिश कर रहे थे। बरसात में नदी को पार करने में मुझे बड़ा मजा आता था। उस समय उस नदी का पाट बहुत बड़ा हो जाता था। और उसका प्रवाह इतनी तेज हो जाता था कि उसकी धारा हमें दो-तीन मील अपने साथ बहा ले जाती थी। उसको पार करने के लिए हमें तीन मील पीछे की और जाना पड़ता था और पार करके वापस आने के लिए फिर तीन मील जाना पड़ता था। अर्थात छह मील की यात्रा थी। और वह भी बरसात के मौसम में। लेकिन मुझे इसमें बहुत मजा आता था।

यह लड़का—इसका नाम भी हरी था। भारत में हरी नाम बहुत प्रचलित है। हरी का अर्थ होता है, भगवान। लेकिन यह बड़ा अजीब नाम है। और किसी भाषा में भगवान के लिए हरि जैसा नाम नहीं है। क्योंकि इसका वास्तविक अर्थ है, चौर, भगवान-चौर। भगवान को चोर क्यों कहा जाता है। क्योंकि देर-अबेर वह तुम्हारे ह्रदय को चुरा लेता है....जल्दी चुरा लें तो और भी अच्छा है। उस लड़के का नाम हरी था।

नदी में बाढ़ पूरे वेग पर थी। हम दोनों उसको पार करने की कोशिश कर रहे थे। उस समय वह कम से कम एक मील चौड़ी हो गई थी। पार करते हुए वह बीच में कहीं डूब गया। मैंने उसको खोजने की बहुत कोशिश की, लेकिन यह असंभव था। नदी की बाढ़ बहुत तेज थी। अगर वह डूब गया था तो उसको खोजना मुश्किल था। हां, नीचे की और कुछ दूरी पर उसका शरीर मिल सकता था।

मैं जितने जोर से पुकार सकता था उतने जोर से उसे पुकारा, लेकिन नदी भयंकर शोर कर रही थी। मैं रोज उस नदी के पार जाता। उसे खोजने के लिए एक बच्चा जो भी कर सकता है वह मैंने किया। पुलिस ने कोशिश की, मछुआरों न भी कोशिश की, लेकिन उसका कोई निशान नहीं मिला। नदी उसे बहा कर जे गई होगी। उसकी याद में मैंने पागल बाबा की दी हुई बांसुरी को नदी में फेंक दिया।

मैंने कहा: '' मैं तो खुद को ही फेंक देना पसंद करता, लेकिन मुझे दूसरा काम करना है। मेरे लिए तो अपने सिवाय यही सबसे अधिक मूल्यवान चीज है, इसलिए में इसे फेंक देता हूं। हरि के तबले की संगत के बिना अब मैं कभी बांसुरी नहीं बताऊंगा। अब मैं बांसुरी बजाने के बारे में सोच भी नहीं सकता। कृपया, इसको ले लें।''

वह बहुत सुंदर बांसुरी थी। शायद बाबा के किसी भक्त ने उनके लिए खास तौर पर बनाई थी। उसने उस पर सुदंर नक्काशी की थी। पागल बाबा के बारे में मुझे बहुत कुछ कहना है, बहुत सी बातें बतानी है। इस लिए उनकी चर्चा बाद में करूंगा।

समय क्या है।

दस बज कर तेईस मिनट, ओशो।

अच्छा, आज तो पागल बाबा की बात करन के लिए समय काफी नहीं है। इसलिए बाद में कभी उनकी चर्चा करेंगें। लेकिन जो लड़का, हरि मर गया। उसके बारे में कुछ कहना बाद में शायद भूल जाऊँ। कोई नहीं जानता कि वह मर गया था या घर से भाग गया था, क्योंकि उसका शव कभी नहीं मिला। मुझे लगता है कि वह मर गया, क्योंकि में उसके साथ तैर रहा था और अचानक नदी के बीचोंबीच मैंने उसको गायब होत देखा। मैंने चिल्ला कर उससे पूछा: '' हरि, क्या बात है, लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला।''

मेरे लिए तो भारत भी मरा हुआ है। मुझे भारत जीवित मनुष्यता का अंश प्रतीत नहीं होता। वह तो मृत जमीन है। इतनी शताब्दियों से मृत है कि मृतक भी यह भूल गए है कि वे मृतक है। वे इतने लंबे समय से मृत है कि इसके बारे में भी उनका याद दिलाने की जरूरत है। मैं यही कोशिश कर रहा हूं। लेकिन यह बहुत ही धन्यवाद-रहित काम है। किसी को याद दिलाना कि '' जनाब, आप अपने को जीवित मत समझिए। आप तो कब के मर चुके है।''

पिछले पच्चीस वर्षों से रात-दिन मैं निरंतर यही कर रहा हूं। यह देख कर बहुत ही दुःख होता है, बहुत पीड़ा होती है। जिस देश में बुद्ध, महावीर और नागार्जुन को जन्म दिया अब मर गया है।

सत्र—28 पन्न लाल घोष और सचदेवा

अभी-अभी मैं फिर सुन रहा था—हरी प्रसाद चौरासिया को नहीं, बल्कि एक दूसरे बांसुरी वादक को। भारत मैं बांसुरी के दो आयाम है: एक दक्षिणी और दूसरा उत्तरी। हरी प्रसाद चौरासिया उत्तरी बांसुरी वादक है। मैं ठीक इसके उलटे, आयाम, दक्षिणी को सुन रहा था। इस आदमी से भी मेरा परिचय पागल बाबा ने ही करवाया था। मेरा परिचय देते हुए उन्होंने उस संगीतज्ञ से कहा: शायद यह तुम्हारी समझ में नहीं आएगा कि मैं इस लड़के से तुम्हारा परिचय क्यों करा रहा हूँ। अभी तो तुम्हारी समझ में नहीं आएगा, लेकिन शायद एक दिन प्रभु-इच्छा से तुम समझ जाओगे।

यह आदमी भी वैसी ही बांसुरी बजाता है, लेकिन बिलकुल दूसरे ढंग से। दक्षिण की बांसुरी बहुत ही तीखी और भीतर चुभनें वाली होती है। वह सुनने वाले के अंतर को झकझोर देती है। उत्तर भारतीय बांसुरी बहुत ही मधुर होती है, लेकिन थोड़ी सपाट होती है—उत्तर भारत की तरह सपाट।

उस आदमी ने मुझे हैरानी से देखा। एक क्षण के लिए कुछ सोचा, फिर उसने कहा: '' बाबा, अगर आप मुझे इससे परिचित करा रहे है तो अवश्य कोई कारण होगा, जिसे अभी में अपनी असमर्थता के कारण नहीं समझ रहा हूं। लेकिन मेरे प्रति आप जो असीम प्रेम दिखा रहे है उसे लिए मैं आपका आभारी हूं। यह आपकी कृपा है कि आप मुझे वर्तमान से ही नहीं वरन भविष्य से भी परिचित करा रहे है।

मैंने उन्हें केवल कुछ बार ही सुना है, क्योंकि हमारा कभी भी सीधा संबंध नहीं हुआ। मैं उन्हें पागल बाबा के माध्यम से ही जानता था। वे बांसुरी वादक उनसे आते थे। अगर संयोगवश मैं भी वहीं पर होता तो वह मुझे हेलो कह देते। बाबा हमेशा हंसते और कहते, '' इस लड़के को हेलो कहने से काम नहीं चलेगा। मूर्ख, उसके पैर छुओ।'' उन्होंने बड़े संकोच से झिझकते हुए मेरे पैर छुए। मैं उनकी झिझक को देख सका। इसीलिए मैं उनका नाम नहीं बता रहा। वे अभी भी जीवित है और शायद उनको बुरा लगे, क्योंकि उन्होंने प्रेम वश मेरे पैरो को नहीं छुआ था। पर क्योंकि पागल बाबा ने आदेश दिया था। इसलिए उनको मेरे पैर छूने पड़े। मैं हंस पडा और मैंने कहा: '' बाबा,क्या मैं इसे मार सकता हूं? उन्होंने कहा: '' हां, जरूर।'' और तुम भरोसा कर सकते हो कि वह मेरे पैर छू रहा था तो मैंने उसके मुंह पर एक थप्पड़ मारा।

इससे देव गीत ने जो पत्र मुझे लिखा है उसकी याद आ गई। मुझे मालूम था कि वह रोएगा। मुझे मालूम था। उसके पत्र लिखने से पहले ही मुझे कैसे मालुम हो गया? अगर वह मुझे नहीं भी लिखता तो भी मुझे पता था। मैं अपने लोगों को जानता हूं, मुझसे जो प्रेम करते है उनको तो मैं अच्छी तरह से जानता हूं—चाहे वे कुछ बोले या न बोले। और उसके शबद मेरे ह्रदय को छू गए। उसने कहा: '' आप चाहे जितना मुझे मारे, मेरी पिटाई करें—इससे मुझे कोई पीड़ा नहीं होगी। पीड़ा तो तब होती है जब मैं नहीं हंसता तब भी आप कहते है कि देव गीत, मुझे धोखा देने की कोशिश मत करो, यह सुन कर मुझे बहुत दुःख होता है। यह ऊपरी तौर से अन्याय है ओर इसी से मुझे पीड़ा होती है।'' उसने लिखा था: '' ऊपरी तौर से अन्याय। गुड़िया, मैं सोचता हूं यही शब्द है —ऊपरी तौर से अन्याय। क्या मैं ठीक कह रहा हूं गुड़िया ?

''हां, ओशो।''

ठीक है, क्योंकि गुड़िया को ही वह पत्र मुझे पढ़ कर सुनाना पडा। मैंने तो बरसों से कुछ नहीं पढ़ा, क्योंकि ड़ाक्टरों ने कहा था कि अगर मैं पढ़ना चाहूंगा तो मुझे चश्मा लगाना पड़ेगा। और मुझे चश्मे से नफरत है। मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकता कि मुझे चश्मा लगा हुआ है। इससे तो अच्छा है कि में अपनी आंखों को बंद रखूं। मैं

अपने और चारों और के वातावरण के बीच में कोई बाधा नहीं खड़ी करना चाहता। चाहें वह पारदर्शी कांच ही क्यों न हो। इसलिए दूसरे को मुझे पढ़ कर सुनाना पड़ता है।

ये शब्द ‘ उपरी तौर से अन्याय’ उसके ह्रदय को प्रतिबिंबित करते है। उसे मालूम है कि बाहर से ऐसा ही दिखाई देता है। सचमुच यह अन्याय ही मालूम होता है। कि जब वह हंसता नहीं होता तब भी मैं कहता हूं कि देव गीत, हंसों मत। स्वभावत: इन शब्दों को सुन कर वह स्तंभित हो जाता है। और बेचारा देव गीत तो उस समय चुपचाप नोट लिख रहा होता है।

फिर मुझे पागल बाबा की याद आई, क्योंकि आज सुबह ही मैं उनकी बात कर रहा था और मैं उसे जारी रखूंगा। वे ऊपरी तौर से लोगों से अनर्गल वाक्य बोलते थे। और इतना ही नहीं, कभी-कभी तो उनको मार भी देते थे। मेरी तरह नहीं—वे सचमुच मारते थे। मैं सचमुच नहीं मारता। ऐसा नहीं की मैं मारना नहीं चाहता। पर इसलिए कि मैं बहुत आलसी हूं। एक-दो बार मैंने कोशिश की, लेकिन तब मेरा हाथ दुखाने लगा। इससे उस आदमी को कोई नसीहत हुई या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन मेरे हाथ ने कहा, कृपा करके दुबारा ऐसा मत करना।’’

लेकिन पागल बाबा तो आकारण ही मार बैठते थे। कोई उनके पास चुपचाप बैठा होता और वे उसको एक थप्पड़ मार देते। उस आदमी ने न कुछ किया था और न ही कुछ कहा था, फिर भी......

कभी-कभी लोग आपत्ति करते कि यह अन्याय है और पागल बाबा से कहते, बाबा, आपने उसको क्यो मारा? वे हंस कर कहते, ‘’ तुम्हें मालूम है कि मैं पागल हूं।’’ बस यहीं उनके लिए पर्याप्त स्पष्टीकरण था। अब मैं इस प्रकार के स्पष्टीकरण नहीं दे सकता। मैं तो इतनी पागल हूं कि बड़े-बड़े बुद्धिमान भी नहीं समझ पाते कि यह कैसा पागलपन है। पागल बाबा तो सीधे-सादे पागल थे। मैं बहुआयामी पागल हुं।

इसलिए कभी तुम लोगों को ऐसा लगे कि ऊपरी तौर से अन्याय हो रहा है तो ऊपरी तौर से शब्द को याद रखना। मैं अन्याय नहीं कर सकता। खासकर जो लोग मुझसे प्रेम करते है। उनके प्रति मैं अन्याय कैसे कर सकता हूं। प्रेम अन्यायपूर्ण कैसे हो सकता है। लेकिन बहार से कई बार ऐसा दिखाई देगा। अब मेरे जैसे लोगों का क्या ठिकाना कि कब क्या कर बैठे? हो सकता है कि मैं पिटाई तो आशु कि कर रहा हूं और असल में लक्ष्य मेरा देवराज हो। यह बहुत ही जटिल मामला है। इसे कंप्यूटराराइज्ड नहीं किया जा सकता है। यह इतनी जटिल है कि कोई भी कंप्यूटर इसका मास्टर नहीं बन सकता। कंप्यूटर कुछ भी बन सकता है—इंजीनियर, डाक्टर या दाँत का डाक्टर—सब संभव है। और मनुष्य से अधिक कुशल हो सकता है। लेकिन दो बातें है जो कंप्यूटर नहीं कर सकता। एक तो वह जीवित नहीं हो सकता है। वह मशीन की आवाज में गुनगुना सकता है। लेकिन वह जीवित नहीं हो सकता। वह जीवन के बारे में कुछ नहीं जान सकता। दुसरी बात पहली का ही परिणाम है। वह गुरु नहीं बन सकता।

जीवन को जानने का अर्थ है गुरु बनना। सिर्फ जीवित होना एक बात है। जीवित तो सब लोग हैं। लेकिन अपनी और मुडना,अपने होने की और मुड़ना, देखने वाले को देखना, जानने बाले को जानना—यही मेरा तात्पर्य है। अपनी और मुडना या लौटने का मेरा अभिप्राय यहीं है तब कोई मास्टर बनता है। अब कंप्यूटर तो अपनी ओर मुड़ नहीं सकता। यह संभव नहीं है।

देव गीत, तुम्हारा पत्र बहुत सुंदर था—और तुम रोंए। मुझे इस बात की खुशी है। जो कुछ भी प्रामाणिक होता है वह मार्ग पर सहायक होता है। और आंसुओं से अधिक प्रामाणिक तो और कुछ भी नहीं हो सकता है। हां, पेशेवर रोने वाले भी होते है। लेकिन वे कई प्रकार कि चालाकी करते है।

भारत में जब कोई मरता है तो यह होता है। कोई बूढा व्यक्ति, जिसकी किसी को जरूरत नहीं थी, और सच में जिसके मर जाने से सब खुश होते है। लेकिन कोई अपनी खुशी दिखा नहीं सकता—तब वे पेशेवर रोने वालों को बुलाते है। खासकर बंबई, कलकत्ता, मद्रास और नई दिल्ली जैसे बड़े शहरों में। उनकी अपनी संस्था भी होती है। तुम उनको फोन करके बता सकते हो कि कितने रोने बाले चाहिए और वे सब आ जाते है। ओ वे खूब रोते हैं। किसी भी असली रोने बाले को वे हरा सकते है। और वे बहुत कुशल होते है और उनको सारी चालाकी मालूम होती है। वे कुछ खास दवाई का उपयोग करते है, उसे अपनी आँख क नीचे लगाते है और उससे आंखों से पानी बहना शुरू हो जाता है। और यह बड़ी अजीब बात है जब आंसू बहने लगते है तो आदमी उदास हो जाता है।

मनोविज्ञान में बहुत दिनों से एक बहस चल रहीं है। जिसका अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ। विवादास्पद विषय यह है कि पहले क्या होता है। डर के कारण आदमी दौड़ने लगता है या दौड़ने के कारण डरने लगता है। इस दोनों स्थितियों को प्रतिपादित करने वाले लोग है। एक पक्ष के लोग कहते है कि डर के कारण दौड़ना पड़ता है और दूसरा पक्ष कहता है कि दौड़ने से डर पैदा होता है। बात तो एक ही है। दोनों बातें एक साथ होती है।

जब तुम उदास होते हो तो आंसू आ जाते है। अगर किसी कारण आंसू आ जाएं—चाहे वे कृत्रिम आंसू ही क्यों न हों—तब भी अपनी स्वाभाविक प्रवृति के कारण तुम उदास हो जाते हो। मैंने इन पेशेवर रोने वालों का ह्रदय-विदारक रोना देखा है। और तब यह नहीं कहा जा सकता कि वे दूसरों को धोखा दे रहे है। हां, वे अपने आप को अवश्य धोखा देते है।

प्रेम के आंसुओं का अनुभव सबसे अधिक मूल्यवान है। तुम रोंए....मैं खुश हूं....क्योंकि तुम नाराज भी हो सकते थे, लेकिन तुम नाराज नहीं हुए। तुम गुस्सा हो सकते थे, चिड़चिड़ा सकते थे। लेकिन तुमने यह नहीं किया, तुम रोंए, और ऐसा ही होना चाहिए था।

लेकिन याद रखना कि मैं बार-बार यहीं करूंगा, क्योंकि मुझे अपना काम करना है। डेंटिस्ट होने के कारण तुम्हें मालूम है की कितनी पीड़ा होती है। लेकिन फिर भी तुम्हें अपना काम तो करना ही पड़ता है। तुम पीड़ा पहुंचाना चाहते इसलिए अनास्तेसिया जैसा दवाओं से तुम पूरे शरीर को या शरीर के किसी अंग को बेहोश कर देते हो, जड़ बना देते हो।

लेकिन मेरे पास तो ऐसा कुछ नहीं है। मुझे तो अपने सारे आपरेशन बिना अनास्तेसिया के ही करने पड़ते है। बिना बेहोश किए अगर किसी आदमी के पेट या दिमाग को खोल दिया जाए तो क्या होगा। उसे इतनी अधिक पीड़ा होगी कि या तो उसके कारण को खोल दिया वह पागल हो जाएगा या अपनी खोपड़ी को वहीं पर छोड़ कर वह टेबल से कूद कर अपने घर भाग जाएगा। यह भी हो सकता है कि वह डाक्टर को ही मार डाले। लेकिन मेरा काम ऐसा ही है। इस काम को किसी दूसरे ढंग से किए जाने की संभावना ही नहीं है।

ऊपर से तो यह सदा ''अन्यायपूर्ण'' ही दिखाई देगा। मुझे यह जान कर संतोष हुआ कि यद्यपि इससे तुम्हें पीड़ा होती है, दुःख होता है। तथापि तुम मेरे प्रेम को समझ सकते हो। तुम भूल न जाओ इसलिए मैं बार-बार कहूंगा कि मैं ऐसा कहता ही रहूंगा।

तुम बहुत डर गए होगें, क्योंकि तुमने '' पुनश्च'' लिखा है और फिर '' पुनश्च पुनश्च'' लिखा है जिससे तुम कहते हो कि, '' मैंने तो कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं आपके इतना निकट आऊँगा, अथवा यह काम मुझे दिया जाएगा। मुझे नोटस लेना बहुत अच्छा लगता है। फिर पुनश्च पुनश्च: '' कृपया, इस काम को कभी मत रोकिए गा।''

उसे डर लगा होगा कि मैं उसे इस काम से रोक दूँगा य सोच कर कि इससे उसे पीड़ा पहुँचती है। आशु को भी पीड़ा होती हैं। लेकिन उसने अभी पत्र नहीं लिखा है। लेकिन मैं भविष्यवाणी करता हूं कि एक दिन वह लिखेगी—चाहे की ही लिख दे। मैं तो दांए-बाएं मारता ही रहता हूं। क्योंकि तुम दोनों मेरे दोनों ओर रहते हो। इसलिए यह स्वभाविक है कि तुम दोनों को सबसे अधिक मान मिलती है। मेरा तो सदा यही ढंग रहा है। जो लोग मेरे निकटतम होते है उनको सबसे अधिक पिटा जाता है। लेकिन इससे उनका विकास होता है। जैसे-जैसे उन्होंने हर आघात को आत्म सात किया वैसे-वैसे वे अधिक सघन और अखंड होते गए। यह तो वे भाग जाते या वे विकसित होते। करो या मरो। अगर तुम करो—सघनता और अखंडता से मेरा यही अर्थ है—तभी जीवित हो सकते हो। नहीं तो आदमी पशु की तरह मरता है आदमी हर क्षण मर रहा है।

यह पत्र कई अर्थों में बहुत सुंदर था। गुड़िया,बाद में इस पत्र को उसे वापस दे देना, ताकि वह उसके नोट का फुट नोट बन सके या जो अनेक परिशिष्ट लिखें जाएँगे यह उनका ही भाग बन जाएगा।

फिर पागल बाबा.... इसी को तो मैं कहता हूं चक्करों में घूमना। उन्होंने मुझे केवल इन बांसुरी वादकों से ही नहीं वरन अन्य संगीतज्ञों से भी परिचित किया। वे तो संगीतज्ञों के भी संगीतज्ञ थे। साधारण लोगों को तो यह मालूम नहीं था, लेकिन महान संगीतज्ञ यह जानते थे कि वह किसी चीज से भी संगीत पैदा कर सकते थे। मैंने देखाथा एक कंकड़ से अपने कमंडल को बजा कर वे अत्यंत मधुर स्वर उत्पन्न कर लेते थे। हिंदू संन्यासी भोजन और पानी को भी सितार की तरह बजाते थे। बाजार में बच्चों के लिए बिकने वाली बांसुरी—जो एक रूपये में एक दर्जन मिल जाती थी—उनके हाथ में आकर ऐसी उत्कृष्ट स्वर लहरी का सृजन करती थी कि संगीतज्ञ भी आश्चर्य से भर जाते थे। और सोचते कि क्या ये संभव है, आरंभ में मैं जिस दक्षिण के बांसुरी वादक का उल्लेख किया था उसका नाम तुम्हें बताना चाहता हूं। ताकि मैं ठीक वैसा ही हो जाऊँ जैसा मैं आया था। मैं अपने हाथ कुछ भी लेकर नहीं आया था—एक स्मृति भी नहीं1 मेरे इस संसमरणों का मुख्य उदेश्य यही है कि में वैसा ही कोरा हो जाऊँ जैसा आया था। उस बांसुरी बादक का नाम था, सचदेवा। दक्षिण भारत में उसका नाम बहुत प्रसिद्ध था। पागल बाबा ने मुझे जहां ती बांसुरी वादकों से परिचित किया था। एक थे हरि प्रसाद चौरासिया। जो उत्तर भारत के थे। जहां अलग तरह का संगीत होता है। दूसरे बंगाल के पन्ना लाल घोष। वे अलग तरह की बांसुरी बजाते है। उनकी बांसुरी बड़े जोर से बजती है और बड़ी ओजस्वीनी है। उसमे ओज गुण की प्रधानता है। और सचदेवा की बांसुरी ठीक इसके विपरीत थी—मधुर, स्त्रैण, गुण प्रधान, प्राय: मौन। उनके नाम का उल्लेख करने के बाद अब मैं हलका महसूस कर रहा हूं। अब उन पर निर्भर है कि वह इसे कैसे ग्रहण करते है।

अपने पत्र में देव गीत कहता है: ओशो, मुझे आप पर भरोसा है।

यह तो मुझे मालूम है, इसमें कोई शक नहीं है, नहीं तो मैं इतना क्यों मारता। और याद रखो कि एक बाद जब मैं किसी पर विश्वास कर लेता हूं तो फिर कभी अविश्वास नहीं करता। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह मेरे साथ क्या करता है। दूसरा आदमी कुछ भी करे, मेरा विश्वास नहीं टूटता।

विश्वास सदा बेशर्त होता है। मैं तुम्हारे प्रेम को अच्छी तरह से जानता हूं और मैं तुम सब पर विश्वास करता हूं। अन्यथा यह काम तुम्हें नहीं दिया जाता। लेकिन याद रखना,इसका यह मतलब नहीं है कि मैं किसी भी तरह बदल जाउंगा। पत्र लिखों या न लिखों, पुनश्च लिखों या न लिखों—मैं तो जैसा हूं वैसा ही रहूंगा। मैं कभी भी कह दूँगा: देव गीत। क्यों हंस रहे हो। अभी इस समय तो तुम हंस रहे हो और मैं तुम्हें मार नहीं रहा। कभी तुम्हें रुला भी दूँगा। यही मेरा काम है।

तुम अपना काम जानते हो। मैं अपना काम जानता हूं। और मेरा काम कही अधिक कठिन है। यह सिर्फ ड्रिलिंग ही नहीं है। यह तो अनास्तेसिया दिया बिना कि जाने वाली ड्रिलिंग है। पेन किलक, दर्द मारने वाली दवा तक नहीं दी जाती। यह केवल दाँत की ड्रिलिंग नहीं है। यह तो तुम्हारे अंतरतम, की तुम्हारे भीतर की ड्रिलिंग है। इससे दर्द तो होता है, बहुत पीड़ा होती है। माफ करना, लेकिन कभी भी मुझसे अपने दांव पेंच बदलने को मत कहना। और अपने पत्र में तुमने ऐसा कहा भी नहीं है। यह तो मैं यहां उपस्थित दूसरे लोगों के फायदे के लिए कह रहा हूं।

आशु, कल मैं तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करूंगा। देखें क्या होता है। तब देव गीत सचमुच हंसे गा।

प्यारे सदगुरू,

मैं यहां '' नोआज़ आर्क'' में बैठ कर रो रहा हूं और सोच रहा हूं कि क्या करूं?

जब आप यहां होते है और मैं खाली होता हूं तो आपके शब्द और आपकी उपस्थिति मेरे भीतर प्रवेश करने लगती है। इससे बड़ी परिपूर्णता मैंने कभी जानी नहीं।

फिर एकाएक आप चोट करते है। आप कहते है कि मैं हंस रहा हूं,....जब कि उदाहरण के लिए, आज सुबह में अपनी छींक को रोक रहा था। उन दूसरे दिनों मेरे होठों से उच्छवास निकला... क्या करूं? आप जब नजदीक होते है तो मैं ठंडी श्वास लेता हूं.....फिर आप कहते है कि मैं हंस रहा हूँ। जब आप मुझ पर यह इलजाम लगाते है कि आपके नोट्स न लिखने का बहाना करके मैं आपको धोखा दे रहा हूं तो यह बरदाश्त के बहार हो जाता है।

ये नोटस लिख कर मुझे जितनी खुशी हाथी है उतनी खुशी जीवन में और कुछ भी करने से नहीं मिलती। इन्हें लिखने में मुझे बड़ा आनंद मिलता है। मेरा मन इससे अधिक सुंदर उपहार की कल्पना भी नहीं कह सकता।

आपने मुझे बेवकूफ कहा—यह तो स्पष्ट ही है—शायद पहले से भी अधिक अब। लेकिन मैं पूरी तरह आपका बेवकूफ हूं। मैंने आपको कभी धोखा नहीं दिया। कभी आपके प्रति विश्वासघात नहीं किया, आपको धोखा देने के लिए न कभी हंसा,न कभी फुसफुसाया और हमेशा आपके प्रति अधिक से अधिक समर्पित होने की कोशिश करता हूं। और वह पीड़ा आपकी मार से नहीं होती बल्कि बाहर से जो अन्याय जैसा दिखाई देता हे, उससे होती है।

प्यारे सदगुरू, मैं आपका '' बेवकूफ हूं''—और इस पल से बढ़ कर तो कभी नहीं।

मुझे आपसे प्रेम है,

देव गीत

प्यारे सदगुरू,

पुनश्चः मुझे मिटाने के लिए धन्यवाद। इससे आपके प्रति प्रेम और भी गहन हो गया है।

देव गीत

पुनश्च पुनश्चः कृपया, कृपया इस भले काम को चालू रखिए.....हमेशा के लिए।

सत्र—29 पागल बाब और रहस्य

सारी रात हवा पेड़ों में से सरसराती हुई बहती रही। यह आवाज इतनी अच्छी लगी कि मैंने पन्ना लाल घोष के संगीत को सुना। उन बांसुरी वादकों में से जिनको पागल बाबा ने मुझसे परिचित करवाया था। अभी-अभी मैं उनके संगीत को सुन रहा था। उनका बांसुरी बजाने का ढंग अपना ही है। उनकी प्रस्तावना बहुत लंबी होती है। गुड़िया ने जब मुझे बुलाया तो अभी भूमिका ही चल रही था—मेरा मतलब है कि तब तक उन्होने अपनी बांसुरी को बजाना आरंभ नहीं किया था। सितार और तबला उनकी बांसुरी के बजने की पृष्ठभूमि तैयार कर रहे थे। पिछली रात शायद दो साल के बाद मैंने उनके संगीत को दुबारा सुनी।

पागल बाबा की बात परोक्ष रूप में ही करनी पड़ती है। उनकी यही विशेषता थी। वे सदा अदृश्य से ही बने रहते थे। उन्होंने मेरा परिचय अनेक संगीतज्ञों से कराया। और मैं सदा उन से पूछता था कि वे ऐसा क्यों करते है। वे कहते थे: '' एक दिन तुम संगीतज्ञ बनोगें।''

मैने कहा: '' पागल बाबा, कभी-कभी ऐसा लगता है कि लोग ठीक कहते है कि आप पागल हो। मैं संगीतज्ञ नहीं बनने बाला हूं। उन्होंने हंस कर कहा: '' मुझे मालूम है। फिर भी मैं यह कहता हूं कि तुम संगीतज्ञ बनोगें।''

अब उनकी इस बात से क्या समझा जाए, मैं संगीतज्ञ तो नहीं बना। लेकिन फिर भी एक अर्थ में उनकी बात ठीक थी। मैंने संगीत के किसी यंत्र को तो नहीं बजाया,लेकिन मैंने हजारों लोगो की ह्रदय तंत्री को बजाया है। बिना किसी साज के, बिना किसी तकनीक के मैने जो संगीत बजाया है, वह साज के संगीत से कहीं अधिक गहरा और मर्मस्पर्शी है।

मुझे वे तीनों बांसुरी वादक अच्छे लगते थे, कम से कम उनका संगीत अच्छा लगता था। लेकिन उन में से कुछ एक ही मुझे पसंद करते थे। हरि प्रसाद मुझसे बहुत प्रेम करते थे । उनको कभी यह खयाल नहीं आया कि मैं बच्चा हूं, और वे मुझसे बड़े है, और संसार के सुविख्यात संगीतज्ञ है। वे मुझसे प्रेम ही नहीं वरन मेरा आदर करते थे एक बार मेंने उनसे पूछा कि हरी बाबा, आप मेरा आदर क्यों करते हो। उन्होंने उत्तर दिया: '' अगर बाबा तुम्हारा आदर करते है तो आदर करते है तो मैं क्यों न करूं। मेरा पागल बाबा पर पुरा विश्वास है। और अगर वे तुम्हारे पैर छूते है, और तुम छोटे से बच्चे हो, तो इसका मतलब है कि उनके जो मालुम है उसको समझने में या जानने में अभी मैं असमर्थ हूं। पर वह गौण है, मेरे लिए इतना ही काफी है कि वे जानते है। वे भक्त थे।

पिछली रात जिस संगीतज्ञ को मैंने सुना ओर यहां आने से पहले दुबारा जिसे सुनने की कोशिश कर रहा था, वे है पन्ना लाल घोष। वे मुझे न पंसद करते थे,न नापंसद करते थे। वे बहुत ही सपाट आदमी थे—दूर तक फैले हुए सपाट मैदान की तरह जिसमें न कोई पहाड़ी थी। न कोई घाटी थी। उनकी पसंद और नापसंद में कोई गहराई नहीं थी। लेकिन उनका बांसुरी बजाने का जो अपना ढंग था। वह अनोखा था उनके जैसी बांसुरी न पहले किसी ने बजाई न बाद में कोई बजाएगा। अपनी बांसुरी पर तो वे शेर की तरह गरजते थे।

एक बार मैंने उनसे पूछा: '' अपने जीवन में तो आप ठीक बंगाली बाबू हो—भेड़ जैसे। वे बंगाल के थे और भारत में कायर आदमी को बंगाली कहा जाता है। क्योंकि बंगाली आक्रमक नहीं होता।) आप सच्चे बंगाली बाबू हो। लेकिन जब आप बांसुरी बजाते हो तो आपको क्या हो जाता है। आप तो शेर बन जाते हो।''

उन्होंने कहा: '' कुछ तो अवश्य होता है। मैं वही नहीं रहता अन्यथा मैं वही बंगाली बाबू रहूँ ठीक वही दब्बू और डरपोक, लेकिन कुछ होता है, मुझ पर सवार हो जाता है। ठीक यही शब्द उन्होंने उपयोग किए थे। मैं आवेशित हो जाता हूं, मैं नहीं जानता कि मुझे पर क्या छा जाता है। शायद तुम जानते होगें। नहीं तो पागल

बाबा मन में तुम्हारे लिए इतना आदर क्यो होता। मैंने उनको कभी किसी के पैर छूते नहीं देखा, लेकिन वे तुम्हारे पैर छूते है। बड़े-बड़े संगीतज्ञ उनके पास आते है उनके आशीर्वाद को प्राप्त करने के लिए और उनके पैर छूने के लिए।

पागल बाबा ने मुझे केवल बांसुरी वादकों से ही नहीं और भी अनेक लोगों से परिचित करवाया था। शायद मेरी कहनी के किसी दौर में उनका भी जिक्र आएगा। लेकिन पन्ना लाल घोष ने जो कहा वह बहुत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा: '' मैं आवेष्टित हो जाता हूं, एक बार मैं बजाना शुरू करता हूं तो मैं पन्ना लाल घोष नहीं होता। कुछ और ही हो जाता हूं, मैं उनके शब्दों को शब्दों को उद्‌धृत कर रहा हूं। उसके बाद उनहोंने कहा, इसीलिए असली धुन को बजाने से पहले मुझे बहुत देर तक स्वरों की लंबी भूमिका तैयार करनी पड़ती है। बांसुरी वादक इतनी लंबी भूमिका प्रस्तुत नहीं करते। इसीलिए लोग मेरी आलोचना करते है।

वे बांसुरी के क्षेत्र के बर्नार्ड शॉ थे। जॉर्ज बर्नार्ड शॉ की पुस्तक अगर नब्बे पृष्ठों की होती है तो उसकी भूमिका तीन सौ पृष्ठों की होती है। पन्ना लाल घोष ने कहा, लोग तो समझ नहीं सकते। लेकिन में तुम्हें बताता हूं कि मुझे तब तक इंतजार करना पड़ता है जब तक मैं आवेष्टित न हो जाऊँ। लंबी भूमिका का यही कारण है। जब तक यह आंतरिक स्वयं नवन जाए, मैं बजाने में लीन नहीं हो सकता।

ये शब्द है प्रमाणिक कलाकार के। केवल प्रामाणिक कलाकार ही ऐसा कह सकता है। पत्रकार के ढंग का कलाकार संगीत के बारे में लिखते है, लेकिन स्वयं उनको इसका कोई अनुभव नहीं होता। वे कविता के बारे में लिखते है, जब कि स्वयं उन्होंने कभी एक कविता नहीं लिखी। वे राजनीति के बारे में लिखते है, जब कि राजनीति के संघर्ष का उन्हें कोई अनुभव नहीं होता। आफिस में बैठ कर ये पत्रकार हर विषय के बारे में लिख देते है। एक ही व्यक्ति एक सप्ताह संगीत के बारे में लिखता है। दूसरे सप्ताह काव्य के बारे में और तीसरे सप्ताह राजनीति की चर्चा करता है1 लेकिन इन सब विषयों पर वह एक ही नाम से नहीं वरन विभिन्न नामों से लिखता है।

एक बार मुझे भी आवश्यकतावश पत्रकार बनना पड़ा था। अन्यथा मुझे यह कष्ट सहन न करना पड़ता। मेरे पास पैसे नहीं थे और मेरे पिता मुझे विज्ञान पढ़ने के लिए भेजना चाहते थे। मुझे विज्ञान में कोई दिलचस्पी नहीं थी। न अब है न तब थी। और वे इतने गरीब थे कि मुझे लगा कि वे बहुत बड़ा जोखिम उठा रहे है। मेरे परिवार में किसी ने भी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कि थी। मेरे पिता ने मेरे एक चाचा को विश्वविद्यालय में पढ़ने भेजा था, लेकिन वहां का खर्च वहन न कर सकने के कारण उनको वापस बुलाना पडा था।

अब मेरे पिताजी मुझे विश्वविद्यालय भेजने को तैयार थे। इसके लिए उन्हें बहुत बड़ा त्याग करना पड़ता। वे इसे व्यावसायिक ढंग से करना चाहते थे। वे सोच रहे कि अगर वक मेरी शिक्षा पर पैसा लगाएंगे तो आगे चल कर इससे अधिक उनको वापस मिल जाएगा। मैंने उनसे कहां: यह मेरी शिक्षा का प्रश्न है या आप की पूंजी का निवेश का। आप मुझे इंजीनियर या डाक्टर बनाना चाहते है ताकि मैं अधिक कमा सकूं। लेकिन मैं तो कभी कुछ नहीं कमाना चाहता,सदा अधिक से अधिक सीखते रहना चाहता हूं। और फिर मैंने उनसे कहा: मैं तो होबो(आवारा घुमक्कड़)बना रहूँगा। उन्होंने कहा: क्या होबो, मैंने कहा: अच्छे शब्दों में एक संन्यासी। वे तो स्तब्ध रह गए। उन्होंने कहा: अगर तुम्हें संन्यासी ही बनना है तो विश्वविद्यालय में पढ़ने की क्या जरूरत है।

मैंने कहा: ' मुझे इन प्रोफेसरों से धृणा हैं, लेकिन उनकी निंदा करने के लिए, उनकी आलोचना करने के लिए यह जरूर है कि पहले उनके पेशे से अच्छी तरह से परिचित हो जाऊँ।

उन्होंने कहा: यह तो और अजीब बात है कि तुम विश्वविद्यालय इसलिए जाना चाहते हो ताकि बाद में उनकी निंदा कर सको। मैं पैसा उधार लेकर या अपने मकान को गिरवी रख कर, अपने व्यापार को जोखिम में डाल कर तुम्हें विश्वविद्यालय भेजूं ताकि तुम इन्हीं प्रोफेसरों की बुराई कर सको। यह काम तुम विश्वविद्यालय में जाए बिना क्यों नहीं कर सकते हो।

मैंने पिताजी के लिए एक छोटा सा पत्र लिख कर घर छोड़ दिया। मैंने लिखा कि मैं आपकी भावनाओं को समझ सकता हूं और मैं आपकी आर्थिक स्थिति को भी जानता हूं। न आप मुझे समझ सकते है और न मैं आप को समझ सकता हूं। हम दोनों अलग-अलग दुनिया के है। कम से कम अभी हम दानों के बीच कोई पुल नहीं है। इसकी कोई जरूरत भी नहीं है। आपने मेरे लिए जो कुछ भी करना चाहा उसके लिए धन्यवाद,लेकिन वह एक पूंजी निवेश था और आपने व्यापार में मैं आपका भागीदार नहीं बनना चाहता। आपसे बिना मिले मैं जा रहा हूं और अब शायद मैं आपसे तभी मिलुंगा जब मैं आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर अपने पैरों पर खड़ा हो जाऊँगा।

इसलिए मुझे पत्रकार का काम करना पडा। यह सबसे खराब काम है, लेकिन उस समय और कोई काम उपलब्ध नहीं था। तो मजबूरी में मुझे यही काम करना पडा। भारत में पत्रकारिता तीसरे दर्जे का निम्नतम काम है। तीसरे दर्जे का ही नहीं, संसार का सबसे खराब काम है। मैंने इसे किया तो सही लेकिन बहुत अच्छी तरह से न कर सका। मैं कुछ भी अच्छी तरह से नहीं कर सकता। अच्छी तरह से करना तो दूर रहा। मैं तो कुछ भी नहीं कर सकता। यह में अपने प्रति शिकायत नहीं कर रहा, केवल स्वीकार कर रहा हूं।

और वह नौकरी तो जल्दी ही समाप्त हो गई। क्योंकि जब मालिक, प्रधान संपादक आया, तो मैं मेज पर पैर रख कर सो रहा था—ठीक जैसे अभी मैं हूं। उसने मुझे देखा और मुझे झकझोरा। मैंने अपनी आंखें खोली, उसको देखा और कहा, यह कैसी अशिष्टता है। मैं गहरी नींद सो रहा था और सुंदर सपना देख रहा था। आपने उसे भंग कर दिया। उस सपने को दुबारा देखने के लिए मैं अमूल्य निधि दे सकता हूं। मैं पैसे देने को तैयार हूं, अब बताइए कि उस सपने के आगे कैसे बढ़ाऊ।

उसने कहा: ' मुझे तुम्हारे सपने से कोई सरोकार नहीं है। भाड़ में जाए तुम्हारा सपना। लेकिन यह समय मेरा है और इसके लिए तुम्हें पैसे दिए जाते है। इसलिए तुम्हें नींद से उठाने का मेरा अधिकार है।

मैंने कहा: ' अच्छा, तो फिर यहां से चले जाने का अधिकार मेरा है।' इतना कह कर मैं बाहर चला गया। उसने गलत बात नहीं कही थी, लेकिन मैं गलत जगह पहुंच गया था। वह स्थान मेरे लिए नहीं था। मैं पत्रकारों के साथ तीन वर्ष तक रहा। वह नरक था। पत्रकार बहुत ही घटिया लोग होते है।

हां, तो मैं कह रहा था, मैं तुम लोगों को चेक कर रहा हूं।

'आप बता रहे थे कि आपके पिता आपकी आर्थिक सहायता नहीं कर सकते थे इसलिए आपको पत्रकारिता का काम करना पडा।

उसके पहले?

'जब तुम सचमुच में प्रामाणिक कलाकार होते हो तो तुम आविष्ट हो जाते हो।'

ठीक।

'पत्रकारिता के ढंग का नहीं।

ठीक-ठीक और सही नोट लिखना चालू रखो। तुम अच्छे लेखक बन गए हो।

मेरे पिता को बहुत आश्चर्य होता थ जब भी पागल बाबा आकर मेरे पैर छूत थे। वे पागल बाबा के पैर छूते थे। बड़ा मजेदार दृश्य होता था। और चक्र को पूरा करने के लिए मैं अपने पिताजी के पैर छूता था। पागल

बाबा इतने जोर से हंसने लगते थ कि सब लोग चुप हो जाते थे, मानो कुछ विशेष घट रहा हो। और मेरे पिता को संकोच होता।

पागल बाबा बार-बार मुझे यह समझाने की कोशिश करते कि संगीतज्ञ बनना मेरा भविष्य है। मैं कहता, नहीं। और जब मैं नहीं कहता हूं तो सच्चे अर्थों में नहीं होता है।

बचपन में मेरा 'नहीं' बहुत स्पष्ट रहा है। हां, तो मैं कभी-कभी कहता हूं। यह 'हां'शब्द इतना अमूल्य, इतना पवित्र है कि इसका प्रयोग केवल ' दिव्य' की उपस्थिति में ही होना चाहिए चाहे वह प्रेम हो या सौंदर्य.....इस समय तो गुलमोहर के पेड़ पर खिले हुए असंख्य घने फूल—जैसे कि समूचे वृक्ष से आग की लपटें निकल रही हों। जब कोई चीज तुम्हें पावनता की याद दिलाए तब 'हां' शब्द का प्रयोग करना चाहिए—तब वह प्रार्थना से भरा हुआ होता है। 'नहीं' का अर्थ होता है कि मैं अपने आप को प्रस्तावित गतिविधि से अलग कर लेता हूं। मैं तो सदा से 'नहीं' कहने वाला रहा हूं। मुझसे 'हां' कहलाना बहुत मुशिकल था।

पागल बाबा संबुद्ध माने जाते थे। मुझे उन दिनों में भी वे अनोखे दिखाई देते थे। मुझे समाधि के बारे में कुछ मालूम नहीं था। उस समय मेरी वही स्थिति थी जो आज है—नितांत अज्ञानी, लेकिन उनकी उपस्थिति तेजस्वी थी। हजारों लोगों में वे आसानी से पहचाने जा सकते थे।

वे पहले आदमी थे जो मुझे कुंभ के मेले में ले गए। प्रयाग में कुंभ का मेला हर बारह वर्ष में लगता है। सारी दुनिया में शायद ही किसी और जगह पर इतनी बड़ी संख्या में लोग जमा होते होंगे। प्रत्येक हिंदू कुंभ के मेले को देखने का सपना देखता है। हिंदू सोचता है कि कुंभ के मेले में सम्मिलित हुए बिना जीवन सार्थक नहीं होता। इस मेले में कम से कम एक करोड़ लोग तो होते ही है और अधिकतम संख्या ती करोड़ की होती है।

मुसलमान भी इसी प्रकार सोचते है कि अगर मक्का जाकर हज नहीं की और हाजी ने बने तो सारा जीवन व्यर्थ हो गया। हज का अर्थ है: मक्का की यात्री—जहां पर मोहम्मद रहे और जहां उनकी मृत्यु हुई। सारी दुनिया के मुसलमानों का एकमात्र सपना यहीं है कि कम से कम एक बार मक्का ही यात्रा करनी चाहिए। हिंदू प्रयाग जाना चाहते है। ये स्थान उनके इजराइल है। ऊपरी सतह पर तो सब धर्म अलग-अलग दिखाई देते है, लेकिन जरा कुरेदने पर सबके भीतर वही कचरा भरा हुआ है। हिंदू, मुसलमान, यहूदी, ईसाई से कोई फर्क नहीं पड़ता।

कुंभ मेले की विशेषता अलग ही है। तीन करोड़ लोगों का एक स्थान पर एकत्रित होना ही अपने आप में एक दुर्लभ अनुभव है। सारे हिंदू साधु-संन्यासी वहां आते है। और उनकी संख्या कम नहीं होती—पाँच लाख होती है। और रंग-विरंग लोग होते है। तुम कल्पना भी नहीं कर सकत कि कैसे-कैसे संप्रदाय होते है, तुम भरोसा नहीं कर सकते कि ऐसे लोग भी होते है। और ये सब विचित्र लोग वहां पर एकत्रित होते है।

पागल बाबा मुझे जीवन में पहली बार कुंभ के मेले में ले गए। इसके बाद भी एक बार मैं गया था। लेकिन पागल बाबा के साथ जाने का अनुभव बहुत ही ज्ञान वर्धर्क था। क्योंकि वे मुझे सभी महान और तथाकथित महान संतों के पास ले गए और उनके सामने ही, हजारों की भीड़ में वे मुझसे पूछते, क्या ये आदमी सच्चा संत है। मैं कह देता, ' नहीं', लेकिन पागल बाबा भी मेरी ही तरह जिद्दी थे। उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी, वे मुझे हर संभव संत के पास ले गए जब तक कि एक आदमी के लिए मैंने हीं नहीं कहा। पागल बाबा ने हंस कर कहा: ' मुझे मालूम था कि तू सच्चे आदमी को पहचाने लेगा, तुमने इसको पहचान लिया। यह समाधिस्थ और संबुद्ध व्यक्ति है, लेकिन इसको कोई नहीं जानता।' यह आदमी एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। और उसके पास कोई अनुयायी नहीं था। तीन करोड़ लोगों की भीड़ में शायद वह बिलकुल अकेला था। बाबा ने पहले मेरे पैरों को छुआ और फिर उसके पैरों को छुआ। उस आदमी ने कहा: ' इस बच्चे को तुमने कहां से खोज लिया, मैं तो

सोच भी नहीं सकता था कि एक बच्चा मुझे पहचान लेगा। मैंने तो अपने आप को बहुत अच्छी तरह से छिपा रखा है। तुम्हारा मुझे पहचानना तो ठीक है, लेकिन यह कैसे पहचान सका।'

बाबा ने कहा: ' यही तो पहेली है। इसीलिए तो मैं इसके पैर छूता हूं। अब तुम इसके पैर छुओ।'

अब निन्यानवे साल के इस वयोवृद्ध आदमी की आज्ञा को कौन टाल सकता था । वे इतने तेजस्वी और रोबीला थे। उस आदमी ने तुरंत मेरे पैरों को छुआ।

पागल बाबा इसी प्रकार मुझे सब प्रकार के लोगों से परिचित कराते थे। इस दौर में तो मैं अधिकतर संगीतज्ञों की ही चर्चा कर रहा हूं, क्योंकि संगीत से उनको विशेष प्रेम था। वे मुझे भी संगीतज्ञ बनाना चाहते थे। लेकिन मैं उनकी इस इच्छा को पूरी नहीं कर सका, क्योंकि मेरे लिए संगीत केवल एक प्रकार का मनोरंजन है। मैंने उनसे यही कहा था: ' पागल बाबा संगीत काफी निम्न कोटि का ध्यान है, मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। '

उन्होंने कहा: ' हां, मुझे मालूम है। मैं तुमसे सुनना चाहता था। लेकिन ऊंचे उठने के लिए संगीत एक अच्छी सीढ़ी है। उसे पकड़े नहीं रहना चाहिए या उसी पर अटके नहीं रहना चाहिए। सीढी का काम है किसी दूसरी जगह पहुंचना।'

इसी लिए मैंने अपनी समस्त ध्यान-विधियों में संगीत का उपयोग एक सीढी की तरह किया है—उस असली संगीत, नाद हीन संगीत के लिए। नानक कहते है, ' एक ओंकार सतनाम'। अर्थात परमात्मा या सत्य का एक ही नाम है और वह है की नाद हीन नाद, स्वरहीन स्वर। शायद ध्यान का जन्म संगीत से हुआ हो या संगीत ध्यान की मां है। लेकिन अपने आप में संगीत ध्यान नहीं है। यह सिर्फ एक इशारा हो सकता है। केवल एक संकेत हो सकता है......

चिरंतन तालाब
मेढक उसमें छलांग लगाता है,
स्वरहीन स्वर.......

इसका अनुवाद कई तरह से किया गया है। एक तो यह है ' स्वरहीन स्वर' प्लाप' इससे भी अच्छा है लेकिन हिंदी का शब्द और भी अच्छा और अर्थपूर्ण है। जब मेढक तालाब में कूदता है तो उसकी आवाज होती है—तुम उसे 'प्लाप' कह सकते हो, लेकिन हिंदी का शब्द इसकी आवाज को ठीक उसी तरह से प्रकट करता है, वह शब्द है: छपाक। अब तुम मेढक बन कर तालाब में कूदो, तो तुम्हें मालूम हो जाएगा कि छपाक क्या है।

अंग्रेजी में लिखना मुशिकल होगा। अच्छा होगा, मैं तुम लोगों को बता दूँगा, नहीं तो तुम कुछ गलत लिख दोगे। छपाक को अंग्रेजी में इन अक्षरों में लिखना पड़ेगा: सी एँच एँच ए पी ए के। अंग्रेजी में 'छ' के लिए कोई अक्षर नहीं है। इस लिए हमें इस प्रकार लिखना पड़ेगा।

अंग्रेजी में केवल छब्बीस अक्षर है। तुम्हें जान कर आश्चर्य होगा कि हिंदी या संस्कृत की वर्णमाला की संख्या इससे दुगुनी है—बावन अक्षर है। बहुत बार अनुवाद करना या रोमन लिपि में लिखना भी मुश्किल हो जाता हे। अंग्रेजी में 'छ' ध्वनि ही नहीं है। और बिना छ के न मेढक होगा, ना छपाक होगा, और ऐसी हजारों चीजों से चूक जाओगे।

एक ओंकार सतनाम, सत्य का वास्तविक नाम तो नाद हीन नाद है। इसको संस्कृत में लिखने के लिए हमने जो अक्षर विहीन प्रतीक बनाया वह केवल ध्वनि है। नाद है, यह संस्कृत वर्णमाला का हिस्सा नहीं है। ओम सिर्फ

एक ध्वनि है, नाद है। और बहुत महत्वपूर्ण नाद है। यह बनता है। अ उ और म से। और ये संगीत के तीन बुनियादी स्वर है। सारा संगीत इन तीन स्वरों पर निर्भर करता है। अगर ये तीनों एक हो जाते है तो मौन होता है। मौन। अगर ये तीनों भिन्न हो जाते है तो ध्वनि होती है। अगर सब स्वर सम हो तो मौन।

तुमने हर हिंदू मंदिर में घंटे को देखा होगा। लेकिन तुमने कोई कलात्मक घंटा नहीं देखा होगा। इसके लिए तो तुम्हें किसी अजायबघर के तिब्बती विभाग को देखना चाहिए। तिब्बती घंटी बहुत सुंदर होती हे। यह अजीब घंटी अनेक धातुओं के मेल से बनाई जाती है। इसका आकार एक प्याले जैसा होता है जिसके साथ लकड़ी का हैंडल बना हुआ होता है। उस हैंडल को अपने हाथ में ले कर प्याले के भीतर गोल-गोल घुमाया जाता है। ऐसा एक निश्चित संख्या में किया जाता है। जैसे सत्रह बार—और फिर घंटी के भीतर लगे निशान पर चोट की जाती है। यही आरंभ है ओ यही अंत है। वहीं से फिर तुम गोल-गोल घुमाना शुरू करते हो और अंत में एक चोट करते हो। और बड़ी विचित्र बात तो यह है कि वह घंटी पूरे तिब्बती मंत्र को दोहराती है। पहली बार सुनने पर तो यह विश्वास ही नहीं होता कि घंटी तिब्बती मंत्र को दोहराती है। लेकिन इसी उदेश्य के लिए इस घंटी को बनाया गया है।

एक तिब्बती लामा ने मुझे इस प्रकार की घंटी दिखाई थी। घंटी द्वारा पूरे मंत्र को दोहराए जाते सुन कर बड़ा ही सुखद विस्मय हुआ। तुम मंत्र को जानते हो। मैंने तुम्हें बताया है। मंत्र कोई विशेष नहीं है, उसका कोई अर्थ नहीं है। लेकिन वह संगीत पूर्ण है, बहुत ही संगीत पूर्ण है। इसी लिए इसका सृजन कर सकती है। अगर यह अर्थपूर्ण होता तो घंटी इसे दोहरा नहीं सकती थी। आखिर घंटी इसे दोहरा नहीं सकती थी। आखिर घंटी तो केवल घंटी है।

मणि पद्म हूम—घंटी इसे इतने स्पष्ट स्वर में दोहराती है कि सुनने बाले को संदेह हो जाता है कि होती घोस्ट कहीं छुपा हुआ है। लेकिन वहां पर कुछ नहीं है। न कोई होली घोस्ट है, न कुछ और केवल एक लकड़ी की डंडी से उसको गोल-गोल घुमाना पड़ता है और एक खास जगह पर उसे मारना पड़ता है। तब वह घंटी उस मंत्र को अनुगुंजित करती है।

भारत, तिब्बत, चीन या बर्मा के मंदिरों में लगा हुआ घंटा बहुत अर्थ पूर्ण है। यह आपको याद दिलाता है कि जैसे घंटे पर चोट करने से यह आवाज करता है और फिर धीरे-धीरे वह आवाज कम होती चली जाती है। फिर समाप्त हो जाती हे। तब नाद हीन नाद प्रवेश करता है। ठीक ऐसे ही तुम भी मौन हो सकते हो। जो जोग केवल आवाज सुनते है वे घंटे को नहीं सुन पाते। तुम्हें दूसरे भाग को भी सुनना चाहिए। जब आवाज कम होने लगती है, खो रही होती है। तब स्वरहीन स्वर प्रकट होने लगता है। जब ध्वनि पूरी तरह से खो जाती है तब नाद हीन नाद होता है, मौन छा जाता है। और वह ध्यान है।

मैं संगीतज्ञ नहीं बनने बाला था। पागल बाबा को भी मालूम था, लेकिन वे स्वयं संगीत के प्रेमी थे, और वे चाहते थे कि मैं श्रेष्ठ संगीतज्ञों से परिचित हो जाऊँ, शायद मैं कभी उस और आकर्षित हो जाऊँ। उन्होंने मुझे अनेक संगीतज्ञों से मिलाया—उन सबके नाम भी याद रखने मुश्किल थे। लेकिन कुछ नाम बहुत प्रसिद्ध हैं, सारी दुनिया में विख्यात है। उदाहरण के लिए ये तीन।

पन्ना लाल घोष को उत्कृष्ट बांसुरी वादक माना गया है। और यह गलत नहीं हे। लेकिन मुझे वे पसंद नहीं थे। वे शेर की भांति गरजते हैं, लेकिन आदमी चूहे जैसे है। और यही मुझे पसंद नहीं है। एक चूहा शेर की तरह ग़रजे, यह पाखंड है। फिर भी वे अच्छी तरह से निभा लेते थे। यह कठिन काम है, लेकिन वे करीब-करीब ठीक से कर लेते है। मैं कहता हूं, करीब-करीब, क्योंकि वे मेरी आंखों को धोखा नहीं दे सकते/। मैंने उससे कहा भी और उन्होंने कहा: ‘ मैं जानता हूं।‘ वे मेरी पसंद नहीं थे।

दूसरे व्यक्ति दक्षिण के है। आरंभ से ही मुझे वे अच्छे नहीं लगे। हां,उनकी बांसुरी मुझे बहुत प्रिय है—और किसी में शायद इतनी गहराई नहीं है जितनी उनमें है। लेकिन हम दोनों एक दूसरे को सहन नहीं कर सकते थे। न ही मुझे वे पसंद आए न ही उनका नाम। वे मेरी पसंद नहीं है। यह आदमी—मैं उनका नाम बता चुका हूं। उसे फिर नहीं दोहराऊंगा। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि सदियों से उनके जैसी बांसुरी सुनी नहीं गई। फिर भी एक बार काफी है। न ही मुझे वे पसंद आए नहीं उनका नाम। वे मेरी पसंद नहीं है, क्योंकि वह आदमी मुझे अच्छा नहीं लगता था। अगर मैं व्यक्ति को पसंद न करूं तो उनकी बांसुरी भले ही कितनी मधुर बजती हो, मैं उन्हें इसमें प्रथम नहीं मान सकता।

मेरी पसंद हरि प्रसाद। वे बहुत ही विनम्र हैं। न वे चूहे जैसे है, न वे शेर जैसे है। वे ठीक बीच में है। इसे कहा जाता है, मज्झम। पन्ना लाल घोष और इस दक्षिणी बांसुरी बादक में, जिसका मैं दुबारा नाम नहीं लुंगा, जो संतुलन, खो गया था वह उन्होंने संतुलन पैदा कर दिया है। हरि प्रसाद एक संतुलन आए है, बहुत अच्छा संतुलन, रस्सी पर चलने बाले जैसा संतुलन।

पागल बाबा का नाम मुझे बार बार लेना पड़ेगा, क्योंकि उनहोंने अनेक लोगों से मुझे परिचित कराया था। जब उनकी चर्चा करता हूं तो यह स्वाभाविक है कि उनके साथ पागल बाबा का भी उल्लेख हो। उनके द्वारा एक पूरी दुनिया खुल गई । मेरे लिए तो वे किसी विश्वविद्यालय से भी अधिक मूल्य वान थे। क्योंकि उन्होंने हर संभव क्षेत्र के श्रेष्ठतम से मुझे परिचित करवाया।

वे आंधी की तरह मेरे गांव आते थे और मुझे पकड लेते थे। मेरे माता-पिता उनको न नहीं कहा सकते थे, यहां तक कि मेरी नानी भी उनको मना नहीं कर सकती थी। जैसे ही मैं पागल बाबा का नाम लेता, वैसे ही वे हां कह देते। क्योंकि उनको मालूम था कि अगर वे मुझे इनकार करेंगे तो पागल बाबा घर में आकर बहुत गड़बड़ कर देंगे—वे चीजें तोड़ सकते थे या लोगों की मार-पिटाई कर सकते थे। और वे इतने आदरणीय थे कि कोई उन्हें तोड़-फोड़ करने से रोकता नहीं था। इसलिए सब जानते थे कि समझदारी इसी में है कि हाँ कहा दिया जाए। अगर पागल बाबा तुम्हें अपने साथ ले जाना चाहते है तो तुम जा सकते हो। और वह कहते कि हमें मालूम है कि पागल बाबा के साथ ले जाना चाहते है तो तुम जा सकते हो।‘

गांव में मेरे दूसरे रिश्तेदार मेरे पिता से कहते थे, ‘ अपने बेटे को इस पागल आदमी के साथ भेज कर आप ठीक नहीं कर रहे।‘

मेरे पिता कहते, ‘ आपको इसकी चिंता करने की जरूरत नहीं है। मेरा बैटा तो ऐसा है कि मुझे उसकी नहीं बल्कि उस पागल आदमी की ज्यादा चिंता होने लगती है।‘

पागल बाबा के साथ मैंने अनेक स्थानों की यात्रा कि । वे मुझे बड़े-बड़े कलाकारों और संगीतज्ञों से पास ही नहीं ले गए वरन कई प्रसिद्ध स्थानों पर भी ले गए। उनके साथ ही मैंने सबसे पहले ताज महल और अजंता-एलोरा की गुफाएं देखी। उनके साथ ही मैंने पहली बार हिमालय देखा। मैं उनका बहुत अधिक आभारी हूं। और मैंने कभी उनके प्रति धन्यवाद तक प्रकट नहीं किया। मैं कर भी नहीं सकता था। क्योंकि वे मेरे पैर छूते थे। धन्यवाद के लिए अगर मैं उनसे कभी कुछ कहता तो वे तुरंत अपने होठों पर हाथ रख कर कहते, चुप रहो। कभी धन्यवाद मत कहना। तुम मेरे प्रति आभारी नहीं हो। मैं तुम्हारे प्रति कृतज्ञ हूं।

एक रात जब हम अकेले थे तो मैंने उनसे पूछा: ‘ आप मेरे क्यों आभारी हो। मैंने तो आपके लिए कुछ नहीं किया। और आपने मेरे लिए बहुत कुछ किया है। फिर भी आप मुझे आपको धन्यवाद नहीं करने देते।‘

उन्होंने कहा: ‘ एक दिन तुम समझ जाओगे। पर अभी तुम सो जाओ। और फिर कभी इसका जिक्र मत करना। कभी नहीं, कभी नहीं। जब समय आएगा तो तुम्हें मालूम हो जाएगा।

जब तक मालूम हुआ तब तक बहुत देर हो चुकी थी- तब तक वे इस दुनिया से जा चुके थे। मुझे मालूम तो हुआ लेकिन बहुत देर में। अगर उनके जीवन काल में उनको यह पता लग जाता की मैं इसका करण जान गया हूं तो उनको बहुत कठिनाई होती। क्योंकि पिछले किसी जन्म में उन्होंने मुझे विष दिया था। जब कि मैं बच गया था। वे अपनी सामर्थ्य अनुसार मेरे साथ जो भी अच्छा कर सकते थे कर रहे थे और अब वे क्षतिपूर्ति करने की कोशिश कर रहे थे। वे उसको साफ करने कह कोशिश कर रहे थे। वे मेरे साथ आवश्यकता से अधिक अच्छा व्यवहार करते थे। लेकिन अब मैं जान गया हूं कि क्यों,क्योंकि वे संतुलन लाने की कोशिश कर रहे थे।

पूरब में इसको ' कर्म' कहते है, कर्म का सिद्धांत कहते है। तुम जो भी करते हो, याद रखना, तुम्हारे कृत्य से चीजों में जो असंतुलन हो गया है उसको फिर से तुम्हें संतुलित करना होगा। अब मैं जान गया हूं कि वह एक बच्चे के साथ इतना अच्छा व्यवहार क्यों कर रहे थे। वे दुबारा संतुलन बनाने की कोशिश कर रहे थे। और इसमें वे सफल हो गए। एक बसरा तुम्हारे सब कृत्य बिलकुल संतुलित हो जाएं तो तुम विलीन हो सकते हो। तभी तुम उस चक्र को रोक सकते हो। सच तो यह है कि चक्र अपने आप ही रूक जाता है, तुम्हे उसको रोकना भी नहीं पड़ता।

सत्र—30 विजय भैया....मेरे लक्ष्मण थे

मैं पागल बाबा और उन तीन बांसुरी वादकों के बारे में बता रहा था। जिनसे उन्होंने मुझे परिचित करवाया था। अभी भी वह याद बड़ी सुंदर और ताजा है। कि वे किस प्रकार से इन लोगों से मेरा परिचय कराते थे—विशेषत: उनसे जो बहुत सम्मानित थे, जिनको बहुत आदर दिया जाता था। सबसे पहले वे उनसे कहते, ‘ इस लड़के के पैर छुओ।‘

मुझे याद है कैसे विभिन्न प्रकार से लोग प्रतिक्रिया करते थे। और बाद में हम दोनों कैसे हंसते थे। पन्ना लाल घोष को मुझसे परिचित करवाया गया था। कलकत्ता में, उनके अपने घर में। पागल बाबा उनके मेहमान थे और मैं पागल बाबा का मेहमान था। पन्ना लाल घोष बहुत प्रसिद्ध थे। और जब बाबा ने उनसे कहा कि पहले इस लड़के के पैर छुओ, उसके बाद ही मैं तुम्हें अपने पैर छूने दूँगा। तो वे एक क्षण के लिए तो झझके, फिर उन्होंने मेरे पैरों को छुआ तो जरूर लेकिन उसमें छूने का कोई भाव न था। पैरों को छूकर भी नहीं छुआ।

ऐसा प्राय: होता है कि बहुत सी चीजों को हम छूते हुए भी नहीं छूते। लोग जब हाथ भी मिलाते है तो बिलकुल भाव विहीन ढंग से—न उसमें को ई प्रेम होता है, न कोई खुशी, न किसी प्रकार की कोई ग्रहण शीलता। किस लिए ऐसे हाथ मिलाते है। यह व्यर्थ की कसरत है। और बेचारे हाथों का क्या कसूर है। यूं ही क्यों उन्हें हिलाते रहते हो।

मैंने बाबा से कहा: ‘ इन्होंने पैर छुए नहीं।‘

बाबा ने कहा: ‘ मुझे मालूम है। पन्ना लाल, फिर से छुओ।‘

उनके अपने ही घर में इतने लोगों के सामने इस सुप्रसिद्ध आदमी के साथ यह कुछ ज्यादती थी। उस समय वहां था और अन्य उस शहर के गणमान्य लोग उपस्थित थे। फिर से पैर छुओ। लेकिन इस से सिद्ध होती है उस व्यक्ति की विशेषता। उन्होंने दुबारा मेरे पैर छुए। इस बार तो उनका स्पर्श पहले से भी अधिक निर्जीव थे।

मैं हंस पडा। बाबा ने जोर से ठहाका लगाया। मैंने कहा: ‘ इनको प्रशिक्षण की जरूरत है।

बाबा ने कहा: ‘ यह सच है, इनका प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए उनको कई बार जन्म लेना पड़ेगा। इस जीवन में तो ये चूक गए। मैं इन्हें अंतिम अवसर दे रहा था, लेकिन ये उससे भी चूक गए।‘

और तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा कि सिर्फ सात दिन के बाद पन्ना लाल इस संसार में नहीं रहे। शायद बाबा ने ठीक ही कहा था कि पन्ना लाल को अंतिम अवसर दिया गया था लेकिन वे चूक गए। इतनी याद रखना कि वे बुरे आदमी नहीं थे। नोट कर लो कि मैं यह नहीं कहता कि वे अच्छे आदमी थे। मैं तो केवल यह कह रहा हूं कि वे बुरे आदमी नहीं थे। वे सिर्फ साधारण व्यक्ति थे। अच्छा या बुरा होने के लिए थोड़ा से असाधारण होना पड़ता है।

उन्होंने अपनी समस्त प्रतिभा, अपनी योग्यता और आत्मा को अपनी बांसुरी में ही उंडेल दिया था। और वे स्वयं मरुभूमि जैसे हो गए थे। उनकी बांसुरी तो सुंदर थी। लेकिन एक व्यक्ति की तरह उनको न जानना ही अच्छा था। अब जब मैं उनकी बांसुरी को रेकार्ड पर सुनता हूं तो मैं कहता हूं, पन्ना लाल घोष, तुम बीच में मत आओ, मुझे बांसुरी को रेकार्ड पर सुनने दो।

लेकिन बाबा उन्हें मुझसे परिचित करवाना चाहते थे। मुझे उनसे नहीं। यह मेरे लिए नहीं था क्योंकि मेरा तो कोई नाम नहीं था। मैंने कुछ भी नहीं किया था—ठीक या गलत। और कभी कुछ करने बाला भी नहीं था।

अभी मैं वही बात कह सकता हूं कि मैंने ठीक या गलत कुछ नहीं किया है। मैं तो न करने वाला हूं। और सदा ऐसा ही रहा हूं, ‘ कुछ न करने वाला ‘ लेकिन पन्ना लाल घोष महान संगीतज्ञ थे। इतने लोगों के सामने

उनको पैर छूने के लिए कहना बहुत ही निरादर वाली बात थी। उनके लिए यह एक अच्छी कसरत थी। लेकिन दो बार ऐसा करना तो कुछ ज्यादा ही था। लेकिन वे सच्चे बंगाली बाबू थे।

बंगाली बाबू शब्द का आविष्कार अंग्रेजों ने किया था। क्योंकि भारत में उनकी प्रथम राजधानी कलकत्ता थी, दिल्ली नहीं, और इसलिए बंगाली उनके पहले नौकर थे। सब बंगाली मछली खाते है। इसलिए उनसे मछली की बू आती है। चेतना इस बात को समझ सकती है, क्योंकि वह मछुआरे की बेटी है। सौभाग्य से वह ठीक-ठाक समझ सकती है। उसमें सूँघने की शक्ति भी है। जब मुझे कोई ऐसी महक महसूस होती है जिसको कोई दूसरा सूंघ नहीं सकता तब मैं चेतना की नाम पर भरोसा करता हूं। मैं फिर उससे पूछता हूं, और वह ठीक-ठाक सूंघ लेती है।

सब बंगाली मछली खाने बाले हैं। इसलिए उनसे मछली की बू आती है। हर बंगाली मकान के साथ एक तालाब होता है। यह बंगाल की विशेषता है। भारत में और कहीं भी ऐसा नहीं होता। बंगाल बहुत सुंदर प्रदेश है। अपनी क्षमता के अनुसार हर मकान का एक छोटा या बड़ा तालाब होता है। जिसमें मछलियाँ पाली जाती है।

तुम्हें यह जान कर हैरानी होगी कि अंग्रेजी शब्द 'बैंगलो' असल में बंगाली मकान का नाम है। ' बँगला ' कहते थे, हर बंगाली अर्थात बंगाली मकान का अपना तालाब होता है। जिसमें वे अपने भोजन को पैदा करने का इंतजाम करते है। चारों और मछली की बदबू फैली रहती है। मेरे जैसे आदमी के लिए किसी बंगाली से बात करना बहुत मुशिकल है। जब मैं बंगाल जाता था तब भी इस बदबू के कारण मैं किसी बंगाली के कभी बात नहीं करता था—वहां पर रहने वाले अन्य प्रदेश के लोगों से बात करता था।

जब पन्ना लाल घोष से मिला तो उसके ठीक सात दिन बाद वे मर गए। बाबा ने उनसे कहा था, ' यह तुम्हारा अंतिम अवसर है।' मैं नहीं समझता कि वे इस बात को समझे। वे थोड़ा बुद्धू से दिखाई दे रहे थे। मैं कहूं या न कहूं,वे बुद्धू दिखाई देते थे। लेकिन जहां तक उनके बांसुरी वादन का प्रश्न है, उसमें वे बेजोड़ थे, उसमें उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था। इसीलिए शायद अन्य बातें में वे बुद्धू हो गए थे। इस बांसुरी ने उनकी सारी प्रतिभा को सोख लिया था। बड़ा खतरनाक वाद्य-यंत्र है यह। लेकिन उन्होंने मेरे पैरों को छुआ तो न छूने के भाव से ही सही। इसी लिए बाबा ने उनसे कहा: ' फिर से छुओ और सचमुच छुओ।

पन्ना लाल घोष ने कहा: मैंने तो दो बार पैर छुए है। इब सचमुच कैसे छुए जाते है। इस पर मालूम है बाबा ने क्या कहा। पन्ना लाल को दिखाने के लिए कि कैसे पैर छुए जाते है। उन्होंने आंखों में आंसू भर कर मेरे पैर छुए—और बाबा उस समय नब्बे बरस के थे।

बाबा कभी भी मुझे दूसरे लोगों के साथ नहीं बैठने देते थे। मुझे उनके बाव-तकिए पर थोड़ा ऊपर और पीछे बैठना होता था। भारत में यह एक विशेष प्रकार का गोल तकिया—या तो अमीर लोग इस्तेमाल करते थे, या विशेष सम्मानित लोग। बाबा अपने साथ बहुत कम चीजें रखते थे। लेकिन वे इस तकिये को सदा अपने साथ रखते थे। उन्होंने मुझे बताया था, मुझे इसकी जरूरत नहीं है। लेकिन किसी दूसरे के तकिये पर सोना बहुत गंदा लगता है। मेरे पास कुछ और नहीं है, लेकिन कम से कम मेरा अपना तकिया तो मेरे पास होना चाहिए। इसलिए जहां भी जाता हूं, इसे अपने साथ ले जाता हूं।

तुम्हे पता है, जब मैं सफर करता था.....चेतना इसे समझ सकेगी—क्योंकि एक तकिया मेरे लिए काफी नहीं है। में तीन तकिया इस्तेमाल करता हू। दो को तो मैं अपने दोनों और रखता हूं और एक मेरे सिर के नीचे रहता है। इसका मतलब है कि इन तकियों के लिए मैं एक बड़ा सूटकेस रखता था। और एक दूसरे बड़े सूटकेस में मैं अपने कंबल रखता था। क्योंकि मैं किसी दूसरे के कंबल इस्तेमाल नहीं कर सकता, उनमें से मुझे बू आती है।

और मैं तो बच्चे की तरह सोता हूं। तुम्हें मुझे सोते देख कर हंसी आएगी। में तो सर से पैर तक कंबल को ओड़ कर उसमें गायब हो जाता हूं। और अगर कंबल में से बदबू आए तो मैं श्वास नहीं ले सकता। और मैं अपना सिर बाहर भी रख सकता, क्योंकि तब मेरी नींद गड़बड़ा जाती है।

जब तक मैं अपने शरीर को पूरी तरह से ढंक न लू तब तक मैं अच्छी तरह से सो नहीं सकता। अगर कोई बदबू आ रही हो तब तो सोना संभव ही नहीं है। इसलिए मुझे अपना कंबल सदा अपने साथ रखना पड़ता था। और एक सूटकेस मैं मेरे कपड़े रखे जाते थे। इसलिए पच्चीस वर्ष तक निरंतर मुझे सफर करते समय तीन सूटकेस अपने साथ रखने पड़ते थे।

बाबा मुझसे अधिक भाग्यशाली थे। वे अपने तकिये को अपनी बांह के नीचे रख कर ले जाते थे। यह उनकी एक मात्र संपदा थी। उनहोंने मुझ बताया कि यह गंव-तकिया तो मैं खास तौर पर तुम्हारे लिए ले जाता हूं। क्योंकि जब तुम मेरे साथ आते हो तो मैं तुम्हें कहां बिठाउंगा। मैं दूसरों से अधिक ऊंचे मंच पर बैठता हूं। लेकिन तुम्हें तो मुझसे भी ऊंचे बैठना चाहिए।

मैने कहा: पागल बाबा आप पागल है।

उन्होने कहा: यह बात तो तुम भी जानते हो और दूसरे लोग भी जानते है कि मैं पागल हूं। लेकिन बार-बार इसका जिक्र करने की जरूरत है। बस, यह मेरा निर्णय है कि तुम्हें मुझसे ऊंचे आसन पर बैठना है।

वह गंव-तकिया मेरे लिए रखा गया था। न चाहते हुए भी मुझे उस पर बैठना ही पड़ता। इसके कारण मुझे कभी-कभी गुस्सा भी आता, संकोच भी होता और शर्म भी आती, क्योंकि उस पर बैठना बड़ा अजीब लगता। लेकिन बाबा न मानते। मेरे गुस्से का उन पर कोई असर न होता। मेरे सिर को थपथपाते हुए कहते, अच्छा बेटा, अब तो थोड़ा मुस्कुरा दो। उस तकिए पर मैंने तुम्हें बिठाया सिर्फ इसलिए तुम नाराज हो गए, मत होओ।‘

इस आदमी, पन्ना लाल घोष को न मैं पसंद करता था, और ना पसंद करता था। इनके प्रति मेरा कोई भाव नहीं था। उनमें कोई नमक नहीं था। वे बिलकुल स्वाद-रहित थे। लेकिन उनकी बांसुरी......उन्होंने भारत की बांस की बांसुरी को सारे संसार में प्रसिद्ध कर दिया और इसको संगीत का एक महत्वपूर्ण वाद्य-यंत्र बना दिया। उनके कारण ही जापान की अधिक सुंदर बांसुरी अब फीकी पड़ गई है। अरबी बांसुरी को तो को पूछता ही नहीं। लेकिन भारतीय बांसुरी को तो सदा इस बंगाली बाबू का आभार मानना पड़ेगा।

तुम्हें आश्चर्य होगा कि भारत में ये बाबू शब्द बड़े आदर सूचक बन गया है। जब किसी के प्रति आदर दिखाना होता उसे बाबू कहा जाता है। लेकिन न इसका सही अर्थ होता है—वह जो बदबू दे रहा है। जब अंग्रेज भारत आए तो उन्होंने बंगालियों के लिए बाबू शब्द का प्रयोग किया। धीरे-धीरे यह शब्द सारे भारत में प्रचलित हो गया। सबसे पहले बंगालियों के लिए बाबू शब्द ‘बाबू’ जो मूलत: आदर सूचक नहीं था। अत्यंत सम्माननीय बन गया। शब्दों का भाग्य भी बड़ा अजीब होता है। अब कोई नहीं सोचता कि यह गंदा शबद है। अब यह सब लोग समझने लगे कि यह सुंदर शब्द है।

पन्ना लाल तो सचमुच बाबू थे अर्थात जिससे मछली की बू आती थी। इसलिए मुझे अपनी नाक पकड़नी पड़ती थी।

उन्होंने बाबा से पूछा: ‘ बाबा, आपका यह लड़का, जिसके पैर मुझे बार-बार छूने पड़त है, अपनी श्वास क्यों रोके हुए है।‘

बाबा ने कहा: ‘ यह एक यौगिक क्रिया कर रहा है। इसका तुम्हारी मछली की बू से कोई लेना-देना नहीं है।‘ ये पागल बाबा बड़े प्यारे व्यक्ति थे।

दूसरा संगीतज्ञ, जिसका मैं नाम भी नहीं लेना चाहता था। लेकिन एक बार ले चूका हूं। और इस अध्याय को समाप्त करने के लिए एक बार फिर उसका उल्लेख करना पड़ेगा—सचदेवा था। उसका बांसुरी वादन पन्ना लाल घोष के बांसुरी वादन से बिलकुल भिन्न है, हालांकि दोनों एक ही तरह की बांसुरी का उपयोग करते है। तुम दोनों को एक ही बांसुरी दे सकते हो, लेकिन तुम्हें आश्चर्य होगा की उनका संगीत कितना अलग-अलग होता है। अपने आप में बांसुरी तो गौण है, बांसुरी वादन महत्वपूर्ण है। बांसुरी में से जो स्वर निकलते है उनसे उसके संगीत की विशेषता प्रकट होती है।

सचदेवा के हाथ में तो जादू था। पन्ना लाल घोष के बजाने की तकनीक उत्तम थी, उसमें संगीत की कला और जादू, दोनों का मिश्रण पाया जाता था। उसका संगीत श्रोताओं को दूसरे ही लोक में पहुंचा देता था। लेकिन मुझे यह आदमी तो कभी अच्छा नहीं लगा। पन्ना लाल तो मुझे न पसंद थे, न नापंसद थे। इस आदमी से तो मुझे घृणा थी। उससे मुझे इतनी नफरत थी कि शिष्टाचार वश भी हम दोनो एक-दूसरे के निकट नहीं आ सकते थे। परिचय की ओपचारिकता को भी नहीं निभा सकते थे। और बाबा को यह मालूम था। सचदेवा को भी मालूम था और फिर भी उसको मेरे पैर छूने पड़ते थे।

मैने बाबा को कहा: ‘ मैं अपने पैर दुबारा उन्हें नहीं छूने दूँगा। पहली बार तो मुझे मालूम नहीं था कि उनकी तरंगें न सिर्फ खराब है, अब तो मुझे मालूम हो गया।‘

और उनकी तरंगें न सिर्फ खराब थी बल्कि उबकाई लाने वाली थी। और उनका चेहरा भी ऐसा ही थी। अगला व्यक्ति बीमार महसूस करने लगे। मैं उनके बारे में बात नहीं करना चाहता था। क्योंकि मैं उनको याद नहीं करना चाहता था। क्यों? क्योंकि तुम्हें उनके बारे में बताने के लिए मुझे इस सबको फिर से झेलना पड़ेगा। लेकिन मैंने तय किया है कि मैं अपना सारा भार पूरी तरह उतार दूँगा। तो जो होना हो सो हो। सच में वह पास पोर्ट फोटो से भी अधिक बदसूरत थे।

मेरा ख्याल था की पासपोर्ट फोटो सबसे अधिक कुरूप चीज है, कोई उससे अधिक बदसूरत नहीं हो सकता। लेकिन सचदेवा उससे भी कहीं अधिक बदसूरत थे। और उनका नाम कितना सुंदर है—सचदेवा, वाह, सच का देवता। लेकिन कितने बदसूरत थे वे। है भगवान, है जीसस।

लेकिन जब वह अपनी बांस की बांसुरी को बजाने लगते तो उनकी सारी कुरूपता गायब हो जाती और वे सुनने बाले को किसी दूसरे ही लोक में ले जाते। उनका संगीत अंतर को भेदने वाला है और वह तलवार की धार की तरह तीखा ओर प्रखर है। वह इतनी कुशलता से श्रोताओं के ह्रदय को भेद कर उनके अंदर पहुंच जाता कि किसी को यह मालूम ही न होता कि सर्जरी हो चुकी है।

लेकिन यह आदमी बदसूरत था। मैं शारीरिक कुरूपता को कोई महत्व नहीं देता। अब उसके शरीर की बनावट या उसके रंग-रूप से मुझे क्या लेना-देना। लेकिन मन से भी वह बदसूरत थे। पहली बार जब उन्होंने बड़े संकोच से मेरे पैर छुए तो ऐसा लगा जैसे मेरे पैरा से पर कोई रेंगने बाला जंतु रेंग रहा हो, कोई सांप रेंग रहा हो और मैं कूद कर सांप को मार भी नहीं सकता था—वह सांप नहीं,आदमी था।

मैंने बाबा की और देख कर कहा: ‘ अब इस सांप का मैं क्या करूं।‘

बाबा ने कहा: ‘ मुझे मालूम था कि तुम इसे पहचान लोगे। थोड़ा धीरज रखे। पहले उसकी बांसुरी सुनो, फिर हम उसके सांप होने पर सोचेंगे। मुझे यही डर था कि तुम्हें इसका पता चल जाएगा। मुझे मालूम था कि वह तुम्हें धोखा नहीं दे सकता। लेकिन हम लोग बाद में इसकी बात करेंगे। पहले उसकी बांसुरी सुन लो।‘

तो मैंने बांसुरी को सुना ।और वह सच जादूगर था—दूसरे के भीतर की गहराई में प्रवेश कर जाता था। ऐसा लगता था जैसे दूर किसी पहाड़ी पर कोयल बोल रही हो। इस कहावत को केवल भारतीय संदर्भ में ही

समझा जा सकता है। भारत मैं कुक्कू से वह नहीं समझा जाता जो पश्चिम में समझा जाता है। पश्चिम में तो कुक्कू होने का मतलब है पागल होना। लेकिन पूर्व में अच्छे गायकों और कवियों को कुक्कू, कोयल की उपाधि दी जाती है। सचदेवा को ' बांसुरी के जगत की कोयल' कहा जाता था। उनकी बांसुरी इतनी मधुर होती थी की कोयल को भी उससे ईर्ष्या हो सकती थी। मेरे कहने का अभी प्राय यह है कि उनका संगीत बहुत अच्छा था। केवल संगीत।

पन्ना लाल बड़े सपाट ढंग से बढते है। वे बड़े विश्वास से अपना हर कदम आगे बढ़ाते है। इस विश्वास का कारण है उनकी मेहनत, उनका अभ्यास। तुम कहीं कोई दोष नहीं खोज सकते। सचदेवा के बांसुरी वादन में भी कोई त्रुटि नहीं थी, कोई दोष नहीं था। लेकिन वे सपाट जमीन पर नहीं चलते थे। वे पहाड़ों के पक्षी है। ऐसा पक्षी जो अभी जंगली है। और अपनी मौज में ऊपर-नीचे इधर-उधर उड़ता रहता है। अभी पालतू नहीं बना, लेकिन बहुत कुशल है। पन्ना लाल घोष काफी दूर लगते है, कुछ दिमागी वादक एक तकनीशियन लगते है। लेकिन सचदेवा सच्चे कलाकार हैं, बड़े प्रतिभाशाली है। कुछ जया करने वाले बहुत थोड़े लोग होते है और वे उनमें से एक है। खासकर बांसुरी के छोटे से क्षेत्र में उन्होंने इतनी मौलिक और नई धुनें तैयार की हैं कि आने वाली कई पीढ़ियाँ उनका रेकार्ड नहीं तोड़ सकती। कोई उनको हरा नहीं सकेगा।

तुम यह भी देख सकते हो जब कि मैंने इस आदमी को कभी पसंद नहीं किया फिर भी मैं उनके बांसुरी वादन के प्रति न्याय कर रहा हूं, उसकी उचित सराहना ही कर रहा हूं। और वैसे भी आदमी का उसकी बांसुरी से क्या लेना-देना है। न वे मुझे पसंद करते थे, न में उनको पसंद करता था। मुझे वे इतने बुरे लगते थे कि जब वे अगली बार बाबा से मिलने आए और बाबा ने उन्हें मेरे पैर छूने के लिए कहा तो मैं पद्मासन लगा कर बैठ गया और अपने पैरों को अपने कुरते से ढाँक लिया। बाबा ने कहा: यह पद्मासन का अभ्यास तुमने कहां किया, आज तो तुम बहुत बड़े योगी जैसा व्यवहार कर हो। तुमने योग कब सीखा।

मैंने कहा: ' इन साँपों और रेंगते हुए जीव-जंतुओं के कारण मुझे योग सीखना पडा। उदाहरण के लिए यह आदमी, मुझे इनकी बांसुरी बहुत अच्छी लगती है, लेकिन उनकी बांसुरी उनके आंतरिक स्वभाव से बिलकुल भिन्न है, दोनों में कोई साम्य नहीं है। मैं नहीं चाहता वे मुझे छुएँ। और मुझे मालूम था कि आप उनसे वही कहेंगे जो आपने अभी कहा। आप मुझे उनके पैर छूने को कहें, वह कहीं ज्यादा आसान होगा।

अब मैं तुम्हें कुछ समझाता हूं, जिसके बिना अभी मैंने जो कहा है वह तुम्हें समझ न आ पाएगा। जब तुम किसी के पैरों को छूते हो तो तुम अपनी ऊर्जा को उसके चरणों में उँड़ेलते हो। तुम अपने आपको उसके प्रति अर्पित करते हो। जब तक तुम पूरी तरह से योग्य न होओ तब तक तुम्हें ऐसा करने से रोकना ही बेहतर होगा। मैं तो बिना किसी मुश्किल के उनके पैरों को छू सकता था। मेरे भीतर जो कुछ भी था उसे उनके पैरों में डाल सकता था। तुम फूल को पत्थर पर फेंक सकते हो, लेकिन पत्थर को फूल पर नहीं फेंकना चाहिए।

बाबा ने कहा: ' मैं समझता हूं, लेकिन उसको भी तो बदलना पड़ेगा।'

इसके बाद उन्होंने उनसे मेरे पैर छूने के लिए दुबारा नहीं कहा। इसके बाद कुछ बार फिर हम दोनों मिले तो न सचदेवा ने मेरी और देखा,न मैंने उनकी और देखा। मुझे बाबा का डर था और सचदेवा को मेरा डर था। जब भी वे आते तो मैं बाबा को कुहनी मार कर याद दिलाता कि वे सचदेवा को मेरे पैर छूने के लिए न कहें। बाबा कहते, हां मुझे मालूम है। मैंने कहा: मुझे मालूम है कहने से काम नहीं चलेगा। जब तक वे यहां से चले न जाएंगे मैं आपको याद दिलाता रहूँगा। या तो वे अपनी बांसुरी बजाए या उन्हें चले जाने को कहिए। क्योंकि वे सिर्फ बुरी तरह से पैर छूते है ऐसा ही नहीं, उनका चेहरा और उनकी उपस्थिति, कुछ-कुछ आध्यात्मिक कैंसर जैसे है। तो यह समझोता हो गया कि अगर सचदेवा बाबा से बात करना चाहें तो मुझे किसी काम के बहाने वहां

से भेज दिया जाए और इस प्रकार मैं मुक्त हो जाता और वहां से टल जाता। या उनसे बांसुरी बजाने को कहा जाता। तब तो वे तारों को धरती पर उतार देते। तब तो वे पत्थरों को भी पिघला देते। वे तो जादूगर थे। लेकिन केवल बांसुरी बजाते समय मुझे उनकी बांसुरी बहुत अच्छी लगती है, लेकिन वे स्वयं नहीं।

तीसरे व्यक्ति, हरि प्रसाद तो दोनों है। जितना उनका संगीत सुंदर है उतना ही उनका अंतर भी सुंदर है। उनका स्वभाव बहुत अच्छा है। वे पन्ना लाल घोष जितने प्रसिद्ध नहीं है। और शायद कभी होंगे भी नहीं, क्योंकि उन्हें इसकी परवाह नहीं है। न वे राजनेताओं के पीछे भगते है, न वे किसी के आदेश से बजाते है। उनकी बांसुरी का तो स्वाद ही कुछ और है। उनकी बांसुरी की विशेषता है—संतुलन, पूर्ण संतुलन, जेसे कि तेज बहते हुए पानी में चल रहे हो। यह उदाहरण मैं लाओत्से से दे रहा हूं। जब तुम बहुत तेज प्रवाह वाली जंगली नदी के साथ ही बह जाओगे। लाओत्से यह भी कहता है कि तुम्हें तेजी से जल्दी-जल्दी चलना होगा। क्योंकि नदी का पानी ठंडा है—बर्फ जैसा ठंडा। तेज और संतुलित—यही विशेषता है हरि प्रसाद चौरासिया कि बांसुरी की। उनकी शुरूआत वे अचानक ही कर दे तक है और अंत भी अचानक ही कर देते है। किसी को यह आशा ही नहीं कि वे इस प्रकार अचानक शुरू कर देंगे।

पन्ना लाल घोष तो भूमिका बांधने में आधा घंटा लगा देते है। भारत में शास्त्रीय संगीत का यही तरीका है। तबला बजाने वाला अपने तबले को ठोंकता-पीटता है। वह अपनी छोटी से हथौड़ी से तबले पर इधर-उधर चोट करके उसकी आवाज को ठीक करता है। सितार बजाने वाला सितार के तारों को बार-बार खींच कर या ढीला करके देखता है कि सब तार स्वर बद्ध हो गए या नहीं। आधे घंटे तक बस यही चलता रहता है, वाद्य यंत्रों को तैयार किया जाता है। भारतीय बहुत धीरज वाले लोग है। इसे तैयारी कहा जाता है। लेकिन लोगों के आने से पहले इसको क्यों नहीं कर लिया जाता। या पर्दे के पीछे क्यों नहीं कहते। जैसा नाटक में करते है। बड़ी अजीब बात है कि भारतीय संगीतज्ञ अपनी तथा अपने यंत्रों की तैयारी श्रोताओं के सामने ही करते है। इसका कोई खास कारण तो होगा। मेरा ख्याल है कि पूर्व में शास्त्रीय संगीत इतना गहरा है कि अगर तुम आधे घंटे के लिए भी धीरज नहीं रख सकते तो तुम वहां उपस्थित रहने के योग्य ही नहीं हो।

मुझे एक बहुत प्रसिद्ध कहानी याद आ गई है। गुरजिएफ अपने शिष्यों को बड़े अजीब समय पर बुलाता था। उसकी मीटिंग मेरा मीटिंग कि तरह निश्चित समय पर नहीं होती थी। यहां तो तुम लोगों को मेरे आने से पहले एकत्रित होना पड़ता है। अगर मैं पाँच मिनट देर से आऊं तो याद रखना, इसमें मेरा दोष नहीं है। मेरी कार के ड्राइवर मुझे जानबूझ कर थोड़ी देर से लाते थे। ताकि देर से आने वाले लोग भी बैठ जाएं। क्योंकि एक बार जब मैं पहुंच जाता हूं तो मुझे लोगों का इधर-उधर होना, भीतर आना जाना पसंद नहीं है। उस समय सब कुछ ठहर जाना चाहिए। जब चारों और सब शांत हो जाता है जब मैं अपनी काम आरंभ कर सकता हूं या जो कुछ भी मुझे बोलना होता है। जो मैं कहने जा रहा हूं वह जरा सी भी गड़बड़ से बदल जाता है। मैं कुछ न कुछ तो कहूंगा ही लेकिन यह वही नहीं होगा और शायद मैं उस बात को दुबारा कभी न कहुं।

मेरा ढंग तो तुम्हें मालुम ही है, लेकिन गुरजिएफ का तरीका इससे बिलकुल उल्टा था। वह अपने शिष्यों को टेलीफोन से सूचित करता कि मीटिंग तीस मील की दूरी पर रखी गई है और वे लोग वहां पर समय पर पहुंच जाएं। अब बिना किसी पूर्व सूचना के, बिना किसी तैयारी के तीस मील दूर समय पर पहुंचने के लिए गाड़ी की जरूरत तो होती ही है। अपने दूसरे सब कामों को छोड़-छाड़ कर भागे-भागे जब वे मीटिंग के स्थान पर पहुंचते तो देखते कि वहां पर नोटिस लगा हुआ है आज की मीटिंग रद्द कर दी गई है।

दूसरे दिन शिष्यों के टेलीफोन फिर से बजने लगते—मीटिंग की सूचना देने के लिए। पहले दिन अगर दो सो लोगों को बुलाया गया था तो उनमें से केवल सौ आते। दूसरे दिन तो केवल पचास ही आते और उनको भी

दरवाजे पर यही नोटिस लिख हुआ मिलता कि मीटिंग रद्द कर दी गई है। वहां पर इसके लिए खेद प्रकट करने के लिए भी कोई न होता। ऐसा कुछ दिन तक चलता रहता और चह चौथे या सातवें दिन आता। वह से मेरा मतलब गुरजिएफ से है। तब होता यह कि आरंभ में जो दो सौ लोग थे उनमें से अब केवल चार ही बचते। उनकी और देख कर वह कहता, जब मैं वह कह सकता हूं जो मैं कहना चाहता था और जिन लोगों को मैं यहां पर नहीं चाहता था वे अपने आप ही नहीं आए। केवल वही लोग बच गए हैं जो मेरी बात को सुनने के योग्य थे।

गुरजिएफ का ढंग अलग ही था। वह भी एक तरीका है, एक उपाय है। लेकिन तरीके तो बहुत से हे। मुझे तो ऐसा कोई भी तरीका पसंद है जो कारगर हो, जिससे लोगों को लाभ हो, जिसको परिणाम अच्छा हो। मुझे गौतम बुद्ध की इस परिभाषा से विश्वास है कि सत्य वह है जो कारगर हो। अब यह बडी अजीब परिभाषा है। क्योंकि कभी-कभी झूठ काम कर सकता है। और मुझे मालुम है कि कई बार सच बिलकुल काम नहीं करता और झूठ काम कर देता है। लेकिन मैं बुद्ध से सहमत हूं। अगर बात काम करती है। सही परिणाम लाती है तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आरंभ में वह सच थी या झूठ। अंतिम परिणाम ही महत्वपूर्ण होता है। भले ही मैं गुरजिएफ के तरीके का उपयोग करूं,क्योंकि मैं दूसरों के तरीकों को नहीं अपनाता, हालाकि लोग समझते है कि मैं ऐसा करता हूं। मैं केवल इसका दिखाव करता हूं। मैं तो जो कारगर है उसी को उपयोग करता हूं। किसका है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। सत्य तो नमेरा है, न तुम्हारा है।

ये जो तीसरे व्यक्ति है, ये मुझे बहुत प्रिय है। जिस क्षण से हमने एक दूसरे को देखा हमने एक दूसरे को पहचान लिया। उन तीन बांसुरी वाद को में से एक ऐसे थे जिन्होंने बाबा के कहने से पहले ही मेरे पैर छू लिए। जब यह हुआ तब बाबा ने कहा: यह तो बड़ी अजीब बात है। हरि प्रसाद, तुमने एक बच्चे के पैर कैसे छू लिए। हरि प्रसाद ने कहा: क्या कोई ऐसा कानून है जो इसकी मनाही करता है। बच्चे के पैर छूना कोई अपराध है। मुझे यह बहुत अच्छा लगा, बहुत प्यार लगा, इसलिए मैंने इसके पैर छुए।'

बाबा तो बहुत खुश हो गए। ऐसे लोगों से वे बहुत खुश होते थे। अगर पन्ना लाल घोष भेड़ जैसे थे, तो हरि प्रसाद तो शेर है। वे बहुत ही अनोखे सुंदर और प्यारे व्यक्ति है। तीसरे व्यक्ति, मेरा मतलब है सचदेवा, उनका तो मैं नाम भी नहीं लेना चाहता। लेकिन मेरा कोई नुकसान नहीं किया, लेकिन उनके नाम से ही मेरे सामने उनका कुरूप चेहरा आ जाता है। और तुम्हें मालूम है कि मैं सौंदर्य का कितना आदर करता हूं। मैं सब कुछ क्षमा कर सकता हूं लेकिन कुरूपता को नहीं। और वह कुरूपता शरीर की नहीं आत्मा की भी हो तब तो उसे सहन नहीं किया जो सकता। वे भीतर और बाहर , दोनों और से कुरूप थे। कुरूपता की कोई सीमा नहीं थी।

जहां तक इन बांसुरी वादकों का सवाल है उनमें हरि प्रसाद ही मेरी पंसद है। उनकी बांसुरी में उन दोनों की विशेषता तो पाई जाती है। लेकिन व न पन्ना लाल घोष की भांति बहुत जोरदार और आडंबर पर्ण है और न इतनी प्रखर और तेज कि वह तुम्हें भेद कर काट कर पीडा पहुँचाए। वे तो हवा के समान कोमल है, गर्मी की रात में ठंडी हवा के झोंके के समान है। वे तो चाँद के समान है, प्रकाश तो है पर गरम नहीं, ठंडा है। तूम उसके ठंडे पन को महसूस कर सकते हो।

हरि प्रसाद को आज का महानतम बांसुरी वादक माना जाना चाहिए। लेकिन वे बहुत प्रसिद्ध नहीं है। हो भी नहीं सकेत, क्योंकि वे बहुत विनम्र है। प्रसिद्ध होने के लिए बहुत आक्रामक होना पड़ता है। वे न संघर्ष कर सकते है, न लड़ाई। अपने नाम के लिए वे किसी प्रकार का कोई संघर्ष नहीं कर सकते। लेकिन हरि प्रसाद को पहचानने वाले पागल बाबा जैसे लोग थे। पागल बाबा ने कुछेक दूसरे लोगों को भी पहचाना था। उनकी बात मैं बाद में करूंगा। क्योंकि वे भी मेरे जीवन में उनके माध्यम से ही आए।

बड़ी अजीब बात है कि हरि प्रसाद को बिलकुल नहीं जानता था। और जब पागल बाबा ने उनका मुझसे परिचय कराया तो उनकी मुझमें दिलचस्पी इतनी बढ़ गई कि हवे पागल बाबा के पास इसलिए आते कि वे मुझसे मिल सकें। एक बार पागल बाबा ने मजाक में उनसे कह ही दिया कि ‘ अब तुम मुझसे मिलने नहीं आते—यह तुम भी जानते हो और मैं भी जानता हूं और जिसके लिए तुम आते हो वह भी जानता है।‘

मैं हंस पडा: हरि प्रसाद ने हंस कर कहा: बाबा, आप बिलकुल ठीक कहते है।‘

मैंने कहा: ‘ मुझे तो मालूम था बाबा देर अबेर, कभी न कभी यक बात जरूर कहेंगे।‘ और यही उस व्यक्ति का सौंदर्य था। वे अनेक लोगों को मेरे पास लाए, लेकिन मुझे धन्यवाद देने से भी रोक दिया। उनहोंने मुझसे केवल यहीं कहा: ‘ मैंने तो सिर्फ अपना कर्तव्य निभाया है। मुझ पर तुम केवल एक ही कृपा करना कि जब मैं मरू तो तुम मेरी चिता को आग लगाना।‘

मैंने उनको ऐसी मनोदशा में कभी नहीं देखा था। तब मैं जान गया कि उनका अंतिम समय जल्दी ही आने वाला है। इसके बारे में बात करके वह अपना समय नष्ट नहीं करना चाहते थे।

मैंने कहा: ‘ अच्छा, इसके बारे में कोई बहस नहीं की जाएगी। मैं आपकी चिता को आग दूँगा—इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मेरे पिता आपति करते है। या अपका परिवार आपति करता है। मैं आपके परिवार को नहीं जानता।

संयोगवश पागल बाबा की मृत्यु मेरे ही गांव में हुई। लेकिन शायद उन्होंने स्वंय ऐसी व्यवस्था की। मेरा खयाल है कि उन्होंने स्वयं अपनी इच्छानुसार ऐसा किया। जब मैं उनकी चिता को आग देने लगा तो मेरे पिता ने कहा: ‘ तुम क्या कर रहे हो, यह काम तो सबसे बड़ा बेटा ही करता है। मैंने कहा: ‘ दद्दा, मुझे करने दीजिए। मैंने उनसे वादा किया था। ओर जहां तक आपका सवाल है तो मैं यह नहीं कर सकूंगा। मेरे छोटा भाई करेगा। असल में वही आपका सबसे बड़ा बेटा है। मैं नहीं, मैं तो परिवार के लिए किसी कामा का नहीं हूं। और न ही कभी होऊंगा। मैं तो सदा परिवार के लिए एक उपद्रव ही सिद्ध होऊंगा। मेरे बाद जो मुझसे छोटा भाई है वह आपकी चिता को आग लगाएगा और वही परिवार की देखभाल करेगा।

मैं अपने भाई विजय का बहुत आभारी हूं। मेरे कारण ही वह विश्वविद्यालय में न पढ़ सका। क्योंकि मैं तो कुछ कमा नहीं रहा था और किसी न किसी को तो परिवार का उत्तर दायित्व लेना ही पड़ता,उसकी देख भाल करनी ही पड़ती। मेरे दूसरे भाई विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए गए। उनका खर्च भी देना पड़ता था। इसलिए विजय घर पर ही रहा। उसने सचमुच बहुत त्याग किया। विजय जैसा प्यारा भाई बड़े भाग्य से मिलता है। उसने बहुत त्याग किया। मैं शादी करने के लिए राज़ी नहीं था। इसके लिए परिवार के लोग मुझ पर दबाव डाल रहे थे।

विजय ने मुझसे कहा: ‘ भैया, अगर सब लोग आपको शादी के लिए बहुत परेशान कर रहे है तो मैं शादी करने के लिए तैयार हूं, सिर्फ आपको मुझसे एक वायदा करना होगा। मेरे लिए लड़की आपको पंसद करनी होगी।‘ यह विवाह परिवार के लोगों की पसंद और उनकी इच्छा अनुसार ही किया जा रहा था। भारत में विवाहा प्राय: परिवार द्वारा ही निश्चित किया जाता है।

मैंने कहा: ‘ हां, यह तो मैं कर सकता हूं। लेकिन उसका त्याग मेरे ह्रदय को छू गया। और इससे मुझे बहुत लाभ हुआ। एक बार उसकी शादी हो गई तो मुझे पूरी तरह भुला दिया गया क्योंकि मेरे दूसरे भाई-बहिन भी थे। एक बाद शादी हो गई तो उसके बाद मेरे दूसरे भाई बहनों की शादी का क्रम शुरू हो गया। मैं कोई कारोबार करने को तैयार नहीं था।

विजय ने कहा: ' इसकी भी आप चिंता मत करो। मैं किसी प्रकार का कोई भी काम करने को तैयार हूं। और छोटी सी उम्र से ही उसने परिवार का सारा बोझ उठा लिया आरे काम धंधे में व्यस्त हो गया। इन सब बातों के लिए मैं उसका बहुत आभारी हूं और उसके प्रति मेरी बहुत सहानुभूति है।

मैने अपने पिता से कहा: ' पागल बाबा ने मुझसे कहा था और मैने उनसे वादा किया था, इसलिए मैं उनकी चिता को आग दूँगा। जहां तक आपकी मृत्यु का प्रश्न है, चिंता मत करें, मेरा छोटों भाई वहां होगा। मैं भी वहां उपस्थित रहूंगा, लेकिन आपके पुत्र की हैसियत से नहीं।

मुझे नहीं मालुम कि ऐसा मैंने क्यों कहा, और उन्होंने क्या सोचा होगा। लेकिन बाद में यह सच हुआ। जब उनकी मृत्यु हुई तो मैं वहां उपस्थित था। मैंने उन्हें अपने पास रहने के लिए बुला लिया था ताकि मुझे उस शहर न जाना पड़े जहां वे रहते थे। अपनी नानी की मृत्यु के बाद मैं वहां दुबारा नहीं जाना चाहता था। वह दूसरा वादा था। मुझे अनेक वायदे पूरे करने है। लेकिन अभी तक उनमें से अधिकांश सफलता पूर्वक मैं पूरे कर चूका हूं। अब तो थोडे से ही वायदे पूरे करने को रह गए है।

मैंने अपने पिताजी से कहा था और मैं उनकी मृत्यु के समय वहां उपस्थित था। लेकिन मैं उनकी चिता को आग नहीं लगा सका। और निश्चित ही उस समय मैं उनके पुत्र की तरह उपस्थित नहीं था। जब उनकी मृत्यु हुई तब वे मेरे शिष्य थे। वे मेरे संन्यासी थे और मैं उनका गुरु था।

सत्र—31 मस्तो बाबा से मिलन

पागल बाबा अपने अंतिम दिनों में हमेशा कुछ चिंतित रहते थे। मैं यह देख सकता था, हालांकि उन्होंने कुछ कहा नहीं था, न ही किसी और ने इसका उल्लेख किया था। शायद किसी और को इसका अहसास भी नहीं था कि वे चिंतित थे। अपनी बीमारी, बुढ़ापा या आसन्न मृत्यु के बारे में तो निशचित ही उन्हें कोई फ़िकर नहीं थी। उनके लिए इनका कोई महत्व नहीं था।

एक रात मैं जब उनके साथ अकेला था, मैंने उनसे पूछा, सच तो यह है कि मुझे आधी रात को उन्हें नींद से जगाना पड़ा, क्योंकि ऐसा कोई क्षण खोजना जब उनके पास कोई न हो बहुत ही कठिन था। उन्होंने मुझसे कहा, क्या बात है, अवश्य ही कोई बहुत महत्वपूर्ण बात होगी अन्यथा तुम मुझे न जगाते। मैंने कहा: ' हां, प्रश्न तो यही है, मैं देख रहा हूं कि थोड़ी चिंता की छाया ने आप को घेर लिया है। पहले तो यह कभी नहीं होती थी। आपका आभा मंडल सदा सुर्य के प्रकाश की तरह स्वच्छ और तेज रहा है। लेकिन अब मुझे थोड़ी सी छाया दिखाई देती है। यह मृत्यु तो नहीं हो सकती।

उन्होंने हंस कर कहा: ' हां, छाया तो है, और वह मृत्यु नहीं है। यह भी सच है। मुझे चिंता यह है कि मैं एक ऐसे आदमी की प्रतीक्षा कर रहा हूं जिसको मैं तुम्हारा उत्तरदायित्व सौंप सकूं। मैं चिंतित हूं क्योंकि वह अभी तक यहां पहुंचा नहीं है। और अगर मैं मर गया तो तुम्हारे लिए उसको खोजना असंभव होगा।

मैंने कहा: ' अगर सचमुच मुझे किसी कह आवश्यकता है तो मैं उसे खोज लुंगा। लेकिन मुझे किसी कह आवश्यकता नहीं है। मरने से पहले आप पूर्णत: निशचित हो जाइए। मैं आपकी चिंता का कारण नहीं बनना चाहता। आपकी मृत्यु भी उतनी ही वैभवशाली, प्रफुल्लित, उतनी ही सुंदर होनी चाहिए जितना सुंदर आपका जीवन रहा है।'

उन्होंने कहा: ' यह संभव नहीं है.......लेकिन मुझे मालूम है कि वह आदमी जरूर आएगा। मैं अकारण ही चिंता कर रहा हूं। वह अपने वायदे का पक्का है, उसने वादा किया है, वह यहां पर मेरे मरने से पहले अवश्य पहुंच जाएगा।

मैंने उनसे पूछा: ' उनको कैसे मालुम है कि आप कब मरने बाले है।'

उन्होंने हंस कर कहा: ' इसीलिए तो मैं तुम्हारा उससे परिचय करना चाहता हूं। तुम बहुत छोटे हो और मैं चाहता हूं कि कोई मुझ जैसा व्यक्ति तुम्हारे निकट रहे। उन्होंने कहा: ' सच तो यह है कि यह एक पुरानी परंपरा है कि अगर कोई बच्चा कभी जाग्रत होने वाला है तो उसे उसके बचपन में ही कम से कम तीन जाग्रत लोगों द्वारा पहचान लिया जाना चाहिए।'

मैंने कहा: ' बाबा, यह सब बकवास है। मुझे जाग्रत होने से कोई नहीं रोक सकता है।' उन्होंने कहा: मुझे मालूम है। लेकिन मैं पुराने ढंग का रूढ़िवादी आदमी हूं। इसलिए कृपा करके खासकर मेरी मृत्यु के समय परंपरा और रूढ़ि के विरोध में कुछ न कहो।'

मैंने कहा: ' अच्छा आपके कारण मैं चुप रहूंगा। मैं कुछ नहीं कहूंगा। क्योंकि मैं जो कुछ भी कहूंगा वह किसी न किसी तरह परंपरा और रुढि के विरूद्ध होगा।'

उन्होंने कहा: ' मैं यह तो नहीं कह रहा कि तुम्हें चुप रहना चाहिए, लेकिन मुझे समझने की कोशिश करो। मैं बढ़ा आदमी हूं। तुम्हारे सिवाय मैं इस दुनिया में किसी और की परवाह नहीं कहता। मुझे नहीं मालूम कि क्यों और कैसे तुम मेरे इतने नजदीक आ गए। मैं चाहता हूं कि कोई मेरी जगह ले ताकि बाद में तुम्हें मेरी याद न आए। तुम मुझे मिस न करो।'

मैने कहा: 'बाबा, कोई भी व्यक्ति आपकी जगह नहीं ले सकता। लेकिन मैं वादा करता हूं कि मैं पूरी कोशिश करूंगा कि मैं आपको मिस न करू।

लेकिन यह आदमी दूसरे दिन सुबह पहुंच गया।

मुझे पहचानने वाले पहले जाग्रत व्यक्ति थे, मग्गा बाबा, दूसरे थे, पागल बाबा, और तीसरे तो और भी अजीब थे। मेरी कल्पना के भी बाहर, पागल बाबा भी इतने पागल न थे। उनका नाम था मस्त बाबा।

बाबा एक आदरसूचक शब्द है, जिसका अर्थ है: दादा। लेकिन किसी भी जाने-माने समाधिस्थ व्यक्ति को लोग बाबा कहते थे। क्योंकि असल में वहीं समाज में सबसे बड़ा, सबसे बुजुर्ग आदमी होता है। ऐसा न भी हो, भले ही वह नवयुवक हो, लेकिन उसे बाबा ही कहा जाता है।

मस्त बाबा का तो कहना ही क्या, कमाल के आदमी थे, कमाल के। जैसा आदमी मुझे पसंद है ठीक वैसे ही थे। उनको तो मानों मेरे लिए ही बनाया गया था। पागल बाबा के परिचय कराने से पहले ही हम मित्र बन गए।

मैं घर के बाहर खड़ा था। मुझे नहीं मालूम की मैं वहां क्यों खड़ा था। कम से कम इस समय तो मुझे याद नहीं आ रहा, क्योंकि बहुत पुरानी बात है। शायद मैं भी इंतजार ही कर रहा था। क्योंकि पागल बाबा ने कहा था कि वह आदमी अवश्य अपनी वादा पूरा करेगा। वह आएगा। और मैं हर बच्चे की तरह बहुत उत्सुक था। मैं बच्चा ही था और अन्य अनेक बातों के बावजूद भी मैं बच्चा ही रहा हूं। शायद मैं इंतजार कर रहा था या कुछ और करने के बहाने उस आदमी की रहा देख रहा था। और मैने देखा कि वे आ रहे थे। मैंने तो सोचा भी न था कि वे इस प्रकार आएंगे। वे दौड़ते हुए आ रहे थे। वे बहुत बुजुर्ग न थे। पैंतीस वर्ष से अधिक उम्र के नहीं थे। वे युवावस्था की पराकाष्ठा पर थे। वे ऊंचे,अति दुबले थे और उनके लंबे सुंदर बाल और सुंदर दाढ़ी भी थी।

मैंने उनसे पूछा: ' क्या आप मस्त बाबा है।'

चौंक कर उन्होंने पूछा: 'तुम्हें मेरा नाम कैसे मालूम हुआ।'

मैंने कहा: 'इसमें कोई रहस्य की बात नहीं है। पागल बाबा आपका इंतजार कर रहे है। उन्होंने आपके नाम का जिक्र किया है। आप सच में ऐसे व्यक्ति है जिसके साथ रहना तो मैं स्वयं पसंद करता। आप उतने ही पागल है जितने युवावस्था में पागल बाबा रहे होगें। शायद युवा पागल बाबा आपके रूप में वापस आ गए है।'

उन्होंने कहा: 'तुम तो मुझसे भी अधिक पागल मालूम होते हो। यह तो बताओ कि पागल बाबा कहां है।'

मैंने उनको रास्ता दिखाया और उनके पीछे-पीछे प्रवेश किया। उनहोंने पागल बाबा के चरण स्पर्श किए। उन्होंने कहा: ' मस्तो, यह मेरा अंतिम दिन है'—वे उन्हें इसी नाम से पुकारते थे—मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा था और थोड़ा चिंतित हो रहा था।'

मस्तो ने कहा: 'क्यों, मृत्यु का तो आपको कोई डर नहीं है।'

बाबा ने उत्तर दिया: 'निश्चित ही मृत्यु का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं है। लेकिन अपने पीछे देखो। यह लड़का मेरे लिए सब कुछ है। शायद यह वह सब कुछ कर सकेगा जो मैं करना चाहता था। और कर न सका। तुम इसके पैर छुओ। मैं इंतजार कर रहा था ताकि मैं तुम्हारा इससे परिचय करा सकूं।

मस्त बाबा ने मेरी आंखों में झाँका....पागल बाबा ने न जाने कितने लोगों को मुझसे परिचित करवाया और मेरे पैर छूने को कहा था। उन सब में से केवल यही एक सच्चे आदमी थे। यह एक तरह की छाप बन गई थी, सब लोगों को मालूम था कि अगर पागल बाबा को मिलने जाओ तो उस लड़के के पैर छूने पड़ते हैं जो कि सब तरह से एक आफत है। और तुम्हें उसके पैरों को छूना ही पड़ता है। क्या बेतुकी बात है, पर पागल बाबा तो पागल है। यह आदमी मस्तो तो अलग ही ढंग का था। अपनी आंखों में आंसू लिए,हाथ जोड़ कर उन्होंने कहा: इस क्षण से आगे अब तुम मेरे पागल बाबा होंगे। वे अपना शरीर छोड़ रहे है, लेकिन अब वे तुम्हारे रूप मैं

जीवित रहेंगे।' न जाने कितना समय बीत गया,क्योंकि वे मेरे पैरो को छोड़ ही नहीं रहे थे। वे रो रहे थे। उनके सुंदर बाल जमीन पर फैले हुए थे। मैंने कई बार उनसे कहा: ' मस्त बाबा, अब बस करो। उन्होंने कहा: जब तक मुझे मस्तो नहीं कहो गे, मैं तुम्हारे पैर नहीं छोड़ुगा।'

अब मस्तो ऐसा शब्द है जो किसी बुजुर्ग द्वारा किसी बच्चे के लिए उपयोग किया जाता है। मैं उनको मस्तो कैसे कहता। लेकिन मेरे लिए कोई दूसरा चारा ही नहीं था। मुझे कहना ही पडा। पागल बाबा ने भी कहा, अब देर मत करो। उसे मस्तो कहो ताकि मैं निश्चिंत होकर मर सकूं। स्वभाव: ऐसी परिस्थिति में मुझे उन्हें मस्तो कहना ही पडा। जैसे ही मैंने यह नाम लिया, मस्तो ने कहा, तीन बार ऐसा कहो।'

पूर्व में यह भी एक परंपरा है कि जब तक एक बात को तीन बार न कहा जाए तब तक उसका कोई खास महत्व नहीं होता। तो तीन बार मैंने कहा: मस्तो, मस्तो, मस्तो। अब मेहरबानी करके मेरे पैर छोड़ दो। और मैं हंसा, पागल बाबा हंसे और मस्तो हंसे....ओर हम तीनों की इस हंसी ने हमें अटूट बंधन में बाँध दिया।

उसी दिन पागल बाबा की मृत्यु हो गई। लेकिन मस्तो नहीं रुके। यद्यपि मैंने उनसे कहा था कि मृत्यु अति निकट है।

उन्होंने कहा: 'मेरे लिए अब तुम्हीं हो। जब भी मुझे आवश्यकता होगी मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगा। ये तो मरने ही वाले है। सच तो यह है कि इन्हें तीन दिन पहले ही मर जाना चाहिए था। सिर्फ तुम्हारे कारण उनके प्राण अटके हुए थे, क्योंकि वे मुझे तुमसे परिचित करा सकें और यह सिर्फ तुम्हारे लिए ही नहीं वरन मेरे लिए भी जरूरी था।'

पागल बाबा के मरने से पहले मैने उनसे पूछा: मस्त बाबा के यहां आ जाने के बाद आप इतने खुश क्यों है।'

उनहोंने कहा: 'सिर्फ अपने रूढ़ीवादी मन के कारण। क्षमा करना।'

वे इतने अच्छे वृद्ध आदमी थे, नब्बे साल की उम्र में वक एक छोटे से लड़के से इतने प्यार से क्षमा मांग रहे थे।

मैंने कहा: 'मैं यह नहीं पूछ रहा कि आपने उनका इंतजार क्यों किया। यह प्रश्न उनके या आपके बारे में नहीं है। वे तो इतने प्यारे आदमी हैं, इतने सुंदर है। इंतजार करने योग्य है। मैं तो यह पूछ रहा हूं कि आप इतने चिंतित क्यों हो गए थे।'

उन्होंने कहा:' मैं फिर तुमसे कहता हूं कि इस समय तुम तर्क मत करो। तुम्हें मालूम है कि मैं तर्क का विरोध नहीं करता। तुम जिस तरह से तर्क करते हो वह मुझे बहुत पसंद है—विशेषत: जिस प्रकार तुम अपने तर्क को अजीब मोड़ दे देते हो। लेकिन यह समय नहीं है, अब इसके लिए समय नहीं है। मैं तो उधार के समय पर जीवित हूं। मैं तुम्हें केवल इतना ही बता सकता हूं कि मैं उसके आने से खुश हूं ओर मुझे इसकी भी खुशी है कि तुम दोनों मित्र बन गए और एक दूसरे के प्रति प्रेमपूर्ण हो गए—यही मैं चाहता था। शायद एक दिन तुम इस पुरानी परंपरा की सचाई को समझ सकोगे।'

इस परंपरागत विचार के अनुसार जब तक भावी बुद्ध का उसके बचपन में तीन समाधिस्थ व्यक्ति पहचान न लें तब तक उसका बुद्ध बनना असंभव सा है। पागल बाबा तुम सही थे। अब मुझे मालूम हो गया है कि यह केवल रूढ़िगत विचार नहीं है। किसी के बुद्धत्व को पहचाने से उसको बड़ी सहायता मिलती है। विशेषत: पागल बाबा या मस्तो जैसे आदमी जब तुम्हें पहचान लें और तुम्हारे पैर छुएँ।

मैं उनको मस्तो ही कहता रहा, क्योंकि पागल बाबा ने कहा था कि उसको फिर कभी मस्त बाबा न कहना। वह बुरा मान जाएगा। मैं उसको मस्तो कहता था और अब से तुम्हें भी उसे यही कहना होगा।

अब दृश्य भी देखने जैसा होता था। जिस आदमी का आदर सैकड़ों लोग करते थे उसको एक बच्चा मस्तो कह कर पुकारता था। और सिर्फ यही नहीं, मैं जो भी कहता वे तत्क्षण वही करते। उदाहरण के लिए, एक बार वे भाषण दे रहे थे। मैंने उठ कर कहा, मस्तो, तुरंत बंद करो।‘ वे एक वाक्य के बीच में थे, उन्होंने उसे पूरा भी नहीं किया और बीच में बोलना बंद कर दिया। लोगो ने उन से आग्रह किया कि वे अपनी बात को पूरा करें, लेकिन उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने मेरी और इशारा किया। मुझे माइक्रोफोन पर जाकर लोगों से कहना पडा कि अब वे अपने घर जाएं, क्योंकि भाषण समाप्त हो गया है। और मस्तो मेरे कब्जे में है।

वे खूब हंसे और मेरे पैर छुए। और उनका मेरे पैरों को छूना...हजारों लोगों ने मेरे पैर छुए होंगे, लेकिन उनका अपना ही अनोखा तरीका था। वे तो मेरे पैरो कोक इस प्रकार छूते थे मानो साक्षात परमात्मा उनके सामने खड़ा हो। उनकी आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगती और उनके लंबे बाल.....उनको दुबारा बैठाने में मुझे उनकी मदद करनी पड़ती ।

मैं उनसे कहता, मस्तो,.... अब बहुत हो चुका बस करों। लेकिन वहां सुनता कौन, वे या तो रोते, गाते या किसी मंत्र का जाप करते। मुझे तब तक इंतजार करन पड़ता जब तक वे अपना इस प्रकार का कार्यक्रम समाप्त न कर देते। कभी- कभी तो मुझे आधे घंटे तक बैठना पड़ता केवल यह कहने के लिए कि अब बस करो। लेकिन यह भी तो तभी कह सकता था। जब उनके भावों की अभिव्यक्ति समाप्त हो जाती। अखीर मैं भी तो शिष्टाचार जानता हूं। जब हवे अपने हाथों से मेरे पैरों को पकड़े रहते तो मैं उस समय सीधे यह तो नहीं कह सकता था, बस, अब मेरे पैर छोड़ दो। सच तो यह है कि मैं कभी नहीं चाहता था कि वे उन्हें छोड़े, लेकिन मुझे और भी कई काम करने होते थे। और उन्हें भी। यह व्यावहारिक दुनिया है। यद्यपि मैं हमेशा बहुत अव्यवहारिक हूं। पर जहां तक लोगों का सवाल है, मैं अव्यावहारिक नहीं हूं। मैं हमेशा बहुत ही व्यावहारिक हूं, जब बीच में बोलने का मुझे मोका मिल जाता तो मैं कहता, मस्तो, बस करो, काफी हो गया। रो-रो कर अपनी आंखों को लाल कर रहे हो। और अपने बालों को तो देखो, मिटटी से लथपथ हो रहे है। मुझे उनको धोना पड़ेगा।‘

तूम लोग जानते हो कि भारत की धूल ओमनीप्रजेंट है, हर जगह मौजूद रहती है—खास कर गांव में। सब कुछ धूल से सना हुआ होता है। लोगों के चेहरे भी मटमैले हो जाते है। वे भी क्या कर सकते है। कितनी बार को धोएं। अब एक राज कि बात बताऊ—किसी से कहना मत—यहां भी, एयरनकंडीशंड़ कमरे में रहते हुए जहां कोई धूल नहीं होती, मैं जब भी बाथरूम में जाता हूं तो पुरानी आदत के अनुसार अपना मुहँ धो लेता हूं। यहां तो मुहँ धोने कि जरूरत नहीं है। लेकिन एक दिन में कई बार अपना मुहँ धो लेता हूं। बस एक पुरानी भारतीय आदत है। भारत में तो इतनी धूल होती है। कि मैं बार-बार बाथरूम में मुंह धोने जाता था। मेरी मां मुझसे कहती, ऐसा लगता है कि हमें तुम्हारे कमरे में ही बाथरूम बना देना चाहिए। ताकि तुम्हें बार-बार पूरे घर में से गुजर कर नजाना पड़े। तुम करते क्या हो, उनसे कहता: ‘ यहां इतनी धूल है। मैं सिर्फ अपना मुँह धोता हूं।

मैंने मस्तो से कहा: ‘ मुझे तुम्हारे बाल धोने पड़ेंगे। और मैं उनके बाल धोया करता था। उनके बाल बहुत सुंदर थे और मुझे सुंदरता से प्रेम है। जिस मस्तो के आने के बारे में पागल बाबा इतने चिंतित थे। वे तीसरे जाग्रत पुरूष थे। बाबा चाहते थे कि तीन जाग्रत व्यक्ति एक छोटे से असंबुद्ध बच्चे के पैर छुएँ। और वे इसमें सफल हुए।

पागलों का अपना ही ढंग होता है। उन्होंने इसका इंतजाम अच्छी तरह से कर लिया। उन्होंने संबुद्ध जनों को राज़ी कर लिया एक ऐसे लड़के के पैर छूने के लिए जो संबुद्ध नहीं था।

मैंने उनसे पूछा: ‘क्या आप नहीं सोचते कि यह कुछ हिंसात्मक है।‘

उन्होंने कहा: ' बिलकुल नहीं। वर्तमान को भविष्य के प्रति अर्पित होना चाहिए। और अगर एक संबुद्ध व्यक्ति भविष्य में न देख सके तो वह संबुद्ध नहीं है। यह किसी पागल आदमी के दिमाग का विचार नहीं है। उन्होंने कहा, यह एक अत्यंत आदरणीय और प्राचीन मान्यता है।

बुद्ध ने जब जन्म लिया और जब वे केवल चौबीस घंटे के थे तो एक संबुद्ध व्यक्ति उनके पास पहुंचा और उसने रोते हुए उस बच्चे के पैर छुए। गौतम बुद्ध के पिता को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ, उनको अपने आंखों पर विश्वास नही हो रहा था। क्योंकि यह व्यक्ति बहुत प्रसिद्ध था। और बुद्ध के पिता भी उसके पास जाते थे। वे सोच रहे थे कि क्या इस आदमी का दिमाग खराब हो गया है। जो यह चौबीस घंटे पहले पैदा हुए बच्चे के पैर छू रहा है। बुद्ध के पिता ने उनसे पूछा, क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं कि आप इस छोटे से शिशु के पैर क्यों छू रहे है। '

उस संबुद्ध व्यक्ति ने कहा: मैं इसके पैर छू रहा है, क्योंकि में इसकी भावी संभावना को देख सकता हूं। अभी तो यह कली है, लेकिन जल्दी ही यह पूर्ण विकसित कमल बन जाएगा।'

और बुद्ध के पिता—शुद्धोधन उनका नाम था—ने उनसे पूछा, तो आप रो क्यों रहें हे। अगर यह कमल खिलने बाला है। तो आपको तो इसके लिए खुश होना चाहिए।

उस वृद्ध व्यक्ति ने कहा: मैं इसलिए रो रहा हूं, क्योंकि जब यह कमल बनेगा, तब में नहीं रहूंगा।'

हां, किसी खास क्षणों में बुद्ध पुरूष भी रो पड़ते है। विशेषत: उन क्षणों में जब वे किसी बच्चे कि बुद्ध बनने की संभावना के साथ यह भी देख लेता है कि जब यह अद्‌भुत घटना-घटेगी तो उस समय तक उनकी मृत्यु हो चुकी होगी। यह निश्चित ही कठिन है। यह तो अंधकारपूर्ण रात्रि के उस प्रहर जैसा है जब पक्षियों का गान सुनाई देने लगा है, सूर्योदय होने वाला है, क्षितिज पर थोड़ा सा उजाला भी दिखाई दे रहा है.....लेकिन एक और सुबह को देखने से पहले ही तुम्हें मर जाना है।

निशचित ही बुद्ध के पैरों को पकड़ कर रोने वाला वृद्ध व्यक्ति ठीक ही था। मैं यह अपने अनुभव से जानता हूं। आज तक मैं जितने लोगों से मिला हूं उसमें से सबसे अधिक महत्वपूर्ण ये तीन है। और मैं नहीं सोचता कि मैं इन तीन से अधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति से कभी मिलूंगा।

अपनी समाधि के बाद मैं अन्य संबुद्ध लोगों से भी मिला हूं, लेकिन वह दूसरी कहानी है। मैं अपने उन शिष्यों से भी मिला हूं। जिनको संबोधी प्राप्त हो चुकी है। लेकिन वह भी दूसरी कहानी है। विचित्र सौभाग्य की बात तो यह है कि मैं उस समय पहचाना गया जब मैं बच्चा ही था और सब लोग मेरे विरूद्ध थे। मेरे परिवार सदा मेरे विरूद्ध था। हां, इसमें मैं अपने माता पिता आरे भाईयों को सम्मिलित नहीं करता। लेकिन मेरा परिवार बहुत बड़ा था और वे सब मेरा विरोध करते थे। मैं उनकी बात समझ सकता हूं। एक प्रकार से वे सही थे, क्योंकि वे समझते थे कि मैं पागलों जैसा व्यवहार करता हूं और इसकी चिंता थी।

उस छोटे से शहर का हर आदमी मेरे पिताजी से मेरी शिकायत करता था। मुझे यह तो मानना पड़ेगा कि उनमें असीम धैर्य था। उनको चौबीस घंटे मेरे बारे में शिकायतें सुननी पड़ती। हर दिन-रात, कभी-कभी तो आधी रात को भी कोई न कोई आकर उनसे कहता कि मैंने क्या गलत काम किया है। और मैं सदा वहीं काम करता जो मुझे नहीं करना चाहिए था। कभी-कभी तो मुझे भी अपने आप पर ताज्जुब होता कि कैसे मैं वहीं करता हूं जो मुझे नहीं करना चाहिए। क्योंकि गलती से भी कभी मुझसे कुछ ठीक तो होता ही नहीं था।

मैंने एक बार पागल बाबा से पूछा: 'शायद आप मुझे यह बता सकें। अगर मैं पचास प्रतिशत ठीक काम करूं और पचास प्रतिशत गलत काम करूं तो यह बात समझ सकता हूं, लेकिन मैं तो शत प्रतिशत गलत काम करता हूं। मुझे नहीं मालूम कि मैं यह कैसे करता हूं। क्या आप मुझे यह समझा सकते है।

पागल बाबा हंसे और उन्होंने कहा: ‘ तुम बहुत अच्छी तरह से इसकी व्यवस्था करते हो। काम करने का यही तरीका है। दूसरे क्या कहते है, तुम इसकी परवाह मत करो। तुम तो अपने ढंग से चलते रहो। सब शिकायतों को सुनो और अगर तुम्हें सज़ा मिले, तो उसे भी खुशी-खुशी स्वीकार कर लो, उसका भी मजा है।‘

और मैं सचमुच सज़ा को भी मजे सह भोग लेता था। जब मेरे पिताजी ने देखा कि मैं सज़ा का भी पूरी तरह से मजा ले लेता हूं तो उन्होंने मुझे सज़ा देनी बंद कर दी। उदाहरण के लिए, उन्होंने एक बार मुझसे कहा ,इस ‘इमारत के सात चक्कर लगाओ।‘ तेजी से दौड़ों और वापस आओ। तो मैंने उनसे पूछा: ‘ क्या मैं सत्तर चक्कर लगा सकता हूं। सुबह का समय इतना सुहावना है।‘ मैंने उनके चेहरे की और देखा। वे सोच रहे थे कि वे मुझे सज़ा दे रहें है। और मैंने सचमुच सत्तर चक्कर लगाए। धीरे-धीरे उनकी समझ में आ गया कि मुझे सजा देना कठिन है। क्योंकि मैं उसका मजा लेता। पिताजी को मेरे कारण अनावश्यक बहुत परेशानी हुई। इसलिए मुझे उनसे बहुत सहानुभूति थी।

मुझे लंबे बाल रखने का बहुत शौक था और सिर्फ यही नहीं मैं पंजाबी ड्रेस पहनता था। ये कपड़े उस इलाके में नहीं पहने जाते थे। हमारे गांव में कुछ गायक आए थे। उन्होंने यह पंजाबी ड्रेस पहना हुआ था। यह ड्रेस मुझे बहुत पसंद आई। मेरा तो खयाल यह है कि भारत में सबसे सुंदर पोशाक यही है। मुझे सलवार-कुर्ता पहने हुए और लंबे बालों के साथ देख कर लोग समझते कि मैं लड़की हूं।

और मैं दिन भर पिताजी की दुकान में से घर के भीतर आता-जाता रहता। लोग पिताजी से पूछते, ‘यह लड़की किसकी हे। इसने कैसे कपड़े पहने हुए है। यह सुन कर मेरे पिताजी को बहुत बुरा लगता। मुझे तो इसमें कोई बुराई दिखाई नहीं देती कि कोई आपके लड़के को लड़की समझ बैठे। लेकिन इस पुरूष प्रधान समाज में मेरे पिताजी का मुझसे नाराज होना स्वाभाविक था। उन्होने झल्ला कर मुझसे कहा: ‘सुनो,यह कलवार-कुर्ता पहनना बंद करो। ये औरतों जैसे कपड़े है। और अपने इन बालों को भी काट दो, नहीं तो मैं खूद ही इन्हें काट दूँगा।

मैंने उनसे कहा: ‘आप मेरे बाल काट कर पछताओगे।‘

उन्होंने कहा: ‘क्या मतलब है तुम्हारा।‘

मैंने कहा: ‘ मैंने कह दिया है। अब आप खुद सोच लो और पता लगा लो कि मेरा क्या मतलब है। आप पछताओगे।‘

वे बहुत नाराज हो गए। केवल इस बार ही मैंने उन्हें इतने गुस्से में देखा था। उनकी कपड़ों की दुकान थी और कपड़ा काटने के लिए वहां पर कैंची तो रहती ही थी। वे दुकान से कैंची ले आए और मेरे बालों को काट दिया और कहा: ‘अब नाई के पास जाकर इनको ठीक करवा लो—नहीं तो कार्टून जैसे दिखाई दोगे।‘

मैंने कहा: ‘ मैं तो जाऊँगा, लेकिन आप पछताओगे।‘

उन्होंने कहा: ‘अब इसका क्या मतलब है।‘

मैंने कहा: ‘मैं क्यों समझाऊं ।यह आपका ही किया हुआ है। आप सोचो, किसी काक कुछ समझाने की मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं है। आपने मेरे बाल काटे है और आप ही पछताएंगे।‘

मैं उस नाई के पास गया जो अफीमची था। मैंने उसको चुना, क्योंकि वही एक ऐसा नाई था जो मेरा कहना मानता। दूसरा कोई इसके लिए तैयार न होता। असल में बात यह है कि भारत में बच्चे का सिर तब मुड़वाते है जब उसका बाप मर जाता है। मैं इस अफीमची के पास गया, उससे मेरा बहुत प्रेम था। उसका नाम नत्थू था। मैंने उससे कहा: ‘ नत्थू क्या तुम मेरे बाल घोंट दोगे। मेरा सिर सफाचट कर दोगे।‘

उसने कहा: हां, हां, हां, --तीन बार।

मैंने कहा: 'वाह, एक बात को तीन बार कहने का ढंग तो बुद्ध का है। अच्छा अब घोट दो। और उसने मेरे सारे बाल काट दिए, सिर घोट दिया।'

जब मैं घर आया तो मुझे देख कर पिताजी को विश्वास नहीं हुआ। मैं बौद्ध भिक्षु जैसा दिखाई दे रहा था। बौद्ध भिक्षु और हिन्दू संन्यासी में यही भेद है। कि हिंदू संन्यासी अपने सारे बाल मुंडवा देता है। लेकिन जहां सहस्त्रार है, जहां सातवां चक्र है। वहां वह थोड़े से बाल रख छोड़ता है। ताकि कड़ी धूप से वह सुरक्षित रहे। लेकिन बौद्ध भिक्षु अधिक हिम्मत वाला है। वह सारे बाल काट देता है। अपने सिर को पूरी तरह से मुंडवा देता है।

मेरे पिताजी ने कहा: 'यह तुमने क्या किया, क्या तुम्हें मालूम है कि इसका मतलब क्या है। अब मेरे लिए पहले से भी ज्यादा मुसीबत खड़ी हो जाएगी। सब लोग पुछोगे कि क्या इस बच्चे का पिता मर गया है जो इसको अपना सर मुँड़वाना पड़ा।

मैंने कहा: अब यह आप जानो। मैंने तो कहा था आप पछताएंगे।'

और उन्हे कई महीने तक पछताना पडा। क्योंकि मैंने अपने सिर के बालों को उगने ही नहीं दिया। और लोग उनसे पूछते रहे कि क्या बात हे। क्या करण है।'

नत्थू हमेशा वहां होता था और वह बहुत प्यारा आदमी था। जब भी मैं जाऊँ और उसकी कुर्सी खाली होती मैं उस पर जाकर बैठ जाता और कहता,नत्थू, फिर से काट दो।' तो जो थोड़े-बहुत बाल उगे होते उनको वह काट देता। उसने मुझसे कहा: मुझे सिर घोटने में बड़ा मजा आता है। ये बेवकूफ लोग मुझसे आकर कहते है। हमारे बाल ऐसे काटो, वैसे काटो, इस स्टाइल में या उस स्टाइल में सब बकवास करते है। सबसे अच्छा स्टाइल तो यही है। न मुझे कोई चिंता करनी पड़ती है, न तुम्हें। बस सिर सफाचट हो जाता है....संतों जैसा।

मैंने कहा: ' हां, तुमने बिलकुल ठीक कहा—बिलकुल साधु-सन्यासी जैसा। पर क्या तुम्हें मालूम है कि अगर मेरे पिता को मालुम हो गया तुम मेरा सर मूँड़न कर रहे हो तो तुम मुसीबत में पड़ोगे।

उसने कहा: 'तुम चिंता मत करो। सब जानते हे कि मैं अफीमची हूं, मैं कुछ भी कर सकता हूं। गनीमत है कि मैंने तुम्हारा सिर नहीं काट दिया। और हंस पडा।

मैने कहा: ये अच्छी बात है, अगली बार जब अगर मैं अपनी सिर कटवाना चाहूंगा तो मैं तुम्हारे पास आऊँगा। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है।

उसने कहा: हां, मेरे बेटे, हों मेरे बेटे, हां मेरे बेटे।'

शायद अफीम के कारण वह हर बात को ती बार कहता था। शायद तभी वह अपनी उस बात को सुन सकता था जो वह कह रहा था।

लेकिन मेरे पिताजी ने सबक सीख लिया। उन्होंने मुझसे कहा: 'मैं बहुत पछता चुका हूं। अब दुबारा मैं ऐसा कभी नहीं करुंगा।' और उन्होंने कभी नहीं किया। उन्होंने अपना वादा पूरा किया। यही एक ऐसा मौका था जब उन्होंने पहली और अखीरी बार मुझे सज़ा दी थी। मुझे भी इस पर विश्वास नहीं होता था, क्योंकि मैं बहुत ज्यादती करता था। बहुत शैतानी करता था। लेकिन वे बहुत धैर्यपूर्वक सब शिकायतों को सुनते और मुझे कभी कुछ नहीं कहते। सच तो यह है के वे सदा मुझे बचाने की पूरी कोशिश करते।

एक बार मैंने उनसे पूछा मुझे सज़ा न देने का वायदा किया है, लेकिन मुझे बचाने को तो वादा नहीं किया। मुझे बचाने की तो कोई जरूरत नहीं है।

उन्होंने कहा: तुम इतने शैतान हो कि अगर मैं तुम्हें न बचाऊ तो मुझे नहीं लगता कि तुम बच पाओगें। कोई भी, कहीं भी तुम्हें मार डालेगा। मुझे तुम्हारी रक्षा करनी ही पड़ेगी। उपर से बाबा भी हमेशा मुझसे कहते

है कि हमें इस बच्चे की सुरक्षा का सदा ध्यान रखना चाहिए। मैं उनसे प्रेम करता हूं, उनका आदर करता हूं। अगर उन्होंने तुम्हारी सुरक्षा करने के बारे में कहा है तो वे ठीक ही कहते होगें। पागल बाबा गलत नहीं हो सकते। सारा गांव गलत हो सकता है, मैं गलत हो सकता हूं। लेकिन वे गलत नहीं हो सकते।

और मुझे मालूम है कि पागल बाबा सबको,मेरे अध्यापकों और मेरे रिश्तेदारों को बार-बार कहते थे। कि इस बच्चे का ध्यान रखो, इसे सुरक्षित रखो। यहां तक कि मेरी मां को भी मुझे सुरक्षित रखने को कहा जाता था। मुझे अच्छी तरह से याद है कि इसके बारे में उन्होंने केवल मेरी नानी से कुछ नहीं कहा। यह इतना साफ था कि अपवाद था कि मुझे उनसे पूछना पडा कि आप कभी मेरी नानी से मुझे सुरक्षित रखने के बारे में क्यों कुछ नहीं कहते।

उन्होंने कहा: इसकी कोई जरूरत नहीं है। तुम्हारी रक्षा के लिए तो वह अपनी जान पर भी खेल जाएगी। वह तो मुझसे भी लड़ पड़ेगी। मेरा उस पर पूरा विश्वास है। तुम्हारे परिवार में केवल वही एक है जिससे मुझे तुम्हारी सुरक्षा के बारे में कुछ कहने की जरूरत नहीं है।

उनकी अंतर्दृष्टि पारदर्शी था, हां। कुछ ऐसी आंखें भी होती है जो मनुष्य द्वारा निर्मित उस धुंध के पार भी देख सकती है जिसमें वह अपने आपको छिपा लेता हे।

सत्र—32 भगवान—मस्तो बाबा का उद्घोष

मुझे सदा यह हैरानी होती है कि आरंभ से ही मेरे साथ कुछ ठीक हुआ है। किसी भी भाषा में ऐसा कोई मुहावरा नहीं है। कुछ गलत हो गया, जैसा मुहावरा तो पाया गया है। लेकिन 'कुछ ठीक हो गया' जैसा मुहावरा है ही नहीं। पर मैं भी क्या कर सकता हूं। जब से मैंने पहली श्वास ली है तब से अब तक सब ठीक चलता रहा है। आशा है कि आगे भी यह क्रम इसी प्रकार चलता रहेगा। उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा, क्योंकि यही उसका ढंग बन गया है।

न जाने कितने लोगों ने अकारण ही मुझसे प्रेम किया है। लोगों का आदर उनके गुणों या योग्यता के कारण होता है। लेकिन मुझे तो लोगों ने मैं जैसा हूं वैसा ही होने के कारण प्रेम किया है। सिर्फ अभी ही ऐसा नहीं है—इसीलिए मैं कह रहा हूं कि आरंभ से ही सब बातें पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार ठीक घटती रही हैं। अन्यथा कैसे सब सही होगा।

आरंभ से ही—और हर क्षण जो मैंने जिया है—ठीक से ठीक ही होता चला जा रहा है। इस पर केवल हैरान ही हुआ जा सकता है।

शायद मैं परमात्मा शब्द को एक नया अर्थ दे सकता हूं कि जब हमने कुछ किया नहीं, हममें को ई योग्यता नहीं, को ई पात्रता नहीं और फिर भी बिना किसी कारण के हमारे बावजूद हमारे साथ सब कुछ ठीक होता है।

निश्चित ही मैं ठीक व्यक्ति नहीं हूं। लेकिन फिर भी मेरे साथ सब ठीक ही होता रहा। आज भी मुझे विश्वास नहीं होता कि सारी दुनिया के इतने लोग मुझसे आकारण ही इतना प्रेम करते है। मेरी तो अपनी आंतरिक या बाहरी ऐसी कोई अपलब्धि नहीं है। कि जिसके कारण मैं आदर पा सकूं। मैं तो कुछ भी नहीं हूं, केवल शून्य हूं, शून्य।

जिस दिन मैंने विश्वविद्यालय की नौकरी छोड़ी उस दिन मैंने सबसे पहला काम यह किया कि सहज कर और संजो कर रखे गए अपने सारे सर्टिफ़िकेटों और डिप्लोमाओ को आग लगा दी। उनको जला दिया, और ये सब देख कर मैं इतना खुश हो रहा था कि मेरा परिवार वहां इक्ट्ठा हो गया, उन्होंने सोचा अब मैं पूरी तरह से पागल हो गया हूं। हमेशा ही सोचते थे कि में थोड़ा पागल हूं। उनके चेहरे देख कर मैं और भी अधिक जोर से हंसने लगा।

उन्होंने कहा: ' हां, आखिर हो ही गया।'

मैंने कहा: हां, आखिर हो ही गया।

उन्होंने कहा: हो ही गया से तुम्हारा क्या मतलब है।'

मैंने कहा: ' जिंदगी भी से मैं इस सर्टिफ़िकेटों के जालना चाहता था लेकिन जला नहीं सका, क्योंकि हमेशा उनकी जरूरत पड़ती थी। लेकिन अब इनकी कोई जरूरत नहीं है। अब मैं फिर से उतना ही अशिक्षित हो सकता हूं। जितना कि मैं जन्म के समय था।'

उन्होंने कहा: ' तुम बिलकुल बुद्धू हो , बिलकुल बुद्धू हो। बिलकुल पागल हो। तुमने इतने मूल्यवान सर्टिफ़िकेटों को जला दिया। तुमने सोने के मैडल को भी कुएं में फेंक दिया। अब विश्वविद्यालय में प्रथम आने के प्रमाणपत्र को भी तुमने जला दिया।

मैंने कहा: ' अब कोई भी उस सारी बकवास के बारे में मुझसे बात नहीं कर सकता।

आज भी मुझमें कोई विशेष गुण या योग्यता नहीं है। मैं हरि प्रसाद जैसा संगीतज्ञ नहीं हूं, न मैं नोबल पुरस्कार विजेताओं जैसा ही हूं। मैं तो बस कुछ भी नहीं हूं। फिर भी हजारों लोग बिना किसी अपेक्षा के मुझसे प्रेम करते है।

अभी उस दिन गुड़िया ने मुझे बताया कि जब मैं इस कुर्सी में बैठा हुआ था, आशीष मेरी दूसरी कुर्सी को ठीक कर रहा था। गुड़िया ने देखा कि वह बहुत रो रहा है। उसने आशीष को इस प्रकार आंसू बहाते कभी नहीं देखा था। तो उसने उससे पूछा कि बात क्या है, तुम क्यों रो रहे हो।

आशीष ने कहा: ' बात तो कुछ नहीं है। जरा देखो तो ओशो ने पाँच दिन तक किसी को यह नहीं बताया कि उनकी कुर्सी में से बदबू आ रही है। मैं ने इसको बनाया है इसलिए इसकी बदबू के लिए भी मैं ही जिम्मेवार हूं, मुझे अच्छी तरह से इसकी जांच करनी चाहिए थी। इसके हर हिस्से को अच्छी तरह से सूंघना चाहिए था। अब इसके लिए मुझे कौन क्षमा करेगा।'

आशीष को साधारण कारपैंटर नहीं है। उसने इंजीनियरिंग में पीएचडी. की डिग्री प्राप्त की है। वह उतना योग्य है जितना को ई हो सकता है। और यूं तो उस कुर्सी में कोई खास गड़बड़ भी नहीं है। अगर कुछ गड्ड है तो मुझमें है। जब मैंने उसके आंसुओं के बारे में सुना तो मुझ उन ढेर सारे लोगों की याद आई जिन्होंने मुझसे प्रेम किया है और मेरे लिए रोंए है—बिना किसी कारण के। और मैं कोई बहुत अच्छा आदमी भी नहीं हूं।

अगर तुम अच्छे बुरे लोगों को अलग-अलग करो तो मैं तो बुरे में ही गिना जाऊँगा। मुझे महात्मा गांधी, माओ जेडोंग, कार्ल मार्क्स, मदर टेरेसा, मार्टिन लूथर की पंक्ति में खड़ा नहीं किया जा सकता। और यह सूची लंबी है। जहां तक बुरे आदमियों का सवाल है, मैं अकेला ही हूं। कम से कम मैं किसी को इतना बुरा नहीं मान सकता। एडोल्फ हिटलर, मुसोलिनी, जौसेफ़ स्टेनली नह जो भी किया उसे वे अच्छा ही समझते थे, भले ही वह अच्छा न हो लेकिन इसमें उनका कोई दोष नहीं। ये सब मानसिक रूप से अपंग थे, रूग्ण मन के थे लेकिन बुरे नहीं थे। मैं किसी को इतना बुरा नहीं मान सकता। अगर मुझे गणना करनी पड़े तो मैं सुक़रात, जीसस, मंसूर और सरमद जैसे लोगों को याद करूंगा, वे लोग जिनको सूली पर चढाया गया था। कई प्रकार से दंडित किया गया था। लेकिन नहीं, मैं इनको भी नहीं गन सकता। वे अपने आप में अलग-अलग थे।

लोगों ने मुझे भी सज़ा देने की कोशिश की, लेकिन इसमें वे कभी सफल न हो सके। कन्तार मास्टर से लेकर मोरा जी देसाई तक ने मुझे सताने की भरपूर कोशिश की, लेकिन अंत में उन्हें मुंह की खानी पड़ी है। वे डाउन दि ड्रेन, नाली में चले गए जहां कि सच में उन्हें पहले से ही होना चाहिए था।

लेकिन यह बड़ी अजीब बात है, मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि आरंभ से ही मैं फूलों के रास्ते पर ही चला हूं। वे कहते है कि इसका विश्वास न करो। लेकिन मैं क्या कर सकता हूं। मैं उस रास्ते पर चला हूं और मुझे मालूम है। मैंने अपने जीवन के हर क्षण में आनंद का अनुभव किया है।

कल मैंने जिस अंतिम व्यक्ति का नाम लिया था वे ही मुझे ‘ दि ब्लेसिड वन ‘ भगवान कहने वाले प्रथम व्यक्ति वे। आज शाम मैं उनकी चर्चा को ही जारी रखूंगा। मस्त बाबा...मैं उनको सिर्फ मस्तो ही कहूंगा, क्योंकि यही उनकी इच्छा था कि मैं उन्हें मस्तो कह कर ही संबोधित करूं। मैंने उनको सदा मस्तो ही पुकारा, लेकिन मस्तो कहने में मैं थोड़ा झिझकता था और मैंने इस झिझक के बारे में उनको बताया भी था। पागल बाबा ने भी मुझसे यही कहा था कि अगर वह चाहता है कि तुम उसको मस्तो कह कर पुकारों, जैसा कि मैं उसे पुकारता हूं, तो तुम वैसा ही करो। नहीं तो उसे दुःख होगा। मेरे मरने के बाद उसके लिए मेरा स्थान तुम ले लोगे।

और उस दिन पागल बाब मर गए। और मुझे उनको मस्तो कहना ही पडा। उस समय मैं बारह वर्ष से अधिक आयु का नहीं था और मस्तो पैंतीस वर्ष के या उससे भी अधिक के थे। एक बारह वर्ष के लड़के के लिए

किसी कि उम्र का ठीक-ठीक अंदाज लगाना बहुत मुशिकल है। फिर पैंतीस वर्ष की आयु सदा भ्रम में डाल देती है, वह व्यक्ति तीस का हो सकता है। या चालीस का। यह सब उसके जेनेटिक्स पर निर्भर करता है।

अब यह बहुत ही उलझा हुआ मामला है। मैंने ऐसेपुरूषों को देखा है जो साठ साल के है, पर उनके बाल अभी भी काले है। यह कोई बड़ी बात नहीं है। इस उम्र में औरतों के भी बाल ऐसे ही होते है। ऐसे पुरूष वास्तव में औरत बनने बाले थे। लेकिन गलती से ऐसी ही गया। यह सारा खेल तो केमिस्ट्री का है। औरतों की बायों केमिस्ट्री पुरूषों से अलग है। इसलिए उनके बाल पुरूषों के बालों की तरह जल्द सफेद नहीं होते। शायद ही कोई औरत गंजी होती है। किसी गंजी औरत को खोजना बड़ा सुंदर होगा। अपने सारे जीवन में मैंने केवल एक ही औरत को देखा है जो गंजी हो रही था—यह दस बरस पहले की बात है। शायद अब तक तो वह पूरी तरह से गंजी हो गई होगी।

औरतें क्यों गंजी होती है। कोई खाल कारण नहीं है। शरीर मरे हुए कोशाणुओ को बालों के रूप में बाहर फेंक देता है। अब स्त्रियों के दाढ़ी या मूँछें तो होती नहीं—उनके शरीर की थोड़ी सी जगह में ही बाल उगते है। कोई भी पुरूष अपने बालों को उतना नहीं बढा सकता जितना स्त्री बढा सकती है। क्योंकि उसकी क्षमता विभक्त है। और प्रकृति ने स्त्री की औसत उम्र को पुरूष की औसत उम्र से दस वर्ष अधिक रखा है।

एक बात और है, पैंतीस साल की आयु में पुरूष की यौन-ऊर्जा अपनी चरम सीमा पर होती है। पुरूषों के दिल को ठेस न पहुँचे इसलिए में ऐसा कहा रहा हूं। सच तो यह है कि अठारह वर्ष की आयु में ही उसकी यौन-शक्ति चरम बिंदु पर होती है। उसके बाद तो उतार शुरू हो जाता है। इसको यूं भी कहा जा सकता है कि पैंतीस वर्ष में उसके अंत का आरंभ शुरू होता है। उसी समय पुरूष को यह महसूस होता है कि अब सह समाप्त हो गया। पैंतीस और चालीस वर्ष के बीच में पुरूष आध्यात्मिक बन जाता है। इस उम्र में वह निरर्थक चीजों से प्रभावित हो जाता है। वास्तविक कारण यह है कि उसकी यौन-शक्ति क्षीण होने लगती है। इसीलिए उसका ध्यान परमात्मा के सर्वशक्तिमान होने की और जाता है।

क्या शब्द गढ़ा है—ओमनीपोटेंस, सर्वशक्तिमान। इस दुनिया के सर्वाधिक नपुंसक पुरूष ने ही सबसे सर्वशक्तिमान शब्द को गढ़ा होगा। उस समय ये पुरूष थियोसॉफिकल सोसाइटी या जेहोवा के सदस्य बनने लगते है। पैंतीस और चालीस के बीच की आयु बाले पुरूष किसी भी संस्था के सदस्य बनने को तैयार हो जाते है। क्योंकि उस समय उन्हें किसी ऐसे सहारे की आवश्यकता होती है जो उन्हें यह दिलासा दिलाए कि वे अभी जीवित है। बस इसी समय उनको गिटार, सीरत या बांसुरी बजाने की सूझती है। और अगर कोई पैसे वाला है तो वह गोल्फ खेलने लगता है। अगर कोई बहुत अमीर है तो वह बीयर पीने लगता है। या ताश खेलने लगता है। इस दुनिया में हजारों लोग हर वक्त ताश खेल रहे है।

किसी तरह कि दुनियां में हम रह रहे है। ताश के राजा, रानी और जोकर उनके लिए सब कुछ है। अब तो संसार में ताश के ही राजा-रानी बचे है या इंग्लैंड की महारानी बच गई हैं, जो न तो वास्तविक रानी है। न ताश की ही रानी है, उससे भी बदतर है।

मैं क्या कह रहा था।

आप मस्तो के बारे में बता रहे थे....उसे हमेशा मस्तो कहते थे।

मस्तो, अच्छा।

वह राजा था—ताश का राजा नहीं, इंग्लैंड का राजा भी नहीं। सचमुच राजा। इसे सिद्ध करने के लिए और किसी चीज की जरूरत नहीं थी। उसको देखते ही पता चल जाता था बड़ी अजीब बात है। कि सबसे पहले उसने ही मुझे दि ब्लेसिड वन, भगवान कहा था।

जब उसने मुझे भगवान कहा, तो मैंने कहा: मस्तो, क्या तुम पागल बाबा की तरह पागल हो गए हो या तुम्हारा पागलपन उससे भी बढ़ गया है।

उन्होंने कहा: ‘ याद रखना, इस क्षण से मैं तुम्हें भगवान ही कहूंगा। हजारों लोग तुम्हें भगवान कहेंगे,लेकिन तुम्हें पहली बार भगवान कहने वाला प्रथम व्यक्ति मैं हूं। और इसका श्रेय मुझे मिलना चाहिए।

हम दोनों गले लग कर खूब रोंए। वह हमारी अंतिम भेंट थी। मेरे उस अनुभव के ठीक एक दिन पहले। बाईस मार्च उन्नीस से तिरपन के दिन को हमने एक-दूसरे का आलिंगन किया बिना यह जाने कि यह हमारा अंतिम मिलन है। शायद उनको मालूम था, लेकिन मुझे इसका कोई आभास नहीं था। अपनी सुंदर आंखों में आंसू भर कर उन्होंने मुझे बताया।

अभी उस दिन मैंने चेतना से पूछा: चेतना मेरा चेहरा कैसा दिखाई दे रहा है। उसने कहा: क्या, मैंने कहा: मैं इसलिए पूछ रहा हूं क्योंकि मैंने कई महीनों से सिवाय फलों के और कुछ भी नहीं खाया। हां, कुछ दिन देवराज का मिश्रण भी खाया है। मुझे यह नहीं मालूम कि उसमें क्या-क्या डाला गया है। लेकिन इसके बारे में यही कहा सकता हूं, कि उसको खाने के लिए दृढ़ संकल्प की जरूरत है। आधे घंटे तक तो इसको चबाना पड़ता है। लेकिन यह है तो बहुत अच्छा, जब तक मैं इसे खाना समाप्त करता हूं तब तक मैं इतना थक जाता हूं, इतनी थक जाता हूं कि मुझे नींद आने लगती है। इसीलिए मैं पूछ रहा था।‘

उसने कहा: ‘ ओशो, जब आप मुझसे पूछ ही रहे है, तो क्या मैं सच बोल सकती हूं

मैने कहा: ‘ हां, बिलकुल सच ही कहना।‘

उसने कहा: ‘ जब मैं आपको देखती हूं तो मुझे सिवाय आपकी आंखों के और कुछ भी दिखाई नहीं देता। इसीलिए कृपा करके मुझसे मत पूछिए। मुझे मालूम नहीं है कि आप पहले कैसे दिखाई देते थे। या अब कैसे दिखाई देते है। बस मुझे तो केवल आपकी आंखों के बारे में मालूम है।‘

मुझे इस बात का बहुत अफसोस है कि मैं तुम्हें मस्तो को नहीं दिखा सकता। उसका तो सारा शरीर ही सुंदर था। ऐसा लगता था जैसे कि वह देवलोक से आया हो भारत में बहुत सी सुंदर कहानियां प्रचलित है। ॠग्वेद में एक कहानी पुरुरवा और उर्वशी की है।

उर्वशी एक ऐसी अप्सरा है जो स्वर्ग लोक के सुखों से ऊब चुकी है। मुझ यह कहानी बहुत प्रिय है,क्योंकि यह सच है। अगर तुम्हारे पास सब सुख सुविधाएं हो तो कब तक तुम उनका उपभोग कर सकते हो। एक न एक दिन तो ऊब ही जाओगे। यह कहानी किसी ऐसे आदमी ने लिखी है जो इस बात को अच्छी तरह से जानता था।

उर्वशी सब तरह से सुखों देवताओं के भोग-विलास और उनके प्रेम से बुरी तरह से ऊब गई। अंत में जब वह प्रमुख देवता इंद्र के पास थी, उसने इस अवसर का फायदा उठाया, सब स्त्रीयां ऐसा ही करती है। ठीक समय को देख कर वे कभी घड़ी की फरमाइश करती है। और कभी हीरे की अंगूठी की या हार की।

आशु, तुम क्या सोच रही हो, क्या तुम्हें मालूम है। हाँ तुम हंसती हो क्योंकि मैं जानता हूं। तुम्हीं बता दो, नहीं तो मै ही यह बता दूँगा। और तुम इतनी खुशी से हंस रही हो, मैं उसे नष्ट करना पसंद नहीं करूंगा।

उर्वशी इंद्र से कहती है, अगर आप मुझसे इतने खुश है तो क्या आप मुझे एक छोटा सा उपहार देंगे। अधिक नहीं, बहुत ही छोटा सा। इंद्र ने कहा: माँगों, तुम क्या माँगती हो, तुम्हें मिल जाएगा। उर्वशी ने कहा: मैं धरती पर जाकर साधारण मनुष्य से प्रेम करना चाहती हूं।‘

इंद्र तो मदिरा के नशे में पूरी तरह डूबा हुआ था। तुमने देखा हो गा कि भारतीय देवता ईसाई परमात्मा जैसे नहीं है। ईसाई पादरियों जैसे नहीं है। परमात्मा की क्या बात। ईसाइयत तानाशाही धर्म है। हिंदू धर्म अधिक प्रजातांत्रिक है और अधिक मानवीय भी है।

नशे में धुत इंद्र कहता है, अच्छा, जैसा तुम चाहती हो वैसा ही होगा। लेकिन एक शर्त है—जैसे ही तुम उस आदमी को बताओ गी कि तूम अप्सरा हो, वैसे ही तुम्हे वापस स्वर्ग में आना पड़ेगा।

उर्वशी धरती पर आती है और पुरुरवा के प्रेम में पड जाती है। पुरुरवा बहुत कुशल धनुर्धर और कवि है। और उर्वशी इतनी सुंदर है कि पुरुरवा उससे विवाह करना चाहता है।

उर्वशी ने कहा: विवाहा की तो बात ही मत करो। वादा करो कि तुम इस बात को दुबारा नहीं करोगे। तभी मैं तुम्हारे साथ रह सकती हूं। और पुरुरवा, एक कवि उर्वशी जैसी औरत का सौंदर्य समझता है। उसने ऐसा सौंदर्य कभी नहीं देखा। वह तो धरती पर उतरी हुई देवांगना थी। उसके अनुपम रूप, नशीले सौंदर्य के कारण वह उससे यह वादा कर देता है। फिर उर्वशी कहती है। एक और बात कि तुम मुझसे कभी यह नहीं पुछोगे के मैं कौन हूं। अन्यथा हम अभी से ही सब भूल जाएं, कुछ शुरू करना ही ठीक नहीं है। पुरुरवा कहता है: मैं तुमसे प्रेम करता हूं। मुझे यह जानने की कोई आवश्यकता नहीं है कि तुम कौन हो। मैं कोई अन्वेषक थोड़े ही हूं। इन दोनों वायदों के बाद उर्वशी पुरुरवा के साथ रहने लगती है। कुछ दिनों के बाद ...एक तरह से वेद बहुत ही मानवीय है, और कोई शास्त्र इतना मानवीय नहीं है। सभी दूसरे शस्त्र शब्दों के आडंबर से या दूसरे शब्दों में गोबर से भरे हुए है। जैसा कि हर प्रेम-प्रसंग, हर हनीमून के आरंभ और अंत होता है। पश्चिम में शायद थोड़ा जल्दी अंत आ जाता है बजाए भारत के। इसलिए इन प्रेमियों को छह महीने लगते है। अमरीका में हनीमून के आरंभ और अंत के लिए एक सप्ताह काफी है। और जब हनीमून समाप्त हाता है तो विवाह शुरू होता है। जीसस, और तुम कहते हो कि जो पास करते है वे मृत्यु के बाद नरक में जाते है...यह तो हनीमून के बाद की बात है। सच में तो यह विवाह है...भारत में छह महीने लगते है......बैलगाड़ी की गति से समाप्त होता है।

एक रात उर्वशी सोई हुई थी। उसकी आंख खुली और उसने पुरुरवा को अपनी और देखते हुए पाया। अब पति को तो ऐसा नहीं करना चाहिए। क्या कोई अपनी पत्नी को ऐसे देखता है। वह सोई हुई थी और वह उसे एकटक देख रहा था। अगर वह किसी और की पत्नी होती तब तो ठीक था। लेकिन अपनी ही पत्नी को देखना। लेकिन उर्वशी का सौंदर्य निशचित ही दिव्य रहा होगा, वह तो दूसरे लोक की ही थी। पुरुरवा से रहा न गया और उसने हैरान होकर उससे पूछ ही लिया कि तुम कौन हो। उर्वशी न कहा: पुरुरवा, तुमने अपना वादा तोड़ा दिया है। मैं तुम्हें सच बात अवश्य बता दूंगी, लेकिन अब मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूंगी। जिस क्षण उसने उसे बताया कि वह स्वर्ग से ऊबी हुई देवांगना है और वह धरती पर वास्तविक लोगों का अनुभव लेने आई थी। क्योंकि देवता तो बहुत नकली, झूठे थे। उसी क्षण वह एक सुंदर सपने की तरह गायब हो गई। पुरुरवा ने बार-बार उस खाली बिस्तर को टटोल कर देखा,लेकिन वहां पर कोई न था। मुझे जो कहानियां बहुत प्रिय है, उनमें से यह एक है।

मस्तो भी इस जगत में देवलोक से आया हुआ को देवता ता। उसने अवर्णनीय सौंदर्य को बताने का यही एक मात्र तरीका है। उसके शारीरिक सौंदर्य का तो कहना ही क्या। लेकिन यह सिर्फ शारीरिक सौंदर्य की बात नहीं है। मैं शरीर की सुंदरता के विरूद्ध नहीं हूं, पुरी तरह से पक्ष में हूं। मुझे उसका शरीर बहुत अच्छा लगता था। जब मैं उसके चेहरे को छूता था तो वह पूछता, तुम अपनी आंखें बंद करके मेरे चेहरे को क्यों छूते हो।

मैंने कहा: तुम इतने सुंदर हो, में और कुछ नहीं देखना चाहता, इसलिए अपनी आँखो को बंद रखता हूं। ताकि बाद में अपने स्वप्न में मै तुम्हे वैसा ही देख सकूं जैसा तुम हो।

तुम मेरे शब्द नोट कर रहे हो। ताकि मैं तुम्हें सपने में उतना ही सुंदर देख सकूं जितने तुम हो। मैं चाहता हूं कि तुम मेरे सपने बन जाओ। लेकिन सिर्फ उसका शरीर ही सुंदर नहीं था, नहीं सिर्फ उनके बाल—मैंने कभी

ऐसे सुंदर बाल नहीं देखे, खासकर किसी पुरूष के सिर पर ऐसे सुंदर बाल नहीं देखे। मैं उनके बालों को छूता और उनके साथ खेलता था, और वे हंसते।

एक बार उन्होंने कहा: क्या खूब, बाबा तो पागल थे ही, अब मुझे उन्होंने ऐसा गुरु दे दिया है जो उनसे भी अधिक पागल है। उन्होंने मुझे कहा था कि तुम उनकी जगह लोगे, इसलिए कुछ भी करने से तुम्हें मैं रोक नहीं सकत। अगर तुम मेरा सिर भी काट डालों तो भी मैं इसे सहर्ष स्वीकार करूंगा।

मैंने कहा: चिंता मत करो, मैं तो एक बाल भी नहीं काटूंगा। जहां तक तुम्हारे सिर का सवाल है, बाबा न पे पहले ही अपना काम कर दिया है। अब तो सिर्फ बाल रह गए है। ' फिर हम दोनों हंसते। यह बहुत बार बहुत तरीकों से होता रहा।

लेकिन मस्तो तन और मन, दोनों से सुंदर थे। जब भी मुझे जरूरत होती, वह बिना मुझे बताए रात को चुपचाप मेरे खीसे में पैसे डाल देते ताकि मुझे पता ही न चले कि ये पैसे कहां से आए है। तुम्हें मालूम है कि अब तो मैं कोई जेब नहीं रखता मेरे ये पाकेट कैसे खो गए, क्या तुम्हें इसकी कहानी मालूम है। इनके खो जाने का जाने कारण मस्तो है। यह मेरी जेब में रूपये पैसे, सोना आदि कुछ भी डाल देते थे। आखिर,मैने जेब न रखने का फैसला किया। क्योंकि जेब होने से लोगों को या तो उसमें कुछ डालने की सूझती है। या काटने की। और इस प्रकार जेब काट कर वे जेब कतरे बन जाते है। इस दुनिया में कैंवल मैं ही एक ऐसा व्यक्ति हूं। जिस जेब की जरूरत नहीं है। इससे यह फायदा है कि जेब को कोई काट ही नहीं सकता। जब जेब ही नहीं है तो काटेगा क्या। इस दुनिया में केवल मैं ही एक ऐसा व्यक्ति हूं, जिसे जेब की जरूरत नहीं है। इससे यह फायदा है कि जेब को कोई काट ही नहीं सकता। जब जेब ही नहीं है तो कोई काटेगा क्या। और बहुत दुर्लभ, कभी-कभी अपवाद भी हो सकता है—मेरे जैसे आदमी के साथ वे मस्तो जैसे बन जाते है।

मस्तो तो इस इंतजार में रहते कि में सो जाऊँ। कभी-कभी मैं भी सोने का ढोंग करता। उनको अपने सोए रहने का विश्वास दिलाने के लिए मैं खर्राटे भी लेता। फिर जैसे ही वे मेरी जेब में हाथ डालते तैं उन्हें रंगे हाथों पकड़ लेता और कहता, मस्तो, क्या कोई साधु-संन्यासी ऐसा करता है। और हम दोनों हंस पड़ते। अंतत: मैंने जेब रखना ही बंद कर दिया। यह भी अच्छा है कि मुझे कोई बोझ नहीं ढोना पड़ता। कोई और हमेशा यह काम करता है। मुझे करने की जरूरत नहीं है। वर्षों से मुझे जेब की जरूरत नहीं रही,हमेशा कोई न कोई मेरे लिए इसका इंतजाम कर देता है।

आज सुबह जब गुड़िया मुझे चाय दे रही थी तो मैंने तश्तरी को अपने हाथ से छूट जाने दिया। मैं यह तो नहीं कह सकता कि मैने गिरा दी। वह ज्यादती होगी, क्योंकि तश्तरी बहुत कीमती थी। उसमें सोने की कारीगरी की गई थी। और अगर मैं यह कहता कि मैंने इसे गिरा दिया तो वह मुझे माफ नकारती। हां, मैंने तश्तरी को हाथ से छूट जाने दिया तो स्वभावत: वह गिर गई। उसके लिए उड़ना तो संभव न था, उसे गिरना ही था।

उस क्षण में मैं उन बहुत सी बातों को समझ गया जो मैं हमेशा से जानता था। पर उस समय वे मुझमें एक साथ चरम बिंदु पर पहुंच गई। गिरना....आदमी उड़ नहीं सकता था ....न आदम न ईव—स्वभावत: उन्हें गिरना पडा। वह सांप की राजनीति नहीं थी, मनुष्य का गिरना स्वभाविक था, स्वाभाविक,बहुत स्वभाविक था अदम और ईव का गिरना। क्योंकि वे उड़ नहीं सकते थे। न लुफथानसा था, प पैनएम था। एअर इंडिया तक न था। और बेचारा अदम तो बहुत ही गरीब था। लेकिन एक प्रकार से यह अच्छा ही हुआ कि वह गिर गया, अन्यथा वह उसी स्थिति में होता जिसमें उर्वशी थी।

स्वर्ग के सब फलों का वह स्वाद लेता बिना उनको मजा लिए। वह ईव के साथ रहता बिना प्रेम के। स्वर्ग में कोई इतना प्रेम नहीं करता। मैं यह कह सकता हूं बिना इस डर के कि इसके लिए मैं वहां से निष्कासित किया जा सकता हूं। स्वर्ग अंतिम जगह है जहां मैं जाना पसंद नहीं करूंगा। स्वर्ग में जाने सी बजाए में नरक में जाना पंसद करूंगा। मालूम है क्यों। वहां के अच्छे संग-साथ के कारण। स्वर्ग तो भयानक, डरावना है। संतों का संग-साथ... है परमात्मा ये सब देवता मूढ़ होंगे, जड़ बुद्धि या शायद बिना मस्तिष्क के होगें, रोबोट जैसे। नहीं तो वे कैसे निरंतर गोल चक्कर में घूमते रहते। मुझे उनके साथ नहीं रहना। मैं उनका हिस्सा बनना नहीं चहेता।

लेकिन, मस्तो तो ऐसा दिखाई देता था मानो कोई देवता धरती पर उतर आया हो। मैं उससे बहुत प्रेम करता था—अकारण। क्योंकि प्रेम किसी कारण से नहीं होती। अभी भी मैं उससे प्रेम करता हूं। मुझे मालूम नहीं है कि वह जीवित है या नहीं, क्योंकि बाईस मार्च उन्नीस सो तिरपन को वह अदृश्य हो गया।

उसने कहा कि मेरा उत्तरदायित्व पूरा हो गया है। पागल बाबा से मैंने जो वादा किया था, वह पूरा तरह से प्रकट हो गई है—तुम्हें जो बनना था वह बन चुके हो।'

मैंने कहा: नहीं मस्तो, मुझे अभी भी तुम्हारी आवश्यकता होगी—अन्य कारणों से। उसने उत्तर दिया: ' नहीं, अब मैं और इंतजार नहीं कर सकता। अब तुम स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकोगे।

उसके बाद कभी-कभी मैं हिमालय से आए किसी संन्यासी या भिक्षु से सुनता कि मस्तो कालिम्पोंग में है नैनीताल में है या यहां है या वहां है। लेकिन वह हिमालय से कभी नहीं लौटा। हिमालय जाने बाले हर आदमी से मैं कहता कि तुम कभी ऐसे व्यक्ति से मिलो... लेकिन यह बहुत मुश्किल था क्योंकि उसे अपनी फोटो खिंचवाना पसंद नहीं था।

एक बार बड़ी मुश्किल से मैंने उसको फोटोग्राफर के पास जाने के लिए राज़ी किया। मेरे गांव का फोटोग्राफर बहुत होशियार था, उसका नाम था मुन्नामियां था, जो बहुत गरीब था लेकिन उसके पास कैमरा था। वह दुनिया का सबसे पुराना माडल रहा होगा। उसके कैमरे का तो सुरक्षित रखना चाहिए था। वह दुनिया का सबसे पुराना माडल रहा होगा। उसके कैमरों को तो सुरक्षित रखना चाहिए था। आज उसकी कीमत करोड़ों रूपये की होती। सारी फिल्म में से शायद एकाध फोटो ही ठीक होती। वह भी निशचित नहीं था। और जब तुम अपनी उस फोटो को देखते तो तुम भरोसा ही न कर सकते थे कि उसने ऐसा कैसे किया होगा। क्योंकि वह तुम्हारे जैसी दिखाई ही न देती। वह बहुत बढ़िया फोटोग्राफर था। वह फोटोग्राफ के साथ जो करता था शायद पिकासो ही उसे पसंद करता..या मैं नहीं जानता, अगर मुन्नू मियां ने पिकासो की स्वयं की फोटो ली होती हो शायद वह भी पसंद न करता।

किसी न किसी तरह मैं मस्तो को मुन्नू मियां के पास ले गया। मुन्नू मियां तो बहुत खुश हो गए, मस्तो बेमन से उस गांव के स्टूडियों में बैठ गए—उसे स्टूडियों भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि वहां पर केवल एक बिना बांहों की जंग लगी लोगे की कुर्सी थी। लोग शायद ही कभी वहां पर फोटो खिंचवाने आते थे इसलिए वहां पर स्टूडियों जैसा कुछ था ही नहीं।

तुम कलपना भी नहीं कर सकते कि भारतीय गांव में फोटो कैसे खींची जाती है। अभी भी वहीं ढंग है। पृष्ठभूमि को सुंदर बनाने के लिए पीछे की और एक पर्दा लटका हुआ होता है जिस पर बंबई की सड़कों का दृश्य चित्रित होता है। बडी-बड़ी इमारतें, मोटर कारें, बसें आदि—और ऐसा समझा जाता की फोटो बंबई में लिया गया है। अब एक रूपये में जब तीन फोटो तैयार किए जाएंगे तो और क्या मिल सकता है। मस्तो ने मेरे किए कराए पर पानी फेर दिया, या ज्यादा सही होगा कि मुन्नू मिया कि बेवकूफी के कारण मेरी सारी मेहनत बेकार गई। वह कैमरे में प्लेट रखना ही भूल गया।

अभी भी वह सारा दृश्य मेरी आँखो के सामने घूम जाता है। मैंने मुन्नू मिया को अच्छी तरह से समझाया था कि ' फोटो खींचने में कोई गलती नहीं होनी चाहिए...इस आदमी को बड़ी मुशिकल से यहां लाया हूं। और अगर तुमने उसकी फोटो तैयार कर ली तो तुम्हारे स्टूडियों का बहुत नाम हो जाएगा। वह समझ भी गया और उसने कहा: मैं कोशिश करूंगा। सिर्फ मुझे अंग्रेजी के दो शब्द सिखा दो। मैंने सुना है कि बड़े शहरों में फोटो खींचने से पहले कहते है, 'प्लीट बी रंडी' । उसने तो यह हिन्दी में कहा, लेकिन इस विशेष आदरणीय सज्जन को प्रभावित करने के लिए वह इसे अंग्रेजी में कहना चाहता था। फिर वह यह भी जानना चाहता था कि फोटो लेने के बाद थे क्यू कैसे कहा जाता है। तो उसने सब ठीक-ठाक किया,फिर उसने अंग्रेजी में कहा: प्लीज बी रेडी।

मस्तो को भी यह विश्वास नहीं हुआ कि मुन्नू मियां अंग्रेजी जानते है। फिर उन्होंने क्लिक किया, कैमरे से जोर की क्लिक कि आवाज आई। मैं अभी भी उनके कैमरे को देख सकता हूं। और मैं निशचित तौर पर कह सकता हूं कि सिर्फ उसकी प्राचीनता के कारण उसकी कीमत लाखों डालर की होती। बहुत बड़ा था वह। फिर उन्होंने कहा: थैंक्यू सर। और हम वहां से चल पड़े।

वह हमारे पीछे दौड़ते हुए आए, उनकी आंखों में आंसू थे। उन्होंने कहा: मुझे माफ करना। आप वापस आइए। मैं कैमरे में प्लेट डालना ही भूल गया।

वह सुनते ही मस्तो ने कहा: बेवकूफ यहां से भाग जाओ नहीं तो मैं बहुत नाराज हो जाऊँगा। और मैं बहुत गुस्से बाला आदमी हूं।

मैं जानता था कि मस्तो गुस्से बाले नहीं थे। मैंने मुन्ना मिया से कहा: तुम चिंता मत करो, मैं फिर से यह इंतजाम कर दूँगा। लेकिन वह तो भाग गए—सचमुच दौड़ गए। मैं कहता ही रह गया, मेरी बात सुनो। मत भागों। लेकिन उन्होंने मेरी एक न सुनी।

मैंने मस्तो को स्टूडियों में दुबारा जान पे के लिए राज़ी कर लिया, लेकिन हम वहां पहुंचे तो वहां ताला लगा हुआ था। मुन्ना मिया इतना डर गए थे कि हमें वहां आता देखते ही वह स्टूडियों का ताला लगा कर भीग गए।

इसलिए हमारे पास मस्तो की कोई तस्वीर नहीं है। मैं तुम लोगों को सिर्फ तीन फोटो दिखाना चाहता था —एक मस्तो की—एक दुर्लभ सौंदर्य....एक दूसरे आदमी की जिसकी चर्चा मैं बाद में करूंगा और एक महिला की—जिसकी बात भी मैं बाद में करूंगा। लेकिन मेरे पास इन तीनों में से किसी का फोटो नहीं है।

बडी अजीब बात है। ये तीनों अपना फोटो नहीं खिंचवाना चाहते थे—बिलकुल नहीं चाहते थे। शायद इसलिए कि फोटो सौंदर्य को बिगाड़ देती है। सौंदर्य तो जीवंत होता है। और फोटो निर्जीव होती है। जब हम किसी फूल की तस्वीर लेते है तो तुम क्या सोचते हो कि वह वही फूल होता है। जो अब भी वहीं है। नहीं, तब तक वह फूल वही नहीं रहता, वह बढ़ जाता है। वह वही नहीं है—उसका विकास नहीं हो सकता। आरंभ से ही वह मृत है। तुम उसे क्या कहते हो। स्टिल वार्न, मृत जात, क्या वह ठीक है।

हां ओशो

अच्छा,तो तस्वीर मृत है, निर्जीव है, पहली श्वास लेने से पहले ही मर चुकी है। वह श्वास ही नहीं लेता।

सिर्फ एक व्यक्ति जिनसे मैं बहुत प्रेम करता था और जो सुंदरतम गो में सि एक था और उन्होंने मुझे अपनी तस्वीर खींचने दी। वे थीं मेरी नानी लेकिन उन्होंने यह शर्त रखी कि एलबम उनके पास रहेगी।

मैंने कहा: उसमें तो कोई हर्ज नहीं है लेकिन क्यों। मुझ पर विश्वास नहीं है।

उन्होंने कहा: तुम पर तो विश्वास है लेकिन इन तस्वीरों का विश्वास नहीं है। मुझे मालूम है कि तुम मेरा को ई नुकसान नहीं करोगे लेकिन इन तस्वीरों को मैं अपने पास ही रखूंगी मेरे मरने के बाद तुम इन्हें ले लेना।

सो मैंने उनकी अनेक फोटो लीं। उन्होंने मुझे रोका नहीं। लेकिन उनकी मृत्यु के बाद जब मैंने उनकी वह अलमारी खोली जहां वे उस एलबम को रखती थी, ता देखा कि उनकी एलबम तो बिलकुल खाली है। वे स्वयं तो नहीं सकती थी। उन्होंने मेरे पिता से लिखवाकर कर रखा था।

' मुझे क्षमा करना ' उस पर उन्होंने अपने दाएं अंगूठे की छाप लगा कर हस्ताक्षर किए हुए थे।

जिन लोगों से मैं तुम्हें परिचित कराना चाहता था। उन्होंने मुझे उनकी फोटो लेने ही नहीं दी। केवल एक ने इसकी अनुमति मुझे दी लेकिन ऐसा लगता है कि नानी इसलिए राज़ी हो गई क्योंकि वे मेरे दिल को दुखाना नहीं चाहती थी।....ओर वे सदा अपनी सब तस्वीरे फाड़ती रही।

एलबम तो खाली थी। मैंने अच्छी तरह से देखा और मुझे पता लगा कि उसकी भी कभी उपयोग ही नहीं गया था। मैंने पूरे घर मैं तसवीरें खोजी, लेकिन उसमें एक भी तस्वीर नहीं थी। मैं तुम्हें नानी की आंखें दिखना चाहता था—केवल आंखें। उनका सारा शरीर सुंदर था लेकिन उनकी आंखें। एक कवि ही उनकी वर्णन कर सकता है। यह चित्रकार—और मैं दोनों ही नहीं है। मैं केवल इतना कह सकता हुं कि वे ओखे उस असीम और अपार को प्रतिबिंबित करती थी।

सत्र—33 मस्तो का सितार बजाना—नानी का नवयौवना होना

ओ.के.। अभी उस दिन मैं तुम लोगों को मस्तो के गायब हो जाने के बारे में बता रहा था। मुझे लगता है कि वह अभी भी जीवित है। सच तो यह है कि मैं जानता हूं कि वह जीवित है। पूर्व में यह एक अति प्राचीन प्रथा है। मरने से पहले व्यक्ति हिमालय में खो जाता है। किसी और जगह रहने से तो इस सुंदर स्थल में मरना ज्यादा मूल्य बान है। वहां पर मरने में भी शाश्वतता का कुछ अंश है। इसका कारण शायद यह है कि हजारों वर्षों तक ऋषि मुनि वहां पर जो मंत्रोच्चार कर रहे थे। उसकी तरंगें अभी भी वहां के वातावरण में पाई जाती है। वेदों की रचना वहां हुई, गीता वहां लिखीगई। बुद्ध वहां पर जन्मे और मरे। लाओत्से भी अपने अंतिम दिनों में हिमालय में ही खो गया था। और मस्तो ने भी ऐसा ही किया।

किसी को यह मालूम नहीं है कि लाओत्से मरा या नहीं। इसके बारे में निश्चय रूप से कोई कैसे कुछ कह सकता है। इसलिए जनश्रुति कहती है कि वह अमर हो गया। लेकिन लोगों को उसकी मृत्यु की कोई जानकारी नहीं है। अगर कोई चुपचाप बिलकुल एकांत में निजी ढंग से मरना चाहे तो यह उसका अधिकार है। वह ऐसा कर सके, ऐसा होना चाहिए।

मस्तो ने मेरी देखभाल पागल बाबा से भी अधिक अच्छी तरह से की। पहली बात कि पागल बाबा तो सच मुच्छ पागल थे। दूसरा, वे कभी-कभी ही आंधी की तरह मुझसे मिलने आते और उसी तरह गायब हो जाते। यह तो कोई ढंग नहीं है। किसी की देखभाल करने का। एक बार तो मैंने उनसे कहा भी कि आप सबको बताते हो कि आप इस बच्चे की देखभाल कितनी अच्छी तरह से करते हो। लेकिन आप यह बात फिर से कहो उससे पहले मेरी भी सुनो।

उन्होंने हंस कर कहा: मुझे मालूम हे। तुम्हें कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन मैं जल्दी ही तुम्हें अच्छे हाथों में सौंप दूँगा। सच में मैं तुम्हारी देखभाल करने योग्य नहीं हूं। क्या तुम समझ सकते हो कि मैं नब्बे बरस का हूं और अब मेरे शरीर छोड़ने का समय हो गया है। लेकिन मैं रुका हुआ हूं ताकि मैं तुम्हें किसी योग्य और उपयुक्त व्यक्ति को सौंप दूँ। एक बार ऐसा व्यक्ति मिल जाए तो मैं आराम से मृत्यु की गोद में सो जाऊँगा।

उस समय मैं नहीं जानता था कि वह सच मच गंभीर थे, लेकिन उन्होंने ठीक ऐसा ही किया। उन्होंने अपने उत्तर दायित्व को मस्तो को सौंप दिया और हंसते हुए मर गए। यहीं अंतिम काम था जो उन्होंने किया।

जरथुस्त्र शायद हंसा हो, जब वह जन्मा था...इसका कोई गवाह नहीं है। लेकिन वह निश्चित हंसा होगा क्योंकि उसका समस्त जीवन इसकी और ही संकेत करता है। और उसकी इसी हंसी ने ही पश्चिम के सर्वाधिक प्रतिभाशाली व्यक्ति, फ्रेड्रिक नीत्शे को आकर्षित किया था। लेकिन पागल बाबा तो मरते समय सचमुच हंसे थे। हम यह भी नहीं पूछ सके कि आप क्यों हंस रहे है। हम पूछ भी नहीं सकते थे। वे दार्शनिक नहीं थे और अगर जीवित भी रहते तो भी वे इसका अत्तर देने बाले नहीं थे। लेकिन उनके मरने का भी क्या ढंग था। और याद रखना, वह मात्र मुस्कुराहट नहीं थी। सचमुच हंसी थी हंसी।

वहां पर उपस्थित सब लोग एक दूसरे की और देखने लगे कि ‘ आखिर क्या बात है।‘ वे इतनी जोर से हंसे कि सब लोगों ने समझा कि पहले तो ये थोडे-थोड़े पागल थे, अब ये पूरी तरह से पागल हो गए है। वे सब वहां से चले गए। शिष्टाचार वश न तो कोई जन्म के समय हंसता है। न मरने के समय हंसता है। ब्रिटिश आचरण शिष्टाचार से बंधा रहता है।

बाबा सदा शिष्टाचार में विश्वास रखने वाले लोगों के खिलाफ थे। इसीलिए तो वे मुझसे प्रेम करते थे। इसीलिए तो वे मस्तो से प्रेम करते थे। और जब वे मेरी देख भाल करने के लिए उपयुक्त आदमी की खोज कर रहे थे, स्वभावत: उन्हें मस्तो से अधिक अच्छा व्यक्ति कहीं नहीं मिल सकता था।

बाबा जितना सोच सकते थे, मस्तो तो उससे भी आगे बढ़ गया। उसने मेरे लिए इतना किया, इतना किया कि उसके बारे में बात करते भी मेरा दिल दुखता है। वह इतनी निजी बात है कि उसकी चर्चा नहीं की जानी चाहिए। इतनी निजी बात है कि जब कोई अकेला हो तब भी इसे बोलना नहीं चाहिए।

बाबा मस्तो से अधिक उपयुक्त आदमी और कोई नहीं मिल सकता था। मस्तो उनका सबसे बढ़िया चुनाव था। मैं किसी भी तरह से और अच्छे आदमी की कल्पना भी नहीं कर सकता। सिर्फ यहीं नहीं कि वह ध्यानी था....वह ध्यानी तो था ही अन्यथा हम दोनों में इतना गहन संवाद होना संभव नहीं था। और ध्यान का अर्थ है मन का न रहना—कम से कम जब तक तुम ध्यान कर रहे हो। लेकिन सिर्फ यही नहीं था, इसके अतिरिक्त उनमें और भी अनेक गुण थे। वह बहुत अच्छे गायक थे। लेकिन उन्होने कभी लोगों के सामने नहीं गया। हम दोनों इस पर हंसते थे—दि पब्लिक, लोक जन। यह बहुत ही मंदबुद्धि बच्चों से बनती है। आश्चर्य की बातें है कि वे कैसे किसी खास समय पर किसी स्थान पर इकट्ठे हो जाते है। मैं समझा नही सकता। मस्तो ने भी कहा था कि वह भी नहीं समझा सकता। यह समझाया ही नहीं जा सकता।

उन्होंने कभी आम लोगो के लिए नहीं गया। वे केवल उन थोड़े से लोगों के लिए गाते थे जो उनसे प्रेम करते थे। और उनको यह वादा करना पड़ता था कि वे इसके बारे में कभी बात नहीं करेंगे। उनकी आवाज इतनी मधुर थी कि जब वे गाते थे तो ऐसा लगता था जैसे आस्तित्व उनके माध्यम से प्रवाहित हो रहा हो। यही सही शब्द है जो मैं उपयोग कर सकता हूं—वे अपने माध्यम से अस्तित्व को प्रवाहित होने देते थे। वे प्रवाह को रोकते नहीं थे, यहीं उनकी विशेषता थी।

मस्तो सितार भी बहुत बढ़िया बजाते थे। लेकिन मैंने उन्हें कभी भीड़ के सामने बजाते नहीं देखा। ज्यादातर जब वे सितार बजाते थे तो सिर्फ मैं ही वहाँ पर होता और वे मुझसे दरवाजा बंद करने को कहते। कहते, दरवाजा बंद कर दो और चाहे कुछ भी हो जाए, दरवाजा खोलना मत जि तक कि में मर न जाऊँ। और वे जानते थे कि अगर मैं दरवाजा खोलना चाहूं तो पहले मुझे उन्हें मारना होगा फिर ही दरवाजा खोल सकता हूं। मैं अपना वादा निभाता। लेकिन उनका संगीत गजब का था...दुनिया उनको नहीं जानती थी: उनकी इस कला से वंचित ही रह गई।

वे कहते थे: ये बातें इतनी निजी है कि उनको लोगों के सामने रखना एक प्रकार से वश्या वृति होगी। यही उनका शब्द था। ‘ वेश्या वृति ‘ वे बहुत बड़े दार्शनिक विचारक और तर्कपूर्ण व्यिक्त थे—मेरे जैसे नहीं। पागल बाबा और मुझ में सिर्फ एक ही समानता था: वह थी हम दोनों के पागलपन की । मस्तो और उनमें बहुत सी बातों कह समानता थी। पागल बाबा की दिलचस्पी अनेक चीजों में थी। निश्चित ही में पागल बाबा का प्रतिनिधि नहीं हो सकता, लेकिन मस्तो था। मैं तो किसी का भी प्रतिनिधि नहीं हो सकता।

मस्तो ने हर प्रकार से मेरे लिए इतना किया कि मुझे अचरज होता है कि बाबा को कैसे मालूम हुआ कि मेरे लिए वहीं ठीक आदमी होगा। मैं तो बच्चा ही था और मुझे पथ-प्रदर्शन की आवश्यकता थी। और मैं सीधा-साधा, भोला-भाला बच्चा भी नहीं था, में आसानी से किसी कि बात मानने को तैयार नहीं था। जब तक मुझे अच्छी तरह से समझाया न जाता तब तक मैं टस से मस न होता।

मुझे एक किस्सा याद आ रहा है। मैं इस किस्से को चुटकुले की तरह सुनाता था। बहुत से चुटकुलों को मैं इधर-उधर से रंग रोगन करके ऐसा बना देता हूं कि वे चुटकुले लगें लेकिन उनमें से अधिकांश चुटकुले वास्तविक

जीवन से आते है, और वास्तविक जीवन एक प्रकार से चुटकुलों की पुस्तक से कहीं अधिक बड़ी मजाक की किताब है। मुझे कैसे मालूम है कि यह चुटकुला वास्तविक जीवन से ही लिया गया है। क्योंकि अन्यथा हो ही नहीं सकता, और कोई तरीका ही नहीं है। मुझे याद है, मैं इस चुटकुले को सुनाया करता था और इस प्रकार सुनाया करता था।

एक बच्चा स्कूल में देर से आया, बहुत देर से। बारिश हो रही थी। अध्यापिका ने उसे अपनी पथरीली आंखों से देखा। और ये पथरीली आंखें केवल अध्यापकों और पत्नियों को ही दी गई है। और तुम्हारी शादी किसी ऐसी औरत से हो जाए जो अध्यापिका है,तब तो भगवान ही तुम्हें बचा सकता है। तब तुम्हारे लिए केवल प्रार्थना ही कर सकते है। तब उस औरत की चार पथरीली आंखे हो जाएगी जो चारों और देखेगी। स्कूल की अध्यापिका से सदा बच कर रहना। कदापि नहीं, कभी भी स्कूल अध्यापिका से शादी मत करना। कुछ भी हो जाए, फंसने से पहले ही भाग खड़े होना। और कहीं भी फंस जाना, मगर स्कूल अध्यापिका के साथ मत फंसना। अगर वह अंग्रेज हुई तब तो मुसीबत और भी अधिक बढ़ जाएगी।

छोटा बच्चा, पहले ही बहुत डरा हुआ, पूरी तरह पानी से भीगा हुआ, किसी तरह स्कूल पहुंच गया। लेकिन अध्यापिका तो अध्यापिका ही है। उसने पूछा: तुम इतनी देर से क्यों आये।'

बच्चे ने सोचा था कि चह काफी सबूत है कि इतने जोर की बारिश हो रही है, मूसलाधार बारिश, और वह पूरा भीगा है। पानी टपक रहा है। और फिर भी वह पूछ रही है कि तूम देर से क्यों आये।

उस बच्चे ने एक अच्छा बहाना बनाया, जैसा कोई भी बच्चा बनाता। उसने कहा: सड़क पर इतनी फिसलन है कि जब मैं एक कदम आगे बढ़ता था तो दो कदम पीछे फिसल जाता था।

अध्यापिका ने कठोर आवाज में कहा: यह कैसे हो सकता है। अगर तुम एक कदम आगे बढ़ाते और दो कदम पीछे फिसल जाते थे तो तूम कभी भी स्कूल नहीं पहुंच सकते थे।

उस बच्चे ने कहा: जरा समझने की कोशिश कीजिए: मैं अपने घर की और मुड़ा और मैं स्कूल से भागने लगा, इसी तरह मैं यहां पहुंचा हूं।

मैं कहता हूं कि यह कोई चुटकुला नहीं है। स्कूल की अध्यापिका वास्तविक है, लड़का वास्तविक है और बारिश भी वास्तविक है, स्कूल अध्यापिका का निष्कर्ष वास्तविक है, और छोटे बच्चे का निष्कर्ष भी इससे अधिक वास्तविक नहीं हो सकता था। मैंने हजारों चुटकुले सुनाए हैं और उनमें से बहुत से वास्तविक जीवन से ही लिए गए है। जो वास्तविक जीवन से नहीं आ रहे है, वे भी वास्तविक जीवन से ही आ रहे है—जो ऊपर से दिखाई नहीं देता, लेकिन नीचे छिपा हुआ है। उसे ऊपर आने ही नहीं दिया जाता।

मस्तो अत्यंत गुणी थे, उनमें बहुआयामी गुण थे। वे अच्छा संगीतज्ञ,अच्छे नर्तक, अच्छे गायक और भी न जाने क्या-क्या थे। लेकिन वे सदा लोगों की आंखों से बचते थे। वे उनकी आंखों को बदसूरत कहते थे। वे कहते थे, ' मेरी कला इन लोगों के लिए नहीं है। ये लोग देख नहीं सकते। लेकिन सिर्फ विश्वास करते है कि उनको दिखाई देता है।'

मेरा तो कोई दोस्त नहीं था। फिर भी मस्तो मुझे बार-बार याद कराते कि मुझे कभी किसी दोस्त को या किसी परिचित को आंमत्रित नहीं करना चाहिए। लेकिन जब एक बार मैंने उनसे पूछा कि क्या मैं कभी किसी को आमंत्रित कर सकता हूं। उन्होंने कहा कि अगर में अपने किसी या अंतरंग व्यक्ति को लाना चाहता हु तो अपनी नानी को साथ ला सकता हूं। उनके बारे में तो तुम्हें मुझसे पूछने की भी जरूरत नहीं है। लेकिन अगर वह नआना चाहें तो में इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता।'

और यही हुआ। जब मैंने नानी से यह बात कही, तो उन्होंने कहा: मस्तो से कहो कि वह घर आए और अपनी सितार यहां बजाए। और वे इतने विनम्र आदमी थे कि उन्होंने घर आकर नानी के लिए सितार बजाईं, और बहुत खुशी से बजाईं। और मैं बहुत खुश था कि उन्होने मना नहीं किया और वे आए वे आए। मुझे यही चिंता हो रही थी वे शायद मना न कर दे।

और मेरी नानी, वह वृद्धा अचानक नवयुवती सी दिखाई देने लगी, उनका तो जैसे कायाकल्प ही हो गया। जैसे-जैसे वे सितार की झंकार में लीन होती गई वे कम उम्र की दिखाई देने लगीं। मैंने यह चमत्कार होते देखा। और जब मस्तो ने सितार बजाना बंद किया, तो वह फिर से बूढी हो गई। मैंने कहा: नानी, यह ठीक नहीं है। मस्तो को भी तो यह देखने का अवसर मिलना चाहिए कि तुम्हारे जैसे व्यक्ति पर उसके संगीत का क्या प्रभाव पड़ता है। नानी ने कहां: यह मेरे बस की बात नहीं है। मुझे मालूम है कि मस्तो इसको समझ जाएगा, यह होता है तो होता है, अगर नहीं होता तो नहीं होता—कोई कुछ कर नहीं सकता।‘

मस्तो न कहा: हां,में इस बात को समझता हूं।

लेकिन मैंने जो देखा वह अविश्वसनीय था। मैं बार-बार अपनी आंखों को झपका रहा था कि क्या मैं स्वप्न देख रहा हूं या सचमुच उनके यौवन को वापस आते देख रहा हूं। आज भी मुझे यह विश्वास नहीं हो रहा कि वह मेरी कोरी कल्पना थी, शायद उस दिन....लेकिन आज तो मेरे पास कोई कल्पना ही नहीं है। मुझे चीजें वैसी ही दिखाई देती है जैसी वे है।

दुनिया मस्तो से अपरिचित ही रह गई, क्योंकि वह लोगों की भीड़-भाड़ से सदा बचता रहा। और जब मेरी तरफ उसका कर्तव्य, पागल बाबा से किया गया उसका वायदा पूरा हो गया, तो वह हिमालय में गायब हो गया।

हिमालय शब्द का अर्थ है- हिम-आलय अर्थात बर्फ का घर। वैज्ञानिक कहते है कि अगर किसी दिन हिमालय की बर्फ पिघल जाए तो संसार में बाढ़ आ जाएगी। सारी दुनिया—कोई एकाध हिस्सा नहीं—सभी साग़रों का पानी चालीस फीट ऊँचा उठ जाएगा। इस पर्वत का हिमालय बिलकुल नाम ठीक दिया गया है। हिम का अर्थ है: बर्फ और आलय का अर्थ घर।

इसके सैकडों शिखरों की बर्फ कभी पिघलती ही नहीं है। और उनके चारों और मौन छाया रहता है। वातावरण की शांति कभी भंग नहीं होती...वह केवल पुराना ही नहीं है, इसमें एक अजीब अपनापन है..क्योंकि ध्यान की गहराई में डूबे हुए हजारों लोगों ने वहाँ शरण ली है। उनकी अविश्वसनीय ध्यानस्थता, असीम प्रेम, प्रार्थना और मंत्रोच्चार सह वही का वातावरण तरंगित रहता है।

सारे संसार में अभी भी हिमालय पर्वत अनोखा है, बेजोड़ है। आल्प्स पर्वत तो हिमालय के सामने बच्चा है। स्विटज़रलैंड सुंदर है, लेकिन सुंदरता वहां पर उपलब्ध सुखसुविधाओं पर अधिक निर्भर है। लेकिन मैं हिमालय की उन मौन रातों को कभी नहीं भूल सकता—चारों और कोई नहीं है, शांत, निर्जन शांति आकाश में टिमटिमाते तारे।

मैं भी मस्तो की भांति वहीं पर अदृश्य हो जाना चाहता हूं। मैं उसे समझ सकता हूं। और तुम लोगों को आश्चर्य नहीं होना चाहिए अगर एक दिन मैं अदृश्य हो जाऊँ। हिमालय तो भारत से कही अधिक बड़ा है। इसके कुछ भाग ही भारत में है। कुछ भाग नेपाल का है, कुछ पाकिस्तान और बर्मा का है—हजारों मील दूर तक केवल पवित्रता ओरा पावनता ही पावनता है। इसके दूसरी और है रूस, तिब्बत, मंगोलिया, चीन, इन सबके पास हिमालय का कोई न कोई हिस्सा है।

यह आश्चर्य नहीं होगा अगर किसी दिन मैं गायब हो जाऊँ और किसी सुंदर चट्टान के पास लेट कर अपना शरीर छोड़ दूँ। शरीर-त्याग के लिए इससे अधिक सुंदर स्थान दूसरा कोई नहीं हो सकता है। लेकिन शायद मैं ऐसा नहीं करूं, तुम तो मुझे जानते ही हो। मेरे बारे में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता, मेरी मृत्यु के बारे में भी कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।

शायद मस्तो जल्दी चाहते थे, लेकिन वह सिर्फ अपने गुरू, पागल बाबा द्वारा दिए अंतिम काम को पूरा कर रहे थे। उन्होंने मेरे लिए इतना कुछ किया कि उसकी लिस्ट बनाना भी कठिन है। मेरी परिचय ऐसे लोगों से कराया कि अगर कभी भी मुझे पैसे की जरूरत हो तो मुझे सिर्फ उनसे कहना होगा और पैसा आ जाएगा। मैंने मस्तो से पूछा कि क्या ये लोग पूछे गे नहीं कि पैसे की क्यों आवश्यकता है।

उन्होंने कहा: उसकी तुम चिंता मत करो। मैंने उनके सब प्रश्नों का उत्तर दे दिया है। लेकिन यह कायर लोग है। ये अपना पैसा तो तुम्हें दे सकते है। लेकिन अपना ह्रदय तुम्हें नहीं दे सकते, इसलिए उनसे वह मत मांगना।‘

मैंने कहा: मैं कभी किसी से उनके की मांग नहीं करता, इसे मांगा नहीं जा सकता। वह अपने आप चला जाता है या नहीं जाता। इसलिए मैं इन लोगों से सिवाय पैसे के और किसी चीज की मांग नहीं करूंगा और वह भी तभी जब उसकी आवश्यकता होगी।

और सचमुच उन्होंने ऐसे लोगों से मुझे मिलाया जिनका नाम सदा अज्ञात रहा, लेकिन जब भी मुझे पैसे की जरूरत होती, पैसा लगातार आ रहा था। जब मैं जबलपुर मैं था, वहां विश्वविद्यालय में पढ़ा रहा था, और नौ साल से ज्यादा रहा, पैसा लगातार आ रहा था। मेरा वेतन अधिक नहीं था। इसलिए लोगो को यह देख कर आश्चर्य होता कि इतने कम वेतन में मैं एक कार और बाग़-बग़ीचे वाला सुंदर बगला कैसे रख सकता हूं। और एक दिन किसी ने पूछ लिया कैसे इतनी सुंदर कार...ओर उसी दिन दो और कारें आ गई। तब मेरे पार तीन कारें हो गई और उन्हें रखने की जगह ही नहीं थी।

पैसा निरंतर आता ही रहा। मस्तो ने सारा प्रबंध कर दिया था। हालांकि मेरे पास तो कुछ भी नहीं है, बिलकुल भी पैसा नहीं है, लेकिन फिर भी कही न कहीं से वह आ ही जाता है।

मस्तो...तुमसे विदा लेनी मुश्किल है, इसका सीधा सा कारण है कि मुझे यह विश्वास नहीं होता कि तुम अब नहीं रहे। तुम अभी भी हो, भले ही मैं तुम्हें फिर से न मिल सकूं, वह कोई बहुत महत्वपूर्ण नहीं है। मैंने तुम्हें इतना देखा है कि मेरा अंतर्तम तुम्हारी सुगंध से सुगंधित है। लेकिन इस कहानी में कही पर तो मुझे तुम्हारी चर्चा समाप्त करनी पड़ेगी। इसके लिए मेरा दिल दुखता है। मेरे लिए बहुत मुश्किल है....लेकिन मुझे इसके लिए क्षमा करना।

सत्र—34 प्रोफेसर एस. एस. राय

आज सुबह मैंने मस्तो से एकाएक विदा ली और दिन भर मुझे यह बात खटकती रही। कम से कम इस मामले में तो ऐसा नहीं किया जा सकता इससे मुझे उस समय की याद आ गई जब मैं कई बरसों तक नानी के साथ रहने के बाद उनसे विदा लेकर कालेज जा रहा था।

नानी की मृत्यु के बाद जब वे बिलकुल अकेली हो गई तो मेरे सिवाय उनके जीवन में और कोई न था। उनके लिए यह आसान न था और न ही मेरे लिए। मैं सिर्फ नानी के कारण ही उस गांव में रहता था। मुझे अभी तक सर्दी के मौसम की वह सुबह याद है जब गांव के लोग मुझे विदा देने के लिए एकत्रित हुए थे।

आज भी मध्य भारत के उस भाग में आधुनिक युग का आगमन नहीं हुआ। अभी भी वह कम से कम दो हजार बरस पिछड़ा हुआ है। किसी से पास कोई खास काम नहीं है। आवारागर्दी करने के लिए सबके पास काफी समय मालूम होता है। सचमुच हर आदमी आवारागर्द है। आवारागर्द से मेरा सीधा शाब्दिक अर्थ है जिसके पास कोई खास काम न हो। कोई और अर्थ मत समझना। तो सब आवारागर्द वहां पर जमा हो गए थे।

मेरा सारा परिवार वहां पर उपस्थित था, जो कि अच्छी खासी भीड़ थी। वे आए थे, क्योंकि उन्हें आना पडा था। वैसे उनके आने का कोई मतलब नहीं था। वे केवल नाम मात्र के लिए आए थे। लेकिन मेरे पिता, मेरी मां वहां थी, मेरे सब भाई बहन भी वहां थे और वे सब सचमुच रो रहे थे। मेरे पिता भी रो रहे थे। मेंने उन्हें उससे पहले और इसके बाद कभी भी रोते हुए नहीं देखा। और मैं कोई मर नहीं रहा था। केवल सौ मील की दूरी पर जा रहा था। लेकिन सिर्फ यह विचार कि बी. ए. की पढ़ाई के लिए मुझे कम से कम चार बरस तक घर से दूर रहना पड़ेगा। और कोई नहीं जानता, हो सकता है कि एम. ए. की डिग्री के लिए मैं दो बरस और रूक जाऊँ। और फिर पी. एँच. डी. करने के लिए दो बरस तो कम से कम लगेंगे ही।

यह जुदाई बहुत लंबी थी और इस बीच कौन जाने इन लोगों में से कौन इस दुनियां में न रहें। लेकिन मुझे तो सिर्फ नानी की चिंता थी, क्योंकि मेरे माता-पिता से तो मैं बचपन से ही दूर रहता था। इसलिए उनको मुझसे अलग रहने की आदत थी। अब तो मैं अपनी देखभाल खुद कर सकता हूं। इस लिए अब मुझे किसी दूसरे की सहायता की जरूरत नहीं थी। लेकिन मेरी नानी के लिए....आज भी मैं देख सकता हूं उस सुबह का सूरज, गरम सूरज, मेरे माता पिता, लोगों की भीड़—मैंने अपनी नानी के पैर छुए और उनसे कहा: कहीं दूर थोड़े ही जा रहा हूं, कुल सौ मील का ही तो फासला है। जब भी तुम बुलाओगी, मैं तुरंत चला आऊँगा। रेलगाड़ी से तो केवल तीन घंटे लगते है।'

उन दिनों तेज गाड़ियाँ उस गांव में नहीं रुकती थी। नहीं तो वह सफर केवल दो घंटे का था। अब रुकती है। लेकिन अब उनके रूकने या न रूकने से कोई फर्क नहीं पड़ता।

मैंने उनसे कहा: मैं दौड़ता हुआ चला आऊँगा। अस्सी या सौ मील तो कुछ भी नहीं है।

उन्होंने कहा: हां, मैं जानती हूं और मुझे कोई चिंता नहीं है। उन्होंने अपने आप को संयत करने की पूरी कोशिश की, लेकिन मैं उनकी आंखों में उमड़ते हुए आंसुओं को देख सकता था। तत्क्षण मैं मुड़ा और स्टेशन की और चल पडा। सड़क के मोड़ पर पहुच कर भी मैंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा, क्योंकि मुझे मालूम था की अगर मैंने पीछे मूड कर देखा तो या तो उनके आंसुओं का बाँध टूट जाएगा और फिर मैं कभी कालेज नहीं जाउंगा, या अगर वे फूट कर रो न पड़ी तो उनकी श्वास ही रूक जाएगी और उनके प्राण निकल जाएंगे। मैं ही उनके लिए सब कुछ था। उनके अस्तित्व का केंद्र मैं ही था। उनके समस्त जीवन का आधार मैं ही था। दिन भर वे मेरे काम मैं व्यस्त रहती थी। मेरे कपड़े, मेरे खिलौने, मेरा कमरा, मेरा बिस्तर, मेरे बिस्तर की चद्दरें। मैं उनसे कहता:

नानी आप पागल है। चौबीस घंटे आप सिर्फ मेरे काम में व्यस्त रहती है। और मैं तो आपके लिए कभी कुछ करने बाला नहीं हूं।

वे कहती: वह तो तुम पहले ही कर चुक हो।

मैं नहीं जानता कि इसका अर्थ क्या है। और अब तो वे है ही नहीं, तो उनसे पूछा भी नहीं जा सकता। लेकिन उनहोंने ये शब्द इतनी दृढ़ता से , इतने जोर से कहे थे कि मैं भावभिभूत हो गया। आज भी जब मुझे उनकी याद आती है तो मैं भावविभोर हो जाता हूं।

बाद में मुझे पता चला कि जब मैं गली के कोने को पार कर गया तो लोगों ने कहा: ये कैसा लड़का है। एक बार भी इसने पीछे मूड कर नहीं देखा।

और मेरी नानी काक मेरी इस बात पर बहुत गर्व था। उन्होंने उन लोगों से कहा: हां, वह मेरा बेटा है। मैं जानती थी वह पीछे मूड कर नहीं देखेगी—और न सिर्फ इस गली के मोड़ पर, वह अपने जीवन में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखेगी। और मुझे इस बात पर भी गर्व है कि वह अपनी नानी को समझता है। उसे मालूम था कि अगर पीछे मूड कर देखा तो मैं रो पडूंगी। और वह यह कभी नहीं चाहता। उसे अच्छी तरह से मालूम था। मुझसे भी ज्यादा अच्छी तरह कि अगर मैं रो पड़ी तो वह जा न सकेगा। मरे कारण नहीं, बल्कि मेरे प्रति आजीवन यहां पर रह सकता है।

मस्तो से एकाएक विदा लेना भी ठीक इसी प्रकार है। नहीं, मैं यह नहीं कर सकता। मुझे एक स्वभाविक अंत पर आना होगा, बिना किसी फुल स्टाप के। क्योंकि मेरा जीवन ऐसा ही है कि अगर मैं अपने जीवन के बारे में बात करता रहूं तो उसका न तो आदि है और न अंत है। मेरा जीवन में आरंभ और अंत होगा ही नहीं।

बाईबिल कम से कम कहती है, आरंभ में....।

तुम्हें इसको बिना किसी आरंभ या अंत के प्रकाशित करना पड़ेगा। इस प्रकार प्रकाशित करना बहुत मुश्किल होगा। लेकिन देव गीत समझ सकता है। वह यहूदी है। यहूदी कागजात बिना आरंभ और अंत के हो सकते है। ऐसा लगता है कि आरंभ है, लेकिन ऐसा केवल लगता है। इसीलिए सारी प्राचीन कहानियां शुरू होती है, वन्स अपान ए टाइम, एक बार... से और फिर इसके बाद कुछ भी आरंभ किया जा सकता है। और फिर वन्स अपान ए टाइम...एक बार.. सब रूक जाता है। अंत में समाप्त भी नहीं कहा जाता। मेरी जीवन कथा कोई साधारण कथा नहीं हो सकती।

वसंत जोशी मेरी जीवनी लिख रहा है। जीवनी तो बहुत उथली होने वाली है, इतनी उथली कि वह पढ़ने लायक भी नहीं होगी। कोई भी जीवनी गहराई तक नहीं जाती—खासकर मनुष्य की मनोवैज्ञानिक पर्तों को भेद कर उसकी गहराई में प्रवेश नहीं कर सकती—विशेषकर अगर व्यक्ति उस बिंदु पर पहुंच गया हो जहां प्याज के भीतर छुपा हुआ केंद्र हैं। जो शून्य है, जहां पर मन अप्रासंगिक हो जाता है। प्याज की एक-एक पर्त को छोलते जाओ,आंखों से आंसू बहते जाएंगे—अंत में कुछ भी नहीं बचेगा। और वहीं है प्याज का केंद्र,वहीं से वह आया है। कोई भी जीवनी कि गहराई तक नहीं पहुंच सकती, खासकर उस आदमी की जाह 'अमन' को जान चुका है। मैं 'भी' समझ-बुझ कर कह रहा हुं। क्योंकि जब तक मन को नहीं जाप लोगे तब तक अमन को नहीं जान सकते। यही तो संसार को मेरा योगदान है।

पश्चिम ने मन पर बहुत गहरी खोज की है और उन्हें मन की अनेक पर्तों का पता चला है—चेतन, अचेतन,अवचेतन। पूर्व ने तो इस सबको एक और रख दिया है और तालाब में कूद पडा है—और स्वरहीन स्वर, अमन। इसलिए पूर्व ओर पश्चिम परस्पर विरोधी है। एक प्रकार से यह विरोध स्वाभाविक है। रू यार्ड किपलिंग

ने ठीक ही कहा था: ‘ पश्चिम पश्चिम है और पूरब पूरब है। और ये दोनों कभी मिल नहीं सकते। एक हद तक वह सही है। वह भी उसी बात पर जोर दे रहा है जो मैं कह रहा हूं।

पश्चिम ने मन को देखा है, बिना यह समझे कि मन को कोन देख रहा है। यह बड़ी अजीब बात है। तथाकथित बड़े-बड़े वैज्ञानिक मन को देखने की कोशिश कर रहे है और कोई यह जानने की कोशिश नहीं कर रहा कि मन को देख कोन रहा है।

एँच. जी वेल्स बुरा आदमी नहीं था, अच्छा आदमी था, ठीक-ठाक। मेरे लिए वह कुछ ज्यादा ही मीठा है, सफेद चीनी कुछ अधिक है। लेकिन हर आदमी कि अपनी पंसद होती है। इसी लिए मुझे केवल अपनी पसंद का ही ख्याल नहीं करना चाहिए। और प्रत्येक आदमी डायबिटीज नहीं है। और मुझे सिर्फ डायबिटीज ही नहीं है, मैं चीनी को नापसंद करता हूं। जब मुझे डायबिटीज के बारे में पता चला, उससे पहले भी मैं सफेद चीनी के खिलाफ था। मैं चीनी को सफेद जहर कहता हूं। तो शायद चीनी के प्रति मेरा पूर्वा ग्रह हो।

यद्यपि एँच. जी. वेल्स चीनी से भरे हुए है। फिर भी वे केवल यही नहीं है। कभी-कभी उनकी अंतर्दृष्टि आश्चर्यजनक होती है। दुर्लभ। जैसे उदाहरण के लिए, टाईम-मशीन की कल्पना। उसने कल्पना की कि एक दिन ऐसी मशीन की खोज होगी जो समय में पीछे की और जाती है। इसका अर्थ तुम लोगों को समझ में आया, इसका अर्थ यह है कि तुम वापस जा सकते हो अपनी बचपन में, अपने मां के गर्भ में। और अगर तुम हिंदू हो तो शायद अपने पिछले जन्मों में—जब तुम हाथी थे या चींटी थे या कुछ और थे। अर्थात तुम पीछे भी जा सकते हो और आगे भी जा सकते हो।

यह विचार बहुत गहन अंतर्दृष्टि है। मुझे यह तो नहीं मालूम कि ऐसा मशीन कभी होगी या नहीं,लेकिन कुछ ऐसे लोग हुए है जो बड़ी आसानी से बीते हुए समय में जा सकते थे। क्या तुम अपने बीते हुए कल में जाने में को मुश्किल होती है। इसी प्रकार कुछ साहसी लोग अपने बीते हुए जन्म में जा सकते है। अब इनको बीते हुए जन्म कहो या कल के जन्म कहो—मुझे तो ये शब्द ठीक लगते है। जब मेरे जैसे गलत आदमी को कुछ ठीक लगता है तो यह निश्चित समझो कि वह ठीक है। वह ठीक होगा ही।

मस्तो की बात करते-करते मैं अचानक रूक गया। इससे एक तरह से दिन भर मुझे तकलीफ होती रही। तुम्हें मालूम है कि यूं तो न मुझे तकलीफ दी जा सकती है और न ही मैं दुःखी हो सकता हूं। लेकिन उस चर्चा को एकाएक बंद कर देने से मुझे ऐसा ऐ प्रसंग याद आ गया जिसका सीधा संबंध मस्तो से है।

वे मुझे इलाहाबाद स्टेशन पर पहुंचाने आए थे। वास्तव में हम कभी भी खासकर उस दिन अलग नहीं होना चाहते थे। इसका कारण तो बाद में साफ हुआ, लेकिन उसका इससे कोई संबंध नहीं था। अभी तो मैं केवल उसका उल्लेख ही करूंगा ओर ब्योरा बाद में दूँगा। वह मुझे विदा देने आए थे। क्योंकि उन्होंने कहा कि शायद से दो-तीन महीने मुझसे नहीं मिल सकेंगे। इसीलिए वे अधिक से अधिक समय मेरे साथ बिताना चाहते थे।

मस्तो ने कहा: कितना अच्छा हो अगर यह गाड़ी लेट हो जाए।

मैंने कहा: मस्तो, क्या बात करते हो। क्या तुम सचमुच पागल हो गए हो , भारतीय रेल गाड़ियाँ भी कभी समय पर आती है।

गाड़ी सच मुच छह घंटे देर से आई। भारत की पैसेंजर गाड़ी के लिए तो यह आम बात है। लेकिन हम अलग न हो सके। हम अपनी बातों में इतने मस्त थे कि हमें पता ही नहीं लगा कि गाड़ी कब चली गई। हम दोनों खूब हंसे आरे इस बात पर खुश हो गए कि दुसरी गाड़ी के आने तक हम दोनों कुछ घंटे और एक दूसरे के साथ रह सकते है। हमारी बातचीत और हमारे हंसी-मजाक के कारण को सुन कर स्टेशन मास्टर ने हमसे कहा,

आप लोग इस प्लेटफार्म पर अपना समय क्यों बरबाद कर रहे है। आप लोग सामने वाले प्लेट फार्म पर चले जाइए।

मैंने उनसे पूछा: क्यों?

उसने कहा: वहां पर केवल माल गाड़ियाँ ही रुकती है। वहां पर मजे से आप एक दूसरे के गले लग कर बातचीत कर सकते है। और वहां पर यह चिंता भी नहीं रहेगी कि कहीं तुम गाड़ी पकड़ ही न लो। उस प्लेटफार्म पर तुम गाड़ी पकड़ ही नहीं सकते, क्योंकि वहां पर कोई सवारी गाड़ी आएगी ही नहीं।

मैंने मस्तो से कहा कि यह विचार तो बहुत आध्यात्मिक लगता है। स्टेशन मास्टर ने सोचा था कि उसकी इस बात से हम नाराज हो जाएंगे। लेकिन जब हम दोनो उन उसको धन्यवाद दिया और दूसरे प्लेटफार्म पर चले गए, तो वह हमारे पीछे भीगता हुआ आया आरे कहने लगा, मेरी बात को गंभीरता से मत लो, मैं तो मजाक कर रहा था। मेरा विश्वास करो, यहां पर तो केवल माल गाड़ियाँ ही रुकती है। इस प्लेटफार्म पर तो आप कभी काई गाड़ी पकड़ नहीं सकेगें।

मैंने कहा: मैं कोई गाड़ी नहीं पकड़ना चाहता। और मस्तो भी नहीं चाहते कि मैं कोई गाड़ी पकडूं। लेकिन किया क्या जाए, जिन सज्जन के घर पर हम ठहरे हुऐ थे वे इस बात पर बहुत जोर दे रहे थे कि अब मेरा युनिवर्सिटी-हांस्टल वापस जाने का समय हो गया और मेरा समय बरबाद नहीं होना चाहिए।

मेरे मृत मित्र पागल बाबा की इच्छानुसार मस्तो भी चाहते थे कि मैं कम से कम एम.ए. की डिग्री कर लू। इसलिए मुझे जाना ही पडा। तुम भरोसा नहीं करोगे लेकिन पागल बाबा से किए गए वायदे को पूरा करने के लिए ही मैं युनिवर्सिटी में पढ़ा। युनिवर्सिटी ने आगे और पढ़ने के लिए मुझे स्कौलरशिप भी दी। लेकिन मैंने इनकार कर दिया, क्योंकि मैंने पागल बाबा से केवल एम. ए. तक का ही वादा किया था।

लोगों ने कहां: तुम पागल हो क्या? अगर तुम्हें सीधे नौकरी भी मिल जाए तो भी तुम्हें इससे अधिक पैसे नहीं मिलेंगे। और यह स्कौलरशिप तो दो बरस से बढ़ कर कई बरस तक चल सकती है—जब तक तुम्हारा प्रोफेसर तुम्हारी सिफारिश करता रहे। इसीलिए यह अवसर खोना नहीं चाहिए।

मैंने कहा: अगर बाबा मुझे पी एँच. डी. करने को कहते तो मैं अवश्य करता। पर मैं क्या कर सकता हूं। उन्होंने मुझसे नहीं कहा। और वे तो इसे जाने बिना ही मर गए।''

मेरे प्रोफेसर ने भी मुझे समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन मैंने उनसे कहा, इस बात को अब भूल ही जाइए, क्योंकि मैं तो यहां पर सिर्फ एक पागल आदमी से किए गए अपने वायदे को पूरा करने आया था।

लेकिन मुझे न तो एम. ए. की डिग्री से न इसके आगे की किसी डिग्री के किसी प्रकार की कोई आत्मतुष्टि होने वाली है। इसमे मुझे परिपूर्णता का बोध नहीं हो सकता था। पागल बाबा को न जाने कैसे यह ख्याल हो गया था कि अगर एम. ए. की डिग्री न हुई तो को ई नौकरी नहीं मिल सकती। मैंने पूछ: बाबा, ,क्या आप सोचते है कि मुझे नौकरी करने की कभी इच्छा होगी।

उन्होंने हंस कर उत्तर दिया: मुझे मालुम है कि तुम्हें इच्छा नहीं होगी, लेकिन फिर भी कौन जाने किस समय क्या हो जाए। मैं बूढा आदमी हूं और मैं हर संभव खराब स्थिती के बारे में सोचता हूं।

तूम लोगों ने कहावत तो सुनी होगी कि 'अच्छे से अच्छे की आशा करो और खराब से खराब स्थिति की अपेक्षा रखो। बाबा ने इसमें थोड़ा कुछ और जोड़ दिया, उन्होंने कहा कि खराब से खराब स्थिति के लिए तैयार रहो—उसका सामना करने के लिए तैयारी पूरी होनी चाहिए। बिना तैयारी के खराब स्थिति नहीं आनी चाहिए उसका सामना कैसे करोगे।

मस्तो को इतनी आसानी से विदा नहीं किया जा सकता। इसलिए इस खयाल को ही मैं छोड़ देता हूं। हां, बीच-बीच में उसका उल्लेख होता ही रहेगा। सो ठीक है। यह कोई परंपरागत या रूढ़िवादी आत्—कथा नहीं है। इसकी आत्म–कथा ही नहीं कहा जा सकता। सिर्फ जीवन के अंश हजारों दर्पणों में प्रतिबिंबित हुए है।

एक बार मैं एक शीशमहल नामक महल में मेहमान था। वह सिर्फ दर्पणों से ही बना हुआ था। उसमें रहना भयानक था, बहुत मुश्किल था। लेकिन शायद मैं अकेला ही ऐसा आदमी था जिसको वहां पर बहुत मजा आया। राजा जो उस महल का मालिक था। अचंभित था। उसने कहा: जब भी मैं किसी मेहमान को यहां ठहराता हूं तो कुछ घंटे के बाद ही वह कहता है कि मुझे कहीं और ठहरा दो, यहां रहना बहुत मुश्किल है। क्योंकि चारों और अपने जैसे लोग ही दिखाई देते है। आरे जो भी हम करते है उसी को वे दोहराते है। अगर किसी लड़की को गले लगाओ तो वे सब उसको गले लगाते है—यह बहुत डरावना है, बहुत ही परेशानी हो जाती है। ऐसा लगता है कि तुम सिर्फ दर्पण हो और कुछ भी नहीं। और ऐसा लगता हे कि सब दर्पण बढ़ कर रहे है।

मैंने राजा से कहा: मैं तो कुछ भी नहीं बदलना चाहता। हां, आप इस महल को बेचना चाहें तो मैं खरीदने को तैयार हूं। मैं इसे ध्यान केंद्र बना दूँगा। बड़ा मजेदार दृश्य होगा—लोग बैठे हुए चारो और अपने को देखेंगे, सब जगह उन्हें अपनी ही हजारों सूरतें दिखाई देंगी। वे पागल भी हो सकते है। इसे दुर्धटना नहीं कहा जा सकता। क्योंकि देर अबेर किसी आरे जन्म में वे पागल होने ही वाले है। इसमें कुछ देर लगेगी। लेकिन इतने सारे लोगों से घिरे रहने पर भी अगर वे शांत और शिथिल हो सकें और चुपचाप इसे स्वीकार करते हुए अगर वे कहा सकें कि इतनी देर हमें घेरे रहने के लिए धन्यवाद, अगर इसी प्रकार वे स्व-केंद्रित रहें तो वे समाधि को उपलब्ध हो सकते है। हर प्रकार से उन्हें लाभ ही होगा।

मन से नीचे उतर जाना पागलपन होता है। लेकिन एक पागलपन मन के ऊपर उठ जाने से भी होता है। उस पागलपन को समाधि या संबोधी कहते है। यह भी असामान्यता है। इसीलिए तो बेचारे मनोवैज्ञानिक सोचते है कि बुद्ध और जीसस जैसे लोग असमान्य है। लेकिन उन्हें सोच-समझ कर अपने शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। अगर वे पागल खाने में भर्ती लोगों को के लिए असमान्य शब्द का प्रयोग करते है। तो किस मुहँ से वे बुद्ध के लिए असामान्य शब्द का प्रयोग कर सकें ते है। एक तो सामान्य से नीचे है और दूसरा सामान्य से ऊपर है। दोनों असामान्य है, लेकिन उनका वर्गीकरण अलग-अलग हो ना चाहिए। लेकिन जिसे मैं बुद्धो का मनोविज्ञान कहता हूं। उसके लिए मनोविज्ञान में कोई स्थान नहीं है।

मस्तो निश्चित ही बुद्ध पुरूष थे। उनको मैं सिर्फ, धन्यवाद फिर मिलेंगे, नहीं कह सकता। मेरे लिए उन्होंने इतना अधिक किया कि उसके लिए धन्यवाद शब्द बहुत छोटा और अनुपयुक्त है। इतना तो कोई किसी के लिए नहीं करता।

इसीलिए तो इसके लिए कोई शब्द नहीं है.....किसी को जरूरत भी नहीं है। और मैं उन्हें यह भी नहीं कह सकता कि फिर मिलेंगे। क्योंकि न तो वह दुबारा इस दुनिया में आएंगे,और न ही मैं दुबारा इस दुनिया में आऊ्ंगा। दुबारा मिलना तो असंभव है। एक ही रास्ता है कि इस कहानी में जब भी स्वाभाविक ढंग से उनका उल्लेख आए, आ जाने दिया जाए। और इस प्रकार इस संसमरणों का स्वाद ही अलग होगा—आगमन और प्रस्थान, दोनों अचानक और एकाकी होगें।

तो अब मैं फिर से मस्तो को ले आता हूं। वह पागल बाबा जैसे आदमी नही थे। पागल बाबा तो केवल रहस्यदर्शी थे। मस्तो दार्शनिक या फिलासफर भी थे। हम दोनों रात को गंगा के किनारे लेट कर कई विषयों की चर्चा करते । हम दोनों को एक दूसरे सा संग-साथ बहुत अच्छा लगता। कभी यूं ही बातचीत करते, कभी मौन

होकर ऐ दूसरे की उपस्थिति का आनंद उठाते। यह वही गंगा है जहाँ पर सबसे पहले उपनिषाद गाए गए थे। जहां पर बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश दिया था। जहां पर महावीर घूम और उपदेश दिया। बिना हिमालय और गंगा के पूर्व का रहस्यवाद सोचा ही नहीं जा सकता, ये उसके अनिवार्य अंग है। दोनों का योगदान अद्‌भुत है।

हम वहां पर घंटों बैठते थे। मुझे मौन का सौदर्य अभी तक याद है। कभी-कभी तो हम वहां रेत पर ही सो भी जाते थे, क्योंकि मस्तो कहते थे, आज की रात इतनी सुंदर है कि विस्तर में सोना अपमानजनक होगा। ये तारे इतने नजदीक है। यह उनकी ही शब्द है अपमानजनक मैं सिर्फ कोट कर रहा हूं।

मैने कहा: मस्तो, तुम जानते हो कि मुझे तारों से बहुत प्रेम है—विशेषकर ति जब वे नदी में प्रतिबिंबित होते है। तारे तो सुंदर है ही, लेकिन उनका प्रतिबिंब तो चमत्कार है चमत्कार। पानी जो कमाल करता है उसकी तुलना केवल सपनों से ही की जा सकती है। मुझे ये तारे यह नदी, तारों का प्रतिबिंब, तुम्हारा साथ और तुम्हारा स्नेह—सब बहुत अच्छा लगते है। तो यहां रूकने के संबंध में तो कोई प्रश्न ही नहीं है। तुम्हारी जरा सी झलक से मेरा मन दुःखी हो जायगा। क्योंकि मैं समझूंगा कि मैं तुम्हारे लिए एक बोझ बन गया हूं।

उन्होंने कहा: क्या, मैंने तो कभी नहीं कहा कि तुम मेरे लिए बोझ हो।

मैंने कहा: हां, तुमने नहीं कहा। किसी ने नहीं कहा। मैं तो सिर्फ भविष्य के बारे में कह रहा था। किसी भी कारण से मेरे बारे में कभी सोच-विचार करो, तो मुझे जरूर बताना। क्योंकि अगर कोई सोच विचार करे ,झिझकते तो मैं बहुत नाराज हो जाता हूं।

उस दिन मैंने उससे यह कहा और आज मैं तुम्हें बता रहा हूं। कि गुरजिएफ को एक अनोखा विचार सुझा जो पहले किसी गुरु को नहीं सुझा। अगर सुझा भी हो तो कोई उसे ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं था। गुरजिएफ कहता था। कभी दूसरे का खयाल मत करो। यह एक प्रकार का अपमान है। उसने इन शब्दों को अपने दरवाजे के ऊपर लिख रखा था। यह बहुत ही महत्वपूर्ण वक्तव्य है।

लोग एक दूसरे का खयाल करने के लिए एक दूसरे को विवश करते है। वे कहते है, कृपया मेरा खयाल करो या मेरा खयाल रखो। किसी से यह कहना कि मेरा खयाल करो बहुत ही लज्जाजनक और अपमानजनक है। अपने जीवन में मैंने कभी किसी काक यह नहीं कहा। मुझे ऐसी बहुत सी स्थितियाँ याद है जब ये शब्द मेरी सहायता कर सकते थे। लेकिन ये बहुत ही अपमानजनक और शर्मनाक है। यह अंहकार नहीं है, याद रखना। अहंकारी व्यक्ति तो चाहता है कि सबसे पहले उसका खयाल किया जाए, क्योंकि वह कोई साधारण आदमी नहीं है। विनम्र व्यक्ति तो कभी यह नहीं कहेगा कि उसका खयाल किया जाए अगर किया जाए तो वह मना कर देगा।

मैं विश्वविद्यालय में था, एक गरीब छात्र। कई तरह के काम करके किसी तरह मैं विश्वविद्यालय में आया था। फिर संयोगवश ही मैंने राष्ट्रीय अंतर्विविद्यालय बाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया। एक निर्णायक थे एस. एस. राय,जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यक्ष हैं। वे तो बस मेरे प्रेम में पड़ गए। और मेरी तरफ से भी ऐसा ही था। वे इस वाद-विवाद प्रतियोगिता के एक निर्णायक थे। उन्होंने मुझे सौ में से निन्यानवे नंबर दिए। स्वभावत: मैं जीत गया। यह बहुत महत्वपूर्ण वाद-विवाद प्रतियोगिता था। क्योंकि इसके विजेता को सरकारी मेहमान बन कर तीन महीने के लिए मिडिल ईस्ट के दौरे पर जाना था। उसे एक प्रकार से करीब-करीब राजदूत के समान ही व्यवहार मिलने वाला था। यह बहुत बड़ा अवसर था। प्रोफेसर एस.एस. राय ने मुझे सौ में से निन्यानवे नंबर दिए और दूसरों को शून्य दिया ताकि मेरी जीतने में कोई कसर न रह जाए। बाद में मैंने उनसे पूछा: आपने मेरे साथ इतना पक्षपात क्यों किया।

उन्होंने कहां: जैसे ही मैंने तुम्हारी आंखों में देखा, मैं सम्मोहित हो गया। मेरी पत्नी भी यही कहती है कि मैं तुमसे सम्मोहित हो गया हूं। नहीं तो ऐसा कैसे कर सकता था। कोई भी देखेगा कि मैंने तुम्हें सौ में से निन्यानवे नंबर दिए है और दूसरे प्रतियोगियों को शुन्य दिया है। तो मेरा पक्षपात स्पष्ट हो जाएगा।

मैंने कहा: नहीं,मैं आपसे यह नहीं पूछ रहा कि आपने मुझे निन्यानवे नंबर क्यों दिए है। वह आपकी पत्नी का प्रश्न है। शायद और लोग भी पूँछें। मैं तो यह पूछने आया हूं कि आपने मुझे शत प्रतिशत क्यों नहीं दिए।

एक क्षण के लिए तो वे भौचक्के रह गए। फिर वे हंसे और उन्होंने कहा कि मैं मस्तो बाबा का शिष्य था। उन्होंने मुझसे ठीक ही कहा था जब तुम इस व्यक्ति को देखोगे तो तुम्हें मेरी जरूरत न रहेगी। और गायब होने से दो तीन साल पहले मस्तो बाबा ने यह कहा था। अब मैं तुमसे सच कह रहा हूं कि मैं तुमसे सम्मोहित नहीं हुआ था। हुआ यह था कि तुम्हारी आँखो ने मुझे उनकी आँखो की याद दिला दी। मैंने पागल बाबा को भी देखा है। और यह पागल बाबा दोनों की....बड़े आर्श्चय की बात है कि तुम्हारी आंखें उन दोनों की आंखों जैसी है। कैसे यह होता है,मुझे नहीं मालूम।

मैंने कहा: यह आंखों कि बात नहीं हैं। यह उनकी पारदर्शिता है जिसके कारण वे एक सी दिखाई देती है।

मुझे इस बात की खुशी है कि मेरी आंखों में आपको उन दोनों की झलक मिली और इनके कारण आपको उनकी याद आई। इससे बड़ा पुरस्कार मुझे क्या मिल सकता है। किंतु फिर भी मुझे आप से यह पूछना है कि आपने मुझे शत प्रतिशत नंबर क्यों नहीं दिए।

उन्होंने कहा: मैं एक गरीब प्रोफेसर हूं। अगर मैं तुम्हें शत प्रतिशत नंबर देता और दूसरे ग्यारह प्रतियोगियों को शून्य देता तो लोगों को लगता के मैंने न्याय नहीं किया। मैंने सच में न्याय किया है। लेकिन यह कौन समझेगा। इसे समझने के लिए मुझे मस्तो बाबा और पागल बाबा कहां मिलेंगे। मैंने तो अपनी कायरता के कारण तुम्हें निन्यानवे प्रतिशत नंबर दिए है।

उन्होंने इतनी सरलता से अपने आपको कायर कहा कि मैं उनकी दस सरलता और सच्चाई के कारण उनके प्रेम में पड़ गया। हालाकि उन्होंने सच में बहुत ही बहादुरी का काम कर दिया था। एक प्रतिशत से क्या फर्क पड़ जाता। निन्यानवे प्रतिशत एक व्यक्ति को और शून्य प्रतिशत बाकी सभी को। यह एक ही बात है, उन्होंने मुझे सौ प्रतिशत या उससे भी ज्यादा दिए होते।

बस, उस वाद-विवाद प्रतियोगिता के कारण और पागल बाबा और मस्तो बाबा की याद के कारण मैं सागर विश्वविद्यालय में पढ़ने लगा। उस समय प्रोफेसर एस. एस. राय वहीं थे। मैंने कहा: अगर मुझे एम. ए. करना है तो आपके पथ-प्रदर्शन में ही करूंगा। पागल बाबा और मस्तो बाबा दोनों यही चाहते थे कि कभी को ई जरूरत पड़ जाए तो मुझे उसके लिए पहले से ही तैयार रहना चाहिए। लेकिन मुझे कभी कोई जरूरत हुई नहीं, इतना ही नहीं कि मुझे कभी कोई चीज की जरूरत नहीं पड़ी बल्कि चारों ओर से लोग मुझ पर चीजें बरसाते रहे है। इसीलिए तो मैं यह कहा है कि आरंभ से ही मेरे साथ कुछ ठीक हो गया है।

एस. एस. राय मेरे प्रियतम शिक्षकों में से एक थे। पूरी क्लास के सामने वे बेझिझक मुझसे कह पाते थे मैं उठ कर उन्हें वह बात समझाऊं जो उनकी समझ में नहीं आ रही है। और मुझे ऐसा करना पड़ता। एक दिन मैंने उनसे कहा: राय साहब। यही मैं उन्हें बुलाता था—यह तो अच्छा नहीं लगता कि आप मुझसे समझाने के लिए कहते है, मैं आपका छात्र हूं।

उन्होंने कहा: अगर पागल बाबा तुम्हारे पैर छू सकेत थे और मस्तो बाबा तुम्हारे पैर छूने के अतिरिक्त तुम्हारी उचित-अनुचित हर प्रकार की मांग को पूरा कर सकते थे। तो मैं क्लास में तुमसे क्यों न पूछ सकता। मैं तो एक छोटा सा आदमी हूं।

सैकडों शिक्षकों और प्रोफेसरों को मैं जानता हूं, लेकिन प्रोफेसर राय इन सबसे अलग थे। वे अत्यंत प्रामाणिक और सच्चे व्यक्ति थे। मैं जो कहता उसे वे इतना पंसद करते थे कि अपने लेक्चर में वे मुझे उद्धृत करते थे। और स्पष्ट कहते थे कि यह मेरा वक्तव्य है। इसलिए अन्य छात्र मुझसे जलते थे। दर्शन शस्त्र विभाग के अन्य दूसरे प्रोफेसर मुझसे जलते थे। तुम्हें आश्चर्य होगा जान कर कि उनकी पत्नी को भी मुझसे ईर्ष्या होती थी। संयोग से यह मुझे पता चला। एक दिन मैं उनके घर गया, तो उनकी पत्नी ने कहा: क्या, अब तुम हमारे घर भी आने लगे। वे तो तुम्हारे लिए पागल हो गए है। जब से तुम उनके विभाग में पढ़ने लगे हो, हमारे दांपत्य जीवन में दरार पड़ गई है।

मैंने कहा: अब मैं दुबारा इस घर में कभी नहीं आऊँगा, लेकिन याद रखिएगा कि इससे आपकी बात बनेगी नहीं। एक दिन आपको मेरे पास आना पड़ेगा।

और इसके बाद मैं उनके घर कभी नहीं गया। कोई एक साल के बाद उनकी पत्नी को मेरे पास आना पडा और मुझसे क्षमा मांगते हुए उसने कहा, अब तुम ही हम दोनों में सुलह करा सकते हो।

मैंने कहा: पति-पत्नियों को जोड़ने या तोड़ने का काम अभी मैंने शुरू नहीं किया है। आपको इंतजार करना पड़ेगा।

जब वे बहुत रोई और गिड़गिडाई तो मुझ उनके घर जाना ही पडा। मैंने प्रोफेसर एस. एस. राय से कुछ नहीं कहा, केवल उनका हाथ पकड़ कर उनके पास एक घंटा बैठा रहा और एक घंटे बाद चला आया। एक शब्द भी नहीं बोला। और सब ठीक हो गया। यह कीमिया काम कर गई। मौन में अपना जादू है।

क्या समय समाप्त हो गया, तो बस करें।

सत्र—35 अल्लाउद्दीन खां और पं रविशंकर

ओ. के.। मैं रविशंकर को सितार बजाते हुए सुना है। हम जो सोच सकें, वे सब गुण उनमें है। उनका व्यक्तित्व गायक का है। अपने वाद्ययंत्र पर उनका पूर्ण अधिकार है। और उनमें नवीनता उत्पन्न करने की योग्यता है। जो कि शास्त्रीय संगीतज्ञों में दुर्लभ ही होती है। रविशंकर को नवीनता से बहुत प्रेम है। इन्होंने यहूदी मैन हून की वायलिन के साथ अपनी सितार की जुगल बंदी की है। दूसरा कोई भी भारतीय सितारवादक इसके लिए तैयार नहीं होता। क्योंकि इसके पहले किसी ने ऐसा प्रयोग नहीं किया। वायलिन के साथ सितार वादन। क्या तुम पागल हो? परंतु नये की खोज करने वाल लोग थोड़े पागल ही होते है। इसीलिए तो वे नवीनता को जन्म दे सकते है।

तथाकथित स्वस्थ दिमाग वाले लोग सुबह से रात तक परंपरागत जीवन ही जीते है। रात से सुबह तक, कुछ कहा ही नहीं जाना चाहिए—नहीं कि कहने में मुझे कुछ डर है। लेकिन मैं उनकी बात कर रहा हूं। वे आजीवन लकीर के फकीर बने रहते है और परंपरागत नियमों के आधार पर ही चलते है। वे कभी भी निधार्रित पथ से जरा भी इधर उधर नहीं होते।

परंतु नये का सृजन करने वालों को परंपरा और रूढ़ि के बाहर जाना ही पड़ता है। कभी-कभी परंपरा से हट कर भी चलना चाहिए। नियमों को न मानने पर जोर दिया जाना चाहिए। और इससे बहुत लाभ होता है—मेरी इस बात पर विश्वास करो। इससे फायदा होता है। क्योंकि इससे सदा कुछ नया उजागर हो जाता है। अपने ही भीतर छिपा हुआ अचानक उजागर हो जाता है। माध्यम चाहे कुछ भी हो—सितार, वायलिन या बांसुरी—बजाने वाला भीतर से तो वही है। अलग-अलग रास्ते उसी बिंदु पर पहुंचाते है। वर्तुल की भिन्न-भिन्न रेखाएं एक ही केंद्र पर पहुँचती है। नवीनता उत्पन्न करनेवाले लोगों को कुछ सनकी होना ही होता है। रूढ़ि मुक्त,और रवि शंकर सचमुच रूढ़ि मुक्त है।

पहला, वे एक पंडित है, ब्राह्मण है और उन्होंने एक मुसलमान लड़की से शादी की भारत में तो ऐसा कोई सोच भी नहीं सकता कि ऐ ब्राह्मण मुसलमान लड़की से शादी कर ले। रविशंकर ने ऐसा किया आरे वह भी किसी साधारण मुसलमान लड़की से नहीं बल्कि अपने गुरु की बेटी से विवाह कर लिया।

वह तो और भी अपरंपरागत हो गया। इसका मतलब यह है कि वर्षो तक उन्होंने इस बात को अपने गुरु से छिपाया। जैसे ही गुरु को इस बात का पता चला वैसे ही उन्होंने इसकी अनुमति दे दी। और सिर्फ अनुमति ही नहीं दी, साथ में स्वयं ने इस विवाह का आयोजन भी किया।

उनका नाम अल्लाउद्दीनखान था। और ये तो रविशंकर से भी अधिक क्रांतिकारी थे। मैं मस्तो के साथ उनसे मिलने गया था। मस्तो मुझे अनूठे लोगों से मिलाते थे। अल्लाउदीन खान तो उन दुर्लभ लोगों में से अति विशिष्ट थे। मैं कई अनोखे लोगो से मिला हूं, किंतु अल्लाउदीन जैसा दूसरा दिखाई नहीं दिया। वे अत्यंत वृद्ध थे। सौ वर्ष की उम्र पूरी करने के बाद ही उनकी मृत्यु हुई।

जब मैं उनसे मिला तो वे जमीन की और देख रहे थे। मस्तो ने भी कुछ नहीं कहा। मेरी समझ में कुछ नहीं आया। मैंने मस्तो को ची कुटी भरी, किंतु मस्तो फिर चुप रहे—जैसे कि कुछ भी नहीं हुआ। तब मैंने मस्तो को आरे भी ताकत से ची कुटी काटी। फिर भी उन पर कोई असर नहीं हुआ। तक तो मैंने ची कुटी काटने में अपनी पूरी ताकत लगा दी। और तब उन्होंने कहा: ओह।

उस समय मैंने अल्लाउदीनखान की उन आंखों को देखा—उस समय वे बहुत वृद्ध थे। उनके चेहरे की रेखाओं पर अंकित सारे इतिहास को पढ़ा जा सकता था।

उन्होंने सन अठारह सौ सत्तावन में हुए भारत के प्रथम स्वतंत्रता-विद्रोह को देखा था। वह उनको अच्छी तरह से याद था। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि उस समय वे इतने बड़े तो अवश्य रहे होंगे कि उस समय की घटनाओं को याद रख सकें। उन्होंने सारी शताब्दी को गुजरते देखा था। आरे इस अवधि में वे केवल सितार ही बजाते रहे। दिन में कभी आठ घंटे, कभी दस घंटे, कभी बारह घंटे। भारतीय शास्त्रीय संगीत की साधना बहुत कठिन है। यदि अनुशासित ढंग से इसका अभ्यास न किया जाए तो इसकी निपुणता में कसर रह जाती है। संगीत पर अपना अधिकार जमाए रखने के लिए सदा उसकी तैयारी में लगे रहना पड़ता है। इसके अभ्यास मे जरा सी भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इसकी प्रस्तुति में वह त्रुटि तत्क्षण खटक जाती है।

एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ ने कहा है: अगर मैं तीन दिन तक अभ्यास न करूं, तो श्रोताओं को इसका पता चल जाता है। अगर मैं दो दिन अभ्यास न करूं तो संगीत के विशेषज्ञों को पता चल जाता है। और अगर मैं एक दिन अभ्यास न करूं तो मेरे शिष्यों को मालूम हो जाता है। जहां तक मेरा अपना प्रश्न है, मुझे तो निरंतर अभ्यास करना पड़ता है। एक क्षण के लिए भी मैं इसे छोड़ नहीं सकता। अन्यथा तुरंत मुझे खटक जाता है। कि कहीं कुछ गड़बड़ है। रात भी की अच्छी नींद के बाद सुबह मुझे कुछ खोया-खोया सा लगा है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत बहुत ही कठोर अनुशासन है। परंतु यदि तुम इस अनुशासन को अपनी इच्छा से अपने ऊपर लागू करो तो यह तुम्हें यथेष्ट स्वतंत्रता भी देता है। सच तो यह है कि अगर समुद्र में तैरना हो तो तैरने का अभ्यास अच्छी तरह से करन पड़ता है। और अगर आकाश में उड़ना हो तो बड़े कठोर अनुशासन की आवश्यकता होती है। लेकिन यह किसी ओर के द्वारा तुम्हारे ऊपर थोपा नहीं जा सकता। सच तो यह है कि जब कोई दूसरा तुम पर अनुशासन ला दे तो यह बहुत अप्रिय लगता है। अनुशासन शब्द के अप्रिय हो जाने का मुख्य कारण यहीं है। अनुशासन शब्द वास्तव में पर्यायवाची बन गया है माता-पिता, अध्यापक जैसे लोगो की कठोरता का, जो अनुशासन के बारे में कुछ भी नहीं जानते। उनको तो इसका स्वाद भी मालूम नहीं।

संगीत का वह गुरु यह कह रहा था कि ‘अगर मैं कुछ घंटे भी अभ्यास न करूं तो दूसरे किसी को तो पता नहीं चलता परंतु फर्क मालूम हो जाता है। इसलिए इसका अभ्यास निरंतर करते रहना होता है—और जितना ज्यादा तुम अभ्यास करो, उतना ही ज्यादा अभ्यास करने का अभ्यास हो जाता है और वह आसान हो जाता है। तब धीरे-धीरे अनुशासन अभ्यास नहीं बल्कि आंदन हो जाता है।

मैं शास्त्रीय संगीत के बारे में बात कर रहा हूं, मेरे अनुशासन के बारे में नहीं। मेरा अनुशासन तो आरंभ से ही आनंद है। शुरूआत से ही आनंद की शुरूआत है। इसके बारे में मैं बाद में आप लोगों को बताऊंगा।

मैंने रविशंकर को कई बार सुना है उनके हाथ में स्पर्श है, जादू का स्पर्श है, जो कि इस दुनिया में बहुत कम लोगों के पास होता है। संयोगवश उन्होंने सितार को हाथ लगाया और इस पर उनका अधिकार हो गया। सच तो यह है कि उनका हाथ जिस यंत्र पर भी पड़ जाता उसी पर उनका अधिकार हो जाता। अपने अपन में यंत्र तो गौण है, महत्वपूर्ण है उसको बजाने बाला।

रविशंकर तो अल्लाउदीनखान के प्रेम में डूब गए। और अल्लाउदीनखान की महानता या ऊँचाई के बारे में कुछ भी कहना बहुत मुश्किल है। हजारों रवि शंकरों को एक साथ जोड़ देने पर भी वे उन ऊँचाई को छू नहीं सकते। अल्लाउदीनखान वास्तव में विद्रोही थे। वे संगीत के मौलिक स्त्रोत थे और अपनी मौलिक सूझ-बूझ से उन्होंने इस क्षेत्र में अनेक नई चीजों का सृजन किया था।

आज के प्राय: सभी भारतीय बड़े संगीतज्ञ उनके शिष्य रह चुके है। आदर से उन्हें बाबा' कहा जाता था। ऐसा अकारण ही नहीं है कि उनके चरण-स्पर्श करने के लिए दूर-दूर से सब प्रकार के कलाकार—नर्तक, सितारवादक, बांसुरी वादक, अभिनेता आदि आते थे।

मैंने उन्हें जब देखा तो वे नब्बे वर्ष पार कर चुके थे। उस समय वे सचमुच ' बाबा' थे और यही उनका नाम हो गया था। वे संगीतज्ञों को विभिन्न वाद्ययंत्र बजाना सिखाते थे। उनके हाथ में जो भी वाद्ययंत्र आ जाता वे उसको इतनी कुशलता से बजाते मानों वे जीवन भर से उसी को बजा रहे है।

मैं जिस विश्वविद्यालय में पढ़ता था वे उसके नजदीक ही रहते थे—बस कुछ ही घंटों का सफर था। कभी-कभी मैं उनके पास जाता था। तभी जाता जब वहां कोई त्यौहार न होता। वहां पर सदा कोई न कोई त्यौहार मनाया जाता था। शायद मैं ही एक ऐसा व्यक्ति था जिसने उनसे पूछा कि ' बाबा' मुझे किसी ऐसे दिन का समय दो जब यहां पर कोई त्यौहार न हो।

उन्होंने मेरी और देख कर कहा: तो अब तुम उन दिनों को भी छीन लेने आ गए हो। और मुस्कुरा कर उन्होंने मुझे तीन दिन बताए। सारे बरस में केवल तीन दिन ही ऐसे थे जब वहां पर कोई उत्सव नहीं होता था। इसका कारण यह था कि उनके पास सब प्रकार के संगीतज्ञ आते थे—ईसाई,हिन्दू, मुसलमान,। वे उन सबको अपने-अपने त्यौहार मनाने देते थे। वे सच्चे अर्थों में संत थे और सबके शुभचिंतक थे।

मैं उनके पास उन तीन दिनों में ही जाता था जब वे अकेले होते थे और उनके पास कोई भीड़-भीड़ नहीं होती थी। मैंने उनसे कहा कि ' मैं आपको किसी तरह से परेशान नहीं करना चाहता। आप जो करना चाहें करें—अगर आप चुप बैठना चाहते है तो चुप रहिए। आप अगर वीणा बजाना चाहते है तो वीणा बजाइए। अगर कुरान पढ़ना चाहे तो कुरान पढ़िए। मैं तो केवल आपके पार बैठने आया हूं। आपकी तरंगों को पीने को आया हूं। मेरी इस बात को सुन कर वे बच्चे की तरह रो पड़े। मैने उनके आंसुओं को पोंछते हुए उनसे पूछा: क्या अनजाने में मैंने आपके दिल को दुखा दिया है।

उन्होंने कहा: नहीं-नहीं। तुम्हारी बातों से तो मेरा ह्रदय द्रवित हो उठा है और मेरी आंखों से आंसू उमड़ आए है। मेरा इस प्रकार रोना अनुचित है। मैं इतना बूढा हूं। परंतु क्या प्रत्येक व्यक्ति को सदा उचित व्यवहार ही करना चाहिए।

मैंने कहा: नहीं, कम से कम तब तो नहीं जब मैं यहां हूं।

यह सुन कर वे हंस पड़े। उनकी आँखो में आंसू थे और चेहरे पर हंसी थी...दोनों एक साथ। बहुत ही आनंददायी स्थिति थी।

मस्तो मुझे उनके पास ले गए थे। क्यों, इसका उत्तर देने से पहले मैं थोड़ी से कुछ और बातें कहूँगा।

मैंने दूसरे महन सितारवादक विलायत खान को भी सुना है। इस कला में वे शायद रविशंकर से भी आगे है। परंतु अपनी इस कला में कोई नवीनता उत्पन नहीं करते। वे पूर्णत: शास्त्रीय है। उन्हें सुन कर तो मुझे भी शास्त्रीय संगीत से प्रेम हो गया। यूं तो मुझे कुछ भी शास्त्रीय पसंद नहीं है। किंतु वे इतना अच्छा सुंदर बजाते है कि तुम कुछ कर ही नहीं सकते, तुम्हें उसके प्रेम में पड़ ही जाना पड़ेगा। तुम्हारे हाथ में कुछ नहीं होता। सितार पर उनका हाथ पड़ते ही श्रोता अपने वश में नहीं रहता। विलायत खान का संगीत शुद्ध शास्त्रीय संगीत है। वे अपने संगीत में किसी प्रकार की मिलावट पंसद नहीं करते। उन्हें कुछ भी प्रचलित पंसद नहीं है। मेरा अभिप्राय ' पॉप ' से है क्योंकि पश्चिम में तो जब तक तुम पॉप न कहो कोई समझेगा ही नहीं कि पॉपुलर का क्या मतलब होता है। वास्तव में 'पॉप ' से तात्पर्य होता है। प्रचलित से वास्तवमें पॉप शब्द अँग्रेजी के पॉपुलर शब्द का संक्षिप्त रूप है। पॉपूलर को काट-छांट कर ' पॉप' बना दिया गया है।

मैंने विलायत खान को सुना है। मैं तुम्हे अपने एक बहुत संपन्न शिष्य की कहानी सुनाना चाहता हूं। यह सन उन्नीस सौ सत्तर की बात है। उसके बाद तो मुझे उनका कोई समाचार नहीं मिला। मैंने उनके बारे में पूछताछ की तो मालूम हुआ कि वे अभी वहीं पर है। परंतु ' संन्यास से बहुत से लोग डर गए—विशेषत: धनी लोग ।

यह भारत के अति संपन्न परिवारों में से एक था। मुझे बड़ी हैरानी हुई जब ऐ दिन उनकी पत्नी ने मुझसे कहा: मैं केवल आपको ही यह बात बता सकती हूं कि पिछले दस वर्ष से मुझे विलायत खाल से प्रेम है।

मैंने कहा: तो इसमे गलत क्या है। विलायत खान, कुछ भी गलत नहीं है।

उसने कहा: आप समझे नहीं। मेरा मतलब उनकी सितार से नहीं, मैं तो उनके बारे में कह रही हूं।

मैंने कहा: हां,उनके बिना तुम्हारे लिए उनकी सितार का क्या मतलब।

यह सुनते ही अपने माथे को हाथ से ठोंकते हुए उसने कहा: आपकी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।

मैंने कहा: हां, लगता तो कुछ ऐसा ही है। किंतु यह तो मैं समझ गया हूं कि तुम विलायत खान से प्रेम करती हो। यह तो बिलकुल ठीक ही है। मैं तो सिर्फ कह रहा हूं कि इसमें कुछ भी गलत नहीं है।

पहले तो उसने मुझे अविश्वास से देखा। क्योंकि भारत में अगर ऐसी बात किसी धार्मिक आदमी से कही जाए कि एक हिंदू पत्नी किसी मुसलमान संगीतज्ञ, गायक या नर्तक से प्रेम करती है। तो वह निश्चित ही उसे आर्शीर्वाद नहीं देगा। संभावना तो यही है कि वह अभिशाप ही देगा। और अगर वह इसके लिए उसे क्षमा कर दे तो वह अत्यंत आधुनिक दृष्टिकोण माना जाएगा।

मैंने उससे कहा: इसमें तो कोई बुराई नहीं। कुछ भी गलत नहीं है। प्रेम करो, तुम जिसे भी चाहो उससे प्रेम करो। और प्रेम में जाति और घर्म बाधा नहीं डाल सकते।

उसने मेरी और ऐसे देखा जैसे कि मुझे किसी से प्रेम हो गया है। मानो वह कोई संत है जिसे मैं अपने प्रेम की बात बता रहा हूं। मैंने कहा: तुम तो मुझे ऐसे देख रही हो जैसे की मुझे उनसे प्रेम हो गया है। यह भी सच है। मुझे उनके सितार वादन से बहुत प्रेम है लेकिन उनसे नहीं। वे बहुत ही घमंडी है। अधिकांश कलाकार इसी प्रकार अहंकारी और घमंडी होते है।

रवि शंकर तो और भी अधिक अहंकारी है। शायद इसलिए कि वे ब्राह्मण है। यह तो ऐसे है जैसे दो बीमारियां एक साथ हो—एक तो ब्राह्मण और दूसरे शास्त्रीय संगीतज्ञ। तीसरा कारण यह भी है कि इन्होंने महान अल्लाउदीनखान की बेटी से विवाह किया है। और ये उनके दामाद है।

अल्लाउदीनखान इतने सम्मानित थे कि उनका दामाद बनना अपने आप में स्वंय एक प्रमाण था कि तुम एक बहुत बड़े कलाकार हो। परंतु इनके दुर्भाग्य से मैं मस्तो को भी सुन चुका था जैसे ही मैंने उनको सुना मैंने कहा: अगर दुनिया तुम्हारे बारे में जानती तो वह इन सब रवि शंकरो और विलायत खानों को भूल जाती और इन्हें माफ कर देती।

मस्तो ने कहा: दुनिया को मेरे बारे में कभी मालूम ही न होगा। केवल तुम्हीं मुझे सुन सकोगे।

तुम लोगों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि मस्तो बहुत से वाद्ययंत्र को बजाते थे। वे बहुआयामी प्रतिभावान व्यक्ति थे। वे जिस चीज को हाथ लगाते वही सुंदर बन जाती। वे चित्र भी बनाते थे। पिकासो से कहीं अधिक अर्थ बाले और कहीं अधिक सुंदर। परंतु उन्होंने अपने इस सब चित्रों को नष्ट कर दिया। उन्होंने कहा कि मैं समय की रेत पा कोई पद-चिन्ह नहीं छोड़ना चाहता ।

पर कभी-कभी वह पागल बाबा के साथ संगीत बजाते थे। इसलिए मैंने उनसे पूछा पागल बाबा के बारे में तुम्हें क्या कहना है।

उन्होंने कहा: मेरा सितार तो तुम्हारे लिए आरक्षित है। पागल बाबा ने भी उसे नहीं सुना है। पागल बाबा के लिए कुछ और ही आरक्षित है, कृपा करके उसके बारे में तुम मुझसे मत पूछना। तुम शायद ही उसे सुनो।

स्वभावतः: मैं जानना चाहता था कि वह क्या है। मैं उत्सुक था, फिर उनसे कहा: मैं अपनी उत्सुकता को अपने भीतर दबाए रखूंगा और किसी से कुछ नहीं पूछूंगी। मैं जानता हूं कि इसके बारे में मैं अगर बाबा से पूछूं तो बाबा मुझसे झूठ नहीं बोलेंगे, परंतु मैं उन से नहीं पूछूगां। इतना मैं तुमसे वादा करता हूं।

उन्होंने हंस कर कहा: अच्छा तो सुनो जब बाबा इस संसार में नहीं रहेंगे तो मैं उस वाद्ययंत्र को तुम्हारे लिए अवश्य बजाऊंगा। इसके पहले तो मैं तुम्हारे लिए या किसी और के लिए नहीं बजा सकता।

और जिस दिन पागल बाबा मृत्यु हुई, मेरे मल में यह पहला प्रश्न उठा: ‘ वह वाद्ययंत्र कौन सा है। यही तो समय है....इस उत्सुकता के लिए मैंने अपने आपको बहुत कोसा परंतु इसका कोई असर नहीं हुआ और बार-बार यही प्रश्न मेरे सामने खड़ा हो जाता—मस्तो काह वह वाद्ययंत्र कौन सा है।

मनुष्य में उत्सुकता बहुत गहरी होती है। ईव को सांप ने नहीं बहकाया था। उसको और अदम को कौतूहल ने बहकाया था। और यह क्रम आज तक इसी प्रकार चलता रहा है। ऐसे ही सदा होता रहेगा। अजीब बात है कि लोग कौतूहल का ही पीछा करते है। यह कोई बड़ी बात नहीं थी। मैंने मस्तो को दूसरे बाद्य-यंत्रो को बजाते सुना था। शायद वे इसको बजाने में अधिक कुशल हों। तो क्या हुआ। एक आदमी अभी-अभी मरा है और तुम यही सोच रहे हो कि मस्तो अब तुम्हारे लिए कौन सा यंत्र बजाएगा....किंतु यह स्वाभाविक है, मानव स्वभाव ऐसा ही होता है।

गनीमत है कि मनुष्य के सिर में खिड़कियाँ नहीं लगी हुई हैं, नहीं तो सबको मालूम हो जाता कि इस सिर के भीतर क्या चल रहा है। तब तो मुसीबत हो जाती। क्योंकि लोगों ने अपने चेहरे पर जो मुखौटे लगा रखे है वे बिलकुल भिन्न है, झूठ है। अपने भीतर वे क्या है। हजारों चीजें एक साथ प्रवाहित हो रही है।

अगर हमारे सिर में खिड़कियाँ लगी होतीं तो जीना मुश्किल हो जाता। परंतु मुझे यह विचार अच्छा लगा...इससे लोगों को मौन होने में बहुत सहायता मिलती, क्योंकि तब कोई भी लोगो के सिरों में झांक कर देखता तो उसे मालूम होता कि वहां तो देखने को कुछ भी नहीं है। मौन लोग मुस्कुरा कर अपने पड़ोसियों की और देखते और कहते: देखो भाई देखो। जितना चाहो देखो। परंतु सर पर खिड़की ही नहीं है। वह तो बिलकुल बंद है।

बाबा की मृत्यु के समय मैं केवल मस्तो के वाद्य-यंत्र के बारे में ही सोच रहा था। मुझे माफ करना, किंतु मैंने सारी सच्ची बातें बताने का फैसला किया है। और तुम लोग यह याद रखो कि मैं सारा सच बता कर ही रहूंगा। इसमें चाहे कितना ही समय क्यों न लग जाए। देव गीत, देवराज और आशु, इसे कहने में मुझे चाहे बरसों लग जाए और तब मैं तुमसे कहूंगा कि इस पुस्तक को जल्दी समाप्त करो। इसलिए इसके ढेर को बढ़ाते मत जाओ।

कल का भरोसा मत करो। जो करना है आज ही करो, कल पर कुछ मत छोड़ो: तभी तुम कुछ कर सकोगे। अनजाने ही तुम जाल में फंस गए हो। और तुम समझते हो कि मैं फंस गया हूं। गलती से भी ऐसा मत सोचना। वास्तव में मैंने तुम तीनों को फांस लिया और अब यह फंदा रोज अधिक से अधिक मजबूत होता जाएगा, अब कोई बचाव नहीं है।

हां, एक महिला—इस कहानी में कहीं पर उनका जिक्र आएगा। क्योंकि उनका मेरे लिए बहुत महत्व है। उन्होंने मुझसे कुछ ऐसा ही कहा था। एक तरह से वे थोड़ी विशेष है। क्योंकि उन्होंने जो कुछ भी मुझे दिया,वह सब पहला था। पहली घड़ी, पहला टाईपराइटर, पहली कार, पहला टेप-रिकार्डर पहला कैमरा, भरोसा नहीं

आता कि उन्होंने ऐसा कैसे किया, किंतु ये सब चीजें मुझे सबसे पहले उनसे ही मिली। उनके बारे में मैं बाद में बताऊंगा। उस समय आए तो मुझे याद दिलाना।

उन्होंने मुझे यह बताया कि उनके दिल मर यही एक बोझ है कि जब उनकी सास मरी तो उन्हें बहुत भूख लगी थी।

मैंने कहा: भूख लगने में क्या बुराई है।

उन्होंने कहा: क्या आप इसे ठीक समझते है कि मेरे पति की मां मेरे सामने मरी पड़ी है और मुझे इतनी भूख लगी कि मैं अच्छे-अच्छे भोजन के बारे में सोच रहीं हूं—पराठा, भजिया, पुलाव व रसगुल्ला। मैंने कहा कभी किसी को इस बात के बारे में बताया तो नहीं है। उन्होंने कहा, क्योंकि मुझे मालूम है कि इसके लिए मुझे कोई माफ नहीं करेगा।

मैंने कहा: इसमें तो कुछ गलत नहीं हैं। तुम भी क्या करती, तुमने तो उसको मारा नहीं था। खैर, जो भी हो,देर-अबेर, कभी न कभी तो खाना शुरू करना ही पड़ता है। जितना जल्दी उतना ही अच्छा। और जब खाने का मन हो तो अपनी मन पंसद चीजों का याद आना स्वभाविक है।

उसने कहा: क्या ये सच है।

मैंने कहा: और कितनी बार मुझे यह कहना पड़ेगा।

जब उन्होंने यह बात बताई तो मैं उनके भाव को समझ गया कि उन्हें अपने मन में कैसा लगा होगा। क्योंकि मुझे याद आया जब बाबा मरे थे। तो जो पहला विचार मुझे आया था—ये विचार भी अजीब हैं—तुरंत मैंने यही सोचा का कि मस्तो जिस वाद्य को बजाता है वह कौन सा है। वह जैसे ही मैंने मस्तो की और देखा मैंने कहा: अब।

उसने कहा: अच्छा।

हम दोनों ने दूसरा कोई शब्द नहीं कहा। वह समझ गया और उसने मेरे लिए पहली बार वीणा बजाई। इससे पहले उसने मेरे सामने वीणा कभी नहीं बजाईं थी। यह यंत्र गिटार जैसा है, किंतु उससे कहीं अधिक जटिल है। और ऐसी ऊँचाइयों को छूता है जिसको सितार भी नहीं छू सकता है। सितार न तो इसकी ऊँचाई तक पहुंच सकती है। न इसकी गहराई को छू सकती है।

मैंने कहा: मस्तो, यह तो वीणा है। तुम इसके अनुभव को मुझसे छिपाना चाहते थे।

उन्होंने कहा: नहीं कभी नहीं, लेकिन जब मैं बाबा के साथ था और तुम्हें अभी नहीं जानता था तब मैंने स्वयं ही यह वादा किया था कि जब तक वे जीवित है तब तक मैं इस यंत्र को किसी और के लिए नहीं बताऊंगा। अब तुम मेरे लिए बाबा हो और मैं सदा यही तुम्हें मानूँगा। अब मैं इस वीणा को तुम्हारे लिए बजा सकता हूं। में तुमसे कुछ छिपा नहीं रहा था। किंतु तब तुम मुझसे परिचित नहीं थे जब मैंने यह वादा किया था। अब यह समाप्त हो गया है।

एक क्षण के लिए तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि उसने मुझसे कितना छिपा रखा था। मैंने कहा: मस्तो, दो मित्रों के बीच यह बात ठीक नहीं है।

उसने जमीन की और देखा और कुछ नहीं कहा। जीवन में पहली बार मैंने उसे ऐसे मूड में देखा था।

मैने उससे कहा: अब न तो अफसोस करने की, न उदास होने की जरूरत है। जो हो गया सो हो गया। अब इससे हमें कोई मतलब नहीं है।

उसने कहा: मुझे अफसोस नहीं हो रहा था। मैं तो शर्मिंदा हो रहा था। मुझे मालूम है कि अफसोस या खेद को जो जल्दी मिटाया जो सकता है। परंतु शर्मिंदगी....इसे चाहे जितना मिटाओ यह मिटती ही नहीं है।

शर्मिंदा होने का भाव तो महान लोगों में ही होता है। साधारण लोग तो शर्मिंदा होता ही नहीं। उन्हें मालूम ही नहीं कि शर्मिंदगी क्या होती है। अचानक मुझे एक बात याद आई.... समय क्या हुआ है।

दस बज कर बाईस मिनट, ओशो।

अच्छा।

मुझे समय की याद नहीं आई। तुम लोगों को यह मालूम है कि मुझे कभी समय का ध्यान नहीं रहता। कभी-कभी ज्यादती भी हो जाती है। तुम लोगों को भूख लगी होगी। जल्दी से जल्दी तुम मैगदेलीना में पहुंच जाना चाहते हो। और मैं हूं कि बोलता ही चला जाता हूं। अब तुम तो मुझे रोक नहीं सकते हो। मैं स्वय ही आपने आप को रोक सकता हूं। जब मैं तुम्हें रोकने को कहूं तभी तुम भी रूक सकते हो। यह एक बहुत ही पुरानी आदत है। नहीं, मुझे समय की नहीं किसी और बात कि याद आई।

मस्तो मेरी नानी के घर ठहरा हुआ था। वह मेरा अतिथि गृह था। मेरे पिता के घर में तो घर वालों के लिए ही जगह नहीं होती थी, अतिथि के बारे में तो क्या सोचना वहां सदा बहुत से लोगों की भीड़-भाड़ जमा रहती थी। उतनी भीड़ तो नोआज़-आर्क में भी नहीं होती। वहां परतों सब प्रकार के प्राणी रहते थे। वहां की दुनियां बड़ी अजीब थी। किंतु मेरी नानी का घर प्राय: खाली रहता था—ठीक जैसा मुझे पसंद है।

मैं जो कहना चाहता हूं उसको अंग्रेजी का 'एंप्टी' शब्द अभिव्यक्त नहीं कर सकता। उपयुक्त शब्द है—शून्य, अब इससे आपको डाक्टर इकलींग की याद नहीं आनी चाहिए, क्योंकि मैंने उसे ' शून्यो' नाम दिया है। पर बेचारा इकलींग चीनी जैसा लगता है। यह नाम भी कैसा है इकलींग। वह अमरीकन नहीं हो सकता। जब उसने अपनी दाढ़ी मुड़वाँ दी तो बिलकुल चीनी जैसा ही दिखाई देने लगा। एक दिन अचानक वह मेरे सामने पड़ गया तो मैं उसको पहचान ही न सका।

मैंने पूछा कि तुम्हें क्या हुआ।

गुड़िया ने याद दिलाया कि वह 'शून्यो' है।

मैंने कहा: अच्छा हुआ कि तुमने याद दिला दिया, नहीं तो मैं उसको पीट ही देता। वह चीनी जैसा ही दिखाई देता है। मैंने उससे पूछा: तुमने दाढ़ी क्यो मुड़ाव दी।

सच तो यह है कि अगर ड़ाक्टरों के इतिहास को देखा जाए तो हमें मालूम होता है। कि किसी अंजान कारण से सारे महान ड़ाक्टरों ने दाढ़ी रखी हुई थी। शायद उनके पास हजामत करने का समय ही नहीं था। शायद उनकी पत्नियाँ ही नहीं थी। इसलिए उनको किसी की परवाह नहीं थी। मैंने उससे पूछा कि किसने तुम्हें यह बताया है कि अमरीका में डाक्टर बनने के लिए दाढ़ी मुड़वनी पड़ती है। शून्यो से तुम फिर डाक्टर इकलींग बन गए हो। क्या तुम बिल्ली हो, कहा जाता है कि बिल्ली के नौ जीवन होते है। मिस्टर इकलींग तुम्हारे कितने जीवन है।

मेरी नानी का घर बिलकुल शून्य था। वह एक मंदिर की तरह खाली था और वे उसे बहुत ही साफ-सुथरा रखती थी। मुझे गुड़िया कई कारणों से पंसद है। एक कारण तो यहीं है। कि हर चीज को साफ रखती है। कभी-कभी तो वह सफाई के लिए मुझे भी टोक देती है। और जब वह सफाई के लिए ऐसा करती है तो मुझे उससे सहमत होना पड़ता है। वह मेरी नानी की तरह ही संवेदन शील है। स्त्री का यह गुण स्वभाविक है। परंतु शायद पुरूष के पास यह नहीं होता। पुरूष अगर गंदा हो तो हम यह सोच कर उसे सहन कर लेते है कि आखिर वह पुरूष है। परंतु अगर स्त्री गंदी हो तो सहन नहीं होती। स्त्री तो स्वभाव से ही सफाई पंसद होती है। इसलिए वह स्वयं को आरे अपने-अपने आस पास के वातावरण को अनायास ही साफ-सुथरा रखती है। और गुड़िया तो अंग्रेज है, पक्की अंग्रेज है—सारी दुनिया में केवल दाह ही पक्के अंग्रेज है—गुड़िया और सागर।

नानी सफाई का इतना ध्यान रखती थीं कि उनके लिए तो भगवान का स्थान भी सफाई के बाद ही आता था। वे दिन भर सफाई करती रहती। किसके लिए, वहीं तो केवल मैं ही रहता था। सुबह मैं घर से बाहर चला जाता था और शाम को ही वापस आता था। नानी सारा दिन सफाई में व्यस्त रहती थीं।

एक बार मैंने उनसे पूछा कि क्या तुम सफाई करते-करते थकती नहीं, और कोई भी तो तुम्हें सफाई के लिए नहीं कहता।

नानी ने कहा: इस सफाई से मुझे बहुत लाभ हुआ है। मेरे लिए यह प्रार्थना बन गई है। तुम मेरे लिए अतिथि हो। तुम यहां रहते नहीं हो। रहते हो क्या, तुम अतिथि हो, अपने अतिथि के लिए मुझे अपना घर तैयार रखना पड़ता है। भारत में अतिथि को भगवान माना जाता है। नानी के कहा: 'तुम मेरे भगवान हो।'

मैंने कहा: नानी,तुम पागल हो गई हो क्या। मैं तुम्हारा भगवान हूं। तुमने तो कभी किसी भगवान में विश्वास नहीं किया।

उन्होंने कहा: मैं तो केवल प्रेम में विश्वास करती हूं। और वह मुझे मिल गया है। अब मेरे प्रेम के इस मंदिर में तुम्हीं एकमात्र अतिथि हो। इस मंदिर को मुझे जितना साफ हो सके उतना साफ रखना है।

नानी का घर अतिथि-गृह था। सिर्फ मेरे लिए ही नहीं बल्कि मेरे मेहमानों के लिए भी। मस्तो जब भी आते वहीं ठहरते थे। मैं जिसे भी वहां लाता नानी उसकी देखभाल बहुत अच्छी तरह से करतीं। मैं उनसे कहता: नानी, इतना अधिक परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है। वे कहती: ये तुम्हारे मेहमान हैं इसलिए इनकी देखभाल तो मुझे अपने मेहमानों से भी अधिक करनी चाहिए।

मैंने नानी को मस्तो से बात करते हुए कभी नहीं देखा। कभी-कभी वे एक साथ बैठे हुए दिखाई देते। परंतु मैंने उनको आपस में बात करते हुए कभी नहीं देखा। बड़ी अजीब बात है।

मैंने नानी से पूछा: तुम उनसे बात क्यों नहीं करती, क्या वे तुम्हें अच्छे नहीं लगते है।

उन्होंने कहा: मुझे वे बहुत अच्छे लगते है। परंतु बात करने की जरूरत ही नहीं, क्योंकि कहने को कुछ नहीं है। न मुझे कुछ कहना है, न उन्हें कुछ कहना है। हम लोग तो चुपचाप बैठ कर अपना सिर हिला देते है। चुपचाप बैठना बहुत अच्छा लगता है। तुम्हारे साथ मैं बात करती हूं। तुमसे मुझे कई बातें पूछनी होती है। और तुम्हें भी मुझे बहुत कुछ बताना होता है। तुम्हारे साथ बातचीत करना बहुत अच्छा लगता है।

मेरी समझ में आ गया कि इन दोनों का संबंध दूसरे ही सतर का है। नानी का और मेरा संबंध अलग ही ढंग का था। और वही एकमात्र ढंग नहीं था। उस दिन से हम दोनों के बीच भी कम होती गई और फिर बिलकुल बंद हो गई। तब हम चुपचाप घंटों बैठे रहते।

नानी का घर बहुत ही सुंदर था। वह नदी के किनारे था। 'नदी' शब्द बोलते ही मेरे ह्रदय गीत गाने लगता है। उस नदी को मैं दुबारा नहीं देख सकूँगा। इसकी जरूरत भी नहीं है। क्योंकि मैं अपनी आँखो को बंद करके उसे देख सकता हूं। मैंने सुना है—वह स्थान अब उतना सुंदर नहीं रहा। उसके नजदीक बहुत से मकान बन गए है। दुकानें बन गई है। अच्छा खासा बाजार लग गया है। नहीं अब मैं नहीं जाना चाहता। अगर मुझे वहां जाना भी पड़े तो में अपनी आंखें बंद कर उसी पुरानी सुंदर जगह को देखना चाहता । बड़े-बड़े वृक्ष और छोटा सा मंदिर—अभी भी मुझे उसकी घंटी बजती हुई सुनाई देती है।

अभी कुछ दिन पहले एक आदमी मेरे लिए कुछ घंटी या लाया था। अजीब घंटी या थी। ऐसी तो बहुत कम दिखाई देती है। ये तिब्बत की घंटियों है। हालांकि कैलिफ़ोर्निया में बनाई गई हैं, पर इन घंटियों का डिजाइन तिब्बती है। कैलिफ़ोर्निया में बनती हैं, फिर भी इनमें कुछ सुधार हो गया है। तिब्बती घंटियों बहुत

बेडौल होती हैं। किंतु ये कांच की बनी हुई है आरे बहुत सुंदर और परिष्कृत है। तुम्हारे लिए मैं इनका वर्णन करना चाहता हूं।

ये आम प्रचलित घंटियों जैसी नहीं है। ये प्लेट जैसी है। यदि बहुत सी प्लेटों को ऐ साथ एक दूसरे के ऊपर रख दिया जाए तो हवा के झोंके से ये एक दूसरे से टकरा कर बड़ी मधुर आवाज करती है। ये घंटियों बहुत सुंदर है। कभी-कभी कैलिफ़ोर्निया में भी अच्छी चीजें बन जाती है। आमतौर पर कैलिफ़ोर्निया में बनी हुई चीजें ऐसी-वैसी ही होती है। पर कभी-कभी वे अच्छी चीजें भी करते है।

मैंने बहुत प्रकार की घंटियों देखी है। कलिम्पोंग में एक तिब्बती लामा के एक बार मुझे ऐसी ही एक तिब्बती घंटी दिखाई थी। जिसे मैं आज तक भूल नहीं सका। इसके बारे में मैं अवश्य तुम लोगों को बताना चाहता हूं। तुम उसको शायद कभी नहीं देख सकोगे, क्योंकि वह अब गायब होते हुए तिब्बत का ही विशेष अंग है। जल्दी ही यह सब गायब हो जाएगा। यह घंटी जो मैंने देखी थी सचमुच विचित्र थी।

मैं भारत में घंटियों देखी है। इसलिए मुझे भारतीय घंटियों की ही जानकारी थी। ये छत से लटकाई जाती है। और उसमें एक डंडी रहती है। इससे घंटी की एक और चोट लगाई जाती है। यह घंटी सोए हुए भगवान को जगाने के लिए होती है। मैं इसके सौंदर्य को समझ सकता हूं। आदमी को ही नहीं भगवान को भी जगना पड़ता है। परंतु यह तिब्बती घंटी तो बिलकुल अलग ही ढंग की थी। इसको छत से नहीं लटकाया जाता, इसको जमीन रखा जाता है।

मैंने कहा: क्या यह घंटी है, यह तो घंटी जैसी दिखाई नहीं देती।

उस लामा ने हंस कर कहा: आप देखते जाइए। यह कोई मामूली घंटी नहीं है। यह ऐ विशेष घंटी है।

तब उसने अपने थैले में से लकड़ी का बना हुआ एक छोटा गाल हैंडल निकाला जब वह उस हैंडल को उस तथाकथित घंटी के भीतर गोल-गोल घुमाने लगा। वह घंटी तो एक बर्तन जैसी दिखाई देती थी। थोड़ी दे दस प्रकार घूमने के बाद उसने हैंडल को ऐसी जगह पर चोट लगाई जहां पर कोई निशान बना हुआ था। और आश्चर्य उस घंटी ने एक पूरे तिब्बती मंत्र को दोहरा दिया। वह मंत्र था: मणि पद्म हूम। जब पहली बार मैंने सुना तो में अपने कानों पर विश्वास न कर सका। घंटी ने इस मंत्र को बड़ी स्पष्टता से दोहराया।

उसने कहा: ऐसी घंटी हर तिब्बती मठ में पाई जाती है, क्योंकि हम स्वयं इस मंत्र को उतनी बार नहीं दोहरा सकते जितनी बार हमें दोहराना चाहिए, इसलिए इस घंटी से दोहराते है।

मैंने कहा: वाह, क्या कहने इस घंटी के, यह गूंगी नहीं।

उसने कहा: बिलकुल नहीं, और क्या आपको मालूम है कि अगर गलत जगत पर चोट कर दी जाए तो यह चिल्ला उठेगी। यह मंत्र को तभी दोहराती है जब सही जगह पर चोट की जाती है। अन्यथा यह चीखती-चिल्लाती है। सब तरह का शोरगुल करती है, मगर मंत्र नहीं दोहराती।

मैं लद्दाख भी गया था। यह प्रदेश भारत और तिब्बत के बीच में है। अब शायद लद्दाख इस दुनिया का सबसे अधिक महत्वपूर्ण धार्मिक देश बन जाएगा जैसा कि कभी तिब्बत था। अब तो तिब्बत समाप्त हो गया है। उसकी हत्या कर दी गई है। खून कर दिया गया है। लद्दाख में मैंने ऐसी ही घंटियों देखी थी। किंतु वे बहुत बड़ी थी—मकान जैसी। तुम उनके भीतर और लटकती हुई लोहे कि छड़ी को पकड़ कर विशेष जगह पर चोट करने से अपनी इच्छानुसार किसी भी मंत्र को दोहरा सकते हो। बस उस घंटी की भाषा कि जानकारी होनी चाहिए। वह कंप्यूटर जैसी है।

देव गीत मैं क्या कह रहा था।

आप बता रहे थे कि नानी मस्तो से कभी बात नहीं करती थी, वे दोनों चुपचाप बैठे रहते थे......

बिलकुल ठीक, हमें भी अब चुपचाप बैठना चाहिए...मेरे लिए दस मिनट। भगवान के लिए—वह है या नहीं—शिथिल हो जाओ। आराम से बैठो।

सत्यम् शिवम् सुंदरम्....मैं तो हूं नहीं, और तुम तक पहुंचना चाहते हो। सब देख सकते है। क्या तुम देख सकेत हो। मैं नहीं हूं। कुछ मिनट इसे जारी रखो, बस दो मिनट क्योंकि मैं किसी चीज कि प्रतीक्षा कर रहा हूं। इसलिए थोड़ा सजग रहो। हां.....अच्छा है...

नहीं, देव गीत, तुम इतनी अच्छी पत्नी बन सकते थे, मैं हंस पड़ता,किंतु मुझे हंसना नहीं चाहिए।

ठहरो।

सत्र—36 मैं क्या कह रहा था

अभी-अभी मैं एक कहानी के बारे में सोच रहा था। मुझे नहीं मालूम कि इस कहानी को किसने रचा और क्यों? और मैं उसके निष्कर्ष से भी सहमत नहीं हूं फिर भी यह कहानी मुझे बहुत प्रिय है। कहानी बहुत सरल है। तुमने इसे सुना होगा किंतु शायद समझा नहीं होगा क्योंकि यह इतनी सरल है। यह अजीब दुनिया है। हर आदमी को यह खयाल है कि वह सरलता को समझता है। लोग जटिलता को समझने की कोशिश करते है और सरलता की और ध्यान ही नहीं देते यह सोच कर कि इसकी कोई जरूरत ही नहीं है। शायद तुमने भी इस कहानी पर अधिक ध्यान नहीं दिया होगा किंत1 जब मैं इसे तुम्हें सुनाऊंगा तो निशचित ही तुम्हें याद आ जाएगी।

कहानियां विचित्र प्राणी हैं, वे कभी मरती नहीं हैं, उनका कभी जन्म भी नहीं होता है। वे उतनी ही पुरानी है जितना आदमी। इसीलिए तो वे मुझे बहुत प्रिय है। अगर कहानी में सत्य न हो तो वह कहानी नहीं है। तब वह फिलासफी होगी या थियोसाफी होगी या एन्थ्रोपोसाफी होगी और न जाने कितनी ही '' सॉफीज '' हैं, वे सब बकवास है। नॉनसेंस है। नॉनसेंस ही लिखों, शुद्ध बकवास, पयोर नॉनसेंस। प्राय: इस शब्द के बीच में हाइफन, संयोजक रेखा डाली जाती है—जैसे नॉनसेंस। इसकी क्या जरूरत है। मेरे शब्दों में से तो इसे हटा दो। परंतु जब मैं कहता हूं कि झेन नॉनसेंस है, तब इस हाइफन की, इस संयोजक-रेखा की जरूरत है।

मैंने सबसे पहले यह कहानी मस्तो को सुनाई थी। वे इस कहानी को पहले भी सुन चुके होंगे। लेकिन उस तरह से नहीं जिस तरह मैं चीजों को विकृत कर देता हूं या उनकी रचना करता हूं। कहनी ऐसी है—और यह मैं मस्तो से कह रहा हूं: मस्तो, परमात्मा ने दुनिया बनाई।

मस्तो ने कहा: वाह, क्या खूब। तुमने तो सदा फिलासफी और धर्म का विरोध किया है। अब क्या हो गया। सारे धर्म इसी पहेली से आरंभ होते है।

मैंने कहा: निर्णय लेने से पहले थोड़ा सब्र करो। सारी कहानी सुने बिना किसी निष्कर्ष पर मत पहुँचों।

मस्तो ने कहा: मुझे कहानी मालूम है।

मैंने कहां: :नहीं, तुम इसको नहीं जानते। वे आश्चर्यचकित दिखे और कहा: यह कोई बात हुई, अगर तुम चाहो तो मैं इसे दोहरा सकता हूं।

मैंने कहा: तुम दोहरा सकते हो किंतु इसका मतलब यह नहीं है कि तुम इसे जानते हो। क्या दोहराने से कोई जानना है। क्या बुद्ध के सूत्रों को दोहराने से तोता बुद्ध या कम से कम बोधिसत्व बन सकता है।

यह सुन कर वे सोच में पड़ गए। मैंने इंतजार किया और तब मैंने कहा: सोचने से पहले इस कहानी को सुनो। तुम तो तानते हो वह वही नहीं हो सकती जो मैं जानता हूं। क्योंकि हम दोनों भिन्न है। परमात्मा ने दुनियां को बनाया। अब इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक है: और वेद भी यही पूछते हैं कि उसने दुनियां को क्यों बनाया? इस अर्थ में वेद महान है। वे कहते है कि शायद उसे भी मालूम नहीं है क्यों? ' उस ' से उनका तात्पर्य ' परमात्मा ' से है। मैं इसके सौंदर्य को समझा सकता हूं। शायद इसका सृजन भोलापन में ही हुआ, ज्ञान से नहीं। शायद वह सृजन नहीं कर रहा था। शायद वह उस बच्चे की तरह खेल रहा था जो रेत के घरौंदे बनाता है। क्या बच्चों को मालूम होता है कि वे घरौंदे किसके लिए बना रहे है। क्या उन्हें उस चींटी का पता है जो रात को उसके अंदर जाकर आराम करेगी।

हिंदी में चींटी ' स्त्रीलिंग' होती है—मुझे नहीं मालूम कि ऐसा क्यों है। उसको नर नहीं माना जाता। सच तो यह है कि केवल चींटी जो रानी होती है वही मादा होती है—बाकी सब नर या पुरूष होते है, यह बड़ी

अजीब बात है और शायद अजीब नहीं भी है, इस सच को छिपाने के लिए वे चींटी को 'स्त्रीलिंग' ही मानते है। शायद चींटी बहुत छोटी होती है, और उसे पुर्ल्लिंग, पुरूष मानने से पुरूष के अहं को ठेस लगती होगी। अब हाथी को या शेर को पुरूष माना जाता है। जब खास तौर पर मादा हाथी की और इशारा करना होता है तब उसको हथिनी कहा जाता है। इस प्रकार मादा शेर को शेरनी कहते है। नहीं तो यूं साधारण बातचीत में इनको पुर्ल्लिंग ही माना जाता है। लेकिन बेचारी चींटी....ओर दुर्भाग्य से मैंने अपनी कहानी के लिए इसी को चुना है।

नर या मादा, जो कुछ भी है चींटी, चिंतन-मनन करती है। शायद चींटी मादा नहीं हो सकती अन्यथा चिंतन-मनन फिलासफी कहां से आती? मैं कभी किसी महिला के संपर्क में नहीं आया जो चिंतन-मनन फिलासफी करती हो। मैंने फिलासफी की बहुत सी महिला प्रोफेसरों को देखा है परंतु ये प्रोफसर भी केवल कपड़ों की और सिनेमा की बात करती है। अपने सामने बैठे हुए व्यक्ति की तो यह तारीफ करती हैं किंतु उसी व्यक्ति की गैर-मौजूदगी में उसकी निंदा करती है। फिलासफी की तो वे कभी चर्चा की नहीं करतीं। वे प्रोफेसर कैसे बन गई इस बात पर मुझे जरा भी अचरज नहीं होता। हालांकि तुम सोचो गे कि अचरज होना चाहिए, नहीं। वे पढ़ा सकती हैं क्योंकि इसके लिए सोचने-विचार ने की जरूरत नहीं पड़ती। सच तो यह है कि यही इसकी मूल आवश्यकता है। अगर तुम सोच-विचार करो तो तुम पढ़ा नहीं सकते।

विश्वविद्यालय में मेरे एक प्रोफेसर बहुत ही विचित्र थे। वर्षो तक उनकी क्लास में एक भी विद्यार्थी पढ़ने नहीं आया था। इसका कारण यह था कि वह अपना लेक्चर तो हमेशा समय पर आरंभ करते थे, किंतु किसी को यह मालूम नहीं था कि वह उसे समाप्त कब करेंगे।

वे आरंभ में ही कह देते थे: कृपया अंत की आशा मत करना, क्योंकि इस दुनियां में कभी किसी चीज का अंत नहीं होता। अगर तुम जाना चाहते हो तो जा सकते हो क्योंकि इस दुनियां में बहुत से लोग चले जाते है—फिर भी दुनिया चलती रहती है। मेरे बोलने में बाधा नहीं डालना। मत पूछना कि क्या मैं जा सकता हूं। जब आदमी मरता है तो यह नहीं पूछता—तो फिर तुम फिलासफी के बेचारे प्रोफेसर से ऐसा क्यों पूछते हो। प्रिय,क्या में पूछ सकता हूं कि तुम आए ही क्यों? तुम जब चाहो जा सकते हो और मैं तब तक बोलता रहूंगा जब तक मेरे मुंह से शब्द निकलते रहेगें।

जब मैं विश्वविद्यालय पहुंचा तो सबने कहा: उस आदमी से दूर रहना। यह डाक्टर दास गुप्ता बिलकुल पागल है।

मैंने कहा: इसका मतलब यह कि सबसे पहले मुझे उन्हीं से मिलना चाहिए। मैं तो पागल लोगों की खोज ही कर रहा हूं। क्या वे सचमुच पागल है।

उनहोंने कहा: वे बिलकुल पागल है। और हम मजाक नहीं कर रहें।

यह जान करा बहुत खुशी हुई कि आप लोग मजाक नहीं कर रहे। वह तो मैं खुद ही कर लूगा। जब भी मुझे जरूरत होती है मैं स्वयं ही अपने आप को अच्छे मजेदार जोक, चुटकुले सुनाता हूं और फिर दिल खोल कर हंसता हूं और कहता हूं: वाह, वाह, ऐसा जोक तो मैंने पहल कभी नहीं सुना।

उन्होंने कहा: यह आदमी स्वयं भी पागल मालूम होता है।

मैंने कहा: बिलकुल ठीक, अब मुझे यह बताओ कि डाक्टर दास गुप्ता रहते कहां है?

मैं उनके घर गया और दरवाजे को खटखटाया। वहां पर एक नौकर भी नहीं था। वे तो भगवान की तरह रहते थे। कोई पत्नी नहीं थी, कोई बच्चा नहीं था, कोई नौकर नहीं था—बस अकेले रहते थे। उन्होंने मुझसे कहा: तुमने गलत दरवाजे को खटखटा दिया है शायद। क्या तुम्हें मालूम है कि मैं डाक्टर गुप्ता हूं।

मैंने कहा: हां, यह तो मैं जानता हूं, आपको मालूम है कि मैं कौन हूं?

वे बूढे आदमी थे, उन्होंने अपने मोटे-मोटे चश्मे में से देखते हुए कहा: मुझे क्या मालूम कि तुम कौन हो?

मैंने कहा: यही तो मैं खोजने आया हूं।

उन्होंने कहा: तुम्हारा मतलब कि तुम भी नहीं जानते।

मैंने कहा: नहीं।

उन्होंने कहा: हे भगवान, एक ही घर में दो पागल आदमी। और तुम तो मुझसे भी अधिक पागल हो। अच्छा,भीतर आइए जनाब बैठिए।

वे बहुत ही आदरपूर्ण थे। बिना मजाक किए उन्होंने कहा: हम विश्विद्यालय में पिछले तीन साल से मेरी क्लास में कोई नहीं आया। अब तो मैंने भी वहां जाना बंद कर दिया है। जाने से कोई फायदा नहीं। मैं तो अपना लेक्चर यहां पर जहां तुम बैठे हो—इसी कमरे में देता हूं।

मैंने कहा: यह तो बहुत अच्छी बात है, लेकिन लेक्चर किसको देते है।

उन्होंने कहा: हां,यहीं तो मैं भी कभी-कभी पूछता हूं कि किसको।

मैंने कहा: मैं आपकी क्लास में नाम लिखवा दूँगा और आपको वहां जाने का कष्ट नहीं करना पड़ेगा। वह आपके घर से करीब-करीब एक मील दूर है। मैं यहीं पर आ जाऊँगा।

उन्होंने कहा: नहीं-नहीं, मैं आऊँगा, क्योंकि वह मेरे काम का हिस्सा है। किंतु सिर्फ एक बात, माफ करना, मैं अपना लेक्चर तो ठीक समय पर शुरू कर दूँगा, अगर ग्यारह बजे का समय है तो ठीक ग्यारह बजे, किंतु चालीस मिनट बाद जब घंटी बजेगी तो मैं वादा नहीं कर सकता कि उसे समाप्त कर दूँगा।

मैंने कहा: मैं यह समझ सकता हूं। अब हर चालीस मिनट के बाद घंटी बजाने वाले बेचारे आदमी को क्या मालूम कि आप क्या कर रहे है। और सिर्फ आप ही नहीं,युनिवर्सिटी के बाकी सब प्रोफेसर क्या कर रहे है। अगर वे रूक जाएं तो वे मुर्ख है। घंटी को नहीं मालुम, घंटी बजाने वाले आदमी को नहीं मालुम, तो आप क्यों समाप्त करेंगे। अगर आपका यह वादा है कि आप नहीं रोकेंगे, समाप्त नहीं करेंगे तो मेरा भी यह वादा है कि अगर आप रूक गए तो मैं आपको इतने जोर से मारूंगा कि आपकी जान खतरे में पड़ जाएगी।

उन्होंने कहा: क्या, तुम मुझे मरोगे? वे बंगाली आदमी थे।

मैंने कहा: मैं तो यूं ही अलंकार के भाव से बोल रहा था। मैं आपके सिर काक हलके से छूकर याद दिलाऊंगां कि आपको इस घंटी की चिंता करने की जरूरत नहीं है।

उन्होंने कहा: तब यह ठीक है। तुम्हें होस्टल में जाने की जरूरत नहीं, तुम मेरे घर में रह सकते हो। यह बहुत बड़ा है और मैं अकेला हूं।

उस दिन मुझे मस्तो की याद आई। उसको यह घर तो अच्छा लगता ही, साथ ही चिंतनशील आंखों वाला यह आदमी भी। उस दिन भी मुझे यह कहानी याद आई, मैं इसे दुबारा तुम्हें सुनाऊंगा ताकि तुम लोग इसे समझ जाओ।

परमात्मा ने इस दुनिया को बनाया। उसने यह काम छह दिनों में समाप्त किया। अंत में उसने स्त्री को बनाया। स्वभावत: प्रश्न उठता है कि क्यों? उसने स्त्री को अंत में क्यों बनाया। नारी आंदोलन वाले तो यही कहेंगे कि ‘स्त्री’ परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति है, परिपूर्ण है। पुरूष के सृजन के अनुभव के बाद ही उसने स्त्री की रचना की। पुरुष तो पुराना मॉडल है। परमात्मा ने स्त्री के रूप मैं अधिक परिष्कृत मॉडल तैयार किया।

परंतु जो पुरुष तानाशाह है वे कहते है कि पुरूष तो परमात्मा की अंतिम रचना है। परंतु पुरुष ने उससे इस प्रकार के प्रश्न पूछने शुरू किए कि ‘ तुमने दुनिया को क्यों बनाया।‘ या तुमने मुझे क्यों बनाया। परमात्मा

इतना परेशान हो गया कि पुरूष को परेशान करने के लिए, उसने उलझन में डालने के लिए उसने स्त्री का सृजन किया—जब से परमात्मा नह पुरूष से कुछ नहीं सुना।

पुरूष तो टांगों में दुम दबाए हुए घर आता है। केले या कद्दू खरीदने के लिए बाहर जाता है। और धीरे-धीरे वह कद्दू ही बन गया है। श्रीमान कद्दू, पी. एँच. डी., एम. ए., डी. लिट कद्दू, और न जाने क्या-क्या। लेकिन श्रीमान कद्दू तो बिलकुल सड़े गले है, इसे खाना मत। इसके छिलके के नीचे भी मत देखना। नहीं तो पछताओगे। अरे तुरंत कहने लगोंगे—चक्र को रोको। जन्म और मृत्यु का चक्र। क्योंकि कौन कद्दू बनना चाहता है। कद्दू बढ़िया से बढ़िया कपड़े पहने हों, शायद पेरिस में बने। श्रीमान कद्दू कुछ भी कर सकता है। उसने कितनी बढ़िया टाई लगा रखी है कि सांस भी नहीं ले सकता। और उसके जूते तो इतने अच्छे हैं कि अगर तुम उसके पैरों को देख लो तो तुम उसके चेहरे को कभी नहीं देखोगे।

मुझे जूते कभी पसंद नहीं थे किंतु लोगों ने कहा कि मुझे उन्हें पहनना चाहिए। मैंने कहा: चाहे कुछ भी हो जाए मैं उन्हें नहीं पहनूंगा।

मैं चप्पल इस्तेमाल करता हूं। वे जूते जैसी नहीं है, सैंडल जैसी भी नहीं,वे पैरो को बहुत कम ढकती है। और मैंने तो जो चप्पल चुनी है उसको कहीं से भी कम नहीं किया जा सकता। बस केवल एक पटटी किसी तरह मेरे पैरो को चप्पल के भीतर रखता है। अब इससे कम नहीं किया जा सकता है। अर्पिता मेरे चप्पल बनाती है। उसे मालूम है कि इससे बढ़िया और कुछ नहीं बन सकता। इस चप्पल को जरा सा भी कम करो तो मेरे पैर नंगे हो जाएंगे।

मुझे जूतों से नफरत क्यों है। इसका सीधा-साधा कारण यह है कि वह आपको कद्दू बना देते है। श्रीमान कद्दू, डाक्टर कद्दू, प्रोफेसर कद्दू—सब प्रकार के कद्दू। जेंटल मैन कद्दू, लेंडी कद्दू—सब प्रकार के कद्दू खोज सकते हो। किंतु सबकी शुरूआत जूतों से होती है।

आपने कभी ऊंची एड़ी की जूती पहने हुए विक्टोरियन-युग की महिलाओं को देखा है। वह एड़ी इतनी ऊंची होती है कि रस्सी पर चलने वाला आदमी भी उन जूतियों काक पहन कर चलने की कोशिश करे तो चल नहीं सकेगा, गिर जाएगा। क्या आपको मालूम है कि ऊंची एड़ी वाली जूतियों को क्यों चुना गया? एक अति धार्मिक समाज ने बहुत ही अधार्मिक कारण के लिए, अश्लीलता के लिए इनको चुना है। क्योंकि जब एड़िया ऊंची होती है तो नितंब उभरे रहते है।

अब कारण काक जानने की तो कोई कोशिश ही नहीं करता। महिलाएं ऊंची एड़ी की जूती पहन कर सोचती है कि वे बहुत ही सभ्य और शालीन दिखाई देती है। यह बहुत ही अभद्र है। उनको समझ में यह नहीं आता कि वह अपने नितंब का मुफ्त-प्रदर्शन कर रही है। और मजा ले रही है, और तंग कपड़ों में तो उनकी नग्नता स्पष्ट प्रदर्शित होती है। तंग कपडों में स्त्रीयां नग्नता से ज्यादा अच्छी दिखाई देती है। क्योंकि चमड़ी तो चमड़ी है। अगर काई तीस साल काह है तो चमड़ी भी तीस साल की होगी। तीस साल को गुजरते उसने देखा है। इसी लिए वह बाजार से खरीदी गई नई पोशाक की तरह कसी हुई नहीं हो सकती। अब तो कपड़े बनाने बाले चमत्कार कर रहे है। वे स्त्रियों को इतना मनमोहक बना रहे है कि परमात्मा भी सेब खा लेता।

जो मैं कह रहा हूं क्या तुम्हारी समझ में आ रहा है। शायद इसके लिए तुम्हें कुछ देर लगेगी। आशु भी नहीं हंसी। समझने के लिए कुछ देर लगती है। हां,सांप की तो जरूरत ही न पड़ती—कपड़े बेचन वाला सेल्समैन ही काफी था। बस, मिसेस ईव के लिए एक तंग पोशाक—और परमात्मा खुद ही सेब खा लेता और मिसेस ईव के साथ शाम को ड्राइव के लिए चला जाता।

परमात्मा ने स्त्री की रचना पुरूष के बाद क्यों कि। पुरूष तानाशाह कहते है कि पुरूष तो परमात्मा की परिपूर्ण कृति है। तुमने यूनानी और रोमन मूर्ति कला में पुरूषों की मूर्तियां तो अवश्य देखी होगी, किंतु स्त्री की नग्न मूर्ति बहुत कम दिखाई देती है। सिर्फ पुरूष, अजीब बात है। इसका कारण क्या था। क्या उन लोगों को स्त्री में सौंदर्य दिखाई नहीं देता था।

वास्तव में वे पुरूष-तानाशाह थे। इतने तानाशाह, कि उन्होंने होमोसेक्सुअल टी की जो तारीफ कह परंतु इतर लिंगी, हेट्रोसेक्सुअलिटी की नहीं। यह सुन कर बहुत अजीब लगता है। क्योंकि सुक़रात को हुए पच्चीस सदिया बीत गई है। सुक़रात भी पुरूषों से प्रेम करता था। स्त्रीयों से नहीं। शायद उसकी पत्नी झेनथिप्पे ने उसको इतना सताया कि इसके प्रतिक्रिया स्वरूप वह स्त्रियों को ही भूल गया और कुछ पुरूषों से प्रेम करने लगा। शायद कोई और कारण रहे होगें।

अगर किसी दिन मुझे सुक़रात का मनो विश्लेषण करना पड़े तो मैं कई ऐसी चींजे उखाड़ कर रख दूँगा जिनके बारे में दूसरा कोई सोच भी नहीं सकता। पर पुरूष तानाशाह कहते है कि परमात्मा ने पुरूष की रचना कि, और क्योंकि पुरूष अकेला था, उसे एक साथी की जरूरत थी, तो परमात्मा ने ईव को बनाया।

एक मौलिक कहानी नहीं है। मूल स्त्री का नाम ईव नहीं था। उसका नाम लिलिथ था। परमात्मा ने लिलिथ काक बनाया परंतु लिलिथ ने तो पहले क्षण से ही समस्या उत्पन्न कर दी।

शुरू आत ऐसे हुई कि सूर्य अस्त हो रहा था। रात हो रही थी और उनके पास केवल एक ही पलंग था, यह समस्या थी। वे मेरे जैसे भाग्य शाली नहीं थे। मेरे पास तो आशीष है—उसे माइग्रेन का कष्ट हो रहा हो तब भी वह एक अच्छा पलंग बना देता है। किंतु आशीष तो वहां था नहीं। वास्तव में वहां और कोई भी मनुष्य नहीं था....

मेरी घड़ी बंद हो गई है। अभी उस दिन मैं इसकी बात कर रहा था और यह रूक गई थी। तुम जानते हो ये घड़ियाँ बड़ी तुनक मिजाज होती है। ठीक उसी क्षण वह रूक गई थी। मैं तो किसी और घड़ी के बारे में बात कर रहा था। अलंकारिक भाषा में। किंतु अब इस घड़ी को कौन समझाए कि मैं इसके बारे में बात नहीं कर रहा था। रात को भी कई बार मैं इससे कहता हूं कि 'सुनो,तुम रुको मत। मैं तुम्हारे बारे में बात नहीं कर रहा था। तुम तो इतनी सुंदर घड़ी हो.....परंतु वह सुनती ही नहीं।

मैं क्या कहा रहा था?

आप कह रहे थे कि ईव के पास बिस्तर नहीं था..या लिलिथ बिस्तर नहीं था, ओशो।

हां, झगडा तो बिस्तर में जाने से पहले ही शुरू हो गया। नारी मुक्ति-आंदोलन को अंतिम करने वाली निश्चित ही लिलिथ थी। भले ही उसकी जानकारी उसका हो या न हो। उसने झगड़ा किया और अदम को बिस्तर से बाहर फेंक दिया। कितनी महान औरत थी वह, अदम ने उसको बाहर फेंकने की बार-बार कोशिश की। पर फायदा क्या था। अगर वह सफल हो भी जाता तो भी वह वापस आकर उसे बाहर फेंक ही देती।

उसने कहा: इस बिस्तर में केवल एक ही सो सकता है, यह दो के लिए नहीं बना है।

भगवान ने इसको दो के लिए नहीं बनाया था, यह डबल बेड़ नहीं था।

वह सारी रात झगड़ते रहे और सुबह अदम ने भगवान से कहा: मैं तो बहुत खुश था... हालाकि वह था नहीं। परंतु रात भर के दुःख के कारण उसको अपना विगत जीवन सुखी लग रहा था। उसने कहा: इस स्त्री के आने के पहले मैं इतना सुखी था।

और लिलिथ ने भी कहा: मैं भी बहुत सुखी थी। मैं तो जीना ही नहीं चाहती। बहुत सी बातों का आरंभ उसी से हुआ होगा। शायद वह प्रथम झेन थी, क्योंकि उसने कहा, मैं जीना नहीं चाहती। एक जीवन के लिए एक

रात ही काफी है। मुझे मालूम है कि हर रात बार-बार उसी की पुनरावृति होगी। अगर तुम मुझे डबल बेड भी दे दो तब भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा। हम दोनों में झगड़ा होता ही रहेगा। क्योंकि प्रश्न तो यह कि मालिक कौन है। इस बर्बर व्यक्ति को मैं अपना मालिक नहीं बनने दूंगी।

परमात्मा ने कहा: अच्छा, उन दिनों—ये बिलकुल आरंभ के दिन थे—सृष्टि के बाद का यह पहला ही दिन था। जरूर रविवार रहा होगा—ईसाइयों के अनुसार। परमात्मा रविवार की छुटटी के मूड में ही रहा होगा क्योंकि उसने कहा: ठीक है, मैं तुम्हें गायब कर दूँगा। लिलिथ गायब हो गई, और तब परमात्मा ने आम की पसली से ईव को बनाया।

यह पहला आपरेशन था। देवराज इसको नोट कर लो। परमात्मा पहला सर्जन था। रॉयल सोसाइटी इसे माने या न माने, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसने बहुत बड़ा काम किया। उसके बाद से अब तक आरे किसी सर्जन ने ऐसा नहीं किया, कोई कर भी नहीं सकता। केवल एक पसली से उसने स्त्री को बना दिया। किंतु यह बहुत अपमानजनक है। और मुझे इस कहानी से घृणा है। भगवान को ऐसा नहीं करना चाहिए। केवल एक पसली.....।

अब बाकी की कहानी यह है कि हर रात सोने से पहले ईव अदत ही पसलियों को गिनती है यह देखने के लिए कि बाकी सब पसलियाँ सही सलामत है या नहीं। और दुनिया में दूसरी कोई औरत तो नहीं है। यह जानने के बाद वह अच्छी तरह से सो जाती है।

बड़ी अजीब बात है.....अगर दूसरी औरत हो तो वह अच्छी तरह से क्यों सो नहीं सकती? किंतु मुझे कहानी का यह अंत पसंद नहीं है। पहली बात तो यह है कि इसमें पुरूष ताना शाही है। दूसरी बात यह है कि यह परमात्मा के अनुरूप नहीं है। तीसरी बात यह है कि इसमें कल्पना की कोई उड़ान नहीं है। और बहुत अधिक तथ्यात्मक है। कभी-कभी तो केवल इशारा ही करना चाहिए।

मस्तो ने मुझसे पूछा: तुम्हारी क्या निष्कर्ष है।

मैंने कहा: मेरा निष्कर्ष यह है कि परमात्मा ने पहले पुरूष को बनाया क्योंकि वह नहीं चाहता था कि सृजन के समय किसी प्रकार की कोई दखलंदाजी हो। पूर्व में यह बात अति प्रचलित है। यह मेरी बात नहीं है। किंतु मुझे यह इतनी प्रिय है कि मैं इसको अपना कहने का दावा कर सकता हूं। अगर प्रेम किसी को भी अपना बना सकता है तो यह मेरी है। मुझे नहीं मालूम कि सबसे पहले ऐसा किसने कहा और मुझे जानने की जरूरत भी नहीं है।

मैंने मस्तो से कहा: तब से भगवान के बारे में कुछ भी नहीं सुना गया। इस बेचारे बूढे आदमी की तुम्हें कोई खबर मिली, क्या वह रिटायर हो गया है। क्या वह अपनी ही सृष्टि को भूल गया है। अपने ही बनाए लोगों के प्रति क्या उसे कोई करूणा नहीं है? कोई प्रेम नहीं।

मस्तो ने कहा: ऐसी बेतुकी कहानियों में से तुम सदा अजीब-अजीब प्रश्न निकाल लेते हो और फिर तुम उनकी बडी समझदारी की बात बना देते हो। मुझे लगता है कि एक दिन तुम कहानीकार बन जाओगे।

मैंने कहा: नहीं, कभी नहीं। कहीं अधिक योग्य लोग उस काम में लगे हुए है। मेरी कहीं और ही आवश्यकता है। वहां किसी की दिलचस्पी दिखाई नहीं देती है, क्योंकि मेरी तो केवल परमात्मा में ही दिलचस्पी है।

मस्तो को झटका लगा आरे उन्होंने कहा: परमात्मा में, पर मैं तो सोचता था कि तुम परमात्मा में विश्वास ही नहीं करते।

मैंने कहा: मैं विश्वास नहीं करता, क्योंकि मैं जानता हूं, और मैं इतनी गहराई से जानता हूं कि अगर तुम मेरे सिर को भी काट डालों तब भी मैं यहाँ कहूंगा,मैं जानता हूं। भले ही मैं न रहूँ....एक बार पहले भी मैं नहीं था....वह था, और वह रहेगा।

उसके लिए स्त्रीलिंग या पुल्लिंग शब्द का प्रयोग करना ठीक नहीं है। क्योंकि वह न स्त्री है, न पुरूष। पूर्व में हम इसको इन दोनों के पार मानते है। उसका कोई लिंग नहीं है, इस बात को समझने के बाद ही हम बुद्ध के शब्दों को और लाओत्से के वचनों तथा जीसस की प्रार्थना को समझ सकते है।

मैंने सुना है, तुमने शायद अभी नहीं सुना होगा, क्योंकि यह भविष्य की कहानी है। पोलक पोप मर जाता है और वह स्वर्ग पहुंच जाता है। वह परमात्मा से मिलने जल्दी से भीतर जाता है और वह जितनी तेजी से भीतर जाता है उतनी ही तेजी से बाहर आ जाता हे। चिल्लाता है रोता है। सेंट पीटर,पॉल, थॉमस आदि सब संत एकत्रित हो जाते है। और कहते है: चिल्लाओ मत, रोओ मत। तुम अच्छे आदमी हो और हम तुम्हारी भावना को समझते है।

पो ने चीखते हुए कहा: आप क्या समझते है, पहली बात तो यह कि क्या आपको मालूम है कि वह गोरा आदमी नहीं है। वह काला आदमी है, हब्शी है। और दूसरी बात तो और भी बुरी है—वह पुरूष नहीं, स्त्री नहीं है।

परमात्मा ने तो पुरूष है, न स्त्री ,किंतु पोलक तो पोलक ही है, तुम उन्हें पोप बना सकते हो पर उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। परमात्मा ने जगत न तो पुरूष तानाशाहो के अनुसार बनाया है और न ही नारी मुक्ति आंदोलनकारी यों के अनुसार बनाया है। इन दोनों के मत परस्पर विरोधी है।

उसने स्त्री को सही मॉडल के रूप में बनाया। और हर कलाकार का यही विचार है कि स्त्री बहुत अच्छी मॉडल है। अगर तुम उनके चित्रों को देखो तो तुम्हे भी यह विश्वास हो जाएगा कि वह बढ़िया मॉडल है। किंतु बस वहीं पर रूक जाओ। वास्तविक स्त्री को छूना मत। चित्र ठीक है, प्रतिमाएं भी ठीक हैं। परंतु वास्तविक स्त्री तो उतनी अपूर्ण है जितना कि उसे होता चाहिए।

मैं किसी प्रकार की निंदा या आलोचना नहीं कर रहा। अपूर्णता जीवन का नियम है। केवल मृत चीज ही पूर्ण होती है। जीवन अपूर्ण है। स्त्रीयां अपूर्ण है, पुरूष अपूर्ण है। और जब दो अपूर्णताएं मिलती है तो तुम अंदाज लगा सकत हो कि उसका परिणाम क्या होगा।

मैंने मस्तो से कहा कि मेरे निष्कर्ष ये है कि परमात्मा ने पुरूष को बनाया और पुरूष ने दार्शनिक प्रश्न पूछने शुरू कर दिए। परमात्मा ने स्त्री को बनाया—ताकि वह पुरूष को व्यस्त रख सके। बस तब से पुरूष कद्दू या केले ख़रीदता रहता हे। और जब तक वह घर पहुंचता है वह इतना थक जाता है कि....जब कि उसकी पत्नी उसके साथ महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करना चाहती है—वह टाइम्स या किसी और समाचार पत्र के पीछे अपने को छिपा लेता है। स्त्री उसको निरंतर भगाती रहती है कि अब यह करो, वह करो।

अजीब बात है कि स्त्रीयों को बहुत सी नौकरियों पार तो नहीं रखा जाता किंतु अध्यापिका काम उनको दे दिया जाता है। शायद इसमें कोई तर्क है। वे लड़कों को ठीक समय पर पकड़ लेती है। और इसके बाद तो वे निरंतर उनसे इतनी डरे रहते है कि उनके सामने कांपने लगते है। छह दिन में बनाई गई अपनी दुनिया के तमाशे को देख कर परमात्मा इसका खूब मजा लेता रहता है।

बुद्ध पुरूष सदा यह कोशिश करते है कि तुम्हें उस शांत और शिथिल दुनिया कि एक झलक मिल जाए जो इस मुसीबतों बाली दुनिया के बनने से पहले थी। अभी भी एक और हो जाना संभव है। नदी के प्रवाह के बाहर

होते ही तुम हंसने लगते हो। परमात्मा है या नहीं है—यह तो एक कहानी है। मैंने मस्तो से कहा: जब तक कोई इस जीवन रूपी नदी के प्रवाह में से बाहर नहीं निकल जाता....

मैं इस आदमी से विदा ले लेना चाहता था, किंतु अच्छा हुआ कि ऐसा नहीं कर सका। उनके साथ अभी भी इतनी चीजें जुड़ी हुई हैं—और कुछ भी उन सब चीजों को प्रतिबिंबित कर देता है। जीवन सकल भी है और जटिल भी, दोनों। ओस की बूंद की तरह सरल और ओस की बूंद की तरह जटिल। क्योंकि ओस की बूंद सारे आकाश को प्रतिबिंबित करती है। और उस के भीतर सारे सागर समाए हुए है। और वह हमेशा तो रहेगी नहीं—बस कुछ क्षण और फिर मिट जाएगी सदा के लिए। मैं सदा के लिए, जोर दे रहा हूं। फिर उसको वापस नहीं लाया जा सकता उन सब तारों और साग़रों के साथ।

मस्तो के साथ इतना कुछ जुडा हुआ है.....

जब भी मैं रोना चाहता तो मैं मस्तो से वीणा बजाने को कहता—वह आसान था, कुछ किसी को समझाना न पड़ता। तक कोई न पुछता कि तुम क्यों रो रहे हो। वीणा तुम्हारे भीतर की गहराई को आंदोलित कर देती है। परंतु उनकी ज़िद्द के कारण मुझे यह कहानी तुम्हें सुनानी पड़ी। क्योंकि वे मुझसे कहते थे कि जब तक तुम मुझे कहानी नहीं सुनाओगे तब तक मैं वीणा नहीं बजाऊंगा। मैंने उनको सुना दी है। और अब उनके बजाने का समय है। किंतु केवल मैं ही सुन सकता हूं। अच्छा है कि अभी भी केवल मैं ही सुन सकता हूं।

बस मुझे केवल दस मिनट चाहिए सुनने के लिए। मुझे वहीं आनंद मिल रहा है जो आदम को मिला होगा।

इस पुरातन बैलगाड़ी की प्रक्रिया में हमें कितने मिनट लगे है। क्या इसके बारे में किसी को कुछ मालूम है।

सदा के लिए ओशो।

जब एक मिनट ओर, और तुम रोक सकते हो।

यह ठीक है। कितना ही सुंदर हो, उसे निरंतर बनाए रखने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। उसे समाप्त करने की योग्यता भी होनी चाहिए। मुझे मालूम है कि तुम इसे जारी रख सकते हो। किंतु नहीं, मेरा डाक्टर कुछ भी अधिक खाने के लिए मना करता है। वह चाहता है कि में अपना वज़न कम करूं, और अगर मैं तुम्हारा खाना खाऊ तो जीसस....।

अब तुम इसे बंद कर सकते हो।

सत्र—37 बे घर का मुसाफिर

ओ. के. । हम लोग अभी मेरे प्राइमरी स्कूल के दूसरे दिन पर ही है। बस, ऐसा ही होगा, हर रोज नई-नई बातें खुलती जाएंगी। अभी तक मैंने दूसरे दिन का वर्णन समाप्त नहीं किया आज में उसे समाप्त करने की पूरी कोशिश करूंगा।

जीवन अंतर्संबंधित है। इसे टुकड़ो में काटा नहीं जा सकता। यह कपड़े का टुकड़ा नहीं है। इसको तुम काट नहीं सकते। क्योंकि जैसे ही इसको अपने सब संबंधों से काट दिया जाएगा, यह पहले जैसा नहीं रहेगा—यह श्वास नहीं ले सकेगा और मृत हो जाएगा। मैं चाहता हूं कि अपनी गति से बहता रहे। मैं इसे किसी विशेष दिशा की और उन्मुख नहीं करना चाहता। क्योंकि मैंने इसका दिशा-निर्देश पहले से ही नहीं किया। यह बिना किसी पथ-प्रदर्शन के अपनी ही गति से चलता रहा है।

मुझे इन मार्ग दर्शकों से नफरत है। क्योंकि ये 'जो है' उसके साथ प्रवाहित होने से तुम्हें रोक देते है। वे रास्ता दिखाते है और उन्हें तुम्हें अगली जगह पहुंचाने की जल्दी रहती है। उनका काम है तुम्हें यह जताना कि तुम जानने के लिए आए हो। न जो वह जानते है, न तुम जानते हो। सच तो यह है कि जब बिना किसी दिशा-निर्देश के, बिना किसी पथ-प्रदर्शन के जीवन को जिया जाता है तब हम जान पाते है। मैं तो इसी प्रकार जिया हूं और जी रहा हूं।

बड़ा विचित्र भाग्य है, बचपन से ही मुझे मालूम था कि यह मेरा घर नहीं है। वह मेरे नाना का घर था और मेरे माता-पिता कहीं दूर रहते थे। मैं सोचता था कि शायद वहीं पर मेरा घर होगा। किंतु नहीं,वह तो एक बड़ा गेस्ट हाउस (अतिथि-गृह) था। बेचारे मेरे माता-पिता निरंतर मेहमानों की देखभाल करने में व्यस्त रहते थे। वे ऐसा क्यों करते है इसका मुझे कोई कारण दिखाई न देता।

मैंने मन ही मन सोचा कि 'यह तो वह घर नहीं है जिसे मैं खोज रहा था। अब मैं कहां जाऊँ? मेरे नाना मर गए हैं इसलिए मैं उस घर वापस भी नहीं जा सकता।' वह उनका घर था और बिना उनके उस घर का कोई मतलब नहीं है। अगर मेरी नानी वहां वापस चली जाती तो मैं वहां जा सकता था। परंतु नानी ने वहां जाने से बिलकुल इनकार कर दिया था। उन्होंने कहा: मैं तो उनके लिए वहां गई थी। जब वे ही वहां पर नहीं रहे तो वापस जाने के लिए कोई दूसरा कारण नहीं है। हां, अगर वे वापस आ जाएं तो मैं तैयार हूं। जब वे वापस नहीं आ रहे, अपना वादा पूरा नहीं कर रहे तो मैं उनके मकान और उनकी जायदाद की चिंता क्यों करूं। ये कभी भी मेरे नहीं थे। कोई न कोई इनकी देखभाल कर लेगा। इनका मेरे लिए कोई महत्व नहीं है। इनके लिए तो मैं वहां गई ही नहीं थी ओरा न इनके लिए में वापस जाऊंगी।

उन्होंने इतने जोर से, पूरी तरह से इनकार किया कि उनके इनकार करने के ढंग को मैंने भी सीख लिया और समग्रता से प्रेम करना भी उन्हीं से सीखा।

उस घर को छोड़ने के बाद हम लोग कुछ दिन के लिए पिताजी के परिवार के साथ रहे। उसे सिर्फ परिवार नहीं कहा जा सकता—वह तो कई कबीलों का जमघट था, कई परिवार —एक मेला था मेला । पर हम वहां पर कुछ दिन ही ठहरे। वह भी मेरा घर नहीं था। मैं वहां कुछ रुका सिर्फ वहां का हाल चाल जानने के लिए और वहाँ से चला गया।

तब से मैं न जाने कितने घरों में रहा हूं, तुम्हारे लिए तो सोचना भी करीब-करीब असंभव है कि पचास साल के जीवन में मैंने सिवाय घर बदलने के और कुछ नहीं किया—हां, घास तो अपने आप उगती ही रही, मैं घर बदलता रहा, और कुछ न किया और घास उगती रही—इसका श्रेय घर बदलने को नहीं, कुछ नहीं को है।

इसके बाद मैं नानी के घर चला गया। मैट्रिक्यूलेशन की परीक्षा पास करने के बाद मैं आगे पढ़ने के लिए अपने फूफा के घर चला गया। उन्होंने समझा कि मैं कुछ ही दिन उनके पास रहूंगा। परंतु वे कुछ दिन उनकी उपेक्षा से कहीं अधिक लंबे हो गए। कोई भी होस्टल मुझे रखने के लिए तैयार नहीं था। क्योंकि मेरा रेकार्ड इतना सुंदर जो था। मेरे अध्यापकों और विशेषत: प्रिंसिपल ने मेरे सर्टिफिकेट पर जो टिप्पणियां लिख दी थी वे निशचित ही सम्हाल कर रखने जैसी थी। इन सबने मेरी घोर निंदा की थी, इतनी निंदा जितनी एक सर्टिफिकेट पर की जा सकती थी।

मैंने उनके मुहँ पर ही कह दिया था कि आप यह चरित्र का प्रमाणपत्र नहीं दे रहे,आप चरित्र-हनन कर रहे है। कृपया इसके नीचे यह भी लिख दीजिए कि इस कागज को में चरित्र-हनन मानता हूं। जब तक आप यह नहीं लिखेंगें तब तक मैं इसे नहीं लूगा।

उन्हें ऐसा करना पडा। उन्होंने मुझसे कहा: तुम शैतान ही नहीं, खतरनाक भी हो। क्योंकि अब तुम हम पर मुकदमा कर सकते हो।

मैंने कहा: डरने की कोई बात नहीं। मेरे जीवन में बहुत लोग मुझ पर मुकदमा चलाएँगे किंतु मैं कभी किसी पर मुकदमा दाया नहीं करूंगा।

मैंने कभी किसी पर कोई मुकदमा नहीं किया, हालांकि चाहता तो बहुत आसानी से कर सकता था और अगर मैं ऐसा करता तो सैकड़ों लोगों को सज़ा मिल जाती।

मैं कह रहा था कि आज तक मेरा कभी अपना घर नहीं रहा। इसको भी तो मैं अपना घर नहीं कह सकता। शुरू से अखीरी तक, शायद यह भी आखिरी नहीं है। किंतु जो भी आखिरी होगा—इसे मैं अपना घर नहीं कह सकता। सिर्फ तथ्य को छिपाने के लिए ही मैं इसको 'लाओत्से हाउस' कहता हूं। लाओत्से का इससे कोई लेना देना नहीं है।

और मैं इस आदमी को जानता हूं। अगर वह कभी मुझसे मिलेगा—और कभी न कभी तो मुलाकात होगी ही—पहली बात जो वह मुझसे पुछेगा वह यह होगी कि तुमने अपने घर का नाम 'लाओत्से हाउस' क्यों रखा। बस केवल उत्सुकता के कारण—बच्चे की उत्सुकता। और लाओत्से से अधिक और कोई बच्चे जैसा सरल नहीं हो सकता। न बुद्ध, न जीसस, न मोहम्मद और मोजेज तो कभी नहीं । यहूदी और बच्चे जैसा, असंभव।

यहूदी तो पैदाइशी व्यवसायी होता है। सूट-बूट पहन कर दूकान पहुंचने की जल्दी में घर से चलने को तैयार, वह तो आता ही रेडीमेड है। मोजेज,कभी नहीं। परंतु लाओत्से और अगर तुम्हें लाओत्से से भी अधिक सरल व्यक्ति चाहिए तब उसका शिष्य च्वांगत्सु... अब लाओत्से का शिष्य होने के लिए लाओत्से से अधिक सरल और भोलाभाला तो होना ही चाहिए। दूसरा कोई ढंग नहीं है।

कनफयूशियस को साफ इनकार कर दिया गया था। संक्षिप्त में उससे कहा गया कि यहां से चले जाओ और हमेशा के लिए खो जाओ और याद रखना, दुबारा कभी भी यहां मत आना। कनफयूशियस से लाओत्से ने भले ही इन शब्दों में स्पष्ट न कहा हो किंतु उसने जो कहा यह उसका सार है। कनफयूशियस उस समय का सबसे बड़ा स्कॉलर, पंडित माना गया था। किंतु उसे स्वीकार नहीं किया गया।

च्वांगत्सु तो आपने गुरु लाओत्से से भी कहीं अधिक सनकी था। जब च्वांगत्सु आया तो लाओत्से ने उससे पूछा: क्या तुम यहां मेरे गुरु बनने के लिए आये हो। तुम चुन सकते हो, या तो तुम मेरे गुरु बन सकते हो। या मैं तुम्हारा गुरु बन सकता हूं।

च्वांगत्सु ने उत्तर दिया: यह सब भूल जाइए, हम जैसे है वैसे ही क्यों नहीं हो सकते। हमारा होना मात्र ही पर्याप्त है। और वे वैसे ही रहे। च्वांगत्सु तो शिष्य था और वह अपने गुरू का बहुत आदर करता था। कोई

उसका मुकाबला नहीं कर सकता था। किंतु इन दोनों का आरंभ इसी प्रकार हुआ—उसने कहा, क्या हम उस सारी बकवास को भूल नहीं सकते? मैंने बकवास शब्द को जोड़ दिया ताकि उसका तात्पर्य स्पष्ट हो जाए। किंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि अपने गुरु के प्रति उसके ह्रदय में आदर का भाव नहीं था। यह सुन कर लाओत्से भी खूब हंसा और उसने कहा, वाह, वाह,मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। और च्वांगत्सु ने अपने गुरु के पैर छुए।

लाओत्से ने कहा: यह क्या?

च्वांगत्सु ने कहा: हम दोनों के बीच कुछ भी नहीं आना चाहिए। अगर मैं आपके पैर छूना चाहता हूं तो ऐसा करने से मुझे कोई नहीं रोक सकता—न आप, न मैं। हमें तो सिर्फ ऐसा होते देखना है।

और मैं भी बस इसी प्रकार देखता रहा, एक घर से दूसरा घर बदलते गए। और मुझे सैकड़ों घर याद है। किंतु उनमें से एक को भी मैं अपना घर नहीं कह सका। मुझे आशा थी कि शायद यह......मेरे सारे जीवन का यही ढंग रहा कि शायद अगला घर।

फिर भी...मैं तुम्हें एक राज की बात बताऊ कि अभी भी मुझे यही आशा है कि शायद कहीं पर मुझे एक घर मिल जाएगा। 'शायद' ही घर है। जीवन भर मैं अनेक मकानों में यहीं प्रतीक्षा करता रहा हूं कि बस अब मुझे अपना वास्तविक घर मिल ही जाएगा—यह बिलकुल नजदीक लगता है। वह मुझे दिखाई भी दे रहा है। लेकिन यह फासला सदा समान बना रहा। और वह थोड़ी सह दूरी कभी मिटी नहीं ।

मुझे मालूम है कि कोई भी घर कभी मेरा होने वाला नहीं है। किंतु जानना अलग बात है, कभी-कभी वह आवृत हो जाता है उससे जिससे जिसको 'होना' कहते है। मैं उसे सब जानना' कहता हूं। और उन क्षणों में मैं घर को खोजता हूं। मैंने कहा: उस घर का नाम सिर्फ शायद हो सकता है। मेरा मतलब घर का नाम 'शायद' है। वह सदा अभी होने वाला है किंतु होता कभी नहीं...सदा बस होने-होने को है।

नानी के घर से मैं अपनी बूआ के घर चला गया। किंतु फूफा मुझे अपने पास रखने के लिए पूरी तरह से राज़ी नहीं थे। स्वभावत: होना भी नहीं चाहिए। मैं उनसे पूरी तरह से राज़ी था।

अगर मैं उनकी जगह पर होता तो मुझे भी इस बात पर आपति होती। क्योंकि मुझे अपने घर में रख कर वे किसी प्रकार की मुसीबत मोल नहीं लेना चाहते थे। वे लोग संतान-विहीन थे, उनको कोई बच्चा नहीं था। इसलिए वे सुखी जीवन व्यतीत कर रहे थे। परंतु सच तो यह है कि वास्तव में वे दुःखी थे। उनको यह मालूम नहीं था कि बच्चों बाले लोग कितने सुखी होते है। और इस तथ्य को वे जान भी कैसे सकते थे।

उनका बँगला सुंदर था और उसमें एक जोड़े से अधिक लोगों के लिए कमरे थे। उस बंगले में अनेक लोग रह सकते थे, इतना बड़ा था। और वे अमीर लोग थे, वे वहन कर सकते थे। मुझे एक छोटा सा कमरा देने में उन्हें कोई दिक्कत नहीं थी। फूफा ने कुछ कहा तो नहीं किंतु मेरा अनेक यहां रहना उन्हें पसंद नहीं था। मैंने भी भीतर जाने से इनकार कर दिया।

मैं अपने छोटे से सूटकेस को हाथ में लिए हुए उनके घर के बाहर ही खड़ा रहा और बूआ से कहा कि आपके पति की इच्छा नहीं है कि मैं यहां रहूँ। और जब तक उनकी इच्छा नहीं है तब तक अच्छा ही होगा कि मैं सड़क पर ही रहूँ बजाए उनके घर आने के। जब तक मुझे यह विश्वास न हो जाए कि मेरे यहां रहने से फूफा के कोई आपति नहीं है और वे इस बात से खुश है तब तक में इस घर के भीतर पैर नहीं रखूंगा और मैं बहार गली में ही रहना पसंद करूंगा। और मैं यह वादा भी नहीं कर सकता कि मैं आपके लिए मुसीबत नहीं बनूंगा। मुसीबत में न होना तो मेरे स्वभाव के विरूद्ध है और मैं आपके लिए मुसीबत नहीं बनूंगा।

फूफा पर्दे के पीछे छिपे हुए मेरी बात को सुन रहे थे उनकी समझ में यह तो आ गया कि इस लड़के को एक मौका तो देना चाहिए।

पर्दे से बहार निकल कर उन्होंने कर उन्होंने कहा: चलो एक बार देख लेते है।

मैंने कहा: आरंभ से ही आपको यह समझ लेना चाहिए कि मैं आपको एक मौका दे रहा हूं, आपको आजमा रहा हूं।

फूफा ने कहा: क्या।

मैंने कहा: धीरे-धीरे इसका मतलब आप समझ जाएंगे, मोटी खोपड़ी में बात बहुत धीरे से घुसती है।

यह सुन कर बूआ तो स्तब्ध रह गई। बाद में उन्होंने मुझसे कहा, ऐसा बात तुम्हें मेरे पति से नहीं करनी चाहिए। क्योंकि वे तुम्हें बाहर निकाल सकते है। मैं उन्हें रोक नहीं सकूंगा क्योंकि मैं सिर्फ एक पत्नी हूं और वह भी बिना बच्चों वाली।

अब तुम लोग यह नहीं समझ सकेत....भारत में पत्नी को बच्चे न हो तो उसे अभिशाप माना जाता है। चाहे वह इसके लिए खुद जिम्मेवार न भी हो। और मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि इसके लिए यह आदमी ही जिम्मेवार था क्योंकि ड़ाक्टरों ने मुझे बताया था कि वे नपुंसक है। परंतु भारत में, अगर स्त्री को बच्चे न हों ...पहले तो भारत में स्त्री होना ही गुनाह है—जिस पर उसे बच्चे न हों। इससे अधिक बुरा और क्या हो सकता है। अगर स्त्री के बच्चा न हो तो वह क्या कर सकती है। वह स्त्री रोग विशेषज्ञ डाक्टर के पास जा सकती है। परंतु भारत में नहीं। पति के लिए दूसरी शादी कर लेना अधिक सुविधाजनक है।

और भारतीय कानून जो पुरूषों द्वारा बनाया गया है, पुरूष को यह अनुमति देता है कि अगर उसकी पहली पत्नी से बच्चे नहीं होते है तो वह दूसरी स्त्री से शादी कर सकता है। बडी अजीब बात है। कि अगर गर्भधारण के लिए स्त्री ओर पुरूष दोनों का सम्मिलित प्रयास आवश्यक है, तो गर्भवती न होने के लिए भी स्वभावतः: दोनों की जिम्मेदारी है। भारत में, पैदा करने के लिए तो दोनों जिम्मेदार है। पर अगर पैदा न हो तो अकेली स्त्री ही जिम्मेवार मानी जाती है।

मैं उस घर में रहा और स्वभावत: शुरू से ही मेरे और फूफा के बीच विरोध का जा एक सूक्ष्म तनाव बना हुआ था वह बढ़ता ही गया। वह बीच-बीच में कई प्रकार से फूट पड़ता था। पहले तो यह कि मेरी उपस्थिति में फूफा जो भी कहते मैं तुरंत उसको काट देता था, वे जो कुछ भी कहते। वे यह कहते है, इसका कोई मतलब ही न था। ठीक कहते है या गलत कहते है। सवाल यह नहीं था, सवाल था कि या तो मैं या वे.....

शुरूआत से ही उन्होंने जिस ढंग से मुझे देखा,उसी से यह तय हो गया कि मुझे उन्हें किस प्रकार से देखना है—दुश्मन की तरह। अब डेल कारनेगी ने भले ही पुस्तक लिखी हो कि 'हाउ टू विन फ्रेंडस एण्ड इन्फलुसअंस पीपल' किंतु मुझे ऐसा नहीं लगता है कि इसके बारे में वह कुछ भी जानता हूं। वह जान ही नहीं सकता। जब तक तुम दुश्मन बनाने की कला मालूम न हाँ तब तक तुम मित्र बनाने की कला नहीं जान सकते। इस मामले में मैं बहुत ही भाग्य शाली हूं।

मैंने इतने दुश्मन बनाएं है कि तुम्हें इस बात का विश्वास हो जाएगा कि मैंने कुछ एक मित्र भी अवश्य बनाए होंगे। बिना मित्र बनाए तुम दुश्मन नहीं बना सकते, यह एक बुनियादी नियम है। अगर तुम्हें मित्र चाहिए तो दुश्मनों के लिए भी तैयार रहिए। ये सामान्य बुद्धि वाले लोग है। परंतु सच तो यह है कि इनकी समझ असामान्य है मेरे पास तो यह भी नहीं है—इसे जो भी कहा जाए। मैंने तो जितने मित्र बनाए उतने ही दुश्मन भी बनाए। दोनों की संख्या एक समान है, मैं उन पर भरोसा कर सकता हूं। और दोनों ही विश्वसनीय है।

पहले तो फूफा का गुरु था। जैसे ही उसने घर में प्रवेश किया मैंने बूआ से कहा: ऐसा बुरा आदमी मैंने आज तक नहीं देखा।

उन्होंने कहा: चुप रहो, अपना मुंह बंद रखो। वह मेरे पति का गुरु है।

मैंने कहा: होगा, किंतु आप बताए कि मैंने ठीक कहा की गलत।

उन्होंने कहा: दुर्भाग्य से तुम ठीक हो, किंतु चुप रहो।

मैंने कहा: मैं चुप नहीं रह सकता। हम दोनों का सामना होकर ही रहेगा।

उन्होंने कहा: मुझे मालूम था कि इस आदमी के यहां आने पर मुसीबत खड़ी हो जाएगी।

मैंने कहा: इसके लिए वह जिम्मेवार नहीं है, मुसीबत तो में हूं। जिस दिन आपने मुझे स्वीकार किया उस दिन मैंने आपके पति से कहा था कि याद रखना आप मुझे नहीं बल्कि मुसीबत को स्वीकार कर रहे है। अब उनकी समझ मे आएगा कि मेरा मतलब क्या था। कुछ शब्दों का अर्थ शब्द कोश में नहीं मिलता उनके अर्थ समझने के लिए अब समय उद्घाटित होगा।

जैसे ही वह गुरु बड़ी शान से अपने सिंहासन पर विराजमान हुए वैसे ही मैंने उनके पास जाकर उनके सिर पर हाथ रख दिया। बस अब यह शुरूआत था, सिर्फ शुरूआत थी। मेरे सब रिश्तेदार इकट्ठे हो गए और कहने लगे: अरे यह क्या कर रहे हो? क्या कर रहे हो, तुम्हें मालूम नहीं कि ये कौन है?

मैंने कहा: यही जानने के लिए तो मैंने ऐसा किया। जानने की कोशिश कर रहा हूं कि ये कौन है। पर ये तो बहुत ही खोखले हैं। ये तो अपने पैरों तक भी नहीं पहुंचते हृद्य इसीलिए तो मैंने इनके सिर को छुआ।

यह सुन कर गुरूजी तो आग बबूला होकर उछलने-कूदने लगे और चिल्ला–चिल्ला कर कहने लगे: यह सरासर मेरा अपमान है।

मैंने कहा: मैं तो आपकी पुस्तक से उद्धृत कर रहा था। उस समय उनकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी। जिसमें उन्होंने लिखा था कि अगर कोई आपका अपमान करे तो विचलित नहीं होना चाहिए।

इस पर उन्होंने मुझसे पूछा: मेरी पुस्तक से क्या मतलब।

मैंने कहा: आप पहले कुर्सी पर बैठ जाइए। जब कि इसकी योग्यता आप में नहीं है।

उन्होंने कहा: लगता है कि तुम मेरा अपमान करने पर उतारू हो।

मैंने कहा: मैं तो किसी का अपमान करने पर उतारू नहीं हूं। मुझे तो केवल इस कुर्सी की चिंता है।

वे गुरु इतने मोटे थे कि बेचारी कुर्सी बडी मुशिकल से उनके वजन को सम्हाल हुई थी। वह चरमरा रही थी। और कई तरह की आवाजें कर रहीं थी।

मैंने कहा: मैं तो कुर्सी की बात कर रहा हूं। मुझे आपसे कोई मतलब नहीं है। लेकिन मुझे कुर्सी कि फ़िकर है। क्योंकि बाद में मैं ही इसको इस्तेमाल करूंगा। यह कुर्सी मेरी है। अगर आप अच्छी तरह से पेश नहीं आते तो आपको यह कुर्सी खाली करनी पड़ेगी।

मेरे इन शब्दों ने तो जैसे बम को आग लगा दी हो। वे उछल पड़े और गालियां बकने लगे। उन्होंने कहा: मुझे मालूम था कि जैसे ही वह लड़का इस घर में आएगा वैसे ही यहां पर सब कुछ बदल जाएगा।

मैंने कहा: हां, यह सच है। और सच जहां भी होगा,मैं उसके साथ अवश्य सहमत होऊंगा—यहां तक कि दुश्मन से भी। यह बिलकुल सच है कि यह घर पहले जैसा नहीं है। क्या आप बता सकते है कि यह घर पहले जैसा क्यों नहीं है।

उन्होंने कहा: क्योंकि तुम नास्तिक हो।

नास्तिक शब्द बहुत सुंदर है। जब अंग्रेजी में इसका अनुवाद किया जाता है तो 'गॉडलस' (परमात्मा विहीन) कहा जाता है। किंतु यह सही अनुवाद नहीं है। नास्तिक का अर्थ है, जो विश्वास नहीं करता ।किसमें विश्वास नहीं करता। यह विश्वास के पात्र के बारे में कुछ नहीं कहता। मेरे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। मैं

नास्तिक कहलाना पसंद करूंगा, जिसका अर्थ है। जो विश्वास नहीं करता। क्योंकि केवल अंधे लोग ही विश्वास करते है। जो देख सकते है उन्हें विश्वास करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

भारत में विश्वास करने वाले को आस्तिक कहा जाता है। आस्तिक अर्थात विश्वास करने वाला। परमात्मा में विश्वास करने वाले को आस्तिक कहा जाता है।

मैंने तो कभी विश्वास नहीं किया और कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति विश्वास नहीं करता। विश्वास तो अविकसित और मंदबुद्धि वालों के लिए है, मूढ़ों के लिए है। जड़बुद्धि वालों के लिए है। ऐसे लोगो की संख्या अधिक है।

उन्होंने मुझे नास्तिक कहा।

मैंने कहा: मैं फिर आपसे सहमत हूं क्योंकि यह शब्द जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण का वर्णन करता है। और शायद यह हमेशा ही जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण का वर्णन करेगा। विश्वास करने का अर्थ है सीमित होना विश्वास करने से व्यक्ति घमड़ी बन जाता है। क्योंकि उसको यह विश्वास हो जाता है कि वह जानता है।

नास्तिक होने का अर्थ है कि, मैं नहीं जानता।' यह अंग्रेजी के एग्नास्टिक शब्द जैसा ही है। जिसका अर्थ है: जो नहीं जानता। न तो वह कहता है कि विश्वास नहीं करता। बस उसके भीतर प्रश्न ही रहता है। प्रश्नवाचक चिह्न वाले व्यक्ति को एग्नास्टिक कहा जाता है।

हीरों से जड़ी हुई सोने की सूली को गले में लटकाए घूमना मुश्किल नहीं है। किंतु जीसस के लिए यह मुश्किल था क्योंकि वह नाटक नहीं था। यह तो वास्तविक सूली थी। और जीसस ईसाई नहीं थे। और यहूदी बहुत नाराज हो गए थे। सामान्यतया तो वे अच्छे लोग है। और जब अच्छे लोग नाराज हो जाते है तो जरूर ही कुछ होकर ही रहता है। क्योंकि सब अच्छे लोग अपनी बुराई का दमन करते है। और जब उसका विस्फोट होता है तो वह एटम बम जैसा होता हे। यहूदी सदा अच्छे लोग होते है। और यही उनका एकमात्र दोष है।

अगर वे थोड़ा कम अच्छे होते तो जीसस को सूली पर न चढ़ना पड़ता। परंतु वे इतने अच्छे थे, उन्हें जीसस को सूली लगानी पड़ी। वास्तव में वे अपने आपको सूली लगा रहे थे। उनका अपना बेटा अपना खून—और वह भी कोई साधारण बेटा नहीं बल्कि सबसे बढ़िया—यहूदियों ने इससे पहले या इसके बाद ऐसे किसी बेटे को जन्म नहीं दिया जो जरा सा भी जीसस जैसा हो। या जीसस के निकट ही हो। जीसस से उन्हें प्रेम करना चाहिए था। किंतु मुसीबत यह थी कि वे अच्छे लोग थे। वे उसे क्षमा नहीं कर सके।

मैंने बहुत से तथाकथित संत देखे है ओ कुछ सच्चे संत भी किंतु मैं इनको संत नहीं कहूंगा, खराब संगत में रह कर यह शब्द गंदा हो गया है। मैं न तो पागल बाबा को संत कहूंगा, न मग्गा बाबा को न मस्तो बाबा को। वह वैसे संत नहीं थे। जैसे आम साधु-संतों के बारे में सोचते है। लोगों में साधु-संतों की जो धारणा प्रचलित है। ये उससे बिलकुल भिन्न थे।

मेरे फूफा के गुरू, हरि बाब को भी संत समझा जाता था। मैंने उनसे कहा: न तो आप बाबा है, न हरि है। हरि परमात्मा का नाम है। अंत: इस नाम को बदल कर अपने लिए कुछ ऐसा नाम रख लें जो आपके अनुरूप हो। आप बाबा भी नहीं हो । शब्दकोश में अपने लिए कोई नाम खोज लें जो आपके लिए उचित हो।

बस यह झगडा शुरू हो गया ओ आगे भी चलता रहा। इसके बारे में मैं बाद में बताऊंगा।

इस घर से मैं युनिवर्सिटी के होस्टल में चला गया और जब मेरी नौकरी लग गई तो में एक छोटे से मकान में रहने लगा। यह मकान छोटा था। और परिवार के लोग भी अच्छे थे। मुझे लगातार शर्म महसूस होती क्योंकि वे आपस में जो भी बातचीत करते वह मुझे स्पष्ट सुनाई देती। अब यह तो ठीक तो नहीं है पर एक बार तो आधीरात को मुझे कहना पड़ा, माफ करना, मैं आपकी सब बातें सुन सकता हूं।

यह सुन कर वे भी परेशान हो गए। सुबह उन्होंने मुझसे कहा: आप हमार मकान खाली कर दें।

मैंने का: मैं तो पहले से ही तैयार हूं। मैंने अपना सामान बाँध लिया। मैं तो गाड़ी भी ले आया था ओ उसमें अपना सामान रख रहा था।

उन्होंने कहा: अजीब बात है। हमने तो अभी तक कुछ कहा भी नहीं था।

मैंने कहा: भले ही आपने कुछ कहा ने हो किंतु आप रात को अपने विस्तर में आपकी पत्नी से जो कहा रहे थे वह सब मैने सुन लिया था। दीवार इतनी पतली है। इसमें आपकी कोई दोष नहीं है। आप भी क्या कर सकते हैं। पर मैं भी क्या कर सकता हूं। मैंने न सुनने कि पूरी कोशिश कि लेकिन यह दीवाल इतनी पतली है कि सब सुनाई देता है।

और तुम लोग शायद नहीं जानते कि आज भी में सोते समय अपने कानों में ईयर-प्लग लगा लेता हूं। उस रात से—शायद उन्नीस सौ सत्तावन के अंत में या उन्नीस सौ अट्ठावन में। मैंने अपने कानों में इयर-प्लग लगाना शुरू किया ताकि मुझे वह सब बातें सुनाई न दें जिनका मुझसे कोई संबंध नहीं था। इसके कारण ही मुझे तुरंत उस मकान को छोड़ना पडा।

बस में निरंतर मकान बदलने के लिए सामान बाँधता रहा हूं। एक प्रकार से यह अच्छा ही हुआ। नहीं तो मेरे पास करने के लिए कुछ न होता। इस प्रकार तो में सदा सामान बाँधता ओर सामन खोलता—सामान बाँधता और खोलता—यहीं करता रहा। कोई और बुद्ध इतना व्यस्त नहीं रहा जितना में व्यस्त रहा। और वह भी किसी दूसरे को कोई नुकसान किए बिना। दूसरे बुद्ध भी व्यस्त रहे परंतु उनकी व्यस्तता में दूसरे भी सम्मिलित थे।

मेरी व्यस्तता तो बिलकुल निजी रही है। हजारों लोग मेरे साथ हैं किंतु उनमें से हरेक आदमी के साथ मेरा संबंध व्यक्तिगत और सीधा है—बिना दूसरे के माध्यम से वह मेरे साथ संबंधित है। यह कोई संगठन नहीं है, ओर ऐसा हो भी नहीं सकता। अब प्रबंध-व्यवस्था के लिए थोड़ा बहुत संगठन का रूप देना ही पड़ता है। किंतु जहां तक मेरे संन्यासियों का प्रश्न है, प्रत्येक संन्यासी मुझसे सीधा संबंधित है, किसी के माध्यम से नहीं।

मैं बहुत ही अनआक्युपाइड व्यक्ति हूं, कोई काम-धंधा नहीं करता। मैं यह तो नहीं कह सकता कि मैं बेकार हूं। इसी लिए मैंने अनआक्युपाइड शबद का प्रयोग किया। मैं मजा ले रहा हूं। किसी नौकरी के लिए भी में आवेदन-पत्र नहीं भेज रहा। क्योंकि नौकरी आदि का काम तो मैं कब का समाप्त कर चुका हूं। मैं तो आनंद मना रहा हूं, परंतु आनंद प्राप्त करने के लिए एक विशेष वातावरण कि आवश्यकता होती है। सो मैं वह तैयार कर रहा हूं। सारे जीवन मैं धीरे-धीरे इसे तैयार करता रहा हूं। बार-बार मैंने नये कम्यून के बारे में बात की है। मैं नये कम्यून को भूल न जाऊँ। क्योंकि जिस क्षण मैं इसे भूल जाऊँगा तो अगली सुबह मैं जागूंगा नहीं। गुड़िया प्रतीक्षा करेगी...तुम दौडोगे—हां,मैंने तुम्हें दौड़ते हुए आते देखा है। तुम इंतजार करोगे किंतु मैं नहीं आऊँगा, क्योंकि जिस छोटे से धागे को मैं पकड़े हुए था वह मेरे हाथ से छूट गया।

बस ऐसा ही चलता रहा। गाडर वारा से मैं जबलपुर चला गया। जबलपुर में मैंने इतने मकान बदले कि लोग यह समझने लगे कि मकान बदलना मेरा शौक है।

मैंने कहा: हां, बात तो ठीक है। मकान बदलते रहने से भिन्न-भिन्न जगा के लोगों कसे जान-पहचान हो जाती है। और मुझे नये-नये लोगों से परिचित होना बहुत अच्छा लगता है।

उन्होंने कहा: यह तो बड़ा अजीब शौक है और बहुत जटिल भी अभी बीस दिन भी नहीं हुए और तुम दूसरी जगह जा रहे हो।

बंबई में भी मैं स्थान बदलता रहा। और जब तक मैं यहां पर पहुंच नहीं गया तक सह क्रम चलता ही रहा। यह कोई नहीं जानता कि इसके बाद मैं कहां जाऊँगा।

यह बात मेरे स्कूल से शुरू हुई—और अभी सिर्फ दूसरा ही दिन है। जीवन इतना बहुआयामी है। कभी-कभी यह बेतुका भी लगता है, क्योंकि बहुआयामी इसको घेरे हुए है। इसे इतना बहुआयामी क्यों कहा जाए। जीवन तो बहुआयामी है।

तुम लोगों को भूख लगी होगी, और भूखे भूत बड़े खतरनाक होते है। बस केवल दो मिनट मेरे लिए.....

अब समाप्त करो।

सत्र—38 मोज़ेज और जीसस—पहलगाम (कश्मीर) में मरे

ओ. के.। मैं तुम्हें एक सीधा-सादा सरल सा सत्य बताना चाहता था। शायद सरल होने के कारण ही वह भुला दिया गया है। और कोई भी धर्म उसका अभ्यास नहीं कर सकता। क्योंकि जैसे ही तुम किसी धर्म के अंग बन जाते हो वैसे ही तुम न तो सरल रहते हो और न ही धार्मिक। मैं तुम्हें एक सीधी सह बात बताना चाहता था। जो कि मैंने बड़े मुश्किल ढंग से सीखी है। शायद तुम्हें तो यह बहुत सस्ते में मिल रही है। साधी और सरल सदा सस्ता ही माना जाता है। यह सस्ता बिलकुल नहीं है। यह बड़ा कीमती है। क्योंकि इस सरल से सत्य के मूल्य को चुकाने के लिए अपने सारे जीवन को दांव पर लगाना पड़ता है। और वह है समर्पण, श्रद्धा।

ट्रस्ट, श्रद्धा को तुम लोग गलत समझते हो। कितनी बार मैं तुम्हें बता चुका हूं? शायद लाखों बार बताया है। परंतु क्या तुमने एक बार भी ध्यान से सुना है। अभी उस रात मेरी सैक्रेटरी रो रही थी और मैंने उससे पूछा कि वह क्यों रो रही है?

उसने कहा: मेरे रोने का कारण कह है कि आप मुझ पर बहुत श्रद्धा करते है। और मैं इस योग्य नहीं हूं। मैं इसे सहन नहीं कर सकती।

मैंने कहा: ये तुम पर श्रद्धा करता हूं। अब तुम रोना चाहती है तो रो सकती हो। अगर तुम हंसना चाहती हो तो हंस सकती हो।

अब, यह तो उसके लिए बहुत मुशिकल है। वह मुझे समझती है। उसके आंसू मेरे विरोध में नहीं वह रहे, वे मेरे लिए बह रह थे। मैंने उससे कहा: तुम क्या कर सकती हो। ज्यादा से ज्यादा तुम मुझसे यह घर छोड़ कर जाने के लिए कह सकते हो। इस घर में से जो भी मेरे साथ आना चाहेगा वह आएगा, नहीं तो मैं अकेला ही चला जाऊँगा। मैं अकला ही आया हूं ओर अकेला ही जाऊँगा। उस वास्तविक यात्रा पा तो मेरे साथ कोई नहीं चल सकता हां, इस बीच समय बिताने के लिए तुम सब तरह से खेल-खेल सकते हो।

मैंने उससे कहा: तुम सोच रही हो कि अब तुम मुझे धोखा दे सकती हो। ठीक है, इससे अच्छा मौका तुम्हें नहीं मिलेगा।

वह फिर रोने लगी और पैरों में गिरने लगी और उसने कहा: नही, नहीं। मैं आपकी धोखा देना नहीं चाहती। इसीलिए तो मैं रो रही थी। आपको धोखा नहीं देना चाहती।

मैंने कहा: तो फिर यह विचार कैसे आया, तुम ऐसा नहीं करना चाहती, मैं भी नहीं चाहता कि तुम करो, तो फिर हम समय क्यों बरबाद कर रहे है। अगर तुम मुझे धोखा देना चाहती हो। तो मैं इसके लिए राज़ी हूं। रोना तो मुझे चाहिए क्योंकि आरंभ से ही मैं एक समस्या ही बना रहा हूं। अभी भी मैं एक समस्या हूं—अपने लिए नहीं—मैं तो हूं ही नहीं। इसलिए यह प्रश्न ही नहीं उठता। परंतु दूसरों के लिए जो ''हैं'' और जो बहुत ही ज्यादा, हैं.. जितना अधिक उनमें मैं हूं का भाव है, उतना ही अधिक उनका जीवन समस्यापूर्ण उसकी कोई समस्या नहीं है। और अगर वह तुम पर भरोसा करता है तो तुम्हारी देखभाल करने के लिए अस्तित्व पर्याप्त है।

परंतु अस्तित्व में किसी की कोई दिलचस्पी नहीं है—सब बातों में दिलचस्पी है सिवाय अस्तित्व के।

इससे मस्तो फिर वापस आ जाते है। मस्तो है ही ऐसे व्यक्ति जो कहीं भी टपक पड़ते है—बुलाए, बिन बुलाए, आमंत्रित, बिन आमंत्रित। और वह इतने प्रिय थे कि आमंत्रित हों या न हों, सब लोग उनका स्वागत करने के लिए तैयार रहते थे। मस्तो बार-बार बीच में आते है। वह पुरानी आदत है। इसका कोई इलाज नहीं है।

अब बेचारा देव गीत नोट ही लिखता रहता है, और यह काम वह बहुत अच्छी तरह से करता है। कभी-कभी उसे चेक करने के लिए बीच में ही मैं पूछ बैठता हूं के मैं क्या कह रहा था। और हव मुझे बिलकुल ठीक

बता देता है। कि मैं क्या कह था। वह अपना काम करता है। मेरे प्रति उसको इतना अधिक प्रेम है कि वह अनायास ही ठंडी श्वास लेता है। उच्छवास लेता है। यह सोच कर कि कुछ अविश्वसनीय घट गया है और उसे अभी भी उस पर विश्वास नहीं होता। और मेरी मुश्किल यह है कि मैं समझता हूं कि वह चुपके-चुपके हंस रहा है वह हंस नहीं रहा, उसकी उत्तेजक श्वास से मुझे यह भ्रम हो जाता है कि वह हंस रहा है।

इसके बारे में उसने मुझे लिखा भी है। किंतु जब भी वह उच्छवास लेता है तो तत्काल मुझे उसकी दबी हुई हंसी का खयाल आ जाता है। कि वह फिर हंस रहा है। मेरी भी यह पुरानी आदत तब से है जब मैं प्रोफेसर था। अब तुम्हें तो मालूम ही है की प्रोफेसर तो आखिर प्रोफेसर ही होता है। और वह अपनी क्लास मैं ही-ही करके हंसने की इजाजत नहीं दे सकता। अब मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है। मुझे अच्छा लगता है।

मेरी क्लास में लड़कियों की संख्या लड़कों से अधिक थी। इसलिए खूब हंसी सुनाई देती थी। और तुम मुझे जानते हो मुझे हंसी मजाक अच्छा लगता है। चुटकुले भी सुनाता था। परंतु मेरे सामने अकारण कोई हंसे तो वह मुसीबत में पड़ जाएगा। हां अगर चुटकुले के बाद कोई हंसे तो उस पर मुझे कोई आपति नहीं है। परंतु अगर कोई बिना किसी विशेष कारण से हंसे तो मैं उसको रंगे हाथों पकड़ लेता। मेरे चुटकुले के कारण वे नहीं हंस रहे थे—लड़के आरे लड़कियों के एक साथ होने के कारण हंस रहे थे। आदम और ईव की वही पुरानी कहानी। तब परमात्मा ने कहा था: इस ईदन के बग़ीचे से बाहर निकल जाओ। दोनों निकल जाओ। 'हां, ऐसा ही कहा था परमात्मा ने।

वह पुराने ढंग का अध्यापक रहा होगा और यह सांप भी कोई पुराना, ऐसा पुराना नौकर रहा होगा जिसने बहुत से अदम और बहुत सी ईव का काम किया होगा—उनकी चिटठीयों को एक दूसरे के पास पहुंचाने में सहायता की होगी। दूसरी प्रकार के काम भी किए होगें किंतु उनका उल्लेख नकरना ही अच्छा है। हां, यह पर कोई भद्र महिलाएं उपस्थित नहीं है। किंतु अगर कोई भद्र पुरूष भद्र न होने का दिखावा कर रहा हो अगर कोई भ्रद महिला भ्रद न होने का दिखावा कर रही हो तो उन्हें अनावश्यक कष्ट होगा। मैं किसी को कोई कष्ट नहीं देना चाहता।

मुझे अपना प्रथम भाषण याद है....देखा, कैसे चीजें हो रही है इस शृंखला में। वह भाषण मैंने एक हाईस्कूल मैं दिया था। जिले के सभी हाई स्कूलों ने अपने-अपने वक्ताओं को वहां भेजा था। मुझे भी अपने स्कूल का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुन लिया गया था। इसलिए नहीं कि मैं सबसे अच्छा वक्ता था, मैं ऐसा नहीं कह सकता,बल्कि इसलिए कि मैं ही सबसे उपद्रवी था। अगर मुझे न चुना जाता तो मैं मुसीबत खड़ी कर देता, इतना पक्का था। तो उन्होंने मुझे चुना। किंतु उन्हें यह नहीं मालूम था कि मैं जहां कहीं भी जाऊँ मुसीबत अपने आप खड़ी हो जाती है।

मैंने अपना भाषण बिना किसी संबोधन के आरंभ कर दिया। किसी प्रकार की कोई औपचारिकता नहीं निभाई। मैंने न कहा सभापति महोदय, न कहा सज्जनों ओर देवियों...हुआ यह कि जब मैंने सभापति को ऊपर से नीचे तक देखा तो मैंने अपने आपसे कहा कि 'यह तो सभापति जैसा दिखाई नहीं देता। फिर वहां उपस्थित लोगों की और देखा तो मैंने सोचा कि ' यहां पर तो न कोई सज्जन दिखाई देता है, न कोई देवी। इसलिए दुर्भाव से मुझे अपना भाषण बिना किसी संबोधन के ही आरंभ करना होगा। मैं सिर्फ कह सकता हूं कि जो कोई भी उपस्थित है, या जिससे भी इसका कोई ताल्लुक है।

बाद में मेरे प्रिंसिपल ने मुझे बुलाया, क्योंकि इसके बाद भी मैंने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

मेरे प्रिसिंपल ने मुझे बुला कर कह कि “ तुम्हें क्या हुआ था? तुमने ऐसा अजीब व्यवहार क्यों किया। हमने तुम्हारे लिए जो भाषण तैयार किया था, उसमें से तुम एक शब्द भी नहीं बोले और तुमने सभापति को भी संबोधित नहीं किया। न सज्जनों और देवियों को।‘

मैंने कहा: मैंने चारों और देखा, तो मुझे कोई भी सज्जन दिखाई नहीं दिया। मैं उन सब लोगों को अच्छी तरह से जानता हूं, और उनमें से कोई भी सज्जन नहीं है। और जहां तक देवियों का सवाल है, वे तो और भी गई बीती थी। क्योंकि वे इन्हीं पुरूषों की पत्नियाँ थी। और सभापति। वह तो ऐसा लगता है जैसे कि परमात्मा द्वारा इस शहर में सिर्फ कभी सभाओं के सभापतित्व के लिए भेजा गया है। मैं तो उससे थक गया हूं। मैं उसे आदरणीय सभापति नहीं बुला सकता। क्योंकि मैं तो उसे थप्पड़ मारना चाहूंगा।

उस दिन जब सभापति ने मुझे पुरस्कार देने के लिए बुलाया तो मैंने कहा: याद रखिए आपको नीचे आना पड़ेगा आरे मुझसे हाथ मिलाना पड़ेगा।

उसने कहा: क्या, तुमसे हाथ मिलाऊं, मैं तो कभी तुम्हारी और देखूँगा भी नहीं। तुमने मेरा अपमान किया है।

मैंने कहा: मैं तुम्हें दिखाउुगा।

उस दिन से वह सभापति मेरा दुश्मन बन गया। मैं दुश्मन बनाने की कला को बहुत अच्छी तरह जानता हूं। वह उस शहर का जाना-माना राजनीतिज्ञ था और उसका नाम था श्रीनाथ भट्ट। वह गांधी वादी राजनैतिक दल का प्रभावशाली नेता था। उस समय भारत ब्रिटिश राज्य में था। जहां तक स्वतंत्रता का सवाल है, भारत अभी भी स्वतंत्र नहीं है। ब्रिटिश राज्य से वह भले ही स्वतंत्र हो गया हो परंतु अंग्रेजों ने जो नौकर शाही बनाई थी वह उससे स्वतंत्र नहीं हुआ।

मैं सदा श्रद्धा की बात करता रहा हूं किंतु मैं इसको अच्छी तरह से समझा नहीं सका। शायद इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। श्रद्धा की बात नहीं की जा सकती, उसकी और केवल इशारा किया जा सकता है। जब कि मैं इसके बारे में कुछ निशचित कहने कि कठिन कोशिश करता रहा हूं। फिर भी मैं इसमे सफल नहीं हो सका। या तो यह तुम्हारे अनुभव हो जाए—तब इसको जानने की जरूरत ही नहीं रहती या जब यह तुम्हारा अनुभव ही नहीं बनता तब तुम्हें श्रद्धा के संबंध में सब जानकारी प्राप्त हो तो भी वास्तव में तुम उसके बारे में कुछ भी नहीं जानते।

मैं दुबारा तुम्हें बताने कि कोशिश कर रहा था—अपने को एक और मौका दे रहा था। शायद और सब प्रयासों के बारे में बात करना लगता है। उन प्रयासों के बारे में भी जो असफल हुए हैं। परंतु यह सोच कर गर्व होता है कि ये प्रयास ठीक दिशा में किए गए थे। प्रश्न तो दिशा का ही है। हां श्रद्धा तो बहुत कुछ है, किंतु सबसे पहले अपनी और एक प्रश्न दिशा में परिवर्तन।

हम जन्मते ही बाहर की और देखते है। अपने भीतर देखना शरीर –रचना का काम नहीं है। शरीर बाहर के सब काम अच्छी तरह से करता है। कही जाना हो तो वह तुम्हें ले जाता है। परंतु जैसे ही तुम पूछते हो कि मैं कौन हूं। तो उसकी समझ में नहीं आता कि वह क्या करे। और वह गड़बड़ा जाता है। क्योंकि वह प्रश्न इस तथाकथित संसार से संबंधित नहीं है।

इस संसार में दस आयाम या दस दशाएं है। आयाम तो बड़ा शब्द है ओर दिशा के लिए इसका प्रयोग नहीं होना चाहिए। ये दस दशाएं है। दो-एक ऊपर, एक नीचे, और चारो को हम जानते हैं। पूर्व, पश्चिम उतर, दक्षिण की तरह और चार कोने है। शेष चार कोने है। जब तुम पूर्व पश्चिम की और एंव अत्तर-दक्षिण की और रेखा खींचो तो उत्तर और पूर्व में पूर्व और दक्षिण में कोने होते है। इस तरह चार कोने होते है।

मुझे आयाम शब्द को प्रयोग नहीं करना चाहिए था। वह बिलकुल ही अलग है, वह देव गीत की छींक के समान बिलकुल भिन्न है। वह उसे दबाने की कोशिश करता है और ऐसा करना असंभव है। मैं उसे सलाह दूँगा कि वह छींक को आने दे, वह आ ही जाती है तो क्यों मुश्किल में पड़ना। दुबारा जब छींक दस्तक दे तो दरवाजा खोल कर उसका स्वागत करते हुए कहिए: मैडम भीतर आ जाओ। शायद छींक बिलकुल न आए। छींक अजीब चीज है। छींक लाने के लिए कोशिश करो तो योग की सब प्रक्रियाएं करनी पड़ेगी। और फिर भी शायद इसमें सफलता न मिले। किंतु जब इसे रोकने की कोशिश की जाती है तो यह जरूर आती है। तुम्हें तो मालूम है कि यह स्त्री है, और जब स्त्री तुम पर अधिकार करने की कोशिश करे तो उससे बचने के लिए उसे छींक कर बाहर कर देना चाहिए—रोकना ठीक नहीं है।

दिशा और आयाम उतने ही भिन्न है जितना उसकी छींक को मेरा यह समझना कि यह हंसी है। वह अपनी छींक को रोकने की कोशिश कर रहा था ओर मैं उसके बारे में बोलना शुरू कर रहा था। जिसके बारे में बोला नहीं जा सकता। और उसी समय उसने छीं दिया। इसी को तो कर्ला गुस्ताव जुंग सिन्क्रॉनिसिटी कहता है। यह बहुत अच्छा उदाहरण नहीं है। किंतु छोटा सा उदाहरण है।

यह अजीब बात है, खास कर भारत में, जब भी ऐसी बातों की चर्चा की जाती है...ओर मैं नहीं सोचता कि और कहीं लोगों ने हजारों वर्षो से ऐसी बात की हो—गूरू से मिलने के समय छींकना मना है। क्या? मेरी समझ में नहीं आता कि छींक को कैसे मना किया जा सकता है। छींक तो तुम्हारे सिपाहियों से या तुम्हारी बंदूकों से नहीं डरती। तुम उसे मना कैसे कर सकते हो। हां अगर नाक की प्लास्टिक सर्जरी की जाए तो शायद यह संभव है। पर वह ठीक नहीं होगा, क्योंकि छींक तो केवल यह सूचना देती है कि नाक के भीतर कुछ गलत घुस गया है। उसे कभी नहीं रोकना चाहिए।

इसीलिए मैं तुमसे कहता हूं,देव गीत, तुम मेरे शिष्य हो और मेरे शिष्यों को सब तरह से भिन्न होना चाहिए—छींक के मामले में भी। वे तो उस समय भी छींक सकते है जब गुरु श्रद्धा के बारे में बात कर रहा हो। इसमें तो कोई नुकसान नहीं है। किंतु कभी-कभी जब तुम उसे दबाने की या रोकने की कोशिश करते हो तो उसका प्रभाव तुम्हारी श्वास पर पड़ता है। तुम्हारे भीतर की सब चींजे उससे प्रभावित हो जाती है। और तब मुझे यह गलतफहमी हो जाती है कि तुम हंस रहे हो। तुम्हें तो यह सोच कर खुश होना चाहिए कि मेरा गुरु अगर कभी-कभार मुझे गलत भी समझता है तो वह सही समझता है कि मैं हंस रहा हूं।

ये वही लोग होंगे जिन्होंने उस आदमी को मार डाला था और अभी भी वे उसके ताबुत पर कीलें ठोके जा रहे है। की वह बहार न निकल आए। ये वहीं लोग है जो अभी भी उसे सूली पर लटका रहे है। और वह तो दो हजार साल पहले मर चुका है। अब उसे सूली पर चढ़ाने की कोई जरूरत नहीं है। परंतु वह अपनी सम्रझदारी से सूली पर मरने से बच गया। ठीक समय पर वहां से भाग गया था। आम जनता के लिए तो उसने सूली पर चढने का नाटक किया और जब लोग घर चले गए तो वह भी घर चला गया। मेरा यह अर्थ नहीं है कि वह परमात्मा के पास चला गया, ऐसा मत समझना। वह सचमुच आने घर चला गया।

अभी भी ईसाइयों को जो गुफा दिखाई जाती है। के जिसमें जीसस के शरीर को रखा गया था—वह सब बकवास है। कुछ घंटों के लिए उनके शरीर को वहां रखा गया था। शायद रात भर भी रखा गया हो किंतु उस समय वे जीवित थे। यह बात बाइबिल द्वारा ही सिद्ध होती है। बाईबिल में कहा गया है कि जब उन्होंने समझा कि जीसस मर गए तो एक सिपाही ने उनके शरीर में भाला भोंक दिया ओर खून निकल आया। परंतु मरे हुए आदमी के शरीर से खून नहीं निकलता। जैसे ही आदमी मरता है वैसे ही उसका खून विघटित होना शुरू हो जाता है। अगर बाईबिल में यह कहा गया होता कि पानी निकलता तो मुझे यह विश्वास होता कि वे सच कह

रहे है। परंतु यह लिखना भी बहुत मूखतापूर्ण लगता कि पानी बाहर निकला। सच तो यह है कि जीसस यरूशलम में कभी मरे ही नहीं। वे तो पहल गाम में मरे थे।

पहल गाम शब्द का वही अर्थ है जो मेरे गांव के नाम का अर्थ है। पहलगाम इस संसार में बहुत ही सुंदर स्थान है। जीसस यहीं पर मर के और उस समय उनकी उम्र एक सौ बाहर वर्ष की थी। किंतु वे अपने ही लोगों से इतने परेशान हो गए थे कि उन्होंने स्वयं ही यक अफवाह फैला दी कि वे सूली पर मर गए है।

सूली उनको अवश्य लगी थी। किंतु तुम्हें यह समझ लेना चाहिए कि सूली देने का जो यहूदी तरीका था वह अमरीका जैसा नहीं था कि कुर्सी पर बिठा कर बस बटन दबाया और आदमी मर गया। इतना भी समय नहीं मिलता कि कोई यह कहे कि है भगवान, इन लोगों को क्षमा करना जो बटन दबा रहे है। इन्हें नहीं मालूम कि वह क्या कर रहे है। वे जानते है कि वे क्या कर हैं । वे बटन दबा रहे है। और तुम्हें नहीं मालूम कि वह क्या कर रहे है।

अगर जीसस को वैज्ञानिक ढंग से सूली दी जाती तो उनको कोई समय नहीं मिलता। यहूदियों का ढंग बहुत बर्बर और असभ्य था। कभी-कभी तो मरने मैं चौबीस घंटे से भी अधिक समय लगता था। कभी-कभी तो यहूदियों की सूली पर चढ़ाएं जाने के बाद लोग तीन-तीन दिन जीवित रहते थे। क्योंकि वे सिर्फ आदमी के हाथों और पैरों में कीले ठोंक देते थे। खून में जमने कि क्षमता होती है वह थोड़ी देर बहने के बाद जमने लगता है। आदमी को ताक बहुत पीडा होती है। वह परमात्मा से प्रार्थना करता है कि जल्दी से जल्दी समाप्त करो। जीसस का भी शायद यही मतलब था जब वे कह रह थे कि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे है। आपने मुझे क्यो त्याग दिया है। पीड़ा बहुत अधिक हुई होगी। क्योंकि अंत में उन्होंने कहा था कि तेरी मर्जी पूरी हो।

मैं नहीं सोचता कि वे सूली पर मरे। नहीं, मुझे तो यह भी नहीं कहना चाहिए कि ''मैं नहीं सोचता''.... मैं जानता हूं कि वे सूली पर नहीं मरे। उन्होंने कहा था: तेरी मर्जी पूरी हो। यह उनकी स्वतंत्रता थी। अब वे जो चाहे कह सकते थे। सच तो यह है कि रोम के गर्वनर पांटियस को उनसे प्रेम हो गया था। किसे न होता, जो भी ठीक से देख सकता था उसके लिए यह स्वभाविक ही था।

परंतु जीसस के अपने लोग तो पैसे गिनने में व्यस्त थे। उनके पास इतना समय ही कहां था कि से जीसस की आँखो में झांक कर देख सके? जीसस के पास पैसा भी नहीं था। पांटियस पायलट ने तो एक बार यह भी सोचा कि वह उनको छोड़ दे क्योंकि उन्हें मुक्त करने का अधिकार उसे था। किंतु वह उन लोगों की भीड़ से डर गया। और वह इस प्रकार की किसी मुसीबत में पड़ना नहीं चाहता था। उसे मालूम था कि जीसस यहूदी है और ये लोग भी यहूदी है। इसीलिए इन्हें आपस में निपटने दो—इन्हें स्वयं ही फैसला करने दो। पायलट न यह भी सोचा लिया कि अगर इन्होंने जीसस के पक्ष में निर्णय नहीं लिया तो फिर मुझे कोई दूसरा रास्ता खोजना पड़ेगा।

और उसने रास्ता खोज लिया। राजनीतिज्ञ सादा कोई न कोई रास्ता खोज ही लेते है। वे घुमा-फिरा कर काम करते है। वे सीधे नहीं जाते। अगर उन्हें 'क' के पास जाना हो तो वे पहले ख के पास जाते है। राजनीति में काम ऐसे ही होता है। और यह बड़ा कारगर तरीका होता है। किंतु जब कोई व्यक्ति राजनीतिज्ञ नहीं होता तो यह तरीका कारगर नहीं होता। पांटियस पायलट ने अपने को किसी मुसीबत में डाले बिना जीसस के मामले को बहुत अच्छी तरह से सुलझा दिया।

शुक्रवार दोपहर को जीसस को सूली लगी थी। इसीलिए उस दिन को गुड फ्रायड कहते है। अजीब दुनिया है। इतने अच्छे आदमी को सूली लगी और तुम उस दिन को अच्छा शुक्रवार कहते है, किंतु इसका कारण था,

क्योंकि यहूदी....मेरा ख्याल है कि देव गीत, तुम फिर मेरी सहायता कर सकते हो। अपनी छींक से नहीं क्या शनिवार उनका धार्मिक दिन है?

हां ओशो।

अच्छा...क्योंकि शनिवार को कुछ भी किया जाता। शनिवार यहूदियों के लिए अच्छा दिन है। सब काम बंद कर दिए जाते है। इसीलिए शुक्रवार का दिन चुना गया था। और वह भी दोपहर बाद का जब सूर्य अस्त होने वाला था, सूर्य अस्त होने के बाद शरीर नीचे उतार लिया गया। क्योंकि अगर शनिवार को भी वह लटकता रहे, तो वह भी एक प्रकार का काम हो जाएगा। और शनिवार को यहूदियों की छुटटी होती है। राजनीति में ऐसे ही काम होता है, धर्म में नहीं। रात को जीसस के एक अमीर अनुयायी ने जीसस के शरीर को उस गुफा से बाहर निकाल लिया। इसके बाद रविवार का तो सब लोगों को छुटटी होती है। सोमवार तक तो जीसस बहुत ही दुर चले गए थे।

इजराइल बहुत ही छोटा सा देश है। पैदल चल कर भी चौबीस घंटों में उसे पार किया जा सकता है। जीसस भाग गए और इसके लिए हिमालय से अच्छा और कौन सा स्थान हो सकता है। पहल गाम एक छोटा सा गांव है, जहां पर कुछ एक झोपड़ियों है। इसके सौंदर्य के कारण जीसस ने इसको चुना होगा। जीसस ने जिस स्थान को चुना वह मुझे भी बहुत प्रिय है।

मैंने बीस साल तर निरंतर कश्मीर में रहने की कोशिश की। परंतु कश्मीर का कानून बड़ा अजीब है। केवल कश्मीरी लोग ही वहां रह सकते है। दूसरे भारतीय भी नहीं। यह तो अजीब बात है। किंतु मुझे मालूम है कि नब्बे प्रतिशत कश्मीरी मुसलमान है और उनको यह डर है कि अगर भारतीयों को वहां बसने की अनुमति मिल जाएगी तो हिंदुओं की संख्या अधिक हो जाएगी। क्योंकि वह भारत का ही हिस्सा है। अब तो यह खेल वोटों का है—हिंदुओं को वहां नहीं बसने दिया जाएगा।

मैं हिंदू नहीं हूं किंतु सरकारी नौकर मंदबुद्धि वाले होते है। इनको तो मानसिक अस्पतालों में रखना चाहिए। वे मुझे वहां रहने की अनुमति ही नहीं देते है। मैं कश्मीर के मुख्यमंत्री से भी मिला था जो पहले कश्मीर का प्रधानमंत्री माना जाता था। उसे प्रधानमंत्री से मुख्यमंत्री पद पर लाने के लिए संघर्ष करना पडा था। अब एक देश में दो प्रधानमंत्री कैसे हो सकते है। किंतु यह व्यक्ति शेख अब्दुल्ला इस बात को मानने के लिए राज़ी ही नहीं था। उसको कई वर्ष तक कैद में रखना पडा तब कश्मीर के सारे संविधान को बदल दिया गया। किंतु यह अजीब खँड़ वैसे का वैसा ही बना रहा, इसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। शायद कमेटी के सब सदस्य मुसलमान थे और वे नहीं चाहते थे कि कोई कश्मीर मे प्रवेश कर सके। मैंने बहुत कोशिश कि किंतु सफल न हो सका। इन राजनीतिज्ञों की मोटी खोपड़ी में कुछ भी नहीं घुस सकता।

मैंने शेख से कहा: तुम पागल हो क्या, मैं हिंदू नहीं हूं। तुम्हे मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। और मेरे लोग तो सारी दुनिया से आ रहे है। वे तुम्हारी राजनीति पर कोई प्रभाव नहीं डालेंगे।

उसने कहा: फिर भी हमें सावधान तो रहना ही चाहिए।

मैंने कहा: अच्छा,तुम सावधान बने रहो ओर इस प्रकार तुम मुझे और मेरे लोगो को खो बैठोगे।

कश्मीर को कितना लाभ होता। परंतु ये राजनीतिज्ञ जन्म से ही बहरे होते है। उसने सुन कर भी नहीं सुना।

मैंने उससे कहा: आपको पता है कि मैं तो आपको बहुत वर्षो से जानता हूं। और मुझे कश्मीर से बहुत प्रेम है।

उसने कहा: मैं आपको जानता हूं। इसीलिए तो मुझे आपसे डर है। आप राजनीतिज्ञ नहीं है। आप बिलकुल दूसरे ही वर्ग के हो, ऐसे लोगों पर हम विश्वास नहीं करते। उसने अविश्वास शब्द का प्रयोग किया और मैं तुमसे 'विश्वास' की बार कर रहा हूं।

इस समय मैं मस्तो को नहीं भूल सकता। बहुत समय पहले उसने ही मुझे अब्दुल्ला से परिचय करवाया था। बाद में जब मैं कश्मीर में प्रवेश करना चाहता था, विशेषत: पहल गाम में तो मैंने शेख को इस परिचय की याद दिलाई।

शेख ने कहा: हां, मुझे याद है कि यह आदमी भी खतरनाक था, और आप तो उससे भी अधिक खतरनाक हो। चुंकी आपका परिचय मस्तो बाबा ने दिया था इसीलिए आपको कश्मीर का स्थायी निवासी नहीं बनने दूँगा।

मस्तो ने मेरा परिचय बहुत से लोगों से कराया था। उन्होंने सोचा था कि शायद मुझे उनकी जरूरत पड़ जाए। और निश्चित ही मुझे उनकी जरूरत थी। अपने लिए नहीं अपने काम के लिए। परंतु कुछ एक को छोड़ कर अधिकांश लोग तो कायर निकले। उन सबने यही कहा। हमें मालूम है कि आप समाधिस्थ हो, जाग्रत हो।

मैने कहा: बस वहीं रूक जाओ। तुम लों्गो के मुहँ से ये शब्द निकलते ही पवित्रता खो देते है। या तो तुम लोग मेरी बात मान लो या सीधे इनकार कर दो। दूसरी किसी प्रकार की बकवास न करो।

वे सब नम्र होते थे। उनको मस्तो; याद थे, और कुछ को तो पागल बाबा भी याद थे। किंतु वे मेरे लिए कुछ भी नहीं करना चाहते थे। मैं ज्यादातर लोगों की बात कर रहा हूं। मस्तो ने जिन सैकड़ों लोगो से मुझ परिचय कराया। उनमें से केवल एक प्रतिशत ने मेरी सहायता की। बेचारे मस्तो वे चाहते थे कि मुझे कभी कोई कठिनाई नही और उनके परिचित मेरी हर आवश्यकता को पूरा करते रहें।

मैंने उनसे कहा: मस्तो तुम मेरे लिए सब प्रकार की कोशिश कर रहे हो। किंतु तुम जब इन मूर्खों से मेरा परिचय कराते हो तो में शिष्टाचार वश चुप रहता हूं। अगर तुम वहां पर न होते तो मैं मुसीबत खड़ी कर देता। उदाहरण के लिए वह आदमी तो मुझे कभी न भूल पाता। तुम्हारे कारण ही मुझे अपने आप को नियंत्रण में रखना पड़ता है। जब कि मैं नियंत्रण में विश्वास नहीं करता परंतु तुम्हारे लिए मुझे यह भी करना पड़ता है।

मस्तो ने हंस कर कहा: मुझे मालूम है। किसी बड़े नामी आदमी से तुम्हारा परिचय कराते समय जब मैं तुम्हारी और देखता हूं तो मैं हंसता हूं अंदर ही अंदर और सोचता हूं कि उस मूरख को मारने की अपनी इच्छा को तुम कितनी मुशिकल से रोके हुए हो।

शेख अब्दुल्ला के साथ भी मुझे यही कोशिश करनी पड़ी। उसने मुझे कहा: अगर मस्त बाबा ने आपका परिचय न दिया होता तो मैं आपको कश्मीर में रहने की इजाजत अवश्य दे देता।

मैने शेख से पूछा: ऐसा क्यों?.....आप तो उनके बड़े प्रशंसक दिखते थे।

उसने कहा: हम किसी के प्रशंसक नहीं होते। हम तो अपने ही प्रशंसक है। किंतु मुझे मस्त बाबा का प्रशंसक बनना पडा, क्योंकि कश्मीर में उनके बहुत से अमीर लोग अनुयायी थे। मैं उनका स्वागत करने के लिए और उन्हें विदा देने के लिए हवाई अड्डे पर जाता था। अपने सब काम छोड़ कर उनके पीछे भागता था। किंतु वह आदमी खतरनाक था। क्योंकि उनहोंने आपका परिचय मुझसे कराया था इसलिए आप कश्मीर में नहीं रहा सकते, जब तक कि मैं शासन कर रहा हूं। एक पर्यटक की तरह आप आ जा सकते हो।

अच्छा ही हुआ कह जीसस ने शोख अब्दुल्ला से पहले ही कश्मीर में प्रवेश कर लिया,उन्होंने अच्छा ही किया की दो हजार साल पहले जन्म ले लिया,वे शेख अब्दुल्ला से डर गये होगें। जीसस की कब्र अभी भी वहां है। इजराइल से जो लोग उनके साथ आए थे। उनके वंशज अभी भी उसकी देखभाल करते है। यह तो तुम समझ

सकते हो कि मेरे जैसे लोग अकेले नहीं जा सकते। कुछ लोग जीसस के साथ वहां भी चले गए होंगे। यद्यपि वे इजराइल से बहुत दूर चले गए, फिर भी कुछ लोग उनके साथ चले गए होगें।

मस्तो ने ही मेरा परिचय इंदिरा से भी कराया था। इंदिरा के पिता पंडित जवाहर लाल नेहरू।

मस्तो भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के मित्र थे। वे बहुत ही सुंदर और अनोखे व्यक्ति थे। राजनीति के क्षेत्र में रह कर शायद ही कोई इतना सुंदर रह सकता है। जब गूंगा बहरी और अंधी विश्वविख्यात महिला, हेलर केलर नेहरू से मिली तो उसने उनके चेहरे का स्पर्श करके अपनी संकेत-भाषा द्वारा कहा कि इस व्यक्ति के चेहरे को छूकर मुझे ऐसा लग रहा है। जैसे कि मैं किसी संगमरमर की मूर्ति को छू रही हूं।

बहुत से लोगों न जवाहरलाल नेहरू के बारे में बहुत कुछ लिखा है परंतु बिना आंख, कान और जबान की इस महिला ने बडी सरलता से बहुत ही महत्व पूर्ण बात कह दी।

जब मस्तो ने मेरा उनसे परिचय कराया तो मेरा भी यही खयाल था। उस समय मैं केवल बीस वर्ष का था और एक वर्ष के बाद ही मस्तो मुझे छोड़ कर जाने वाले थे। इसलिए वे चाहते थे कि मरा अधिक से अधिक लोगों से परिचय करा दें। वे मुझे प्रधान मंत्रि के घर ले गए। जवाहर लाल नेहरू के साथ मेरी यह भेंट बहुत ही सुंदर रही। मुझे ऐसी आशा नहीं थी क्योंकि राजनीतिज्ञों से मिल कर मैं सदा निराश हुआ था। में तो कभी सोच भी नहीं सकता था कि प्रधानमंत्री और राजनीतिज्ञ ने हो। किंतु वे नहीं थे।

हम लोग जब नेहरू से विदा ले रहे थे और वह हमें छोड़ने के लिए गलियारे में आ रहे थे उसी समय संयोग से इंदिरा गांधी भी वहां पर आ गई। उस समय वे किसी पद पर नहीं थीं—कम आयु की युवती थीं। उनके पिता ने ही उनका मुझसे परिचय कराया था। मस्तो भी वहीं थे किंतु मुझे यह नहीं मालूम कि इंदिरा मस्तो को जानती थी या नहीं। मेरी जवाहरलाल नेहरू से यह भेट इतनी महत्वपूर्ण सिद्ध हुई कि इसके कारण उनके परिवार के प्रति मेरा दृष्टिकोण ही बदल गया।

नेहरू ने मेरे साथ स्वतंत्रता और सत्य के बारे में चर्चा की। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था। मैंने उनसे कहा: क्या आपको मालूम है कि मैं केवल बीस वर्ष का हूं।

उन्होने कहा: उम्र की चिंता न करो आयु से कुछ नहीं होता। क्योंकि मेरा अनुभव तो ये है कि बड़ी उम्र में भी गधा-गधा ही रहता है। वह घोड़ा नहीं बन सकता। खच्चर भी नहीं बनता तो फिर घोड़ा कैसे बन सकता है। इसलिए अपनी उम्र की चिंता मत करो। बात जारी रखते हुए उन्होने कहा। हम दोनो की आयु के अंतर को भूल जाओ और जो चर्चा चल रही है उसे आगे बढ़ने दो बिना किसी उम्र जाति, धर्म या पद की बाधा को बीच में लाए। और फिर उन्होनें मस्तो से कहा बाबा, क्या आप कृपया दरवाजा बंद कर देंगे ताकि कोई अंदर न आ सके । मैं नहीं चाहता के मेरा प्राइवेट सैक्रेटरी भी भीतर आ सके।

बस फिर हमने अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर बात की और मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे मेरी बात को इतने ध्यान से सुन रहे थे। जैसे तुम सुनते हो। और उनका चेहरा इतना सुंदर था जो कि सिर्फ कश्मीरियों का ही हो सकता है। भारतीय कुछ काले होते है। और जैसे-जैसे दक्षिण की और जाएं वैसे-वैसे लोगों का रंग काला होता जाता है। और अंत में उस बिंदु पर भी पहुच जाते है जहां पर पहली बार यह समझ में आता है कि वास्तव में काला क्या होता है।

परंतु कश्मीरी सचमुच सुंदर होते है। जवाहर लाल नेहरू निश्चित ही सुंदर थे। इसके दो कारण थे। मेरा अपना यह खयाल है कि गोरा आदमी—केवल गोरा आदमी कुछ खोखला सा दिखाई देता है। क्योंकि सफेदी में कोई गहराई नहीं होती। इसीलिए तो कैलिफ़ोर्निया कि सब लड़कियां धूप मैं बैठ कर अपने को सांवला कर रही

है। उन्हें मालूम है कि जब धूप से चमड़ी तांबे के रंग की हो जाती है तो उसमें ऐसी गहराई आ जाती है जो गोरी चमड़ी में नहीं होती। किंतु काली चमड़ी तो कुछ अधिक ही जल जाती है। उसे गहराई नहीं कहा जा सकता, वह तो मृत्यु है परंतु कश्मीरियों का रंग एकदम बीच का है। वे बहुत सुंदर है। गोरे होते हुए भी जन्म से ही कुछ-कुछ तांबे के रंग के है। ये यहूदी है।

मैंने जीसस की कब्र को कश्मीर में देखा है। उनकी तथाकथित सूली के बाद वे यहीं पर भाग आए थे। मैं इसे तथा कथित ही कहता हुं क्योंकि इसका सारा इंतजाम बड़ी कुशलता से किया गया था। इसका सारा श्रेय तो मिलता है पांटियस पायलट को जब जीसस को गुफा में से निकल जाने दिया गया तो प्रश्न यह खड़ा हो गया कि वे कहां जाए? इजराइल से बहार कश्मीर ही एक ऐसा स्थान था जहां पर वे शांति से रह सकते थे। क्योंकि वह एक छोटा इज्राईल था। यहां पर केवल जीसस ही,मोजेज भी दफ़नाए गए थे।,

इससे तुम और भी चौंक जाओगे। मैने उनकी कब्र को भी देखा है। दूसरे यहूदी मोज़ेज से यह बार-बार पूछ रहे थे कि हमारा खोया हुआ कबीला कहांहै।

रेगिस्तान में चालीस साल तक निरंतर समय एक जाति खो गई थी। यहां पर मोज़ेज गलती कर गए। अगर वे दाएं न जाकर बाएं चले जाते तो यहूदी बग तक तेल के राजा बन गए होते। किंतु यहूदी तो यहूदी ही होते है। इनके बारे में कुछ नहीं कहां जा सकता। कि वह कब क्या कर बैठेंगे। मोज़ेज को ईजिप्त से इजराइयल तक की यात्रा करने में चालीस साल लगे।

मैं न तो यहूदी हूं, न ईसाई। और इससे मेरा कोई सरोकार नहीं है। किन्तु केवल उत्सुकतावश मेरे मन में यह प्रश्न उठता है। उन्होंने इजराइल को ही क्यों चुना? मोज़ेज ने इजराइल की खोज क्यों कि। वे एक सुंदर स्थान की खोज कर रहे होंगे—खोजते-खोजते बूढ़े हो गए....चालीस साल रेगिस्तान में कठिन यात्रा करने के बाद...मैं तो ऐसा नहीं कर सकता था। चालीस साल, मैं तो चालीस घंटे भी नहीं कर सकता था। मैं नहीं कर सकता.....मैं तो हाराकिरी कर लेता। हाराकिरी तो तुम जानते हो। साधारण भाषा में इसका अर्थ है आत्महत्या, और हाराकिरी आत्महत्या नहीं है।

चालीस साल यात्रा करने के बाद मोजेज इजराइल पहुंचे और वह उस धूल भरे और बदसूरत स्थान येरूशलम में आए। और इस सबके बाद—यहूदी आखिर यहूदी ही होते है—उन्होंने अपने खोए हुए कबीले को खोजने के लिए फिर यात्रा करने की जिद की। मेरा अनुमान है कि इन लोगों से छुटकारा पाने के लिए वे चले गए। किंतु वह खोजते कहां, सबसे नजदीक और सुंदर स्थान हिमालय ही था। ओर वह उसी घाटी में पहुंच गए।

वह बहुत अच्छा हुआ कि जीसस और मोजेज दोनों भारत में मरे। भारत न तो ईसाई है और नहीं यहूदी। परंतु जो आदमी, या जो परिवार इन क़ब्रों की देखभाल करते है वह यहूदी है। दोनों कब्रें भी यहूदी ढंग से बनी है। हिंदू कब्र नहीं बनाते। मुसलमान बनाते है किन्तु दूसरे ढंग कि। मुसलमान की कब्र की सिर मक्का की और होता है। केवल वे दोनों कब्रे ही कश्मीर में ऐसी है जो मुसलमान नियमों के अनुसार नहीं बनाई गई।

किंतु ये नाम भी तुम्हारी आशा के अनुसार नहीं है। अरबी में मोज़ेज को मुसा कहते है। उनकी कब्र पर भी मूसा लिखा है। अरबी में जीसस को अरेमेक की तरह येशु कहा जाता है। जो कि हिब्रू भाषा के जोशुआ का परिवर्तित रूप है। और यह उसी प्रकार लिखा जाता है। तुम यह गलत समझ सकते हो कि येशु जीसस है या मूसा मोजेज। मूल शब्दों को अंग्रेजी में गलत उच्चरण के कारण ही मोजेज और जीसस बन गए।

जोशुआ धीरे-धीरे येशु ही बन जाएगा। जोशुआ कुछ भारी भरकम है। येशु ठीक है। भारत में हम जीसस को यीशु कहते है। हमने इस नाम को और अधिक सुंदर बना दिया है। जीसस ठीक है, पर तुम्हें मालूम है कि इसके साथ क्या किया है। जब कभी कोई कोसना चाहता है तो वह कहता है। जीसस, इस ध्वनि में जरूर कुछ

है। अब अगर किसी को जोशुआ कह कर कोसना हो तो मुश्किल हो जाएगा। यह शब्द ही तुम्हें ऐसा करने से रोक देगा। यह शब्द इतना स्त्रैण, इतना सुंदर इतना गोल है कि तुम इससे किसी को चोट ही नहीं पहुंचा सकते।

समय क्या हुआ है?

ग्यारह बज कर बीस मिनट,ओशो।

अच्छा अब इसे समाप्त करो।

सत्र—39 पंडित जवाहरलाल नेहरू से भेट

देव गीत, मुझे लगता है तुम किसी बात से परेशान हो रहे हो। ।तुम्हें परेशान नहीं होना चाहिए, ठीक है?

ठीक है।

....नहीं तो नोट कौन लिखेगी, अब लिखने वाले को तो कम से कम लिखने वाला ही चाहिए।

अच्छा। ये आंसू तुम्हारे लिए है, इसीलिए तो ये दाईं और है। आशु चुक गई। वह बाईं और एक छोटा सा आंसू उसके लिए भी आ रहा है। मैं बहुत कठोर नहीं हो सकता। दुर्भाग्यवश मेरी केवल दो ही आंखें है। और देवराज भी यहीं है। उसके लिए तो मैं प्रतीक्षा करता रहा हूं। और व्यर्थ में नहीं। वह मेरा तरीका नहीं है। जब में प्रतीक्षा करता हूं। तो वैसा होना ही चाहिए। अगर वैसा नहीं होता तो इसका मतलब है कि मैं सचमुच प्रतीक्षा नहीं कर रहा था। अब फिर कहानी को शुरू किया जाए।

मैं इंदिरा गांधी के पिता पंडित जवाहरलाल नेहरू के दो कारणों से नहीं मिलना चाहता था। मैंने इसके बारे में मस्तो से कहा भी किंतु वे नहीं माने। वह मेरे लिए बिलकुल ठीक आदमी थे। पागल बाबा ने गलत आदमी के लिए सही आदमी को चुना था। मैं तो किसी की भी नजर में कभी भी ठीक नहीं रहा। किंतु मस्तो था। मेरे सिवाय आरे कोई नहीं जानता था कह वह बच्चें की तरह हंसता था। परंतु वह हमारी निजी बात थी—और भी कई निजी बातें थीं,अब इनकी चर्चा करके मैं इनको सार्वजनिक बना रहा हूं।

कई दिनों तक हम यह बहस करते रहे कि मुझे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री से मिलने जाना चाहिए कि नहीं। मैं सदा की तरह इसके लिए राज़ी नहीं हो रहा था। जैसे ही तुम मुझसे कहीं जाने के लिए पुछोगे—यहां तक कि भगवान के घर जाने के लिए भी—वैसे ही मैं कहूंगा कि ‘हम सोचेंगे या हम उसको चाए पर बुला सकते है।‘

हम बहस करते गए और करते ही गए, लेकिन वे सिर्फ मेरे तर्कों को ही नहीं समझ

रहे थे, बल्कि तर्क करने वाले को भी समझ रहे थे और उसके लिए वे ज्यादा चिंतित थे।

उन्होंने कहा: तुम जो चाहे कहो, लेकिन, जब वे अपने तर्क से मुझे पराजित न कर सकते तो अंत में वे सदा अपना यह अचूक तीर चलाते, पागल बाबा ने मुझसे ऐसा करने को कहा था, अब तुम जानो कि क्या करना है।

मैंने कहा: अगर तुम कहते हो कि पागल बाबा ने तुमसे यह कहा था, तो फिर ठीक है, वैसा ही होने दो। अगर वे जीवित होते तो मैं उन्हें इतनी आसानी से न छोड़ देता। किंतु अब तो वे है ही नहीं और मृत आदमी से —विशेषत: अपने प्रिय व्यक्ति से तर्क नहीं किया जा सकता।

वे हंस पड़ते और कहते: अब तुम्हारे तर्कों को क्या हुआ?

मैंने कहा: अब तुम चुप रहो। तर्क में जीतने के लिए तुम मृत पागल बाबा को बीच

में खड़ा कर देते हो। तुम तर्क में नहीं जीत सके....मैंने अपनी हार मान ली, अब तुम्हें जो करना है करो। पिछले तीन दिन से तुम जिसके बारे में तर्क कर रहे हो वहीं करो।

किंतु वे तर्क बहुत ही सुंदर थे, बहुत ही सूक्ष्म और दूर तक पहुंचने वाले थे। किंतु आज उस पर चर्चा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। शायद फिर किसी दूसरे चक्कर में...

मस्तो इस बात का आग्रह कर रहे थे कि मुझे प्रधानमंत्री से मिलना चाहिए। क्योंकि कोई नहीं जानता, शायद किसी दिन मुझे उसकी सहायता की जरूरत पड़ जाए।

मैंने मस्तो से कहा: तुम इन शब्दों के साथ यह भी जोड़ दो कि शायद कभी प्रधानमंत्री को मेरी सहायता की जरूरत हो सकती है। ठीक है। मैं जाने को तैयार हूं। अगर बाबा ने तुमसे ऐसा कहा है तो बेचारे बाबा को निराश नहीं करना चाहता । परंतु मस्तो क्या तुममें इतनी हिम्मत है कि मैंने जो कहा है उसको तुम अपने शब्दों के साथ जोड़ दो।

थोड़ा झिझकते हुए वे तक कर खड़े हो गए और उन्होंने कहा: हां, एक दिन शायद नही, निश्चित ही उनको या उस कुर्सी पर बैठने वाले किसी भी व्यक्ति को तुम्हारी सहायता की आवश्यकता होगी। अब तो तुम मेरे साथ चलो।

उस समय मैं केवल बीस बरस का था। मैंने मस्तो से पूछा: क्या तुमने जवाहरलाल को मेरी उम्र के बारे में बताया है। वे बुजुर्ग है और दुनिया के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश के प्रधानमंत्री है। और उनके मन में हजारों बातें चल रही होगी क्या उनके पास मेरे जैसे लड़के के लिए समय होगा। ऐसा लड़का जो रुढिवादी नहीं है—मेरा मतलब जो कनवैंट से नहीं है।

मेरा तो ढंग ही निराला था। पहले तो मैं खड़ाऊँ पहनता था, जो बहुत आवाज करता थी और एक उपद्रव थीं। वे यह घोषणा कर देती थी के मैं आ रहा हूं। नजदीक आ रहा हूं। जितना नजदीक होता उतनी वे ज्यादा आवाज करती।

मेरे हेड मास्टर कहते: तुम्हें जो करना है करो, जाकर फिर सेब को खा लो। वे ईसाई थे। इसलिए उन्होंने ऐसा कहा। या अगर तुम सांप को खाना चाहते हो तो उसे भी खा लो। परंतु भगवान के लिए इन खड़ाऊँ को इस्तेमाल मत करो।

मैंने उनसे कहा: आप पहले मुझे अपने नियमों की किताब दिखाइए जिसे आप हर बार मुझे दिखाते है जब भी मैं कुछ गलत करता हूं। क्या उसमें खड़ाऊँ के बारे में कुछ लिखा है?

उन्होंने कहा: है भगवान, अब ये कौन सोच सकता था कि कोई छात्र खड़ाऊँ पहन कह आएगा। इसके बारे में तो मेरी पुस्तक में कुछ नहीं लिखा है।

मैंने कहा: तब तो आपको शिक्षा मंत्रालय से पूछताछ करनी पड़ेगी। परन्तु जब तक वे यह नियम नहीं बना देते कि स्कूल में खड़ाऊँ नहीं पहनी जा सकती तब तक मैं इसको इस्तेमाल करता ही रहूंगा। मैं नियमों के अनुसार ही चलता हूं। अगर इस खड़ाऊँ मे विरूद्ध कोई नियम बनाया गया तो दुनिया इस बात पर हंसेगे।

हेड मास्टर ने कहा: हां, मुझे मालूम है कि तुम सदा कानून का पालन करते हो। कम से कम इस मामले में तो अवश्य करते हो। गनीमत है कि तुमने यह आग्रह नहीं किया कि मैं भी खड़ाऊँ पहन लू।

मैने कहा: मैं तो प्रजातांत्रिक व्यक्ति हूं। किसी से कोई जबरदस्ती नहीं करना चाहता। आप अगर नग्न भी आ जाएं तो मैं यह नहीं पूछूंगी कि आपकी पेंट कहा है?

उन्होंने कहा: क्या?

मैंने कहा: मैं तो उसी तरह बोल रहा था। जैसे आप क्लास में बोलते है कि अगर ऐसा हो तो....मैं यह नहीं कह रहा की सचमुच आप नग्न आ जाए। ऐसा करने का आप में सहसा नहीं है। ,(खड़खड़ की आवाज फिर होने लगती है)इसके बारे में केवल आशीष ही कुछ कर सकता है!

मैं क्या कहा रहा था?

आप कह रहे थ कि ह

आप हेड मास्टर से कह रहे थे कि उसमें इतना सहसा नहीं है कि वह बिना पेंट पहने ही आ जाएं।

हां, मैंने उनसे कहा: यह तो मैं केवल कल्पना करने की बात कर रहा हूं। आप जिस प्रकार क्लास में कहते है—मान लो कि, तब हम यह नहीं पूछते कि वास्तव में ऐसा है या नहीं। इसीलिए मुझसे भी मत पूछिए। मान लीजिए कि आप बिना पेंट के आ जाएं...अब मैं कुछ और जोड़ देता हूं—बिना कमीज के या बिना जांघिक के.....'

हेड मास्टर ने कहा: तुम यहां से बाहर चले जाओ।

मैंने कहा: मैं तब तक नहीं जाऊँगा जि तक आप ये न कहा दें कि मैं खड़ाऊँ इस्तेमाल कर सकता हूं। मैं अहिंसक आदमी हूं इसलिए मैं चमड़े का इस्तेमाल नहीं कर सकता। लकडी बिलकुल प्राकृतिक है। या तो मैं आपकी तरह चमड़े का इस्तेमाल करूं। हालांकि आप अपने आप को ब्राह्मण कहते है। आप चमड़े के इन जूतों के साथ अपने आपको ब्राह्मण कैसे कह सकते है। या मैं खड़ाऊँ पहनूं।

उन्होंने कहा: तुम्हे जो करना हो करो, जितने जल्दी हो सके, जितने दूर जा सको चले जाओ। क्योंकि मैं शायद ऐसा कुछ कर बैठूं जिसके लिए मुझे अपनी सारी उम्र पछताना पड़े।

मैंने कहा: क्या आप सोचते है कि आप मुझे जान से मार सकते है, सिर्फ मेरी खड़ाऊँ के कारण।

उन्होंने कहा: और अधिक प्रश्न मत पूछो। मुझे परेशान मत करो। परंतु मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि जब मैं खड़ाऊँ की आवाज को सुनता हूं—और स्कूल के फर्श पत्थर से ही बने हुए थे—मुझे इनकी आवाज कहीं से भी सुनाई देती है। यह असंभव है कि इनकी आवाज न सुनाई दे। पता नहीं क्यों पर हर वक्त तो तुम चलते रहते हो। ओर उस आवाज से में बौखला जाता हूं।

मैंने कहा: वह आपकी समस्या है। मैं तो खड़ाऊँ ही पहनूंगा।

और जब तक मैंने युनिवर्सिटी को नहीं छोड़ा तब तक खड़ाऊँ पहनता ही रहा। हाई स्कूल से लेकर युनिवर्सिटी तक मैंने खड़ाऊँ ही पहने। कोई भी मेरे बारे में तुम्हें बता सकता था। क्योंकि सिर्फ मैं ही खड़ाऊँ पहनता था। इसलिए सब लोग कहते थे कि तुम उसकी आवाज मीलों दूर से सुन सकते हो।

मुझे ये खड़ाऊ बहुत अच्छी लगती थी। जहां तक मेरा सवाल था, मुझे वे बहुत पसंद थीं क्योंकि उन्हें पहल कर मैं रात को और सुबह के समय मीलों घूमता था। सैर करता था। तुम लोगों को तो खड़ाऊँ का कोई अनुभव नहीं है। ऐसा लगता है जैसे कोई अपने पीछे चल रहा हो। जब के अपने को पता होता है कि अपनी ही खड़ाऊँ की आवाज है ।फिर भी बीच-बीच में संदेह होने लगता है कि पीछे मूड कर एक बार देख ही लिया जाए कि कौन मेरा पीछा कर रहा है। मुझे वर्षो लग गए अपने आप को समझाने में कि मुझे ऐसी मूर्खतापूर्ण चीजें नहीं करनी चाहिए। और इससे भी अधिक समय लग गया यह समझाने में कि ऐसी बेवकूफी की चीजें करने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए।

मैंने मस्तो से कहा: दूसरे लोग जिन कामों के लिए आसानी से तैयार हो जाते है उन कामों के लिए भी मैं जल्दी से राज़ी नहीं होता। हां कहना मुझमें बहुत देर के बाद आया। मैं तब तक नहीं-नहीं कहता गया जब तक यह नहीं अपने आप हां में परिवर्तित नहीं हो गई। किंतु मैं इसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा था।

अब यह तो विषयांतर हो गया। सच तो यह है कि इस वार्ता माला में विषयांतर होता ही रहेगा। किंतु मैं बार-बार उसी बिंदु पर वापस आने की कोशिश करता रहूंगा जहां से हम दूसरे विषय पर चले गए थे।

अंत में मैं राज़ी हो गया। मस्तो और मैं प्रधानमंत्री के घर गए। मुझे मालूम नहीं था कि कितने लोग मस्तो का आदर करते है। क्योंकि दुनिया के बारे में तो मैं कुछ ज्यादा जानता ही नहीं था। मैंने रास्ते में उनसे पूछा कि क्या तुमने उनके साथ समय तय कर लिया है?

वह हंसे और उन्होंने कुछ नहीं कहा। मैंने मन ही मन सोचा, अगर इन्हें चिंता नहीं है तो मैं क्यों चिंतित हो रहा हूं। ये मेरी परेशानी नहीं है।, मैं तो सिर्फ इनके साथ जा रहा हूं। जैसे ही हम फाटक के भीतर घूसे मैं यह समझ गया कि मस्तो को यहां आने के लिए किसी से कुछ भी पूछने की जरूरत नहीं है। वहां पर जो सिपाही खड़ा था उसने मस्तो के पैरों को छूकर कहा: बाबा आप तो कई महीनों से नहीं आए। हम तो आपके दर्शन को तरस गए। कभी-कभी प्रधानमंत्री को भी आपका आशीर्वाद चाहिए होता है।

मस्तो हंसे किंतु उन्होंने कुछ नहीं कहा। जैसे ही हमने प्रवेश किया सैक्रेटरी ने उनके पैर छुए और उनसे कहा: अगर आप टेलीफोन कर देते तो हम प्रधानमंत्री की कार भेज देते। और ये लड़का कोन है?

मस्तो ने कहा: मैं इस लड़के को सिर्फ जवाहरलाल से मिलाने को लाया हूं। और किसी से नहीं। और याद रखना कि उसके बारे में किसी भी तरह से कुछ नहीं कहना। उन्होंने तो पूरी सावधानी से काम किया किंतु फिर भी मेरे सिद्धांत ने भी अपना काम कर ही दिया।

मैंने तुम्हे बताया है कि जैसे ही हम एक मित्र बनाते है वैसे ही एक दुश्मन भी बन जाता है। अगर तुम्हे दुश्मन नहीं चाहिए तो मित्र मत बनाओ। बौद्ध और ईसाई साधुओं का यही ढंग है। वे सब संबंधों को, मित्रता और सबको भूल जाते है ताकि कोई दुश्मन न बने। परंतु जीवन का एक मात्र उद्देश्य यही तो नहीं है कि कोई दुश्मन न बने।

तुम्हें हैरानी होगी जैसे कि मुझे हुई थी....उस दिन नहीं बहुत वर्षो के बाद..उस दिन तो मेरे लिए यह संभव नहीं था कि मैं उस आदमी को पहचान सकूं जो सैक्रेटरी के आफिस में बैठा हुआ भेंट करने के नियुक्त समय का इंतजार कर रहा था। उस समय मैंने उस के बारे में कुछ नहीं सुना था किंतु वह बहुत घमंडी दिखाई दे रहा था । मैंने सोचा कि वह कोई बहुत शक्ति शाली आदमी होगा।

मैने मस्तो से पूछा: ये आदमी कौन है?

मस्तो ने कहा: हां, मेरा मतलब है कि काई खास महत्व के नहीं है। बस यूं ही.....हां, वह कैबिनेट मिनिस्टर है....जरा देखो, वह कितने गुस्से में है, क्योंकि इस समय उन्हें प्रधानमंत्री के साथ होना चाहिए था। उनको यह समय दिया गया था।

परंतु मस्तो को सब लोग जानते थे और प्रधानमंत्री ने उनको पहले बुला लिया और मोरार जी देसाई को इंतजार करने को कहा। जवाहरलाल ने अनजाने में ही उनका अपमान कर दिया। परंतु मोरार जी देसाई तो शायद आज भी नहीं भूल सके। वह उस नवयुवक को शायद भूल हों किंतु उन्हें मस्तो तो याद होगा ही। क्योंकि हर प्रकार से मस्तो बहुत प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले थे।

हम लोग भीतर गए और वहीं पाँच मिनट नहीं पूरा एक घंटा और तीस मिनट ठहरे और मोरार जी देसाई को इंतजार करना पडा। उनके लिए यह सहन करना मुश्किल हो गया। वह उसका समय था और एक संन्यासी एक नवयुवक के साथ उनके पहले ही घुस गया... और फिर उनको नब्बे मिनट तक इंतजार करना पड़ा।

और जीवन में पहली बार मैं हैरान रह गया। क्योंकि मैं तो यहां पर एक राजनीतिज्ञ से मिलने गया था। और जिसे मैं मिला वह राजनीतिज्ञ नहीं वरन कवि था। जवाहर लाल राजनीतिज्ञ नहीं थे। अफसोस है कि वह अपने सपनों को साकार नहीं कर सके। किंतु चाहे कोई खेद प्रकट करे, चाहे कोई वाह-वाह कहे, कवि सदा असफल ही रहता है यहां तक कि अपनी कविता में भी वह असफल होता है। असफल होना ही उसकी नियति है। क्योंकि वह तारों को पाने की इच्छा करता है। वह क्षुद्र चीजों से संतुष्ट नहीं हो सकता। वह समूचे आकाश को अपने हाथों में लेना चाहता है।

मैं तो आश्चर्यचकित रह गया। जवाहरलाल के ध्यान में भी यह बात आई और उन्होंने कहा: क्या हुआ? ऐसा लगता है जैसे इस लड़के को शाक लगा हो।

मेरी और बिना देखे ही मस्तो ने कहा: मैं इस लड़के को जानता हूं। इसलिए इसे मैं आपके पास लाया हूं। अगर मेरी सामर्थ्य में होता तो मैं आपको इसके पास ले जाता।

यह सुन कर जवाहरलाल के बड़ा अचरज हुआ। परंतु वे बहुत ही सुसंस्कृत व्यक्ति थे। मस्तो के शब्दों के अर्थ को समझने के लिए उन्होंने फिर मेरी और देखा। एक क्षण के लिए हमने एक दूसरे की आंखों में देखा। आँख से आँख मिली और हम दोनों हंस पड़े। और उनकी हंसी किसी बूढे आदमी की हंसी नहीं थी। वह एक बच्चे की हंसी थी वे अत्यंत सुदंर थे। और मैं जो कह रहा हूं वही इसका तात्पर्य है। मैंने हजारों सुंदर लोगो को देखा है किंतु बिना किसी झिझक के मैं यह कह सकता हूं कि वह उनमें से सबसे अधिक सुंदर थे। केवल शरीर ही सुंदर नहीं था उनका...।

अजीब बात है की हम कविता की बात कर रहे थे और मोरार जी देसाई बाहर बैठे इंतजार कर रहे थे। हम लोग ध्यान की बात कर रहे थे। और मोरार जी मन ही मन गुस्से में जल रहे होगें। उसी दिन से हम दोनों की शत्रुता निश्चित हो गई, उस पर मुहर लग गई। मेरी और से नहीं। मरा अपना तो उससे कोई विरोध नहीं है। उन्होंने जिन बातों का विरोध किया है वे मूर्खतापूर्ण है—उनका क्या विरोध करना। उन पर तो बस हंसा जा सकता है। यही मैंने किया है उनके नाम और उनकी यूरीन थेरेपी के साथ। अब उनका अपने ही पेशाब को पीना अमरीका में वे अपनी इस यूरीन थेरेपी का प्रचार कर रहे थे। कोई उनसे यह नहीं पूछता है कि अपना पेशाब पी रहे हो या किसी दूसरे का। क्योंकि जब कोई आदमी पेशाब पीने लगे तो इसका मतलब है कि वह अपने होश हवास में नहीं है। इसलिए अब वह कुछ भी पी सकता है—दूसरे का पेशाब तो क्या? और वे वहां पर पेशाब पीने का उपदेश दे रहे थे।

उस दिन से वे मेरे शत्रुबन गए, मुझे इसके बारे में उस समय मालूम नहीं थी। इसका कारण यहीं था। उन्हें डेढ घंटे तक इंतजार करना पडा। वे जरूर मेरे बारे में सैक्रेटरी से जान गए होंगे। उन्होंने सैक्रेटरी से पूछा होगा कि यह लड़का कौन है और उसे प्रधानमंत्री से क्यों परिचित करवाया जा रहा है। इसका उद्देश्य क्या है? और मस्तो बाबा उसमें इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे है।

अब अगर कहीं पर डेढ़ घंटे बैठना पड़ें तो थोड़ी-थोड़ी बातचीत तो करनी ही पड़ती है। मैं उस स्थिति को समझ सकता हूं। किंतु उनके लिए यह सहन करना बहुत मुश्किल हो गया। किंतु इससे भी बढ़ कर—उनको बरदाश्त के बाहर तब हो गया जब जवाहर लाल इस बीस वर्ष के लड़के को विदा करने के लिए स्वयं पोर्च में आएं।

उस समय मोरार जी देसाई ने देखा कि प्रधानमंत्री मस्त बाबा से नहीं वरन खड़ाऊँ पहने हुए एक अजीब लड़के से बात कर रहे थे। उस सुंदर संगमरमर के बरामदे पर चलते हुए बहुत आवाज कर रहा था। उस समय मेरे बाल लंबे-लंबे थे और मैंने एक अजीब सा चोगा पहन रखा था, जिसको मैंने अपने हाथों से सिया था। क्योंकि अब जो मेरे संन्यासी मेरे लिए कपड़े बनाते है उस समय वे वहां नहीं थे। कोई भी वहां नहीं था।

मैंने बहुत ही सीधा-साधा रोब बनाया था। उसमें बाँहों को बाहर निकालने के लिए दो सुराख थे और अगर बाँहों को भीतर रखना हो तो इन्हीं सुराखों में उन्हें भीतर कर लिया जात। इसे मैंने स्वयं बनाया था। इसके बनाने में कोई कारीगरी की जरूरत नहीं थी। बस कपड़े के एक टुकडे को दोनों ओर से सीकर गले के लिए एक छोटा सा सुराख बना देना था।

मस्तो को ये चोगा बहुत पसंद आया। उसने किसी दूसरे से अपने लिए भी ऐसा ही बनवाया।

मैंने कहा: तुम्हें इसके लिए मुझसे कहना चाहिए था।

उन्होंने कहा: नहीं, यह ज्यादती हो जाती। अगर तुम उसे बनाते तो मैं उसे पहन ही नहीं सकता था। मैं उसे संजो कर अपने पास सुरक्षित रखता।

हम उस बंगले से बाहर आ गए जो बाद में 'त्रिमूर्ति' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जवाहरलाल की स्मृति में उसे अजायब घर बना दिया गया है।

जवाहरलाल सचमुच महान थे। वे एक लड़के को बाहर तक छोड़ने आए। जिसकी कोई जरूरत न थी और फिर इसके कार में बैठ जाने पर उन्होंने स्वयं कार का दरवाजा बंद किया और जब तक कार रवाना नहीं हो गई तब तक वहीं खड़े रहे। और बेचारे मोरार जी देसाई यक सब देख रहे थे। वे तो कार्टून है लेकिन यह कार्टून मेरा दुश्मन बन गया सदा के लिए। उन्होंने मुझे नुकसान पहुंचाने की भरपूर कोशिश की किंतु इसमें सफल नहीं हो सके।

समय क्या हुआ है?

आठ बज कर इक्कीस मिनट, ओशो।

अच्छा मेरे लिए दस मिनट। फिर मुझे काम पर जाना है। इसके बाद मेरा आफिस शुरू होता है।

सत्र—40 मैं 'कल्कि' अवतार नहीं हूं

मैं खड़ा हूं—अजीब बात है, इस समय तो मैं आराम कर रहा हूं—मेरा मतलब है अपनी स्मृति में मैं मस्तो कि साथ खड़ा हूं। निश्चित ही तो ऐसा कोई और नहीं है जिसके साथ मैं खड़ा हो सकता हूं। मस्तो के बाद दूसरे किसी का संग-साथ तो बिलकुल अर्थहीन है।

मस्तो तो पूर्णतया समृद्ध थे—भीतर से भी और बाहर से भी। उनके रोम-रोम से उनकी आंतरिक समृद्धि झलकती थी। अपने विविध संबंधों का उन्होंने जो विशाल जाल बुन रखा था उसका हर तंतु मूल्य वान था और इसके बारे मैं उन्होंने मुझे धीरे-धीरे अवगत किया। अपने जाने-पहचाने सब लोगो से तो उन्होंने मुझे परिचित नहीं कराया—ऐसा करना संभव नहीं था। मुझे जल्दी थी वह करने की जिसे में कहता हूं, न करना। वे मेरे प्रति अपनी जिम्मेवारी को पूरा करने की जल्दी मैं थे। चाहते हुए भी वह मेरे लिए अपने सब संबंधों का लाभ उपलब्ध न करा सके। इसके दूसरे कारण भी थे।

वे परंपरागत संन्यासी थे। कम से कम ऊपरी तल पर, परंतु उनको मैं भीतर से जानता था। वे परंपरागत नहीं थे। पर ऐसा होने का ढोंग करना पड़ता था, क्योंकि लोगों की भीड़ ही उनसे चाहती थी। आज मैं समझ सकता हूं कि उनको पीड़ा झेलनी पड़ी होगी। मुझे वैसी पीडा कभी नहीं हुई क्योंकि मैंने हर प्रकार के ढोंग से इंकार कर दिया।

तुम्हें विश्वास नहीं होगा कि हजारों लोग मुझे यह उपेक्षा कर रहे थे कि मैं उनकी कल्पनाओं को साकार कर दूँ अर्थात मेरा आचरण उनकी कल्पनाओं के अनुसार हो मुझे उनसे कोई मतलब न था।

मेरे लाखों अनुयायियों में से हिंदू लोग—मैं उस समय की बात कर रहा हूं जब मैंने अपना काम अभी शुरू नहीं किया था। लोग मुझे कल्कि मान रहे थे। कल्कि हिंदुओं का अंतिम अवतार है।

इसके बारे में मुझे तुम लोगों को कुछ बातें समझनी पड़ेगी। भारत में प्राचीन हिंदू परमात्मा के केवल दस अवतार मानते थे। वह स्वभाविक है क्योंकि उस समय लोग अंगुलियों पर ही गिनती किया करते थे। और दस की संख्या अंतिम थी। एक से दस ही गिना जाता था। इसलिए हिंदुओं का यह विश्वास था कि अस्तित्व के हरेक चक्र में दस अवतार होते है। अवतार शब्द का अर्थ है: दिव्य का अवतरण। दस इसलिए क्योंकि दस के बाद एक चक्र समाप्त हो जाता है। इसके तुरंत बाद ही दूसरा आरंभ हो जाता है। फिर पहला अवतार आता है। और इस प्रकार यह कहानी दस तक चलती रहती है।

अगर तुमने भारतीय गरीब किसानों को गिनती करते हुए देखा हो तो तुम मेरी बात को समझ जाओगे। वे अपनी अंगुलियों पर दस तक गणना करते है—इसके बाद फिर वे एक दो से शुरू करते है। आदिवासियों में दस का अंक अंतिम है। अजीब बात है, जहां तक भाषाओं का ख्याल है अभी भी वैसा ही है। दस के बाद कुछ नहीं। ग्यारह का अंक तो केवल पुनरूक्ति है। एक के पीछे एक रख दिया गया है। उनका विवाहा कर दिया गया है और उन्हें मुसीबत में डाल दिया। दस तक के अंक मौलिक क्यों है। क्योंकि सब जगह आदमी ने अपनी अंगुलियों पर ही गिनती की है।

इससे पहले कि यह चर्चा मैं चालू रखूं—थोड़ा सा मोड़ तुम्हें बताना चाहता हूं कि एक दो तीन..........दस अंकों के लिए तुम्हारे अंग्रेजी के बाद जो शब्द है उस सबको संस्कृत से उधार लिया गया है। गणित तो संस्कृत का ऋणी है। क्योंकि इन अंको के बिना न तो अल्बर्ट आइंस्टीनी होता। न एटम बम होता, न ब्रट्रेंड़रसल और न हाइट हैड का प्रिसिपिआ मैथेमेटिका होता। ये अंक बुनियादी ईंटे हैं। और ये हिमालय की घाटी में रखी गई थी। शायद उनहोंने असीम सौंदर्य को देख कर उसको मापना चाहा था। या कोई दूसरा कारण

रहा होगा। परंतु एक बात तो निश्चित है कि संस्कृत का 'षष्ठ' अंग्रेजी में 'सिक्थ' बन जाता है। संस्कृत का 'अष्ट' 'एट' बन जाता है। और इसी प्रकार दूसरे अंकों का रूप भी थोड़ा बदल जाता है।

मैं क्या कहा रहा था?

आप कहते थे कि हिंदू समझ रहे थे कि आप परमात्मा के अंतिम अवतार कल्कि है।

हां, तुम अच्छी तरह से सुन रहे हो।

कल्कि हिंदुओं का दसवां और अंतिम अवतार है। उसके बाद दुनियां समाप्त हो जाती है। और फिर से आरंभ होती है। ठीक उसी तरह जिस तरह तुम ताश का घर गिरा देते हो। और फिर उसे बनाते हो। हां, बनाने से पहले ताश के पत्तों को थोड़ा सा मिलाते हो, ऊपर-नीचे करते हो। इससे तुम्हारी उत्साह बढ़ जाता है। पत्तों को तो कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन इससे तुम्हारा उत्साह बढ़ जाता है।

बस इसी प्रकार परमात्मा भी ऊपर-नीचे करता है। कि शायद इस बार मैं अधिक अच्छा कर सकूंगा। किंतु वह जो करता है—हर बार रिचर्ड निकसन, एडोल्फ हिटलर, मोरार जी देसाई.....बाहा निकल आते है...मेरा मतलब यह है कि परमात्मा हर बार असफल हो जाता है।

हां, कभी-कभी वह असफल नहीं भी होता। किंतु इसका श्रेय तो मनुष्य को मिलना चाहिए क्योंकि वह ऐसी दुनिया में सफल होता है जहां पर सब कुछ असफल है। इसका श्रेय परमात्मा को नहीं दिया जा सकता। वह दुनिया परमात्मा की बदनामी का अच्छा प्रमाण है।

ऋग्वेद के समय से भी पहले, कोई दस हजार वर्ष पहले से हिंदू दस के अंक को अंतिम अंक मानते आ रहे है। परंतु जैन, जो हिंदुओं से कही अधिक प्राचीन, तार्किक और गणितज्ञ है। दस की संख्या की पावनता में विश्वास नहीं करते। उनकी अपनी अलग मान्यता है। निश्चित ही उन्होंने भी किसी स्त्रोत से गणना निर्धारित की होगी। अगर अपनी अंगुलियों से गणना निर्धारित नहीं कि तो किसी और तरीके से निर्धारित की होगी। कोई और स्त्रोत रहा होगा।

जैनों ने जो किया, उसकी स्पष्ट चर्चा कभी नहीं की गई। और मैं किसी शास्त्र से इसकी पुष्टि नहीं कर सकता क्योंकि शायद मैं ही इसके बारे में पहली बार बोल रहा हूं। अगर किसी ने इसकी चर्चा मुझसे पहले की है तो मुझे मालूम नहीं है। इसीलिए मैं कहा रहा हुं कि शायद। परंतु जानने योग्य सभी शास्त्रों को में जानता हूं। दूसरों कि और मैंने ध्यान नहीं दिया। पर फिर भी हो सकता है कि भीड़ में मैंने किसी ऐसे की उपेक्षा कर दी हो जिसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए थी। इसीलिए शायद शब्द का प्रयोग करना पडा । अन्यथा मैं निशचित रूप से जानता हूं कि इससे पहले किसी दूसरे ने ऐसा नहीं कहा परंतु अब इसे कहा देना चाहिए।

जैन चौबीस गुरूओं को मानते हे। वे उन्हें तीर्थंकर कहते है। तीर्थ कर शब्द बहुत ही सुंदर है। इसका अर्थ है: दूसरे किनारे पर जाने के लिए जो तुम्हारी नाव के लिए घाट बनाता है। तीर्थ का यही अर्थ है। तीर्थकर का अर्थ है: जो ऐसा घाट बनाता है जहां से अनेक-अनेक लोग दूसरे किनारे पर जा सकते है। परंतु वे चौबीस को मानते है। उनकी सृष्टि का भी एक चाक है किंतु वह बड़ा है। हिंदुओं का दस का चक्र है। जैनों का चौबीस का बड़ा चक्र है उनका क्षेत्र बड़ा है।

हिंदू भी अनजाने ही इस चौबीस की संख्या से प्रभावित हो गए। क्योंकि जैन उनसे कहते थे कि तुम्हारे पास ता केवल दस है—हमारे पास चौबीस है। ये बच्चों जैसी बातें है। बच्चे एक-दूसरे से पूछते है कि तुम्हारे पापा कितने बड़े है। क्या वे केवल पाँच फीट ऊंचे है। मेरे पापा तो छह फीट ऊंचे है। मेरे पापा कैसे बड़ा तो कोई हो ही नहीं सकता। और यह परमात्मा भी कुछ और नहीं बस पापा ही होता है। परमात्मा हीं। अब्बा, वास्तव में प्रेम ओर आदर का शब्द है। पिता शब्द से प्रेम की यह ध्वनि नहीं निकलती। जैसे ही तुम और आदर का शब्द है।

पिता शब्द से प्रेम की वह ध्वनि नहीं निकलती। जैसी ही तुम पिता या फादर कहते हो कुछ गंभीर रहो जाता है। अपने पादरियों को फादर कहते है। उनके लिए डैडी पापा शब्द उपयुक्त नहीं है। और बच्चे अब्बा शब्द पर हंसेगे—कोई उनको गंभीरता से नहीं लेता।

हिंदू भारत के बाहर से आए। ये इस देश के मूल निवासी नहीं है। ये विदेशी है—बिना पासपोर्ट के । शताब्दियों तक ये मध्य एशिया से आते रहे है। यहीं से यूरोप की अन्य जातियां भी आई है—फ्रांसीसी,अंग्रेज,जर्मन, रूसी, स्केंडीनेवीयन, हिरीथूएनियन आदि-आदि।

सभी 'यन्स' मंगोलिया से आए है। आज तो मंगोलिया रेगिस्तान जैसा बन गया है। मंगोलिया के बारे में कोई सोचता भी नहीं है कि यह एक देश है। इसका कुछ भाग तो चीन का है और इसका अधिकांश भाग रूस में चला गया है। निरंतर इसी बात पर झगड़ा होता रहता है। कि इसकी सीमा-रेखा कहां खींची जाए। क्योंकि मंगोलिया तो सिर्फ रेगिस्तान है।

परंतु ये सब लोग—विशेषत: आर्य मंगोलिया से ही आए। ये भारत चले आए, क्योंकि एकाएक मंगोलिया रेगिस्तान बनने लगा और उनकी जनसंख्या भारतीय ढंग से बढ़ने लगी थी। इसीलिए उन्हें सभी दिशाओं में जाना पडा। अच्छा ही हुआ इसी प्रकार इन विभिन्न देशों का निर्माण हुआ।

आर्यों के भारत में आने से पहले ही ये देश अति सभ्य और सुसंस्कृत था। यह यूरोप जैसा नहीं था। जब आर्य जर्मनी ओर इंग्लैड पहुंचे तो उनको किसी से भी लड़ाई नहीं करनी पड़ी। उन्हें वहां पर बहुत सुंदर जमीन मिल गई जहां पर किसी का उन्हें डर नहीं था। परंतु भारत में ऐसा नहीं था। आर्यों के प्रवेश के पहले भारत में जो लोग रहते थे वे बहुत ही सुसभ्य रहे होंगे। मेरा मतलब है कि वे केवल शहरों में ही नहीं रहते थे।

उस समय के दो शहर खुदाई में निकाले गए है—मोहलजोदरो और हड़प्पा। अब ये पाकिस्तान में है। किंतु पहले भारत में ही थे। इन शहरों में आश्चर्यजनक चीजें है। इन शहरों की गलियाँ बहुत चौड़ी होती थी। साठ फीट चौडी। इमारतें तीन मंजिल की होती थी। बेडरूम के साथ-साथ बाथरूम भी होते थे।

आज भी भारत में लाखों लोग यह नहीं जानते कि बेडरूम के साथ बाथरूम भी हो सकता है। अगर उन्हें यह बात बताई जाए तो वे इस पर विश्वास ही नहीं करते और वे हंसने लगते है। वे समझते है कि तुम पागलों जैसी बात कर रहे हो—बेडरूम के साथ बाथरूम कैसे हो सकता है।

स्केंडीनेवीयन का जो नवीनतम मकान का नक्श बनाने वाला है वह तुम्हें भी पागल ही मालूम होगा। क्योंकि उसके बाथरूम के भीतर ही बेडरूम है। सारा दृष्टिकोण ही बदल गया। बुनियादी रूप से तो यह बाथरूम ही है और उसके एक कोने में बेडरूम बना हुआ है। अलग भी नहीं है। बाथरूम अधिक महत्वपूर्ण है। उसके भीतर एक छोटा सा स्विमिंग पुल भी बना हुआ है। और जरूरत की सब चीजें वहां पर मौजूद है, उसमें एक चारपाई भी बनी हुई है। बाथरूम बेडरूम से जुड़ा हुआ नहीं है बेड ही बाथरूम में है।

भविष्य में शायद ऐसा ही होगा। परंतु अगर भारत के लोगों को यह बात बताई जाए...। सारे गांव में अकेला मैं ही था—मेरे नाना के गांव में जहां पर मैं बहुत दिन तक रहा—जिसने अपने बेडरूम के साथ ही बाथरूम बनाया हुआ था। लोग इसका मजाक उड़ाते थे। कि क्या सचमुच तुम्हारे बेडरूम के साथ बाथरूम बना हुआ है। और वे इस बात को बहुत धीरे से फुसफुसा कर कहते थे।

मैं उनसे कहता: इसमें छिपाने की क्या बात है, हां—है तो क्या?

उन्होंने कहा: हमें विश्वास नहीं होता। क्योंकि यहां पर तो हमने ऐसा कभी नहीं सुना कि बेडरूम के साथ लगा हुआ बाथरूम भी होता है। जरूर यह तुम्हारी नानी का विचार रहा होगा। वे बहुत खतरनाक है। वे यहां

की नहीं है। कहीं दूर से आई है। हमने उनके जन्मस्थान की जो कहानियाँ सुनी है उन्हें हम अपने बच्चों को भी नहीं सुना सकते । और तुम्हें भी नहीं बताएँगे।

मैंने उनसे कहा: आप लोग इसकी चिंता मत करो, आप मुझे बता सकते है क्योंकि मेरी नानी स्वयं इन के बारे में मुझे बताती है।

वे कहते, देखो, हमने तो पहले ही कहा था कि वे खजुराहो से आई हुई विचित्र औरत है। वहां पर सही लोग पैदा ही नहीं होते है।

शायद मुझमें नानी का जो खून है उसके कारण ही लोग जिसे गलत मानते है उसे मैं ठीक मानता हूं।

इस दुनियां में जब कि हिंदू अपने धर्म को सबसे प्राचीन मानते है, लेकिन ऐसा नहीं है। जैन सबसे प्राचीन है। पर वे अल्पसंख्यक है और बहुत कायर है। परंतु इन्होंने चौबीस की संख्या के बारे में सोचा। चौबीस क्यों? मैंने इसके बारे में सोचा है मेंने इसके बारे में मस्तो से अपनी मां से और अपनी तथाकथित सास से चर्चा की थी।

इस तथाकथित अपनी सास के बारे में बादमें बात करूंगा। मेरे सामने तो उसको मेरी सास कोई भी नहीं कहता था। क्योंकि दोनों ही खतरनाक थे। मेरी नानके बाद मेरे परिचितों में से वह सबसे अधिक साहसी स्त्री थी। उसको मैं प्रथम स्थान तो नहीं दे सकता मजाक ही मजाक में उसे मेरी सास कहा जाता था। वह मेरी मां जैसी थी। मैंने उसकी बेटी से शादी नहीं की थी परंतु उसकी बेटी का मुझसे प्रेम था। उसके बारे में मैं किसी और चक्र में बात करूंगा क्योंकि वह तो वास्तव में दुस्चक्र है। और उसको मैं अभी आरंभ नहीं करना चाहता।

समय क्या हुआ है?

साढ़े दस बजे हैं,ओशो।

वाह,सिर्फ मेरे लिए दस मिनट ओर, बहुत ही सुंदर है।

(और उन दस मिनट में सब मौन हो ध्यान में बैठे रहते है और ओशो, हंसते है धीमे-धीमे आरे वो हंसते हुए चले जाते है)

सत्र—41 चौबीस तीर्थकर एक भेड़ परम्परा

ओ के. । मैं जो तुम्हें बताना चाहता था उसे बताना शुरू भी न कर सका। शायद ऐसा नहीं ही होना था क्योंकि कई बार मैंने उसकी चर्चा करने की कोशिश कि किंतु कर नहीं सका। परंतु यह मानना पड़ेगा कि यह सत्र बहुत ही सफल रहा, लाभदायक रहा। हालांकि न कुछ कहा गया, न कुछ सुना गया। अच्छा खासा हंसी-मजाक होता रहा परंतु मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं कारावास में हूं।

तुम लोग सोच रहे होगें कि मैं क्यों हंसा। अच्छा है कि मेरे सामने कोई दर्पण नहीं है। एक दर्पण का इंतजार करो। कम से कम यह इस स्थान को वैसा बना देगा जैसा इसको होना चाहिए। परंतु यह बहुत ही अच्छा रहा। मैं बहुत ही हलका महसूस कर रहा हूं। शायद वर्षो से मैं नहीं हंसा। मेरे भीतर कुछ इस सुबह की प्रतीक्षा कर रहा था। किंतु में उस दिशा में कोई कोशिश नहीं कर रहा था....शायद किसी और दिन।

कभी-कभी ये चक्र एक-दूसरे की दिशा में प्रवेश कर जाते है। और ये बार-बार ऐसा ही करते रहेंगे। मैं तो पूरी कोशिश करता हूं कि निर्धारित दिशा में ही चला जाए, परंतु ये चक्र तो सब कुछ घेर लेते है। ये पागल लोग है....या कौन जाने शायद ये बुद्ध पुरूष है जो उस पुरानी दुनिया कि झलक पाने की कोशिश कर रहे है यह देखने के लिए अब मामला कैसा चल रहा है। किंतु मेरा उद्देश्य यह नहीं है। मैं वहीं नहीं पहुंच सका जहां में जाने की कोशिश कर रह था। तुम्हारी हंसी के बावजूद बात को जारी रखने की बजाए में हंस पडा।

अब ये सब प्रस्तावना है। पर आज सुबह मुझे एक बात का बोध हुआ—ऐसा नहीं है कि पहले मुझे यह मालूम नहीं था....परंतु मुझे यह नहीं मालूम था कि इसके बारे में मुझे बताना जरूरी है। परंतु अब यह बताना जरूरी है।

इक्कीस मार्च उन्नीस सौ तिरपन को कुछ विचित्र घटा। वैसे तो बहुत सी अजीब बातें घटीं, परंतु में एक ही के बारे में बात कर रहा हूं। दूसरी बातें अपने आप समय के साथ सामने आती जाएंगी। मेरी कहानी में तुम्हें इसके बारे में कुछ जल्दी ही बता रहा हूं, परंतु सुबह मुझे इस अजीब बात की याद आई। उस रात के बाद तो मुझे समय का कोई ख्याल ही न रहा। मैं कितनी ही कोशिश करूं मुझे समय का कोई अंदाज नहीं होता—अन्य लोगों को कुछ न कुछ अनुमान तो हाँ जाता है कि समय क्या हुआ है।

सिर्फ यही नहीं, हर सुबह जब मैं नींद से उठता हूं तो खिड़की से बाहर यह देखना पड़ता है कि यह मेरी दोपहर की नींद थी या रात की नींद थी। क्योंकि मैं हर रोज दो बार सोता हूं। और हर दोपहर को भी जब मैं जागता हूं तो पहली जो चीज करता हूं वह यह कि मैं अपनी घड़ी को देखता हूं। कभी-कभी यह घड़ी भी मेरे साथ मजाक करती है और वह चलते-चलते रूक जाती है। इसी लिए तो मेरे पास दो हाथ की घड़िया है और एक बड़ी घड़ी है—यह देखने के लिए कि इनमें से कोई एक मेरे साथ मजाक तो नहीं कर रही।

एक दूसरी घड़ी तो बहुत ही खतरनाक है—उसका तो जिक्र ही नहीं करना चाहिए। मैं चाहता हूं कि में किसी को भेट कर दूँ किंतु इस घड़ी को देने के लिए मुझे ठीक आदमी नहीं मिला अभी तक, क्योंकि वास्तव में यह भेंट नहीं सज़ा सिद्ध होगी। यह घड़ी इलेक्ट्रानिक है इसलिए जब एक क्षण के लिए भी बिजली चली जाती है तो घड़ी का कांटा बारह बजे को संकेत देने लगता है: बारह...बारह...बारह..इससे पता चल जाता है कि बिजली चली गई है।

कभी-कभी तो मेरा जी चाहता है कि मैं इसको बाहर फेंक दूँ किंतु किसी ने मुझे यह भेट की है और मैं इतनी आसानी से चीजों को बाहर नहीं फेंकता। ऐसा करने से तो उस आदमी का अनादर होगा। इसलिए में उपयुक्त आदमी की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

ऐसी घड़ी मेरे पास एक नहीं वरन दो है—हर कमरे के लिए एक। दोपहर को जब में सो जाता हूं तो कभी-कभी ये मुझे धोखा दे देती है। मैं सामान्यत: साढ़े ग्यारह या कभी-कभार बारह बजे तक सो जाता हूं। एक दो बार मैं ने अपने कंबल में से झांक कर देखा तो घड़ी बारह बजा रही थी। तो मैंने अपने आप से कहा कि इसका मतलब है कि मैं अभी-अभी सोया हूं। और मैं दुबारा सो जाता हूं। एक-दो घंटे के बाद जब फिर मैं घड़ी देखता हूं तो बारह ही बजे होते है। में सोचने लगता हूं कि आज तो समय ही ठहर गया है। सब लोग सो रहे होगें इसलिए सोए रहना ही ठीक है। तो मैं फिर से सो जाता हूं।

अब तो मैंने गुड़िया को कह दिया है कि अगर मैं सवा दो बजे तक न उठ जाऊँ तो वह मुझे नींद से जगा दे।

उसने पूछा: क्यों?

मैंने कहा: अगर मुझे कोई नहीं उठाएगा तो मैं हमेशा सोता ही रहूंगा।

हर सुबह उठ कर मुझे सोचना पड़ता है कि यह सुबह का समय है या श्याम का, क्योंकि मुझे पता ही नहीं चलत। मैं तो उस दिन से समय की सारी समझ को खो बैठा जिस तारीख के बारे में मैं तुमसे बात कर रहा था।

आज सुबह जब मैंने तुमसे पूछा कि समय क्या हुआ है? तो तुमने कहा कि साढ़े दस। मैंने सोचा, है भगवान, यह तो ज्यादती है। मेरी सैक्रेटरी डेढ़ घंटे से इंतजार कर रही होगी। और अभी तक मैंने अपनी कहानी को ही शुरू नहीं किया है। इसलिए उसे समाप्त करने के लिए मैंने कहा: मुझे दस मिनट दे दो। असली कारण यह था कि मैंने समझा कह अब रात है।

और देवराज को भी मालूम है। अब वे इसे अच्छी तरह से समझ सकता हे। एक सुबह जब वह मेरे साथ मेरे बाथरूम तक आया तो मैने उससे पूछा, क्या मेरी सैक्रेटरी इंतजार कर रही है। उसकी समझ में कुछ नहीं आया और वह असमंजस में पड़ गया। मैंने जल्दी से दरवाजा बंद कर लिया ताकि वह संयत हो जाए। अगर मैं दरवाजे पर खड़ा रह कर इंतजार करता रहता—अब तुम्हें मालूम है कि देवराज से बढ़ कर मुझे दूसरा कोई उतना प्रेम नहीं करता वह मुझे चह नहीं बता सका कि यह रात का समय नहीं है। उसने सोचा कि अगर मैं सैक्रेटरी के बारे में पूछ रहा हूं तो इसका कोई कारण होगा। और वह तो वहां थी भी नहीं और वह उसके आने का समय भी नहीं था। तो उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे।

उसके कुछ नहीं कहा। वह चुप रहा। मैं हंस पडा। मेरे इस प्रश्न ने उसे उलझन में डाल दिया। परंतु मैं यह सच कह रहा हूं कि समय मेरे लिए बहुत बड़ी समस्या है। किसी ने किसी तरह काम चला रहा हूं—नये-नये उपाय,नई-नई डिवाइस द्वारा अपना काम चला लेता हूं। अब इसी डिवाइस, अपाय को देखो। क्या कभी कोई बुद्ध इस प्रकार बोला है।

हां, तो मैं तुमसे यह कह रहा था। कि जैन धर्म सबसे प्राचीन धर्म है। मेरे लिए ये कोई मूल्यवान बात नहीं है। याद रखो, इसका कोई महत्व नहीं है। यह निरर्थक है। परंतु महत्वपूर्ण हो या निरर्थक हो, तथ्य तो तथ्य है। इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। पश्चिम में जैन धर्म को कोई नहीं जानता। और पश्चिम में ही नहीं पूर्व में भी भारत के कुछ एक अचलों में ही यह प्रचलित है। इसका कारण यह है कि जैन मुनि नग्न रहते है। वे उन लोगों के पास नहीं जा सके गत जो नैन नहीं है। वे केवल जैन लोगो के पास ही जाते है, क्योंकि अगर वे अन्य जाति के लोगों के पास जाएं तो एक बीसवीं सदी में भी उन पर पत्थर बरसाए जाएंगे और उन्हें मार दिया जाएगा।

ब्रिटिश सरकार भारत में उन्नीस सौ सैंतालीस तक रही। इस सरकार ने जैन मुनियों के लिए एक विशेष कानून बनाया था कि शहर में प्रवेश के पहले इनके अनुयायियों को सरकार से इजाजत लेनी होगी। इसके बिना

वे शहर में प्रवेश नहीं कर सकते ।इजाजत मिलने पर भी बंबई, कलकत्ता, नई दिल्ली जैसे शहरों में नहीं जा सकते। उनके अनुयायी उन्हें इस प्रकार घेर लेते है कि दूसरा कोई उन्हें नग्न नहीं देख सकता।

मैं 'उन्हें ' शब्द का प्रयोग इसलिए कर रहा हूं। क्योंकि जैन मुनि को अकेले यात्रा करने की अनुमति नहीं है। उसे कम से कम पाँच मुनियों के झंड में चलना चाहिए। पाँच की संख्या निर्धारित करने का मतलब है कि वे सब एक दूसरे पर निगाह रख सकें। एक दूसरे की जासूसी कर सकें। यह बहुत ही शक्की धर्म है। इसका शक्की हो स्वभाविक है क्योंकि इसके लिए जो नियम निर्धारित किय गए है वे बहुत ही अस्वाभाविक है।

सर्दी के दिनों में जब लोग ठंड से ठिठुर रहे होते है और उन्हें आग तापन की इच्छा होती है जो जैन मुनि आग के पास नहीं बैठ सकता क्योंकि आग हिंसा है। आग जलाने के लिए लकड़ी चाहिए और इस लकड़ी के लिए पेड़ो का काटना पड़ता है। पर्यावरण वाले इससे शायद सहमत हो। और जब तुम आग जला रहे हो तो आग के साथ बहुत से जीव-जंतु, ऐसे पतंगें जो आँखो से देखे नहीं जा सकते—सब जल जाते है। कभी-कभी लकड़ी के भीतर चींटियाँ और अन्य प्रकार के कीड़े-मकोड़े भी रहते है। जिन्होंने वहां अपना घर बना लिया है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन कारणों से जैन मुनि को आग के पास बैठने की आज्ञा नहीं है। वह कंबल भी इस्तेमाल नहीं कर सकते क्योंकि वह ऊन से बना हुआ होता है। वह भी हिंसा है।

कंबल के बजाए किसी दूसरी वस्तु का भी अपयोग किया जा सकता है। किंतु वह अपने पास कुछ रख ही नहीं सकत। अपरिग्रह मूलभूत बात है और जैनियों ने अपरिग्रह के नियम को अंतिम सीमा तक पहुंचा दिया है। जैन मुनि को देख कर मालूम होता है कि तर्क आदमी को क्या-क्या बना देता है। जैन मुनि बहुत ही कुरूप दिखाई देती है। वह इतना दुबला होता है कि उसकी हड्डियां दिखाई देती है। और वह अधमरा सा होता है। उसका सारा शरीर रूखा-सुखा सिकुडा होता है। किंतु उसका पेट बाहर निकला हुआ होता है। उसकी तोंद बड़ी हुई होती है। उसका शरीर सूख कर लकडी जैसा जो जाता है। यह अजीब बात है पर तुम समझ सकते हो। अकाल पीडित लोग ऐसे ही दिखाई देते है।

ऐसी कई तस्वीरें तुमने देखी होगी जिनमें आकाल क्षेत्र के भूखे बच्चो को दिखाया गया है। उनके पेट बड़े होते है किंतु हाथ-पैर सूखे हुए होते है। और शरीर की चमड़ी लटकी हुई होती है। बस जैन मुनि भी ऐसा ही दिखाई देता है।

क्या, मैं समझ सकता हूं क्योंकि मैंने दोनों को जाना है। इन भूखे बच्चों के और जैन मुनियों के बड़े पेटों ने मेरे ध्यान को आकर्षित किया। क्योंकि इन दोनों के पेट भी एक जैसे है और शरीर भी, चेहरे भी एक समान है। मुझे यह कहने के लिए माफ करन पर उनके चेहरे कुछ नहीं कहते। किसी की अलग पहचान नहीं सब कोरे कागज की तरह सफाचट। जिन पर कुछ भी नहीं लिखा गया। उनको विशेष या महत्व पूर्ण बनाने के लिए किसी ने उन पर कुछ लिखा ही नहीं। इंतजार करने करते वे थक गए, परेशान हो गए, दुःखी हो करवे उलट गए—मैं पृष्ठों का प्रतीक चुन रहा हूं—उलट कर उन्होंने सभी भावी संभावनाओं को बंद कर दिया।

भूखे बच्चे की सहायता करनी चाहिए और जैन मुनि की तो और भी अधिक सहायता करनी चाहिए क्योंकि वह समझता है कि वह जो कर रहा है ठीक कर रहा हे।

परंतु एक प्राचीन धर्म मूर्खतापूर्ण होता ही है। यही मूर्खता उसके प्राचीन होने का सबूत होती है। ऋग्वेद में जैन धर्म के प्रथम गुरु ऋषभ देव का उल्लेख है। उनको ही इस धर्म का प्रवर्तक माना जाता है। में यह निश्चित रूप से तो नहीं कह सकता क्योंकि मैं किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहता—विशेषत: ऋषभ देव को जिनको मैं कभी नहीं मिला और शायद कभी मिलुंगा भी नहीं।

अगर वे सचमुच इस मूर्ख संप्रदाय के संस्थापक थे तो वे कभी भी मुझसे मिलना नहीं चाहेंगे। पर मैं कहना यह चाहता हूं कि जैनों का कैलंडर अलग होता है। वे दिनों की गणना सूर्य के अनुसार नहीं वरन चंद्र के अनुसार करते है क्योंकि उनका वर्ष चौबीस भागों में विभक्त है। इसलिए उनके तीर्थंकर भी चौबीस है। उनकी सृष्टि का चक्र एक वर्ष के अनुसार ही बना हुआ है किंतु चंद्र के आधार पर है—ठीक जिस प्रकार लोग सूर्य को अपना गणना का अधार बनाते है।

मैं तो समझता हूं कि ये सब बातें मूर्खतापूर्ण है। मैं जो कह रहा हूं उसके अर्थ को समझने के लिए अंग्रेजी के कैलंडर पर एक निगाह डालना । जैनों पर हंसना आसान है क्योंकि तुम उनके बाने में कुछ नहीं जानते। वे मूढ़ रहे होंगे परंतु अंग्रेजी कैलंडर भी कैसा है। कभी तो एक महीने में तीस दिन होते है और कभी एक महीने में इकत्तीस दिन होते है। फिर एक महीना उनतीस दिन का भी होता है। कोई अट्ठाईस दिन का भी होता है। यह सब क्या बकवास है। और एक वर्ष में तीन सौ पैंसठ दिन होते है। इसलिए नहीं कि तुमने कैलंडर को सूर्य के अनुसार बनाया हे। यह सुर्य के कारण नहीं है। पृथ्वी को सूर्य का पूरा चक्कर लगाने में तीन सौ पैंसठ दिन लगते है। अब कैसे तुम इस चक्कर के समय को बांटते हो यह तुम पर है।

पर तीन सौ पैंसठ दिन..., इन तीन सौ पैंसठ दिनों ने ही सारी मुश्किल कर दी है। क्योंकि ये पूरे तीन सौ पैंसठ दिन नहीं है। थोड़ा सा हिस्सा बच जाता है जो हर चौथे साल में एक दिन बन जाता है। इसका मतलब है कि एक साल में तीन सौ पैंसठ और एक चौथाई दिन होना चाहिए। बड़ा अजीब वर्ष है।

किंतु क्या किया जा सकता है? समय का हिसाब करने के लिए हर महीने के दिनों की संख्या भी अलग-अलग नियम की जाती है। इसीलिए हर चौथे साल फरवरी में एक दिन अधिक होता है। अजीब कैलंडर है, कोई भी कंप्यूटर इस प्रकार की गड़बड़ नहीं करता।

सूर्य के अनुसार गणना करने वाले मुखों की तरह चंद्र के अनुसार गणना करने वाले मूर्ख भी है। वे सच मुच ही चाँद मार है। क्योंकि चाँद में भरोसा करते है। एक वर्ष को बारह भागों में विभक्त किया जाता है। और हर महीना दो भागों में विभक्त है। और ये मूर्ख बड़े दार्शनिक होते है। इसी प्रकार की तथाकथित दार्शनिक परिकल्पनाएं करते रहते है।

जैन परंपरा के मूर्खों की परिकल्पना भी यही है। सारी परंपराएं मूर्खतापूर्ण है। मूर्खों की यह भी एक परंपरा है।

जैन चौबीस तीर्थ करों को मानते है। चक्र में बार-बार चौबीस तीर्थंकर होते है। इससे हिंदुओं में हीनभावना आ गई और लोग पूछने लगे कि सा ही क्यों, चौबीस क्यों नही, तब हिंदू पंडित चौबीस अवतारों की बात कि यह मूर्खता है ओर दूसरी यह भी उधार ली गई। अब इससे बुरा और क्या हो सकता है। और वह भी इतने बड़े देश के करोड़ो लोगों ने बिना सोचे-समझे इस मूर्खता को स्वीकार कर लिया।

यह बीमारी इतनी संक्रामक थी कि जब बुद्ध मरे तो बौद्धों को लगा कि वे औरों से पीछे रह गए है—बुद्ध ने चौबीसवे अंक की बात क्यों नहीं की। जैनों ने चौबीस की बसत की हिंदुओं ने भी इसकी बात की। और हमारे पास केवल एक ही बुद्ध है। इसलिए उन्होंने गौतम बुद्ध के जन्म से पहले चौबीस बुद्धो का सृजन किया। अब तुम देखते हो कैसे मूर्खता फैलती है, ऐसी निरर्थक बात न जाने कब तक चलती रहेगी...इसका तो कोई अंत ही नहीं है। यह सब बकवास है। और मैं यहीं पर अपने वाक्य को समाप्त करता हूं। याद रखना, इसका यह मतलब नहीं है कि मूर्खता का अंत हो जाएगा, उसका तो कोई अंत नहीं है।

अगर तुम मूर्ख हो तो तुम्हारी मूर्खता ऐसे ही असीम है। जैसे कि कहते है,परमात्मा असीम बुद्धिमान है। मुझे तो परमात्मा या उसकी बुद्धिता के बारे में कुछ नहीं मालूम। परंतु मुझे तुम्हारी मूर्खता का पता है। यहां पर

मेरा यहीं काम है कि मैं तुमसे तुम्हारी मूर्खता को छुड़ाता हूं। सबसे पहले जैनों ने इस मूर्खता को अपनाया। फिर उनके बाद हिंदुओं ने और इसके बाद बौद्धों ने इस मूर्खता को उधार ले लिया तब से यह चौबीस का अंक बहुत आवश्यक हो गया है।

मैं एक आदमी को जानता हूं...वे है स्वामी सत्य भक्त। उसके बारे में मुझे यही आश्चर्य होता है कि अस्तित्व ने उसको कैसे सहन किया है। वह अपने आप को पच्चीस वां तीर्थंकर समझता है। महावीर चौबीसवे थे। जैन सत्य भक्त को क्षमा नहीं कर सके और उसको बहिष्कृत कर दिया।

मैंने उससे पूछा कि सत्य भक्त अगर तुम्हें तीर्थंकर ही बनना है तो प्रथम क्यों नहीं गन जाते। पच्चीस वां तीर्थंकर बनने के लिए तो तुम्हे आजीवन लाइन में खड़ रह कर कोशिश करनी पड़ेगी। जरा पीछे मूड कर देखो। वहां तो कोई भी नहीं है। परंतु उसने बहुत कोशिश की—सैकड़ों पुस्तकें लिख दीं,क्योंकि वह विद्वान था। बस इसी से प्रमाणित होता है कि वह साधारण नहीं वरन असाधारण मूर्ख था।

मैंने उससे यह भी कहा कि अगर तुम सत्य को जानते हो तो तुम बिलकुल नये धर्म का प्रचार क्यों नहीं करते।

उसने कहा: समस्या यह है कि मुझे पूरा निश्चय नहीं हे।

मैंने कहा: तब दूसरों को परेशान मत करो, पहले स्वयं निश्चित कर लो। रुको,अभी मैं तुम्हारी पत्नी को बुलाता हूं।

उसने कहा: नहीं-नहीं।

मैंने कहा: मैं तुम्हारी पत्नी को बुलाता हूं। तुम मुझे रोक नहीं सकते।

किंतु मुझे उसे बुलाने की जरूरत ही नहीं पड़ी। वह आ ही गई। वास्तव में मैंने उसको आते हुए देखा था। इसलिए मैंने ऐसा कहा था।

वह जोर-शोर से आ धमकी और उसने मुझसे पूछा: आप इस मूर्ख पर अपना समय क्यों बरबाद कर रहे है। मैंने तो इसके लिए अपना सारा जीवन बरबाद कर दिया है—मेरा सब कुछ खो गया है। यहां ते कि मेरा धर्म भी। इसके बहिष्कृत किए जाने कि कारण मुझे भी इसके साथ बहिष्कृत होना पडा। लाखों जन्मों के बाद ही जैन परिवार में जन्म होता है। यह मूर्ख खूद पतित हुआ ही मुझे भी पतित कर दिया। अच्छा हुआ कह यह नपुंसक है और हमारे बच्चे नहीं है। नहीं तो वे भी बहिष्कृत हो जाते।

अकेला मैं ही हंसा और मैंने उनसे कहा: हंसों, बड़ी मजेदार बात है। तुम नपुंसक हो। यह में नहीं, तुम्हारी पत्नी कह रही है। मैं नहीं जानता कि वह स्त्री रोग के बारे में कितना जानती है, पर अगर वह कह रही है ओ तुम चुपचाप बिना आँख उठाए सुन रहे हो,तो इससे यह प्रमाणित होता है कि वह स्त्री रोग विशेषज्ञ है। तुम नपुंसक हो, अच्छी बात है। जब तुम अपनी पत्नी को भी अपना अनुयायी नहीं बना सकते तो तुम अपने आप को पच्चीस वां तीर्थंकर कैसे सिद्ध कर सकते हो। यह बड़ी कमजोर बात है, सत्य भक्त....

उसने मुझे कभी क्षमा नहीं किया, क्योंकि मैंने उसे ठीक समय पर पकड़ लिया, सत्य भक्त अभी मेरा दुश्मन है। किंतु मेरी सहानुभूति उसके साथ है। कम से कम वह यह तो कहा सकता है। कि उसका एक दुश्मन है। जहां तक मित्रता का सवाल है उसका मित्र कोई नहीं है--यह श्रेय उसकी पत्नी को मिलता है।

इसी प्रकार मोरा जी देसाई भी मेरे दुश्मन बन गए। मुझे तो उनसे कोई शिकायत नहीं थी। वास्तव में उन्हें तब बहुत बुरा लगा जब उसे एक नव युवक के कारण नब्बे मिनट तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। और वह ऐसा नवयुवक था जिसका कोई राजनीतिक महत्व नहीं था। और जब उसने देखा कि प्रधानमंत्री इस लड़के के लिए कार का दरवाजा खोल रहे है—मुझे अभी भी वह दृश्य दिखाई दे रहा है—उसका वर्णन कैसे किया जाए? वह

आदमी मुझे बहुत ही धूर्त चालाक और कपटी लगा उसकी आंखों से उसकी धूर्तता टपक रही थी। इसके बाद मैंने उसको तीन अलग-अलग मौक़ों पर देखा। किसी और चक्र में इसकी चर्चा की जाएगी।

बहुत अच्छा। ऐसे अनुभव के बाद ही नहीं कहना अच्छा होता है। क्योंकि नहीं जैसा और कुछ नहीं है।

बहुत अच्छा।

देव गीत,अब बस करो। मुझे दूसरे काम भी करने हैं। मुझे याद दिलाने के लिए गुड़िया ने दरवाजा खोल दिया है।

सत्र—42 जवाहरलाल बोधिसत्व थे

ओ.के. । मैं क्या बता रहा था तुम्हें?

आप बता रहे थे कि सत्य भक्त और मोरार जी देसाई किसी प्रकार आपके दुश्मन बन गए। वे और अंत में आपने यह कहा था कि मोरार जी देसाई कह आंखों से धूर्तता और चालाकी झलकती रही थी। और यह आपको अच्छी तरह याद है।

ठीक है, उसे याद न रखना ही अच्छा है। शायद इसीलिए मुझे याद नहीं आ रहा था, अन्यथा मेरी याददाश्त खराब नहीं है। कम से कम ऐसा किसी ने आज तक मुझसे कहा नहीं है। यहां तक कि जो लोग मुझसे सहमत नहीं हे वे भी कहते है कि मेरी स्मृति आश्चर्यजनक है। जब मैं सारे देश में घूम रहा था तो उस समय मुझे हजारों लोगों के चेहरे और नाम याद रहते थे—और इतना ही नहीं मैं जब उनसे दुबारा मिलता था तो मुझे यह भी याद रहता था कि इससे पहले में उनसे कहां मिला था और हम लोगों में क्या बातचीत हुई था। भले ही वह बातचीत दस पंद्रह वर्ष पहले हुई हो। मेरी बात को सुन कर लोग हैरान हो जाते थे। अच्छा है मेरी स्मृति में बहीं गड़बड़ होती है जहां होनी चाहिए—मोरार जी देसाई पर।

तुम्हें यह सुन कर विश्वास नहीं होगा कि परमात्मा भी व्यंग्य-चित्र बनाता है। मैंने यह तो सुना था कि वह प्राणी बनाता है, किंतु व्यंग्य-चित्र, खासकर व्यंग्य चित्रकारों के लिए मोरार जी देसाई तो चलते-फिरते कार्टून है। किंतु मैं उन पर हंसा नहीं था, उस समय तो में आश्चर्यचकित था एक लड़के को प्रधानमंत्री की भेंट पर और उनकी पारस्परिक बातचीत पर। अभी भी मैं विश्वास नहीं कर सकता कि एक प्रधानमंत्री उस तरह से बातचीत कर सकते है। वे सिर्फ ध्यान से सुन रहे थे और बीच-बीच में प्रश्न पूछ कर उस चर्चा को और आगे बढा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे चर्चा को सदा के लिए जारी रखना चाहते थे। कई बार प्रधानमंत्री के सैक्रेटरी ने दरवाजा खोल कर अंदर झाँका। परंतु जवाहरलाल समझदार व्यक्ति थे। उन्होंने जान बूझ कर दरवाजे की ओर पीठ की हुई थी। सैक्रेटरी को केवल उनकी पीठ ही दिखाई पड़ती थी।

इस बात को मैं बाद में समझ सका। मस्तो ने मुझे बताया कि उसने जवाहरलाल को पहली बार ही इस प्रकार दरवाजे की और पीठ किए हुए देखा है। उसने कहा कह निजी सचिव दरवाजा खोल कर यह इशारा करता है कि इस मेहमान के जाने का समय हो गया और दूसरा मेहमान भीतर आने का इंतजार कर रहा है।

, परंतु उस समय जवाहरलाल को किसी की भी परवाह नहीं थी। उस समय तो वे केवल विपस्सना ध्यान के बारे में जानना चाहते थे। मैं उन्हें विपस्सना के बारे में बताने के लिए वहां की परिस्थिति देख कर थोड़ा झिझक रहा था। मुझे तुम्हें ' विपस्सना ' शब्द का अर्थ समझाना होगा। इसका अर्थ होता है: पीछे देखना। पस्सना का अर्थ है: देखना और विपस्सना का अर्थ है: पीछे देखना।

इस क्षण में जो भी कर रहा हूं वह विपस्सना है।

मैं मस्तो को पैर से मार रहा था किंतु वह तो योगी की तरह बैठा हुआ था। उसे मालूम था कि मैं ऐसा कुछ करूंगा और वह इसके लिए तैयार बैठा था लेकिन मैंने उसे इतने जोर से पैर मारा कि उसके मुहँ से निकला —आह, जवाहरलाल ने भी पूछा कि क्या हुआ?

मस्तो ने कहा: कुछ नहीं।

मैंने कहा: झूठ बोल रहा है।

मस्तो ने कहा: तुमने तो हद कर दी। एक तो तूम मुझे इतने जोर से मार रहे हो कि मैं भूल ही गया कि मुझे चुप रहना चाहिए और तुम्हारे हाथों में मुझे फुटबॉल नहीं बनना है। इस पर भी तुम जवाहरलाल से कह रहे हो कि मैं झूठ बोर रहा हूं।

मैंने कहा: अब यह झूठ नहीं बोल रहा, अब यह आपको बता रहा है कि कैसे भूला नहीं जा सकता क्योंकि विपस्सना का अर्थ है नहीं भूलना। और मैंने मस्तो से कहा: मैं जवाहरलाल को विपस्सना समझा रहा हूं। इस लिए मैंने तुम्हें जोर से मारा, इसके लिए मुझे माफ करना और ऐसा मत समझना कि मैं आखिरी बार मार रहा हूं।

यह सुन कर जवाहरलाल तो इतने हंसे कि उनकी आंखों में आंसू आ गए। सच्चे कवि का यही गुण है। साधारण कवि ऐसा नहीं होता। साधारण कवियों को तो आसानी से खरीदा जा सकता है। शायद पश्चिम में इनकी कीमत अधिक हो अन्यथा एक डालर में एक दर्जन मिल जाते है। जवाहरलाल इस प्रकार के कवि नहीं थे—एक डालर में एक दर्जन, वे तो सच में उन दुर्लभ आत्माओं में से एक थे जिनको बुद्ध ने बोधिसत्व कहा है। मैं उन्हें बोधिसत्व कहूंगा।

मुझे आश्चर्य था और आज भी है कि वे प्रधानमंत्री कैसे बन गए। भारत का यह प्रथम प्रधान मंत्री बाद के प्रधानमंत्रियों से बिलकुल ही अलग था। वे लोगों की भीड़

द्वारा निर्वाचित नहीं किए गए थे, वे निर्वाचित उम्मीदवार नहीं थे—उन्हें महात्मा गांधी ने चुना था। वे महात्मा गांधी की पंसद थे।

गांधी में अनेक दोष थे,किन्तु उनके इस काम की सराहना तो मैं करता हूं। वैसे गांधी ही हर बात की में आलोचना करता हूं,परंतु गांधी ने जवाहरलाल को क्यों चूना यह एक अलग कहानी है, वह शायद मेरे चक्र का अंश नहीं बन सकती मेरे लिए तो सिर्फ यह महत्वपूर्ण है कि कम से कम वे एक काव्यात्मक व्यक्ति के प्रति अवश्य संवेदनशील रहे होंगे। यूं तो वे तपस्वी जैसे थे। उनकी अन्य सब बातें तो बकवास थी किंतु उन्हों जवाहरलाल को मंत्रि पद के लिए चुन कर समझदारी का काम किया।

और इस प्रकार एक कवि प्रधानमंत्री बन गया। नहीं तो एक कवि का प्रधानमंत्री बनना असंभव है। परंतु एक प्रधानमंत्री का कवि बनना भी संभव है जब वह पागल हो जाए। किंतु यह वही बात नहीं है।

तो मैं ने सोचा था कि जवाहरलाल तो केवल राजनीति के बारे में ही बात करेंगे, किंतु वे तो चर्चा कर रहे थे काव्य की और काव्यात्मक अनुभूति कि। मस्तो जो कि उनको वर्षो से जानता था। वह भी हैरान रह गया। जब उन्होंने काव्य के बारे में और काव्यात्मक अनुभूति के बारे में बात की। मस्तो ने मेरी और ऐसे देखा—जैसे कि मुझे इसका उत्तर मालूम है।

मैंने कहा: मस्तो तुम तो जवाहरलाल को वर्षो से जानते हो, तुम्हें तो मालूम हो चाहिए। मैं तो उन्हें अभी-अभी मिला हूं और हम दोनों एक-दूसरे से परिचित होने की कोशिश कर रहे है। मेरी और प्रश्न भरी निगाहों से न देखो। हालांकि मैं तुम्हारा प्रश्न समझ रहा हूं। इस राजनीतिज्ञ को क्या हो गया है। क्या यह पागल हो गया है। नहीं, मैं तुमसे ओर उनसे कहता हूं कि वह राजनीतिज्ञ नहीं है। मेरा मतलब यह है कि वह अपने स्वभाव से राजनीतिज्ञ नहीं है। वह केवल दुर्घटना वश राजनीतिज्ञ बन गया है। जो इसके आंतरिक स्वभाव के अनुकूल है।

जवाहरलाल ने हंस कर कहा: हां, यक एक दुर्घटना ही है। जीवन में पहली बार मुझे ऐसा आदमी मिला जो मेरे मन की बात समझ कर ठीक से अभिव्यक्त कर सका। हां, इसको दुर्घटना ही कहना चाहिए। इस पर मैंने कहा: और यह दुर्घटना संघातक थी। हम सब हंस पड़े। मैंने कहा कि यह दुर्घटना अवश्यक संघातक थी परंतु

आपके भीतर के कवि को कोई नुकसान नहीं पहुंचा। बाकी बातों की मुझे कोई परवाह नहीं है। आप अभी भी तारों को एक बच्चे की तरह देख सकते है।

उन्होने कहा : बिलकुल ठीक,बिलकुल ठीक। मुझे तारों को देखना बहुत पसंद है। किंतु तुम्हें इसके बारे में कैसे मालूम हुआ।

मैंने कहा: इसके बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता किंतु मैं कवि की विशेषताओं को जानता हूं। इसीलिए आपकी हर आदत का वर्णन कर सकता हूं। इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है। इसके बारे में सोचने की कोई जरूरत नहीं है। आप बेफिक्र होकर बैठिए। और वे सचमुच बड़े आराम से बैठ गए। अन्यथा एक राजनीतिज्ञ के लिए आराम से बैठना मुश्किल है।

भारत में यह माना जाता है कि जब कोई साधारण आदमी मरता है ता उसे ले जाने के लिए एक ही यमदूत आता है। किंतु जब कोई राजनीतिज्ञ मरता है तो उसको ले जाने के लिए यमदूतों की भीड़ आती है। क्योंकि वह मर कर भी आराम से सो नहीं सकता। वह कुछ भी स्वाभाविक ढंग से नहीं होने देता है। होने दो, अपने को छोड़ दो, जैसे शब्दों के अर्थ को वह समझता ही नहीं है।

परंतु जवाहरलाल तो पूर्णत: शिथिल हो गए। उन्होंने कहा: तुम्हारे साथ में आराम से बैठ सकता हूं। और मस्तो के कारण तो मुझमें कभी कोई तनाव पैदा नहीं हुआ। इसलिए वह भी आराम से बैठ सकता है। मैं उसे नहीं रोक रहा हूं। हां, संन्यासी और स्वामी होने के कारण उसे इसमें कुछ अड़चन हो सकती है। हम सब हंस पड़े।

जवाहरलाल नेहरू के साथ यह हमारी अंतिम भेंट नहीं थी। यह तो शुरूआत थी। मस्तो और मैं तो समझ रहे थे कह ये अंतिम भेट है। किंतु जब हम लोग उनसे विदा ले रहे थे, तो जवाहरलाल ने कहा: क्या आप लोग कल नहीं आ सकते इसी समय। मोरार जी देसाई की और इशारा करते हुए उन्होंने कहा: कल मैं इस आदमी को यहां से दूर ही रखूंगा। उसकी उपस्थिति तक से बदबू आती है। और तुम्हें पता है किस चीज की? मुझे खेद है कि मुझे विवश होकर क्या फर्क पड़ता है कि वह अपना पेशाब खुद पी लेता है। इस बात से मेरा कोई संबंध नहीं है। हम लोग फिर हंस दिए और चल दिए।

उस शाम को उन्होंने हमें टेलीफोन पर फिर कहा: कल के बारे में भूल मत जाना । मैंने कल के सब दूसरों से मिलने के कार्यक्रम रद्द कर दिए है। मैं तुम दोनों का इंतजार करूंगा। हमें तो और कोई काम था ही नहीं। मस्तो मुझे प्रधानमंत्री से मिलाना चाहता था। और हम लोग मिल चुके थे।

मस्तो ने कहा: अगर प्रधानमंत्री की यही इच्छा है तो हमें ठहरना ही पड़ेगा। हम इनकार नहीं कर सकते, क्योंकि यह तुम्हारे भविष्य के लिए अच्छा नहीं होगा। मैंने कहा: मेरे भविष्य की चिंता मत करों, यह बताओ कि जवाहरलाल के लिए यह अच्छा होगा कि नहीं? मस्तो ने कहा: तुमसे बात करना मुश्किल है।

उसने ठीक ही कहा था किंतु इसके बारे में मुझे देर से पता लगा और तब मैं बदल नहीं सकता था।

मुझे अपने ढंग से चलने की ऐसी आदत हो गई है कि छोटी से छोटी बात के लिए भी मैं नहीं बदलता। गुड़िया भी यह जानती है। उसने हर संभव तरीके से मुझे समझाने की कोशिश की है कि नहाते समय मुझे बाथरूम में चारों और पानी नहीं बिखेरना चाहिए। किंतु मुझे कोई कुछ नहीं सिखा सकता है। मैं तो जो करता हूं, वह करता ही रहूंगा। मैं इन लड़कियों को नाहक परेशान नहीं करना चाहता। मैं दिन में दो बार नहाता हूं। इसलिए इन्हें बाथरूम को दो बार साफ करना पड़ता है। गुड़िया सोचती है कि मैं इस तरह से भी नहा सकता हूं जिससे पानी इधर-उधर न फैले और इन बेचारी लड़कियों को फर्श न पोंछना पड़े।

परंतु अंत में गुड़िया को हार माननी पड़ी। मेरे लिए बदलना असंभव है। नहाते समय मुझे इतना मजा आता है कि मैं भूल ही जाता हूं कि पानी को चारों और बिखरना ठीक नहीं है। और अगर पानी को न बखेरु तो मुझे ऐसा लगता है कि जैसे बाथरूम में भी मुझे किसी न नियंत्रित किया हुआ है।

अब जरा गुड़िया को देखो, में जो कह रहा हूं वह उसे बड़े मजे से सुन रही है। उसे ठीक-ठीक पता है कह मैं क्या कह रहा हूं। जब मैं नहाता हूं तो खूब अच्छी तरह से नहाता हूं और पानी को फर्श पर ही नहीं बल्कि दीवालों के ऊपर भी बिखेरता हूं। और जो आदमी साफ करता है उसके लिए तो यह समस्या ही बन जाती है। किंतु अगर यह काम प्रेम से किया जाए—जैसे ये लड़कियां करती है। तब तो वह मनोविश्लेषण और ट्रांसेंडेंटल मे़डिटेशन से भी अच्छा है। अब तो में कुछ भी नहीं बदल सकता।

मस्तो जो कहा रहा था वह अब हो गया है—उस समय जो भविष्य था वह भूतकाल हो गया है, परंतु मैं वहीं हूं और मैं वैसा ही रहा हूं। मेरे विचार में तो मृत्यु श्वास के रूक जाने से नहीं होती वरन तब होती है जब तुम अपने जैसे नहीं रहते अर्थात जब तुम अपने स्वभाव के अनुकूल नहीं रहते। मैंने तो कभी भी किसी भी कारण से कोई समझोता नहीं किया।

अगले दिन हम फिर गए। जवाहरलाल ने अपने दामाद,इंदिरा गांधी के पति को भी आमंत्रित किया हुआ था। मुझे बड़ी हैरानी हुई कि उन्होंने अपनी बेटी को क्यों नहीं आमंत्रित किया? बाद में मस्तो ने मुझे बताया कि जवाहरलाल की पत्नी की मृत्यु कम आयु में ही हो गई थी। उनको एक ही संतान थी—इंदिरा, जो उनके लिए बेटी भी और बेटा भी थी और वहीं अपने पिता की देखभाल करती है।

भारत में जब बेटी की शादी होती है तो वह अपने पति के घर चली जाती है और उसके परिवार का अंग बन जाती है। इंदिरा ने ससुराल जाने से साफ इनकार कर दिया। उसने कहा कि मेरी मां नहीं इसलिए मैं अपने पिता को अकेला नहीं छोड़ कर जा सकती। बस इसी कारण से उनके वैवाहिक जीवन में, आरंभ से ही दरार पड़ गई। वे पति-पत्नी तो थे किंतु इंदिरा फिरोज गांधी के परिवार को अपना न सकी। उसके दोनों पुत्र, संजय और राजीव भी अपनी मां के कारण नेहरू परिवार को ही अपना परिवार मानते लगे।

मस्तो ने मुझे बताया कि जवाहरलाल दोनों को एक साथ आमंत्रित नहीं कर सकते, क्योंकि दोनों में वहीं पर झगड़ा शुरू हो जाता। मैंने कहा: यह तो बड़ी अजीब बात है। क्या ये एक घंटे के लिए भी यह नहीं भूल सकते कि वे पति-पत्नी है। मस्तो ने कहा: नहीं, एक क्षण के लिए भी नहीं भूल सकते। पति-पत्नी बनने का अर्थ है: युद्ध की घोषणा। फिर भी लोग इसे प्रेम कहते है। जब कि यह तो शीतयुद्ध है। और चौबीस घंटे शीतयुद्ध होने के बजाए तो सर्दी के दिनों में गरम युद्ध का ठने रहना अधिक अच्छा है। यह शीतयुद्ध में होना तो तुम्हारा अंतर्तम भी बर्फ की तरह जम जाता है।

हमें फिर हैरानी हुई जब जवाहरलाल ने तीसरे दिन भी सुबह हमें बुलाया। तीसरे दिन सुबह उन्होंने स्वयं हमें फोन करके आने को कहा। इसके बारे में दूसरे दिन उन्होंने कुछ कहा नहीं था और हम जाने की तैयारी करने लगे थे। किंतु तीसरे दिन सुबह जवाहरलाल का फोन आया। उनका अपना निजी टेलीफोन नंबर था जो डायरेक्टरी में नहीं दिया गया था। इसके बारे में उनके बहुत नजदीकी लोग जानते होगें। मैंने मस्तो से पूछा कि उन्होंने खुद टेलीफोन किया है, क्या वे सैक्रेटरी को फोन करने को नहीं कह सकते थे। मस्तो ने कहा: यह उनका निजी नंबर है ओर उनके सैक्रेटरी को भी नहीं मालूम कि वे हमें आमंत्रित कर रहे है। सैक्रेटरी को तो इसके बारे में तब पता चला जब हम पोर्च में पहुच जाएंगे।

और तीसरे दिन जब हम गए तो जवाहरलाल ने इंदिरा गांधी से मेरा परिचय कराया। उन्होंने उससे कहा: अभी मत पूछो कि यह कौन है कयोंकि अभी तो यह कुछ नहीं है परंतु एक दिन यह अवश्य कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा।

मुझे पता है वे गलत थे। मैं तो अभी भी कुछ नहीं हूं और मैं अंत तक ऐसा ही रहूँगा, क्योंकि ना कुछ होना बहुत आनंदपूर्ण है। ना-कुछ होने में बहुत स्वतंत्रता है। ना कुछ कोई न होने की कोशिश करो, यह गजब की स्थिति है। पर कोई भी ऐसा होना नहीं चाहता। इसलिए स्वभावत: जवाहरलाल ने इंदिरा से यही कहा कि अभी तो यह कुछ नहीं है किंतु मैं भविष्यवाणी कर सकता हूं कि एक दिन यह अवश्य कुछ बनेगा।

जवाहरलाल अब आप तो नहीं रहे किंतु मेरे बारे में की गई आपकी भविष्यवाणी सच नहीं हुई। मैं उस भविष्यवाणी को पूरा नहीं कर सका। मुझे खेद है। सौभाग्य से यह सच नहीं हुई।

यह से इंदिरा से मेरी मित्रता की शुरूआत हुई। उस समय वह एक ऊंचे पर थी और जल्दी ही देश पर राज्य करनेवाली पार्टी की प्रैजिडेंट बन गई। इसके बाद वह लाल बहादुर शास्त्री की कैबिनेट मंत्रि बनी और अंत में वह प्रधानमंत्री बनी। जिनको में जानता हूं उनमें केवल इंदिरा ही एक ऐसी महिला है जो इन बेवकूफ राजनीतिज्ञों को काबू में रख सकती है और उसने इनको बहुत कस कर रखा है।

उसने यह कैसे किया यह तो में नहीं जानता, शायद जब वह कुछ न थी और सिर्फ अपने पिता की देख भाल कर रही थी तब उसने इन लोगों की कमज़ोरियों और दोषों को देखा होगा। इनकी कमज़ोरियों को वह इतने अच्छे से जानती थी कि ये लोग उससे डरते थे, उसके सामने कांपते थे। जवाहरलाल नेहरू भी इस मूर्ख मोरार जी देसाई को अपनी कैबिनेट से नहीं निकाल सके।

बाद में भेंट में मैने इंदिरा गांधी से यह कहा था—इसका उल्लेख मुझे अभी कर देना चाहिए क्योंकि इन चक्रों पर अधिक भरोसा नहीं किया जा सकता। बाद में इस विषय की चर्चा हो या न हो कुछ कहा नहीं जा सकता। इंदिरा गांधी के साथ हुई अंतिम भेंट में मैंने उससे कहा, यह बात जवाहरलाल के मरने के कई बाद की है। शायद उन्नीस सौ अड़सठ के आस पास। आने मुझसे कहा: आप जो कह रहे है वह बिलकुल ठीक है और में यही करना चाहती हूं। परंतु मोरार जी देसाई जैसे लोगों के साथ क्या किया जाए? ये लोग मेरी कैबिनेट में है और इनकी संख्या अधिक है। ये है तो मेरी पार्टी के परंतु अगर मैं आपके सुझावों को कार्यांवित करने की कोशिश करू तो ये मुझसे सहमत नहीं होगें। मैं सहमत हूं पर में विवश हूं।

मैंने कहा: आप इस आदमी को क्यों नहीं निकाल देती, ऐसा करने से आपको कौन रोक रहा है। और अगर ऐसा नहीं कर सकती तो आपको त्यागपत्र दे देना चाहिए क्योंकि आपको योग्यता वाले व्यक्ति को ऐसे मूढ़ों के साथ काम करना शोभा नहीं देता। इनको तो ठीक कर दो—उल्टा लटका दो, वही सही साइड को ऊपर करना होगा,क्योंकि ये शीर्ष सन कर रहे है। सिर के बल खड़े है। या तो इन्हें ठीक कर दो या त्यागपत्र दे दो, किंतु कुछ जरूर करो।

इंदिरा गांधी को हमेशा पसंद किया है। अभी भी वह मुझे अच्छी लगती है। हालांकि उसने मेरे काम को मदद करने के लिए कभी कुछ नहीं किया। किंतु वह बात दूसरी है। मुझे वह उसी क्षण से अच्छी लगी जब उसने मुझसे कहा—बल्कि मेरे कान में फुसफुसाया, जब कि वहां पर सुनने बाला कोई भी नहीं था। पर कौन जाने, राजनीतिज्ञ बहुत सावधान रहते है। उसने धीरे से कहा: मैं कुछ न कुछ अवश्य करूंगी।

उस समय तो मेरी समझ में नहीं आया कि उसके इन शब्दों का क्या अर्थ है मैं कि '' मैं कुछ न कुछ अवश्य करूंगी। किंतु सात दिन बाद के बाद मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि मोरार जी देसाई को निकाल दिया गया है। मैं तो उस समय बहुत दूर था, शायद हजारों मील दूर।

वे अपने चुनाव क्षेत्र का दौरा करके प्रधानमंत्री से मिलने आए के और उसका ऐसा स्वागत हुआ, या यू कहना चाहिए कि अच्छा प्रस्थान हुआ। ऐसे लोगो का स्वागत कौन करता है। हां, उन्हें अच्छी तरह से विदा किया जाता है।

किंतु मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। सच तो यह है कि मैं रोज समाचार पत्रों को देखता था कि क्या हो रहा है। क्योंकि मैं जानना चाहता था कि इंदिरा गांधी के ''कुछ न कुछ करने का क्या अर्थ है। पर उसने कुछ किया, और उसने जो किया वह बिलकुल ठीक था। यह आदमी बहुत ही रूढ़िवादी, जड़बुद्धि और प्रगति के हर कदम पर अड़चन डालने वाला था।

देव गीत समय क्या हुआ है?

दस बजकर चौबीस मिनट, ओशो।

दस मिनट मेरे लिए। यह ठीक है.........

सत्र—43 मृत्यु के बाद भी मैं उपलब्ध रहूंगा

ओ.के.। मुझे हमेशा इत बात पर आश्चर्य हुआ है कि परमात्मा ने इस दुनिया को छह दिनों में कैसे बना दिया। ऐसी दुनिया, शायद इसीलिए अपने बेटे को जीसस कहा। अपने ही बेटे के लिए ये कैसा नाम चुना? उसने जो किया उसके लिए यह किसी दूसरे को सज़ा देना चाहता था। किंतु दूसरा कोई तो वहां था नहीं। होली घोस्ट तो सदा गैर-हाजिर रहता है। वह तो घोड़े की पीठ पर बैठा रहता है। इसीलिए मैंने चेतना को उसे खाली करने को कहा है। क्योंकि किसी घोड़े पर बैठना जिस पर पहले से ही कोई बैठा हो, ठीक नहीं है। मेरा मतलब है कि घोड़े के लिए ठीक नहीं है। और चेतना के लिए भी। जहां तक होली घोस्ट का सवाल है, मुझे इससे कोई मतलब नहीं है। मुझे होली घोस्ट से या अन्य प्रकार के भूतों से काई हमदर्दी नहीं है। मैं जीवित लोगों के साथ हूं।

भूत तो मृत की छाया है और अगर वह होली या पावन है तो भी उसका क्या फायदा। और वह बदसूरत भी है। चेतना, मुझे होली घोस्ट की जरा भी चिंता नहीं थी। अगर तुम उस पर सवार हो जाओ तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। होली घोस्ट की सवारी करो, परंतु यह कुर्सी तो एक पूरे आदमी के लिए भी नहीं बनी है। यह बैठने के लिए बनी ही नहीं है। आधा आदमी ही बैठ सकता है। यह इस तरह बनी हुई है कि कोई इस पर बैठ कर सो न सके।

जब उस कुर्सी पर कोई बैठ भी नहीं सकता तो सोएगा कैसे? यह कुर्सी इस छोटे से नोऑज-आर्क में भी रखी नहीं जा सकी, फिट ही नहीं हुई। नोऑज-आर्क इतना छोटा है कि खुद नोह को बाहर खड़े होना पडा। क्योंकि तुम सब प्राणि यों के लिए भी जगह रखनी थी।

देव गीत, मैं क्या कह रहा था?

होली घोस्ट सदा गैर-हाजिर रहता है। और इस समय वह घोड़े पर सवार बैठा है।

(हंसी..sssss)

हां, यह तो मुझे याद है। मुझे मालूम था कि तुम नोट नहीं लिख सके इसलिए ध्यान रखो। किंतु मैं काम चला लुंगा। मैंने तो जीवन भी बिना कोई नोट लिखे काम चला लिया है।

उस अंतिम दिन जवाहरलाल ने मुझसे जो पूछा वह सचमुच बहुत अजीब था। उन्होंने पूछा: तुम्हारे विचार में क्या राजनीतिक संसार में रहना ठीक है?

मैंने कहा: नहीं, यह ठीक नहीं है, यह एक प्रकार का अभिशाप है। पिछले जन्म में आपने कोई खराब कर्म किया होगा इसीलिए आज आपको भारत का प्रधान मंत्रि बनना पडा।

उन्होंने कहा: हां, तुम बिलकुल ठीक कहते हो। मैं इससे सहमत हूं।

मस्तो को भरोसा ही न आया कि मैं प्रधानमंत्री को इस प्रकार से उत्तर दे सकता हूं। और भी अधिक आश्चर्य तब हुआ कि वे मुझसे सहमत भी हो गए है।

मैंने कहा: इससे मेरे और मस्तो के बीच चल रही लंबी बहस आज खत्म होती है। और वह भी मेरे पक्ष में। मस्तो तुम इससे सहमत हो।

उसने कहा: अब तो सहमत होना ही पड़ेगा।

मैंने कहा: होना पड़ेगा, जैसे शब्द मुझे बिलकुल पसंद नहीं है। इससे तो अच्छा है असहमत होना। कम से कम उस असहमति में कुछ जान तो होगी। ऐसा मरा हुआ चूहा मुझे मत दो। ऐ तो वह चूहा है, वह भी मरा हुआ। तुमने मुझे चील समझ रखा है?

जवाहरलाल ने बारी-बारी से हम दोनों की और देखा।

मैंने कहा: आपने निर्णय कर दिया, मैं आपका बहुत आभारी हूं। वर्षों से मस्तो इसी दुविधा में है, वह तय ही नहीं कर पाता था कि अच्छे आदमी को राजनीति में होना चाहिए कि नहीं?

हम लोगों ने बहुत विषयों पर चर्चा की। उस घर में अर्थात प्रधानमंत्री के घर में शायद की कोई मीटिंग इतने समय तक चली हो। जब हमने बात समाप्त की, साढे नौ बज चुके थे। पूरे तीन घंटे। जवाहरलाल ने भी कहा कि यह मेरे जीवन की शायद सबसे लंबी मीटिंग रही और बहुत सफल और सार्थक भी।

मैंने उनसे कहा: इससे आपको क्या मिला? आपको क्या लाभ हुआ?

उन्होंने कहा: मुझे मिली एक ऐसे व्यक्ति की मित्रता जो इस दुनिया का नहीं है और न कभी होगा। मेरे लिए तो इस मित्रता की याद बहुत पावन रहेगी। और उनकी सुंदर आंखों से आंसू आ रहे थे।

मैं जल्दी से बाहर चला गया ताकि उन्हें किसी प्रकार का संकोच न हो। किंतु वे मेरे पीछे-पीछे आए और उन्होंने कहा- इतनी तेजी से बाहर जाने की कोई जरूरत नहीं थी।

मैंने कहा: आंसू तेजी से आ रहे थे। वे एक साथ हंसे और रोंए भी।

ऐसा बहुत ही कम होता है—और सिर्फ या तो पागल आदमी ऐसा व्यवहार करता है या बहुत ही प्रतिभाशाली। वे पागल नहीं थे। वे अत्यंत प्रतिभाशाली थे।

बाद में मस्तो और मैं प्राय: इस भेंट की चर्चा करते रहते थे। विशेषत: उनकी हंसी और उनके आंसुओं का एक साथ दिखाई देना क्यों? इसलिए कि सदा की भांति हम दोनों सहमत नहीं हो रहे थे। वह एक सामान्य बात हो गई थी। अगर मैं सहमत हो जाता तो उसे भरोसा ही नहीं आता। वह बहुत ही बड़ा झटका, शॉक होता। मैंने कहा: वे रोंए तो अपने लिए थे और हंसे थे मेरी स्वतंत्रता पर। और मस्तो का कहना था कि वे अपने लिए नहीं बल्कि तुम्हारे लिए रोंए। उन्हें यह दिखाई दे रहा था कि तुम एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञ शक्ति बन सकते है, और अपने इस विचार पर वे स्वयं ही हंस पड़े। मस्तो की व्याख्या यही थी। अब तो इसका फैसला नहीं हो सकता था परंतु सौभाग्य से संयोगवश जवाहरलाल ने ही हमारी इस बहस का निर्णय कर दिया। मस्तो ने ही मुझे बताया, तो कोई समस्या न थी।

मस्तो ने हिमालय में गायब होने से पहले, मुझे सदा के लिए छोड़ कर जाने से पहले और मेरे पुनर्जीवित हो के लिए मेरे मरने से पहले मस्तो ने मुझे बताया कि जवाहरलाल तुम्हें बार-बार याद कर रहे थे। पिछली भेंट में उन्होंने मुझसे कहा था कि अगर उस विचित्र लड़के से तुम्हारी मुलाकात हो और अगर आप उसके शुभचिंतक है तो उसे राजनीति से दूर रखना। मैंने तो इस मूर्खों के साथ अपना जीवन बरबाद कर दिया। मैं नहीं चाहता कि यह लड़का इन निहायत बेवकूफ लोगों से वोट की मांग करे। अगर उसके जीवन में तुम कोई दिलचस्पी रखते हो तो राजनीति से उसे सुरक्षित रखना।

मस्तो ने कहा: बस उनकी इस बात ने हमारी बहस का निर्णय तुम्हारे पक्ष में कर दिया। जब कि मैं तुमसे बहस कर रहा था। और मैं तुमसे सहमत नहीं था। फिर भी दिल से में तुम्हारे साथ था।

इसके बाद जवाहरलाल कई वर्षो तक जीवित रहे किंतु मैं उनसे दुबारा नहीं मिला। परंतु जैसी उनकी इच्छा थी और जैसा निर्णय मैं ले चुका था—उनकी सलाह ने मेरे निर्णय की पुष्टि की—मैंने अपने जीवन में कभी किसी को वोट नहीं दिया और न मैं किसी राजनीतिज्ञ दल का सदस्य बना। स्वप्न में भी नहीं। सच तो यह है कि पिछले तीस वर्षों से मैंने स्वप्न ही नहीं देखा। मैं देख ही नहीं सकता हूं।

मैं स्वप्न देखने का रिहर्सल कर सकता हूं ये थोड़ा अजीब लगेगा—स्वप्न की रिहर्सल परंतु वास्तव में सपना नहीं देख सकता। क्योंकि उसके लिए अचेतन मन की आवश्यकता है, और वह मेरे पास नहीं है। अगर तुम मुझे बेहोश भी कर दो तो भी मैं सपना नहीं देख सकूंगा। मुझे बेहोश करने के लिए किसी विशेष तकनीक की

आवश्यकता नहीं होगी—मेरे सिर पर प्रहार करने से ही मैं बेहोश हो जाऊँगा। परंतु मैं इस प्रकार की बेहोशी की बात नहीं कर रहा हूं।

बेहोशी से मेरा तात्पर्य यह है कि दिन के समय या रात के समय जब तुम अनेक प्रकार के काम करते हो तो बिना जाने ही उन्हें किए चले जाते हो—उसको करते समय तुम्हें ख्याल ही नहीं आता कि तुम क्या कर रहे हो—उसका होश नहीं रहता, उसका बोध नहीं रहता। एक बार होश आ जाए तो सपना देखना समाप्त हो जाता है। सपना देख ही नहीं सकते। दोनों एक साथ होना संभव नहीं है। इन दोनों का सह-अस्तित्व असंभव है। जब तुम सपना देखते हो तो बेहोशी में ही देखते हो। और अगर होश बना रहे, सजगता बनी रहे तो तुम सपना नहीं देख सकते। हां, सपना देखने का ढोंग कर सकते हो। ओर उसको सपना नहीं कहा जा सकता। यह तुम्हें भी मालूम है।

में क्या कहा रहा हूं।

तीस साल से आपने स्वप्न नहीं देखा है। हालांकि जवाहरलाल कई वर्षो तक जीवित रहे, परंतु मैं दुबारा उनसे कभी नहीं मिला।

ठीक। उनसे दुबारा उनसे मिलने की जरूरत ही नहीं थी। हालांकि बहुत लोगों ने मुझसे कहा। लोगों को विभिन्न स्रोतों से पता चल गया—जवाहर लाल के घर से, उनके सैक्रेटरी से कि मैं उनको जानता था ओर वे मुझे बहुत प्रेम करते थे। इसलिए जब उन लोगो को अपना कोई काम कराना होता तो वे मेरे पास आते कि मैं उनकी सिफारिश कर दूँ।

मैं कहता: क्या तुम पागल हो? मैं उनको बिलकुल नहीं जानता।

वे कहते: लेकिन हमारे पास इसका प्रमाण है।

मैंने कहा: आप अपने प्रमाण अपने पास ही रखिए। शायद सपने में हम दोनों मिले होंगे किंतु वास्तव में नहीं।

उन्होंने कहा: हम तो पहले ही ये शक था कि तुम थोड़े पागल हो किंतु अब हमें पक्का विश्वास हो गया है।

मैंने कहा: हां, बहुत अच्छा हो अगर तुम इस खबर को फैला दो और मेरे थोडे पागल होने की बात ही मत करना—मैं पूरा पागल हूं। इस खबर को फैलाने मैं कंजूसी मत करना।

मैं पूरा पागल हूं।

मुझे धन्यवाद दिए बगैर वे लोग चले गए परंतु मैं तो उन्हें धन्यवाद देना चाहता था। इसलिए मैने कहा: मैं आपको अच्छा धन्यवाद देता हूं। उन्होंने एक-दूसरे से कहां: लो, देखो, यह हमें अच्छा धन्यवाद दे रहा है। पागल है पागल।

मुझे पागल कहलाना अच्छा लगता था। अभी भी लगता है। जिस पागलपन को मैं जान गया हुं उससे अधिक सुदंर और कुछ नहीं हो सकता है।

हिमालय जाने से पहले एक दिन मस्तो ने मुझसे कहा कि जवाहरलाल ने मुझे इस आदमी का नाम दिया है—घनश्याम दास बिरला। यह भारत में सबसे अमीर आदमी है। वह जवाहरलाल के परिवार के बहुत नजदीक है। किसी भी प्रकार की आवश्यकता होने पर उससे सहायता ली जा सकती है। और जब जवाहरलाल उसका पता मुझे दे रहे थे तो उन्होंने कहा कि यह लड़का मेरे दिलो-दिमाग पर छा गया है। मैं भविष्यवाणी करता हूं कि एक दिन वह...ओर मस्तो चुप हो गया।

मैंने कहा: क्या हुआ? वाक्य तो पूरा करो। मस्तो ने कहा: हां, अभी पूरा करता हूं। यह मौन भी उनका ही था। मैं तो उनकी नकल कर रहा हूं। तुम जो पूछ रहे हो वहीं मैंने उनसे पूछा था। तब जवाहरलाल ने वाक्य को पूरा किया। मस्तो ने कहा कि मैं तुम्हें बताता हूं कि कारण क्या था।

जवाहरलाल ने का कि एक दिन वह बनेगा....ओर फिर चुप हो गए। शायद वे अपने भीतर शब्दों को नाप-तौल रहे थे या वे जो कहना चाहते थे वह स्पष्ट नहीं हो रहा था। तब उन्होंने कहा: शायद वह एक दिन महात्मा गांधी बनेगा। इन शब्दों द्वारा जवाहरलाल मुझे सबसे बड़ा सम्मान दे रहे थे। महात्मा गांधी उनके गुरु थे और उन्होंने ही यह फैसला किया था कि जवाहरलाल नेहरू ही भारत के पहले प्रधानमंत्री बनेंगे। इसलिए यह स्वभाविक था कि महात्मा गांधी को जब गोली लगी तो जवाहरलाल रो पड़े। रोते हुए उन्होंने रेडियों पर कहा था। रोशनी बुझ गई, मैं और कुछ नहीं कहना चाहता। वे हमारी रोशनी थे, हमारे प्रकाश थे। अब हमें अंधेरे में रहना पड़ेगा।

अगर उन्होंने मस्तो से यह बात थोड़ी झिझक के साथ कही, तो या तो वे सोच रहे थे कि क्या इस अनजाने लड़के की तुलना विश्वविख्यात महात्मा से की जा सकती है। या वे महात्मा के साथ अन्य प्रसिद्ध नामों के बारे में सोच रहे थे.....मेरा ख्याल है कि संभावना इसी की है, क्योंकि मस्तो ने उनसे कहा: अगर मैंने यह बात इस लड़के को बताई तो वह तुरंत कहेगा: गांधी, उनके जैसा तो मैं कभी नहीं बनना चाहता। महात्मा गांधी बनने के बजाए तो मैं नरक मैं जाना पसंद करूंगा। उसकी यही प्रतिक्रिया होगी। मैं उसे अच्छी तरह से जानता हूं। इस तुलना को वह सहज नहीं कह सकेगा। यह आपसे प्रेम करता है। किंतु इस नाम के कारण उसे प्रेम को नष्ट न करें।

मैंने कहा मस्तो: यह तो ज्यादती है, उनसे यह सब कहने की कोई जरूरत न थी। वे वृद्ध हैं। और जहां ते मेरा प्रश्न है में जानता हूं कि उन्होंने मेरी तुलना अपनी समझ के अनुसार एक महानतम व्यक्ति से की है।

मस्तो ने कहा: जरा रुको तो। जब मैंने यह कहा तो जवाहरलाल ने कहा: हां, मुझे यही शक था। इसीलिए मैं सोच में पड़ गया था कि कहूं या न कहूं। अच्छा, उसे यह मत बताना, इसे बदल दो। शायद वह गौतम बुद्ध बन जाए।

भारत के महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने लिखा है कि जवाहरलाल गुप्त ढंग से गौतम बुद्ध से बहुत प्रेम करते थे। गुप्त ढंग से क्यो? क्योंकि उन्हें कोई भी संगठित धर्म पसंद नहीं था। और वे परमात्मा में विश्वास नहीं करते थे। और जवाहरलाल भारत के प्रधान मंत्रि थे।

मस्तो ने कहा: तब मैंने जवाहरलाल से कहा: क्षमा करना, आपने जो कहा वह ठीक ही है। किंतु सच तो यह है कि इस लड़के को कोई भी तुलना पसंद नहीं है। तब मस्तो ने मुझसे पूछा: क्या तुम्हें मालूम है कि जवाहरलाल ने क्या कहा। उन्होंने कहा: ऐसे ही व्यक्ति का में आदर करता हूं। ऐसा ही व्यक्ति मुझे प्रिय है। हर संभव ढंग से उसकी रक्षा करना, उसे सुरक्षित रखना ताकि राजनीति में वह फंस न जाए। उसे उस राजनीति से दूर रखना जिसने मुझे बरबाद कर दिया। मैं नहीं चाहता कि उसे भी इसी दुर्भाग्य का सामना करना पड़े।

इसके बाद मस्तो गायब हो गया। मैं भी गायब हो गया। इसलिए शिकायत करने के लिए कोई नहीं बचा। परंतु स्मृति चेतना नहीं है। और स्मृति बिना चेतना के भी काम कर सकती है। शायद अघिक कुशलता से। आखिर कंप्यूटर क्या है। स्मृति की एक प्रणाली। अहं मर चुका है। अहं के पीछे जो है वह शाश्वत है। परंतु दिमाग को जो अंश है वह अस्थायी है और वह मर जाएगा।

''मृत्यु के बाद भी मैं अपने लोगों को उतना ही उपलब्ध रहूंगा जितना अभी हूं। परंतु यह उस पर निर्भर है। इसीलिए अब मैं धीरे-धीरे उनकी दुनिया से गायब हो रहा हूं ताकि अधिक से अधिक यह उनकी बात होती जाए।

मैं तो शायद एक प्रतिशत ही हूं। और उनका प्रेम, उनकी श्रद्धा और उनका समर्पण निन्यानवे प्रतिशत है। किंतु जब मैं चला जाऊँगा तब इससे भी अधिक की आवश्यकता होगी—एक सौ प्रतिशत। तब मैं शायद और भी अधिक अपलब्ध रहूंगा उनके लिए जो ''अफॅर्ड'' कर सकते है। जो अफॅर्ड कर सकते है। इसे बड़े मोटे अक्षरों में लिखों। क्योंकि अधिकतम धनी वही है जो प्रेम और श्रद्धा में शत-प्रतिशत समर्पण अफॅर्ड कर सकता है।

और मेरे पास ऐसे लोग है। इसलिए मृत्यु के बाद भी में उनको निराश नहीं करना चाहता। मैं चाहता हूं कि इस पृथ्वी पर वे सर्वाधिक परिपूर्ण लोग हों। मैं यहां पर रहूँ या न रहूँ, मैं बहुत आनंदित होऊंगा। मुझे बहुत खुशी होगी।''

--ओशो

सत्र—44 मस्तो की भविष्य वाणी—मोरार जी देसाई प्रधानमंत्री बनेगा

कल मुझे अचरज हो रहा था कि परमात्मा ने इस दुनियां को छह दिनों में कैसे बना लिया। मुझे अचरज इस लिए हो रहा था, क्योंकि मैं तो अभी प्राइमरी स्कूल के दूसरे दिन पर ही अटका हुआ हूं, दूसरे दिन के पार भी जा सका। और उसने यह कैसी दुनिया बनाई है। शायद यह यहूदी था, क्योंकि यहूदियों ने ही इस विचार को फैलाया है।

हिंदू एक परमात्मा में नहीं वरन अनेक परमात्मा में विश्वास करते है। सच तो यह है कि पहले जब उनको यह विचार सुझा तो उन्होंने उतने ही देवताओं की गणना की जतनी उस समय भारतीयों की जनसंख्या थी। उस समय भी उनकी संख्या कम नहीं थी। तैंतीस करोड़ थी। हिंदुओं के मतानुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपना एक परमात्मा होना चाहिए। वे तानाशाह नहीं थे। वे प्रजातांत्रिक थे—पहले के हिंदू तो बहुत अधिक प्रजातांत्रिक थे।

हजारों साल पहले उन्होंने एक ऐसे अलौकिक संसार की कल्पना की थी जिसमें उतने ही जीवित लोग थे जितने इस पृथ्वी पर। बहुत बड़ा काम किया था उन्होंने। तैंतीस करोड़ देवताओं की गणना करना आसान नहीं है। और तुम्हें हिंदू देवताओं के बारे में कुछ भी मालूम नहीं है। वे बिलकुल वैसे है जैसे मनुष्य हो सकते है—बहुत चालाक,कमीने, राजनीतिज्ञ,हर प्रकार के शोषण करने बाले। परंतु किसी ने किसी प्रकार किसी ने जनगणना कर ही ली।

हिंदू उस प्रकार के आस्तिक नहीं है जिस प्रकार पिश्चम सोचता है। ये पैगान्स है, परंतु वैसे पैगान्स नहीं जैसा ईसाई लोग इस शब्द का उपयोग करते है। पैगान्स बहुत मूल्यवान शब्द है। ईसाइयों, यहूदियों और मुसलमानों द्वारा इसका दुरूपयोग नहीं होना दिया जाना चाहिए। ईसाई, यहूदी और इस्लाम ये तीन धर्म बुनियादी रूप से यहूदी ही है। ये कुछ भी कहें—इनकी बुनियादें तो जीसस और मोहम्मद के जन्म से बहुत पहले ही पड़ गई थी। ये सब यहूदी है।

जिस परमात्मा की बात तुम सुनते हो यह यहूदी है। वह दूसरा कुछ हो ही नहीं सकता। वहीं रहस्य छुपा है। अगर वह हिंदू होता तो वह खुद ही तैंतीस करोड़ में बंट जाता। तब वह इस दुनिया को कैसे बनाता। अगर पहले से कोई होती तो यह तैंतीस करोड देवता उसको नष्ट करने के लिए काफी होते।

हिंदू परमात्मा जैसा तो कोई शब्द उपयोग ही नहीं क्या जा सकता। क्योंकि हिंदू धर्म में अनेक परमात्मा है, अनेक देवता है। कोई एक परमात्मा नहीं। उनका परमात्मा स्त्रष्टा नहीं है। क्योंकि वह स्वंय ब्रह्मांड का हिस्सा है। 'वह' से मेरा तात्पर्य है तैंतीस करोड़ देवताओं से। मुझे तुम्हारा शब्द 'ही' उपयोग करना पड़ रहा है। किंतु हिंदू परमात्मा के लिए 'दैट' शब्द का प्रयोग करते है। 'दैट'' एक ऐसा विशाल छाता है जिसके नीचे तुम जितने चाहों उतने देवताओं को छिपा सकते हो। जिनको जरूरत नहीं है उनको भी पीछे की और थोड़ी सी जगह दी जा सकती है। यह तो सर्कस के तंबू की तरह इतना बड़ा है कि उसमें हर संभव देवता को जगह मिल सकती है।

यहूदी परमात्मा ने तो सचमुच बहुत बड़ा काम किया। निश्चित ही वह अच्छा यहूदी था। ओर उसने छह दिनों में इस दुनिया को बना लिया। एक दूसरे यहूदी अल्बर्ट आइंस्टीनी ने इस गड़बड़ को--विस्तृत हो रहा ब्रह्मांड कहा है। हर सेकेंड में इसका विस्तार हो रहा है। गर्भवती स्त्री के पेट की तरह बड़ा होता जाता है। और उससे भी कहीं अधिक तेजी से। ये तो प्रकाश की गति से बढ़ रहा है। और हव अभी तक की जानी गई अधिकतम गति है। शायद किसी दिन हम उससे भी अधिक गति बाली चीजें खोज लें किंतु अभी तक तो वहीं अधिकतम गति है। ब्रह्मांड प्रकाश की गति से विस्तृत हो रहा है और यह सदा इस तरह फैलता रहा है। इसका न कोई आदि है न अंत। कम से कम वैज्ञानिक तो यही कहते है।

परंतु ईसाई कहते है कि न सिर्फ इसका आरंभ हुआ बल्कि छह दिन में इसके बनाने का काम समाप्त हो गया। यहूदी हैं, मुसलमान है यह सब एक ही बकवास की विभिन्न शाखाएं है। शायद एक ही मूढ़ ने तीनों धर्मों की संभावना को जन्म दिया। मुझसे उनका नाम मत पूछो। मूढ़ तो मूढ़ ही होते है और उनके नाम नहीं होते। इसलिए किसी को ये मालूम नहीं कि छह दिनों में दुनिया बनाने का विचार किसको सुझा। इस पर तो केवल हंसा जा सकता है। परंतु ईसाई पादरी और यहूदी रबाई बड़ी गंभीरता से इस संसार की सृष्टि की बात करते है।

मुझे इस पर इसलिए आश्चर्य हो रहा था क्योंकि मैं तो अपनी कहाना को भी छह दिनों में समाप्त नहीं कर सकता। मैं तो अभी दूसरे दिन पर ही हूं। वह भी इसलिए क्योंकि मैंने बहुत सी बातों को महत्वहीन समझ कर छोड़ दिया है। किंतु कैसे पता शायद वह महत्वपूर्ण हो ही। परंतु अगर मैं बिना चुनाव किए सब कुछ बोलूं तो बेचारे देव गीत को क्या होगा। उसको इतनी अधिक नोटबुक रखनी पड़ेगी कह उन सबको देख कर ही वह पागल हो जाएगा। यह तो ऐसा होगा कि वह न्यूयार्क में एम्पायर स्टेट बिल्डिंग के पास खड़े होकर अपनी नोटबुक को देख कर सोच रहा हो कि अब इनको कौन पढ़ेगा।

और फिर मुझे देवराज का खयाल आता है जिसे इनका संपादन करना पड़ेगा। और कोई इन्हें पढ़े या न पढ़े, कम से कम एक व्यक्ति तो इन्हें पढ़ेगा ही, वह है देवराज। देवराज तो इन्हें पढ़ेगा ही। दूसरी होगी आशु, आशु भी इन्हें पड़ेगी क्योंकि उसे इनको टाइप करना है।

परमात्मा की सृष्टि की कहानी का न तो कोई संपादन है और न कोई टाइपिस्ट। बस उसने छह दिनों में सृष्टि बना दी और उस दिन के बाद से उसकी कोई खबर ही नहीं मिली। क्या हुआ उसे, कुछ लोग सोचते है कि वह फ्लोरिडा चला गया जहां पर सब अवकाश प्राप्त लोग जाते है। और कुछ लोग समझते है कि वह मियामी बीच पर मजे कर रहा है। किंतु यह सब अनुमान ही है।

परमात्मा है ही नहीं। इसीलिए तो अस्तित्व संभव हो सका। नहीं तो वह बीच में अपनी टाँग अड़ा देता। परमात्मा के बारे में सोचने के बजाए उसके बारे में भूल जाना हीं अच्छा है। और समय आ गया है, उसे क्षमा कर देना चाहिए। यह कहना कुछ अजीब सा लगता है कि परमात्मा को भूल जाओ और उसे क्षमा करों। किंतु तभी तुम आरंभ कर सकते हो, उसकी मृत्यु तुम्हारा जन्म है।

फ्रेड्रिक नीत्शे जैसे पागल आदमी को ही यह विचार सुझा—परंतु पागल आदमी की बात को कोई नहीं सुनता विशेषत: जब वह समझदारी की बात कर रहा हो। तब तो उन्हें सुनना और भी कठिन हो जाता है। नीत्शे की बात को किसी ने भी गंभीरता से नहीं लिया। परंतु मेरा ख्याल है कि चेतना के इतिहास में उसकी यह घोषणा कि—परमात्मा मर गया है। अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण है। उसे यह घोषणा करनी पड़ी—इसलिए नहीं की परमात्मा मर गया था। वह ताक वहां पर कभी था ही नहीं। पहले तो वह कभी जन्मा ही नहीं तो वह मर कैसे गया? मरने से पहले तुम्हें कम से कम सत्तर साल तक जीने का दु:ख भोगना पड़ेगा। परमात्मा कभी था ही नहीं। यह अच्छा हुआ क्योंकि अस्तित्व अपने आप में पर्याप्त है। इसे बनाने के लिए किसी बाहरी साधन की आवश्यकता नहीं है।

मुझे इसके बारे में बात नहीं करनी थी। हर क्षण जब इतने रास्ते खोल देता है। तो उन पर चलना ही पड़ता है। किसी को भी चुनों बाद में इसका पछतावा ही होता है। क्योंकि जिन रास्तों को नहीं चुना उनके बारे में ही बार-बार यही विचार आता है कि न जाने वहां क्या था।

इसलिए तो इस दुनिया में कोई भी खुश नहीं है। सैकड़ों सफल लोग है—अमीर, शक्तिशाली परंतु कहीं पर भी खुशी और खुश लोग दिखाई नहीं देते जब तक कि तुम मेरे लोगों से न मिलो। हां,मेरे लोग सबसे बिलकुल अलग है—वे आनंदित है। सामान्यत: हर आदमी को कभी न कभी निराशा होना ही पड़ता है। जो

बुद्धिमान है वे जल्दी निराश हो जाते है। और जो बेवकूफ वे देर से। और जो अत्यंत मुर्ख है, मूढ़ हो वे तो कभी निराश नहीं होते। वे तो डिजनी लैंड के मेरी-गो राउंड पर बैठ-बैठ ही मर जाते हे।

आशु, इसका ठीक उच्चारण क्या है?

डिजनेलैंड़, ओशो।

डिजने, डिजनी। डिजनी। ठीक है। कोई भी स्त्री मुझसे अपने भावों को छिपा नहीं सकती। हां पुरूष कर सकता है। मुझे तुरंत मालूम हो गया कि कुछ गलत कहा है। किंतु तुम इसकी चिंता मत करो। मैं गलत ढंग का आदमी हूं। मैं तो संयोग से ही कभी गलती से कोई ठीक बात कह देता हूं। अन्यथा मैं तो सदा समझदार हीं होता हूं।

अच्छा, अब हम अपनी कहनी को आगे बढ़ाते है। यह बीच में थोड़ा सा विषयांतर हो गया था। और यह हजारों विषयांतर का संग्रह बनने बाला है। क्योंकि जीवन ऐसा ही है...

अब मस्तो तो था नहीं जो इंदिरा गांधी को मेरे काम करने के लिए राज़ी करता। किंतु उसने भारत के प्रधान मंत्रि को यह बात समझाने की पूरी कोशिश की। शायद इसमें वह सफल भी हो गया। लेकिन केवल यह समझाने में कि ऐसा आदमी है जिसे देश की राजनीति में कभी नहीं आना चाहिए। शायद जवाहरलाल मेरे लिए या और फिर देश की भलाई के लिए ऐसा सोच रहे होंगे। किंतु वे चालाक आदमी नहीं थे। इसीलिए यह दूसरी बात शायद सही नहीं हो सकती। मैंने उनको देखा है। इसलिए मैं जानता हूं। केवल उन्हें देखा ही नहीं बल्कि मेरे ह्रदय में उनके साथ एक गहन सामंजस्य हो गया। हम दोनों में समस्वरता उत्पन्न हो गई।

वे वृद्ध थे, उन्होंने अपना जीवन जी लिया था और सफलता प्राप्त कर ली थी और अब वे निराश और हताश हो गए थे। वह इसी लिए मैं सांसारिक अर्थ में सफल नहीं होना चाहता था और मैं यह कह सकता हूं कि मैंने अपने आपको सफलता से दूर ही रखा है। में इस दुनिया में ऐसे रहा हूं जैसे में इस दुनियां में कभी था ही नहीं।

मैं जो कह रहा हूं उसे कबीर ने बहुत ही सुंदर काव्यात्मक ढंग से एक गीत में अभिव्यक्त किया है। कबीर जुलाहा थे इसीलिए उनका गीत भी जुलाहे की भाषा में है।

वे कहते है: झीनी-झीनी बीनी रे चदरिया: मैंने रात के लिए एक सुंदर चदरिया बनाई है....झीनी-झीनी बीनी रे चदरिया, रामनाम रस भीनी। किंतु मैंने उसको इस्तेमाल नहीं किया और न हीं उसे मैला किया है। मेरी मृत्यु के समय भी वह उतनी ही स्वच्छ और ताजी है जितनी वह मेरे जन्म के समय थी।

और क्या तुम्हें मालूम है कि कबीर ने यह गीत गाया और वे मर गए। लोगों न समझा कि वे उनको सुनाने के लिए गीत गा रहे हैं। परंतु वे तो अस्तित्व के लिए गा रहे थे। ये एक ऐसे गरीब आदमी के शब्द थे जो इतना समृद्ध था कि सारा जीवन उस पर एक खरोंच भी नहीं लगा सका था और अस्तित्व ने उसे जो दिया था उसी प्रकार अस्तित्व को वापस दे सका।

कई बार मुझे अचरज होता है इस शरीर पर कि यह कितना बूढा हो गया है, परंतु जहां तक मेरा प्रश्न है, न तो मुझे बुढ़ापे की क्रमिक प्रक्रिया का पता चलता है ओर न बुढ़ापे का। एक क्षण के लिए भी मुझे कोई अंतर महसूस नहीं हुआ, मैं तो वहीं हूं। बहुत सी बातें घटी हैं। परंतु वे केवल परिधि पर ही घटी है। इसलिए मैं तुम्हें बता सकता हूं कि क्या हुआ किंतु मेरे साथ कुछ नहीं हुआ। मैं उतना ही सरल, उतना ही अज्ञानी हूं जितना मैं अपने जन्म के पहले था।

झेन लोग कहते हैं कि जब तक तुम्हें यह न मालूम हो जाए कि अपने जन्म से पहले तुम्हारा चेहरा कैसा था और तुम कैसे थे तब तक तुम हमको नहीं समझ सकते।

स्वभावत: तुम सोचोगे कि ये लोग पागल है और मुझे भी पागल बना रहे है। शायद ये चाहते है कि मैं अपनी नाभि को देखता रहूँ या इस तरह की कोई मूर्खता करूं। हां, कुछ लोग ऐसा कर रहे है और इसमें वे सफल हो रहे है और उनके हजारों अनुयायी है।

परंतु मेरे साथ होने का मतलब है कि किसी भी निर्धारित पथ पर नहीं चलना। वास्तव में किसी भी मार्ग पर नहीं चलना।.....ओर अचानक तुम अपने घर पहुंच जाते हो। ऐसा मेरे साथ हुआ और इसके अतिरिक्त सैकड़ों अन्य बातें भी घटी। और कोई नहीं जानता कि किससे क्या प्रेरित हो जाएगा।

जरा देव गीत को देखो। अब उसके भीतर कुछ उठ रहा है। कोई नहीं जानता किसी भी चीज से वह प्रकिया आरंभ हो सकती है। जो तुम्हें तुम तक पहुंचा सकती है। न वह बहुत दूर है न वह अति निकट है—यह वहीं पर है जहां पर तुम हो। इसलिए तो बुद्ध पुरूष हंसते है—वे अपने प्रयास की मूर्खता पर हंस पड़ते है। परंतु इसे देखने के लिए इसे समझने के लिए उन्हें कई चीजों में से गुजरना पडा।

समय क्या हुआ है?

दस बज कर सात मिनट हुए है, ओशो।

हां

अच्छा।

अपनी अंतिम भेंट में मस्तो ने मुझे बहुत ही बातें कहीं, उनमें से कुछ शायद किसी के लिए कहीं अपयोग हो सकती है। वह जाने वाला था। इसलिए मुझे वह जो कुछ भी बताना चाहता था उसे वह अति संक्षेप में कह रहा था। मुझे यह बात अजीब लग रही थी। क्योंकि वह बहुत अच्छा वक्ता था और इस समय वह अति संक्षेप में अपनी बात कह रहा था।

उसने कहा: तुम समझते क्यो नही, मैं बहुत जल्दी में हूं। तुम मेरी बात को ध्यान से सुना और तर्क मत करो। अगर हम दोनों तर्क ही करते रह गए तो मैं पागल बाबा को दिए गए अपने वायदे को पूरा नहीं कर सकूंगा।

मस्तो को मालूम था कि पागल बाबा का नाम मेरे लिए कितना महत्व पूर्ण था। उनका नाम सुनते ही मैं चुप हो जाता, कोई तर्क न करता। तब तो अगर वह कहता कि दो और दो पाँच होते है तो मैं चुपचाप सुन लेता। केवल सुनता ही नहीं इस पर विश्वास भी कर लेता। दो और दो चार होते है इसमें तो कोई संदेह नहीं है। परंतु अगर कोई कहे कि दो और दो जोड़ने से पाँच होते हे तो इसको मानने के लिए तो ऐसे प्रेम की आवश्यकता होती है। जो गणित के पार चाल जाता है। अगर बाबा ने ऐसा है तो ऐसा ही होगा। इसलिए मैं चुपचाप सुनता रहा।

वह अधिक नहीं बोला, उसने जो थोड़े से शब्द कहे वे बहुत महत्वपूर्ण थे।

उसने कहा: पहला, किसी संगठन में प्रवेश मत करना।

मैंने कहा: ठीक है। और मैंने किसी संगठन में प्रवेश नहीं किया । मैंने अपना वादा अच्छी तरह निभाया। मैं तो नव-संन्यास का भी सदस्य नहीं हूं। हो ही नहीं सकता। क्योंकि मैंने किसी से यह वादा किया था। उससे मैं बहुत प्रेम करता है। मैं तुम लोगों के बीच में रहते हुए भी बाहर का ही आदमी कहलाएगा। क्योंकि अंत तक मैं अपने वायदे को निभाने की कोशिश करूंगा।

उसने कहा: दूसरी बात यह याद रखना कि कभी किसी संस्था के विरूद्ध कुछ मत कहना।

इस पर मैंने कहा: मस्तो, ये शब्द तुम्हारे है। मुझे पूरा विश्वास है कि ये बाबा के शब्द नहीं है।

उसने हंस कर कहा: हां, बिलकुल ठीक। यह बात मैं कह रहा हूं। मैं तो यूं ही जरा आजमा रहा था। कि तुम गेहूँ को भूसे से अलग कर सकते हो या नहीं।

मैंने कहा: मस्तो, उसकी कोई जरूरत नहीं है। तुम तो जल्दी से वह सब कह दो जो तुम मुझे बताना चाहते हो, क्योंकि तुम कहते हो कि बहुत जल्दी है मुझे तो ऐसा नहीं लगता कि कोई जल्दी है। किंतु अगर तुम कहते हो तो मैं विश्वास कर लेता हूं। क्योंकि मैं तुमसे भी बहुत प्रेम करता हूं। जो अति आवश्यक बातें है वह तुम मुझे बता दो। नहीं तो हम दोनों चुपचाप बैठ जाते है—जब तक तुम चाहो।

थोड़ी देर तक चुप रह कर उसने कहा: अच्छा , हम दोनों चुप चाप बैठ जाते है। क्योंकि तुम्हें तो मालूम ही होगा कि बाबा ने मुझसे क्या कहा है। उन्होंने तुम्हें पहले ही बता दिया होगा।

मैंने कहा कि मैं उनकी इतनी गहराई से, इतनी अच्छी तरह जानता हूं कि मुझे कुछ बताने की जरूरत ही नहीं। अगर वे भी यहां आ जाएं तो मैं कहूँगा कि कुछ कहने का कष्ट मत कीजिए बस मेरे साथ बैठ जाइए। इसलिए अच्छा है कि तुमने खुद ही निर्णय ले लिया, पर अपना वादा पूरा करो।

उसने पूछा: कौन सा वादा।

मैंने कहा: यह तो बड़ा सीधा-साधा वादा है। जब तक तुम चाहो तब तक तुम मेरे साथ मौन में बैठो।

वह वहां पर छह घंटे तक रहा और उसने अपना वादा निभाया। हम दोनों एक शब्द भी नहीं बोले। किंतु शब्दों से कहीं अधिक गहरा संवाद हुआ। स्टेशन जाने से पहले सिर्फ एक बात उसने मुझसे कही: अच्छा, क्या अब मैं अपनी अंतिम बात कह दूँ क्योंकि शायद अब मैं तुमसे दुबारा कभी नहीं मिल सकूंगा। और उसे पता था कि वह सदा के लिए जा रहा है।

मैंने कहा: हां, जरूर कहो।

उसने कहा: मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि अगर तुम्हें कभी मेरी सहायता कह आवश्यकता हो तो तुम इस पते पर सुचित करना। यदि मैं जीवित होऊंगा तो वे मुझे तुरंत बता देंगे। और उसने जो पता मुझे दिया उसपर बहुत अचरज हुआ कि उसका मस्तो से क्या संबंध हो सकता है।

मैंने कहा: मस्तो।

उसने कहा: कुछ मत पूछो, सिर्फ इस आदमी को बता देना।

मैंने कहा: परंतु यह आदमी तो मोरार जी देसाई है। तुम्हें तो मालूम है कि इसको मैं सूचित नहीं कर सकता।

उसने कहा: हां, मैं जानता हूं। किंतु यही एक आदमी है जो जल्दी ही सत्ता में आने वाला है। और यह हिमालय में मुझसे कहीं भी संपर्क कर सकेगा।

मैंने कहा: क्या तुम सोचते हो कि यह जवाहरलाल के पद का उतराधिकारी बनेगा?

उसने कहा: नहीं, दूसरा आदमी बनेगा। लेकिन वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहेगा। वह इंदिरा उस पद पर बैठेगी और उसके बाद यह आदमी। मैं उसका पता तुम्हें दे रहा हूं, क्योंकि यह वह समय होगा जब तुम्हें मेरी सबसे ज्यादा जरूरत पड़ेगी, यूं तो जवाहरलाल है इंदिरा है......

जवाहर लाला और इंदिरा कि बीच जो आदमी प्रधानमंत्री बने वह बहुत ही अच्छा आदमी थे। उनका नाम लाल बहादुर शास्त्री था। शरीर तो उनका छोटा था किंतु भीतर से वे बहुत महान थे। किंतु वे कुछ महीनों तक ही पद पर रहे। अजीब बात है कि जैसे ही प्रधानमंत्री बने वैसे ही उन्होंने मुझे सूचित किया कि वे मुझसे मिलना चाहते है। उन्होंने संदेश भेजा कि जल्दी से जल्दी मुझसे मिलो।

मैं समझ गया कि इसके पीछे अवश्य मस्तो का हाथ होगा। मैं वहां यही जानने गया कि किसका हाथ है। और मैं दिल्ली पहुंचा। मस्तो से मैं इतना अधिक प्रेम करता था कि उसके लिए तो मैं नरक भी चला जाता—

और नई दिल्ली नरक ही तो है। क्योंकि प्रधानमंत्री ने मुझे बुलाया था इसलिए मैं वहां गया। और वहीं से मैं पता करना चाहता था कि मस्तो कहां पर है? और वह जीवित है या नहीं?

परंतु दुर्भाग्य से प्रधानमंत्री ने मुझे जो तारीख दी थी....उस दिन वे रूस से स्थित ताश कंद से दिल्ली वापस आने वाले थे। वहां पर वे भरत, रूस और पाकिस्तान के शिखर सम्मेलन में भाग लेने गए थे। परंतु खेद कि केवल उनका मृत शरीर ही वापस आया। ताश कंद में ही उनकी मृत्यु हो गई। मैं दिल्ली पहुंच था उनसे मस्तो के बारे में पूछने के लिए और वे वापस आए मृत।

मैंने कहा: यह ताह अच्छा खासा मजाक हो गया। एक व्यावहारिक मजाक। अब तो मैं कुछ पूछ भी नहीं सकता। और मस्तो ने जो मोरार जी देसाई का पता मुझे दिया था—उसको मालूम था कि जरूरत पड़ने पर भी मैं मोरार जी देसाई से कुछ नहीं कहूंगा। मैं नहीं पूछूंगी। इसका कारण यह नहीं है कि मैं उनकी नीतियों और फिलासफी के विरूद्ध हूं। ये तो बड़ी उथली बातें है। मैं तो उनके सारे काम के ढांचे के ही विरूद्ध हूं। वे ऐसे व्यक्ति नहीं है जिनके साथ कोई बातचीत या चर्चा हो सके।

मैंने मस्तो के बारे में उनसे कभी नहीं पूछा। संयोगवश एक-दो बार उनसे मुलाकात भी हुई थी। एक बार तो उनके घर पर ही मिला था और वहां पर तो सिर्फ हम दोनों ही थे। परंतु जनाने क्यों मुझे उनकी उपस्थिति अच्छी नहीं लगी। मेरा तो दिल घबड़ाने लगा,उलटी आने लगी। उन्होंने मुझे एक घंटे का समय दिया था। किंतु मैं तो दो मिनट में ही वहां से भाग गया। इसपर वे भी भौचकें रह गए और उनहोंने पूछा क्यों क्या हुआ?

मैंने कहा: क्षमा करना। मुझे बहुत जरूरी काम याद आ गया है। इसलिए जा रहा हूं और हमेशा के लिए, शायद अब हम कभी दुबारा नहीं मिलेंगे।

उनको बड़ा शाक लगा, क्योंकि उस समय वे देश के प्रधानमंत्री बनने वाले थे। इसमें देर नहीं थी। किंतु तुम तो मुझे जानते ही हो, कि अगर किसी की उपस्थिति मुझे परेशान और बेचैन कर देती है तो मैं वहां नहीं ठहरता। वहां पर मैं जो दो मिनट ठहरा वह भी शिष्टाचार वश, क्योंकि कमरे के भीतर प्रवेश करते ही—इधर-उधर सूंघ कर अगर तुरंत ही बाहर निकल जाता तो बहुत अशिष्ट माना जाता। परंतु मैंने किया तो कुछ ऐसा ही। बस दो मिनट रुका, क्योंकि वह मेरा इंतजार कर रहे थे, और वयोवृद्ध थे। राजनीतिक महत्व भी था उनका, किंतु मेरे लिए इसका कोई अर्थ नहीं था। किंतु उनके लिए चह बहुत महत्वपूर्ण था। वे पूरी तरह राजनीतिज्ञ थे और इसीलिए मुझे उनके प्रति घोर विकर्षण हो गया।

मुझे जवाहरलाल बहुत प्यारे लगे, क्योंकि उन्होंने राजनीति की कोई चर्चा नहीं की। तीन दिन लगातार हम मिलते रहे परंतु राजनीति के संबंध में एक शब्द भी नहीं कहा गया। मिलते ही दो मिनट में ही मोरार जी देसाई ने छूटते ही पूछा, वह औरत,इंदिरा गांधी के बारे में आपका क्या विचार है? जिस तरह उन्होंने ''वह औरत'' कहा, वह इतना भद्दा ढंग था। अभी भी मुझे उनकी आवाज यह कहते हुए सुनाई देती है...वह औरत। मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि कोई आदमी ऐसे भद्दे शब्द बोल सकता है।

सत्र—45 महात्मा गांधी से भेट

ओ.के.। सारी दुनिया स्तब्ध रह गई जब जवाहर लाल नेहरू रेडियो पर महात्मा गांधी की मृत्यु की सूचना देते समय एकाएक रो पेड। यह तैयार किया गया भाषण नहीं था। वे अपने ह्रदय से बोल रहे थे। और अगर अचानक उनके आंसू उमड़ पड़े तो वे क्या करते? और अगर कुछ क्षणों के लिए उन्हें रूकना पडा तो इसमें उनका कोई कसूर नहीं था। यह तो उनकी महानता थी। अन्य कोई मूढ़ राजनीतिज्ञ अगर चाहता भी तो ऐसा नहीं कर सकता था। क्योंकि उनके सैक्रेटरी को अपने तैयार किया गए भाषण में यक भी लिखना पड़ता कि अब रोना शुरू कीजिए और रोते-रोते थोड़ा रुकिए ताकि लोग समझें कि यह रोना सच्चा है।

जवाहरलाल ऐसे किसी भाषण को पढ़ नहीं रहे थे। सच तो यह है कि उनके सैक्रेटरी बहुत चिंतित थे। कई बरसों बाद उनका एक सैक्रेटरी संन्यासी बन गया था। उसने यह बताया कि हम लोगों ने एक भाषण तैयार किया था परंतु उन्होंने उसको हमारे मुहँ पर फेंकते हुए कहा: बेवक़ूफ़ों, क्या तुम समझते हो कि मैं तुम्हारा लिखा हुआ भाषण पढूंगा।

मैं तुरंत पहचान गया कि जवाहरलाल उन थोड़े से व्यक्तियों में से एक है जो अति संवेदनशील होते हुए भी दूसरों की सहायता के लिए अपने पद का उपयोग करते है। ये दूसरों की सेवा करते है। ये जनता का शोषण नहीं करते।

मैंने मस्तो से कहा: मैं राजनीतिज्ञ नहीं हूं और कभी बनूंगा भी नहीं। किंतु मैं जवाहरलाल का आदर करता हूं, इसलिए नहीं कि वह भारत के प्रधानमंत्री है बल्कि इस लिए कि वे मेरी संभावना को जान गए है। अभी तो यह किसी को नहीं मालूम कि मेरी यह संभावना-संभावना ही बनी रहेगी या वास्तविकता का रूप ले लेगी। किंतु उनका तुमसे जोर देकर कहना कि राजनीतिज्ञों से मेरी रक्षा करना, मुझे उनसे दूर रखना प्रमाणित करता है कि वह बहुत सह अदृश्य और अस्पष्ट बातों को भी समझ सकते है।

मस्तो के गायब होने की घटना ने और उसके इस अंतिम वक्तव्य ने बहुत से द्वार खोल दिए हैं। मैं बिना सोचे-समझे किसी में भी प्रवेश करूंगा। मेरा तो यही तरीका है।

पहला द्वार है: महात्मा गांधी। जवाहरलाल ने उनका उल्लेख किया था, क्योंकि वे मेरी तुलना उस व्यक्ति से करना चाहते थे जिसका वे सबसे अधिक आदर करते थे। परंतु ऐसा करने से वे थोड़ा सा झिझके भी गए। क्योंकि मेरे बारे में वे जो थोड़ा बहुत जानते थे उससे उन्होंने अनुमान लगाया कि वह जो कह रहे है उसमें कहीं पर कुछ गड़बड़ है। इसीलिए उन्हें झिझक हुई। परंतु उस समय उनको दूसरा कोई नाम नहीं सुझा। इसलिए उनके मुहँ से ये शब्द निकल पड़े कि ऐ दिन यह दूसरा महात्मा गांधी बनेगा।

मस्तो ने उस पर एतराज किया। क्योंकि वह मुझे जवाहरलाल से कहीं अधिक जानता था। हम दोनों के सैकड़ों बार महात्मा गांधी और उनके जीवन-दर्शन की चर्चा की थी। और मैंने सदा विरोध किया था। मस्तो को भी इस बात पर अचरज होता था कि मैं उस आदमी का इतना विरोध करता हूं। जिसको मैंने अपने जीवन में केवल एक बार देखा है। वह भी उस समय जब मैं बच्चा था। दूसरी मुलाकात की कहानी भी मैं तुम्हें सुनाऊं गा....इसमे अचानक बाधा पड़ गई। और तब यह मालूम ही नहीं होता कि आगे क्या होगा। मुझे क्या मालूम था कि बीच में यह विषय उठ पड़ेगा।

मैं अभी भी उस रेलगाड़ी को देख सकता हूं जिसमें गांधी सफर कर रहे थे। वे सदा तीसरे दर्जे, थर्ड क्लास में सफर करते थे परंतु उनका यह थर्ड क्लास फ़र्स्ट क्लास,प्रथम श्रेणी से भी अधिक अच्छा था। साठ सीटों के डिब्बे में वि, उनकी पत्नी और उनका सैक्रेटरी—केवल यह तीन लोग थे। सारा डिब्बा आरक्षित था। और वह

कोई साधारण प्रथम श्रेणी का डिब्बा नहीं था क्योंकि ऐसा डिब्बा तो दुबारा मैंने कभी देखा ही नहीं। वह तो प्रथम श्रेणी का डिब्बा ही रहा होगा। और सिर्फ प्रथम श्रेणी का ही नहीं बल्कि विशेष प्रथम श्रेणी का, सिर्फ उस पर ''तृतीय श्रेणी'' लिख दिया गया था और तृतीय श्रेणी बन गया था। और इस प्रकार महात्मा गांधी के सिद्धांत और उनके दर्शन की रक्षा हो गई थी।

उस समय मैं केवल दस साल का था। मेरी मां यानी मेरी नानी ने मुझे तीन रूपये देते हुए कहा कि स्टेशन बहुत दूर है और तुम भोजन के समय तक शायद वापस घर न पहुच सको। और इन गाड़ियों का कोई भरोसा नहीं है। बारह-तेरह घंटे देर से आना तो इनके लिए आम बात है। इसलिए ये तीन रूपये अपने पास रख लो। भारत में उन दिनों तीन रुपयों को तो एक अच्छा खासा खजाना माना जाता था। तीन रुपयों में तो एक आदमी तीन महीने तक अच्छी तरह से रह सकता था।

नानी ने मेरे लिए एक बहुत सुंदर कुर्ता बनवाया था। उनको मालूम था कि मुझे लंबी पतलून अच्छी नहीं लगती । ज्यादा से ज्यादा मैं कुरता-पायजामा पहन लेता था। कुर्ता मुझे बहुत प्रिय था, और पायजामा तो धीरे-धीरे गायब हो गया केवल लंबा कुर्ता ही बचा। लोगों ने शरीर को दो हिस्सों में बाट रखा है। एक उपर का हिस्सा और दूसरा नीचे का हिस्सा। और इन दोनों के लिए कपड़े भी अलग-अलग तरह के बनाए है। शरीर के ऊपरी हिस्से के लिए तो सुंदर-सुंदर कपडे बनाए है और निचले शरीर को तो ढाँक लेने का प्रयास किया गया है बस।

नानी ने मेरे लिए बहुत सुंदर कुर्ता बनवाया था। उन दिनों बहुत गर्मी थी। मध्य-भारत के उस अंचल में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है। दिन-रात लू चलती रहती है, उस के थपेड़ों से मुंह और नाक को बहुत परेशानी होती। बस केवल आधी रात को लोगों के कुछ राहत मिलती। मध्य-भारत में इतनी गर्मी पड़ती है कि हर वक्त ठंडा पानी पीने की इच्छा रहती है। उस समय अगर कहीं से बर्फ मिल जाए तो बड़ी खुशी होती है। उस हिस्से में बर्फ बहुत महंगी होती है। क्योंकि वर्क को सौ किलोमीटर दूर कारखाने से लाते समय आधी बर्फ तो रस्ते में ही घुल जाती है। समाप्त हो जाती है। इसलिए उसे जल्दी से जल्दी लाने की कोशिश की जाती है।

मेरी नानी ने मुझसे कहा कि अगर मैं महात्मा गांधी को देखना चाहता हूं तो मुझे वहां जाना चाहिए। और उन्होंने बहुत पतले मलमल का बड़ा कुर्ता बनवाया। मलमल बहुत ही सुदंर और बहुत पुराना कपड़ा है। उन्होंने बहुत अच्छा मलमल लिया। वह बहुत ही पतला और पारदर्शी था।

उस समय सोने की मोहरें गायब हो गई थीं और चाँदी के रुपयों का प्रचलन था। अब उस मलमल के कुरते की जेब के लिए चाँदी के तीन रूपये बहुत भारी थे—जेब लटक रही थी। ऐसा मैं क्यों कह रहा हूं, क्योंकि इसको जाने बिना आप लोग उस बात को समझ नहीं सकोगे जो मैं कहने जा रहा हूं।

गाड़ी हमेशा की तरह तेरह घंटे लेट आई। बाकी सभी लोग चले गए थे। सिवाय मेरे। तूम तो जानते है कि मैं कितना जिद्दी हूं। स्टेशन मास्टर ने भी मुझसे कहा: बेटा तुम्हारा तो कोई जवाब नहीं है। सब लोग चले गए हैं किंतु तुम तो शायद रात को भी यहीं पर ठहरने के लिए तैयार हो। और अभी भी गाड़ी के आने को कुछ पता नहीं है। और तुम सुबह चार बजे से उसका इंतजार कर रहे हो।

स्टेशन पर चार बजे पहुंचने के लिए मुझे अपने घर से आधीरात को ही चलना पडा था। फिर भी मुझे अपने उन तीन रुपयों को खर्च ने की जरूरत नहीं पड़ी थी क्योंकि स्टेशन पर जितने लोग थे सब कुछ न कुछ लाए थे और वे सब इस छोटे लड़के की देखभाल कर रहे थे। वे मुझे फल, मिठाइयों और मेवा खिला रहे थे। सो मुझे भूख लगने का कोई सवाल ही नहीं था। आखिर जब गाड़ी आई तो अकेला मैं ही वहां खड़ा था। बस एक दस बरस का लड़का स्टेशन मास्टर के साथ वहां खड़ा था।

स्टेशन मास्टर ने महात्मा गांधी से मुझे मिलवाते हुए कहा: इसे केवल छोटा सा लड़का ही मत समझिए। दिन भर मैंने इसे देखा है और कई विषयों पर इससे चर्चा की है, क्योंकि और कोई काम तो था नहीं। बहुत लोग आए थे और बहुत पहले चले गए, किंतु यह लड़का कहीं गया नहीं। सुबह से आपकी गाड़ी का इंतजार कर रहा है। मैं इसका आदर करता हूं, क्योंकि मुझे पता है कि अगर गाड़ी न आती तो यह यहां से जानेवाला नहीं था। यह यहीं पर रहता। आस्तित्व के अंत तक यह यहीं रहता। अगर ट्रेन न आती तो यह कभी नहीं जाता।

महात्मा गांधी बूढे आदमी थे। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और मुझे देखा। परंतु वे मेरी और देखने के बजाए मेरी जेब की और देख रहे थे। बस उनकी इसी बात ने मुझे उनसे हमेशा के लिए विरक्त कर दिया। उन्होंने कहा: यह क्या है?

, मैंने कहा: तीन रूपये।

इस पर तुरंत उन्होंने मुझसे कहा, इनको दान कर दो। उनके पास एक दान पेटी होती थी, जिसमें सूराख बना हुआ था। दान में दिए जाने वाले पैसों को उस सूराख से पेटी के भीतर डाल दिया जाता था। चाबी तो उनके पास रहती थी। बाद में वे उसे खोल कर उसमें से पैसे निकाल लेते थे।

मैंने कहा: अगर आप में हिम्मत है तो आप इन्हें ले लीजिए,जेब भी यहां है रूपये भी यहां है, लेकिन क्या मैं आप से पूछ सकता हूं कि ये रूपये आप किस लिए इक्कठा कर रहे है।

उन्होंने कहा: गरीबों के लिए।

मैंने कहा: तब यह बिलकुल ठीक है। तब मैंने स्वयं उन तीन रुपयों को उस पेटी में डाल दिया, लेकिन आश्चर्य तो उन्हें होना था क्योंकि जब मै वहां से चला तो उस पेटी को उठा कर चल पडा।

उन्होंने कहा: अरे, यह तुम क्या कर रहे हो। यह तो गरीबों के लिए हे।

मैंने उत्तर दिया: हां, मैंने सुन लिया है, आपको फिर से कहने की जरूरत नहीं है। मैं भी तो गरीबों के लिए ही ले जा रहा हूं। मेरे गांव में बहुत से गरीब है। अब मेहरबानी करके मुझे इसकी चाबी दे दीजिए, नहीं तो इसको खोलने के लिए मुझे किसी चोर को बुलाना पड़ेगा। क्योंकि चोर ही बंद ताले को खोलने की कला जानते है।

उन्होंने कहा: यह अजीब बात है....उन्होंने अपने सैक्रेटरी की और देखा। वह गूंगा बना था जैसे की सैक्रेटरी होते है। अन्यथा वे सैक्रेटरी ही क्यो बने? उन्होंने कस्तूरबा, अपनी पत्नी की और देखा। कस्तूरबा ने उनसे कहा: अच्छा हुआ, अब आपको अपने बराबरी का व्यक्ति मिला। आप सबको बेवकूफ बनाते हो, अब यह लड़का आपका बक्सा ही उठा कर ले जा रहा है। अच्छा हुआ। बहुत अच्छा हुआ,मैं इस बक्से को देख-देख कर तंग आ गई हूं।

परंतु मुझे उन पर दया आ गई और मैंने उस पेटी को वहीं पर छोड़ते हुए कहा: आप सबसे गरीब मालूम होते है। आपके सैक्रेटरी को तो कोई अक्ल नहीं है। न आपकी पत्नी का आपसे कोई प्रेम दिखाई देता है। मैं यह बक्सा नहीं ले जा सकता,इसे आप अपने पास ही रखिए। परंतु इतना याद रखिए कि मैं तो आया था एक महात्मा से मिलने परंतु मुझे मिला एक बनिया।

उनकी जाति भी वही थी। भारत में बनिया का अर्थ है जो यहूदी या ज्यू का होता है। भारत में अपने ही यहूदी है, वह यहूदी तो नहीं पर बनिया है। उस छोटी सी उम्र में भी महात्मा गांधी मुझे व्यवसायी ही लगे।

मैं महात्मा गांधी के विचारों से बिलकुल सहमत नहीं हूं और मैंने सदा उनकी आलोचना की है। परंतु जब उन्हें गोली मारी गई तो मैं सत्रह साल का था और मेरे पिता ने मुझे रोते हुए देख लिया।

उन्हें बड़ा अचरज हुआ। उन्होंने कहा: तुम और महात्मा गांधी के लिए रो रहे हो? तुमने तो सदा उनकी आलोचना की है।

मेरा सारा परिवार गांधी-भक्त था। वे सब गांधी का अनुसरण करते हुए जेल जा चुके थे। केवल मैं ही अपवाद था। स्वभावत: उन्होंने पूछा: तुम रो क्यों रहे हो?

मैंने कहां: मैं सिर्फ रो ही नहीं रहा हूं,मुझे अभी गाड़ी पकड़नी है क्योंकि मुझे उनकी शव यात्रा में शामिल होना है। मेरा समय खराब मत करो, यही अंतिम ट्रेन है जो समय पर वहां पहुंचाएगी।

वो तो भौचक्के रह गए। उन्होंने कहा: मैं भरोसा नहीं कर सकता। तुम तो पागल हो गए हो।

मैंने कहा: हम उसकी बाद में बात कर लेंगे। चिंता मत करो। मैं वापस आ रहा हूं।

मैं उसी समय दिल्ली के लिए रवाना हो गया और जब दिल्ली स्टेशन पर मेरी गाड़ी रुकी तो प्लेटफार्म पर मस्तो मेरा इंतजार कर रहा था।

उसने कहा: मुझे मालूम था कि तुम आओगे। गांधी की आलोचना करने के बावजूद तुम्हारे भीतर उनके लिए आदर भी है। इसलिए मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे मालूम था कि केवल यहीं गाड़ी तुम्हारे गांव से होकर यहां आती है। और तुम इसी गाड़ी से आ सकते हो। इसी लिए मैं तुम्हें लेने के लिए आ गया।

मैंने मस्तो से कहा: अगर तुमने गांधी के प्रति मेरे भावों की कभी बात की होती तो मैंने तर्क-वितर्क न किया होता लेकिन तुम सदा कुछ स्वीकार करवाना चाहते थे और तब भावना का फिर कोई सवाल नहीं उठता, फिर तो शुद्ध तर्क-वितर्क की बात है। या तो तुम जीतते हो या दूसरा। अगर एक बार भी तुमने भावना की बात की होती तो मैंने कुछ न कहा होता। क्योंकि तब फिर कोई तर्क-वितर्क न होता।

खासकर यह बात रिकार्ड में आ जाए इसीलिए मैं तुमसे कहना चाहता हूं। जब कि महात्मा गांधी के जीवन संबंधी विचार मुझे नापसंद है। फिर भी उनकी बहुत से विशेषताओं की मैं सराहना भी करता हूं। उनकी बहुत सी बातें है जिनकी मैं तारीफ करता हूं, किंतु जो कहने से रह गई हैं। अब उन्हें रिकार्ड में ले लेते है।

मुझे उनकी सच्चाई बहुत पसंद है। उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला। वे चारों और झूठ से घिरे हुए थे फिर भी वे सच पर अडिग रहे। मैं शायद उनके सच से सहमत न होऊं पर मैं यह नहीं कह सकता कि वे सच्चे नहीं थे। उन्होंने जिसको सच माना, फिर उसे नहीं छोड़ा। यह बिलकुल भिन्न बात है कि मैं उनके सच को किसी मूल्य का नहीं मानता पर वह मेरी समस्या है उनकी नहीं। उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला।

मैं उनकी इस सच्चाई का अवश्यक आदर करता हूं। जब कि उनको उस सत्य के बारे में कुछ नहीं मालूम था जिसकी चर्चा मैं करता हूं। जिसमें जंप करने के लिए सदा कहता हूं।

वे मुझसे कभी सहमत नहीं हो सकते थे। सोचने से पहले कूदो, नहीं वे तो व्यापारी बुद्धि के आदमी थे। दरवाजे से बाहर कदम उठाने से पहले वे तो सैंकड़ों बार सोचते ,कूदने, जंप की बात कहां।

उनको ध्यान के बारे में कुछ नहीं मालूम था और वे उसे समझ सकते थे। इससे उनका दोष नहीं था। उनको अपने जीवन में कोई गुरु नहीं मिला जो उनको निर्विचार मन या शुन्य मन के बारे में बताता। और उस समय भी ऐसे लोग उपस्थित थे।

मैहर बाबा ने एक बार उन्हें पत्र लिखा था। स्वयं तो नहीं लिखा था, पर उनकी और से किसी ने गांधी को पत्र लिखा था। मैहर बाबा तो सदा मौन रहते थे, कभी कुछ लिखा नहीं, किन्तु इशारों से अपनी बात समझाते थे। कुछ लोग ही समझ पाते थे कि मैहर बाबा क्या कहते है। मैहर बाबा ने अपने पत्र में गांधी से कहां था कि हरे राम, हरे कृष्ण बोलने से कोई लाभ नहीं होगा। अगर तुम सचमुच कुछ जानना चाहते हो तो मुझसे पूछो और मैं तुम्हें बताऊंगा। परंतु गांधी और उनके अनुयायी मैहर बाबा के इस पत्र पर बहुत हंसे क्योंकि उन्होंने इसे

मैहर बाबा का अंहकार समझा। यह अहंकार नहीं उनकी करूणा थी। किंतु लोग प्राय: इस करूणा को अंहकार ही समझते है। बहुत अधिक करूणा, शायद बहुत अधिक करूणा है इसलिए अहंकार लगता है।

गांधी ने मैहर बाबा को तार से धन्यवाद देते हुए उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और कहा कि मैं तो अपने ही रास्ते पर चलूंगा। जैसे कि उन्हें रस्ता मालूम था। उन्हें तो कोई रास्ता मालूम ही नहीं था। फिर चलने का प्रश्न ही नहीं उठता था।

परंतु गांधी की कूद बातें मुझे बहुत प्रिय थी उनका मैं आदर करता हूं। जैसे उनकी स्वच्छता और सफाई। अब तुम कहोगे कि इतनी छोटी-छोटी बातों के लिए आदर, नहीं ये छोटी बातें नहीं है। खासकर भारत में जहां संत, तथाकथित संत सब प्रकार की गंदगी में रहते थे। गांधी न स्वच्छ, साफ रहने की कोशिश की। वे अत्यधिक साफ अज्ञानी व्यक्ति थे। मुझे उनकी साफ-सफाई, स्वच्छता बहुत पसंद है।

सभी धर्मो के प्रति उनका आदरभाव भी मुझे पंसद है। हालांकि हमारे कारण अलग-अलग है। पर कम से कम उन्होंने सब धर्मों का आदर किया। निश्चित गलत कारण की वजह से। उन्हें पता ही न था कि सच क्या है, तो वे कैसे तय करते कि क्या सही है या कोई भी धर्म सही है। सब सही है या कोई भी कभी सही हो सकता है। कोई रास्ता नथा। अखीर वे एक व्यापारी थे इसलिए क्यों किसी को दुःखी-परेशान करना, क्यों उपद्रव करना?

कम से कम इतनी बुद्धि तो उनमें थी कि वे समझ सके कि गीता, कुरान, बाईबिल और ताल मुद सब एक ही बात कहते है। याद रखना ''कम से कम'' इतनी बुद्धि तो थी कि समानता खोज सके। यह कोई कठिन बात नहीं है। किसी भी समझदार व्यक्ति के लिए। इसीलिए मैं कहता हूं, कम से कम, इतनी बुद्धि तो थी पर सच मैं बुद्धिमान नहीं थे। सच में बुद्धिमान तो सदा विद्रोही होते है। और वे कभी विद्रोह न कर सके किसी ट्रैडीशनल का—हिंदू, क्रिश्चियन,या बौद्धों का।

आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि एक बार गांधी भी ईसाई बनने का विचार कर रहे थे। क्योंकि यही एक ऐसा धर्म है जो गरीबों की बहुत सेवा करता है। परंतु जल्दी ही उनकी समझ में यह आ गया कि इनकी सेवा सिर्फ दिखावा है, असली धंधा तो पीछे छिपा है। इनका उद्देश्य है लोगो को ईसाई बनाना—सेवा के बहाने ये धर्मपरिवर्तन करते है। क्यों? क्योंकि इससे शक्ति आती है। जितने ज्यादा लोग तुम्हारे पास हों उतनी ज्यादा शक्ति होती है। अगर तुम सारे जगत को ईसाई,यहूदी या हिंदू बना दो तो तुम्हारे पास सबसे ज्यादा शक्ति होगी, जितनी कभी किसी के पास न थी। इसकी तुलना में सिकंदर भी फिका पड जाएगा। यह सब शक्ति का झगडा है।

जैसे ही गांधी ने यह देखा—और मैं फिर कहता हूं, वे इतना देखने के लिए काफी बुद्धिमान थे—उन्होंने ईसाई बनने का विचार छोड़ दिया। सच तो यह है कि भारत में हिंदू होना ज्यादा फायदेमंद था ईसाई होने के बजाए। भारत में ईसाई केवल एक प्रतिशत है इसलिए वे कोई राजनीतिक शक्ति नहीं बन सकेत थे। हिंदू बने रहना ही अधिक लाभदायक था, मेरा मतलब है उनके महात्मा पन के लिए। किंतु वे काफी होशियार थे कि सी.एफ.एण्ड़ जैसे ईसाइयों को बौद्धों और जैनों को और फ्रंटियर गांधी जैसे मुसलमान को भी प्रभावित कर सके।

सीमांत गांधी पख तून जाति के थे जो भारत के सीमांत प्रदेश में रहती है। पख तून बहुत ही सुदंर ओर खतरनाक भी होते है। ये लोग मुसलमान है, और जब उनका नेता गांधी का अनुयायी बन गया। स्वभावत: वे भी अनुयायी बन गए। भारत मुसलमानों ने कभी सीमांत गांधी को माफ नहीं किया। क्योंकि उन्होंने सोचा कि उसने अपने धर्म के साथ गद्दारी की है, धोखा दिया है।

मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि उसने क्या किया। मैं कह रहा हूं कि गांधी ने स्वयं पहले जैन बनने के बारे में बारे में भी सोचा था। उनका पहला गुरु जैन ही था। जिसका नाम था श्रीमद्राजचंद्र। और हिंदू अभी भी

इस बात का बुरा मानते है कि उन्होंने एक जैन के पैर छुए। उनका दूसरा गुरु था, रस्किन। इससे हिंदुओं को और भी ज्यादा तकलीफ हुई। रस्किन की एक पुस्तक था: अन टू दिस लास्ट। इसने गांधी के जीवन को ही परिवर्तित कर दिया था। पुस्तकें चमत्कार कर सकती है। तुमने शायद इस पुस्तक के बारे में सुना भी न हो—अनट दि लास्ट। यह एक छोटी सह पुस्तिका है। जब गांधी एक यात्रा पर जा रहे थे, तो उनके एक मित्र ने उनको यह पुस्तिका दी, क्योंकि उसे यह बहुत पसंद आई थी। गांधी ने उसे रख लिया था। सोचा भी न था कि पड़ेंगे। पर रास्ते में जब समय मिला तो उन्होंने सोचा के क्यों न इसे देख लिया जाए। और इस पुस्तिका ने उनके जीवन को ही बदल दिया। उनकी फिलासफी इसी पुस्तिका पर आधारित है।

मैं उनकी इस फिलासफी के विरूद्ध हूं, किंतु यह पुस्तक महान है। उसका दर्शन किसी योग्य नहीं है—परंतु गांधी तो कचरा इकट्ठा करते थे। वे तो सुंदर जगहों पर भी कचरा खोज लेते थे। ऐसे लोग होते है, तुम जानते हो, जिन्हें तुम सुंदर बग़ीचे में ले जाओ, वे ऐसी जगह खोज लेंगे और तुम्हें दिखाइंगे कि यह नहीं होना चाहिए। उनकी सारी एप्रोच ही नकरात्मक होती है। ये कचरा इक्ट्ठा करने वाले लोग होते है। वे अपने आप को कला को इक्ट्ठा करने वाला कहते है।

अगर मैंने इस पुस्तक को पढ़ा होता, जैसा गांधी ने पढ़ा, तो मैं उस निष्कर्ष पर न पहुंचता जिस पर गांधी पहुंचे है। सवाल पुस्तक का नहीं है। सवाल पढ़ने वाले का है। वही चुनता है ओर इकट्ठा करता हे। हम एक ही जगह पर जाएं तो भी अलग-अलक चीजें इकट्ठी करेंगे। मेरे हिसाब से उनका कलक्शन मूल्य-रहित है। मैं नहीं जानता और कोई नहीं जानता कि उन्होंने मेरे कलक्शन के बारे में क्या सोचा होता। जहां तक मैं जानता हूं वह बहुत ही सिंसियर आदमी थे। इसीलिए मैं नहीं कह सकता कि उन्होंने ऐसा ही कहा होता जैसा मैं कह रहा है। कह उनका सारा कलेक्शन जंक है, कचरा है। शायद उन्होंने कहा होता,शायद न कहा होता—यही उनमें मुझे पसंद है। वे उसकी भी तारीफ कर सकेत थे जो उनके लिए एलियन, अपरिचित था—और अपनी पूरी कोशिश करते खुले रहने की, उसे एब्जार्ब करने की।

वे मोरार जी देसाई की तरह न थे जो कि पूरी बंद, कलोज्ड है। मुझे तो कभी-कभी लगता है कि वह श्वास कैसे लेते होंगे क्योंकि उसके लिए कम से कम नाक तो खुला चाहिए। किंतु महात्मा गांधी मोरार जी देसाई जैसे आदमी ने थे। मैं उनसे असहमत हूं किंतु फिर भी मैं स्पष्ट और संक्षिप्त लिखते थे। कोई भी उतना सरल नहीं लिख सकता था। और न ही कोई उतनी कोशिश करता था सरल लिखने की। अपने वाक्य को सरल और संक्षिप्त बनाने में वे घंटों लगाते थे। जितना संभव हो उसे उतना छोटा और सरल बनाते। वे जो भी सच मानते थे उसके अनुसार ही जीते थे। यह अलग बात है कि वह सत्य न था, पर इसके लिए वे क्या सामना करते थे। मैं उनकी इस सच्चाई और ईमानदारी का आदर करता हूं। इस ईमानदारी के कारण ही उन्हें अपने जीवन से हाथ धोने पड़े।

गांधी की हत्या के साथ भारत का समस्त अतीत खो गया क्योंकि इसके पहले भारत में कभी किसी को गोली नहीं मारी गई थी। कभी किसी को सूली नहीं लगाई गई थी। यह कभी इस देश का तरीका न था। ऐसा नहीं कि यह बेड उदार लोग है। बल्कि इतने अहंकारी, दंभी है कि वह किसी को इस योग्य ही नहीं समझते कि उसे सूली दी जाए। उससे अपने को बहुत ऊपर मानते है।

महात्मा गांधी के साथ भारत का एक अध्याय समाप्त होता है और नया अध्याय आरंभ होता है। मैं इसलिए नहीं रोया कि वे मर गए। एक दिन तो सभी को मरना ही है। इसमें रोने की कोई बात नहीं है। अस्पताल में बिस्तर पर मरने के बजाए गांधी की मौत मरना कहीं अच्छा है खासकर, भारत में।

एक तरह से वह साफ और सुंदर मृत्यु थी। और मैं हत्यारे नाथूराम गोडसे का पक्ष नहीं ले रहा हूं। और उसके लिए मैं नहीं कह सकता कि उसे माफ कर देना क्योंकि उसे पता नहीं कि वह क्या कर रहा है। उसे अच्छी तरह से पता था कि वह क्या कर रहा है। उसे माफ नहीं किया जा सकता । नहीं कि मैं उस पर कुछ जोर-जबरदस्ती कर रहा हूं बल्कि सिर्फ तथ्यगत हूं।

बाद में जब मैं वापस आया तो यह सब मुझे अपने पिताजी को समझाना पडा और इसमें कई लग गए। क्योंकि मेरा ओर गांधी का संबंध बहुत ही जटिल है। सामान्यत: या तो तुम किसी की तारीफ करते हो या नहीं करते हो। लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं है। और सिर्फ महात्मा गांधी के साथ के साथ ही नहीं।

मैं अजीब ही हूं। हर क्षण मुझे यह महसूस होता है। मुझे कोई खास बात किसी कि अच्छी लग सकती है लेकिन उसी समय साथ ही साथ ऐसा कुछ भी हो सकता है जो मुझे बिलकुल पसंद न हो, और जब फिर तय करना होगा। क्योंकि में उस व्यक्ति को दो में बांट सकता।

मैंने महात्मा गांधी के विरोध में होना तय किया। ऐसा नहीं कि उनमें ऐसा कुछ न था जो पंसद न था—बहुत कुछ था। परंतु बहुत बातें ऐसी थीं जिनके दूरगामी परिणाम पूरे जगत के लिए अच्छे नहीं थे। इन बातों के कारण मुझे उनका विरोध करना पडा। अगर वे विज्ञान, टेकनालॉजी, प्रगति और संपन्नता के विरूद्ध न होते तो शायद मैं उनको बहुत पंसद करता। वे तो उस सब चीजों के विरोध में थे। मैं पक्ष में हूं—और अधिक टेकनालॉजी,और अधिक विज्ञान, और अधिक संपन्नता के।

मैं गरीबी के पक्ष में नहीं हूं, वे थे। मैं पुरानेपन के पक्ष में नहीं हूं वे थे। पर फिर भी, जब भी मुझे थोड़ी सह भी सुंदरता दिखाई देती है। में उसकी तारीफ करता हूं। और उनमें कुछ बातें थीं जो समझने योग्य है।

उनमें लाखों लोगों की एक साथ नब्ज परखने की अद्‌भुत क्षमता थी। कोई डाक्टर ऐसा नहीं कर सकता एक आदमी की नब्ज परखना भी अति कठिन है। खासकर मेरे जैसे आदमी की। तुम मेरी नब्ज परखने की कोशिश कर सकते हो। तुम अपनी भी नब्ज खो बैठोगे, या अगर पल्स नहीं तो पर्स खो बैठोगे जो कि बेहतर ही हे।

गांधी में जनता कि पल्स, नब्ज पहचानने की क्षमता थी। निश्चित ही मैं उन लोगों में उत्सुकता नहीं रखता हूं। पर वह अलग बात है। मैं हजारों बातों में उत्सुक नहीं हूं,पर इसका यह अर्थ नहीं कि जो लोग सच्चे दिल से काम में लगे हैं, समझदारी पूर्वक किन्हीं गहराइयों को छू रहे है। उनको तारीफ न कि जाए। गांधी में वह क्षमता थी। और मैं उसकी तारीफ करता हूं। मैं अब उनसे मिलना पसंद करता। क्योंकि जब मैं सिर्फ दस वर्ष का बच्चा था। वे मुझसे सिर्फ वे तीन रूपये ले सके। अब मैं उन्हें पूरा स्वर्ग दे सकता था—पर शायद इस जीवन में ऐसा नहीं होना था।

सत्र—46 सत्य साईं बाबा तो अति साधारण जादूगर

ठीक है। मैं प्राइमरी स्कूल के दूसरे दिन से शुरूआत करता हूं। कितनी देर वह घटना इंतजार कर सकती है। पहले ही बहुत इंतजार कर चुकी है। सच मैं स्कूल में मेरा प्रवेश दूसरे दिन हुआ। क्योंकि काने मास्टर को निकाल दिया गया था। इसलिए सब लोग खुशी मना रहे थे। सब बच्चे खुशी से नाच रहे थे। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा था। किंतु उन्होंने मुझे बताया तुम्हें काने मास्टर के बारे में मालूम नहीं है। अगर वह मर जाए तो हम सारे शहर में मिठाई बांटें गे और अपने घरों में दिए जलाएंगे।

और मेरा इस प्रकार स्वगत हुआ जैसे कि मैंने कोई महान कार्य किया हो। सच तो यह है कि मुझे काने मास्टर के लिए थोड़ी सहानुभूति भी हो रही थी। वह कितना ही बुरा था, हिंसक था किंतु था तो मनुष्य ही। और मनुष्य की सारी कमज़ोरियाँ स्वभाविक है। यह उसकी गलती ने थी कि उसकी एक आँख थी और चेहरा भी बहुत कुरूप था। और मैं जो कहना चाहता हूं। वह पहले कभी नहीं कहा किंतु अब कहता हूं—पहले तो मेरी बात को कोई विश्वास ही न करता—किंतु अब कोई विश्वास करे या न करे,मैं तो यही कहूंगा कि उसकी क्रूरता स्वाभाविक थी। जैसे उसकी एक आँख थी, वैसे ही उसका गुस्सा था। और बहुत हिंसक क्रोध था। कुछ भी किसी भी तरह उसके विरूद्ध हो उसे वह माफ क कर पाता। छोटी-छोटी बात पर वह क्रोधित हो जाता था। अगर बच्चे चुपचाप बैठते तो भी भड़क जाता ओर पूछता इतनी चुप्पी क्यों। क्या हो रहा है। जरूर कोई न कोई कारण होगा इतनी चुप्पी का । मैं तुम सबको सिखाऊंगा कि तुम जीवन भी याद रखोगे ओर दुबारा मेरे साथ ऐसा नहीं करोगे।

बच्चों को बड़ा आश्चर्य होता। वे तो सिर्फ शांत इसलिए थे कि वह डिस्टर्व न हो, उसे परेशानी न हो। पर वह भी क्या करता। यह शांति भी परेशान कर देती। उसका इलाज जरूरी था। और सिर्फ शारीरिक ही नहीं। वास्तवमें वह रूग्ण चित वाला था। इसलिए उसका मानसिक इलाज होना चाहिए था। मुझे इस बात का बहुत अफसोस था कि मेरे कारण उसकी नौकरी छुट गई। परंतु उसके चले जाने से सब लोग खुशी मना रहे थे—यहां तक कि अध्यापक भी। मुझे तो विश्वास ही न हुआ जब हेड मास्टर ने भी मुझे कहा: धन्यवाद बेटे, तुमने अपने स्कूल जीवन का प्रारंभ एक अच्छे काम से किया है। वह आदमी एक प्रकार का सिरदर्द था।

मैंने उनकी और देख कर कहा: तब तो मुझे सिर को भी हटा देना चाहिए।

इतना सुनते ही हेड मास्टर गंभीर हो गए और उन्होंने कहा: जाओ और अपना काम करों।

मैंने कहा: देखो, क्योंकि आपका एक सहयोगी नौकरी से निकाल दिया गया है इसलिए आप खुशी मना रहे हो, कैसे सहयोगी हो? यह कैसी मित्रता है। उसके सामने आपने कभी न कहा कि आपको कैसा लगता है। आप उसके सामने अपनी यह बात नहीं कहा सकते थे क्योंकि वह आपको बरबाद कर सकता था।

वह हेड़ मास्टर छोटे कद का आदमी था। उसकी ऊँचाई शायद पाँच फीट की थी या उससे भी कम। किंतु वह काना मास्टर तो सात फीट ऊँचा था और उसका वज़न चार सौ पौंड था—साक्षात राक्षस दिखाई देता था। वह तो इस हेड मास्टर को बिना किसी हथियार के अपनी उंगलियों से ही मसल देता। इसलिए मैंने हेड मास्टर से पूछा कि उसके सामने तो तुम भीगी बिल्ली बन जाते थे। ऐसे व्यवहार करते थे जैसे पति अपनी पत्नी के सामने करता है। हां, यही शब्द मैंने कहे थे।

मुझे याद है कि मैंने कहा कि तुम जोरू के गुलाम की तरह व्यवहार करते हो। मैंने कहा: भले ही मैं उसके हटाए जाने का कारण हूं परंतु मैं उसके विरूद्ध को ई षडयंत्र नहीं कर रहा। मैं तो स्कूल में अभी भर्ती हुआ था।

किंतु आप तो जीवन भर उसके विरूद्ध योजनाएं बनाते रहे हो। उसको किसी दूसरे स्कूल मैं भी भेजा जा सकता था। शहर में ऐसे चार स्कूल थे।

परंतु काने मास्टर शक्तिशाली व्यक्ति थे, और उस शहर का सभापति उसके हाथ में था। वह सभापति किसी के भी हाथ के नीचे होने को तैयार था। शायद उसे हाथ के नीचे होना पसंद था। इस सभापति ने शहर के लिए कभी कुछ नहीं किया था। जल्दी ही शहर के लोगों को समझ आ गया कि यह गोबर गणेश कुछ करने वाला नहीं है। बीस हजार जनसंख्या वाले लोगों के शहर में न सड़कें थी, न बिजली ही थी, न बाग़-बग़ीचे ही थे। जल्दी ही लोगों की समझ में आ गया कि इस गोबरगणेश सभापति के कारण ही ऐसा है। इसलिए उसे अपने पद से त्यागपत्र देना पडा। और तब ढाई साल के लिए, उप सभापति, शंभु दुबे ने उसका पद ग्रहण कर लिया। उन्होंने उस शहर का नक्शा ही बदल दिया, बहुत सुंदर बना दिया।

एक बात मैं आपसे कहना चाहता हूं कि मेरे द्वारा उन्हें मालूम हो गया कि एक छोटा एक अध्यापक को हटा सकता है। साथ ही वह ऐसी परिस्थिति का भी निमार्ण कर सकता है। जिससे विवश हो कर एक सभापति को त्याग पत्र भी देना पड़ सकता है।

वे हंसते हुए मुझसे कहते: तुमने मुझे सभापति बना दिया है। किंतु बाद में कई बार हम एक दूसरे से असहमत भी हुए। शंभु बाबू कई बरसों तक सभापति पद पर रहे। एक बार जब लोगों ने ढाई साल में किए गए उनके काम देखा तो उन्हें बार-बार एकमत से निर्वाचित किया। शहर को बदलने में उन्होंने करीब-करीब चमत्कार कर दिया।

उस जिले में पहली बार उन्होंने पक्की सड़कें बनवाई। सड़को के दोनों और पेड़ लगाए और शहर में बिजली लाए। उतनी आबादी वाले किसी दूसरे शहर में बिजली न थी। उससे कोई संदेह नहीं कि उस शहर के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया परंतु फिर भी कभी-कभी मैं उनकी नीतियों से सहमत नहीं होता था। इसलिए मुझे उनका विरोध भी करना पड़ता था। तूम भरोसा नहीं कर सकते कि एक छोटा सा बच्चा, शायद बारह साल का, कैसे विरोधी हो सकता है। मेरे अपने तरीके थे। बहुत आसानी से मैं लोगों को अपने साथ सहमत कर लेता था। सिर्फ इसलिए कि मैं छोटा सा बच्चा था। और राजनीति में क्या उत्सुकता होगी। और सच में मुझे कोई उत्सुकता न थी।

उदाहरण के लिए, शंभु बाबू ने चुंगी-कर लगा दिया। मैं समझ सकता था। मुझे मालूम था कि इसके बिना शहर के रख-रखाव का खर्च नहीं चल सकता। स्वभावत: उन्हें पैसों की जरूरत थी। किसी तरह का कर लगाना जरूरी था। मैं कर के खिलाफ नहीं था। परंतु मैं इस चुंगी कर के विरोध में था कयोंकि मुझे मालूम था कि इससे गरीबों को बहुत परेशानी होगी। अमीर और अमीर होता जाता है। और गरीब और गरीब होत जाता है। मैं अमीर के और अमीर बनने के खिलाफ नहीं हूं। परंतु मैं गरीब के और गरीब होने के निश्चित विरोध में हूं। तुम्हे भरोसा न आएगा और उन्हें भी आश्चर्य हुआ जब मैंने उससे कहा कि मैं घर-घर जाकर कहूंगा कि शंभु बाबू को फिर वोट मत देना। अगर शंभु बाबू रहते है तो उन्हें इस चुंगी कर को हटाना पड़ेगा और अगर चुंगी-कर रहता है तो शंभु बाबू को हटना पड़ेगा। हम दोनों एकसाथ नहीं रहने देने।

तो मैंने ऐसा ही किया, घर-घर तो गया ही इसके अतिरिक्त मैंने अपनी पहली सार्वजनिक सभी को भी संबोधित किया। लोगों को यह देख कर बड़ा मजा आया कि एक छोटा सा लड़का इतना तर्क पर्ण बोल रहा है। शंभु बाबू उस समय नजदीक ही एक दुकान में बैठे हुए मेरा भाषण सुन रहे थे। मैं अभी भी उन्हें वहां बैठे देख सकता हूं। वे वहां पर रोज बैठते थे। वह अजीब जगह थी उनके बैठने के लिए, पर वह दुकान शहर के बीचो

बीच थी इसीलिए सब मीटिंग उसी स्थान पर होती थी। वे उस दुकान में बैठने का बहाना करते और दिखाते के वह तो सिर्फ अपने दोस्त की दुकान पर बैठे हैं, मीटिंग से कूद लेना-देना नहीं है।

उन्होंने मुझे भी बोलते हुए सुना। और तुम जानते हो, मैं सदा से ऐसा ही हूं। मैंने उस दुकान में बैठे शंभु बाबू की और इशारा करते हुए कहा: ये देखो, ये वहां पर बैठे है, ये मुझे सुनने आए है। कि मैं क्या कहता हूं किंतु शंभु बाबू, याद रखना, मित्रता अलग बात है पर मैं आपके चुंगी-कर का समर्थन नहीं करूंगा। मैं चुंगी-कर का विरोध अवश्य करूंगा—भेल नहीं था। कुछ मुद्दों पर एकमत न होते हुए भी या सार्वजनिक मतभेद पर आ जाएं तब भी अगर हमारी मित्रता का कोई मूल्य नहीं है।

शंभु बाबू सचमुच बहुत अच्छे आदमी थे। वे दुकान से बाहर आए और मेरी पीठ को थपथपाते हुए उन्होंने कहा: तुम्हारे तर्कों पर अवश्य विचार किया जाएगा। और जहां तक हमारी मित्रता का सवाल है उसका इस विरोध से कोई लेना-देना नहीं है। इसके बाद उन्होंने दुबारा इस विषय पर बात नहीं की। मेरा खयाल था कि वे एक न एक दिन जरूर कहेंगे कि तुम तो मेरी कड़ी आलोचना कर रहे थे। यह तुमने ठीक नहीं किया। परंतु उन्होंने इसका कभी जिक्र भी नहीं किया और सबसे आश्चर्यजनक बात यह भी कि उन्होंने उस चुंगी-कर को भी हटा दिया।

मैंने उनसे पूछा कि ऐसा आपने क्यों किया? मैं भले ही विरोध करूं, पर में तो अभी बोट भी नहीं दे सकता। यह तो जनता है जिसने आपको चुना है। उन्होंने कहा कि इसका सवाल नहीं है। अगर तुम ति इसका विरोध कर रहे हो तो इसका मतलब है कि जो कर रहा हूं वह अवश्य गलत है। मैं इसे हटा देता हूं। मैं लोगों से नहीं डरता। लेकिन जब तुम जैसा व्यक्ति विरोध करता है.....हालांकि तुम उम्र में छोटे हो किंतु मैं तुम्हारा आदर करता हूं। और तुम्हारा तर्क बिलकुल ठीक था कि हर प्रकार का कर गरीब आदमी को ही प्रभावित करता है—अमीर तो अपनी चालाकी से उससे बच जाता है। चुंगी कर ऐसा कर है जो शहर के भीतर आने वाली हर चीज पर लगाया जाता है। और जब ये चीजें बेची जाती है तो दुकानदार उनको अधिक कीमत पर बेचता है। अब इसको नहीं रोका जा सकता कि दुकानदार ने जो कर भरा है वह गरीब किसान की जेब से वापस ले रहा है। दुकानदार इसे कर की तरह नहीं लेता, यह तो कीमत में जोड़ दिया जाता है।

शंभु बाबू ने कहा: मैं तुम्हारी इस बात को समझ गया हुं इसलिए मैंने इस कर को हटा दिया है। जब तक वे प्रेसीडेंट रहे तब यह कर दुबारा नहीं लगाया गया और इसकी बात भी नहीं की गई। मेरे इस विरोध के कारण शंभु बाबू मुझसे नाराज नहीं हुए। इससे मेरे प्रति उनका आदर और भी बढ़ गया। मुझे थोड़ा सा बुरा लगा कि उस शहर में मैं जिस व्यक्ति को सबसे अधिक चाहता था उसी का मुझे विरोध करना पडा।

मेरे पिताजी को भी यह जान कर बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने मुझसे कहा: तुम तो अजीब हरकतें करते हो। मैंने तुम्हें सार्वजनिक सभा में बोलते सुना था। मुझे पता था कि तुम ऐसा कुछ करोगे, पर इतने जल्दी नहीं और तुम इतने अच्छे ढंग से अपने ही मित्र के विरोध में भाषण दे रहे थे। यह देख कर सबको आश्चर्य हो रहा था। कि तुम शंभु बाबू के खिलाफ बोल रहे है।

सारे शहर को मालूम था कि बुजुर्ग आदमी,शंभु बाबू के सिवाय मेरा और कोई मित्र न था। जब हम मित्र थे उस समय वे पचास के आस पास रहे होगें। उनका भी और कोई मित्र नहीं था। हम दोनों की आयु में बहुत अंतर था किंतु हमको इसका खयाल कभी नहीं आया। न ही वे इस मित्रता को गंवा सकते थे और न ही मैं। पिताजी ने मुझसे कहा: विश्वास ही नहीं हो रहा कि तुम उनके विरूद्ध बोल सकते हो। मैंने कहा: मैंने एक शब्द भी उनके खिलाफ नहीं बोला। मैं तो केवल उस चुंगी-कर का विरोध कर रहा था। चुंगी-कर से मेरी मित्रता का कोई संबंध नहीं है। और शंभु बाबू से मैंने पहले से ही कह रखा है कि अगर मुझे उनकी कोई बात पसंद न आई

तो मैं उनसे भी लडूंगा। इसीलिए वे उस दुकान में मौजूद थे, ताकि सुन सकें कि मैं क्या बोल रहा हूं। लेकिन मैंने शंभु बाबू के विरूद्ध एक शब्द भी नहीं बोला।

स्कूल में दूसरा दिन ऐसे था जैसे मैंने कुछ महान काम किया हो। मैं तो भरोसा ही न कर सका कि लोग काने मास्टर से इतने पीड़ित थे। ऐसा नहीं था कि वे मेरे लिए खुशी मना रहे थे। तब भी मैं अंतर को साफ देख सकता था। आज भी अच्छी तरह से याद है। कि वे अब काने मास्टर उनके सिर पर नहीं होंगे इसकी खुशी मना रहे थे।

उन्हें मुझ से कुछ लेन-देना नहीं था, हालांकि वे ऐसा दिखा रहे थे। जैसे कि मेरे लिए खुशी मना रहे हो। पर मैं एक दिन पहले भी स्कूल आया था और किसी ने ''हलों'' तक नहीं कहा था। और अब सारा स्कूल ही हाथी दरवाजे पर मुझे लेने मेरे स्वागत के लिए इक्कठा हो गया था। मैं सिर्फ अपने दूसरे दिन ही करीब-करीब हीरो बन गया था।

पर मैंने उसी समय उनसे कहा: कृपया यहां से चले जाओ। अगर तुम लोगों को खुशी मनानी है तो काने मास्टर के यहाँ जाओ। उनके घर के सामने नाचो, वहां खुशी मनाओ। या शंभु बाबू के यहां जाओ जिन्होंने उन्हें निकाला था। मैं तो कोई नहीं हूं। मैं तो किसी अपेक्षा से न गया था परंतु जीवन में ऐसी चीजें होती है। जिनकी तुमने कभी उपेक्षा न की थी और न ही तुम जिनके योग्य थे। यह उन्ही में ऐ एक चीज है। कृपया इसके बारे में भूल जाओ।

पर मेरे पूर स्कूल जीवन में इसे कभी नहीं भुलाया गया। मुझे कभी भी किसी दूसरे बच्चे की तरह स्वीकार नहीं किया गया। निशचित ही स्कूल में मुझे कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। नब्बे प्रतिशत तो मैं गैर-हाजिर रहता था। और कभी-कभी ही अपने कुछ कारणों से मैं वहां दिखाई देता था। पर क्लास में हाजिर होने के लिए नहीं।

मैं बहुत चीजें सीख रहा था, पर स्कूल में नहीं। मैं अजीब-अजीब बातें सीख रहा था। मेरे शौक भी विचित्र थे। उदाहरण के लिए, मैं सांप को पकड़ना सीख रहा था। उन दिनों सँपेरे गांव में बहुत सुंदर-सुदंर सांप लेकर आते थे और जब वे बीन बजाते थे तो ये सांप नाचने लगते थे। यह देख कर मुझे बहुत की मजा आता था। इस दृश्य से मैं बहुत ही प्रभावित था।

वे सारे लोग अब खो गए है। साधारण सा कारण है कि वे सब मुसलमान थे। या तो वे पाकिस्तान चले गए या हिंदुओं द्वारा मार दिए और या फिर उन्होंने अपना धंधा बदल लिया, क्योंकि यह बहुत ही साफ तरह से जनता को बताना था। कि वे मुसलमान है। कोई हिंदू उस कला का उपयोग नहीं करता था।

मैं दिन भर किसी न किसी सँपेरे के पीछे घूमता रहता और उससे कहता कि मुझ बताओ कि तुम सांप कैसे पकड़ते हो। और धीरे-धीरे उन्हें समझ आ गया कि मैं उनमें से नहीं है। जिन्हें कुछ भी करने से रोका जा सके। उन्होंने आपस में बात की कि अगर हम उसे नहीं बताएँगे तो वह अपने आप कोशिश करेगा।

जब मैंने एक सँपेरे से कहा कि अगर तुम लोग मुझे यह नहीं बताओ गे तो मैं अपने आप ही सांप को पकड़ने की कोशिश करूंगा और अगर मैं मर गया तो मेरी मृत्यु के लिए तुम लोग जिम्मेवार होओ गे। वह मुझे जानता था क्योंकि कई दिनों से मैं उसे परेशान कर रहा था। उसने कहा कि रुको, मैं तुम्हें सिखाऊंगा।

वह मुझे शहर से बाहर ले गया और मुझे सांप पकड़ना और बीन की घुन पर उन्हें कैसे नचाना सिखाने लगा। प्राय: सब लोग यह समझते है कि बीन को सुन कर सांप मस्त होकर नाचने लगता है। लेकिन पहली बार मुझे इस सँपेरे ने बताया कि सांप के तो कान ही नहीं होते और वह सुन नहीं सकता।

उसने कहा: सत्य यह है कि सांप बिलकुल नहीं सुन सकते।

इस पर मैंने उससे यहीं पूछा कि अगर सांप सुन नहीं सकता तो तुम्हारे बीन बजाने पर वह डोलने क्यों लगता है।

उसने उतर दिया, ऐसा करने के लिए सांप को प्रशिक्षित किया जाता है। जब मैं बीन बजाता हूं तो मैं अपने सिर को डुलाता हुं। यह देख कर सांप भी डोलने लगता है। यहीं हमारी चालाकी है। जब तक वह डोलेगा नहीं तब तक उसे भूखा रहना पड़ेगा। इसलिए उससे डोलने का कारण बीन नहीं बल्कि भूख है।

मैंने इस सँपेरों से सीख लिया कि सांप को कैसे पकड़ा जाता है। पहली तो बात कि सत्तानवे प्रतिशत सांप तो ज़हरीले नहीं होते। उनको आसानी से पकड़ा जा सकता है। पकड़ने के समय वे काटते तो है किंतु उनके काटने से कोई मरता नहीं है। क्योंकि उनमें जहर ही नहीं होता। सत्तानवे प्रतिशत साँपों को जहर की ग्रंथि ही नहीं होती। और तीन प्रतिशत सांप जो विषैले है उनकी आदत यह है कि वह उतना गहरा ही काटते है जितना उनके विष को रखने के लिए जरूरी होता है—काटने के बाद वे उलटे जाते है। विषैली ग्रंथि उनके गले के भीतर उलटी होती है। इसलिए पहले वे घाव बनाते है, फिर उलटा होकर अपना विष उगलते है। उनके घाव बनने से पहले ही उनको पकड़ा जाए, सबसे पहले उनके मुहँ को ही जोर से पकड़ना चाहिए। अगर उसमें जरा सी भी ढील हुई तो वे घाव बना देंगे किंतु इससे भी घबड़ाना नहीं चाहिए। उसको इतना जोर से पकड़ना चाहिए कि वह उलट न सके। इस धाव से कोई नुकसान नहीं होता। इससे कोई नहीं मरता। थोडे ही दिन में यह घाव ठीक हो जाता है। बस यहीं मैं सीख रहा था। और यह सिर्फ एक उदाहरण है। यह सब सँपेरे मुसलमान थे और दु भाग्य से इन सबको भारत छोड़ कर जाना पडा। फिर कुछ जादूगर थे जो आश्चर्य जनक खेल दिखाते थे। मुझे स्कूल में इतिहास और भूगोल पढ़ाने वाले अध्यापक के पाठ से कही अधिक दिलचस्पी थी इन जादूगरों में। बस मैं तो इनके लिए दीवाना हो गया और दिन भर इनके पीछे लगा रहता।

जब तक वे मुझे उस जादू का रहस्य न बता देते मैं उनका पीछा न छोड़ता और मुझे यह जान कर बड़ा आश्चर्य होता कि उनका जादू जो इतना आश्चर्यजनक लगता है वह वास्तव में केवल हाथ की सफाई या हाथ की चालकी थी। पर जब तक तुम्हें ट्रिक का पता न हो तब तक तो उस बात की महानता को स्वीकार करना ही पड़ेगा। एक बार उसकी चालाकी का पता लग जाने के बाद ऐसे था जैसे गुब्बारे में से हवा निकलने लगी है। चह छोटे से छोटा होता है। सिर्फ ऐसे जैसे गुब्बारे में छेद हो गया हो। जल्दी ही तुम्हारे हाथ में सिर्फ रबर का छोटा सा टुकडा होगा और कुछ नहीं। वह बड़ा गुब्बारा सिर्फ गर्म हवा था। मैं अपने तरीके से यह सब बातें सीख रहा था। जो बाद में मेरे काम आने वाली थी। इसीलिए आज मैं यह कहा सकता हूं कि सत्य साई बाबा और उन जैसे लोग बहुत ही साधारण जादूगर है। किंतु यह जादूगर भी अब भारत में नहीं रहे क्योंकि यह भी मुसलमान थे। तुम्हें एक बात समझनी होगी की भारत में हजारों सालों से लोग एक खास तरह के ढांचे पर चल रहे है। व्यक्ति का काम-धंधा उसे अपने माता-पिता से मिलता है, वह परंपरा में मिलता है। उसे तुम बदल नहीं सकते। पाश्चात्य व्यक्ति को यह बात समझाना कठिन होगा। इसीलिए पूर्वी व्यक्ति को समझने में उन्हें इतनी दिक्कत होती है।

मैं सीख रहा था, पर स्कूल में नहीं,और इसका मुझे कोई पछतावा नहीं हुआ। मैंने सभी तरह के अजीबो गरीब लोगों से सीखा। तुम उन्हें स्कूल में शिक्षक का काम करते हुए नहीं पाओगें। वह संभव नहीं है। मैं जैन मुनियों, हिंदू साधुओं, और बौद्ध भिक्षुओं के साथ भी रहा। मैंने ऐसे सब लोगों के साथ संपर्क रखा जिनसे लोग दूर रहते है।

जैसे ही मुझे पता लगता कि मेरे लिए इस व्यक्ति से मिलना वर्जित है, मैं उससे मिलने के लिए उत्सुक हो जाता। वह जरूर बाहर का व्यक्ति होगा। क्योंकि वह समाज के बाहर का है इसलिए उससे मिलने के लिए रोका जाता है। और मैं ऐसे बाहर के लोगों को बहुत पंसद करता हूं।

मैं अंदर के लोगों को पसंद नहीं करता। उन्होंने बहुत नुकसान किया है और अब समय आ गया है कि उस खेल को बंद किया जाए। ये वर्जित लोग कुछ सनकी जरूर होते थे किंतु थे ये बहुत प्रतिभाशाली और बहुत सुंदर, बहुत प्यारे। महात्मा गांधी जैसी बुद्धिमता नहीं,वे तो भीतरी ही थे और नहीं तथाकथित बुद्धिजीवियों जैसी बुद्धि—ज्याँ पाल सात्र, बर्ट्रेंड रसल, कार्ल मार्क, और ह्यू बाग जैसे बुद्धिजीवियों जैसी बुद्धि। उनकी लिस्ट अंतहीन है।

पहला बुद्धिजीवी तो वह सांप था जिसने यह सब आरंभ किया—नहीं तो कोई मुसीबत खड़ी न होती। वह पहला बुद्धिजीवी था। मैं उसको शैतान हीं कहता—मैं तो तुम लोगों को शैतान कहता हूं। इस शब्द को मैंने जो अर्थ दिया है वह तुम्हारी समझ में नहीं आएगा। मेरे लिए डे विल का अर्थ है: डिवइन यह संस्कृत के मूल शब्द ''देव'' से बना है। इसका अर्थ है: ''दिव्य''। इसीलिए मैं तुम लोगों को डे विल कहता हूं।

परंतु वह सांप अवश्य बुद्धिजीवी था। और उसने बुद्धिजीवियों जैसी ही चालाकी की। उसने उस औरत को कुछ खरीदने के लिए उस समय राज़ी कर लिया जब उसका पति दफ्तर गया हुआ था या कहीं और क्योंकि आफिस तो बाद में बने। वह या तो शिकार करने गया होगा या मछली पकड़ने या कुछ और कर रहा होगा। कम से कम किसी के साथ छेड़खानी तो नहीं कर रहा होगा इतना तो पक्का है। क्योंकि उस समय दूसरा कोई तो था ही नहीं जिसके साथ छेड़खानी कर सके। ये सब तो बाद की बातें है।

सांप ने उससे बहस करते हुए कहां: भगवान ने तुमसे कहा है कि जीवन के वृक्ष का फल मत खाना....ओर वह तो सिर्फ एक सेव का पेड़ था। कभी-कभी तो मैं सोचता हूं कि मुझसे अधिक पाप इस दुनियां में और कोई किसी ने नहीं किया,क्योंकि शायद मैं सबसे अधिक सेव खाता हूं। और बेचारे सेव तो इतने सीधे और इतने निर्दोष होते है। कि आश्चर्य होता है कि सेव को क्यों चुना गया—अब सेव ने परमात्मा का क्या बिगाडा था—मेरी समझ में नहीं आया कि सेव खाने के लिए क्यों मना किया गया।

हां, मैं यह कह सकता हूं कि ''सांप'' नाम का व्यक्ति बहुत बड़ा बुद्धिजीवी रहा होगा, क्योंकि उसने प्रमाणित कर दिया कि सेव खाना पाप है।

किंतु मेरे लिए तो बुद्धि मानी की बात नहीं है......

सत्र—47 स्कूल का हाथी फाटक और शरारत

मैं अपने प्राइमरी स्कूल की बात कर रहा था। मैं वहां कभी-कभार ही जाता था। मेरे न जाने से स्कूल के सब लोगों को बडी राहत मिलती थी और मैं भी उन्हें तकलीफ देना नहीं चाहता था। मैं तो उनको शत-प्रतिशत राहत देना चाहता था। क्योंकि मुझे भी उनमें बहुत प्रेम था—मेरा मतलब है लोगों से, वहां के अध्यापकों से,अन्य नौकरों से तथा मालियों से। कभी-कभी मैं उनसे मिलना चाहता था, खासकर जब तब मैं उनको को विशेष चीज दिखाना चाहता तो मैं वहां चला जाता। एक छोटा बच्चा चाहता है कि वह अपनी खास चीजें अपने प्रियजनों को दिखाए। किंतु ये चीजें खतरनाक भी होती थीं। अभी भी मुझे यह याद करके बहुत हंसी आती है।

उस दिन की याद मेरे मन में बिलकुल ताजा है। वह याद इस क्षण की ही प्रतीक्षा कर रही थी। शायद अब वह क्षण आ गया है जब दूसरों के साथ इस अनुभव के मजे को बांटा जा सकता है। यह घटनाओं का एक शृंखला है....

मैंने तब सांप पकड़ना नया-नया ही सीखा था। सांप बेचारे तो बहुत ही सीधे-सादे, सुंदर और अत्यंत जीवंत होते है। मेरी इस बात पर आपको तभी विश्वास हो सकता है अगर आपने कभी दो साँपों को प्रेम करते देखा होगा। तुम शायद सोचो कि सांप कैसे प्रेम करते है। मनुष्य कि तरह वे प्रेम को आयोजित नहीं करते—उनका प्रेम जब घट जाए तब घट जाए। और जब वे प्रेम में होते है तो उस समय वे ज्वाला की लपटों जैसे होते है। और मैं जिस कारण से यह कह रहा हूं वह आश्चर्य भरा है। क्योंकि उनमें हड्डी तो होती नहीं फिर भी एक दूसरे का चुंबन लेने के लिए वे सीधे खड़े हो जाते है। किस पर खड़े होते है। उनके पैर भी नहीं होते, वे अपनी पूंछ पर सीधे खड़े हो जाते है। अगर तुम दो साँपों को अपनी पूंछ पर खड़े एक-दूसरे का चुंबन करते देख लो तो तुम फिर कभी कोई होली वुड फिल्म देखने की चिंता न करोगे।

मैंने अभी-अभी साँपों को पकड़ना सीखा ही था और मुझे ज़हरीले और बिना जहर वाले सांप की पहचान भी हो गई थी। कुछ सांप तो बिलकुल ज़हरीले नहीं होते,उन्हें तो तुम एक तरह की मछली ही कह सकते हो। पानी में रहने वाले सांप तो बहुत ही सीधे-सादे होते है—मछली भी उससे अधिक चालाक होती है। पानी के पानी के सांप चालाक नहीं होते, मैंने सब तरह के साँपों को पकड़ा है इसलिए जब मैं कहता हूं तो यह सुनी-सुनाई बात नहीं है—मैं अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हूं।

तो मैंने उस दिन एक सांप पकड़ा। अब स्कूल जाने के लिए यह सही दिन था। अजीब बात है।....अन्यथा तो मैं अपनी दुनिया में इतना व्यस्त रहता था कि मूर्खतापूर्ण प्रश्न और उत्तर और फालतू के नक़्शों में समय खराब करने का समय ही न था। तब भी मैं देख सकता था कि सारे नक्शे मूर्खतापूर्ण है क्योंकि जमीन पर तो कोई विभाजन रेखाएं नहीं है। जिले की या नगरपालिका की। तो सारे देश बेकार की बकवास है। सब गोबर के है और वह भी वह पवित्र गोबर नहीं—अपवित्र गोबर, अन होली काऊ डंग। इस जैसा अगर कुछ भी है तो वह है राजनीति—अपवित्र और गोबर,दोनों साथ-साथ। ये सब काल्पनिक रेखाएं राजनीतिज्ञों द्वारा बनाई गई है।

मैं भूगोल पढ़ने में समय बरबाद नहीं करना चाहता था। मैं तो सच्चे भूगोल से परिचित हो रहा था—मैं तो कई-कई दिनों के लिए पहाड़ों में गायब हो जाता था। केवल मेरी नानी को मालूम होता था कि मैं वहां से कब आऊँगा। कई दिनों तक न तो मैं दिखाई देता, न सुनाई देता क्योंकि मैं वहां होता ही नहीं था। इससे शायद सिवाय मेरी नानी के बाकी सारे लोग बहुत खुश हो जाते, उनकी यह खुशी उचित ही थी। उनकी इस खुशी का करण तुम्हें बाद में मालूम हो जाएगा।

तो मैंने पहली बार सांप पकड़ा था, मेरी पहली सफलता था। स्वभावत: मैं तुरंत स्कूल पहुंचना चाहता था। मैंने यूनिफार्म पहनने की चिंता नहीं की। और किसी को अपेक्षा भी नहीं हो सकती थी। प्राइमरी स्कूल में भी मैं यूनिफार्म नहीं पहनता था। मैंने कहा था कि मैं यहां पर सीखने आया हूं। पढ़ने आया हूं नष्ट या बरबाद होने के लिए नहीं आया। अगर मैं कुछ सीख सकूं तो अच्छी बात है, लेकिन मैं आप लोगों को मुझे नष्ट नहीं करने दूँगा। ओर यूनिफार्म आपने चुना है किंतु आप लोगों को तो आकार और सौंदर्य की कोई जानकारी नहीं है, कोई पहचान नहीं है। मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता। अगर आपने यूनिफार्म पहना ने की मुझसे कोई जबरदस्ती की तो मैं भी आपके लिए मुसीबत खड़ी कर दूँगा।

उन्होंने कहा: यूनिफार्म बनवा कर तैयार रखो। जब स्कूल का इंस्पेक्टर निरीक्षण करने आए उस दिन इसे पहन कर आना। उस समय भी अगर तुम नहीं पहनोगे तो हम मुसीबत में पड़ जाएंगे। हम तुम्हें मुसीबत में नहीं डालना चाहते क्योंकि हम अपने लिए मुसीबत नहीं लेना चाहते। यह महंगा सौदा है।

मेरे अध्यापक ने कहा: तुम्हारे लिए मुसीबत खड़ी करना....हमें मालूम है कि काने मास्टर के साथ क्या हुआ था। ऐसा दूसरों के साथ भी हो सकता है। परंतु हम पर इतनी मेहरबानी करो कि एक यूनिफार्म बनवा कर तैयार रखो।

और तुम्हें यह जान कर आश्चर्य होगा कि मेरे स्कूल ने मेरा यूनिफार्म बनवाया। मुझे नहीं मालूम कि उसके पैसे किसने दिए। और न ही उसकी मुझे चिंता है। मैंने उसे अपने पास रख लिया। मुझे अच्छी तरह से मालूम था कि यह संयोग बिलकुल असंभव है कि जिस दिन मैं स्कूल जाऊँ उसी दिन इंस्पेक्टर भी वहां आए। यह संभव न था। ऐसा मैंने सोचा था, किंतु फिर भी मैंने वह यूनिफार्म रख लिया। देखने में वह सुदंर था: उन्होंने अपनी तरु से पूरी कोशिश की थी और उसे पहनने के लिए अब वे लोग मेरे साथ कोई जबरदस्ती नहीं कर रहे थे।

मैं तो सदा परदेशी ही रहा। अभी भी मेरे अपने लोगों के बीच भी तो मैं यूनिफार्म नहीं पहल रहा—मैं पहन ही नहीं सकता। उस यूनिफार्म को भी मैं नहीं पहन सकता जो मैनें स्वयं तुम लोगों के लिए चुना है। क्यों? उस दिन भी यहीं प्रश्न था। आज भी वही प्रश्न सामने है। मैं दूसरों के अनुरूप नहीं चल सकता। तुम इसे मेरी सनक समझ सकते हो, पर यह मेरी सनक नहीं है। यह तो अस्तित्व गत बात है। किंतु अभी हम उसकी चर्चा नहीं करेंगें क्योंकि फिर मैं जो तुम लोगों से बात कर रहा हूं। वह छूट जाएगी और दुबारा मैं उस विषय को नहीं उठाऊ गा।

मैंने अपना पहला सांप पकड़ा था, यह बहुत खुशी,आनंद की बात थी और सांप बहुत सुंदर था, उसे छूने से ही मुझे रोमांच होता था। इसे छूना वैसा नहीं था जैसा कि औपचारिकता वश—पति-पत्नी, बेटे या अपने दामाद को छूकर उन्हें आशीर्वाद तो दिया जाता है परंतु अपने भीतर उनके प्रति कोई भाव नहीं उठता। और अगर तुम अमरीका में हो तो जी चाहता है कि इस समय टी वी देखना चाहिए और अगर तुम इंग्लैंड में हो तो जी चाहता है कि क्रिकेट मैच या फुटबाल मैच देखना चाहिए। अपने-अपने ढंग से सब लोग सनकी होते है।

वह सांप प्लास्टिक सांप नहीं था। जिसे किसी दूकान से खरीद लिया गया हो। यह वास्तविक सांप था। प्लास्टिक का सांप भी वास्तविक दिखाई दे सकता है। लेकिन वह स्वास नहीं ले सकता। वह बेजान होता है। वहीं तो एक समस्या होती है। अन्यथा तो वह बढ़िया होता है। परमात्मा भी उससे अच्छा नहीं बना पाता। सिर्फ एक बात नहीं होती—श्वास। और सिर्फ एक चीज के लिए क्या शिकायत करनी। लेकिन वह एक बात ही तो सब कुछ है, वही तो विशेषता है। मैंने तो एक वास्तविक सांप पकड़ा था जो बहुत सुंदर और बहुत चालाक था। इसलिए उसे पकड़ने के लिए मुझे बहुत सोच-समझ से काम लेना पडा क्योंकि मैं उसे मारना नहीं चाहता था।

जो आदमी मुझे सांप पकडना सिखा रहा था वह साधारण सड़क पर जादू दिखाने वाला जादूगर था और भारत में उसको मदारी कहा जाता है। ये लोग सड़कों पर मुफ्त में ही अपने जादू क खेल दिखाया करते है। और अंत में देखने वाले खुश होकर अपनी इच्छानुसार थोड़े बहुत पैसे दे देते है। खेल के अंत में मदारी अपने रूमाल को जमीन पर बिछा कर कहता है। अब मेरे पेट के लिए मुझे कुछ मिलना चाहिए। देखने वाला कितना ही गरीब क्यों न हो, इस खेल से खुश होकर कुछ न कुछ तो दे ही देता है।

तो यह मदारी साधारण सा जादूगर था। पश्चिम में इस प्रकार के मदारी नहीं होते। पश्चिम में सड़क पर भीड़ जमा हो ही नहीं सकती, तुरंत ही पुलिस की कार आकर कहेगी कि तुम ट्रैफिक जाम कर रहे हो, और उन्हें भगा देगी।

भारत में तो ट्रैफिक जाम का प्रश्न ही नहीं उठता,याता-यात के कोई नियम ही नहीं है। तुम ठीक सड़क के बीच में चल सकते हो। शाब्दिक रूप से तुम मज्झम निकाय, मध्य मार्ग अपना सकते हो। तुम अमरीकी लोगों की तरह बिलकुल दाई और जा सकते हो या तुम चाहों तो बिलकुल बाई और चलन सकते हो। बिलकुल दाईं और चलना अमरीका का ढंग है और बिलकुल बाईं और चलना रूस का ढंग है। भारत में तो तुम जो चाहों चुन सकते हो या इन दोनों के बीच कहीं भी चल सकते हो। सारी सड़क ही तुम्हारी है। तुम चाहो तो बीच सड़क पर अपना घर बना सकते हो। तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि भारत की सड़को पर तो चाहो वह कर सकते हो। जिसकी कल्पना की जा सकती है और जिस की कलपना भी नहीं की जा सकती वह भी वहां पर कर सकते हो।

इस मदारीयों के तमाशे के कारण ट्रैफिक जाम हो जाता था। किंतु उन्हें कोन मना करता, क्योंकि वहां खड़ा सिपाही भी उस तमाशे का मजा ले रहा था। वह भी दूसरों की तरह ताली बजा रहा था। उस तमाशे के देखने के लिए सभी प्रकार के लोगों की भीड़ जमा हो जाती थी। और सारी सड़क को जाम कर देते थे। अब इस प्रकार के मदारी पश्चिम में तो नहीं रह सकते। वे बहुत ही प्यारे लोग है। बहुत सीधे-सादे और साधारण परंतु वे कुछ विशेष जानते है।

वह आदमी जो मुझे सिखा रहा था। उसने मुझे बताया ता कि ऐसे साँपों को नहीं पकड़ना चाहिए क्योंकि ये बहुत खतरनाक होते है।

मैंने उससे कहा: तुम्हारा काम हो गया, तुम अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो गए। मैं तो इन्हीं साँपों को पकडूं गा। ऐसा जीवंत, ऐसा सुंदर, ऐसा रंगीन सांप मैंने कभी नहीं देखा था। मैं अपने आप को रोक न सका। तब मैं छोटा सा बच्चा था। मैं जल्दी से जल्दी स्कूल पहुंच कर इस सांप को दिखाना चाहता था। वहां जो हुआ वह मैं बताना नहीं चाह रहा था, पर मैं बताऊंगा,क्योंकि मैं उसे फिर से देख सकता हूं।

पूरा स्कूल, जितने जो संभव थे उतने मेरे क्लास रूम में आ गए और बाकी लोग बाहर बरामदे में खड़े होकर दरवाज़ों और खिड़कियों में से झांक रहे थे। कुछ एक डर के मारे और भी दूर खड़े हुए थे कि कहीं सांप बाहर न निकल जाए। और यह लड़का पहले से ही मुसीबत खड़ी करता रहा है। और मेरी क्लास के तीस-चालीस लड़के तो डर के मारे चीख रहे थे। चिल्ला रहे थे और यह देख कर मुझे बड़ा मजा आ रहा था।

यह जान कर तुम्हें भी मजा आएगा और मुझे तो भरोसा ही नहीं आया, मेरे अध्यापक तो कुर्सी के ऊपर खड़े हो गए। आज भी मैं उन्हें कुर्सी पर खड़े होकर यह कहते देख सकता हूं। कि अरे, तुम जाओ—यहां से जाओ। हमें अकेला छोड़ दो। यहां से चले जाओ।

मैंने उनसे कहा: पहले आप नीचे उतरो।

यह सुनते ही वे चुप हो गए, क्योंकि इतने बड़े सांप के होते नीचे उतरना बहुत मुश्किल था। वह सांप छह या सात फीट लंबा था और मैं उसे एक झोले में डाल कर—उस झोले को घसीटते हुए लाया था। ताकि मैं उसे

सबके सामने अचानक खोल सकूं। एकाएक जब मैंने उसे खोल दिया तो तूफान आ गया। अध्यापक तो जंप करके कुर्सी पर खड़े हो गए। मुझे अपनी आंखों पर भरोसा नहीं आ रहा था। मैंने कहा: यह आश्चर्य कि बात है।

उन्होंने कहा: इसमें आश्चर्य कि क्या बात है।

मैंने कहा: आपका इस तरह जंप करके कुर्सी पर खड़े हो जाना। आप उसे तोड़ दोगे।

बच्चे पहले तो नहीं डरे लेकिन जब उन्होंने अध्यापक को इतना डरा देखा तो वे भी डर गए। देखते हो बच्चे कैसे मूर्ख और गलत लोगों से प्रभावित होते है। जब उन्होंने मुझे सांप के साथ अंदर आते देखा तो वह आह्लादित थे। ''अलेलुइया''। पर जब उन्होंने अध्यापक को अपनी कुर्सी पर खड़े देखा.....एक क्षण के लिए बिलकुल सन्नाटा छा गया। केवल वे अध्यापक ही चिल्ला रहे थे। बचाओ, बचाओ, हमारी मदद करो।

मैंने उनसे कहा: मुझे समझ नहीं आ रहा, सांप तो मेरे हाथ में है। खतरा तो मुझे है। आपको तो कोई खतरा नहीं है। आप तो अपनी कुर्सी पर खड़े है। बेचारा सांप तो आपसे बहुत दूर है। अच्छा होता अगर वह आपके नजदीक पहुच जाता। और आपसे कुछ बात कर पाता।

मैं तो अभी भी उन अध्यापक को और उनके सहमे हुए चेहरे को देख सकता हूं। इस अनुभव के बाद मुझे वे केवल एक बार ही मिले थे। तब तक मैं प्रोफेसर के पर को छोड़ चुका था। और भिखारी बन चुका था। हांलाकि मैंने कभी भीख नहीं मांगी। परंतु हूं तो मैं भिखारी ही—एक विशेष प्रकार का भिखारी जो भिक्षा नहीं मांगता। अब इसके लिए तुम्हें कोई खास शब्द खोजना पड़ेगा। मेरी स्थिति को ठीक अभिव्यक्ति करने वाला तो शायद कोई शब्द ही नहीं है—शायद किसी भी भाषा में नहीं है। इसका सीधा सा कारण है कि इससे पहले इस ढंग से जीने वाला कोई और हुआ ही नहीं। न कभी कोई और ऐसा हुआ है जो इस ढंग से रहा है। कि अपने पास कुछ न होते हुए भी ऐसे रहता हो जैसे सारी दुनिया पर उसकी मलकियत हो।

मुझे याद है उन्होंने कहा था कि मैं वह दिन भूल नहीं सकता जब तुम सांप को लेकर क्लास में आए थे। मुझे तो अभी भी वह सपनों में दिखाई देता है। मैं तो विश्वास ही नहीं कर सकता कि स्कूल का वह शैतान लड़का अब बुद्ध बन गया है। यह असंभव है।

मैंने कहा: आप बिलकुल ठीक कह रहे है, वह लड़का तो मर गया है और उसकी मृत्यु के बाद जो बच गया उसे आप बुद्ध कह सकते है। या कुछ और कहां जा सकता है। आप जैसा मुझे जानते थे अब मैं वैसा नहीं हूं। मुझे तो अपना वहीं ढंग पसंद है किंतु अब क्या किया जा सकता है। मैं तो मर गया हूं।

उन्होंने कहा: देखो, मैं इतनी गंभीरता से बोल रहा हूं और तुमको मजाक करने की सूझ रही है।

मैंने उनसे कहा: मैं अपनी पूरी कोशिश कर रहा हूं, पर केवल आपको ही वह प्रसंग याद नहीं आता,मुझे भी याद आती है। जब भी कोई बुरा दिन होता है या मौसम अच्छा नहीं होता या चाय अच्छी गरम नहीं होती या खाना अच्छा नहीं होता,ऐसा कुछ जैसे जहर देने के लिए बनाया गया हो। तब उससे फिर मैं प्रसन्न हो जाता हूं। हालांकि मैं मर चुका हूं पर इससे फिर भी मदद मिलती है। मैं आपका बहुत आभारी हूं।

मैं तो ऐसी हरकतों के लिए ही स्कूल जाता था। हां, वहां जाने के अवसर कम मिलते थे। सब लोगों का भला इसी में था कि मैं वहां रोज न जाऊँ। मेरे वहां न जाने में ही वह खुश थे। तुम्हें यह जान कर हैरानी होगी कि वहां का जो चपरासी था, पूयन था—एक ऐसा व्यक्ति था जो मुझे देखे बिना दुःखी हो जाता था। बाकी सब इससे बहुत खुश होते थे। वह मुझे बहुत प्रेम करता था। उससे अधिक बूढा आदमी मैंने आज तक नहीं देखा। वह शायद नब्बे साल या उससे भी अधिक उम्र का था। शायद उसने शताब्दी पूरी कर ली थी, शायद इससे भी अधिक रहा हो। किंतु वह अपनी उम्र जितनी कम हो सके उतनी कम करके बताता था क्योंकि उम्र से अधिक हो जाने से उसे नौकरी से रिटायर कर दिया जाता।

भारत में किसी के पास जन्म-प्रमाणपत्र तो होता नहीं है। सौ बरस पहले तो इसका प्रचलन ही नहीं था। जन्म तिथि का रिकार्ड ही नहीं रखा जाता था। मैंने ऐसा कोई आदमी नहीं देखा जो इतना वृद्ध होते हुए भी इतना दिलचस्प हो।

उस सारे स्कूल में वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसका मैं आदर करता था। वह बेचारा गरीब नौकर था इसलिए दूसरे लोग तो उसकी और ध्यान ही नहीं देते थे। बस उसके कारण मैं कभी-कभी स्कूल चला जाता था। केवल उससे मिलने के लिए।

हाथी-फाटक के पास ही उसकी कोठरी थी। उस फाटक को खोलना और बंद करना उसका काम था। उसकी कोठरी के सामने ही एक घंटा टँगा हुआ था। हर चालीस मिनट के बाद उसे बजाता था। हर रोज दो बार दस-दस मिनट की आधी छुटटी होती थी—नाश्ता करने के लिए और दोपहर को खाने के लिए एक घंटे की छुटटी होती थी। उसका यही काम था—घंटा बजाना। अन्यथा वह बिलकुल खाली होता था। और वह इतना प्यारा वृद्ध आदमी था।

मैं जब उसके कमरे में जाता तो वह दरवाजा बंद कर देता ताकि कोई दूसरा आदमी अंदर न आ जाए। या में जल्दी से भाग न जाऊँ। तब वह मुझसे पूछता, अब बताओ कि पिछली बार जब हम मिले थे तो उसके बाद तुमने क्या–क्या किया। और वह इतना प्यारा वृद्ध व्यक्ति था। उसका चेहरा झुरियों से भरा हुआ था। जब वह मुझसे बात करता तो मैं उसके चेहरे की रेखाओं को गिने कि कोशिश करता, उसके माथे की रेखाओं को देखता। उसके सर पर कोई बाल नहीं था—सब सफाचट—केवल माथा ही माथा था। उसका चेहरा झुर्रियां से भरा था। परंतु उन असंख्य झुर्रियां और रेखाओं के पीछे छिपा हुआ था गहन प्रेम और गहरी समझ का व्यक्ति।

अगर मैं कई दिन तक स्कूल न जाता तो यह निश्चित था कि वह मुझे खोजता हुआ मेरे घर पहुंच जाता। इसका मतलब यह था कि मेरे पिताजी को सब कुछ मालूम हो जाता—यहीं कि मैं कभी स्कूल नहीं जाता फिर भी हाज़िरी लगती रहती। ताकि मैं कोई उपद्रव करू। मैंने स्कूल बालों से समझोता भी यही किया था कि मैं बाहर ही रहूंगा, किंतु मेरी उपस्थिति का क्या होगा। मेरे पिताजी को कौन जवाब देगा।

उन्होंने कहा: उपस्थित की तो तुम चिंता ही मत करो। हम तुम्हें शत-प्रतिशत उपस्थिति दे देंगे—छुटटी वाले दिन भी।

इसलिए मैं सदा इस बात का ध्यान रखता था कि मैं उससे मिलने उसकी कोठरी में आता था। ताकि वह मेरी खोज में मेरे घर न पहुंच जाए। किसी तरह—फिर मुझे इस शब्द का उपयोग करना होगा ''सिन्क्रॉनिसिटी'' —उसे पता चल जाता था कि कब मैं आ रहा हूं। उसके साथ मेरा आंतरिक संबंध इतना गहरा था। मुझे पहले से ही पता लग जाता था कि अगर आज मैं नहीं गया तो वह यह जानने आज आ जाएगा कि क्या हुआ। और यह मामला बिलकुल गणित की तरह से हो गया था।

सुबह ही सुबह नींद से उठते ही मेरे भीतर से आवाज आती, अगर आज मन्नू लाल (मन्नू लाल उसका नाम था) से मिलने नहीं गया तो वह शाम तक तुम्हारे घर पहुंच जाएगा। इससे पहले कि ऐसा हो, उससे मिलने चले जाओ।

मैं सदा इस आंतरिक आवाज को सुनता । किंतु सिर्फ एक बार मैंने उस आवाज की बात नहीं मानी, उसे अनसुना कर दिया। मैं इस क्रम से थोड़ा थक गया था। एक तरह की विवशता सी हो गई थी। डर के मारे मुझे जाना ही पड़ता कि कहीं वह मेरे पिता को यह न बता दे कि मैं कई दिनों से स्कूल नहीं गया। और तब तूफान उठ खड़ा होता। मैने अपने आपसे कहा, नहीं आज तो मैं नहीं जाऊँगा, कुछ भी हो जाए मैं नहीं जाऊँगा। और मैं नहीं गया। बस थोड़ी देर बाद ही मैंने बूढे मन्नू लाल को आते दिखाई दिए। वह सौ साल का तो जरूर था किंतु

मालूम होता था। वह इतना पुरातन दिखता था। इतना प्राचीन दिखाई देता था कि तुम भरोसा ही नहीं करोगे इससे प्राचीन कुछ भी नहीं देखा। मैंने बहुत अजायबघर देखे है, सब तरह के पुरातन संग्रह देखे है, पर मन्नू लाल से पुराना कभी कुछ नहीं देखा।

मैंने उसे आते हुए देखा। तो मैं भागा-भागा उसके पास बाहर ही पहुंच गया ताकि वह मेरे घर में प्रवेश न करे। उसने कहा: मुझे यहां आना पडा क्योंकि तुम मुझसे मिलने आए ही नहीं। और तुम जानते हो कि मैं इतना बूढा हूं—कभी भी मर सकता हूं। कौन जाना है। तुम्हें एक बार देखना चाहता था। तुम्हें सदा की तरह जीवंत और स्वस्थ देख कर मुझे शांति मिल गई है। इतना कह कर वह मुझे आशीर्वाद देते हुए वापस मूड कर चला गया। मुझे अभी भी उसकी पीठ दिखाई दे रही है। वह चपरासी की खाकी रंग की अजीब वर्दी पहले हुए था। अब वह समझाना मेरे लिए बहुत ही कठिन होगा। पहला तो वह रंग—खाकी। खाकी रंग की वर्दी पहने हुए था। उसके पैरों में नीचे से लेकर घुटनों तक पट्टा बंधा हुआ था। वह भी खाकी, ताकि वह सजग और सावधान रहे।

यह बड़ी अजीब बात है पर पोशाक से आदमी का व्यवहार बदल जाता है। उदाहरण के लिए,आज युवक जैसी तंग और चुस्त पोशाक या पेंट पहन रहे है। उसे देख कर तो हैरानी होती है। कि इतनी चुस्त है कि कैसे वे उसमें घुस सकते है। मैं तो कभी नहीं पहन सका। मान लो कि अगर उसके भीतर ही उनका जन्म हुआ तो अब सवाल यह उठता है कि वह बाहर कैसे निकलेंगे। पर ये तो दार्शनिक प्रश्न है। उनको इसकी चिंता नहीं है। वे तो पॉप गाने गाते है और पॉप कॉर्न खाते है। अब वे करें भी तो क्या करें।

पर पोशाक से व्यक्ति का व्यवहार अवश्य बदल जाता है। सैनिक ढीली वर्दी नहीं पहल सकते—नहीं तो वे लड़ नहीं सकेंगे। जब इतनी तंग और चुस्त पोशाक पहनी जाएगी तो आदमी खुद ही लड़ाई करना चाहेगा। आकारण ही गुस्सा आएगा, झुंझलाहट होगी,यह वस्तुगत नहीं होगा, किसी खास व्यक्ति की तरफ नहीं होगा, यह सिर्फ आत्मगत होगा। तुम सिर्फ उससे बाहर निकलना चाहोगे। फिर क्या करो, अच्छी तरह से झगडा करो। झगडा या लड़ाई करने के बाद ही कुछ राहत मिलेगी। उसके बाद ही वे तंग कपड़े कुछ ढीले हो जाएंगे।

इसीलिए तो हर प्रेमी प्रेम करने से पहले झगड़ा करता है, तर्क करता है और तकिए फेंकता है। तब अंत में सुखांत नाटक बन जाता है। काश, प्रारंभ से ही लोग प्रेम पूर्ण हो सकें, पर नहीं उनकी अपनी ही अकड़, उस अकड़ के कारण ही लोग आरंभ में ही प्रेमपूर्ण नहीं हो पाते।

मेरे लिए केवल तीन मिनट......

अब समाप्त हुआ, अच्छा।

सत्र—48 महर्षि महेश योगियों सबसे अधिक चालाक

मैं तुम लोगों को यह बता रहा था कि मैं स्कूल नियमित रूप से हाजिरी लगाने नहीं जाता था। मैं तो वहां कभी-कभी जाता था। और वह भी उस समय जब मुझे कोई शैतानी सूझती,शरारत और शैतानी करने में मुझे बड़ा मजा आता था और एक प्रकार से यही आरंभ था मेरे शेष जीवन के ढंग का।

मैंने कभी कुछ गंभीरता से नहीं लिया। अभी भी ऐसा ही हूं। अगर मुझे छूट दी जाए तो मैं तो अपनी मृत्यु पर भी खूब हंसूगा। परंतु भारत में पिछले पच्चीस वर्ष तक मुझे गंभीर आदमी का पार्ट अदा करना पडा—यह अभिनय कुछ लंबा ही चला। थोड़ा मुश्किल था किंतु मैंने यह अभिनय इस प्रकार किया कि मैं तो गंभीर बना रहा परंतु मैंने अपने आस पास के लोगों को गंभीर नहीं होने दिया। इसी से मैंने अपने आपको बचा लिया। अन्यथा ये गंभीर लोग तो ज़हरीले साँपों से भी अधिक ज़हरीले होते है।

तुम साँपों को पकड़ सकते हो किंतु ये गंभीर लोग तुम्हें पकड़ लेते है। इनसे तो सदा दूर ही रहना चाहिए। किंतु मैं सौभाग्यशाली हूं क्योंकि कोई गंभीर व्यक्ति मेरे नजदीक नहीं आएगा। मैंने बहुत जल्दी अपने आप को बदनाम कर लिया और यह उस समय किया जब मुझे अनुमान ही नहीं था कि इसका नतीजा क्या होगा।

जब वे मुझे स्कूल में आते देखते तो तुरंत सबको सावधान कर दिया जाता कि कहीं मैं कुछ गड़बड़ न कर दूं, उनके लिए कोई खतरा न खतरा न खड़ा कर दूँ। मैं तो मजाक करता था, किंतु उन्हें वह मजाक खतरनाक दिखाई देते थे। मेरे लिए तो सारा जीवन ही मजाक है।

उदाहरण के लिए मेरे प्राइमरी स्कूल की इस दूसरी घटना को ही देखो। मैं प्राइमरी स्कूल की अंतिम चौथी क्लास में रहा होऊंगा। मुझे कभी फेल नहीं किया गया, क्योंकि कोई भी अध्यापक अपनी क्लास में मुझे दुबारा नहीं चाहता था। स्वभावत: हर अध्यापक की यही कोशिश होती थी कि मैं जल्दी से जल्दी उसकी क्लास से अगली क्लास में चला जाऊँ जिससे इस मुसीबत से उसका छुटकारा हो जाए। कम से कम एक साल के लिए कोई दूसरा इस मुसीबत को झेले। वे सब मुझ ''एक मुसीबत'' समझते थे। मुझे समझ में नहीं आता था। कि मैं दूसरों के लिए क्या मुसीबत खड़ी करता था।

मैं तुम्हें दूसरी घटना का उदाहरण देने जा रहा हूं। मेरे शहर से रेलवे स्टेशन दो या तीन मील की दूरी पर था। और उस स्टेशन के पार छह मील की दूरी पर चीचली नाम का एक छोटा सा गांव था। हां, याद आया, महर्षि महेश योगी का जन्म इसी चीचली गांव में हुआ था। किंतु उन्होंने कभी इसका उल्लेख नहीं किया। इसके कुछ कारण है। वे भारत के शूद्र मानी गई जाति के है। भारत में कोई भी किसी से उसका गांव, जाति और पेशे के बारे में पूछ सकता है। इस अर्थ में भारतीय बहुत ही असंस्कृत हैं। वह तुम्हें रास्ते पर रोक कर पूछ सकते है कि तुम किस जाति के हो। इन बातों को पूछने में वे जरा भी झिझकते नहीं है।

महर्षि महेश योगी स्टेशन के उस पास पैदा हुए थे। क्योंकि वे शूद्र है, इसलिए वे अपने गांव का नाम नहीं लेते। क्योंकि वह गांव शुर्दो का है। भारत में यह सबसे नीची जाति मानी जाती है। वे अपने कुल का नाम भी नहीं बताते। क्योंकि उससे भी तुरंत पता चल जाएगा कि वह कौन है।

उनका पूरा नाम है, महेश कुमार श्रीवास्तव। भारत में श्रीवास्तव उपनाम उनके सब दिखावे को खत्म कर देगा। और उससे सभी जगह असर आएगा। वे भारत की किसी भी प्राचीन परंपरा में दीक्षित संन्यासी नहीं है। भारत में संन्यास की केवल दस परंपरा प्रचलित है। मैं उन सबको नष्ट करने का प्रयास करता रहा हूं। इसी से वे सब नाराज है।

संन्यासियों कि ये दस जातियां मानी जाती है। महर्षि महेश योगी संन्यासी नहीं हो सकते थे। क्योंकि वे शूद्र को दीक्षित नहीं किया जा सकता। इसीलिए वे अपने नाम के साथ स्वामी नहीं लिख सकते। किसी ने उनको यह नाम दिया ही नहीं। प्राचीन हिंदू-संन्यास की दस पद्धतियों के अनुसार वे अपने नाम के साथ,भारती, सरस्वती, गिरि आदि नहीं लिख सकते, क्योंकि इनमें से किसी भी संन्यास पद्धति में वे दीक्षित नहीं है। इसलिए वे स्वयं ही अपने नाम के साथ योगी जोड़ दिया है जिसका कोई अर्थ नहीं है। जो लोग शीर्षासान करने के प्रयास में बार-बार गिरते है वह अवश्य अपने आप को योगी कह सकते है—इसमें किसी को कोई आपति नहीं हो सकती। एक शूद्र योगी हो सकता है। स्वामी के स्थान पर उन्होने महर्षि लिख दिया है। भारत में संन्यासी के नाम के साथ अगर स्वामी न हो तो लोगों को शंका होती है। कि कुछ गलत है। इसलिए उसकी जगह भरने के लिए तुम्हे कुछ और लिखना होता है।

स्वामी की पूर्ति के लिए इन्होंने महर्षि का आविष्कार कर लिया। किंतु ये तो .ऋषि भी नहीं है। ऋषि का अर्थ होता है: दर्शक और महार्षि का अर्थ हाता है: महान दर्शक। इनको तो नजदीक से भी कुछ दिखाई नहीं देता। जब इनसे कोई सार्थक प्रश्न पूछा जात है तो उसके उत्तर में ये केवल गिगिल करते है, खी-खी करके हंसने लगते है। इनको तो स्वामी गिलला नंद कहना चाहिए। वह एकदम फिट होगा। इनकी यह हंसी स्वभाविक नहीं है। यह तो लोगो के प्रश्नों से बचने की एक तरकीब है। इसकी आड़ में वे उत्तर देने से बच जाते है। क्योंकि वे किसी प्रश्न का उत्तर दे ही नहीं सकते।

संयोगवश इनसे मेरी मुलाकात पहल गाम में हुई। वे वहां पर एक ध्यान-शिविर ले रहे थे और मैं भी ध्यान-शिविर ले रहा था। स्वभावत: उनके और मेरे लोग आपस में मिलते रहते थे। इन लोगों ने पहले तो महर्षि महेश योगी को मेरे शिविर में लाने की कोशिश की। किंतु उन्होंने अनेक प्रकार के बहाने बना कर की उनके पास समय नहीं है। चाहता तो हूं पर संभव नहीं है। इस प्रस्ताव को टाल दिया। परंतु साथ ही यह सुझाव भी दिया कि मैं उनके शिविर में जाकर उनके मंच पर उनसे बात करूं। और लोग यह मान गए।

और जब उन्होंने मुझे यह बताया तो मैंने उनसे कहा: तुम लोगों ने बड़ी बेवकूफी की है, अब मुझे अनावश्यक मुश्किल में डाल रहे हो। प्रश्नों का अत्तर तो मैं दे दूँगा किंतु उनके लोगों के सामने उनकी आलोचना करना ठीक नहीं लगता। अतिथि बन कर मेजबान पर प्रहार करना उचित नहीं है खासकर उनके लोगों के सामने। किंतु मैं भी अपनी आदत से विवश हूं। उनको देखते ही उनकी धुनाई शुरू कर देता हूं। अपने आप को रोकना चाहूं तो भी नहीं रूक सकता।

इन लोगों ने कहा: लेकिन हमने तो वादा कर दिया है।

मैंने कहा: अच्छा, तो ठीक है। मैं वहां जाने को तैयार हूं। केवल दो मिनट का रास्ता था। कार में बैठते ही तुरंत पहुंच जाते थे। इसलिए मैं वहां जाने के लिए मान गया।

मैं वहां गया और ठीक जैसे मैंने सोचा था वे वहां पर नहीं थे। किंतु मैं कहां किसी बात की फ़िकर करता हूं। मैंने शिविर शुरू कर दिया—और यह उनका शिविर था। वे तो वहां थे नहीं। वे मुझसे बचने की कोशिश कर रहे थे। किसी ने उनको जरूर बता दिया होगा। क्योंकि वे नजदीक के एक होटल में ठहरे हुए थे। उन्होंने अपने कमरे में से मेरी बात को सुन लिया होगा। कि मैं क्या कह रहा हूं। मैंने तो उनकी अच्छी धुनाई शुरू कर दी। क्योंकि जब मैंने देखा कि वे तो वहां नहीं है। तो मैं जितनी चाहूं उतनी पिटाई कर सकता हूं। और इसका मजा ले सकता हूं। किंतु शायद मैंने इतने जो से उनकी पिटाई की कि वह अधिक देर तक अपने को छिपा न सके और वे वहां पर खी-खी हंसते हुए पहुंच गए।

मैंने कहा: बंद करो यह खी-खी। इस प्रकार दाँत निकाल कर हंसना अमरीका के टेलीविजन पर अच्छा लगता होगा। लेकिन यहां पर मेरे साथ यह सब नहीं चलेगा। और उनकी मुस्कान गायब हो गई। वे गुस्से में लाल-पीले हो गए। जैसे उनकी हंसी तो एक प्रकार का पर्दा थी जिसके पीछे वे बहुत कुछ छिपाए हुए थे। जो नहीं होना चाहिए।

स्वभावत: से सुन कर वे बौखला गए और उन्होंने कहा: मुझे बहुत काम है। मैं माफी चाहता हूं।

मैंने कहा: इसकी भी कोई जरूरत नहीं हे। जहां तक मुझे मालूम है आप तो यहां आए ही नहीं। आप तो गलत कारण से यहां आए है। और मेरा उससे कुछ लेना-देना नहीं है। पर याद रखिए मेरे पास तो बहुत समय है।

तब मैंने उनकी अच्छी तरह से खबर ली, क्योंकि मुझे मालूम था कि वे अपने होटल के कमरे में वापस चले गए है। खिड़की में से झाँकता हुआ उनका चेहरा मुझे दिखाई दे रहा था। मैंने उनके लोगों से कहा: देखो, यह आदमी कहता है कि उसे और बहुत काम है। क्या यहीं काम है उसका, खिड़की में से किसी ओर काम को देखना। अच्छा होता अगर वे अपने आप को छिपाए रखते । वैसे ही जैसे अपनी खी-खी में अपने को छिपाए रखते है।

सभी तथाकथित धामिर्क गुरूओं में से महर्षि महेश योगी सबसे अधिक चालाक है। चालाकी अपना काम खूब कर लेती हे। चालाकी जैसा कुछ और सफल नहीं होता। अगर चालाकी सफल नहीं होती तो इसकी मतलब सिर्फ यह है कि तुम अपने से अधिक चालाक आदमी से हार गए हो। पर फिर भी चालाकी ही जीतती है।

वे अपने गांव का नाम कभी नहीं बताते थे। मुझे वह याद आ गया कयोंकि मैं एक घटना के बारे में आपको बताना चाहता था। उस प्रसंग का उनके गांव से कुछ संबंध है। और मेरी कहानी इधर-उधर सभी दिशाओं की और मुड़ती रहती है।

चीचली बहुत छोटी सी रियासत थी, जो ब्रिटिश राज्य का हिस्सा नहीं थी। रियासत तो छोटी थी, किंतु राजा तो राजा ही कहलाता था। उसके पास मुश्किल से एक हाथी था। हाथियों की संख्या से ही तो राज का बड़प्पन आंका जाता था। मैं तुम लोगों को हाथी फाटक के बारे में बता चुका हूं जो स्कूल के सामने था। एक दिन मैं चीचली के राजा के पास पहुंच गया और उससे कहा कि मुझे एक घंटे के लिए आपका हाथी चाहिए।

उसने कहा: क्या, लेकिन तुम हाथी को क्या करोगे।

मैंने कहा: मुझे आपके हाथी का कुछ नहीं करना, मैं तो उस फाटक के नाम को सार्थक करना चाहता हूं। आप भी उस स्कूल में पढ़े होंगे और आपने भी उस हाथी फाटक को देखा होगा।

उन्होंने कहा: हां, मेरे जमाने में तो वहीं एक प्राइमरी स्कूल था। अब तो ऐसे चार स्कूल है।

मैंने कहा: अब मैं चाहती हूं कि कम से कम एक बाद यह फाटक कुछ सम्मानित हो जाए। इसका नाम तो हाथी फाटक किंतु इसमें से तो कभी कोई गधा भी नहीं गुजरा।

उसने कहा: तुम बड़े अजीब लड़के हो। लेकिन मुझे तुम्हारा विचार बहुत अच्छा लगा।

उसके सैक्रेटरी ने कहा: आपको यह विचार कैसे अच्छा लगा। यह लड़का तो सनकी मालूम होता है।

मैंने कहा: आप दोनों ठीक है। मैं सनकी हूं या नहीं यह कहना मुश्किल है। इस समय तो मैं आपसे आपका हाथी मांगने आया हूं। मुझे वह केवल एक घंटे के लिए चाहिए। मैं उस पर सवार होकर स्कूल जाना चाहता हूं।

वे इस विचार से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने मुझसे कहा: अच्छा, तुम हाथी पर सवार होकर जाना और मैं तुम्हारे पीछे-पीछे अपनी पुरानी फोर्ड गाड़ी में बैठ कर आऊँगा। राजा के पास बहुत ही पुरानी—शायद टी-मॉडल वाली फोर्ड कार थी। मेरे खयाल से वह टी-मॉडल वाली थी जो कि सबसे पुरानी कार है। वे भी देखना चाहते थे कि वहां पर क्या होने वाला है।

फिर जब मैं हाथी पर सवार होकर शहर में से गुजरा तो लोग बड़े हैरान हुए और उत्सुकता वश जगह-जगह लोगों की भीड़ जमा हो गई और उन्होंने कहा: इस लड़के को यह हाथी कहां से मिल गया और कैसे मिल गया।

जब मैं स्कूल पहुंचा तो वहां पहले से ही बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित हो गई थी। भीड़ के कारण हाथी को भी दरवाजे में से अंदर जाने में मुश्किल हुई। बच्चे भी कूद रहे थे—मालूम है कहां, स्कूल की छत पर, वे चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे थे। वह आ गया, वह आ गया। हमें मालूम था इस बार वह भी कुछ ट्रिक करेगा। लेकिन यह तो बहुत बड़ी ट्रिक है।

हेड मास्टर ने चपरासी से घंटा बजा कर छुटटी कर देने को कहा। क्योंकि उसको डर लगा कि स्कूल की छत गिर न जाए। या बग़ीचा खराब न हो जाए। मेरे अध्यापक भी छत पर चढ़ हुऐ थे। इन सबको वहां पर देख कर मेरा भी जी चाहा कि मैं वहां जाकर देखूं कि क्या हो रहा है।

स्कूल को बंद कर दिया गया। हाथी उस फाटक में से गुजर कर स्कूल में प्रवेश कर चुका था और इस प्रकार उसने हाथी फाटक नाम को सार्थक कर दिया था। अब यह फाटक दूसरे फाटकों से कहा सकता था कि एक बार एक लड़का हाथी पर सवार होकर मेरे यहां से गुजरा था और इसे देखने के लिए लोगों की भीड़ जमा हो गई थी। फाटक तो यही कहेगा कि मुझे देखने के लिए।

राजा भी वहां आया और इतनी भीड़ को देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने मुझसे पूछ: तुमने इतनी जल्दी इतने लोगों को कैसे जमा कर लिया।

मैंने कहा कि मैंने तो कुछ भी नहीं किया। स्कूल में मेरा प्रवेश ही काफी था। तुम्हारे हाथी के कारण ऐसा नहीं हुआ। अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास न हो राह हो तो कल तुम स्वयं हाथी पर सवार होकर देख सकते हो। तुम्हें देखने को एक आदमी भी नहीं आयेगा।

उसने कहा: मैं बुद्धू नहीं बनना चाहता। लोग वहां पर जमा हों या न हों किंतु इतना तो मुझे मालुम है कि उस प्राइमरी स्कूल के सामने अगर मैं अपने हाथी पर सवार होकर जाऊँ तो मैं बहुत ही बेवकूफ दिखाई दूँगा। तुम तो उस स्कूल के हो। मैं तुम्हारे बारे में कई कहानियां सुन चुका हूं। अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम मुझसे मेरी फोर्ड गाड़ी कब मांगोंगे।

मैंने कहा: बस इंतजार करो। उन्होंने मुझे निमंत्रण दिया था। किंतु मैं दुबारा उनके पास गया ही नहीं। उस गाड़ी से भी मै अच्छा खासा तमाशा कर सकता था। क्योंकि सारे शहर में दूसरी कोई कार ही नहीं थी। और वह कार गजब की थी—हर बीस गज के बाद उसे धक्का देना पड़ता था। इसीलिए तो मैं वहां कभी नहीं गया।

मैंने राजा से कहा कि यह कार कैसी है।

उसने कहा: मैं तो एक छोटी सी रियासत का एक गरीब राजा हूं। मेरे पास एक कार तो होनी ही चाहिए, सो ऐसी कार से ही मुझे अपना काम चलाना पड़ता है।

वह कार बिलकुल बेकार थी। आज भी मुझे यह अचरज होता है। कि वह कार कुछ गज भी कैसे चलती थी। जब वह राजा उस कार में जाता था तो सारा शहर हंसता था। सब लोगों को उसे धक्का देना पड़ता था। मैंने उनसे कहा: अभी तो मुझे आपकी कार की जरूरत नहीं है किंतु कभी न कभी उसे लेने अवश्य आऊँगा। उसको बुरा न लगे इसलिए मैने उससे यह कहा। लेकिन आज भी मुझे वह कार याद है। अभी भी वह उस घर में होगी।

भारत में ऐसी पुरानी कारें बहुत सी मिल जाएंगी। क्या कहते हो तुम उन्हें? विंटेज, भारत सरकार को तो यह नियम बनाना पडा कि कोई विंटेज कार भारत के बाहर नहीं जाएगी। ऐसा नियम बनाने की जरूरत ही नहीं थी। वैसे ही ये कारें तो कहीं नहीं जा सकती। परंतु अमरीका के लोग इसको किसी भी कीमत पर खरीदने

के लिए तैयार हो जाते है। भारत में तो हर कार का पहला माडल बड़ी आसानी से मिल जाता है। बंबई और कलकता में ऐसी कई पुरातन कारें देखी जा सकती है। उन्हें देख कर यह विश्वास ही नहीं होता कि हम लोग बीसवीं सदी में रह रहे है।

एक बार संयोगवश रेलगाड़ी में मेरी मुलाकात इस राजा से हो गई। मुझे देखते ही उसने पूछा: तुम क्यों नहीं आए?

उस समय तो मेरी समझ में नहीं आया कि ''तुम क्यों नहीं आए'', से उसका तात्पर्य था।......इसलिए मैंने कहा: मुझे याद ही नहीं कि मुझे आना था।

उसने कहा: हां, यह कोई चालीस साल पहले की बात है। तुमने वादा किया था कि तुम मेरी कार को अपने स्कूल में ले जाओगे। तब मुझे याद आया। वे बिलकुल ठीक कह रहे थे।

मैं कहा: बहुत खूब।....क्योंकि उस समय वह राजा पिनचानबे वर्ष का रहा होगा और अभी तक उसकी याददाश्त इतनी अच्छी है। चालीस साल के बाद वह पूछ रहा था कि ''तुम क्यों नहीं आए।'' मैंने कहा: आप तो चमत्कार है।

मेरा खयाल है कि अगर हम दोनों दूसरे लोक में भी कहीं मिल जाते तो पहला प्रश्न होगा, तुम क्यों नहीं आए। क्योंकि मैंने फिर दुबारा यही वादा किया, अरे मैं तो भूल गया। माफ करना। मैं जरूर आऊँगा।

उसने पूछा: कब?

मैने कहा: चालीस साल के बाद आप इस कार के लिए मुझसे आने का दिन तय करना चाहते है। चालीस साल पहले भी यह नाम मात्र कि ही कार थी। चालीस साल बाद उसकी क्या हालत हो गई होगी।

उसने कहा: वह तो बिलकुल ठीक-ठाक है।

मैंने कहा: आपको तो उसके बारे में यही कहना चाहिए कि वह तो एकदम नहीं सी है—लगता है कि अभी-अभी शोरुम से आई है। लेकिन मैं अवश्य आऊँगा। कम से कम एक बार तो उसकी सवारी जरूर करना चाहूंगा। किंतु दुर्भाग्य से जब मैं वहां पहुंचा तब तक उस राजा की मृत्यु हो गई थी। किंतु मैने वह कार देखी। चालीस साल पहले वह कुछ गज तो चलती थी, अब तो वह भी मर गई है। अगर राजा जीवित होता तो वह भी इस मरी कार को देख कर उसे जीवित नहीं कर सकता था।

उसके पुराने नौकर न कहा: आप बहुत देर से आए। राजा मर गए है।

मैंने कहा: अच्छा हुआ, नहीं तो वह मुझे करा में बैठाता। और वह चलने वाली नही थी।

उसने का: आप ठीक ही कहते है। मैंने उसे चलते हुए कभी नहीं देखा। मैं पिछले पंद्रह साल से यहां पर काम कर रहा हूं और आज तक मैने इस कार को चलते नहीं देखा। इसको तो पोर्च में केवल यह दिखाने के लिए रखा गया है कि महाराज के पास कार है।

मैंने कहा: इसकी सवारी तो बड़ी अजीब है और मजेदार है। इधर से घूसों और उधर से निकल जाओ—इस तरह समय बिलकुल बरबाद नहीं होता।

आज भी मेरे जो अध्यापक जीवित है उन्हें मेरे स्कूल के दिनों की शैतानियां अच्छी तरह से याद है। जब मैं यूनिवसिर्टी में प्रथम आया तो वे विश्वास ही नहीं कर सके। क्योंकि उन्हें याद था कि मुझे कैसे एक क्लास से दूसरी क्लास में भेजा जाता है। यह तो उन लोगों की मुझ पर कृपा थी या उन्हें डर था। जिसके कारण वे मुझे परीक्षा में पास कर देते थे। इसलिए इनको यह विश्वास नहीं हो रहा था कि सारी युनिवर्सिटी में मैं कैसे प्रथम आ सकता हूं।

जब मैं घर आया तो सारे समाचार-पत्रों ने मेरा फोटो छाप कर कहा कि स्कूल के इस लड़के को सोने का मैडल मिला हे। अध्यापक तो आश्चर्यचकित रह गए। वे मुझे ऐसे देख रहे थे जैसे कि मैं किसी दूसरे ग्रह से आया हूं।

मैंने उनसे जब पूछा भी कि आप मुझे इस तरह से क्यों देख रहे है।

उन्होंने कहा: तुम्हें देख कर भी हमें विश्वास नहीं होता। जरूर तुमने कोई चालाकी की होगी।

मैंने कहा: हां,आप ठीक कहते है—ये एक प्रकार की चालाकी ही थी। उन लोगों के साथ तो मैं सदा शरारत ही कहता था।

एक बार एक आदमी एक घोड़े के साथ हमारे शहर आया। तुम लोगों को जर्मनी के एक बहुत प्रसिद्ध घोड़े के बारे में अवश्य सुना होगा, उसका नाम था—हैंस, देव गीत इस नाम का ठीक से उच्चारण क्या है। हैंस या हैंड्स?

हैंड्स, ओशो।

अच्छा, हैंड्स ही सही। उस समय यह हैंस सारी दूनिया में इतना प्रसिद्ध हो गया था कि बड़े गणितज्ञ, वैज्ञानिक, विचारक और दार्शनिक उसको देखने जाते थे। इसका कारण क्या था। मुझे मालूम है किंतु इस हैंस के बारे में बाद में पता चला। मेरे गांव में एक आदमी के पास एक घोड़ा था जो ठीक इसी प्रकार का था। मैंने उसको इतना परेशान किया कि आखिर तंग आकर उसने मुझे बता दिया कि वह कैसे अपने घोड़े से ये सब करवाता है।

उसका घोड़ा....पहले मुझे तुम्हें जर्मनी के इस प्रसिद्ध घोड़े के बारे में बताने दो ताकि तुम्हारी समझ में आ जाए कि बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी किस प्रकार एक घोड़े के बेवकूफ बनाए जा सकते है। यह हैंस नामक घोड़ा गणित के छोटे-छोटे प्रश्नों को हल कर देता था। जब उससे पूछा जाता कि दो और चार का जोड़ कितना होगा, तो वह अपने दाएं पैर से छह बार टाप देता।

सवाल तो छोटा सा ही था, किंतु घोड़ा जो कर रहा थ वह बड़ी हैरानी की बात थी। धीरे-धीरे वह बड़े अंको वाले सवाल भी हल करने लगा। किसी की समझ में न आया कि उसका रहस्य क्या है। वायोलाजिस्ट भी कहने लगे कि शायद घोड़े भी मनुष्य की तरह बुद्धिमान होते हे। केवल थोड़े से प्रशिक्षण की जरूरत होती है।

मैंने भी इस प्रकार का घोड़ा अपने गांव में देखा है। वह संसार-प्रसिद्ध नहीं था, सह एक गरीब आदमी का घोड़ा था। उस आदमी की आमदनी का एकमात्र साधन यहीं घोड़ा था। जो उसी प्रकार के करतब करता था। अपने इस घोड़े के साथ वह आदमी गांव-गांव घूमता था और लोग इससे तरह-तरह के प्रश्न पूछते थे। यह घोड़ा अपना सिर हिला कर कभी तो हाँ कहता और कभी नहीं कहता। वह जापानी लोगों के तरह सिर न हिला कर बाकी सारी दुनिया की तरह सिर हिलाता था। ये जापानी भी अजीब है।

जब मैं किसी जापानी को संन्यास देता तो यह समस्या खड़ी हो जाती। ये अपना सिर दूसरे ढंग से हिलाते है। जब ये अपने सिर को ऊपर-नीचे हिलाते है तो उनका मतलब होता है--नहीं। जब वे हां कहते है तो हम समझते है कि वह नहीं कह रहे है। मुझे यह अच्छी तरह से मालूम था, किंतु उनसे बात करते समय मैं भूल जाता था। और जब वे हां कहते तो मैं समझता कि वे नहीं कहा रहे है।

एक क्षण के लिए तो मैं स्तब्ध रह गया। जब मेरे अनुवादन नर्तन ने कहा: यक अपना सिर दूसरे ढंग से चलाते है। न वे कुछ सीखते है न आप ही सीखते है—दोनों के बीच मैं मुश्किल में पड़ जाता हूं। मुझे मालूम है कि ऐसा ही होने वाला है। मैं उन्हें याद दिलाने के लिए चिकोटी काटता हूं, धक्का मारता हूं। किंतु जब आप उनसे प्रश्न पूछते है तो...

वास्तव में अपनी आदत को बदलना आसान नहीं है। इस आदत के अनुसार ही हमारा व्यवहार होता है। केवल आदत जापानियों की ही यह आदत क्यों है। शायद ये किसी दूसरे प्रकार के बंदर के वंशज हैं। बस यहीं एक उपास है इसको समझाने का। आरंभ में दो बंदर थे। उनमें एक जापानी था।

मैं इस घोड़े वाले आदमी के पीछे रहता था। कि मुझे वह तरकीब बता दो। उसका घोड़ा भी वह सब कर देता था जो प्रसिद्ध घोड़ा हैंस करता था। यह आदमी बहुत गरीब था और उसकी आमदनी का सहारा यही घोड़ा था। आखिर मुझसे पीछा छुड़ाने के लिए उसने मुझे उसका रहस्य बता ही दिया। मैंने उससे वादा किया कि मैं यह बात किसी को नहीं बताऊंगा। परंतु तुम मुझे अपना यह घोड़ा केवल एक घंटे के लिए दे दो। मैं इसे अपने स्कूल ले जाना चाहता हूं। मैं किसी से कुछ भी नहीं कहूंगा।

उसने कहा: अच्छा वह किसी तरह मुझसे अपना पीछा छुड़ाना चाहता था। इसलिए उसने मेरी बात मान ली और मुझे उस घोड़े का रहस्य बता दिया। सीधी सी बात था कि उसने अपने घोड़े को इस प्रकार प्रशिक्षित किया था कि जब वह अपने सिर को एक और मोड़ता तो घोड़ा भी अपने सिर को उसी और मोड़ लेता था। लोग तो घोड़े की और देखते, घोड़े के मालिक की और किसी की निगाह न जाती। मालिक एक कोने में खड़ा रहता। वह अपने सिर को इतने धीरे से हिलाता कि देखने वाला कुछ भी न भांप पाता। किंतु घोड़े को पता चल जाता। जब मालिक अपना सर न हिलाता तो घोड़ा अपना सिर एक और से दूसरी और हिलाने लगता। उसको इसी प्रकार से प्रशिक्षित किया गया था। उसकी टाप का भी यही कारण था।

घोड़ा न तो गणित जानता था। न किसी अंक की उसे जानकारी थी। जब उससे पूछा जाता कि दो और दो का जोड़ कितना होता है। तो वह चार बार टाप देता और खड़ा हो जाता। असल में बात यह थी कि जब मालिक अपनी आंखे खोलें रखता तो घोड़ा टापता रहता ओर जब उसकी आंखें बंद हो जाती तो घोड़ा टापना बंध कर देता। बस यहीं रहस्य था उस प्रसिद्ध हैंस नामक घोड़े का। यह गरीब आदमी तो एक गरीब गांव का रहनेवाला था और हैंस तो बहुत प्रसिद्ध घोड़ा था—वह जर्मनी का था। जर्मनी के लोग जो काम करते है अच्छी तरह सोच-समझ कर। जर्मनी के एक गणितज्ञ ने तो तीन साल तक खोज की इन रहस्यों को जानने के लिए। जो मैं तुम्हें बता रहा हूं।

जब उस आदमी ने मुझे ये तरकीबें अच्छी तरह से बता दी तो मैं घोड़े को अपने स्कूल ले गया। मुझे देखते ही बच्चे तो खुशी से उछलने लगे और हेड मास्टर ने मुझसे कहा: ये अजीब-अजीब चीजें तुम्हें कहां से मिलती है। इस गांव में ही मैं रहता हूं लेकिन मुझे इस घोड़े के बारे में कुछ भी नहीं मालुम था।

मैंने कहा: इसके लिए तो पारखी आंखें चाहिए। हमेशा इसकी खोज में रहना पड़ता है। इसीलिए तो मैं स्कूल रोज नहीं आता।

उन्होंने कहा: यह तो अच्छा है। मत आओ, खोज तो करनी ही चाहिए। जब तुम स्कूल आते हो तो सारा काम ठप्प हो जाता है। क्योंकि तुम अपनी हरकतों से छात्रों का ध्यान भंग कर देते हो। मैंने तुम्हें दूसरों की तरह बैठे हुए अपना काम करते कभी नहीं देखा।

मैंने कहा: यह काम करने लायक ही नहीं है। अगर सब लोग इस काम को कर रहे है तो इसका मतलब ही यही है कि यह काम करने लायक नहीं है। इस स्कूल में हर व्यक्ति यही काम कर रहा है। भारत में सत्तर लाख गांव है और हर गांव में हर आदमी वही काम कर रहा है। वह करने योग्य ही नहीं है। मैं कुछ अलग ढंग का काम खोजता रहता हूं। ऐसा काम जो कोई नहीं करता और उसे आप लोगों के सामने मुफ्त में कर दिखाता हुं। मैं जब भी आता हूं, एक मेला सा लग जाता है। और आप इतनी उदासी से मेरी और देख रहे है। मैं तो ठीक-ठाक हूं।

उन्होंने कहा: मैं तुम्हारे लिए उदास नहीं हूं। मुझे तो अपना खयाल आता है। यहीं कि मुझे इस स्कूल का हेड मास्टर बनना पडा।

वे बुरे आदमी नहीं थे। मेरे प्राइमरी स्कूल के अंतिम दिन उनकी क्लास में गुज़रे। वह चौथी क्लास थी। उनके लिए मैंने कोई मुसीबत खड़ी नहीं की किंतु छोटी-मोटी तो पैदा होती ही रहती थी। उन पर मेरा कोई वश नहीं था। किंतु जब मैंने उनकी उदास आंखों को देखा तो मैने कहा: अब मैं कभी ऐसा कुछ नहीं लेकर आऊँगा जिससे स्कूल की शाति भंग हो। इसका मतलब यह है कि अंग मैं यहां पर आऊँगा ही नहीं। हां, मुझे अपना सर्टिफिकेट लेने एक बार आना पड़ेगा। अगर उसे आप चपरासी को दे दें तो मैं उससे ले लुंगा। और मैं स्कूल में दुबारा प्रवेश नहीं करूंगा।

और सचमुच मैं अपना सर्टिफिकेट लेने के लिए भी स्कूल के भीतर नहीं गया। मैंने चपरासी को लेने के लिए भेजा। उसने हेड मास्टर से कहा: वह लड़का कह रहा है कि जब स्कूल में मेरा आना पसंद नहीं किया जाता तो अब इस सर्टिफिकेट के लिए मैं क्यो आऊं। तुम ही उसको ले आओ और मुझे वह हाथी फाटक पर दे दो।

मैं उस चपरासी से बहुत प्रेम करता था। बहुत ही सुंदर आत्मा थी। उन्नीस सौ साठ में उसकी मृत्यु हुई। संयोग वश में उस समय वहीं था। मुझे ऐसा लगाता है कि मैं उसके कारण ही वहां पर था। ताकि मैं उसको मरता हुआ देख लू। बचपन से ही मृत्यु में मेरी दिलचस्पी बहुत गहरी रही है। मृत्यु का रहस्य जीवन के रहस्य से कहीं अधिक गहरा है।

मैं यह नहीं कहता कि तूम आत्महत्या कर लो किंतु यह याद रखो कि मृत्यु शत्रु नहीं है। और वह अंत भी नहीं है। यह कोई फिल्म नहीं है कि जिसका अंत समाप्त के साथ हो जाती है। कोई अंत नहीं है। जीवन की सरिता में जन्म और मृत्यु तो लहरें है। घटनाएं है। निश्चित ही मृत्यु जन्म से की अधिक समृद्ध है। जन्म तो खाली है। मृत्यु तो जीवन भर का अनुभव है। यह तो केवल तुम पर निर्भर करता है। कि तुम अपनी मृत्यु को कितना महत्वपूर्ण और अर्थपूर्ण बनाते हो। और यह इस पर निर्भर करता है कि तुमने जीवन को कितनी गहराई से जिया है। अधिक अम्र तक जीने से दीर्घायु होने से कोई फर्क नहीं पड़ता।

बहुत वर्षो के बाद मैं उस प्राइमरी स्कूल में गया। मुझे यह देख कर बड़ा दुःख और अचरज हुआ कि सब कुछ गायब हो गया था सिवाय उस हाथी फाटक के। वहां पर बहुत से पेड़ थे। वे सब काट दिए गए थे। बहुत से फूलों वाले पेड़ इधर-उधर लगे हुए थे किंतु अब एक भी दिखाई नहीं देता था। मैं तो वहां पर केवल उस बूढ़े चपरासी के लिए गया था जिसकी अभी-अभी मृतयु हुई थी। वह स्कूल के फाटक के पास रहता था। अच्छा होता अगर मैं वहां न जाता, क्योंकि मेरे मन में स्कूल की बड़ी सुंदर यादें थीं,और वे वैसी ही बनी रहती अगर मैं नहीं जाता। किंतु अब तो बहुत मुशिकल है। अब तो वह एक ऐसे पुराने चित्र के समान है जिसके सब रंग फीके पड़ गए है, रेखाएं भी गायब हो गई हैं—बस केवल फ्रेम ही बच गए है।

मेरे स्कूल के केवल एक अध्यापक मुझसे मिलने पूना आया थे। उस समय भी वे मुझसे बहुत प्यार करते थे किंतु मैने कभी यह सोचा भी नहीं था कि वे मुझसे मिलने पूना आएंगे। एक गरीब आदमी के लिए यह लंबा सफर बहुत महंगा है।

मैंने उनसे पूछा: आपको यहां आने की इच्छा कैसे हुई। किस बात से प्रेरित होकर यहां आना पडा।

उन्होंने कहा: मैं यह देखने आया हूं कि तुम्हारे बारे में गहरे में मैं जो सोचता था वह सच हुआ है या नहीं। मुझे सदा ऐसा लगता था कि बाहर से तुम जैसे दिखते हो वैसे वास्तव में तुम नहीं हो। तुम कुछ और ही हो।

मैंने कहा: लेकिन इसके बारे में आपने मुझसे पहले कभी नहीं कहा।

उन्होंने कहा: वास्तव में मुझे भी बहुत अजीब लग रहा था कि मैं किसी से यह कहूं कि तुम असल में वह नहीं हो जो तुम दिखाई दे रहे हो। इसलिए मैं चुप ही रहा। इसके बारे में किसी से कुछ नहीं कहां। मेरे मन में यह विचार बार-बार आता था। अब तो मैं बूढ़ा हो गया हूं। इसलिए मैं देखना चाहता था कि तुम्हारे बारे में मैं जो सोचता था वह सच हुआ या नहीं।

वह अध्यापक संन्यासी बन कर वापस गए। उन्होंने कहा: अब तो मैंने तुम्हें और तुम्हारे लोगों को देख लिया है। मैं बूढा हो गया हूं, अधिक दिन तक जीवित नहीं रहूंगा। इस उम्र में संन्यास लेकर मैं अपने जीवन को सार्थक कर देना चाहता हूं।

मेरे लिए केवल दस मिनट.......

सत्र—49 नीम का पेड़ और भूत

अच्छा, मैं उस आदमी को याद करने की कोशिश कर रहा था। मुझे उसका चेहरा तो दिखाई दे रहा है। किंतु शायद मैंने उसका नाम जानने की कभी कोशिश नहीं की। इसलिए मुझे वह याद नहीं है। मैं तुम्हें वह सारी कहानी सुनाता हूं।

जब मेरी नानी ने देखा कि मुझे स्कूल भेजने से कोई फायदा नहीं । मैं पढ़ता-वढ़ाता नहीं हूं, केवल शैतानी ही करता हूं तो उन्होने मेरे माता-पिता को यह समझाने की कोशिश की कि वह लड़का दूसरे लड़कों के लिए एक मुसीबत बन गया है। लेकिन कोई उनकी बात सुनने को तैयार ही न था। यह उस समय की बात है जब मैंने हाईस्कूल में प्रवेश किया था। उन्होंने कहा: यह रोज कोई न कोई शरारत करता है। यह स्कूल भी कभी-कभी जाता है, रोज नहीं। इस प्रकार यह क्या सीखेगा। शिक्षा प्राप्त करने के लिए इसके पास समय ही नहीं है। क्योंकि यह सदा अपने लिए और दूसरों के लिए कोई न कोई मुसीबत खड़ी कर देता है।

नानी ने भी मुझे बुनियादी शिक्षा देने की कोशिश की। परंतु अंत में वे सदा इस निर्णय पर पहुंची कि मेरे लिए एक प्राइवेट मास्टर रखा जाए जो मुझे अच्छी तरह से पढ़ा सके। किंतु मेरे परिवार का कोई भी आदमी उसके इस प्रस्ताव से सहमत नहीं था। आज भी उस शहर में शायद ही कभी कोई प्राइवेट मास्टर रखता हो। सारा परिवार यही कह रहा था कि जब शिक्षा के लिए स्कूल है तो प्राइवेट मास्टर की क्या जरूरत है।

नानी ने कहा: यह लड़का दूसरों जैसा नहीं है। ऐसा इसलिए नहीं है कि मैं उससे प्रेम करती हूं, बल्कि इसलिए कि यह सही मायने में उपद्रवी है। मैं इसके साथ वर्षो से रह रही हूं। और मुझे मालूम है कि यह शैतानी किए बिना रह नहीं सकता। सज़ा पाने से भी नहीं डरता। किंतु मेरे माता-पिता, और मेरे पिता के भाई-बहन और परिवार के अन्य लोग नानी के इस प्रस्ताव से सहमत न हुए। और उन सबको बड़ा अचरज हुआ जब मैं इस बात को मान गया।

मैंने कहा: नानी बिलकुल ठीक है। ऐसे घटिया स्कूल में मैं कुछ नहीं सीख सकूंगा। उन अध्यापकों को देखते ही मेरी इच्छा होती है कि मैं इनको ऐसा सबक सिखा दूँ कि ये जिंदगी भर याद रखें। और लड़के....इतने सारे लड़कों का चुपचाप बैठना कितना अस्वाभाविक है। सो मैं तुरंत कुछ ऐसी-वैसी हरकत करता हूं कि जिससे उनका वास्तविक स्वभाव प्रकट हो जाता है। और वे सभ्यता तथा संस्कृति के सब नियम भूल जाते है। नानी ठीक कहती है: अगर आप लोग चाहते है कि मैं भाषा,गणित, भूगोल और इतिहास की थोड़ी-बहुत जानकारी प्राप्त कर लू तब आपको इनकी बात माननी पड़ेगी।

अगर मैंने कोई पटाखा फोड़ दिया तो उससे जैसे स्तब्ध रहते उससे भी कहीं ज्यादा वे स्तब्ध रह गए...क्योंकि मैंने कोई पटाखा फोड़ दिया होता तो वह तो अपेक्षाकृत होता,किंतु मैंने जो कहा वह अप्रत्याशित था। मेरे परिवार के तथा पडोस के लोग तो सोचते ही थे कि मैं अवश्य कुछ उलटा-सीधा काम करके उनको परेशान करूंगा। यहां तक कि उन्होंने मुझसे पूछना भी शुरू कर दिया कि अब तुम क्या गुल खिलाने वाले हो।

मैंने कहा: क्या मुझे एक छुटटी नहीं मिल सकती। क्या गुल खिलाने वाले हो। क्या तुम इस के लिए मुझे पैसे दे रहे हो। मैं तो दुनिया की हर चीज प्रस्तुत कर सकता हूं। सारे शहर को मेरे कारनामों की कीमत चुकानी चाहिए।

सिर्फ मेरी नानी को ही मेरी चिंता थी। और मैंने अपने परिवार के लोगों से कहा: मुझे बुनियादी शिक्षा तो मिलनी ही चाहिए। नानी की बात मानो। और आप मानो या न मानो मैं तो अब प्राइवेट मास्टर से ही पढ़ूंगा। उन्हें मेरी सहमति की आवश्यकता है और मैं उनसे पूरी तरह से सहमत हूं।

नानी ने कहा: सुना तुम लोगों ने कि यह क्या कह रहा है। तुम इससे ऐसी आशा नहीं थी किंतु इसका व्यवहार सदा अप्रत्याशित होता है—यही इसका गुण है। सो चौंकों मत और इसे अपना अपमान मत मानो। अगर तुम ऐसा समझोगे तो यह इसी तरह की बात बार-बार दोहराए गा। अब तो तुम लोग मेरी बात मानो और इसके लिए एक अच्छा से मास्टर खोजों। बेचारे मेरे पिताजी—बेचारे इसलिए कि सब लोग उन पर हंस रहे थे। उन्होंने कहा: मैं आपसे सहमत तो था ही लेकिन मुझे परिवार के बाकी लोगों का डर था—आपकी बेटी अर्थात अपनी पत्नी का भी। मुझे डर था कि वे सब मुझ पर नाराज होगें। आप बिलकुल ठीक कह रही है। इसे कुछ बुनियादी शिक्षा की जरूरत है। और असली समस्या यह नहीं है कि इसकी आवश्यकता है या नहीं। वास्तविक समस्या तो यह है कि इसे पढ़ाने के लिए कोई मास्टर तैयार होगा या नही? हम पैसा खर्च करने को तैयार है, आप एक अच्छा सा मास्टर खोज लें।

नानी ने पहले से ही किसी मास्टर के बारे में सोच रखा था। उन्होंने मुझसे पूछा भी था कि उसके बारे में मेरा क्या विचार है। मैंने कहा: आदमी तो ठीक ही लगता है किंतु मुझे वह जोरू का गुलाम लगता है।

नानी ने कहा: उससे तुम्हें कोई मतलब नहीं है। एक बच्चे को क्यों उसकी चिंता करनी चाहिए। वह एक अच्छा अध्यापक है। इस प्रदेश का वह सबसे अच्छा अध्यापक माना जाता है। और इसके लिए उसे गवर्नर का प्रमाणपत्र भी दिया गया है। तुम उस पर निर्भर रह सकते हो।

मैंने कहा: वह अपनी पत्नी पर निर्भर है और उसकी पत्नी अपने नौकर पर निर्भर है—उसका नौकर बिलकुल बेवकूफ है—और मुझे उस पर निर्भर होना है? अच्छी श्रंखला है, आदमी अच्छा है लेकिन मुझे उस पर निर्भर होने के लिए मत कहो। आप तो केवल इतना ही कहिए कि मैं पढ़ने के लिए उसके पास बैठूं। निर्भर क्यों होऊं। वह मेरा मालिक नहीं है। वास्तव में मैं उसका मालिक हूं।

अगर तुम उससे ऐसी बात कहोगे तो वह तुरंत चला जाएगा।

मैंने कहा: आप उसके बारे में कुछ नहीं जानती, मैं जानता हूं। अगर मैं उसको सर पर सच में मार दूँ तो भी वह कहीं नहीं जाएगा। क्योंकि मुझे मालूम है कि उसके कानों को कौन पकड़े हुए है।

भारत में गधों को कान से पकड़ते है। उनके कान लंबे होते है इसलिए उन्हें कान से पकडना आसान होता है। वह गधा है। वह शिक्षित अवश्य है किंतु मैं उसकी पत्नी को जानता हूं,वह जबरदस्त औरत है। उसके जैसे कई गधे उसके पास है। अगर वह कुछ गड़बड़ करेगा तो मैं उसको देख लुंगा। चिंता की कोई बात नहीं है। और याद रखिए हर महीने का आप जो वेतन देंगी वह मेरे द्वारा उसकी पत्नी को दिया जाएगा।

नानी ने कहा: मैं तुम्हें जानती हूं। अब मैं तुम्हारे तर्क को समझ गई हूं।

मैंने कहा: अच्छा, तो ठीक है।

मैंने उस आदमी को बुलाया। वह पूरी तरह से जोरू का गुलाम था। मैं उसको नानी के पास ले गया। पहले तो उसने बच निकलने की कोशिश की। फिर मैंने उससे कहा: अगर तुम बचने की कोशिश करोगे तो मैं तुम्हारी पत्नी को बता दूँगा।

उसने कहा: क्या? नहीं, मेरी पत्नी को क्यों बताओ गे।

मैंने कहा: तो फिर चुप रहो और भागने से पहले अच्छी तरह से सोच लो। मेरी नानी तुम्हें जो वेतन देंगी वह रकम लिफाफे में बंद करके मैं तुम्हारी पत्नी को दे दूँगा। यहीं इंतजाम किया गया हे। मुझे नहीं। इसलिए भागने से पहले दो बार सोच लो।

वह अधिक वेतन की मांग कर रहा था। लेकिन जैसे ही मैंने उसकी पत्नी का नाम लिया वह तुरंत राज़ी हो गया।

मैंने नानी को आँख से इशारा किया और कहा कि देखा लो, कैसा अध्यापक आपने चूना है। अब बताओ वह मुझे पढ़ाएगा या मुझे उसे पढ़ना होगा। कौन किसको पढ़ाएगा उसका वेतन तो निशिचत हो गया है किंतु दूसरा प्रश्न अब मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

उस आदमी ने पूछा: तुम्हारा क्या मतलब है कि कौन किसको पढ़ाएगा? क्या तूम मुझे पढ़ाएगा।

मैंने कहा: क्यों नहीं। मैं तुम्हें वेतन दे रहा हूं। इसलिए मुझे तुम्हें पढ़ाना चाहिए ओर तुम्हे सीखना चाहिए। पैसा सब कुछ कर सकता है।

मेरी नानी ने उस आदमी को कहा: डरना मत। यह लड़का उतना बुरा नही है। अगर आप उसे उतैजित नहीं करोगे,किसी बात के लिए उकसाओगे नहीं तो वह आपको कभी परेशान नहीं करेगा। एक बार यदि कोई उससे छेड़खानी कर बैठे,तो मैं उसे रोक नहीं सकती। क्योंकि उसको तो कोई वेतन नहीं मिलता। मैं उसे बडी मुश्किल से कुछ पैसे लेने के लिए राज़ी करती हूं। ताकि वह मिठाई, खिलौने और कपड़े खरीद सके। हमेशा इस बात का खयाल रखना कि कभी उसे कोई चुनौती मत देना, छेड़खानी मत करना, नहीं तो तुम मुसीबत में पड़ जाओगे। किंतु उस बेवकूफ ने पहले ही दिन मुझे उकसा दिया।

वह सुबह-सुबह ही आ गया। वह एक अवकाश प्राप्त हेड मास्टर था किंतु मुझे नहीं लगता कि कभी भी उसके पास दिमाग था। इस दुनिया में लोग दो वर्गों में विभक्त है—एक है हाथ वाले, दूसरे है सिर वाले। मजदूर है हाथ वाले अर्थात हाथ से काम करने वाले सिर्फ हाथ, जैसे कि हाथों के पीछे कोई है ही नहीं। और बुद्धिजीवी लोग, जो अपने आप को बड़ा दिमाग वाला समझते है। ''सिर वाल'' की तरह जाने जाते है। चाहे उनके पास सिर हो या न हो। मैंने बहुत से विभागाध्यक्ष को देखा है जो अध्यक्ष तो बन गए है, किंतु बुद्धिहीन है सिर विहीन है।

जब यह आदमी मुझे पढ़ाने के लिए आया तो इसके वही किया जो मेरी नानी ने नहीं करने को कहा था। अब मेरी समझ में आता है कि उसने एकसा क्यों किया? उस समय तो मैं उसके मनोविज्ञान को नहीं समझ सका,परंतु अब मुझे मालूम हो गया है कि उसने ऐसा व्यवहार क्यों किया था। अपने को अच्छी तरह से जान लेने के बाद मेरी समझ में आ गया है कि लोग एक यंत्र जैसे क्यों बन गए है। उनका व्यवहार यांत्रिक क्यो हो गया है। वे तो रोबोट बन गए है। कभी नट्स तो कभी बोल्ट—दोनों हो गए है।

अब वह बड़ा कठिन होगा और बड़ी लंबी बातचीत में चले जाएंगे ओर मैं शायद इस बेचारे आदमी को भूल जाऊँगा जो कि मेरे सामने हाथ जोड़ कर खड़ा है, इसलिए किसी और रोज हम नट्स-बोल्टस की बात करेंगे। अब इस आदमी की बात शुरू करता हूं.....

वह मेरी नानी के घर मेरे कमरे में आया था। वैसे तो सारा घर ही मेरा था केवल नानी के कमरे को छोड़ कर। और उस घर में बहुत से कमरे थे। वह बहुत बड़ा घर तो नहीं था। किंतु उसमें छह कमरे थे। नानी को तो एक कमरे की जरूरत थी। बाकी पाँच कमरे मेरे थे। क्योंकि वहां पर दूसरा कोई नहीं था। मैं इन कमरों में अलग-अलग काम करता था। एक कमरे में मैं अनेक तरह के काम सीखता था। जैसे कि साँपों को कैसे पकड़ना,उनको अपने संगीत के साथ नाचना सिखाता। हालांकि संगीत से उनका कोई सबंध नहीं है। उस कमरे में मैंने जादू के खेल भी सीखें। मेरे उस कमरे में तो मेरी नानी को भी आने की इजाजत नहीं थी। क्योंकि वह सीखने की पवित्र जगह थी। किंतु नानी को मालूम था कि वहां पर पवित्र जैसा कोई काम नहीं होता। लेकिन कोई भी वहां नहीं आ सकता था। मेंने उस कमरे के बाहर ही एक बोर्ड पर लिख रखा था। बिना पूर्व अनुमति के प्रवेश नहीं।

मैंने शंभु बाबू के आफिस के बहार यह नोटिस लगा हुआ देख था। मैंने उनसे कहा: मैं इसे जे ला रहा हूं। उन्होंने कहा: क्यों?

मैंने कहा: इस नोटिस पर तो यह लिखा हुआ नहीं है कि इसके लिए पैसे देने पड़ेंगे। यह तो मुफ्त है। शंभु बाबू, आपको तो यह मालूम ही नहीं होगा।

यह सुन कर शंभु बाबू जो से हंसे और उन्होंने कहा: वर्षों से यह नोटिस मेरी आंखों के सामने लगा है और आज तक किसी ने मुझे यह नहीं बताया कि इस बोर्ड पर कीमत नहीं लिखी गई। कोई भी इसको ले जा सकता था। यह तो केवल एक कील पर टँगा हुआ है। कुछ करने की जरूरत नहीं है। तुम जब चाहो इसे ले जाओ।

मैंने कहा: आप मेरे मित्र है पर इस प्रकार कि बातों को बीच में मत लाओ। और आज तक मैंने अपनी मित्रता का फायदा नहीं उठाया। किंतु फिर उस नोटिस को मैंने अपने कमरे के बाहर लगा दिया। शायद अभी भी वह वहां पर लगा हुआ हो।

वह आदमी, जिसका नाम अभी तक मुझे याद नहीं आया....मैंने अपने दिमाग पर बहुत जोर दिया किंतु फिर भी नाम याद नहीं आ रहा। अब तो उस नाम को भूल जाना ही अच्छा है। नाम से तो कोई फर्क नहीं पड़ता। हां, भीतर से वह के साथ यह जानना जरूरी है। लगता है कि वह रबर का बना हुआ था। मैंने उसके जैसा दूसरा आदमी ही नहीं देखा।

गर्मी के दिन थे और वह सूट-बूट पहन कर और टाई लगा कर आया। शुरू से ही उसने अपनी मूर्खता का परिचय दे दिया। गर्मी के मौसम में मध्य भारत में सूर्योदय से पहले ही पसीना आने लगता है। और वह आया टाई लगा कर। मोजे और लंबी पेंट पहन कर। और तुम्हें तो मालूम ही है कि मुझे लंबी पेंट से बहुत नफरत है। शायद इस आदमी के कारण ही मुझे पेंट सदा से नापसंद है। इस वक्त भी वह मेरे सामने खड़ा है। मैं बहुत बारीकी से उसका वर्णन कर सकता हूं।

जब वह कमरे के भीतर आया तो वह खांसा, अपनी टाई को ठीक किया और सीधे खड़े होकर उसने कहा: सुनो, लड़के, मैंने तुम्हारे बारे में बहुत कुछ सुना है। इसीलिए शुरू से ही तुम्हें यह बात बता देना चाहता हूं कि मैं कायर नहीं हूं। डरपोक नहीं हूं। इसके बाद उसने इधर-उधर देखा कि शायद कोई सुन रहा हो और वह यह बात उसकी पत्नी को बात दे। और उसको यह नहीं मालूम था कि उसकी पत्नी से मेरी अच्छी मित्रता थी। वह लगातार इस और से उस और देख रहा था। मुझे मालूम है कि कायर सदा ऐसा व्यवहार करते है। कुछ लोग इसके अपवाद भी हो सकते है। किंतु सामान्यत: ऐसा ही व्यवहार करते है। जब एक बच्चा अपने सामने ही बैठा हुआ है तो इस आदमी को इधर-उधर देखने कि क्या जरूरत थी। सिर्फ मुझे छोड़ कर सब आरे देख रहा था। दरवाज़ों को, खिड़कियों को, दीवानों को। सिर्फ मुझे छोड़ कर यह देख कर मुझे बड़ा मजा आ रहा था। और उस पर दया भी आ रही थी।

मैंने कहा: आप भी सुनिए। क्या? और डरी हुई निगाह से चारों और देखते हुए कहा: भूत,यह भूतों की बात कहां से आ गई। मैं तो अपना परिचय तुम्हें दे रहा हूं। और तुम से परिचय हो रहा है, और तुमने भूतों की बात शुरू कर दी।

मैंने कहा: नहीं, अभी तो मैं उनका परिचय नहीं करवा रहा, किंतु आज रात मैं आपको भूत के साथ ही देखूँगा।

इतना सुन कर उसके पसीने छूट गये। तब मैंने कहा: खैर, समय खराब मत कीजिए आप पढ़ाना शुरू कीजिए। मुझे और भी बहुत से काम है।

वह मुझ पर भरोसा ही न कर सका। किंतु उसे मुझसे कोई मतलब ही न था। न हीं मेरे किसी काम से उसने कहा: हां-हां, अभी पढ़ाना शुरू करता हूं, किंतु तुम भूत के बारे मे क्या जानते हो।

मैंने कहा: अभी तो उनके बारे में भूल जाइए। रात को मैं उनसे परिचित करवा दूँगा।

उसने जब देखा कि मैं बड़ी गंभीरता से बात कर रहा हूं, तो वह कांपने लगा। वह कुछ बोल रहा था वह मैं नहीं सुन सका। मुझे केवल उसकी पतलून कांपती हुई दिखाई दे रहीं थी। एक घंटा जो बकवास उसने मुझे पढ़ाया, उसे पढ़ने के बाद मैंने कहा: सर, आपकी पेंट में कुछ गड़बड़ है।

उसने कहा: क्या गड़बड़ है? फिर उसने नीचे देखा, और देखा कि पेंट कंप रही हे। और अब तो और जोर से कंप रही थी। मैंने कहा आपकी पतलून के भीतर कुछ है। मैं तो नहीं देख सकता किंतु आपको तो पता होगा। पर आप कांप क्यों रहे है। और आपकी पेंट नहीं आप भी कांप रहे है।

वह पढ़ाई बीच में ही छोड़कर चला गया। बोला कि मेरा ऐपौइंटमैंट है। यह पाठ मैं कल पूरा करूंगा।

मैंने कहा: कल कृपया हॉफ पेंट पहल कर आना, क्योंकि तब हम पक्का जान पाएंगे कि पेंट कंप रही है या आप। सच की सेवा में होगा—क्योंकि अभी तो यह एक रहस्य है। में भी सोच रहा हूं कि यह किस तरह की पेंट है।

उसका यह पेंट बहुत सुंदर था। कम से कम ऐसा लग रहा था। कि वह उसका ही था। पर मुझे पता नहीं था कि वह उसका था कि नहीं। क्योंकि उस रात ने सब कुछ खत्म कर दिया। वह दुबारा कभी नहीं आया और इस प्रकार समाप्त हुआ मेरे प्राइवेट मास्टर का किस्सा।

मैंने अपनी नानी से कहा था कि आप क्या सोचती है कि कोई भी कितनी कीमत लेकिर मुझे सहन कर लेगा।

चीजों को गड़बड़ मत करो किसी तरह से मेंने तुम्हारे परिवार को समझाया था। और तुम भी मान गए थे, सच तो यह है कि तुम्हारे कारण ही मुझे सफलता मिली थी।

नहीं, मैने कहा: मैं कुछ नहीं करूंगा पर कुछ होता है तो मैं क्या करूं। और यह तो आपको बताना ही है क्योंकि आज की रात से यह तय होगा कि आप उसे पैसे देगी या नहीं। उन्होंने कहा: क्या, वह मरने वाला है। और इतनी जल्दी, आज सुबह ही तो शुरू आत हुई है और सिर्फ एक घंटे ही तो उसने काम किया है।

मैंने कहा: उसने ही मुझे उकसाया।

उन्होने कहा: मैंने उसको पहले ही चेताया था कि तुम्हें न उकसाए।

मेरी नानी के पुराने मकान के आँगन में एक बहुत बड़ा नीम को पेड़ था। वह बहुत ही बड़ा ओर पुराना वृक्ष था। इतना बड़ा कि पूरे मकान के ऊपर छाया हुआ था। गर्मी के दिनों में जब नीम फूलता था तो उसकी सुगंध चारों और फैल जाती थी।

मुझे पता नहीं था कि नीम जैसा कोई और वृक्ष कहीं और होता है या नहीं। क्योंकि इसे बहुत गर्म मौसम चाहिए। इसके फूलों में एक तीखी—यही शब्द में सोच सकता हूं—तीखी सुगंध होती है। मुझे इसे सुगंध नहीं कहना चाहिए क्योंकि यह बहुत कड़वी होती है। जैसे ही तुम इसे सूँघते हो यह एक कड़वा स्वाद मुंह में छोड़ जाती है। ऐसा होगा ही क्योंकि नीम की चाय शायद दुनिया में सबसे कड़वी चाए होती है। पर अगर तुम इसे पसंद करने लगो तो यह वैसे ही है जैसे कॉफी। थोड़ा अभ्यास करना होता है अन्यथा ऐसा नहीं है कि तुम्हें तुरंत पसंद आ जाए।

हालांकि तुरंत तैयार (इस्टंट) कॉफी उपलब्ध होती है बाजार में, फिर भी तुम्हें स्वाद के लिए अभ्यास करना होता है। शराब के संबंध में भी यही सच है, और हजार ऐसी चीजें है। धीरे-धारे तुम्हें स्वाद का मजा लेना

सीखना पड़ता है। अगर तुम किसी नाम के बाग़ में रह रहे हो अपनी पहली श्वास से ही उसकी खुशबू को जानते हो तो वह तुम्हारे लिए कड़वी न होगी। और अगर कड़वी भी है तो मीठी भी होगी।

भारत में नीम के पेड़ अधिक से अधिक लगाने को धार्मिक कार्य मानते है। बड़े आश्चर्य की बात है। किंतु अगर तुम नीम के वृक्ष को जानते हो तो तुम इस पर हंसोगे नहीं नीम वायु को शुद्ध कर देता है। भारत गरीब देश है और शुद्ध करने के उपकरण नहीं लगा सकता किंतु नीम प्राकृतिक है और आसानी से बढ़ता है।

नीम का यह पेड़ मेरी नानी के घर के पीछे था। मैं नानी के घर को ही अपना घर कहता था। दूसरा घर बाकी सबके लिए था। मैं उसका हिस्सा नहीं था। कभी-कभी मैं वहां अपने माता-पिता को मिलने जाता था। पर जितनी जल्दी हो सके वहां से चला जाता था। और उन्हें पता था कि मैं उनके घर नहीं आना चाहता। तो मेरा घर उस नीम के पेड़ के साथ बहुत ही सुदंर जगह पर था। मुझे नहीं पता कि दुनिया कितने बनाई और न ही यह पता है कि किसने नीम के वृक्ष के बारे में यह कहाना बनाई।

कहना थी—और उसने नीम की सुंदरता को और बढ़ा दिया—नीम के बारे में यह कहानी प्रचलित थी कि नीम का पेड़ भूतों को पकड़ लेता है। नीम का पेड़ यह कैसे करता है। पर कोई उत्तर नहीं मिला। शायद यह कुछ नहीं करता। भारत में कोई भी कहनी सत्य में बदल जाती है। या परम सत्य में बदल जाती है।

कहा जाता था कि अगर किसी को भूत लग गया हो तो अगर वह आदमी एक कील लेकर उस नीम के पेड़ में ठोक दे और ऐसा करते हुए कहे, मैं अपने भूत को यहां कील रहा हूं तो वह आदमी भूत से मुक्त हो जाता। उस पेड़ पर लगभग एक हजार कील लगे हुए थे। अभी भी मुझे इस बात का दुःख है हालाकि अब वह पेड़ वहाँ नहीं है।

हर रोज लोग उस पेड़ के पास जाते। और नजदीक ही एक छोटी सी दुकान भी खुल गई भी जहां पर वे कील बिकने लगी थी। क्योंकि उसकी मांग बहुत थी। और महत्व की बात यह थी की प्रात: सभी भूत वहां जाकर गायब हो जाते थे। स्वाभाविक निष्कर्ष यही था कि भूत पेड़ में कील से ठोंक दिया गया है। इन कीलों को कोई उखाड़ता नहीं था इस डर के मारे कि वह भूत बाहर निकल आएगा। और उसे पकड़ लेगा।

मेरे परिवार को भी इस बात का बहुत डर था कि अगर मैं उस पेड़ के पास गया तो मुझे अवश्य कोई न कोई भूत पकड़ लेगा। उन्होंने मेरी नानी से कहा कि यह अच्छी बात है कि वह तुम्हारे यहां सोता है। हमें कुछ एतराज नहीं है। वह तुम्हारे यहां ही खाना खाता है, यह भी ठीक है। वह बहुत ही कम, कभी-कभार ही यहाँ आता है। वह भी ठीक है। हमें मालूम है कि उसकी अच्छी देखभाल हो रहीं है। किंतु उस वृक्ष को याद रखना। अगर वह एक कील भी निकल लेगा तो पूरी जिंदगी परेशान होगा।

और कहानी कहती है कि एक बार जो भूत वहां पेड़ से बाहर आ गया उसे फिर कील के द्वारा ठोंका नहीं जा सकता। क्योंकि उसे ट्रिक का पता चल गया है। और फिर से उसे धोखा नहीं दिया जा सकता।

इसीलिए मेरी नानी सदा मुझे उस पेड़ से दूर रखने की कोशिश में रहती थी। लेकिन उनको यह नहीं मालूम था कि मैं उस नीम के पेड़ में गड़े हुए कीलों को उखाड़ कर उस दुकान वाले को बेच देता था। अन्या था उसे कौन कीलिया दे रहा था। मेरा बड़ा धंधा चल रहा था। पहले तो दुकानदार भी बहुत डर गया। उसने कहा: क्या, तुम यह कील पेड़ में से निकाल कर लाए हो। मैंने कहा उन भूतों से मेरी अच्छी दोस्ती है। वह मेरी बात मानते है। में उन्हें परेशान नहीं करना चाहता। क्योंकि मेरी नानी को पता चल जाता तो मुश्किल हो जाती। भूत मुझे बहुत प्यार करते है वे मेरे अच्छे दोस्त है।

उसने कहा: यह बड़ी अजीब बात है। मैंने आज तक कभी नहीं सुना कि भूत तुम जैसे छोटे बच्चों से प्रेम करते है। पर धंधा तो धंधा है.......

मैं उसे बाजार से आधी कीमत पर कीलें दे रहा था। यह उसके लिए बहुत ही अच्छा था। उसने सोचा कि अगर मैं कीलें निकाल लेता हूं और भूत मुझे परेशान नहीं करते तो वे जरूर मेरे अच्छे दोस्त है। उसने यह भी सोचा इस बच्चे से बुराई लेना अच्छी बात नही है। क्योंकि इसके दोस्त नाराज हो गए तो। और ये बच्चा अपने आप में एक उपद्रव है और फिर भूत भी इसकी सहायता करेंगें।

वह मुझे पैसे देता था, मैं उसे कील देता था।

मैंने अपनी नानी को बताया कि भूत की ये सब बातें झूठी है। वहां कोई भूत नहीं है। और मैं तो एक साल से उस नीम में पेड़ से कील निकाल कर बेचता रहा हूं। नानी को तो सहसा विश्वास ही नहीं हुआ। यह सून कर एक क्षण के लिए उसकी श्वास रूक गई और उन्होंने कहा: क्या तुम उन कीलों को बेचते रहे हो। तुम्हें तो उस पेड़ के नजदीक भी नहीं जाना चाहिए। अगर तुम्हारे मां-बाप को यह मालूम हो गया तो वे तुम्हें यहां से ले जाएंगे।

मैंने कहा: उसकी चिंता मत करो। भूतों से मेरी दोस्ती है।

उन्होंने कहा: तुम सारी बात सच-सच बताओ कि क्या हो रहा है। वह बहुत ही सरल निर्दोष महिला थीं। मैंने कहा: सब कुछ सही है और यह सब हो रहा है, पर आप उस दुकानदार से कुछ न कहें क्योंकि यह धंधे का सवाल है। अगर वह भाग गया या डर गया तो मेरा सारा धंधा चौपट हो जाएगा। अगर आप मेरी मदद करना चाहती है तो ऐसा कीजिए कि जब आप वहां से गुजर रही हो तो उससे बस इतना भर कह दीजिए गा कि न जाने कैसे इन भूतों की इस लड़के से इतनी दोस्ती हो गई हे। वह इससे बहुत प्रेम करते है। मैंने कभी उन्हें कभी किसी और के साथ ऐसी दोस्ती करते नहीं देखा। मैं तो डर के मारे उस पेड़ के नजदीक भी नहीं जाती। बस इतना उसे कह देना जब आप वहां से गूजरें।

भारत में पेड़ के आस-पास एक छोटा सा ईटों का चबूतरा बना दिया जाता है। ताकि लोग वहां बैठ सकें। इस पेड़ के पास बड़ा चबूतरा था। वह बड़ा वृक्ष था। करीब सौ लोग उस चबूतरे पर बैठ सकते थे। और करीब हजार लोग उस पेड़ की छाया में बैठ सकते थे। वह बहुत बड़ा वृक्ष था।

मैंने नानी से कहां: आप उस गरीब दुकानदार से कुछ मत कहना। वहीं मेरी कमाई का एक मात्र उपाय है।

उन्होंने कहा: कमाई, कोन सी कमाई? क्या हो रहा है। और मुझे इसके बारे में तुमने कुछ भी नहीं बताया।

मैंने कहा: मुझे डर था कि आपको चिंता होगी। पर अब मैं आपको विश्वास दिलाता हुं कि वहां पर कोई भूत नहीं है। आप मेरे साथ आइए, मैं आपके सामने उस पेड़ से कीलों को उखाड़ कर दिखाऊंगा और कोई भूत मुझे नहीं पकड़ेगा।

उन्होंने कहा: नहीं, मैं तुम पर विश्वास करती हूं। ऐसे ही लोग विश्वास कर लेते है। मैंने कहा: नहीं, नानी, यह सही नहीं है। मेरे साथ आओ। में कील निकालूंगा। अगर कुछ गलत होगा तो मुझे होगा और मैं तो कील वैसे ही निकलने वाला ही हूं। आप आएं या न आएं। मैं पहले ही सैकडों कीलें निकाल चुका हूं।

उन्होंने क्षण भर सोचा और फिर कहा: ठीक है, मैं आती हूं। मैं ने आना पसंद करती पर फिर तुम हमेशा मुझे डरपोक समझते और वह मैं पसंद नहीं करूंगी। मैं आ रही हूं।

नानी मेरे साथ आँगन में आई और थोड़ी दूरी पर खड़ी होकर देखने लगीं। बड़ा आँगन था। किसी समय वह घर किसी रियासत के पास था। बहुत ही सुंदर मूर्तियां नीम के वृक्ष के नीचे रखी थीं। कुछ घर में भी थी। पुराने जमाने के सुंदर नक्काशी वाले दरवाजे थे। आशीष को वे दरवाजे बहुत पसंद आते। बहुत आवाज करते थे पर वह दूसरी बात है। किसी पुराने आर्किटेक्ट ने मकान बनाया होगा। भूतों के कारण ही वह घर मेरी नानी के

बहुत सस्ते में मिल गया था। हमें वह बहुत सस्ते में,करीब-करीब ना-कुछ में मिल गया था। मालिक उससे मुक्त होकर खुश था।

मेरे पिता ने नानी से कहा था, आप वहां बिलकुल अकेली रहेगी, ज्यादा से ज्यादा इस छोटे बच्चे के साथ जो कि उन भूतों से ज्यादा उपद्रवी है इतने सो भूत और यह बच्चा, आप मुशिकल में पड़ोगी। पर मुझे पता है कि आपको नदी बहुत पसंद है। और उस जगह का मौन शांत वातावरण भी।

यह करीब-करीब मंदिर ही था। भूतों के अलावा वहां पर कोई वर्षों से रहा ही नहीं था।

मैंने नानी से कहा: डरिय मत। मेरे साथ आइए पर याद रखिए कि उस गरीब दुकानदार से कुछ न कहना। उसका धंधा इसी पर निर्भर है, मैं तो उसी पर निर्भर हूं। सच तो यह है काफी सारे गरीब बच्चें को स्कूल में मैं सहायता करता हूं, इन्हीं भूतों की वजह से। इसलिए आप किसी तरह की गड़बड़ मत करना।

पर वे थोड़ी दूर खड़ी रहीं। मैने कहा: जरा नजदीक आइए......तब से मैं यहीं कह रहा हूं, सबसे यहीं करह रहा हूं, आओ, थोड़े करीब आओ। चिंता मत करो, ड़रो मत।

किसी तरह उन्होंने नजदीक आकर देखा कि भूत की बात कोरी अफवाह थी। तब उन्होंने मुझसे पूछा, लेकिन यह सब होता कैसे है। क्योंकि मैंने सिर्फ एक नहीं हजारों लोगो को देखा है। वे काफी दूर से आते है और उनके भूत निकल जाते है। जब वे आते है तब वे पागल होते है, और जब वे जाते है—कील को बेचारे पेड़ में ठोंक कर—तब वे बिलकुल ठीक हो जाते है। यह कैसे होता है।

मैंने कहा: अभी तो मुझे नहीं पता कि यह कैसे होता है पर मैं पता जरूर करूंगा। मैं उसी खोज के रास्ते पर हूं। मैं उन भूतों को ऐसे अकेले नहीं छोडूंगा।

वह पेड़ मेरे घर के ऊपर से गली के ऊपर छाया हुआ था। रात को उस गली से कोई नहीं जाता था। यह मेरे लिए बहुत अच्छा था। रात को किसी तरह की कोई बाधा न होती थी। सच तो यह है कि सूरज ढलने से पहले ही लोग अपने घरों को चले जाते कि कौन जाने अंधेरे में इतने सारे भूत....

वह बेचारा मास्टर मेरी नानी के घर के पीछे कुछ मकान छोड़ कर रहता था। उसे उस गली से जाना पड़ता था। उसके लिए कोई और रास्ता न था। मैंने उस रात इंतजार किया। यह कठिन था क्योंकि दिन में लोग वहां से गुजरते थे। अंत: दिन में भूतों से कुछ भी करवाना कठिन था। पर रात को मैं कर सकता था। मैंने उस रात एक लड़के को फुसला कर उस मास्टर के घर भेजा। लड़के को जाना पडा। उस मोहल्ले के लड़कों को मेरी बात माननी ही पड़ती थी। नहीं तो मैं उनके लिए मुसीबत खड़ी कर देता था। इसलिए मैं जो कहता वे करते। अच्छी तरह से जानते हुए कि वह खतरनाक होगा क्योंकि उन्हें भी भूतों मैं भरोसा था।

मैंने उस लड़के से कहा: तुम जाकर उस मास्टर से कहो कि तुम्हारे पिता बहुत बीमार है और उनके बचने की उम्मीद नहीं है। और चह बहुत गंभीरता से कहाना। उसके पिता दूसरी गली में रहते थे।

स्वभावत: जब पिता मर रहे हों तो भूतों के बारे में कौन सोचता है। यह सुनते ही यह मास्टर जल्दी से उस और चला पडा। उसके हाथ में लैंप था। और मैंने सब इंतजाम कर रखा था। मैं तो अपने पेड के ऊपर चढ़ कर बैठा हुआ था। और वह मेरा पेड़ा था, मुझे कोई नहीं रोक सकता था। जैसे ही वह मास्टर अपने लैंप के साथ उस नीम के पेड़ के नीचे आया, उसने सोचा होगा कि कम से कम लालटेन साथ ले चलो तो भूत करीब नहीं आएंगे और अगर आए तो मैं देख कर समय रहते भगा दूँगा।

मैं पेड़ से बस कूद पड़ा, उस शिक्षक के ऊपर ही। फिर जो हुआ वह सचमुच देखने जैसा था, अद्‌भुत। ऐसा कुछ जिस की मैंने कल्पना भी नहीं की थी......(ओशो जोर से हंस पड़े).....उसकी पतलून खुल कर नीचे गिर पड़ी। वह पतलून के बिना ही भागा। अभी भी मैं देख सकता हूं....(ओशो बहुत जोर से हंसने लगे).....

सत्र—50 निकलंक—दीवाना है

यह अच्छा है कि मैं देख नहीं सकता.....पर मुझे पता है कि क्या हो रहा है। पर मैं क्या कर सकता हूं—तुम्हें तुम्हारी टेकनालॉजी के हिसाब से चलना होगा। और मेरे जैसे आदमी के साथ स्वभावत: तूम बड़ी मुश्किल में हो। मैं बंधा हूं और तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता।

आशु, क्या तुम कुछ कर सकती हो? तुम्हारी थोड़ी सी हंसी उसे शांत रखने में मदद करेगी। वह बहुत अजीब बात है कि जब कोई और हंसने लगता है तो पहला आदमी रूक जाता है। उनको नहीं, पर मुझे कारण साफ है। जो हंस रहा होता है वह तुरंत सोचता है कि वह कुछ गलत कर रहा है। और तुरंत गंभीर हो जाता है।

जब तुम देखो कि देव गीत रास्ते से थोड़ भटक रहा है तो हंसों, हरा दो उसे। वह नारी मुक्ति का सवाल है। और अगर तुम अच्छी हंसी हंसों तो वह तुरंत अपने नोट लेना शुरू कर देगा। तुमने अभी शुरू भी नहीं किया और वह अपने होश में आ गया।

कल मैं तुमसे कहा रहा था कि मैं उस रात पेड़ से कुदा, उस बेचारे मास्टर को चोट पहुंचाने नहीं बल्कि उसे यह बताने के लिए कि किस तरह का विद्यार्थी उसे मिला है। किंतु यह बात काफी आगे बढ़ गई। यहां तक कि मुझे भी आश्चर्य हुआ जब मैंने उसे इतना घबड़ाया हुआ देखा। वह सिर्फ डर ही नहीं गया। वह आदमी गायब हो गया।

एक क्षण के लिए तो मुझे भी लगा कि अब इसे रोक देना चाहिए, सोचा कि वह बूढा आदमी है। शायद मर जाए या कुछ हो जाए,शायद पागल हो जाए या कभी अपने घर ही वापस न आए। क्योंकि उस गली के अलावा उसके घर जाने का कोई और रास्ता ही न था। तो उसे उस पेड़ के नीचे से ही जाना पड़ता। पर अब बहुत देर हो चुकी थी। वह अपनी पेंट वहीं छोड़ कर भाग गया था।

मैंने उस पतलून को उठाया और नानी के पास जाकर कहा: यह रही उसकी पेंट, और आप सोचती थीं कि वह मुझे पढ़ाएगा। यह रही उसकी पेंट।

उन्होंने कहा: क्या हुआ?

मैंने कहा: सब कुछ हो गया। वह आदमी नंगा ही भाग गया और मुझे नहीं पता कि अब वह अपने घर कैसे जाएगा। और मैं जल्दी में हूं—आपको बाद में सारी बात बताऊंगा। आप पेंट को रख लीजिए। अगर वह यहां आए तो उसे दे देना।

किंतु आश्चर्य तो यह कि वह कभी भी हमारे घर पतलून लेने नहीं आया। मैंने उसे कील से उस नीम के पेड़ से ठोंक कर लटका दिया। कि अगर वह उसे ले जाना चाहे तो उसे मुझसे न पूछना पड़े। पर उस नीम के पेड़ से पेंट ले जाने का मतलब तो यह था कि उस भूत को मुक्त करना जो उसने सोचा कि उसके ऊपर कुदा था।

हजारों लोग जो वहां पेड़ के पास से गूजरें थे उन्होंने उस पेंट को देख होगा। लोग वहां एक प्रकार की साइकोएनलिसिस, एन एफलेक्टिव—तुम उसे क्या कहते हो देवराज? प्लसबो।

प्लेसी-बो, ओशो।

प्लोसबा।

ठीक है, पर मैं इसे प्लास-बो ही कहूंगा। तुम अपनी किताब में ठीक कर लेना। प्लासी-बो सही है। पर मैंने तो सारा जीवन इसे प्लास-बो ही कहा है। और अच्छा है कि मैं अपनी तरह ही रहूँ—गलत हो या सही। कम से कम तुम्हारा अपना तो है। इसके बारे में देवराज सही हो और में गलत ही होऊंगा, पर मैं इसे प्लास-बो कहने में सही हूं—उसका नाम नहीं, पर जो व्यवहार मैंने किया उसमें एक स्वाद देने के लिए।

सही या गलत कभी भी मेरे लिए कोई महत्व का नहीं रहा है। जिसे मैं पसंद करता हूं वह सही—और मैं नहीं कहता कि वह सबके लिए सही है। मैं कोई हठी नहीं हूं। मैं तो सिर्फ पागल आदमी हूं। ज्यादा से ज्यादा...उससे ज्यादा मैं कुछ और नहीं कहता।

मैं क्या कह रहा था?

आप कह रहे थे कि लोग उस पेड़ के पास एक तरह की साइकोएनलिसिस के लिए आते थे।

शायद ये प्लसबो है। अजीब बात है पर यह काम करती है। सही या गलत, इससे फर्क नहीं पड़ता। मुझे तो परिणाम की फिक्र है। परिणाम कैसे,किससे आता है वह गौण है। मैं व्यावहारिक व्यक्ति हूं।

मैंने अपनी नानी से कहा कि चिंता मत करो। मैं यह पेंट अब नीम के पेड़ पर लटका दूँगा। और आप पक्का समझ लीजिए कि इसका प्रभाव होगा।

उन्होंने कहा: मैं तुम्हें और तुम्हारे तरीकों को जानती हूं। अब सारे गांव को पता चल जाएगा कि यह पेंट किसकी है। अगर वह आदमी अपनी पेंट लेने इधर आता भी तो नहीं आएगा। यह पतलून वह आदमी खास दिनों पर पहनता था तो वे फैमस थीं।

उस पर आदमी का क्या हुआ? मैंने उसे सारे गांव में खोजा, पर स्वभावत: वह मिलने वाला नथा। क्योंकि वह नंगा था। तो मैंने सोचा कि थोड़ा रुकते है शायद रात देर से वह वापस आ जाए। शायद वह नदी के दूसरी तरफ चला गया हो क्योंकि वहीं सबसे करीब जगह थी जहां कोई और तुम्हें देखेगा नहीं। वह पर आदमी कभी वापस नहीं आया। इस तरह मेरा निजी शिक्षक गायब हो गया। मैं अभी सोचता हूं कि बिना उसकी पेंट के उसका क्या हुआ होगा। मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं है, लेकिन उसने बिना पेंट के कैसे सब किया होगा? और वह बिना पेंट के शरीर तो मिलता। और अगर वह मर भी गया था तो भी उसे देखता वह हंसता जरूर, क्योंकि उसकी पेंट प्रसिद्ध थी। यहां तक कि उसे ''मिस्टर पेंट स'' भी कहा जाता था। मुझे तो उसका नाम भी याद नहीं है। और उसके पास बहुत सारी पेंट थी। उस गांव में यह कहानी प्रचलित थी कि उसके पास तीन सौ पैंसठ पेंट है। हर रोज के लिए एक-एक। मुझे नहीं लगता कि यह सच है। सिर्फ गप्प होगी। पर उसका हुआ क्या?

मैंने उनके परिवार से पूछा: उन्होंने कहा: हम इंतजार कर रहे है। पर उस रात के बाद से हमने भी उन्हें देखा नहीं।

मैंने कहां: अजीब बात है....मैंने अपनी नानी से कहा: उसके इस तरह से गायब होने से मुझे कभी-कभी शक होता है कि भूत होते है.....क्योंकि मैं तो सिर्फ उसका भूतों से परिचय करवा रहा था। और यह अच्छा है कि उसकी पेंट पेड़ से लटका है।

मेरे पिता बहुत नाराज हुए कि मैं इतनी गंदी बेहूदा हरकत कर सकता हूं। मैंने उन्हें इतना नाराज कभी नहीं देखा था।

मैंने कहा: लेकिन मैंने ऐसा प्लान नहीं किया था। मैंने सोचा भी न था कि वह आदमी इस तरह वाष्पीभूत हो जाएगा। यह तो मेरे लिए भी थोड़ी ज्यादा हो गया। मैंने तो एक साधारण सी बात की थी। पेड़ पर ढोल लेकर बैठ गया था, जोर से ढोल बजाया ताकि उसका ध्यान उस तरफ आ जाए कि क्या हो रहा है और दुनिया की सारी बात भूल जाए। और मैं कूद पडा।

और यह तो मेरी रोज की बात थी। मैंने बहुत लोगों को भगाया था। मेरी नानी कहती थी, शायद पूरे गांव में यह अकेली गली है जहां रात को कोई और आता-जाता नहीं है। सिवाय तुम्हारे।

अभी उस दिन कोई मुझे कार-स्टिकर दिखा रहा था। बहुत सुंदर स्टिकर था, लिखा था ''यह रास्ता मेरा है, मुझ पर भरोसा करो।'' उस स्टिकर को पढ़ते समय मुझे अपनी उस गली की याद आई जो हमारे घर के पास

से गुजरती थी। कम से कम रात को वह रास्ता सिर्फ मेरा ही था। दिन के समय वह सरकारी रास्ता था किंतु रात को सिर्फ मेरा अपना रास्ता था। आज भी मैं सोचता हुं कि कोई भी रास्ता उतना शांत हो सकता है जितना वह रास्ता रात के समय होता था।

किंतु मेरे पिता इतने गुस्से में थे कि उन्होने कहा: कुछ भी हो जाए मैं इस नीम के पेड़ को काटवा कर रहूंगा और यह सब धंधा जो तुमने चला रखा है मैं खत्म कर दूँगा।

मैंने कहा: कौन सा धंधा? मैं कीलों की चिंता मैं था क्योंकि वहीं मेरी एक मात्र कमाई थी। उन्हें उस बता का कुछ पता नहीं था।

उन्होंने कहा: यह गंदा धंधा जो तुमने चला रखा है, लोगों को डराने का...ओर अब उस आदमी का सारा परिवार लगातार मुझे परेशान करता है। हर रोज कोई न कोई आकर मुझे कहता है कि कुछ करो। मैं क्या कर सकता हूं।

मैंने कहा: मैं कम से कम आपको पेंट दे सकता हूं। सिर्फ वहीं रह गई है। और जहां तक पेड़ का सवाल है, मैं आपसे कहता हूं कि उसे कोई भी काटने को तैयार न होगा।

उन्होनें कहा: तुम्हें उसकी चिंता करने कि जरूरत नहीं है।

मैंने कहा: मैं चिंता नहीं कर रहा। मैं तो आपको सचेत कर रहा हूं ताकि आप समय बरबाद न करे।

और तीन दिन के बाद उन्होंने मुझे बुलाया और कहा: तुम भी गजब के हो। तुमने मुझसे कहा कि उसे कोई भी काटने को तैयार नहीं होगा। अजीब बात है, मैंने उन सब लोगों से पूछ लिया जो उसे काट सकते थे, ज्यादा लोग इस गांव में है भी नहीं केवल थोडे से पेड़ काटने वाले है—लेकिन कोई काटने को तैयार नहीं है। उन सभी ने कहा, नहीं। भूतों का क्या करेंगे।

मैंने उनसे कहा: मैंने आपको पहले ही कहा था, मैं तो इस शहर में किसी को नहीं जानता जो इस पेड़ को छुएगा भी, अगर मैं ही इसे काटने का तय कर लू तो बात अलग है। लेकिन अगर आप चाहते है तो मैं किसी को खोज सकता हूं। लेकिन आपको मुझ पर भरोसा करना पड़ेगा।

उन्होंने कहा: मैं तुम पर भरोसा नहीं कर सकता। कभी किसी को पता ही नहीं चलता कि तुम क्या पलान कर रहे हो। तुम मुझसे कहोगे कि पेड़ काटने वाले हो पर कुछ और ही कर ड़ालोगे। नहीं मैं तुमसे यह कहने के लिए नहीं कह सकता।

वह पेड़ बिना कटे रह गया, कोई काटने को तैयार ही न था। मैं बेचारे अपने पिता को परेशान करता था, दद्दा पेड़ का क्या हुआ? वह अभी तक वहीं खड़ा है—मैंने आज सुबह ही उसे देखा। आपको अभी तक कोई लकड़ी काटने वाला नहीं मिला।

और वे चारों और देखते कि कोई सुन तो नहीं रहा है। फिर मुझसे कहते: क्या तुम मुझे अकेला नहीं छोड़ सकते?

मैंने कहा: मैं कभी-कभार ही तो आपके पास आता हूं सिर्फ उस पेड़ के बारे में पूछने। आप कहते है कि आपको उसे काटने के लिए कोई नहीं मिलता। मुझे पता है कि आप लोगों से पूछते रहते हैं और मुझे पता है कि वह सब मना करते है। मैं तो उनसे पूछता रहा हूं।

उन्होंने कहा: किस लिए।

मैंने कहा: नहीं, पेड़ काटने के लिए नहीं, सिर्फ उनको बताने के लिए कि पेड़ में क्या है—भूत है। मुझे नहीं लगता कि उसे काटने के लिए कोई तैयार होगा जब तक कि आप मुझसे यह करने को न कहेंगे। और निश्चित ही वे ऐसा करने में झिझक रहे थे। तो मैंने कहा: ठीक है, फिर वह पेड़ नहीं कटे गा।

और वह पेड़ तब तक नहीं कटा जब तक मैं गांव में था। जब मैंने वह गांव छोड़ा तो मेरे पिता ने किसी दूसरे गांव से एक मुसलमान लकड़ी काटने वाले को किसी तरह बुला कर वह पेड़ कटवाया। पर एक अजीब बात हुई, पेड़ तो कट गया,पर वह फिर से उगने लगा, और उसे पूरी तरह से हटाने के लिए उन्होनें वहां पर एक कुआं खुदवाया। किंतु वे अनावश्यक परेशान हुए, क्योंकि उस पेड़ की जड़ें इतनी नीचे तक चली गई थी और उन्होंने पानी को भी इतना कड़वा कर दिया था जितना कि तुम सोच भी नहीं सकते। उस कुएं का पानी को कोई तैयार नहीं हुआ।

फिर जब मैं घर वापस आया तो मैंने अपने पिता को कहा: आपने कभी मेरी बात नहीं मानी। आपने एक सुंदर वृक्ष को नष्ट कर दिया। और यह गंदा गड्ढा करवा दिया। और अब इसका क्या उपयोग है। आपने कुआं बनवाने में पैसे खराब किए और अब आप उसका पानी भी नहीं पी सकते।

उनहोंने कहा: शायद कभी-कभी तुम सही होते हो। मुझे यह समझ आ गया, लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता।

उन्होंने वह कुआं ढंक देना पडा। अभी भी वह कुआँ वहां पर ढंका हुआ है। अगर तुम कुछ पत्थर हटाओगे, सिर्फ ऊपर से डाला गया मलबा, तो तुम कुआं पाओगें। अब तक तो पानी बिलकुल कड़वा हो गया होगा।

मैं तुम्हें यह कहानी क्यो बताना चाहता था?—उस निजी अध्यापक की वजह से। उसका पहला दिन और उसने मुझे प्रभावित करने के लिए कि वह बहुत ही निर्भय और हिम्मत वर व्यक्ति है और भूतों में उसे विश्वास नहीं है।

मैने कहा: सच मैं। आप भूतों में भरोसा नहीं करते।

उसने कहा: निश्चित ही, मैं भरोसा नहीं करता। मैं देख सकता था कि यह कहते हुए भी वह डर रहा था।

मैंने कहा: भरोसा करते हो या नहीं, पर आज रात मैं तुम्हारा भूतों से परिचय करवाऊंगा। मैंने कभी न सोचा था कि सिर्फ परिचय से ही वह व्यक्ति गायब हो जाएगा। क्या हुआ उसका। जब भी में गांव गया तो हमेशा उसके घर जाता पता करने कि वह घर आ गया या नहीं।

वे कहते: तुम क्यों इसमें दिलचस्पी रखते हो। हम तो अब इस बात को भूल ही गए है कि वह वापस आएगा।

मैंने कहा: मैं नहीं भूल सकता। क्योंकि मैंने जो देखा उसमे ऐसा सौंदर्य था, और मैं तो उसका सिर्फ किसी से परिचय करवा रहा था।

उन्होंने कहा: किससे।

मैंने कहा: था कोई—और मैं अभी परिचय पूरा भी नहीं करवा पाया था,और मैंने उसके बेटे से कहा, तुम्हारे पिता ने जो किया वह बिलकुल ही भद्र नहीं था। वे अपनी पेंट छोड़कर भाग गये।

उनकी पत्नी जो कि कुछ पका रही थी, हंसी और बोली, मैं हमेशा यही कहती थी कि अपनी पतलून को जोर से बाँध कर और पकड़ कर रख करो, लेकिन वे सुनते ही न थे। अब उनकी पतलून चली गई और वे भी।

मैंने कहा: आप उनको अपनी पतलून को जोर से पकड़ कर रखने को क्यों कहती थी।

उन्होने कहा: तुम नहीं समझोगे। बात साफ है। ये सारे पतलून उन्होंने तब बनवाए थे। जब वे जवान थे,और अब ये सब ढीले हो गए थे, क्योंकि उनका वज़न कम हो गया था। तो हमेशा डर रहता था कि एक न एक दिन उनकी पतलून नीचे गीर जाएगी और शर्म की स्थिती पैदा हाँ जाएगी।

तब मुझे याद आया कि वह हमेशा अपने हाथ पतलून की जेब में रखते थे। पर स्वभावत: जब तुम भूतों से मिलते हो तो तुम याद नहीं रख सकते कि अपने हाथ जेब में रखना है और पतलून को जोर से पकड़ कर रखना है। कौन ऐसे मैं पतलून की फ़िकर करता है। जब इतने सारे भूत तुम पर कूद रहे हो।

उन्होंने भागने से पहले एक और चीज की....मुझे नहीं पता कि वे कहां गए। इस दुनिया में ऐसी बहुत सी बातें है जिनको कोई अत्तर नहीं है। और यह उन्हीं में गिनी जा सकती है। मुझे मालूम कि क्यों पर भागने से पहले उसने अपनी लालटेन को बुझा दिया था। उस अध्यापक के बारे में यह भी प्रश्न था जो बिना अत्तर के रह गया। एक तरह से वह महान आदमी था। मैंने कई बाद सोचा कि उसने लालटेन को बुझा क्यों दिया था। फिर एक दिन एक छोटी सी घटना से इस सवाल का उत्तर मिल गया। मेरा मतलब यह नहीं कि आदमी वापस आ गया, नहीं, पर दूसरे प्रश्न का उत्तर मिल गया।

उसका बच्चा बाथरूम में तब तक नहीं जाता था जब तक की उसकी मां दरवाजे पर खड़ी न होती। और अगर रात को समय होता ते स्वभावत: उसको लैंप रखना पड़ता। मैं उनके घर गया था। और दिन के समय मैंने मां को अपने बच्चे को कहते सुना, तुम खुद लैंप लेकर नहीं जा सकते।

उसने कहा: ठीक है, मैं लैंप ले जाता हूं। मुझे जाना है। मैं और नहीं रूक सकता।

मैंने कहा: दिन के समय में लैंप का उपयोग क्यों करना। मैंने डायोजनीज की कहानी सुनी है, क्या यह दूसरा डायोजनीज है। लैंप क्यों ले जाना।

मां हंसी और उसने कहा: उसी से पूछ लो।

मैंने कहा: राजू तुम दिन के समय क्यों लैंप ले जाना चाहते हो।

उसने कहा: दिन हो रात इससे क्या फर्क पड़ता है। भूत तो सभी जगह होते हे। अगर लैंप पास में हो तो इस बात से बचा जा सकता है। कि कही अंजाने में उससे टकरा न जाएं।

उस दिन मुझे समझ आया कि उस अध्यापक ने उस दिन भागने से पहले लैंप क्यों बुझा दिया था। शायद उसने सोचा होगा अगर लैंप को जलाए रखा तो भूत उसे खोज लेगा। लेकिन यदि उसे बुझा दिया—और यह सिर्फ मेरा तर्क है—यदि उसे बुझा दिया, तो कम से कम वक उसे देख नहीं पाएंगे और वह उन्हें धोखा देकर भाग जाएगा।

परंतु उसने सच ही गजब का काम किया। सच बताऊ तो ऐसा लगता है कि वह सदा से ही अपनी पत्नी से भागना चाहता था। और यह अंतिम मौका मिल गया जिसका उसने पूरी तरह से उपयोग किया। यह व्यक्ति इस तरह के अंत पर न आता अगर उसने अभय, निर्भीकता से शुरूआत न कि होती और अगर ऐसा न किया होता तो मैं भूतों से नहीं डरता।

लेकिन मैंने कहा: मैं आपसे नहीं पूछ रहा। और उसकी पतलून कंप रही थी जब उसने भूत शब्द कहा।

मैंने कहा: सर, आपका पेंट बहुत अजीब है। मैंने कभी भी कुछ भी ऐसा कंपते हुए नहीं देखा। पेंट कितनी जीवंत दिख रही है।

उसने नीचे अपनी पेंट को देखा—मैं अभी भी उसे देख सकता हूं—और उसके पैर बुरी तरह कांप रहे थे।

सच तो यह है कि मेरे प्राइमरी स्कूल के दिन पूरे हो गए। निश्चित ही हजारों और चीजें घटीं जिनके बारे में बातें नहीं की जा सकतीं.....ऐसा नहीं कि उनका कोई मूल्य नहीं है—जीवन ऐसा कुछ भी नहीं है जिसका कोई मूल्य न हो—पर सिर्फ इसलिए कि समय नहीं है। इसलिए सिर्फ कुछ उदाहरण से ही काम चलेगा।

प्राइमरी स्कूल तो सिर्फ मिडिल स्कूल की शुरूआत थी। मैने मिडिल स्कूल में प्रवेश किया, और पहली बात जो मुझे याद है—तुम मुझे जानते हो, मैं अजीब चीजें देखता हूं...

मेरी सैक्रेटरी सभी तरह के अजीब-अजीब कार-स्टिकर इकट्ठे करती है। उनमें से एक है—सावधान, मैं भ्रमों के लिए ब्रेक लगाता हुं। मुझे पसंद आया,बहुत अच्छा लगा।

पहली बात जो मुझे याद है वह आदमी....सौभाग्य से या दुर्भाग्य से, क्योंकि यह जानना कठिन है, कि सौभाग्य या दु भाग्य—लेकिन पागल था। मेरी तरह पागल भी न था। वह सच में ही पागल था। गांव में वह झक्की मास्टर की तरह जाना जाता था। झक्की का अर्थ होता है, जो पागल, कुक्कू या क्रेज़ी कर होता है। यह मेरे मिडिल स्कूल में पहले अध्यापक थे। शायद इसीलिए कि वह सच में पागल थे, हम तुरंत दोस्त बन गए।

मेरी अध्यापकों के साथ दोस्ती होना दुर्लभ ही था। थोड़ी सी ऐसा जातियां है जैसे राजनीतिज्ञ, पत्रकार, और शिक्षक,जिन्हें मैं पसंद नहीं करता। हालांकि मैं उन्हें भी पसंद करना पसंद करूंगा। जीसस कहते है: अपने दुश्मन को प्रेम करो। ठीक है, पर वे कभी स्कूल नहीं गए,तो उन्हें शिक्षकों के बारे में पता नहीं है। इतना तो पक्का है, अन्यथा उन्होंने कहा होता: अपने शिक्षकों को छोड़कर दुश्मनों को प्रेम करो।

निशिचत ही वहां कोई पत्रकार या राजनीतिज्ञ या ऐसे कोई लोग न थे जिनका सारा काम सिर्फ लोगों का खून चूसना हो। जीसस दुश्मनों की बात कर रहे थे—पर मित्रों के बारे में क्या? उन्होंने कभी नहीं कहा कि अपने मित्रों को प्रेम करो....क्योंकि मुझे नहीं लगता कि एक दुश्मन कुछ ज्यादा नुकसान पहुंचा सकता है, असली नुकसान तो मित्र ही पहुँचाता है।

मैं पत्रकारों से घृणा करता हूं और जब मैं घृणा करता हूं तो फिर इसका कुछ और अर्थ नहीं है। मैं शिक्षकों से घृणा करता हूं। मैं दुनिया मे शिक्षक नहीं चाहता। पुराने अर्थों में शिक्षक नहीं। शायद किसी अलग तरह के बुजुर्ग मित्रों को खोजना होगा।

पर यह व्यक्ति जो पागल आदमी की तरह जाना जाता था। तुरंत मेरा मित्र बन गया। उनका पूरा नाम राजाराम था। पर वे राजू झक्की की तरह जाने जाते थे। राजू पागल। मैंने सोचा ही था कि वह वैसे ही होंगे जैसे जाने जाते थे।

जब मैने उन्हें देखा—तुम्हें भरोसा ही न आएगा, पर उस दिन पहली बार मैंने जाना कि पागल दुनिया मे स्वस्थ चित होना ठीक नहीं है। उनको देख कर एक क्षण के लिए ऐसा लगा जैसे समय रूक गया है। कितना समय बीता कहना मुश्किल है पर उन्होंने मेरा नाम,पता वगैरह रजिस्टर में भरना था तो उन्हें ये प्रश्न पूछे।

मैंने कहा: क्या हम मौन नहीं रह सकते।

उन्होंने कहा: मैं तुम्हारे साथ मौन रहना पसंद करूंगा पर हमें यह गंदा काम पहले खत्म कर देना चाहिए फिर हम शांत मौन बैठ सकेंगे।

जिस तरह उन्होंने कहा—हमें यह गंदा काम खत्म कर देना चाहिए...मुझे समझने के लिए काफी था कि कम से कम ये व्यक्ति जानता है कि क्या काम गंदा है: ब्यूरोक्रेसी,दफतरशाही और अंतहीन लाल-फीता शाही। उन्होंने जल्दी से काम खत्म किया, रजिस्टर बंद किया और कहा ठीक है, अब हम मौन बैठ सकते है। क्या मैं तुम्हारा हाथ आपने हाथ में ले सकता हूं।

एक शिक्षक से मुझे ऐसी उम्मीद न थी। मैंने कहा: तो लोग जो कहते है वह सही है कि आप पागल है—या शायद मैं जो अनुभव कर रहा हूं वह सही है कि आप अकेले ऐ स्वस्थ चित शिक्षक है पूरे गांव में।

उन्होंने कहा: पागल होना ही अच्छा है, यह बहुत तरह के उपद्रव से बचाता है।

हम हंसे और मित्र बन गए। तीस साल तक लगातार जब तक कि उनकी मृत्यु न हो गई मैं उनके पास सिर्फ बैठने के लिए जाता था। उनकी पत्नी कहती थी, मैं सोचती थी कि सिर्फ मेरे पति ही इस गांव में एक

पागल आदमी है। पर यह सही नहीं है। तुम भी पागल हो। उनहोंने कहा: मुझे आश्चर्य होता है कि तुम क्यों इस पागल व्यक्ति से मिलने आते हो। और वे हर पहलू से पागल थे।

उदाहरण के लिए, वे स्कूल घोड़े पर बैठ कर आते थे। यह कोई बुरी बात न थी। उस इलाके में, लेकिन उलटे पीछे की तरफ मुंह करके बैठते थे। उनके बारे में यह बात मुझे बहुत पसंद थी। घोड़े पर ऐसे बैठना जैसे कोई और नहीं बैठता—पीछे की तरफ मुंह करके बैठना एक अजीब अनुभव है। बाद में मैंने मुल्ला नसरू दीन की कहानी बताई कि वह कैसे अपने गधे पर पीछे की तरफ मुंह करके बैठता था। जब उसके विद्यार्थी गांव से बाहर जाते तो स्वभावत: उन्हें शर्म आती। फिर एक विद्यार्थी ने पूछा कि मुल्ला, सभी गधे पर बैठते है, उसमें कोई बुराई नहीं है। आप गधे पर बैठ सकते है पर पीछे की तरफ मुंह करके...., गधा एक तरफ जा रहा है ओर आप उलटी पीछे की दिशा में देख रहे है। लोग हंसते है और कहते है कि देखो पागल मुल्ला को देखो। और हमें शर्म आती है। क्योंकि हम आपके विद्यार्थी है।

मुल्ला ने कहा: मैं तुम्हें समझाता हूं। मैं तुम्हारी और पीठ करके नहीं बैठ सकता,वह तुम्हारा अपमान होगा। मैं अपने ही विद्यार्थी का अपमान नहीं कर सकता। तो वह तो सवाल ही नहीं उठता वैसे बैठने का। दूसरे रास्ते खोजें जा सकते है। तुम सब गधे के आगे भी उलटे चल सकते हो मेरी और देखते हुए, पर यह बहुत ही मुश्किल होगा। और तुम्हें और भी ज्यादा शर्म आएगी। निशचित ही तब तुम्हारा मुंह मेरी तरफ होगा और तब अपमान का सवाल ही नहीं उठता। पर तुम्हारे लिए पीछे की तरफ चलना बहुत कठिन होगा और हम सभी लंबी यात्रा पर जा रहे है। तो सिर्फ एक ही स्वाभाविक और आसान उपाय यही है कि मैं गधे पर उलटा,पीछे की तरफ मुंह करके बैठूं। गधे को कोई तकलीफ नहीं है। कि मैं गधे देख रहा। वह वहां देख सकता है जहां हम जा रहे है और निशिचत स्थान पर पहुंच जाएगा। मैं तुम्हारा अपमान नहीं करना चाहता। इसलिए सर्वोंतम उपास यही है कि मैं गधे पर पीछे की तरफ मुंह करके बैठूं।

यह अजीब बात है पर लाओत्से भी अपने भैंसे पर पीछे की तरफ मुंह करके बैठता था, शायद इसी वजह से। पर उसके उत्तर का करण का कुछ पता नहीं है। चीनी लोग ऐसी बातों का उत्तर नहीं देते और वे पूछते भी नहीं है। वे बड़े भद्र लोग है। सदा एक-दूसरे के प्रति झुकते है।

ये यह सब करने के लिए दृढ निश्चित था जो करना मना होता था। जैसे उदाहरण के लिए जब मै कालेज में था तो मैं पायजामा और बिना बटन का कुरता पहनता था। मेरे एक प्रोफेसर इंद्र बहादुर खरे, उनका मुझे याद है। हालांकि उनकी मृत्यु काफी समय पहले हो गई है पर इस कहानी की वजह से जो मैं तुम्हें बताने जा रहा हुं, मैं उन्हें नहीं भूल सकता।

वे कालेज में होने वाले सभी उत्सवों के इंचार्ज थे और क्योंकि मैं सारे आवर्ड जीत कर कालेज में ला रहा था। इसलिए उन्होंने तय किया कि सभी मैडल स, कप्स और शील्डस के साथ मेरी फोटो ली जानी चाहिए! इसलिए हम फोटो स्टूडियों में गए। लेकिन वहां एक समस्या खड़ी हो गई जब उन्होंने कहा। अपने बटन लगाओ।

मैंने कहा: यह संभव नहीं है।

उन्होंने कहा: क्या? तुम अपनी बटन नहीं लगा सकते।

मैंने कहा: देखिए, आप देख सकते है। ये बटन असली नहीं है। बटनों के लिए काज ही नहीं है। उन्हें लगाया नहीं जा सकता। मुझे बटन लगाना पंसद नहीं है इसलिए मेरे दर्जी को मैंने कह रखा है मेरे कपड़ों में काज बनाने की जरूरत नहीं है। बटन टके है आप देख सकते है। इसलिए फोटो में बटन आएंगे।

वे बहुत ही नाराज हो गए, क्योंकि उन्हें कपड़ों आदि की बहुत ही ज्यादा फ़िकर थी, तो उन्होंने कहा, ''फिर फोटो नहीं ली जा सकती।'

मैंने कहा: ठीक है, फिर मैं जाता हूं।

उन्होंने कहा: मेरा मतलब यह नहीं है, क्योंकि उन्हें डर था कि मैं कोई उपद्रव खड़ा कर दूँगा। प्रिंसिपल के पास चला जाऊँगा। उन्हें अच्छी तरह से पता था कि ऐसा कोई कानून नहीं है कि जब तुम्हारी फोटो ली जाए तो तुम्हारे बटन बंद होने चाहिए।

मैंने उन्हें यह कहते हुए याद कराया कि '' अच्छे से जानिए कि कल आप मुशिकल में पड़ेंगे। इसके विरूद्ध कोई कानून नहीं है। अच्छे से पढ़ो, जानकारी लो, होम वर्क करो और फिर कल प्रिंसिपल के आफिस में मिलना। वहां सिद्ध करना कि बिना बटन बंद किए फोटो नहीं खिंचवा या जा सकता।

उन्होंने कहा: तुम निश्चित ही अजीब विद्यार्थी हो। मुझे पता है कि मैं यह सिद्ध नहीं कर पाऊगा इसलिए कृपया फोटो खिंचवा लो। मैं जाता हूं पर तुम्हारा फोटो लेना ही होगा।

वह फोटो अभी भी सुरक्षित है। मेरे भाइयों में से एक मेरा चौथा भाई निकलंक, अपने बचपन से ही मुझसे संबंध सभी चीजों को इकट्ठी करता रहा है। सभी उस पर हंसते थे। मैंने भी उससे पूछा,निकलंक, मुझसे संबंधित सब चीजों को इकट्ठी करने की तुम क्यों फ़िकर करते है?

उसने कहा: मुझे नहीं मालुम, पर किसी तरह एक गहरी भावना मेरे अंदर है। मुझे ऐसा लगता है। कि किसी दिन इन चीजों की जरूरत पड़ेगी।

मैंने कहा: फिर ठीक है। अगर तुम्हें लगता है तो फिर ठीक है। तुम ऐसा करते रहो।

और निकलंक की वजह से ही मेरे बचपन के कुछ चित्र बच गए है। उसने ऐसी चीजों को संजो कर रखा है, जिनका आज मूल्य है।

वह हमेशा चीजें इकट्ठी करता था। यहां तक कि अगर मैं कुछ कचरे की डलिया में भी डाल देता तो वह देखता कि कहीं मैंने कुछ अपना लिखा हुआ तो नहीं फेंका। कुछ भी होता मेरी लिखाई की वजह से वह रख लेता। पूरा शहर सोचता कि वह पागल है। लोगों ने मुझसे कहा भी, आप तो पागल हो ही, वह आपसे भी ज्यादा पागल लगता है।

पर उसने मुझसे जितना प्रेम किया है उतना पूरे परिवार में किसी ने नहीं किया। हांलाकि सभी मुझसे प्रेम करते है, पर उस जैसा नहीं। उसके पास वह फोटो जरूर होगा क्योंकि वह हमेशा चीजें इकट्ठी करता रहा है। मुझे याद है कि मैंने वह फोटो,बटन खुला हुआ, उसकी एकत्रित चीजों में देखा है। और मैं अभी भी इंद्र बहादुर के चेहरे पर झुंझलाहट देख सकता हूं। वे सभी चीजों के बारे में बहुत ही सख्त किस्म के आदमी थे। पर मैं भी अपने किस्म का आदमी था।

मैंने उससे कहा: फोटो के बारे में भूल जाओ। यह मेरी फोटो होगी या आपकी। आप अपनी फोटो बटन बंद करके निकलवाना लेकिन आपको पता है कि मैं अपनी बटनों को कभी बंद नहीं करता। अगर इस फोटो के लिए मैं बंद करूं तो यह झूठी होगी। या तो ऐसे ही मेरी फोटो लो या फिर इसके बारे में भूल जाओ।

यह बहुत अच्छा था, बहुत सुंदर....पर सीधे रहो। मेरे साथ समतल होना लागू नहीं होता। ठीक। जब सब चीजें अच्छी, बहुत अच्छी चल रही हो तब रूक जाना बेहतर होता है। और देव गीत, यह बहुत सुंदर है, पर बस हो गया । देवराज,उसकी मदद करो। आशु, तुम भी अपना काम अच्छे से करो। मैं बोलते रहना पसंद करता पर समय पूरा हो गया है। कहीं न कहीं तो रूकना ही होता है।

बस।

--ओशो

परिशिष्ट प्रकरण—

पीपल का वृक्ष और मेरे आंसू—(प्रकरण-1)

इस बारे में तुम मेरी मां से पूछ सकते हो—क्योंकि इस समय वे यहीं है...। अपने जन्म के बाद तीन दिनों तक मैंने जरा भी दुध नहीं पिया, और वे सभी परेशान थे, चिंतित थे। चिकित्सक चिंतित थे कि यदि यह बच्चा दूध पीने से इनकार कर रहा है तो वह किस प्रकार जी सकेगा। लेकिन उन्हें मेरी परेशानी का कोई भी अनुमान नहीं था, कि वे मेरे लिए क्या कठिनाई पैदा कर रहे थे। वे प्रत्येक संभव उपाय से मुझे दुध पीने के लिए बाध्य करने का प्रयास कर रहे थे। और ऐसा कोई उपाय न था जिससे मैं उनको समझा सकूँ, या वे स्वयं ही मेरी कठिनाई को समझ लेते। अपने पिछले जन्म में अपनी मृत्यु से पूर्व मैं उपवास में था। मैं इक्कीस दिनों का उपवास पूरा करना चाहता था, किंतु इसके पहले कि मेरा उपवास पूरा हो पाता तीन दिन पूर्व मेरी हत्या कर दी गई। तीन दिनों का इस जन्म में भी मुझको पूरा बोध था, कि मुझे अपना उपवास पूरा करना है। मैं वास्तव में जिद्दी हूं, वरना लोग चीजों को एक जन्म से दूसरे जन्म ले नहीं जाते; एक बार एक अध्याय बंद हो गया तो बंद हो गया। लेकिन उन तीन दिनों तक मेरे मुंह में वे कुछ भी डाल पाने में सफल नहीं हो सके, मैंने बस अस्वीकार कर दिया था उसको। लेकिन तीन दिन बाद मैं पूरी तरह से सामान्य हो गया था, और वे सब आश्चर्यचकित हो उठे, 'तीन दिन तब यह बच्चा इनकार क्यों कर रहा था, न कोई बिमारी थी, न कोई समस्या थी—और तीन दिन बाद वह पूरी तरह से सामान्य हो गया।' यह मामला उनके लिए रहस्य बना रहा। मैंने कुछ नहीं किया, मैंने केवल वह करना जारी रखा जो मैं अपने पिछले जन्म में कर रहा था। और इसीलिए मेरे बचपन में मुझको पागल, सनकी समझा जाता था। क्योंकि मैं कभी इसका कोई कारण नहीं बताता था कि कोई भी काय्र में क्यों करना चाहता था। मैं बस कह देता था कि मैं यह करना चाहता हूं। मेरे पास उसके लिए कारण थे कि मैं क्यों कर रहा हूं, लेकिन वे कारण मैं आपको नहीं बता सकता हूं, क्योंकि आप और समझ नहीं सकते हो?'

मेरे पिता कहते थे, 'मैं नहीं समझ सकता और तुम समझ सकते है?' मैं कहता, 'हां, वह कुछ ऐसी बात है जो मेरे आंतरिक अनुभव से जुड़ी है। इसका आपकी आयु से या आपका मेरे पिता होने से कोई लेना-देना नहीं है। निश्चित रूप से आप उससे भी कहीं अधिक समझ सकते है, लेकिन यह कुछ ऐसा है जो मेरे भीतर है—केवल मैं ही वहां पहुंच सकता हूं, आप नहीं पहुंच सकते।'

और वे सब यहीं कहते, 'असंभव है तुम्हे समझ पाना।'

मैं कहता, 'यदि प्रत्येक व्यक्ति को स्वीकार कर लिया जाए तो यह बहुत बड़ी राहत होगी। मुझको बस असंभव की भांति स्वीकार कर लें जिससे कि मैं आपके लिए और अधिक समय समस्या न बनूं और मुझको हर तरह कि बात समझाने की कठिनाई का सामना न करना पड़े। मैं वहीं करने जा रहा हूं जो मुझको करना है। इसको बदलने को कोई भी उपाय नहीं है। मेरे लिए यही परम है। यह आपके द्वारा मुझे अनुमति देने या नहीं देने का प्रश्न नहीं है।'

तो यह मेरा सदा को कार्य था: जो कुछ भी मैं करना चाहूं उसी को मैं कर लूँगा। एक दिन की घटना मैं भूल नहीं सकता हूं.....। कुछ बातें ऐसी है जिनसे कोई तार्किक अर्थ नहीं निकलता है, और उनकी कोई अर्थवत्ता भी नहीं होती, लेकिन किसी तरह वे तुम्हारे स्मृति पटल पर अंकित रहा करती है। तुम समझ नहीं पाते कि किस कारण से वे वहां पर है। क्योंकि ऐसी लाखों चींजे घट चुकी है जो और अधिक महत्वपूर्ण है, और अधिक अर्थपूर्ण है, लेकिन वे सभी स्मृति कोष से खो चुकी है। किंतु कुछ गैर-अर्थपूर्ण चीजें—तुम कोई कारण नहीं खोज सकते क्यों, किंतु वे स्मृति में बनी हुई है। उन्होंने एक छापा छोड़ी हुई है। ऐसी ही एक बात मुझको याद पड़ती है। मैं

स्कूल से आ रहा था, मेरा स्कूल मेरे घर से कोई एक मील दूर था। लगभग आधे रास्ते में एक पीपल का वृक्ष था। मैं दिन में कम से कम चार बार उस पीपल के वृक्ष के पास से होकर निकला करता था। स्कूल जाते समय, फिर भोजन के लिए दोपहर कि समय घर जाते हुऐ, फिर पुन: स्कूल जाते समय, और फिर छुट्टी होने पर घर लौटते समय। इसलिए हजारों बार मैं उस वृक्ष के निकट से होकर निकला था, लेकिन उस दिन कुछ घट गया। वह गर्मी के मौसम का एक दिन था, और मैं वृक्ष के निकट आया, तो मैं पसीने से नहाया हुआ था। मैं उस वृक्ष के नीचे से निकला, और वृक्ष के नीचे इतनी ठंडक थी कि बिना कुछ सोच-विचार किए मैं कुछ क्षण के लिए वहां ठहर गया, पता नहीं क्यों। मैं अस वृक्ष के तन के निकट चला गया, वहां बैठ गया और वृक्ष के तने को अनुभव किया। मैं समझा नहीं सकता है कि क्या हुआ, किंतु स्वयं मैंने अपने को आनंदित अनुभव किया अपने को, जैसे कि मेरे और वृक्ष के मध्य कुछ प्रवाहित हो रहा था। केवल वह ठंडक इसका कारण नहीं हो सकती थी। क्योंकि अनेक बार मैं पसीने से लथपथ था, मैं वृक्ष की ठंडक से होकर गुजरा था। मैं पहले भी वहां ठहरा था, और न ही वहां बैठ गया था जैसे किसी पुराने मित्र से मिल रहा हूं। वह क्षण मेरी स्मृति के आकाश में एक सितारे की भांति जगमगाता रहा है। मेरे जीवन में बहुत कुछ घटित हुआ है, लेकिन मैंने उस क्षण की स्मृति को कभी मंद पड़ते हुए नहीं पाया, मेरी स्मृति में यह अब भी वैसा ही है। जब कभी मैं पीछे लौट कर देखता हूं तो पाता हूं कि, यह अभी भी वही है। न तो उस दिन मैं स्पष्टता से जान पाया कि क्या घटित हो गया था, न आज कह सकता हूं कि क्या हुआ था। लेकिन कुछ घटित हो गया था। और उस दिन से उस वृक्ष के साथ एक विशेष प्रकार का संबंध हो गया था जिसको मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। मनुष्य के साथ भी ऐसी अंतरंगता कभी नहीं घटी। इस पूरे संसार में किसी और की तुलना में मैं वृक्ष के प्रति और अधिक आत्मीय हो गया। मेरे लिए यह एक नियमित कार्य हो गया: जब कभी भी मैं उस वृक्ष के निकट से होकर निकलता मैं वहां कुछ सेकेंड या कुछ मिनट के लिए बैठ जाता और बस वृक्ष को अनुभव करता। अब भी मैं देख सकता हूं—हमारे मध्य कुछ विकसित होता चला गया।

जिस दिन मैंने स्कूल छोड़ा और विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए दूसरे नगर जाने लगा तो मैंने अपने पिता से, अपनी मां से, अपने चाचाओं से और अपने पूरे परिवार से विदा ली। मैं उस प्रकार का व्यक्ति नहीं हूं जो सरलता से विलाप करता है या रोता है। उस समय भी जब मुझको बुरी तरह से सज़ा दी गई हो, और मेरे हाथों से हथेली पर बेंत मारे जाने के कारण खून भी निकल रहा हो, लेकिन तब भी मेरी आंखों में आंसू नहीं आते थे।

मेरे पिता जी कहां करते :'तुम्हारी आंखें में आंसू है भी या नहीं।'

मैं कहता: 'आप मेरे हाथों को बेंत मार-मार कर लहूलुहान कर सकते है लेकिन आप मुझको रोने और चिल्लाने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। और मुझे क्यों रोना चाहिए, क्योंकि आप जो कुछ भी कर रहे है पूरी तरह से ठीक है वह। मैंने कुछ किया है तो अच्छी तरह से उसका परिणाम सोच कर किया है। झूठ मैं कभी बोलता नहीं, इसलिए दंड से बच पाने का कोई उपाय नहीं है। आँसू बहाने में क्या सार है।' लेकिन जब मैं उस वृक्ष के पास विदा लेने के लिए गया तो मैं रोने लगा। अपने पूरे जीवन में यही एकमात्र समय है जो मुझको अपने रोने के लिए याद पड़ता है; अन्यथा मेरे लिए आंसू पूर्णत: अपरिचित थे। मेरे बचपन में मेरी एक बहन, जिसको मैं अपने अन्य सभी भाइयों और बहनों से अधिक चाहता था। उसकी मृत्यु हो गई। और भारत में तुम्हारे दर्जन भर भाई और बहन होते है। मैं अपने पिता को छेड़ा करता था: 'आप एक दर्जन की संख्या पूरी करने से चूक गए'?—क्योंकि आपके केवल ग्यारह बच्चे है, आपको जरा सा गणित लगाना चाहिए था, बस एक बच्चा और पैदा कर लेते।'

और वे कहते, 'तुम मेरे पुत्र हो , लेकिन तुम मेरे साथ भी मजाक करने का प्रयास कर रह हो।'

मैं कहता: 'मैं मजाक नहीं कर रहा हूं, मैं ता बस यह कह रहा हूं किसी को बताने के लिए एक दर्जन बहुत सरल है—और मैं ठीक यहीं कर रहा हूं। यदि कोई मुझसे पूछता है कि आपके कितने भाई बहन है, तो कहना आसान होता एक 'दर्जन'। आपने इसको अनावश्यक रूप से जटिल बना दिया है: ग्यारह। या तो आप दस पर रूक जाते—यह पूर्ण संख्या प्रतीत होती है। इन दस बहनो और भाइयों में से मैं अपनी बहन को बहुत प्रेम करता था, जिसकी जब मैं बहुत छोटा था तब मृत्यु हो गई थी। उस समय मेरी आयु पाँच वर्ष रही होगी और उसकी तीन वर्ष की। लेकिन तब भी मैं रोया नहीं। मैं हैरान और सदमे में था। प्रत्येक व्यक्ति रो रहा था। और उन सभी ने सोचा कि मैं सदमा ग्रस्त हो गया हूं, क्योंकि मैं अपनी बहन को बहुत प्यार करता था। मेरे पूरे परिवार में प्रत्येक व्यक्ति यह जानता था कि मैं उसे बहुत चाहता था और वह मुझको बहुत चाहती थी। उनहोंने सोचा कि शायद ऐसा सदमे के कारण हो गया है कि मेरे आंसू नहीं आ रहे थे, लेकिन मामला वैसा नहीं था।

जब मेरे नाना की मृत्यु हुई तो भी मैं नहीं रोया, जब कि मेरा लालन-पालन उन्ही ने किया था। मेरे जन्म-दिवस पा वे समीप के नगर से हाथी लेकर आया करते थे.....भारत में उन दिनों हाथी या तो राजा लोग रखते थे, क्योंकि उसका रखरखाव उसका भोजन और वह सेवा जिसकी जरूरत हाथी को होती है बहुत खर्चीला है, या उसको महात्मा लोग रखा करते थे। दो प्रकार के लोग उसे रखा करते थे। महात्मा लोग हाथी रख सकते थे, क्योंकि उनके अनुयायी उसका ख्याल रख लेते थे। पड़ोस में एक महात्मा जी रहा करते थे, जिनके पास एक हाथी था, इसलिए मेरे जन्म–दिवस पर मेरे नाना वह हाथी ले आया करते थे। वे मुझको उस हाथी पर चाँदी के सिक्कों से भरी दो थैलियां, दोनों और एक-एक थैली देकर बिठा दिया करते थे।

मेरे बचपन के दिनों में भारत में अभी कागज के नोट चलना आरंभ नहीं हुए थे; रूपये के लिए अभी भी चाँदी का प्रयोग किया जाता था। मेरे नाना दो थैलियां, दोनें और लटकती हुई, बड़ी थैलियां चाँदी के सिक्कों से भर देते थे, और मैं गांव में चारों और चाँदी के सिक्के फेंकता हुआ, लुटाना आरंभ कर देता था। वे मेरे पीछे-पीछे अपनी बैलगाड़ी में और रूपये लेकर आ जाते थे, और मुझको कहते रहते थे: 'कंजूसी मत करो, मेरे पास बहुत सिक्के है। तुम उतने सिक्के नहीं लुटा पाओगें जितने अधिक मेरे पास है, लुटाते चल जाओ।'

स्वभावत: सारा गांव हाथी के पीछे सिक्के लूटता रहता था। यह कोई बड़ा गांव था भी नहीं; पूरे गांव में दो या तीन सौ लोग रहते थे, इसलिए मैं गांव में चारों और गांव के एक मात्र रास्ते पर जाता था। उन्होंने हर संभव ढंग से मुझको यह खयाल देने का प्रयास किया कि मैं किसी राज परिवार का सदस्य हूं। उन्होंने मुझको इतना प्रेम दिया कि मेरे लिए बीमार पड़ जाना असंभव था। अब बीमारी पर तुम्हारा कोई बस तो चलता नहीं। किंतु तुम इसके बारे में अपना मुंह बंद रख सकते हो। यदि मुझे हलका सा सिरदर्द भी हो जाए, तो वे बहुत घबरा जाते थे। व अपने घोड़े को निकाल लाते और उस पर बैठ कर निकटतम चिकित्सक के पास पहुंच जाते और चिकित्सक को साथ लेकर ही लोटते। यह कार्य इतना अधिक दुष्कर था, सिरदर्द से भी अधिक कठिन, इसलिए मैं बस खामोश रहा करता था, इसके बारे में कुछ भी न कहा करता था। जब उन्होंने मेरी गोद में अपने प्राण त्यागे तब भी मेरे आंसू नहीं गिरे। मुझको भी संदेह हो गया कि शायद मेरे शरीर में अश्रु-ग्रंथियां नहीं है।

लेकिन उस दिन पीपल के उस वृक्ष से विदा लेते समय मैं पहली और आखरी बार रोया। मेरे स्मृति कोष में यह बहुत प्रकाशमान अनुभूति बनी हुइ है। और जब मैं रो रहा था तो यह बात मुझको नितांत रूप से सुनिश्चित थी कि वृक्ष की आंखों में भी आंसू अवश्य आए होंगे, हांलाकि मैं उस वृक्ष की आंखें देख नहीं पाया और मुझे आंसू भी दिखाई नहीं दिए। किंतु मैं अनुभव कर सका। जग मैंने वृक्ष को स्पर्श किया तो मुझे उसकी उदासी अनुभव हुई, और मैं उसका आशीष, अलविदा अनुभव कर पाया। और निश्चित रूप से यह मेरा उसके साथ अंतिम भेंट थी, क्योंकि एक वर्ष बाद जब मैं वापस लौटा तो किसी मूर्खतापूर्ण कारण से यह वृक्ष काट डाला

गया था और उसे हटा दिया गया था। यह मूर्खतापूर्ण कारण यह था कि वे एक छोटा स्मृति स्तंभ बना रहे थे, और नगर के मध्य में वह सर्वाधिक सुंदर स्थान था। यह स्मारक उस मूढ़ के लिए था जिसके पास चुनाव जीत सकने और नगरपालिका का आध्यक्ष बनने के लिए पर्याप्त धन था। वह कम से कम पैंतीस वर्षो से उस नगर में नगरपालिका का अध्यक्ष पद पर सबसे लंबे समय तक रहने बाला व्यक्ति था1 उसकी अध्यक्षता से प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न था, क्योंकि वह बहुत मूर्ख था, तुम कुछ भी कर डाला और वह कोई रूकावट उत्पन्न नहीं करता था। तुम सड़क के ठीक मध्य में अपना मकान बना सकते थे। और वह कोई चिंता नहीं करता था। तुम्हें बस उसको बोट देना पड़ेगा। इस लिए पूरा नगर उससे प्रसन्न था, क्योंकि प्रत्येक व्यिक्त को पूरी तरह स्वतंत्रता थी। नगर समिति, सभासद, क्लर्क और हेड़कलर्क वे सभी उससे प्रसन्न थे। प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता था कि सदा कि लिए वही अध्यक्ष बना रहे। लेकिन सौभाग्य से मूढ़ों को भी मरना पड़ता है। किंतु उसकी मृत्यु एक दुर्भाग्य थी, क्योंकि उन्होंने उसके लिए स्मारक बनाने के लिए एक स्थान की तलाश की और उन लोगों ने वह पीपल का वृक्ष काट डाला। अब एक जीवित पीपल के वृक्ष के स्थान पर संगमरमर के पत्थर का स्तंभ वहां खड़ा है। मैं बातों को भूलता नहीं हूं, लेकिन कहे जाने के लिए बहुत बातें हे। और भाषा एक आयामी है, रेखीय है—तुम केवल एक रेखा, एक आयाम में जा सकते हो—और अनुभव बहुआयामी होता है, यह हजारों रेखाओं में गति करता है। तथाकथित वक्ताओं के साथ समस्या होती है। कि क्या कहा जाए। मेरी समस्या है कि क्या न कहा जाए, क्योंकि कहे जाने के लिए बहुत कुछ है जो प्रतीक्षा कर रहा है, हर और से द्वार खटखटा रहा है और कह रहा है, 'मुझे भीतर आने दो।' इसलिए मैं बहक जाता हूं....लेकिन स्मरण कराने में शर्माओ मत।

--ओशो

मृत्यु के प्रतीक्षा—(प्रकरण-2)

एक ज्योतिषी ने मेरी जन्म-कुंडली तैयार करने का वादा किया था, लेकिन उससे पहले कि वह यह काम कर पाता उसकी मृत्यु हो गई, इसलिए उसके बेटे को जन्म-कुंडली तैयार करनी पड़ी। लेकिन वह भी हैरान था। उसने कहा: 'यह करीब-करीब निश्चित है कि यह बच्चा इक्कीस वर्ष की आयु में मर जाएगा। प्रत्येक सात साल के बाद उसको मृत्यु को सामना करना पड़ेगा।'

इसलिए मेरे माता-पिता, मेरा परिवार सदैव मेरी मृत्यु को लेकर चिंतित रहा करते थे। जब कभी मैं नये सात वर्ष के चक्र के आरंभ में प्रवेश करता, वे भयभीत हो जाते। और वह सही था। सात वर्ष की आयु में मैं बच गया। लेकिन मुझे मृत्यु का गहन अनुभव हुआ—मेरी अपनी मृत्यु का नहीं बल्कि मेरे नाना की मृत्यु का। और मेरा उनसे इतना लगाव था कि उनकी मृत्यु मुझको अपनी स्वयं की मृत्यु प्रतीत हुई। अपने स्वयं के बचपन के ढंग से मैंने उनकी मृत्यु की अनुकृति की। मैंने लगातार तीन दिनों तक भोजन नहीं किया, पानी नहीं पिया, क्योंकि मुझको लगा कि यदि मैं यह सब करता तो यह नाना के साथ विश्वासघात होता। मैं उनको इतना प्रेम करता था, वे मुझको इतना प्रेम करते थे कि जब वह जीवित रहे मुझको अपने माता-पिता के घर नहीं जाने दिया, में अपने नाना-नानी के पास ही रहा। उन्होंने कहा: 'जब मैं मर जाऊँ केवल तभी तुम जा सकते हो।' वे एक बहुत छोटा गांव था। इस लिए मैं किसी स्कूल में न जा सका, क्योंकि वहां कोई स्कूल नहीं था। वह मुझे कभी न छोड़ते, लेकिन फिर वह समय आया जब उनकी मृतयु हो गई। वह मेरा अभिन्न अंग थे। मैं उनकी उपस्थिति, उनके प्रेम के सान्निध्य में बड़ा हुआ हूं। जब उनकी मृत्यु हुई, मुझको लेगा कि भोजन करन उनके प्रति

विश्वासघात होगा, अब मैं जीवित रहना नहीं चाहता.... यह खयाल बचपना था, लेकिन इसके माध्यम से कुछ गहरा घटित हो गया। तीन दिनों तक में लेटा रहा, में बिस्तरे से उठ कर नहीं आता था। मैंने कहा, जब उनकी मृत्यु हो गई है, मैं जीवित रहना नहीं चाहता। मैं जीवित, परंतु वे तीन दिन मृत्यु का एक अनुभव बन गए। एक ढंग से मैं मर गया, और मुझको वह स्पष्ट बोध हो गया—अब मैं इसके बारे में बता सकता हूं, यद्यपि उस समय यह बस एक धुंधला सा अनुभव था—मुझे अनुभव हो गया है। यह एक अनुभूति थी।

फिर चौदह वर्ष की आयु में मेरा परिवार पुन: परेशान हो गया कि मैं मर जाऊँगा। मैं फिर बच गया, लेकिन तब मैंने सचेतन रूप से प्रयास किया। मैंने उनसे कहा: 'यदि मृत्यु घटने ही वाली है, जैसा कि उस ज्योतिषी ने कह रखा था, तो बेहतर है कि तैयारी कर ली जाए और मृत्यु को अवसर क्यों दिया जाए। क्यों न मैं चला जाऊँ और आधे रास्ते में उससे भेंट करूँ?' यदि मैं मरने वाला हूं तो बेहतर यही है कि होशपूर्वक मरा जाए। ' इसलिए मैंने अपने स्कूल से सात दिनों के लिए अवकाश ले लिया। मैं अपने स्कूल के प्रधानाचार्य के पास गया और उनसे कहा: 'मैं मरने जा रहा हूं।'

उन्होंने कहा: 'तुम यह क्या बकवास कर रहे हो? क्या तुम आत्महत्या करने जा रहे हो, मरने जा रहे हो इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय है।'

मैंने उनको ज्योतिषी की उस भविष्यवाणी के बारे में बताया कि प्रत्येक सात वर्ष के बार मेरा मृत्यु की संभावना से आमना-सामना होगा। मैंने कहा: 'मैं मृत्यु की प्रतीक्षा करने के लिए सात दिन के एकांत वास कर रहा हूं। यदि मृत्यु आती है, तो यह अच्छा है कि उससे होश पूर्वक भेंट कर ली जाए जिससे कि यह एक अनुभव बन जाए।'

अपने गांव के ठीक बाहर मैं एक मंदिर में चला गया। मैंने पुजारी से बात करके व्यवस्था कर ली कि वह मुझको तंग नहीं करेगा। चह बहुत अकेला सह वीरान मंदिर था, पुराना खँड़हर, इसमें कभी कोई नहीं आता था। इसलिए मैंने उससे कहा: 'मैं मंदिर में ही रहा करूंगा। दिन में एक बार आप मुझे कुछ खाने कि लिए और पीने के लिए दे दिया करें, और मैं वहां पर सारा दिन मृतयु की प्रतीक्षा में लेटा रहूंगा।'

मैंने सात दिनों तक प्रतीक्षा की। वे सात दिन एक सुंदर अनुभव बन गए। मृतयु कभी नहीं आई, लेकिन मैंने अपनी और से मृत होने के हर संभव प्रयास किए। असाधारण, अद्‌भुत अनुभव हुए। अनेक बातें घटित हुई, लेकिन मूलभूत तथ्य यह था कि यदि तुमको अनुभव हो रहा है कि तुम मरने बाले हो, तो तुम शांत और मौन हो जाते हो। तब कुछ भी कोई चिंता उत्पन्न नहीं करता। क्योंकि सभी चिंताएँ जीवन से संबंधित है। जीवन सभी चिंताओं का आधार है। जब तुमको किसी भी तरह से एक दिन मर ही जाना है, तो चिंता क्यों करनी?' मैं वहां पर लेटा हुआ था। तीसरे या चौथे दिन मंदिर में एक सांप आया। यह मुझको दिखाई पड़ रहा था; मैं उस सांप को देख रहा था, लेकिन कोई भय न था। अचानक मुझे विचित्र अनुभव हुआ। सांप निकट और निकटतर आता जा रहा था। और मुझको बहुत विचित्र अनुभव हुआ। कोई भय न था, इसलिए मैंने सोचा, ' जब मृत्यु आ रही है, तो हो सकता है कि यह इस सांप के द्वारा आ जाए, इसलिए भयभीत क्या होना? प्रतीक्षा करो।' सांप मेरे ऊपर से होकर निकला और दूर चला गया। भय खो गया। यदि तुम मृत्यु को स्वीकार कर लेते हो तो कोई भय नहीं है। यदि तुम जीवन से चिपकते हो, तब हर प्रकार का भय होता है।'

अनेक बार मक्खियां मेरे आस-पास आई, वे मेरे चारों और उड़ी, वे मेरे ऊपर मेरे चेहरे पर चलती रहीं। कभी-कभी मुझे बेचैनी हुई और मैं उनको भगा देता, लेकिन फिर मैंने सोचा, 'अब इसका अपयोग ही क्या, अब या तो मैं मरने ही वाला हूं, और इस देह की रक्षा करने वाला कोई न होगा, इसलिए उनको अपना काम कर लेने दो।'

जिस क्षण मैंने उनको उनके ढंग पर छोड़ दिया, बेचैनी मिट गई। अभी भी वे मेरे शरीर पर चल रही थी, लेकिन अब जैसे मेरा उनसे सरोकार न रहा। वे पूर्ववत रेंगती रहीं, चलती-फिरती रही, लेकिन जैसे किसी और के शरीर पर हों। अचानक एक दूरी हो गई। यदि तुम मृत्यु को स्वीकार कर लेते हो, तो एक दूरी निर्मित हो जाती है। जीवन अपनी सभी चिंताओं, बेचैनियों, सभी कुछ से दूर चला जाता है।'

एक ढंग से मैं मर गया, लेकिन मुझे ज्ञात हो गया कि कुछ अमर्त्य मुझमें है। एक बार तुम पूर्णत: मृतयु को स्वीकार कर लो, तो तुम इसके प्रति सजग हो जाते हो।

फिर पुन: इक्कीस वर्ष की आयु में मेरा परिवार मेरी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। तब मैंने उनसे कहा: 'तुम लोग क्यों प्रतीक्षा करते हो? प्रतीक्षा मत करो। अब मैं नहीं मरने बाला हूं।'

शारीरिक रूप से किसी दिन निस्संदेह मेरी मृत्यु हो जाएगी। फिर भी, ज्योतिषी की इस भविष्यवाणी ने मेरी बहुत सहायता की, क्योंकि उसने मुझे बहुत जल्दी मृतयु के बारे में सजग कर दिया था। मैं सतत रूप से ध्यान कर सका और स्वीकार कर सका कि यह आ रही है।'

टोपी लगाए—(प्रकरण-3)

एक बार मेरे पिता ने मेरी सभी सलवारें और मेरे कुर्ते और मेरी तीनों तुर्की टोपियों एक पोटली में बाँध कर घर के तहखाने में ऐसे स्थान पर रख दीं जहां अनेक प्रकार की बेकार टूटी-फूटी चीजें पड़ी हुई थी। मुझे पहनने के लिए उनमें से कुछ नहीं मिला, इसलिए जब मैं स्नानगृह से बहार आया तो अपनी आंखें बंद करके नग्नावस्था में दुकान में पहुंच गया। जैसे ही मैं बाहर निकल रहा था, मेरे पिता ने कहा: 'ठहरो, जरा भीतर तो आओ, अपने वस्त्र लिए जाओ।'

मैंने कहा: 'वे जहां कहीं भी हैं आप उनको लेकर आइए।'

उन्होंने कहा: 'मैंने कभी न सोचा था कि तुम ऐसा करोगे। मैंने सोचा कि तुम चारों और देखोगे और कपड़ों की खोज करोगे, और जब वे तुम्हें नहीं मिलेंगे—क्योंकि मैंने उनको ऐसे स्थान पर रख दिया है कि तुम्हें वह नहीं मिल पाते, तब स्वभावत: तुम उन सामान्य से वस्त्रों को पहन लोगे जो तुम्हें पहनना चाहिए। मैंने कभी नहीं सोचा तुम ऐसा कर ड़ालोगे।'

मैंने कहा: 'मैं सीधे ही कर डालता हूं, मैं अनावश्यक वार्ता में भरोसा नहीं करता; मैं किसी से पूछता भी नहीं कि मेरे वस्त्र कहां रखे है। मुझे क्यों पूछना चाहिए? मेरी नग्नता यही उद्देश्य पूरा कर देगी।'

उन्होंने कहा: 'ये लो अपने वस्त्र और अब तुम्हारे वस्त्रों के बारे में तुमको कोई परेशान नहीं करेगा, लेकिन कृपया नग्न होकर चलना मत आरंभ कर देना, क्योंकि उससे और अधिक परेशानियां निर्मित होगी—कि कपड़ा बेचने वाले के पुत्र के पास पहनने के लिए कपड़े तक नहीं है। तुम बदनाम हो और अपने साथ हमें भी बदनाम कर दोगे; बेचारे बच्चे को तो देखो, प्रत्येक व्यक्ति सोचेगा कि हम तुम्हें वस्त्र नहीं दे रहे है।'

उसके बाद से उन्होंने मेरे वस्त्रों पर आपति करना बंद कर दिया। जब मैंने मैट्रिक्यूलेशन पास कर लिया तो मैंने वे वस्त्र पहनना छोड़ दिए। जैसे मैंने वह नगर छोड़ा मैंने अपने वस्त्रों को अपने कालेज के जीवन के अनुसार परिवर्तित कर लिया। मैं जिस पहले कालेज में पढ़ने गया तब मुझे पता लगा कि वहां पर छात्रों के लिए टोपी अनिवार्य थी—तुम टोपी लगाए बिना कालेज में नहीं आ सकते। यह एक विचित्र खयाल था। तुमको उचित प्रकार के वस्त्र, जूते पहन कर, शर्ट के बटन बंद करके, टोपी लगा कर ही कालेज आना पड़ता था। मैं वहां

बिना बटन का कुर्ता पहन कर, बिना टोपी लगाए, अपनी लकड़ी की खड़ाऊँ पहन कर चला गया—और तुरंत ही मैं वहाँ विख्यात हो गया। प्रधानाचार्य ने तुरंत मुझको बुलवाया। 'उन्होंने कहा: यह क्या है।'

मैंने कहा: 'यह बस आपसे परिचित होने का उपाय है, वरना इस काम में वर्षो लग सकते थे। पहले वर्ष के छात्र के बारे में कौन चिंता करता है।'

उन्होंने कहा: 'हो सकता है कि इसके पीछे तुम्हारा कोई ख्याल होगा, लेकिन कालेज में इस प्रकार के वेश की अनुमति नहीं है; तुम्हें टोपी पहनना पड़ेगी और बटन बंद रखना पड़ेंगे।'

मैंने कहा: 'आपको मेरे सम्मुख सिद्ध करना पड़ेगा कि टोपी पहनने का कोई वैज्ञानिक कारण है। क्या इससे किसी प्रकार से आपको बुद्धि मता के विकास में कोई सहायता मिलती है। तब मैं पगड़ी तक बाँध सकता हूं। टोपी तो क्या है, यदि यह आपके मस्तिष्क की शक्ति को बढ़ाती है तो, लेकिन तथ्य यह है कि भारत में सबसे अधिक मूर्ख पंजाब में पाए जाते है, और वे कस कर बंधी हुई पगड़ी का प्रयोग करते है। संभवत: पूरे संसार में वे एकमात्र लोग है जो इतना कस कर पगड़ी बाँधते है। उनका दिमाग पूरी तरह से कारागृह में होता हे, इस लिए दिमाग बचता ही नहीं। और भारत में सर्वाधिक बुद्धिमान हैं बंगाली लोग, जो टोपी का प्रयोग नहीं करते। मैंने कहा: आप बस मुझको बता दें कि इसके मूलभूत वैज्ञानिक कारण क्या है, कि मुझे टोपी पहल लेनी चाहिए।'

उन्होंने कहा: 'अजीब बात है यह, किसी ने टोपियों के बारे में मूलभूत वैज्ञानिक कारण कभी नहीं पूछे। इस कालेज में हमारी बस एक परंपरा है यह।'

मैंने कहा: 'परंपराओं की परवाह नहीं करता। यदि परंपरा अवैज्ञानिक है और लोगों की बुद्धि मता नष्ट कर रही है, तो मैं वह पहला व्यक्ति हूं जो उसके विरोध में विद्रोह करेगा। और जल्दी ही आप कालेज से टोपियों को गायब होता हुआ देखेंगे। मैं लोगों को बताने जा रहा हूं, देखो, बंगाली लोगों के पास सर्वश्रेष्ठ बुद्धि मता होती है और वह टोपी का प्रयोग नहीं करते है।'

'भारत में पहला नोबल पुरस्कार बंगाली व्यक्ति को मिला है। मैं कभी नहीं सोचता कि भविष्य में कभी भी नोबल पुरस्कार किसी पंजाबी व्यक्ति को मिलेगा। मैं इस आंदोलन को फैलाने जा रहा हूं। लेकिन यदि आप खामोश रहें और मुझे जैसा मैं हूं वैसा ही रहने की अनुमति प्रदान कर दें तो मैं कोई उपद्रव पैदा नहीं करूंगा, वरना यहां पर एक आंदोलन होगा। आप अपने कार्यालय के सामने आग जलती हुई देखेंगे, टोपियों की होली जलेगी।'

उन्होंने मुझे देखा और बोले: 'ठीक है, कोई गड़बड़ी मत करना, जैसे तुम हो वैसे ही जारी रखो, लेकिन मैं परेशानी में पड़ जाऊँगा, क्योंकि आज नहीं तो कल दूसरे लोग पूछने बाले है: आपने इनको बिना टोपी के आने की अनुमति क्यों दे दी?'

मैंने कहा: 'सच्ची बात तो यह है कि यदि आप एक ईमानदार आदमी है, तो आपको स्वयं टोपी लगाना बंद कर देना चाहिए। क्योंकि आपके पास इसके लिए कोई विज्ञानिक आधार नहीं है। वरना जो आता है इसके वैज्ञानिक मूलभूत कारण खोजने के लिए कह दें—कि किसी ढंग से यह बुद्धि के विकास के लिए सहयोगी है। और कालेज का अर्थ है लोगों की बुद्धि को तेज करने में सहायता देना। वह बुद्धि को अवरूद्ध कर देती है। तो टोपी किस भांति सहायता कर सकती है।' किंतु, वे बोले: 'कम से कम बटन......'

मैंने कहा वे मुझे पसंद नहीं है, मुझे हवा का सीधे ही मेरे सीने तक आना पसंद है, मैं इसका आनंद लेता हूं, मुझको बटन पसंद नहीं है। और कालेज कोड़ में कहीं भी नहीं लिखा है कि तुम्हें बटनों को प्रयोग करना पड़ेगा।' लेकिन वहां कभी किसी ने सोचा भी न था कि कालेज में लोग बिना बटन के आ सकते है। --ओशो

विश्वास चमत्कार और साईं बाबा—(प्रकरण-4)

कल ही मेरी मां मुझे बता रही थीं.....ओर विवेक ने पहली बार इस उत्साह से इतनी देर तक बात करते हुए सुना; वरना जो कुछ भी उनसे पूछा जाता है वह एक या दो वाक्यों में, हां या नहीं में उत्तर दिया करती है और वार्तालाप संपन्न हो जाता है। लेकिन कल उन्होंने लंबे समय बात की और वे काफी उत्साहित थी, इसलिए विवेक ने मुझसे पूछा, 'आपकी मां आपको क्या बता रही थी।'

मैंने उससे कहा: 'वे कुछ बातें याद कर रही थी। मैंने उसे अभी तक नहीं बताया कि वे मुझे क्या बता रही थी, क्योंकि यह एक लंबी कहानी थी। वे मुझको बता रही थी कि उनके गर्भ में जब मैं पाँच माह का था तब एक चमत्कार घटित हुआ था।'

वे मेरे पिता के घर से अपने पिता के घर जा रही थी। और यह बरसात का मौसम था। भारत में यह रिवाज है कि पहले बच्चे का जन्म नाना के घर पर हो, इसलिए यद्यपि बरसात का मौसम चल रहा था और जाना बहुत कठिन था, सड़कें नहीं थी और उन्हें घोड़े पर जाना पडा था। जितनी जल्दी वे पहुंच जातीं उतनी ही बेहतर होता, यदि उन्होंने और अधिक प्रतीक्षा की होती तो यह और कठिन हो जाता, इसलिए वे अपने चचेरे भाई के साथ चली गईं। यात्रा के मध्य में एक बड़ी नदी थी, नर्मदा। इसमें बाढ़ आई हुई थी। जब वे नाव पर पहुंचे तो मल्लाह ने देखा कि मेरी मां गर्भवती है, और उसने मेरी मां के चचेरे भाई से पूछा, 'आपका आपस में क्या रिश्ता है।'

वे नहीं जानते थे कि वे परेशानी में पड़ जाएंगे, इसलिए उन्होंने बता दिया: 'हम भाई और बहन है।'

मल्लाह ने इनकार कर दिया, उसने कहा: 'मैं आपको नहीं ले जा सकता, क्योंकि आपकी बहन गर्भवती है—इसका अर्थ हे आप दो नहीं है, आप तीन है।'

भारत में यह एक रिवाज है, पुराना रिवाज है—शायद यह कृष्ण के समय से आरंभ हुआ होगा—कि किसी को अपनी बहन के पुत्र के साथ पानी पर यात्रा, विशेषत: नाव के द्वारा नहीं करना चाहिए, ऐसा होने पर नाव डूबने का खतरा है। मल्लाह ने कहा: 'इस बात का क्या प्रमाण है कि तुम्हारी बहन के गर्भ में जो शिशु है वह लड़की है लड़का नहीं है। यदि वह लड़का है तो मैं खतरा लेना नहीं चाहता, क्योंकि केवल मेरे जीवन का प्रश्न नहीं है, नाव में साठ अन्य लोग भी जा रहे है। या तुम आ सकते हो या तुम्हारी बहन आ सकती है। दोनों को मैं नहीं ले जाऊँगा।'

नदी के दोनों किनारों पर जंगल और पहाड़ थे। और नाव दिन में केवल एक बार जाया करती थी। सुबह नाव जाती थी। और की चौडाई वास्तव में इतनी अधिक थी कि नाव शाम वक ही लौट पाती थी। अगली सुबह यह पुन: जाएगी, वह नाव। तो या तो मेरी मां को इस पार ठहरना पड़ता, जो खतरनाक था या अकेले ही उस पार जाना पड़ता, यह भी उतना ही खतरनाक था। अत: तीन दिनों तक वे मल्लाह से बात करते रहे, उससे निवेदन करते रहे, यह बताते रहें कि वे गर्भवती है और उसको दया करनी चाहिए। वह बोला: 'इसमें मैं कोई सहायता नहीं कर सकता, ऐसा नहीं किया जाता है। यदि तुम मुझको यह प्रमाण दे दो कि इनके गर्भ में यह बच्चा लड़का नहीं है, तब मैं तुमको ले जा सकता हूं; लेकिन तुम मुझे प्रमाण किस प्रकार दे सकते हो।'

इस लिए तीन दिनों तक उनको वहां एक मंदिर में रहना पडा। उस मंदिर में एक संत रहा करते थे, उन दिनों उस क्षेत्र में वे बहुत प्रसिद्ध थे। अब उस मंदिर के चारो और उस संत की स्मृति में एक नगर बस गया है—साई खेड़ा। साई खेड़े का अर्थ होता है, 'संत का गांव।' वे साईं बाबा के नाम से जाने जाते थे। ये वह साईं बाबा

नहीं है जो विश्वविख्यात हो गए—शिरड़ी वाले साईं बाबा—किंतु वे समकालीन थे। शिरड़ी वाले साईं बाबा इस साधारण से संयोग के कारण विश्वविख्यात हो गए, क्योंकि शिरड़ी बंबई के निकट है, और बंबई के सभी के सभी प्रसिद्ध व्यक्तियों ने और बंबई के सभी धनी व्यक्तियों ने शिरड़ी बाले साईं बाबा के पास जाना आरंभ कर दिया था। और क्योंकि बंबई विश्व भर के लोगों के आवागमन का केंद्र था, शीध्र ही शिरड़ी वाले साईं बाबा का नाम भारत के बाहर पहुंचने लगा, ओरा उनके चारों और अनेक चमत्कार निर्मित कर दिए गए। उस मंदिर में रहने वाले साईं बाबा की भी वैसी ही प्रतिष्ठा थी। अंतत: मेरी मां को साईं बाबा से निवेदन करना पडा: क्या आप कुछ कर सकते है? तीन दिनों से हम लोग यहां पर पड़े हुऐ है। मैं गर्भवती हूं, और मेरे चचेरे भाई ने मल्लाह को बता दिया है कि वह मेरा भाई है, और वह हमें नाव में बिठाने को तैयार ही नहीं है। अब जब तक कि आप कुछ नहीं करेंगें, नाव वाले से कुछ न कहेंगे, हम यहीं फंसे रहेंगे। क्या किया जाए, मेरा भाई मुझको अकेला छोड़ नहीं सकता; मैं अकेली उस पार जा नहीं सकती। दोनों किनारों पर घने जंगल और जानवर है, और कम से कम चौबीस घंटे मुझको अकेले रह कर प्रतीक्ष करनी पड़ेगी। मेरी साईं बाबा से कभी भेंट नहीं हुई, लेकिन एक अर्थ में मैं उनसे मिल चुका हूं, उस समय मैं गर्भ में पाँच माह का था। उन्होंने मेरी मां के उदर को छू लिया। मेरी मां ने कहा: 'यह आप क्या कर रहे है।'

उन्होंने कहा: 'मैं तुम्हारे बच्चे के चरण स्पर्श कर रहा हूं।'

मल्लाह ने यह देखा और कहा: बाबा, आप यह क्या कर रहे है? आपने कभी किसी के चरण स्पर्श नहीं किए।' और तब बाबा ने कहा: 'यह बच्चा कोई साधारण नहीं है; और तुम मूढ़ हो, तुमको उन्हें दूसरी और ले जाना चाहिए। चिंता मर करो, इस गर्भ के भीतर जो आत्मा है वह हजारों लोगों को तारने में सक्षम है, इसलिए अपने उन साठ लोगों कि चिंता मत करो, उन्हें उस पार ले जाओ।'

तो मेरी मां कह रह थी, 'उसी समय मुझको पता लगा कि मेरे गर्भ में कोई विशिष्ट आत्मा है।'

मैंने कहा: 'जब तक मैं समझता हूं, साईं बाबा एक होशियार आदमी थे, उस मल्लाह को उन्होंने वास्तव में मूर्ख बना दिया। इसमें कोई चमत्कार नहीं है, ऐसा कुछ नहीं है। और नावें इसलिए नहीं डूबा करती हैं कि अपनी बहन के पुत्र के साथ यात्रा कर रहा है। इस खयाल का कोई तार्किक आधार नहीं है, असंगत है यह बात। शायद कभी संयोगवश ऐसा कुछ हो गया होगा, और तब यह एक नियमित ख्याल बन गया।' मेरी अपनी समझ यह है, क्योंकि कृष्ण के जीवन में उनके मामा कंस को ज्योतिषियों ने बता दिया था कि तुम्हारी बहन की संतान में से कोई एक तुम्हें मार डालेगा, 'तो उसने अपनी बहन और अपने जीजा को कारागृह में डाल दिया। उसने सात बच्चों, सात लड़कों को जन्म दिया और मामा ने उन सभी को मार डाला। आठवां बच्चा कृष्ण थे, और निस्संदेह जब स्वयं परमात्मा को जन्म लेना था, तो कारागृह के सभी ताले खुल गए और पहरेदार गहरी नींद में सो गए, और कृष्ण के पिता उनको बाहर ले गए।'

कंस के राज्य की सीमा में यमुना नदी थी। कंस वही व्यक्ति था जो अपनी बहन के पुत्र को इस भय के कारण मारने जा रहा था कि उसके पुत्रों में से कोई उसको मार डालने वाला है। यमुना में बाढ़ आई हुई थी, और यह भारत की विशालतम नदियों में से एक है। कृष्ण के पिता वसुदेव बहुत भयभीत थे, लेकिन किसी भी तरह बालक को नदी के उस पार, एक मित्र के घर जिसकी पत्नी ने एक बालिका को जन्म दिया था, पहुंचाना ही था—जिससे कि वे उनकी अदला-बदली कर सकें। वे बालिका को अपने साथ ले आते क्योंकि अगली सुबह कंस वहां आकर पूछता, बच्चा कहां है? और उसको मारने की सोचता। लेकिन वह बालिका को नहीं मारेगा, मारने के लिए बच्चे को लड़का होना चाहिए। लेकिन नदी पार कैसे की जाए, रात्रि में कोई नाव भी नहीं थी, किंतु नदी तो पार करनी ही थी। लेकिन जब परमात्मा कारागृह के तालों को बिना चाबी के, बिना किसी के द्वारा खोले हुए

खोल सकता है—वे बस स्वय: खुल गए, द्वार खुल गए, रक्षक सो गए—परमात्मा कुछ करेगा। इसलिए उन्होंने बच्चे को एक टोकरी में रखा और नदी को पार कर लिया—कुछ वैसा ही हुआ जैसा मोज़ेज के साथ हुआ, जब सागर दो भागों में बट गया इस बार यह भारतीय ढंग से हुआ। ऐसा मोज़ेज के साथ नहीं हो पाया था। क्योंकि वह सागर भारतीय नहीं था, किंतु यह यमुना नदी भारतीय थी। जैसे ही उनहोंने बच्चे को एक टोकरी में रखा और नदी को पार कर लिया—कुछ वैसा कि यह क्या हो रहा है। उन्हें आशा थी कि नदी नीची हो जाएगी, किंतु यह ऊपर उठने लगी। वह उस बिंदु तक ऊपर उठती चली गई जहां पर उसने कृष्ण के चरणों को स्पर्श कर लिया, फिर वह वापस नीचे हो गई। यह है भारतीय ढंग, ऐसा और कहीं नहीं हो सकता। नदी यह अवसर कैसे चूक सकती थी, जब परमात्मा ने जन्म लिया है और उसमें से होकर गुजर रहा है, तो बस उसको रास्ता दे देना ही पर्याप्त नहीं है, शिष्टाचार नहीं है। उस समय ऐसा खयाल बन गया कि व्यक्ति और उसके भांजे में विरोध होता है, क्योंकि कृष्ण ने अपने मामा कंस को मार डाला। यमुना नदी पार कर ली गई, उसने रास्ता दे दिया; उसने शिशु के साथ सहयोग किया। तब से नदिया, भारत की सभी नदिया मामाओं से क्रुद्ध है। और यह अंधविश्वास अभी तक चला आ रहा था।

मैंने अपनी मां से कहा: 'एक बात तो तय है कि साईं बाबा एक बुद्धिमान और मजाकिया स्वभाव के व्यक्ति रहे होगें। लेकिन उनहोंने नहीं सुना। और जो कुछ भी हुआ वह सारे गांव को पता लग गया। और एक माह बाद इस चमत्कार के समर्थन में एक घटना और घट गई...जीवन में ऐसे अनेक संयोग होते हे जिनको तुम चाहो तो चमत्कार बना सकते हो। एक बार तुम तय कर लो कि चमत्कार बना लेना है, तो किसी भी संयोग को चमत्कार में बदला जा सकता है।'

एक माह बाद बहुत बड़ी बाढ आई, और मेरी मां के घर के सामने बरसात के मौसम में एक नदी सी बहा करती थी। वहां एक झील थी, और घर तथा झील के माध्य के एक छोटी सी सड़क थी, लेकिन वर्षा ऋतु में इतना अधिक पानी आता था कि वह सड़क पूरी तरह से नदी की भांति हो जाती थी, और झील और सड़क मिल कर एक हो जाया करती थी। यह सागर जैसा बन जाता था और जितनी दूर तक तुम देख सको पानी ही पानी दिखाई देता था। और उस साल भारत में शायद तब तक की सबसे बड़ी बाढ़ आई थी।

भारत में आमतौर पर प्रतिवर्ष बाढ़ें आया करती है। लेकिन उस वर्ष एक विचित्र बात देखने में आई कि बाढ़ों ने नदियों के पानी का प्रवाह उलटना आरंभ कर दिया। बरसात इतनी अधिक हो गई थी कि सागर में जितना पानी बह कर आ रहा था, उतनी तेजी से वह सागर में समा नहीं पा रहा था। इस लिए सागर की और प्रवाह अवरूद्ध हो गया और वह पीछे की और लौटने लगा था। जहां पर छोटी नदियों बड़ी नदियों में मिल जाती है, बड़ी नदियों ने पानी लेने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनमें स्वयं का पानी ही नहीं समा रहा था। छोटी नदियों ने पीछे की और बहना आरंभ कर दिया।

मैंने कभी ऐसा नहीं देखा, मैं इससे चूक गया, लेकिन मेरी मां ने कहा कि पानी को पीछे की और बहते देखना एक अनूठी घटना थी। और वापस लौटता यह पानी घरों में घुसने लगा था, यह मेरी मां के धर में धूस गया। वह दो मंजिल में भरने लगा। जाने के लिए अब कोई स्थान न बचा था। इसलिए वे सभी लोग वहां पर उपलब्ध सबसे ऊंचे स्थानों, पलंगों पर बैठ गए। लेकिन मेरी मां ने कहा: यदि साईं बाबा की बात सही है तो कुछ चमत्कार हो जाएगा। और यह एक संयोग ही रहा होगा कि जैसे ही पानी ने मेरी गर्भवती मां के पेट का स्पर्श किया, वह वापस लौट गया। मेरे जन्म से पहले ये दो चमत्कार घटित हुए थे। घटित हुए थे। इसलिए मेरा उनसे कुछ भी लेना-देना नहीं है। लेकिन ये दोनों चमत्कार विख्यात हो गए थे। इसलिए, जब मेरा जन्म हुआ तो पूरे गांव में मैं करीब-करीब एक संत के रूप में स्थापित हो चुका था। प्रत्येक व्यक्ति बहुत आदरपूर्ण था, यहां तक

कि बूढ़े लोग भी मेरे चरण स्पर्श किया करते थे। मुझे बाद में बताया गया, 'सारे गांव ने तुमको एक संत के रूप में स्वीकार कर लिया था।'

उस समय मैं कोई चार वर्ष का रहा होऊं गा, तब उस घर में मैं एकमात्र बच्चा था—करने को कुछ था भी नहीं, न जाने को कोई स्थान था, न स्कूल। मेरे नाना की एक बहु-उपयोगी दुकान थी। जिसमें हर प्रकार की वस्तु बिका करती थी। गांव की वह एकमात्र दुकान थी, इसलिए प्रत्येक प्रकार की वस्तु...तो यह एक दुकान के स्थान पर एक छोटा मोटा बाजार ही थी। इसलिए मैंने मिठाइयों तथा और दूसरी वस्तुओं के साथ खेलना शुरू कर दिया, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ ऐसा किस भांति होने लगा....लेकिन जल्दी ही मेरे पास ऐसे लोग लगातार आने लगे जो रोगी थे, और उस क्षेत्र में कोई चिकित्सक, कोई वैद्य, कोई अस्पताल नहीं था। सैकड़ों मील के क्षेत्र में दूर-दूर तक कोई अस्पताल नहीं था। किसी तरह मुझे यह समझ में आया कि लोग मुझको संत की भांति समझते थे। और वे मेरे पाँव छूते थे, मैंने उनको औषधि देना आरंभ कर दिया था। और यह औषधियां और कुछ नहीं बल्कि अच्छी तरह से कूट कर मिलाई गई मिठाइयों का मिश्रण थी। जिनको विभिन्न रेगों की शीशी यों में रख दिया गया था। और निस्संदेह वक लोग जिन्हें बुखार या सरदर्द या पेट दर्द होता है इसके कारण मर थोड़े ही जाते है। और वे ठीक होने लगे। वह तो वैसे ही ठीक हो जाते—यह कोई चमत्कार न था, लेकिन यह चमत्कार बन गया था। मेरे नाना कहने लगे—'तुम मेरी दुकान चौपट कर ड़ालोगे, अब यह एक अस्पताल बन गई है। सारे दिन लोग आते रहते है। और कभी तो मुझको भी तुम्हारी औषधियां देनी पड़ती है। और मुझको जरा भी नहीं पता है कि ये औषधियां कैसी है। तुम मेरी मिठाइयों और मेरी दुकान दोनों ही बरबाद कर रहे हो। लेकिन लोग ठीक हो रहे है इसलिए कोई नुकसान नहीं है, तुम अपना काम जारी रखो।'

सात वर्ष का होने पर जब मैं अपने पिता के घर चला गया, तो मैंने औषधियों बांटने बाला अपनी काम छोड़ दिया, किंतु उस गांव से आने बाले लोग जब भी कभी आते मुझको याद दिलाया करते। मुझे वे लोग डाक्टर साहब कहा करते थे। और मैं कहता: 'यहां पर कृपया यह शब्द प्रयोग मत करो, क्योंकि मैंने यह कार्य पूरी तरह से छोड़ दिया है। पहली बात तो यह कि यहां पर मिठाई नहीं है। मेरे पिता की कपड़ों की दुकान है, कपड़ों से मैं औषधि नहीं बना सकता। और यहां कोई नहीं जानता कि मैं चमत्कार कर सकता हूं। पहले लोगों को जानना पड़ता है, फिर तुम चमत्कार कर सकते हो, वरना तुम चमत्कार नहीं कर सकते।'

--ओशो

सत्य का आचरण—(प्रकरण-5)

एक दिन मैं खेल रहा था। मेरी आयु चार पाँच साल कि रही होगी, उससे अधिक नहीं। जिस समय किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी, उस समय मेरे पिता अपनी दाढ़ी बना रहे थे। मेरे पिता ने मुझसे कहा, जरा चले जाओ और उनसे कह दो, 'मेरे पिता जी धर पर नहीं है।'

मैं बहार चला गया और मैंने कहा: 'मेरे पिता दाढ़ी बना रहे है और वे आपको बताने के लिए कह रहें है कि मेरे पिता घर पर नहीं है।' उस व्यक्ति ने कहा: 'क्या? वे भीतर है।'

मैंने कहा: 'हां लेकिन जो उन्होंने मुझसे कहा वह यही है। मैंने आपको पूरा सत्य बता दिया है।'

वह व्यक्ति भीतर आया और मरे पिता ने मेरी और देखा, क्या हो गया, और वह व्यक्ति बहुत क्रोधित हो गया था, उसने कहा: 'जरूर कोई बात है, आपने मुझको इस समय घर आने को कहा था, और आपने इस लड़के के द्वारा मुझे खबर भेज दी कि आप बाहर चले गए है।'

मेरे पिता ने उससे पूछा, लेकिन आप को किस तरह पता चला कि मैं घर के भीतर हूं। उसने कहा: 'इस लड़के ने मुझको पूरी बात बता दी है कि मेरे पिता भीतर है। वे अपनी दाढ़ी बना रहे है और उन्होंने मुझको आपसे यह बताने के लिए कहा है कि वे बाहर गए हुए है।'

मेरे पिता ने मेरी और देखा। मैं समझ गया कि वह कह रहे हैं, जरा प्रतीक्षा करो, इन सज्जन को जाने दो और मैं तुम्हें बताऊंगा।' और मैंने उनसे कहा: 'इससे पूर्व कि ये सज्जन जाएं मैं जा रहा हूं।'

उन्होंने कहा: 'लेकिन मैंने तो तुमसे कुछ नहीं कहा।'

मैंने कहा: 'लेकिन मैं सब समझ गया हूं।'

मैंने उन सज्जन से कहा: 'जरा यहीं रुकिए, पहले मुझको बाहर निकलने दीजिए, क्योंकि मेरे लिए परेशानी खड़ी होने वाली है। लेकिन जाते समय मैंने अपने पिता से कहा: आप मुझको सिखाते है, सत्य का आचरण करो......लेकिन, 'मैंने कहा, यह सत्य का आचरण का अवसर है और यह इस बात की जांच का भी एक मौका है क्या आपका वास्तव में यही अभिप्राय है कि मैं सत्य का आचरण करुँ या आप मुझको चालाकी सिखाने की कोशिश कर रहे है? '

निस्संदेह वे समझ गए कि उस समय चुप रहना ही बेहतर था, तब उन सज्जन के सामने मुझसे झगड़ना ठीक नहीं है। क्योंकि जब वे सज्जन विदा हो जाएंगे मुझको लौट कर घर आना ही पड़ेगा। मैं दो तीन घंटे बाद लौट कर आया, जिससे कि वे शांत हो चुके हों या वहां पर और लोग भी रहे। ओरा कोई समस्या न खड़ी हो। वे अकेले थे। मैं भीतर गया और उन्होंने कहा: 'चिंता मत करो, मैं अब कभी तुमसे उस तरह की बात नहीं कहूंगा। तुमको मुझे क्षमा करना ही पड़ेगा। इस प्रकार से वे एक श्रेष्ठ व्यकित थे। वरना चार या पाँच वर्ष के बच्चे की चिंता कौन करता है।'

और अपने पूरे जीवन में उन्होंने इस तरह की कोई बात नहीं कही। वे जानते थे कि मेरे प्रति दूसरे बच्चों से भिन्न होना पड़ेगा।

--ओशो

दादा और मेरी शरारतें—(प्रकरण-6)

मेरे दादा मेरी शरारतों के कारण मुझसे बहुत प्रेम करते थे। उस वृद्धावस्था में भी वे शरारती थे। उन्होंने मेरे पिता या चाचाओं को कभी पसंद नहीं किया, क्योंकि वे सभी इस बूढ़े आदमी की शरारतों के विरूद्ध थे। वे सभी उनसे कहते थे कि 'अब आप सत्तर साल के हो चुके है और आपको उसी प्रकार से आचरण करना चाहिए। अब आपके बेटे पचास-पचपन साल के है, आपकी बेटियाँ पचास साल कि है। उनके बच्चों की शादियाँ हो चुकी है, उनके बच्चों के बच्चें हो चूके है। और आप ऐसे काम करते रहते है कि हमको शर्म आती है।'

मैं एक मात्र व्यिक्त था। जिससे उनकी निकटता थी, क्योंकि मैं उन्हें इसीलिए चाहता था कि सत्तर साल की आयु में भी उन्होंने अपना बचपना नहीं खोया था। वे किसी बच्चे की भांति ही शरारती थे। और वे शरारतें अपने स्वयं के बेटों और बेटियों और दामादों के साथ किया करते थे। और वे लोग केवल अचंभित रह जात थे।

केवल मैं ही उनका विश्वास पात्र था। क्योंकि हम लोग मिल कर शरारत करते कि योजनाएं बनाते थे। निस्संदेह बहुत से कार्य वे नहीं कर सकते थे। मुझको उनके लिए कार्य करना होता था। उदाहरण के लिए, उनके दामाद कमरे में सो रहे थे। और मेरे दादा उस कमरे की छत पर चढ़ नहीं सकते थे। लेकिन मैं चढ़ सकता था। इसलिए हम लोगों ने मिल कर योजना बनाई: वे मेरी सहायता करेंगे। वह मेरे लिए सीढ़ी बन जाएंगे और मैं उनके ऊपर चढ़ कर छत से टाईल निकाल लुंगा। और बांस में बंधी हुई झाड़ू को इस छेद में डाल कर रात में सोए हुए उनके दामाद का चेहरा छूना...वे डर कर चीख पड़ेंगे और सारा घर उधर की और दौड़ पड़ेगा,...क्या मामला है? लेकिन उस समय तक हम भाग चुके होते। और वे कहते, वहां कोई भूत या कोई व्यक्ति मेरा चेहरा छू रहा था। मैंने उसको पकड़ने की कोशिश की लेकिन मैं पकड़ नहीं सका, अँधेरा था।' मेरे दादा पूर्णत: निर्दोष बने रहते थे, और में उस महत स्वतंत्रता को देखता था जो उनमें थी। मेरे पूरे परिवार में वे सबसे अधिक आयु के थे। उनको सबसे गंभीर और अनेक समस्याओं और अनेक उलझनों से परेशान होना चाहिए था, किंतु उनको कुछ भी प्रभावित नहीं करता था। जब समस्याएं होती थी तब हर कोई चिंतित और गंभीर हो जाया करता था। केवल वे ही चिंतित नहीं होते थे। लेकिन उनकी एक बात मुझे कभी पसंद नहीं आई, इसी कारण से में इस समय उनको याद कर रहा हूं। और वह बात थी उनके साथ सोना। उनको अपना चेहरा ढंक कर सोने की आदत थी और मुझको भी उनके साथ चेहरा ढक कर सोना पड़ता था, और इससे दम घुटता था। मैंने उनसे साफ-साफ कह दिया, 'और सभी बातों में मैं आपसे राज़ी हूं, लेकिन इसे मैं सहल नहीं कर सकता। आप अपना चेहरा खोल कर नहीं सो सकते और मैं अपना चेहरा ढाँक कर नहीं सा सकता—इस लिए कि मेरा दम घुटता है। आप ऐसा प्रेम वश करते है—वे मुझको अपने ह्रदय से लगा लेते और मुझको पूरी तरह से ढक लेते थे। 'यह बिलकुल ठीक है। लेकिन इस तरह सोकर सुबह मेरे दिल की धड़कन बंद हो चुकी होगी। आपकी चाहत तो अच्छी है, लेकिन सुबह आप जीवित होगें और मैं विदा हो चुका होऊं गा। इसलिए हमारी मित्रता बस बिस्तर के बाहर की है।'

वे चाहते थे कि मैं उनके साथ रहा करुँ, क्योंकि वे मुझे प्रेम करते थे। और उन्होंने कहा था, 'तुम आकर मेरे साथ क्यों नहीं सोया करते है।'

मैंने कहा: 'आप भलीभाँति जानते है कि मुझे किसी के द्वारा दम घोटा जाना पसंद नहीं है। भले ही दम घोटने वाले की चाहत अच्छी हो। आप मुझको प्रेम करते है और आप रात में भी मुझे अपने ह्रदय से लगा कर रखना चाहते है। हम सुबह भी दुर तक टहने जाया करते थे, और कभी-कभी रात्रि में भी जब चाँद चमक रहा होता। किंतु मैंने कभी उनको अपना हाथ नहीं पकड़ने दिया। और वे कहते, 'तुम मुझको अपना हाथ क्यों नहीं पकड़ने देते? तुम गिर सकते हो, तुमको किसी पत्थर या किसी और चीज से ठोकर लग सकती है।'

मैंने कहा: 'ऐसा बेहतर है। मुझको ठोकरें खा लेने दें, यह ठोकर मुझे मार नहीं सकती, यह ठोकर मुझे सिखा देगी कि अब कैसे ठोकर न खाई जाए, कैसे सजग रहा जाए, किस प्रकार याद रखा जाए कि चट्टानें कहां पर है। लेकिन आपने मेरा हाथ पकड़ हुआ है, कब तक आप मेरा हाथ पकड़े रह सकेगें। आप कितने दिन मेरे साथ रहने बाले है। यदि आप यह भरोसा दिला सकें कि आप सदैव मेरे साथ रहेगें, तो निस्संदेह मैं आपका हाथ पकड़ कर चलने को राज़ी हूं।'

वे बहुत ईमानदार व्यक्ति थे, उन्होंने कहा: 'ऐस भरोसा मैं नहीं दिला सकता। मैं तो कल के बारे में भी नहीं कह सकता हूं। और एक बात निश्चित है, अभी तुम बहुत समय तक जाओगे और मैं मर चुका होऊंगा, इसलिए मैं तुम्हारा हाथ पकड़ने के लिए सदा यहां नहीं रहने बाला हूं।'

'तब, मैंने कहा: 'मेरे लिए बेहतर यही रहेगा कि मैं अभी से सीख लू, क्योंकि एक दिन आप मुझे बीच से असहाय छोड़ देंगे। और यदि आपने मुझे आपका हाथ पकड़ने के लिए प्रशिक्षित कर दिया....तो केवल दो उपास

होंगे, या तो मैं किसी कल्पना में जीना आरंभ कर दूँगा: पिता रूपी परमात्मा, जो असंदिगध रूप से अदृश्य है, तुम्हारा हाथ थामे हुए है और वह तुम्हें लेकर चल रहा है।'

मैंने अपने दादा से कहा: 'मैं नहीं चाहता कि मुझे ऐसी परिस्थिति में छोड़ दिया जाए जहां पर मुझको जीने के लिए किसी कल्पना का निर्माण करना पड़े। मैं एक असली जीवन जीना चाहता हूं। कोई नकली जीवन नहीं। मैं किसी उपन्यास का कोई पात्र नहीं हूं। इसलिए आप मुझे अकेला छोड़ दें। मुझको गिरने दें। मैं उठने का प्रयास करूंगा। आप प्रतीक्षा करें, बस देखते रहिए। और वह मेरे हाथ पकड़ने के स्थान पर मेरे प्रति अधिक करुणापूर्ण व्यवहार होगा।'

और वे समझ गए यह बात; उन्होंने कहा: 'तुम ठीक कहते हो, एक दिन मैं संसार में नहीं रहूंगा।'

--ओशो

"पिता का थप्पड़ मारना"—(प्रकरण-7)

मेरे दादा प्रत्येक मामले मैं सदैव मेरे पक्ष में रहा करते थे। यदि वे कर सकते तो वे मेरे साथ सहभागिता करने को तत्पर रहते थे। निस्संदेह उन्होंने कभी मुझे दंडित नहीं किया, उनहोंने मुझे सदा पुरस्कृत किया।

मैं हर रात देर से घर आया करता था, और घर में घुसते ही जो पहली बात वे पूछते थे सह यह कि 'आज तुमने क्या-क्या किया है।' सब कुछ कैसा चल रहा है, कोई परेशानी तो पैदा नहीं हुई, रात में उनके बिस्तर पर साथ बैठ कर हमारी सदा महफिल जमा करती थी। और वे हद बात का मजा लेते थे। मैं उनको हद बात बताया करता था। जो उस दिन हुई थी और वे कह देते, 'वास्तव में एक अच्छा दिन था।'

मेरे पिता ने मुझको केवल एक बार दंडित किया, क्योंकि मैं एक मेले में जो नगर से कुछ मील दूर प्रतिवर्ष हुआ करता था, चला गया था। वहां पर हिंदुओं की पवित्र नदियों में से एक नर्मदा बहा करती थी, और नर्मदा के तट पर एक महीने तक एक विशाल मेला लगा करता था। इसलिए मैं बिना उनसे पूछे वहां मेले में चला गया।

मेले में इतना कुछ चल रहा था कि...मैं केवल एक दिन के लिए गया था और मैंने सोचा था कि रात तक वापस लौट जाऊँगा, लेकिन वहां पर देखने के लिए बहुत कुछ था, जादुगर, सर्कस, नाटक। इसलिए एक दिन में वापस लौट पाना संभव न था। इसलिए मैं वहां पर तीन दिन तक रुका रहा...सारा परिवार चिंता में पड़ गया: 'मैं कहां चला गया था?' पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। ज्यादा से ज्यादा ऐसा होता था कि मैं देर रात घर लौटता था, लेकिन लगातार तीन दिन तक मैं कभी घर से...ओर वह भी बिना किसी संदेश कि दूर नहीं रहा। उन्होंने मेरे प्रत्येक मित्र के घर पूछताछ की, मेरे बारे में किसी को पता नहीं था। और चौथे दिन जब मैं घर लौट कर आया, उस समय मेरे पिता वास्तव में बहुत क्रोध में थे। उन्होंने मुझसे कुछ पूछने से पहले ही मुझे एक थप्पड़ मार दिया। मैंने कुछ भी नहीं कहा। फिर मैंने कहा: 'क्या आप मुझे एक और थप्पड़ मारना चाहते है? आप मार सकते है क्योंकि इन तीन दिनों में मैंने पर्याप्त मजा लिया है। जितना मैं आनंदित हो चुका हूं उससे अधिक थप्पड़ आप नहीं मार सकते, इसलिए आप कुछ और थप्पड़ मार सकते है। इससे आप शांत हो जाएंगे और मेरे लिए यह पिटना बस एक संतुलन होगा। मैं स्वयं को आनंदित कर चुका हूं।'

उन्होंने कहा: 'तुम वास्तव में विचित्र हो। तुमको थप्पड़ मारना अर्थहीन है। इससे तुम आहत नहीं हुए हो, तुम और थप्पड़ों की मांग कर रहे हो। क्या तुम्हें पुरस्कार और दंड में कोई अंतर नहीं कर सकते हो।'

मैंने कहा: 'नहीं, मेरे लिए हर बात एक प्रकार का पुरस्कार के अनेक प्रकार होते है। लेकिन प्रत्येक बात एक प्रकार का पुरस्कार होती है।' उन्होंने मुझसे पूछा: 'इन तीन दिनों से तुम कहां थे?'

मैंने कहा: 'यह तो आपको मुझे थप्पड़ मारने से पहले पूछना चाहिए था। अब आप मुझसे पूछने का अधिकार खो चूके है। मुझसे पूछे बिना ही थप्पड़ मार दिया गया। अब मामला निबट चुका है—इस अध्याय को बंद कर दीजिए। यदि आप जानना चाहते थे, तो आपको पहले ही पूछ लेना चाहिए था। लेकिन आप में जरा भी धैर्य नहीं है। एक मिनट का धैर्य ही पर्याप्त रहा होता। लेकिन मैं आपको लगातार इस चिंता में नहीं देखना चाहता कि मैं कहां रहा था, इसलिए आपसे में कहूंगा कि मैं मेले में गया था। '

उन्होंने पूछा: 'तुमने मुझसे क्यो नहीं पूछा?'

मैंने कहा: 'क्योंकि मैं जाना चाहता था। सत्यवादी बनता, यदि मैंने पूछा होता, क्या आपने मुझे मेले में जाने की अनुमति दे दी होती, सत्य कहिए।' उन्होंने कहा: 'नहीं।'

मैंने कहा: 'इससे पूरी बात स्पष्ट हो जाती है कि मैंने क्यों आपसे नहीं पूछा, कयोंकि मैं जाना चाहता था। और यह आपके लिए और भी कठिन होता। यदि मैंने आपसे पूछा होता और अपने कहा होता नहीं और फिर भी मैं चला गया होता तो मेरा जाना आपके लिए और भी कठिन रहा होता। आपके लिए इसे और सरल करने के लिए मैने नहीं पूछा, और मुझको इसके लिए पुरस्कार मिल गया है। और यदि आप मुझे और अघिक पुरस्कार देना चाहते है तो मैं उसको लेने के लिए तैयार हूं। लेकिन मैंने मेले में इतना आनंद लिया है। कि मैं हर साल वह जाया करूंगा। इसलिए...जब कभी भी मैं खो जाऊँ आप जान लें कि मैं कहां हूं। चिंता त करें।'

उन्होंने कहा: '' यह आखिरी बार है कि मैंने तुमको दंडित किया है, पहली और आखिरी बार। शायद तुम ठीक कहते हो: यदि तुम वास्तव में जाना चाहते थे तो यही एकमात्र उपाय था, क्योंकि मैं तुमको मेले में जाने की अनुमति नहीं देने बाला था। उस मेले में हर प्रकार की परिस्थितियां होती है: वेश्याएं हो वहां, नशीले पदार्थ वहाँ उपलब्ध है। वहां मादक औषधियां बिका करती हैं—और भारत मैं उस समय मादक द्रव्यों के बारे में कोई कानूनी रूकावट नही थी, प्रत्येक मादक द्रव्य आसानी से उपलब्ध था। और मेले में सभी प्रकार के साधु-महात्मा एकत्रित होते थे। सभी हिंदू साधु महात्मा मादक द्रव्यों का प्रयोग करते है—इसलिए मैंने तुमको जाने की अनुमति नहीं दी होती। और यदि तुम वास्तव में जाना चाहते थे, तो शायद तुम्हारा न पूछना उचित था।' मैंने उनसे कहा: 'लेकिन मैं वेश्याओं की या साधु-महात्माओं की या मादक द्रव्यों की चिंता नहीं करता। आप मुझे जानते हे, यदि मुझे मादक द्रव्यों में रूचि होती तो इसी नगर में ही मेरे घर के बस बगल में ही एक दुकान थी जहां सारे मादक द्रव्य अपलब्ध थे। और वह आदमी तो मेरे प्रति इतना मैत्रीपूर्ण है। कि यदि मैं कोई मादक द्रव्य लेना चाहूं तो वह कोई पैसा भी नहीं लेगा, इसलिए यह मेरे लिए कोई समस्या...वेश्याएं नगर में ही उपलब्ध है। यदि मुझे उनका नृत्य देखने में रूचि होगी तो मैं वहां उनके पास जा सकता हूं। मुझे कौन रोक सकता है? नगर में साधु महात्मा लगातार आते रहते है। लेकिन मैं जादूगरों में उत्सुक था।'

और जादू में मेरी रूचि चमत्कारों में रूचि से संबंधित है1 भारत में विभाजन से पहले मैंने गलियों में जादूगरों, गरीब जादूगरों द्वारा किए जाने बाले हर प्रकार के जादू को देखा है। पूरा खेल समाप्त होने के बाद शायद उन जादूगरों के पास कोई एक रूपया ही एकत्रित हो पाता था। मैं कैसे विश्वास कर लू कि वे जादूगर लोग मसीहा है? एक रूपये के लिए वे तीन घंटे तक करीब-करीब असंभव कार्य कर रहे थे। निस्संदेह प्रत्येक कार्य की एक युक्ति होती है लेकिन यदि तुम उस युक्ति को नहीं जानते हो तो यह चमत्कार है।

तुमने बस सूना होगा—मैंने उनको एक रस्सी ऊपर उछालते हुए देखा है, और यह रस्सी स्वत: खंभे की तरह सीधी खड़ी हो जाती है। उनके साथ एक लड़का होता है, जिसे वे जमुना कहा करते है, प्रत्येक जादूगर के

पास एक जमुना होता है। मैं नहीं जानता कि इसे अंग्रेजी में कैसे अनुवादित किया जाएं...बस 'मेरा लड़का' है इसका अभिप्राय। और वह जमूरे से बात करता है। 'जमूरे, क्या तुम रस्सी पर चढ़ जाओगे?' और वह कहेगा, हां उस्ताद मैं चढ़ जाऊँगा। और लगातार चलने बाली इस बातचीत को जादू की इस युक्ति से कुछ संबंध होता है। इससे लोगों का मन बातचीत में अटका रहता है, और यह बातचीत अनेक ढंग से मजेदार होती है। मैंने उस लड़के को तनी हुई रस्सी पर और फिर वह आदमी नीचे से पुकारता है, 'जमुरे'।

और दूर ऊपर से आवाज आती है। 'हां उस्ताद।' और वह कहता है, 'अब मैं तुम्हें टुकड़-टुकड़े करके नीचे लाऊंगा।' फिर वह एक छुरा ऊपर की और फेंकता है और लड़के कर सर नीचे आता है। वह फिर से छुरा ऊपर की और फेंकता है और एक टाँग नीचे आ जाती है। टुकड़े-टुकड़े होकर लड़का नीचे आता है। और जादूगर उन टुकड़ों को एक साथ रखता चला जाता है। उनको एक चादर से ढक देता है और कहता है: 'जमूरे, अब जाओ।'

और जमूरा कहता है। हां, 'उस्ताद'। जादूगर चादर हटा देता है और लड़का उठ कर खड़ा हो जाता है। वह रस्सी नीचे खींच लेता है। इसे लपेट लेता है, इसे अपने थैले में रख देता है और पैसा मांगता आरंभ कर देता है। और उसको अधिक से अधिक एक रूपया मिल पाएगा—क्योंकि उन दिनों भारत में चौंसठ पैसे एक रूपये के बराबर होते थे। और उसे कोई भी एक पैसे से अधिक नहीं देने वाला था। अधिक से अधिक दो पैसे कोई दे देता; और एक बहुत धनी व्यकित उसको चार पैसे दे देता है। यदि उसने अपने इस चमत्कार से एक रूपया एकत्रित कर लिया तो वह सौभाग्यशाली है। मैंने हर प्रकार के तमाशे देखे है, और जो लोग उनको कर रहे थे वे बस भिखारी थे।

--ओशो

ब्राह्मण की चोटी काटना—(प्रकरण-8)

मेरे बचपन में—क्योंकि उसके बारे में मैं तुमसे अधिक अधिकार पूर्वक बात कर सकता हूं; मैं तुम्हारे बचपन के बारे में नहीं जानता, केवल अपने बचपन के बारे में जानता हूं—यह प्रश्न प्रतिदिन का था। मुझसे लगातार सत्यभाषी होने के लिए कहा जाता था। मैंने अपने पिता को कहा: 'जब कभी आप मुझसे सत्यभाषी होने के लिए कहते है, आपको एक बाप स्मरण रखनी चाहिए कि सत्य को पुरस्कृत किया जाना चाहिए, अन्यथा आप मुझको सत्य भाषण न करने भाषण न करने के लिए बाध्य कर रहे है। में सत्य भाषण के लिए राज़ी हूं।'

बहुत सालता से मैंने जान लिया था कि सत्य से कुछ नहीं मिलता, तुमको दंड दिया जाता है। असत्य से मिलता है: पुरस्कृत किए जाते हो तुम। अब यह प्रश्न बहुत निर्णायक था, बहुत अधिक महत्व का था। इसलिए मेंने अपने माता-पिता से यह मामला स्पष्ट कर दिया था कि यह बात बहुत साफ-साफ समझ जी जानी चाहिए, यदि आप चाहते है कि मैं सत्यवादी रहूँ तो सत्य को पुरस्कृत किया जाना चाहिए, और पुरस्कार भविष्य के जीवन में नहीं वरन अभी और यहीं मिलना चाहिए। क्योंकि में अभी और यहीं सत्य भाषण कर रहा हूं। और यदि सत्य को पुरस्कृत नहीं किया गया, यदि मुझको इसके लिए दंडित कर दिया गया, तो आप मुझे झूठ बोलने के लिए बाध्य कर रहे है। इसलिए इसे स्पष्ट रूप से समझ लेना फिर मेरे लिए कोई समस्या नहीं है, मैं सदा सत्यवादी रहूँगा।' जो हुआ वह इस प्रकार से है: मेरे परिवार के मकान से कोई दो या तीन मकान छोड़ कर एक ब्राहमण परिवार, बहुत दकियानूसी ब्राहमण लोग रहा करते थे। ब्राहमण लोग अपने सर के सारे बाल काट लेते है। और सिर के पृष्ठभाग पर, सातवें चक्र के ऊपर एक छोटी सा भाग छोड़ देते है। इस प्रकार बालों का भाग

बढ़ता रहता है। वे इसमें गांठ बाँध लिया करते है। और उसको अपनी टोपी या अपनी पगड़ी के भीतर रखा करते है। और मैंने जो कर डाला वह यह था, कि मैंने उस परिवार के मुखिया के बाल काट लिए। भारत में गर्मी के दिनों में लोग मकान के बाहर गली में सोया करते है। वह अपने बिस्तर, अपनी चारपाइयों गली में बिछा लेते है। रात में सार नगर गलियों में सोया करता है, क्योंकि भीतर बहुत गर्मी होती है।

तो यह ब्राहमण बाहर गली में सो रहा था—और इसमें मेरा कोई दोष भी नहीं है....उसकी इतनी लंबी चोटी थी; बालों के इस गुच्छे को चोटी कहा जाता है। मैंने पहले कभी इसको नहीं देखा था। क्योंकि वह सदा उसको पगड़ी के भीतर छिपा के रखता था। अब जब वह सो रहा था, वह नीचे लटकी हुई थी और गली को छू रही थी। उसकी खाट से लेकर वह इतनी लंबी थी, कि मैं प्रलोभित हो गया। मैं अपने आपको रोक नहीं पाय, मैं दौड़ कर घर गया, कैंची लेकर आया, उसे पूरी तरह काट लिया, उसको पकड़ा और उसे अपने कमरे में रख दिया। प्रात: सॉंकर उठने के बाद उन्हें पता लग गया कि वह नहीं रही। उन्हें इस बात पर विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि उनकी सारी शुद्धता इसी चोटी में थी। उनका सारा धर्म इसी में था—उनकी पूरी आध्यात्मिकता नष्ट हो गई थी। लेकिन पड़ोस में हर व्यक्ति को पता था कि यदि कुछ गड़बड़ हो जाती है....तो सबसे पहले वे दौड़ कर मेरे पास आया करते थे। और वे तुरंत उस गए। सुबह-सुबह वे आने बाले हे यह भलीभाँति जान कर मैं बाहर बैठा हुआ था। उस ब्राहमण ने मुझको देखा। मैंने भी उसकी और देख। उनहोंने मुझसे कहा: 'क्या देख रहे हो तुम। '

मैं बोला: 'आप क्या देख रहे है, वही चीज?'

उन्होंने कहा: ''वही चीज?' मैंने कहा: 'हां, वही चीज। आप उसका नाम बताइए।'

उन्होंने कहा: 'पिता जी कहा है?' मैं तुमसे कोई बात करना नहीं चाहता।' वे भीतर चले गए। वे मेरे पिता को लेकर बाहर आए और मेरे पिताजी ले पूछा: 'क्या तुमने इन सज्जन के साथ कुछ गड़बड़ काम किया है?'

मैंने कहा: 'मैंने इन सज्जन के साथ कुछ भी नहीं किया है। लेकिन मैंने एक चोटी काट ली है जो निश्चित रूप से इनका अंग नहीं है, क्योंकि जब में उसको काट रहा था तो ये क्या कर रहे थे? ये उसे काटे जाने से रोक सकते थे।'

उन सज्जन ने कहा: 'मैं सोया हुआ था।'

मैंने कहा: 'यदि मैंने आपके हाथ कि अंगुलि काट ली होती तो भी क्या आप सोए रहते?'

उन्होंने कहा: 'यदि मेरी अंगुलि काट रहा हो तो मैं कैसे सोया रह सकता हूं?'

मैंने कहा: 'इसी बात से यह निश्चित तौर पर सिद्ध हो जाता है कि बाल मृत होते है, आप उनको काट सकते है, इससे व्यक्ति को कोई कष्ट नहीं होता है, न रक्त निकलता है, तो यह हंगामा किस लिए? यहां एक मुर्दा चीज लटकी हुई थी...ओर मैंने सोचा कि आप व्यर्थ में ही इस मुर्दा चीज को अपने सारे जीवन अपनी पगड़ी में सम्हाल कर रखे रहेंगे—तो क्यों न आपको छुटकारा दिलाया जाए? वह चोटी मेरे कमरे में रखी हुई है। और मेरा पिताजी के साथ सत्य बोलने का समझौता है।' इसलिए मैं वह चोटी बाहर लेकर आया और कहा: 'यदि आपको इसमें रूचि है, तो आप इसे वापस ले सकते है। यदि यही आपकी आध्यात्मिकता, आपका ब्राह्मणत्व है, तो उसकी गांठ काक पहले की भांति आप अपनी पगडी में रख सकते है। यह चोटी तो हर प्रकार से मुर्दा ही है। जब यह आपसे जुड़ी हुई थी तब भी यह मुर्दा थी, और जब मैंने इसे आपसे अलग किया था तब भी यह मुर्दा थी। आप इस कटी हुई चोटी को अपनी पगड़ी में भीतर रख सकते हो।'

और तब उन सज्जन के सामने ही मैंने अपने पिता से कहा: 'मेरा पुरस्कार?'

उन सज्जन ने पूछा: 'यह लड़का किस बात पुरस्कार मांग रहा है?'

मेरे पिता जी ने कहा: 'यही तो परेशानी है। कल इसने प्रस्ताव रखा था कि यदि यह सत्य बोलता है...ओर इस समय तो यह पूरी निष्ठा के साथ सत्य बोल रहा है, यह न केवल सत्य बता हरा है बल्कि यह तो अपने कृत्य को समर्थन में प्रमाण भी दे रहा है। उसने पूरी कहानी सुना दी है—और इसके पीछे छिपा हुआ तर्क भी उसके पास है—कि सह एक मुर्दा चीज थी, इसलिए एक मुर्दा चीज की चिंता के क्यों पड़ना? और वह कोई बात छिपा भी नहीं रहा है।' उन्होंने मुझको पाँच रूपये का पुरस्कार दिया। उस समय उस छोटे से गांव में पाँच रूपये एक बड़ा पुरस्कार था। वे सज्जन मेरे पिता के प्रति क्रोध से पगला गए।

उनहोंने कहा: 'आप इस लड़के को बिगाड़ देंगे। उसको पाँच रूपये देने के स्थान पर आपको इसे पीटना चाहिए था। अब वह अन्य लोगों की चोटियों काट डालेगा। यदि उसे प्रत्येक चोटी काटने के लिए पाँच रूपये मिल जाते है, तब नगर के सभी ब्राहमण तो गए काम से, क्योंकि वे सभी रात में अपने घर के बाहर सोया करते है। और जब आप सो रहे होते हे तो सारी रात अपनी चोटी अपने हाथ में पकड़े नहीं रह सकते। और इस प्रकार पुरस्कार देकर आप यह क्या कर रहे है?' यह इसकी शैतानियां के समर्थन में उदाहरण बन जाएगा।' मेरे पिता ने कहा: 'लेकिन यह मेरा समझौता है। यदि आप उसे दंड देना चाहते है तो यह आपका काम है, मैं बीच में नहीं आऊँगा। मैं उसकी शरारत के लिए पुरस्कार नहीं कर रहा हूं। मैं उसके द्वारा बोले गए सत्य के लिए उसे पुरस्कृत कर रहा हूं—और अपने सारे जीवन भर मैं उसके सत्य के लिए उसको पुरस्कार देता रहूंगा। जहां तक शरारत का संबंध है आप उसके साथ कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र है।'

उन सज्जन ने मेरे पिता से कहा: 'आप मुझको और बड़ी मुसीबत में डाल रहे है। यदि में इस लड़के के साथ कुछ करता हुं तो आप सोचते है कि मामला वहीं समाप्त हो जाएगा? मैं धर गृहस्थी वाला आदमी हूं—मेरी पत्नी है, मेरे बच्चे है, मेरा मकान है—हो सकता है कि कल मेरे मकान में आग लगा दी जाए ? वे बहुत क्रोधित थे, और उन्होंने कहा: 'खासतौर से अब यक एक समस्या बन जाने वाली है, क्योंकि कल मैं उस गांव में ऐ आयोजन करवाने जा रहा हूं, और जब लोग मुझको बिना चोटी के देख लेंगे....'

मैंने कहा: 'चिंता करने की कोई बात नहीं है—मैं यह चोटी आपको वापस किए दे रहा हूं। आपकी चोटी वापस करने के लिए आप भी मुझको पुरस्कार दे सकते है। उस गांव में आप बस अपनी पगड़ी मत उतारना; रात में सोते समय भी अपनी पगड़ी लगाए रखना। बस निबट जाएगा मामला। यह कोई बडी समस्या नहीं है, यह एक रात का सवाल है। और रात में कौन आपकी चोटी देखने वाला है? हर आदमी सोया हुआ होगा।' उन्होंने कहा: 'मुझे सलाह मत दो। मेरा मन तो तुझको पीटने का हो रहा है, लेकिन मुझे बेहतर पता है क्योंकि उससे घटनाओं की एक पूरी शृंखला निर्मित हो जाएगी।'

मैंने कहा: 'घटनाओं की यह शृंखला तो बन चुकी है। आप शिकायत करने आ गए है, आप मुझे नितांत पूर्णता से ईमानदार एवं निष्ठावान होने का, और आपको यह बता देने का कि मैं आपकी चोटी को देख कर उसे काट लेने की अपनी इच्छा रोक नहीं पाया, कोई पुरस्कार भी नहीं दे रहे हैं। और मैंने किसी को कोई हानि भी नहीं पहुँचाई है, न ही कोई हिंसा हो गई है—आपकी चोटी से खून की एक बूंद तक नहीं निकली। मेरे पिता से शिकायत करके ही आपने प्रतिक्रिया की एक शृंखला निर्मित कर ली है।'

उन्होंने कहा: 'देखिए....।'

मेरे पिता ने कहा: 'यह मेरा काम नहीं है।'

और मैंने अपने पिता से कहा: 'पूरा ब्राह्मणवाद जिसे सिखाता है यही है वह बात—प्रतिक्रियाओं की श्रृंखला।'

मेरे पिता ने कहा: 'अपना दर्शन शास्त्र तुम अपने पास रखो। और साधुओं, और मुनियों और महात्माओं के इन प्रवचनों में जाना बंद कर दो, क्योंकि उन प्रवचनों से जो कुछ

भी तुम सीखते हो, उससे इस भांति अजीबो-गरीब हरकतें कर गुजरते हो।'

मैंने कहा: 'किंतु यह तो वही है जो मैं कहा रहा हूं, और यह अजीबो-गरीब नहीं है। यह ठीक वही है जो कर्म का सिद्धांत है: तुम एक कर्म करो, उसका प्रतिकर्म आ जाएगा। इन्होंने मेरे विरूद्ध शिकायत करने का कर्म किया है। अब प्रतिकर्म पीछे से आएगा।'

और पीछे से प्रतिकर्म हुआ, क्योंकि उन्होनें कहा था कि वे उस गांव में जा रहा है..वे मेरे प्रति अत्यधिक क्रोध में थे, लेकिन जब तुम क्रोध में हो जब तुम क्रोध में ही हो...ओर वे पूरी तरह से, वास्तविक रूप से क्रोध से आविष्ट थे। इसलिए वे अपनी पत्नी से, बच्चों से क्रोधित थे....मैंने सभी कुछ देखा, और किसी तरह से उन्होंने अपनी सारा सामान एकत्रित किया और घोड़ा गाड़ी में बैठ कर चल गए।

जैसे ही वे गए, मैंने उनकी पत्नी से कहा: 'क्या आपको समझ में आया कि वे कहां जा रहे है'? वे सदा के लिए जा रहे है—और आपको नहीं पता। वह यह बात मेरे पिता से कहने आए थे। कि वे सदा के लिए जा रहे है। और वे दुबारा कभी लोट कर नहीं आएंगे। उनकी पत्नी ने अचानक रोना और चिल्लाना शुरू दिया, 'हाय, उनको रोको कोई?'

दूसरे लोग दौड़े-दौड़े गए और उन्होंने उनकी घोड़ा गाड़ी रोक ली।

उन्होंने कहा: 'आप मुझे क्यों रोक रहे हो। मुझको ट्रेन पकड़नी है।'

उन लोगों ने का: 'आज नहीं। आपकी पत्नी रो रही है और अपनी छाती पीट रही है, वे मर जाएगी।'

उन्होंने कहा: 'लेकिन अजीब बात है, क्यों वे खुद को पीटेगी और क्यों वे रोएंगी?'

वह व्यक्ति जो घोड़ा गाड़ी चला रहा था, बोला, मैं आपको नहीं ले जाऊँगा, यदि मामला ऐसा है कि आप अपनी पत्नी को छोड़ कर जा रहे है। तो मैं ऐसा काम कदापि नहीं करूंगा। उस ब्राह्मण ने कहा: 'में छोड़ कर नहीं जा रहा हूं, में वापस लौट कर आऊँगा, लेकिन अभी मेरे पास आप लोगों को बताने के लिए समय नहीं है। ट्रेन छूट जाएगी, स्टेशन मेरे घर से दो मील दूर है।'

लेकिन उनकी बात कोई नहीं सुन रहा था। और मैं लोगों को भड़का रहा था: 'उनको रोक लो, वरना उनकी पत्नी, उनके बच्चे....उनकी देखभाल आप लोगों को करना पड़ेगी—उनको खाना कोन देगा?'

वे लोग उनको उनके सामान सहित वापस ले आए। और निस्संदेह वे क्रोध में थे। उन्होंने अपनी बैग पत्नी के ऊपर फेंक दिया। उनकी पत्नी ने पूछा: 'हमने किया ही क्या है? आप क्यों इस तरह से घर छोड़ कर भागे जा रहे थे... ?'और मैं बाहर भीड़ में खड़ा था। उन्होंने कहा: 'किसी ने कुछ नहीं किया है। इस लड़के ने मुझसे कहा था कि प्रतिकर्म 'होगा। कारण यह है कि ती दिन पहले मंदिर में मैं कर्म और प्रतिकर्म दर्शनशास्त्र सिखा रहा था। और यह लड़का उपस्थित था। अब यह मुझको सिखा रहा है।

उन्होंने मुझसे कहा: 'मुझको क्षमा कर दो और मैं इस कर्म और प्रतिकर्म के बारे में एक भी शब्द नहीं कहूंगा। और यदि तुम चाहो तो किसी की भी चोटी काट सकते हो, तुम मेरा सर काट सकते हो। और मैं शिकायत नहीं करूंगा, क्योंकि में इस शृंखला को पूरी तरह से रोक देना चाहता हूं। इसके चक्कर में मेरी ट्रेन छूट गई है।'

फिर तो प्रत्येक व्यक्ति पूछने लगा, मामला क्या है? हम कुछ समझे नहीं? आपकी चोटी किसने काट ली है।' मैंने कहा इस शृंखला को रोक पाना असंभव है। ये लोग पूछ रहे है, किसकी चोटी ? उसे किसने काट लिया है? चोटी कहां है? जरा इनकी पगड़ी के भीतर उसके सर पर देखिए। और एक व्यक्ति जो नगर में पहलवान

समझा जाता था आगे बढा और उसने उसकी पगड़ी उतार ली और चोटी निकल कर नीचे गीर पड़ी। मेरे पिता भी वहां पर थे, और उन्होंने यह सभी कुछ देखा। जब हम लोग घर लौट रहे थे उन्होंने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हें पुरस्कृत करूंगा परंतु हमारे समझौते का लाभ मत उठाओ।'

मैंने कहा: 'मैं लाभ नहीं उठा रहा हूं। आपसे और मेरे बीच का समझौता इस प्रकार है भी नहीं। मेरा समझौता यह है कि आपसे सदा सत्य कहूंगा और इसके लिए आप मुझको पुरस्कृत करेंगे।' और उन्होंने इस समझौते का सदैव पालन किया। मैंने जा कुछ भी कर डाला हो, भले ही उनके अनुसार कितना भी गलत हो, उन्होंने लगातार मुझको पुरस्कार दिया। लेकिन उन जैसा पिता पाना कठिन है। पिता को तुम पर अपने खयाल जबरदस्ती थोपने पड़ते है। मेरे पिता की सारे नगर में निंदा की जाती थी। आप बच्चे को बिगाड़ दे रहे हो। उन्होंने कहा: 'यदि बिगड़ जाना ही उसकी नियति है तो बिगड़ जाने दे उसको। मैं उसकी नियति में हस्तक्षेप करने का उत्तरदायी तो न होऊंगा; वह कभी न कह पाएगा कि मेरे पिता ने मुझे बिगाड़ दिया है। और यदि वह बिगड़ जाने में प्रसन्न है तो बिगाड़े जाने में ही क्या गलत है। उसके जीवन में जहां भी जो कुछ घटित होता है मैं हस्तक्षेप करन नहीं चाहता। मेरे पिता ने मेरे जीवन में हस्तक्षेप किया था और में जानता हूं कि यदि उन्होंने ऐसा न किया होता तो मैं एक भिन्न व्यक्ति बन गया होता।'

और मुझे पता है कि वह सही है, कि प्रत्येक पिता बच्चे को एक पांखड़ी के रूप में बदल देता है। क्योंकि में पांखड़ी के रूप में बदला जा चुका हूं। जब में हंसना चाहता हूं, तो में गंभीर बना रहता हूं। तब में गंभीर होना चाहता हूं, तब मुझको हंसना पड़ता है। कम से कम एक व्यक्ति तो उस समय ले जम मैं हंसना चाहता हूं। और उस समय जब वह गंभीर होना चाहता है उसे गंभीर हो जाने दो।

उनहोंने कहा: मेरे ग्यारह बच्चें है, लेकिन मैं स्वयं को दस बच्चों बाला ही समझता हूं। और उन्होंने सदा सही सोचा कि उनके केवल दस बच्चे हैं। मुझको उन्होंने कभी अपनी बच्चों में नहीं गिना, क्योंकि वे बोले, मैंने उसको स्वयं वही होने की पूर्ण स्वतंत्रता दे रखी है। वह क्यों मेरी कोई प्रतिमा ढोता फिरे?

--ओशो

मैं निर्वासित व्यक्ति था—(प्रकरण-9)

जब मैं अपनी प्राथमिक पाठशाला में पढ़ा करता था। उस समय मेरा घर विद्यालय से बहुत निकट था। इसलिए जब विद्यालय के आरंभ होने की घंटी बजती, मेरे लिए वह स्नानागार मैं जाने का समय होता। मेरा पूरा परिवार दरवाजा खटखटा रहा होता, और मैं खामोश रहता—किसी बात का उत्तर भी न देता।

यह प्रतिदिन का क्रम था कि प्रधानाध्यापक मुझे ले जाने आया करते थे, क्योंकि मैं अपनी स्वयं की इच्छा से नहीं जाता था। और वे आ जाते, और पिता कहते, करें क्या? आप इस घंटी को बजाना बंद कर दीजिए, क्योंकि जिस क्षण इसे बजाते है वह तुरंत स्नानागार में चला जाता है। और दरवाजा बंद कर लेता है। और फिर निरर्थक है यह कि आप कुछ कर सकें, क्योंकि आप जो कुछ भी करते रहो, वह उत्तर नहीं देगा।

अंतत: विद्यालय ने घंटी न बजाने का निर्णय ले लिया। और प्रधानाध्यापक आया करते थे—पहले मुझको पकड़ लिया जाता था और तब अन्य बच्चों के लिए घंटी बजा दी जाती थी।

प्रत्येक बच्चे के स्वयं उसके हित के लिए कई बातों के लिए बाध्य करना पड़ता है। मैं उन प्रधानाध्यापक के प्रति आभारी हूं। वे वास्तव में दयालु व्यक्ति थे—बस एक छात्र के लिए उन्होंने विद्यालय की पूरी दिनचर्या ही बदल डाली।

मैं अपने माता-पिता का आभारी हुं मेरे प्रति उनके धैर्य के लिए। सारा परिवार स्नानागार

के बाहर खड़ा हो जाता और मुझको फुसलाता था। तुम बाहर आ जाओ। यदि तुम स्कूल नहीं जाना चाहते हो तो मत जाओ, वहां जाने कि तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं है। हम प्रधानाध्यापक से तुमको आज की छुटटी देने के लिए कह देंगे। लेकिन मैं खामोश रहा करता।

और मैं आभारी हूं, क्योंकि मौन के उन क्षणों ने मुझे बहुत कुछ दिया है। और प्रत्येक व्यक्ति का चारों और चीखना-चिल्लाना और दौड़ना भागना—उस आपाधापी के बीच में मैं केंद्र हुआ करता था। वह फ़व्वारे के नीचे बैठ कर उसका आनंद लेता हुआ।

उस गांव में जहां मेरा जन्म हुआ था, कुम्हारों का एक मोहल्ला बसा हुआ था। और भारत में कुम्हार अपने बर्तन गधों पर ढोया करते है। भारत में बोझ ढोने का यही एक कार्य है, जिसके लिए गधों का उपयोग होता है। यह मोहल्ला मेरे घर के बस पड़ोस में ही था। और वहां अनेक सुंदर-सुंदर गधे थे, लेकिन वे गधे सारा दिन चीजों को ढोने में व्यस्त रहा करते थे। केवल रात में ही वे खाली होते थे। और मैं भी खाली होता था, इसलिए मैं एक गधे को पकड़ लेता था।

भारत में कोई भी गधे पर सवारी नहीं करता,क्योंकि गधे को अस्पर्शित, अछूत समझा जाता है। गधे की सवारी करना....मेरा पूरा परिवार उलझन में पड़ जाता था। क्योंकि पड़ोसी उनको बताया करते थे। हमने आपके पुत्र को गधे पर बैठ कर बाजार की और जाते देखा गया है। जब तक वह नदी पर न जाए और स्नान करके न लौटे उसको घर में मत घुसने देना।

मेरे पिता मुझको समझाने का प्रयास किया करते थे, तुम्हारे लिए हम दूसरी व्यवस्था कर सकते है। और यदि तुम्हें सवारी करने में इतनी रूचि है तो हम तुम्हारे लिए एक घोड़ा खरीद कर ला सकते है।

मैं कहता, मैं घोड़ों में जरा भी उत्सुक नहीं हूं, मेरी रूचि तो गधों में ही है। वे बहुत दार्शनिक प्रकार के जिनके बारे में कोई भविष्यवाणी न की जा सके, ऐसे लोग है। गधा किसी भी स्थान पर रूक सकता है। और आप चाहे जो कर लो, वह ही लेगा भी नहीं। आप अनुमान भी नहीं लगा सकते कि वह क्यों रूक गया है—और इस सामान्य धारणा के विपरीत कि गधे मूर्ख होते है। मेरा अनुभव यह है कि वे बहुत चालाक, चतुर राजनीतिज्ञ होते है।

मेरे पिता ने कहा: क्या तुम गधों पर कोई शोध पत्र लिखना चाहते हो, या क्या मामला है।

मैंने कहा: मैं शोधपत्र लिख सकता हूं, क्योंकि गधों के साथ मेरा अनुभव किसी और की तुलना में अधिक है।

गधे की सवारी करना एक कठिन कार्य है, घोड़ों पर सवारी करना कठिन नहीं है। गधे इतने चालाक होते है कि वे कभी सड़क के बीच में नहीं चलेंगे,वे सदा तुम्हारी टाँग को दीवाल से रगड़ते हुए चला करते है। स्वभावत: ऐसा होने पर तुम कूद कर उनके ऊपर से हट जाओगे।

उनको सड़क के बीच में रख पाना बहुत कठिन था, या तो बाएं या दाएं, लेकिन वह कभी सड़क के मध्य में नहीं चलेंगे। इसलिए मैंने अपने पिता से कहा: गधे दक्षिणपंथी या वामपंथी होते है। वे बुद्ध के अनुयायी मध्यमार्गी नहीं होते।

बुद्ध अपने शिष्यों को सिखाया करते थे: मध्यमार्ग का अनुगमन करो। गधे ही एक मात्र वे लोग है जिनको बुद्ध समझ नहीं पाए। और मैं ऐसा नहीं समझता कि वे मूर्ख लोग है। क्योंकि जब उन पर कोई सवारी नहीं कर रहा होता है तब वे मध्य में चलते है। चालाक होते है वे। और किसी गर्म दिन में तुम उनको वृक्ष के नीचे ठंडक में खड़ा हुआ देख सकते हो।

और गधे की शकल दार्शनिक तुल्य होती है। जैसे कि वह किसी महान मसले पर चिंतन—मनन करने में तल्लीन हों। जरा गधे की शकल पर नजर डालों और तुमको सदैव लगेगा कि वह बहुत कुछ सोच रहा है।

अंतत: मेरे परिवार ने निर्णय लिया कि मुझको रसोई घर में प्रवेश नही दिया जाना चाहिए—क्योंकि हमें ठीक से नहीं पता कि तुम गधे की सवारी कर रहे थे या नहीं। इसलिए मैं सदैव रसोई घर के बाहर बैठा रहता था। मुझे रसोई घर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी, विशेष तौर से मेरी दादी की अनुमति नहीं थी....मैं निर्वासित व्यक्ति था।

--ओशो

दंड या पुरस्कार—(प्रकरण-10)

पक्षियों को सुनते-सुनते मुझे स्मरण हो आता है.....होई स्कूल में बस मेरी कक्षा के बाहर ही आम के अनेक वृक्ष थे। और आम के वृक्षों पर कोयलें अपना घोंसला बनाया करती है। जिसकी पुकार इस समय आ रही है, वहीं है कोयल, और कोयल की बोली में मधुर और कुछ भी नहीं है।

इसलिए मैं खिड़की के पास पक्षियों की ओर, वृक्षों की और बाहर देखता हुआ बैठा करता था, और मेरे शिक्षक बहुत अधिक नाराज रहा करते थे। वे कहा करते,तुम्हें ब्लैक बोर्ड की और देखना पड़ेगा।

मैं कहता,यह मेरा जीवन है और मुझको यह चुनने का पुरा अधिकार है कि कहां देखना है। बाहर कितना सुंदर है—पक्षी गीत गा रहे ह,और ये पुष्प, और ये वृक्ष, और वृक्षों की पत्तियों से छन-छन कर आती हुई यह धूप—तो मैं ऐसा नहीं सोचता कि आपका ब्लैक बोर्ड कहीं से इनका स्थानापन्न बन सकता है।

वे अध्यापक इतने क्रोधित हो उठे कि उन्होंने मुझसे कहा: तब तुम बाहर जा सकते हो। और खिड़की के बाहर उस समय तक खड़े रहो जब तक कि तुम ब्लैक बोर्ड पर देखने को तैयार न हो जाओ—क्योंकि मैं तुमको गणित पढ़ा रहा हूं। और तुम वृक्षों को और पक्षियों को देख रहे हो।

मैंने कहा: आप जो मुझको दे रहे है यह एक बड़ा पुरस्कार है, दंड नहीं, और मैंने उनको अलविदा कह दिया।

उन्होंने कहा: क्या अभिप्राय है तुम्हारा।

मैंने कहा: मैं कभी अंदर नहीं आऊँगा। मैं प्रतिदिन खिड़की के बाहर खड़ा रहूंगा।

उन्होंने कहा: अवश्य ही तुम पागल हो। मैं तुम्हारे पिता को , तुम्हारे परिवार को सूचित कर दूँगा: आप उस पर पैसा बरबाद कर रहे है, और वह बाहर खड़ा हुआ है।

मैंने कहा: आप जो कुछ करना चाहें कर सकते है। अपने पिता के साथ मामला कैसे सुलझाया जाए वह मुझे पता है। और वे भली भांति जानते है कि यदि मैंने निर्णय कर लिया है कि मैं खिड़की के बाहर खड़ा रहूंगा, तो कुछ भी इस निर्णय को बदल नहीं सकता।

प्रधानाचार्य, जब वे राउंड पर निकलते थे, तो मुझको प्रतिदिन खिड़की के बाहर खड़ा हुआ देखा करते थे। वे हैरान थे कि मैं प्रतिदिन वहां क्या कर रहा होता हूं। तीसरे या चौथे दिन वे मेरे पास आए और उन्होंने कहा, तुम क्या कर रहे हो? तुम यहाँ क्यों खड़े हो?

मैंने कहा: मुझको पुरस्कृत किया गया है।

उन्होंने कहा: पुरस्कृत, किस लिए ?

मैंने कहा: आप जरा मेरे साथ खड़े हो जाएं और पक्षियों के गीत सुनें। और वृक्षों का सौंदर्य....क्या आप सोचते है कि ब्लैक बोर्ड और मूढ़ अध्यापक की और देखते रहना उसके सामने कुछ भी महत्व रखता है। क्योंकि केवल मूढ़ लोग ही अध्यापक बन जाते है, उनको कोई और रोजगार तो मिलता नहीं। अधिकतर तो वे तृतीय श्रेणी स्नातक हुआ करते है। इसीलिए न तो मैं अध्यापकी और देखना चाहता हूं न ही मैं ब्लैक बोर्ड की और देखना चाहता हूं। जहां ते गणित का प्रश्न है, तो उसकी चिंता आपको करने की आवश्यकता नहीं है—मैं कुछ न कुछ व्यवस्था कर लुंगा। लेकिन मैं इस सौंदर्य की अनुभूति से चूक नहीं सकता।

वे मेरी बगल में आ खड़े हुए और उन्होंने कहा: निश्चित रूप से यह दृश्य सुंदर है। मैं यहां पर पिछले बीस वर्षो से प्रधानाचार्य हूं, और मैं कभी यहां नहीं आया। और मैं तुम्हारे साथ सहमत हूं कि यह पुरस्कार है। जहां तक गणित का प्रश्न है, मैं गणित में एम. एस सी. हूं,तुम किसी भी समय मेरे घर आ सकते हो। और तुमको मैं गणित पढ़ा दूँगा—लेकिन तुम बाहर खड़े रहना जारी रखो।

इस तरह मुझे बेहतर अध्यापक विद्यालय के प्रधानाध्यापक,जो बेहतर गणितज्ञ थे। मिल गए। और मेरे गणित के अध्यापक बहुत अधिक हैरान थे। उन्होंने सोचा था कि कुछ दिन बाहर खड़ा रह कर मैं थक जाऊँगा। लेकिन पूरा महीना बीत गया। फिर वे बाहर आए और उन्होंने कहा: मुझे खेद है, क्योंकि मुझे पूरे समय सतत पीड़ा होती रही है। कि मैं कक्षा में हूं और मैंने तुमको यहां बाहर खड़ा होने के लिए बाध्य कर रखा है। और तुमने कोई हानि भी नहीं पहुँचाई है। तुम भीतर बैठ सकते हो और जहां चाहों वहां देखते रहना।

मैंने कहा: अब तो बहुत देर हो चुकी है।

उन्होंने कहा: क्या अभिप्राय है तुम्हारा।

मैंने कहा: मेरा अभिप्राय यह है कि अब मैं बाहर रहने का मजा ले रहा हूं। खिड़की के पीछे बैठ कर वृक्षों का और पक्षियों का बहुत छोटा सा अंश ही अवलोकन के लिए उपलब्ध रहता है, यहां पर आम के हजारों वृक्ष अपलब्ध है। और जहां तक गणित का प्रश्न है। प्रधानाचार्य जी स्वयं मुझको पढ़ा रहे है। प्रत्येक संध्या को मैं उनके पास पढ़ने जाता हूं।

उन्होंने कहा: क्या?

मैंने कहा: जी हां, क्योंकि वे मेरे साथ सहमत है। कि यह यहां इस भांति खड़े रहना एक पुरस्कार है।

वे सीधे प्रधानाध्यापक के पास गए और कहा, यह अच्छी बात नहीं है, मैंने उसको दंडित किया और आप उसको प्रोत्साह न दे रहे हो।

प्रधानाचार्य ने कहा: दंड और प्रोत्साहन को भूल जाइए—आपको भी कभी-कभी बाहर खड़े हो जाना चाहिए। अब मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकता,वरना पहले तो मैं एक दिनचर्या की भांति विद्यालय में जो मुझको करना है वह है राउंड पर जाना और उस लड़के के साथ वहां पर खड़े रहना और वृक्षों का अवलोकन करना।

पहली बार मैंने सीखा कि गणित से श्रेष्ठ चीजें भी है—पक्षियों का कलरव, पुष्प, हरे-भरे वृक्ष, वृक्षों से छन कर आती सूर्य की किरणें, बहती हुई और वृक्षों के माध्यम से अपना गीत गाती हुई हवा। कभी-कभी आपको भी वहां जाना चाहिए और उसका साथ देना चाहिए।

वे बहुत अफसोस ग्रस्त होकर वापस लौटे और बोल: प्रधानाध्यापक ने मुझको बताया है कि क्या हुआ है, तो अब क्या किया जाए। उन्होंने मुझसे पूछा: क्या मैं पूरी कक्षा को बाहर ले आऊं?

मैंने कहा: यह तो बहुत अच्छा रहेगा। हम उन वृक्षों के नीचे बैठ सकते है और वहां आप अपनी गणित पढ़ा सकते है। लेकिन मैं कक्षा के कमरे में वापस आने वाला नहीं हूं। चाहे आप मुझको अनुत्तीर्ण कर दें। तब भी। लेकिन ऐसा आप न कर पाएँगे, क्योंकि अब मैं कक्षा के किसी भी छात्र की तुलना में अधिक गणित जानता हूं। और मेरे पास पढ़ाने के लिए बेहतर अध्यापक है। आप तृतीय श्रेणी में उतीर्ण बी. एससी. है, और वे प्रथम श्रेणी में स्वर्ण पदक विजेता एम. एससी. है।

कुछ दिनों तक उन्होंने इसके बारे में सोचा, और एक सुबह जब मैं पहुंचा तो मैंने देखा कि पूरी कक्षा वृक्षों के नीचे बैठी हुई है। मैंने उनसे कहा: आपका ह्रदय अब भी जीवित है, गणित ने उसको मार नहीं डाला है।

--ओशो

ओम, ओम.....का नाद और दंड—(प्रकरण-11)

अपने प्राइमरी स्कूल में उस समय मैं चौथी कक्षा में था, मेरे एक शिक्षक थे...स्कूल में यह उनकी कक्षा में मेरा पहला दिन था, और मैंने कुछ गलत किया भी नहीं था, मैं वहीं कर रहा था जो तुम ध्यान में किया करते हो: ओम, ओम....., लेकिन भीतर-भीतर मुंह बंद करके। मेरे कुछ मित्र थे, और मैंने उनको भिन्न—भिन्न स्थानों पर बैठने के लिए कह रखा था। जिस से वह शिक्षक जान न सके कि ध्वनि कहां से आ रही है। एक समय यह ध्वनि यहां से आ रही होती, दूसरे समय यह वहां से आ रही होती, फिर एक बार यहीं से आ रही होती। वह खोजते रहे कि ध्वनि कहां से आ रही थी। इसलिए मैंने उनको कहा हुआ था, अपने मुंह बंद रखो और भीतर ओम का जाप करते रहो।

एक क्षण को तो वे इसको जान नही पाए। मैं बिलकुल पीछे बैठा था। सारे अध्यापक चाहते थे कि में उनके सामने बैठा करूं जिससे वे मुझ पर निगाह रख सकें। और मैं सदा पीछे बैठना चाहता था। जहां तुम कई और काम कर सकते हो, यह अधिक सुविधाजनक है। वे सीधे ही मेरे पास आए। अवश्य ही उन्हें तीसरी कक्षा के शिक्षक ने यह बता दिया होगा कि '' आप इस लड़के पर निगाह रखें। इसलिए उन्होंने कहा: हालांकि मैं जान नहीं पा रहा हूं कि वे लोग क्या कर रहे है जो यह सब कर रहे है। तुम ही यह कर रहे होओगे।''

मैंने कहा: क्या? मैं क्या कर रहा हूं? आपको मुझे बताना पड़ेगा। बस यह कहना तुम क्या कर रहे हो, से कोई अर्थ नहीं निकलता है। क्या.....?

अब उनके लिए वह कर पाना कठिन था जो मैं कर रहा, क्योंकि वह मूर्खतापूर्ण प्रतीत होता और प्रत्येक हंसने लगा होता।

उन्होंने कहा: चाहे यह जो कुछ भी हो, अपने दोनों कान अपने हाथों से पकड़ो और बैठ जाओ, खड़े हो जाओ, बैठ जाओ, खड़े हो जाओ—ऐसा पाँच बार करों।

मैंने कहा: बिलकुल उचित है। मैंने उनसे पूछा: क्या मैं पचास बार कर सकता हूं।

उन्होंने कहा: यह कोई पुरस्कार नहीं है दंड है।

मैंने कहा: आज सुबह मैं कोई व्यायाम नहीं कर पाया हूं,इसलिए मैंने सोचा कि यह अच्छा अवसर है, और आप बहुत प्रसन्न होंगे,पाँच के स्थान पर मैं पचास कर लुंगा। और सदैव स्मरण रखें, जब कभी भी आप मुझे कोई पुरस्कार दें—उदार होकर दें। और मैंने पचास बैठके लगाना आरंभ कर दिया।

पे बोलते रहे, रूक जाओ, काफी हो चुका। मैंने कभी ऐसा लड़का नहीं देखा। तुमको शर्मिंदा होना चाहिए कि तुमको दंडित किया गया है।

मैंने कहा: नहीं मैं अपना सुबह का व्यायाम कर रहा हूं। आपने मेरी सहायता की,आपने मुझे पुरस्कृत किया है। अच्छा व्यायाम है यह। वास्तव में तो आपको भी करना चाहिए।

--ओशो

बहादुर या कायर मास्टर—(प्रकरण-12)

मेरे हाई स्कूल में, वहां विद्यालय भवन में दो इमारतें थी। और उनके बीच में कम से कम बीस फिट का फासला था। मुझे लकड़ी का एक ऐसा पटिया मिल गया जो बीस फिट लंबा था। पहले मैं इसे भूमि पर रख देता और अपने मित्रों से कहता, तुम इस पर चल सकते हो? और प्रत्येक व्यक्ति इसपर बिना गिरे चल पाने में समर्थ था। और तब मैं लकड़ी के उस पटिये को उन दो इमारतों पर पुल की भांति रख देता था, और मेरे अतिरिक्त कोई उस पर चलने का प्रयास तक करने को तैयार नहीं होता।

मैं कहा करता, अजीब मामला है यह, क्योंकि उसी पटिये पर तुम चल चुके हो और तुम गिरे नहीं थे।

वे कहते, वह भिन्न परिस्थिति थी। अब यह इतना खतरनाक है कि जरा सा भय लगता है, यदि बस एक कदम गलत पड़ गया तो तुम तीस फीट नीचे गिर पड़ोगे।

मैं उनको यह कह कर फुसलाता, तुम मुझे चलता हुआ देख सकते हो, तुम्हें इस और या उस और नहीं देखना चाहिए। तुम इस लकड़ी पर चल चुके हो...ओर मेरी रणनीति यहीं है। यहां-वहां न देखना, बस पूरी तरह से लकड़ी पा एकाग्र कर लेना और चलते चले जाना। और मैं इस तरह से मीलों जा सकता हूं।

जब एक दिन मैं कुछ छात्रों को उस पर चलने के लिए फुसला रहा था, एक नये शिक्षक रसायन विज्ञान के अध्यापक जो शेखी बधारा करते थे। कि वह बहुत बहादुर आदमी है पास आ गए। मैंने कहा: आप बहुत बहादुर आदमी हैं,शायद आप कोशिश कर सकें।

उन्होंने कहा: मैं कोशिश कर सकता हूं। किंतु तब उन्होंने नीचे देखा, वह तीस फीट का फासला था। वे अधिक से अधिक दो फीट आगे बढ़े, गिर पड़े और उनकी जगह-जगह से हड्डियां टूट गई।

अस्पताल में मैं उनको देखने गया। उन्होंने मुझसे कहा: मैंने ऐसा खतरनाक व्यक्ति कभी नहीं देखा। क्या खयाल थ यह?

मैंने कहा: आप इतनी अधिक शेखी बधार रहे थे कि....एक बाद आप अच्छे हो जाएं फिर हम कुछ और कामों की कोशिश करेंगे।

उन्होंने कहा: क्या मतलब तुम्हारा?

मैंने कहा: आपको बस यह कहना होगा कि आप शेखी बधार रहे थे। क्योंकि मूलत: आप ऐसे व्यक्ति है जो बहुत अधिक भयभीत है। इस पर लीपा-पोती करने के लिए आप शेखी बधार रहे थे। आधी रात को घने से घने जंगल में मैं अकेला जा सकता हूं। मैं किन्हीं भूतों ये या किन्हीं डकैतों से या किन्हीं हत्यारों से नहीं डरता हूं।

यह आप ही थे जिसने मुझको कुछ खोजने के लिए उकसाया। और मैं आपसे आगे चला गया, तो ऐसा नहीं था कि मैं खतरा नहीं उठा रहा था। क्योंकि आपने सोचा कि मैं चल लिया हूं, तो आप भी चल सकेंगे। यहीं पर आपने विचार गलत थे।

आपने पहले फुट से ही कांपना आरंभ कर दिया था, किंतु आप वापस न लौट सके। वहां पर समय था, आप कूद कर वापस हो सकते थे, आपने केवल दो कदम ही बढ़ाए थे, किंतु यह वापस लौटना आपके अहंकार के प्रतिकूल था। इसलिए आप चलते चले गए और गिर गए। यह आपके शरीर की हड्डियाँ नहीं टूटी है, वरन आपके अहंकार की टूटी है। आपका शरीर दो-तीन सप्ताह में कुछ बेहतर अवस्था में हो जाएगा,लेकिन आपका अहंकार, उसका क्या होगा। दुबारा कभी अपनी बहादुरी का उल्लेख न करें; वरना....मुझे कुछ नये काम और मिल गए है।

उन्होंने कहा: मैं इस स्कूल से इस्तीफा देने जा रहा हूं, बहुत हो चुका यह सब। मैं ऐसा नहीं चाहता था।

मैंने कहा: यह आप पर निर्भर करता है। आप इस्तीफा दे सकते है। लेकिन फिर भी हम कुछ कोशिश करेंगे।

और हमने कोशिश कर ली। उन्होंने नौकरी छोड़ दी, उन्होंने सामान लिया—उनकी न कोई पत्नी थी, न बच्चा, न कोई और। वे बस विश्वविद्यालय से अभी-अभी शिक्षा लेकर आए एक युवक थे। मैं और मेरे कुछ मित्रों ने उन्हें जा पकड़ा, और हमने इतना शोरगुल मचाया कि बड़ी भीड़ एकत्रित हो गई।

हमने कहा: वे अपनी पत्नी को छोड़कर भाग रहे है।

और भीड़ को समझाने की कोशिश कर रहे थे, मेरी कोई पत्नी वगैरह नहीं है। ये लोग झूठ बोल रहे है। मैं तो बस नौकरी छोड़ रहा हूं। और जा रहा हूं।

मैंने भीड़ से कहा: बस इनको वापस घर ले चलो। इनके पत्नी और तीन बच्चे है।

उन्होंने कहा: मुझको छोड़ दो, क्योंकि मेरी ट्रेन छूट जाएगी। मैं वापस नहीं जा सकता।

लेकिन भीड़ ने उनको घेर लिया और कहा: नहीं जा सकते है आप। पहले आप घर वापस चलिए। ये लड़के भला क्यों झूठ बोल रहे होगें? और हम लोग भी बस एक-दो नहीं थे, मेरे दस लड़के थे जो पंक्तिबद्ध होकर खड़े थे और कह रहे थे: आपकी पत्नी रो रही है। आपके बच्चे रो रहे है। आप उनको छोड़ कर जा रहे है। यह कोई अच्छी बात नहीं है।

भीड़ ने उनको पकड़ लिया। हम सभी भाग खड़े हुए। वे चिल्ला रहे थे, चीख रहे थे और कह रहे थे: मेरा विवाह नहीं हुआ है, मेरा कोई बच्चा नहीं है। मेरी कोई पत्नी नहीं है।

भीड़ ने कहा: पहले आप घर वापस चलिए।

उन्होंने कहा: मेरी ट्रेन छूट जाएगी।

उन लोगो न कहा: हमें ट्रेन से कुछ लेना-देना नहीं। ट्रेन आप कल पकड़ सकते है—क्योंकि वहां जाने के लिए प्रतिदिन एक ही ट्रेन थी। इसलिए यह केवल चौबीस घटों का मामला है। पहले तो आप घर चलिए।

और हमने एक बहुत गरीब स्त्री का इंतजाम कर रखा था, जिसके तीन बच्चे थे, और हमने उससे कहा था—हम तुम्हें थोड़े अभिनय के लिए पाँच रूपये देने वाले है।

उसने कहा: लेकिन ये कोई अच्छी बात नहीं है।

मैंने कहा: नुकसान ही क्या है। तुम बस अपना चेहरा ढांके रहो ताकि कोई जान न पाए कि तुम कौन हो...., और भारत में तुम अपने सिर को घूँघट से ढाक सकते हो। और रो सकते हो। और मैंने बच्चों से कह दिया, तुम कहो, पापा, आप हमें क्यों छोड़ कर जा रहे हो।

वे अपनी आंखों पर भरोसा न कर सके: वहां एक महिला थी जो रो रही थी और उनके पैर पकड़े हुए थी और कह रही थी, हमें छोड़ कर मत जाइए, आपने विवाह किया है मुझसे और तीन बच्चे विलाप कर रह थे: पापा.....।

और भीड़ ने कहा: अब क्या कहते है आप?

उन्होंने कहा: अब मैं क्या कह सकता हूं, मैंने कभी इन बच्चों को नहीं देखा, मैंने कभी इस स्त्री को नहीं देखा, और वे मेरे मकान में बैठे हुए है।

भीड़ के पीछे हम सभी उपस्थित थे। अंतत: मैंने उनसे कहा: ट्रेन लेट है, चिंता मत करिए। मैं उनको एक ओर ले गया और मैंने उनसे कहा, यह मेरे उपायों में से बस ऐ उपाय है। आपको इस स्त्री को पाँच रूपये देने पड़ेंगे, फिर आप जा सकते है। तब मैं मामला सम्हाल लुंगा।

उनको उस महिला को पाँच रूपये देने पड़े। भीड़ ने पूछा: क्या हो रहा है यह।

मैंने कहा: उनका समझौता हो गया है। वे केवल दो दिन के लिए जा रहे है। और उन्होनें दो दिन के खर्च के लिए घन दे दिया है। फिर वे वापस लोट आएँगे।

तब उन लोगों ने उन्हें जाने दिया। और बाद में उस महिला ने मुझसे कहा: यदि तुम्हारे पास इस प्रकार के अभिनय के कुछ और प्रस्ताव हो तो मैं सदा तत्पर हूं। मात्र पाँच मिनट के अभिनय के लिए पाँच रूपये। उन दिनों पाँच रूपये काफी धन होता था। पाँच रुपयों से कोई महीने भर का खर्चा चला सकता था।

उन्होंने कहा: अब कोई उपाय नहीं, मेरे शरीर में जगह-जगह हड्डियां टूटी गई है, मेरे पाँच रूपये चले गए है, और मुझे नहीं लगता कि मुझको अब ट्रेन मिल सकती है।

मैंने कहा: आप चिंता मत करे ट्रेन जा चुकी है। आपको वेटिंग रूम में प्रतीक्षा करनी पड़ेगी लेकिन हमने सारा इंतजाम कर लिया है....वहां आप आराम से रहेंगे। रात में बस जरा सावधान, सजग रहें। मैंने कहा: हमारे पास अधिक समय है भी नहीं, केवल एक ही रात है। हमने भूतों से संपर्क साधा था....केवल एक भूत तैयार है।

उन्होंने कहा: हे भगवान।

मैंने कहा: तो रात को वेटी रूम में...क्योंकि रात में वहां कोई ट्रेन नहीं आती थी। और स्टेशन मास्टर चले जाते थे। और वेटिंग रूम खाली रहता था। पूरा प्लेटफार्म खाली था।

उन्होंने कहा: तब तो मैं स्टेशन नहीं जा सकता, मैं तो सड़क पर, बाजार में कही पर रूक जाऊँगा, लेकिन अब मैं रात में स्टेशन, उस वीरान जगह पर नहीं जाऊँगा।

मैंने कहा: आप कहा करते थे कि आपको भूतों में विश्वास नहीं है।

वे कहने लगे, मैं कहता था। लेकिन तुम्हारे उपायों को देख कर....भले ही भूतों को अस्तित्व हो या न हो, कोई न कोई भूत अवश्य प्रकट हो जाएगा। और मैं और अधिक मुसीबत में नहीं पड़ना चाहता।

वे सज्जन मुझे पच्चीस वर्षो के बाद मिल गए। मैंने पूछा: कैसे है आप?

वे बोले, मैं कैसा हूं। तुमने मुझको इतना डरा दिया कि मैंने निर्णय ले लिया कभी विवाह नहीं करना है। कभी बच्चे पैदा नहीं करने है। और कभी किसी स्कूल में नौकरी नहीं करनी है। खतरनाक है यह। मेरा पूरा शरीर हड्डियां टूटने के बरबाद हो गया,और उस दिन तो तुम और अधिक हानि पहुंचा सकते थे। क्योंकि पूरी भीड़ तुम पर विश्वास कर रही थी।

मैंने कहा: वह महिला आपके साथ जाने को तैयार थी। वे बच्चे आपके साथ जाने को तैयार थे। आपने स्वयं ही उनको रिश्वत दी कि वे आपका पीछा छोड़ दे।

वे बोले, मैंने उन्हें रिश्वत दी? तुमने सलाह दी थी कि पाँच रूपये उनको दे दूँ। और इन लोगों को तुम्हीं लेकर आए थे। और मैं उस महिला और उन बच्चो को जानता था। वे बस पडोस में ही रहा करते थे।

लेकिन, मैंने कहा: आप कांप क्यों रहे थे?

उन्होंने कहा: मैं क्यों कांप रहा था? मैं कांप रहा था क्योंकि यह भीड़ कहीं उस महिला और उन बच्चों को मेरे सिर पर न थोप दे। मेरी नौकरी जा चुकी थी, और मेरे पास एक ऐसा परिवार होता जिसका मुझसे कोई सरोकार नहीं था। कितनी कुरूप थी वह महिला और तुम इतने चतुर थे कि तुमने उससे अपना चेहरा साड़ी की ओट में छिपाने के लिए कह रखा था। लेकिन तक से मैं इतना घबड़ा गया हूं कि मैंने किसी स्कूल में नौकरी नहीं की। और मैंने कभी किसी से नहीं कहा कि मैं एक बहादुर आदमी हूं। मैंने स्वीकार कर लिया कि मैं कायर हूं।

मैंने कहा: यदि आपने पहले ही यह मान लिया होता,तो इस हादसे को टला जा सकता था।

--ओशो

पूर्णत: मुक्ति—(प्रकरण-13)

मेरे पड़ोस में एक मंदिर था, कृष्ण का मंदिर, मेरे मकान से कुछ ही मकान आगे। मंदिर सड़क के दूसरी और था, मेरा मकान सड़क के इस और था। मंदिर के सामने वे सज्जन रहा करते थे जिन्होंने यह मंदिर बनवाया था। वे बहुत बड़े भक्त थे।

वह मंदिर कृष्ण के बाल-रूप का था। क्योंकि जब कृष्ण युवा हो गए तो उन्होंने अनेक उपद्रव ओर ऐसे अनेक प्रश्न निर्मित कर दिए,इसलिए ऐसे अनेक लोग हैं जो कृष्ण को बाल रूप में पूजते है—इसलिए उस मंदिर को बालाजी का मंदिर कहा जाता है।

बालाजी का यह मंदिर उन सज्जन के घर के ठीक सामने था जिन्होंने इसको बनवाया था। उस मंदिर के और उन सज्जन की भक्ति, लगातार चलने वाली भक्ति के कारण...वे स्नान करते—मंदिर के ठीक सामने एक कुआं था। वहां वे अपना पहला कार्य करते—स्नान। फिर वे घंटों अपनी प्रार्थना किया करते; और उनको बहुत धार्मिक समझा जाता था। धीरे-धीरे लोगों ने उनको बालाजी कहना आरंभ कर दिया। यह नाम मेरी स्मृति में इस भांति बस गया है कि मुझे स्वयं भी उनका असली नाम याद नहीं पड़ता। क्योंकि जब तक मुझे मालूम हो पाता कि वे है। तब मैने उनका नाम बालाजी ही सुना था। किंतु यह उनका वास्तविक नाम नहीं हो सकता था। यह नाम इस लिए पड़ गया होगा क्योंकि उन्होंने बालाजी को मंदिर बनवाया था।

मैं उस मंदिर मैं जाया करता था। क्योंकि वह मंदिर बहुत सुंदर और बहुत शांत था। सिवाय इन बालाजी के जो वहां एक सतत उपद्रव थे। और कई घंटों तक—वे धनवान व्यक्ति थे,

इसलिए उनको समय की चिंता करने की आवश्यकता नहीं थी—तीन घंटे सुबह,तीन घंटे शाम को वे मंदिर के भगवान को सता रहे थे। वहां कोई नहीं जाया करता था। हालांकि यह मंदिर इतना सुंदर था कि वहां अनेक लोग गए होते। वे कुछ और दूर स्थित मंदिर में जाया करते थे। क्योंकि ये बालाजी ही बहुत अधिक थे। और उनका शोरगुल, इसको शोरगुल ही कहा जा सकता था। यह संगीत न था—उनका गायन इस भाति का था कि यह तुम्हें तुम्हारे सारे जीवन के लिए गायन को शत्रु बना देता।

लेकिन मैं वहां जाया करता था, और हमारी मित्रता हो गई। वे वृद्ध व्यक्ति थे। मैंने कहा: बालाजी, तीन घंटे सुबह और तीन घंटे शाम को आप क्या मांग रहे है? और हर रोज, और उसने आपको अभी तक कुछ दिया नहीं?

उन्होंने कहा: मैं सांसारिक वस्तुएं नहीं मांग रहा हूं, मैं अध्यात्मिक चीजें मांगता हूं। और यह कोई एक दिन का मामला नहीं है। तुम्हें अपने सारे जीवन प्रार्थना में लगे रहना पड़ता है और मोत के बाद यह सब दे दिया जाएगा। लेकिन यह निशिचत है कि वह चीजें दी जाएंगी: मैंने मंदिर बनवाया है, मैं प्रभु की सेवा करता हूं। प्रार्थना करता हूं, तुम देख सकते हो कि सर्दी तक में भीगे वस्त्रों में भी....भक्ति की विशिष्ट गुणवता समझी जाती है; भीगे हुए वस्त्रों में कंपकंपाना। मेरा अपना खयाल है कि ठिठुरते हुए गीत गाना सरल हो जाता है। तुम कंपकंपाना भूलने के लिए चिल्लाने लगते हो।

मैंने कहा: इसके बारे में मेरा खयाल अलग है, लेकिन मैं आपको बताऊंगा नहीं। बस एक बात मैं बताना चाहता हूं। क्योंकि मेरे दादा कहे चले जाते है, ये लोग केवल कायर होते है: ये बालाजी कायर है। वह दिन के छह घंटे व्यर्थ कर रहे है। और इतना छोटा जीवन है यह, और वे कायर है।

उन्होंने कहा: तुम्हारे दादा ने कहा कि मैं कायर हूं?

मैंने कहा: मैं उनको लेकर आ रहा हूं।

उन्होंने कहा: नहीं, उनको मंदिर में मत लेकर आना, क्योंकि यह एक बेकार की झंझट होगी—लेकिन मैं कायर नहीं हूं।

उस मंदिर के पीछे वह मैदान था जिसे भारत में अखाड़ा कहा जाता है। जहां लोग कुश्ती करते है, सीखते है। व्यायाम करते है। और भारतीय ढंग की कुश्ती लड़ते है। मैं वहां जाया करता था—वह मंदिर के ठीक पीछे मंदिर के साथ में ही था—इसलिए वहां के सभी पहलवान मेरे मित्र थे। मैंने उनमें तीन से कहा: आज की रात तुमको मेरी सहायता करनी पड़ेगी।

उन्होंने कहा: किया क्या जाना है?

मैंने कहा: हमें बालाजी की खाट उठानी है। वे अपने घर के बाहर सोते है, हमें बस उनकी खाट उठा कर लानी है और उस कुएं के उपर रख देनी है।

उन्होंने कहा: अगर वे खाट से कूद पड़ते है या कुछ हो जाता है। तो वे कुएं के भीतर गिर सकते है।

मैंने कहा: चिंता मत करो,कुआं इतना गहरा नहीं है। मैं कई बार उसके भीतर कूद चूका हूं—यह इतना गहरा भी नहीं है, न ही इतना खतरनाक है। और जहां तक मुझको पता है, बालाजी कूदने वाले भी नहीं है। वे खाट से चिल्लाएंगे,खाट पर बैठे रहेंगे, वे अपने बालाजी को पुकारेंगे—मुझे बचाओ।

कठिनाई से मैं तीन लोगों को राज़ी कर पाया: तुमको इससे कुछ लेना-देना नहीं है। अकेला मैं उनकी खाट उठा कर नहीं ले जा सकता था। और मैं तुम लोगों से इसलिए कह रहा हूं क्योंकि तुम सभी ताकतवर लोग हो। यदि वे रास्ते के बीच में ही जग जाते है तो कुएं तक पहुंच पाना कठिन हो जाएगा। मैं तुम लोगों की प्रतीक्षा करूंगा। वे नौ बजे सोने चले जाते है। दस बजे तक सड़कें खाली हो जाती है। और ग्यारह बजे का समय ठीक है, मौका नहीं गवाना है। ग्यारह बजे हम उन को ले जा सकते है।

केवल दो लोग पहुंचे; एक नहीं आया, इसलिए हम केवल तीन थे। मैंने कहा: कठिन है यह काम। अब खाट का एक हिस्सा....ओर अगर बालाजी जाग गये...... मैंने कहा: जरा ठहरो,मुझको अपने दादाजी को बुलाना पड़ेगा।

और मैंने अपने दादा जी से कहा: यह काम है जो हम करने जा रहे है। आपको हमारी थोड़ी सह सहायता करनी होगी।

उन्होंने कहा: यह कुछ कठिन है। अपने स्वयं के दादा से इस बेचारे के साथ ये करने को कहना, जो किसी को हानि नहीं पहुँचाता है, सिवाय इसके कि यह रोज छह घंटे चीखता-चिल्लाता है......हमें इसकी आदत पड़ गई है।

मैंने कहा: मैं इस बारे में बहस करने नहीं आया हूं। आप बस आ जाएं। आपका यह सहयोग मुझ पर ऋण रहेगा। और किसी भी समय जो कुछ भी आप चाहें आप कह भर दें और में वहीं कर दूँगा। लेकिन इस कार्य के लिए आपको आना पड़ेगा। और यह कोई बड़ा काम नहीं है। बस बारह फुट की सड़क पर करनी है, वह भी बालाजी को बीना जगाए।

तो वे आ गए। यही कारण है कि मैं कहता हूं, वे बहुत दुर्लभ व्यक्ति थे—वे उस समय पचहतर वर्ष के थे। वे आ गए। उन्होंने कहा: ठीक है, हमें यह अनुभव कर लेने दो और देखने दो क्या होता है।

उन दो पहलवानों ने मेरे दादा को देख कर भागना आरंभ कर दिया। मैंने कहा: ठहरो, तुम लोग कहां भागे जा रहे हो।

उन्होंने कहा: तुम्हारे दादा आ रहे है।

मैंने कहा: मैं ही बुला कर ला रहा हूं। वे है चौथे व्यक्ति। यदि तुम भाग जाते हो तो मेरा काम और अटक जाएगा। मेरे दादा और मैं यह काम नहीं कर पाएंगे। हम बालाजी को उठा तो सकते है, लेकिन वे जाग जाएंगे। तुमको चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।

उन्होंने कहा: क्या तुमको अपने दादाजी पर भरोसा है? क्योंकि वे भी करीब-करीब उतनी ही उम्र के है: हो सकता है दोनों आपस में मित्र भी हों, और कोई दिक्कत पैदा हो जाए वे हमारी पोल खोल दे।

मैंने कहा: मैं भी इसमे शामिल हूं, वे मेरे लिए कोई परेशानी पैदा नहीं करेंगे,इसलिए तुम लोग भयभीत मत होओ,तूम किसी झंझट में नहीं फंसोगे। और वैसे भी वे तुम्हारा नाम और तुम्हारे बोर में कुछ नहीं जानते।

हमने बालाजी की चारपाई को उठाया और उनकी चारपाई को उनके छोटे से कुएं के ऊपर रख दिया। वहां पर वे केवल स्नान करते थे। और कभी-कभी मैं उसमें कूद जाता था। जिसके वे बहुत विरोध में थे। लेकिन तुम कर भी क्या सकते हो। एक बार में उसके भीतर कूद चुका होता, उनको मुझे बहार निकालने का उपक्रम करना पड़ता था। मैं कहता: अब आप क्या कर सकते है। एकमात्र काम यही है कि मुझे बाहर निकाला जाए। और यदि आप मुझे तंग करेंगे तो मैं प्रतिदिन इसमें कुदा करूंगा। और यदि आपने इसके बारे में मेरे परिवार को बता दिया तो आप जानते है कि मैं इसमें कूदने के लिए मित्रों को लेकर आना शुरू कर दूँगा। इसलिए इस समय इस रहस्य को हमारे बीच ही रहने दो। आप बाहर स्नान करे लें, मैं भीतर स्नान कर लेता हूं। इसमें कोई हानि नहीं होगी।

यह बहुत छोटा से कुआं था। इसलिए खाट उस पर पूरी तरह से बिछ गई। फिर मैंने अपने दादा जी से कहा: आप दूर चले जाए, क्योंकि आप पकड़े गए तो सारा नगर यह सोचेगा कि आपने तो हद कर डाली है।

और तब कुछ दूरी से हमने उनको जगाने के लिए कंकर फेंकना शुरू किए....क्योंकि यदि वे सारी रात सोते रहते, जागते नहीं तो वे करवट ले सकते थे और कुएं में गिर सकते थे। या और कोई दुर्धटना भी हो सकती थी। जिस क्षण वे जागे उन्होंने इस तरह चीख मारी कि....। हमने उनकी आवाज सुन रखी थी, लेकिन यह चीख...। सारे पड़ोसी इक्कठा हो गए। वे अपनी चारपाई पर बैठे थे। और उन्होंने कहा: किसने किया है यह? वे घबराए हुए थे और डरे हुए थे और थर-थर कांप रहे थे।

लोगों ने कहा: कम से कम खाट से उतर तो आइए, फिर खोजना कि क्या हुआ है।

मैं भीड़ में खड़ा हुआ था और मैं बोला: क्या बात है? आप कम से कम अपने बालाजी को तो पुकार सकते थे। लेकिन आपने उनको नहीं पुकार, आपने चीख मारी और आप बालाजी के बारे में सब कुछ भूल गए। आपने जीवन भी प्रतिदिन का छह घंटे का प्रशिक्षण कहां चला गया.....।

उनहोंने मुझको देखा और बोले: क्या यह भी कोई रहस्य कि बात है।

मैंने कहा: अब आप को दो रहस्य सम्हाल कर रखने पड़ेंगे। एक आप कई वर्षो से छिपाए हुए है। अब यह दूसरा रहस्य है।

लेकिन उस दिन से उन्होंने मंदिर में तीन घंटे का चिल्लाना छोड़ दिया। मैं हैरान रह गया। प्रत्येक व्यक्ति अचंभित था। उन्होंने कुएं में स्नान करना बंद कर दिया और प्रत्येक संध्या और प्रात: आकर थोड़ी सी पूजा-अर्चना करने लगे, बस और कुछ नहीं।

मैंने उनसे कहा: बालाजी क्या हो गया?

उन्होंने कहा: मैंने तुमसे झूठ कहा था कि मैं भयभीत नहीं हूं। लेकिन उस रात कुएं के ऊपर जाग पड़ना। अचानक निकली वह चीख मेरी नहीं थी। तुम उस चीख को प्राइमल स्क्रीम, आदि चीख कह सकते हो। यह चीख उनकी नहीं थी। यह निश्चित रूप से सत्य है। वह उनके गहनतम अवचेतन से ही आई थी। उन्होंने कहा: उस चीख ने मुझको सजग कर दिया कि वास्तव में मैं एक भयभीत व्यक्ति हूं, और मेरी सभी प्रार्थनाएं ओर कुछ नहीं बल्कि ईश्वर को मेरी रक्षा करने, मेरी सहायता करने, मुझे बचा लेने के लिए फुसलाने का प्रयास भर है।

लेकिन तुमने उन सब को नष्ट कर दिया, और जो कुछ भी तुमने किया वह मेरे लिए अच्छा था। में उस सारी मूढ़ता से छूट गया। मैंने अपने सारे जीवन भर अपने पड़ोसियों को सताया है, और यदि तुमने ऐसा न किया होता, तो शायद मैंने इस तरह से सताना जारी रखा होता। अब में सजग हूं कि मैं भयभीत हूं। और में अनुभव करता हूं कि अपने भय को स्वीकार कर लेना बेहतर है। क्योंकि मेरा सारा जीवन अर्थहीन रहा है ओर मेरा भय वैसा ही है।

केवल उन्नीस सौ सत्तर में मैं अंतिम बार आपने गांव गया। मेरा अपनी नानी के साथ ये वादा था कि जब वह मरेंगी—उन्होने इसे एक बचन के रूप में लिया था—मैं अवश्य आऊँगा। इसलिए मैं चला गया। मैं नगर में इधर-उधर घूम कर लोगों से मिला और तब मैंने बाला जी को देखा। वे बिलकुल भिन्न व्यक्ति दिखाई पड़ रहे थे। मैंने उनसे पूछा: क्या हुआ?

उन्होंने कहा: उस चीख ने मुझको पूरी तरह से बदल दिया। मैंने भय को जीना आरंभ कर दिया। ठीक है, यदि मैं कायर हूं तो मैं कायर हूं: मैं इसके लिए उत्तरदायी नहीं हूं। यदि भय है तो भय है। मेरा जन्म इसके साथ हुआ है। लेकिन धीरे-धीरे जैसे-जैसे मेरा स्वीकार भाव और गहराया, वह भय खो गया और कायरपन मिट गया।

वास्तवमें मैंने मंदिर से नौकर को भी हटा दिया, क्योंकि यदि मेरी प्रार्थनाएं नहीं सुनी जा रही है तब नौकर की प्रार्थनाएं कैसे सुन ली जाएंगी....एक नौकर जा पूरे दिन में तीस मंदिरों में जाता है?—क्योंकि उसको मंदिर से दो रूपये मिल जाते है। वह दो रूपये के लिए प्रार्थना कर रहा था। इसलिए मैंने उसकी छुटटी कर दी। और पूरी तरह से आराम में हूं। और मैं जरा भी चिंता नहीं करता कि परमात्मा है या नहीं। यह उसकी समस्या है, मैं चिंता में क्यों पडा रहूँ?

लेकिन अपनी वृद्धावस्था में मैं बहुत ताजगीभरा और युवा अनुभव कर रहा हूं। मैं तुमसे मिलना चाहता था। लेकिन में नहीं आ सका। में बहुत बूढा हूं। मैं तुमको धन्यवाद देना चाहता था कि तुमने वह शरारत की, वरना मैं लगातार प्रार्थना करता रहता। और मर जाता। और सब कुछ अर्थहीन और व्यर्थ था। अब मैं उस व्यक्ति

की भांति मर रहा होऊंगा जो मुक्त हो गया। पूर्णत: मुक्त हो चुका है। वे मुझको अपने घर के भीतर ले गए पहले भी मैं वहां जा चुका था। सारी धार्मिक पुस्तकें हटा दी गई थीं। उन्होंने कहा: मैं इन सभी में अब जरा भी उत्सुक नहीं रहा।

--ओशो

बोतल का रहस्य— (प्रकरण-14)

मेरे पिता, जब वे किस समारोह में, किसी विवाह में, किसी जन्म-दिवस की दावत में या कहीं और जा रहे होते,तो मुझको साथ ले जाया करते थे। वे मुझे इस शर्त पर ले जाते थे। कि मैं बिलकुल खामोश रहूंगा, अन्यथा तुम कृपया घर में ही रहो।

मैं कहता: लेकिन क्यों? मेरे अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति को बोलने की अनुमति है।

वे कहते, तुम जानते हो, मैं जानता हूं,और प्रत्येक जानता है। कि तुमको बोलने की अनुमति क्यों नहीं है—क्योंकि तुम एक उपद्रव हो।

लेकिन, मैं कहता, उन बातों में जितना संबंध मुझसे है आप वचन दें कि आप मेरे मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे, और मैं बचन देता हूं कि में खामोश रहूंगा।

और अनेक बार ऐसा हो गया कि उनको हस्तक्षेप करना पडा। उदाहरण के लिए, यदि काई बड़ी उम्र का व्यक्ति मिल गया—कोई दूर का सबंधी, परंतु भारत में इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है—मेरे पिता उसके चरणस्पर्श करते और मुझसे कहते,उनके पैर छुओ।

मैं कहता: आप मेरे मामले में हस्तक्षेप कर रहे है। और हमारा समझौता समाप्त। मैं इन बुजुर्ग व्यक्ति के चरण क्यों स्पर्श करूं? उनका मस्तक स्पर्श क्यों न करूं, यदि आप उनके चरणस्पर्श करना चाहते है तो उनको दुबारा, तिबारा स्पर्श कर सकते है। मैं हस्तक्षेप नहीं करूंगा। लेकिन मैं चरण क्यों स्पर्श क्यों करूं?

और इतना उपद्रव पर्याप्त था। प्रत्येक व्यक्ति मुझको समझता कि वे बूढे है। मैं कहता मैंने अनेक बूढे लोगों को देखा है। मेरे मकान के ठीक सामने एक बूढा हाथी है, मैं कभी उसके पैर नहीं छूता। वह हाथी एक पुजारी का है, वह बहुत बूढ़ा हाथी है, मैंने कभी उसके पैर नहीं छुए। और वह समझदार है—मैं सोचता हूं कि इन सज्जन से अधिक समझदार है।

मात्र बूढ़ा हो जाना उनको कोई गुणवता प्रदान नहीं कर देता। मूर्ख सदा मूर्ख रहता है—शायद जैसे-जैसे उसकी आयु बढ़ेगी वह और मूर्ख हो जाएगा। क्योंकि तूम वैसे ही बने रहते हो। तुम और विकसित होते चले जाते हो। और मूढ़ जब अधिक आयु का हो जाता है....तो उसकी मूढ़ता बहुगुणित हो जाती है। और यही वह समय है जब वह अति आदरणीय हो जाता है। मैं इन बूढे सज्जन के चरणस्पर्श नहीं करने जा रहा हूं। जब तक कि यह सिद्ध न कर दिया जाए कि मैं ऐसा क्यों करूं?

एक बार मैं एक अंतिम संस्कार में गया; मेरे एक शिक्षक का देहांत हो गया था। वे मेरे संस्कृत के शिक्षक थे—बहुत स्थूलकाय, दिखने में हास्यास्पद, जिस तरह के वस्त्र पुराने ब्राह्मण, पुरातन काल के बाह्मण पहना करते थे। वैसे हास्य पद वस्त्र वे बड़ी पगड़ी के साथ पहना करते थे। सारे विद्यालय के लिए वे हंसी का कारण थे। लेकिन वे बहुत सीधे-सादे भी थे। सीधे-सादे व्यक्ति को हिंदी में भोले कहते है, इस लिए हम लोग उनको भोले

कहा कहते थे। जैसे ही वे कक्षा में प्रवेश करते, पूरी कक्षा जोर से उद्घोष करती, जय भोले। भोले जिंदा बाद। और निस्संदेह वे पूरी कक्षा को दंडित नहीं कर सकते थे। अन्यथा वे किस भांति पढ़ाते,किसको पढ़ाते।

उनका देहावसान हो गया। इसलिए स्वभावत: यह सोचते हुए कि वे मेरे शिक्षक थे—मेरे पिता ने मुझ से समझौते कि बात नहीं की। लेकिन मैं समझौते का पालन न कर सका। क्योंकि वहां जो घटित हो गया उसकी मैंने अपेक्षा नहीं की थी—किसी ने उसकी अपेक्षा नहीं की थी। जब हम वहां पहुंचे तो उनका मृत शरीर वहां रखा हुआ था। उनकी पत्नी दौड़ती हुई बाहर आई और उनके उपर गिर पड़ी और बोली, हाए मेरे भोले। प्रत्येक व्यक्ति खामोश खड़ा था। लेकिन मैं नहीं। मैंने शांत रहने का भरसक प्रयत्न किया, लेकिन मैंने जितना अधिक प्रयास किया वह उतना ही कठिन होता चला गया। मैं ठहाका मार कर हंस पडा और मैंने कहा, यह तो कमाल हो गया।

मेरे पिता ने कहा: मैंने यह सोच कर कि वे तुम्हारे शिक्षक थे और तुम सम्मानपूर्ण रहोगे, तुमने चलने से पहले समझोता कि बात नहीं की थी।

मैंने कहा: मैं उनके प्रति असम्मान पूर्ण नही हूं। लेकिन मैं उस संयोग से आवक रह गया हूं। भोले उनका उपनाम था और वे उससे क्रोधित हो उठते थे। अब वे बेचारे मर चुके है। और उनकी पत्नी उनको भोले कह कर पुकार रही है। और अब वे कुछ कर भी नहीं सकते। मुझे बस उनके लिए अफसोस हो रहा है।

मैं अपने पिता के साथ जहां कहीं भी जाता वे हमेशा समझौता करके जाया करते, लेकिन सदैव इसे भंग करनेवाले पहले पक्ष वे ही हुआ करते। क्योंकि कोई घटना या कुछ ऐसा हो जाता और उनको कुछ कह देना पड़ता। और उतना पर्याप्त होता,क्योंकि वही शर्त थी की उनको मेरे मामले में हस्तक्षेप नहीं करना था।

नगर में एक जैन साधु आए हुए थे। जैन साधु ऊंचे आसन पर बैठते है जिससे कि खड़े होकर भी तुम अपने सिर से उनके चरणस्पर्श कर सको...कम से कम पाँच फुट, छह फुट ऊंचे आसन, और वे उन पर बैठते है। जैन साधु एक समूह में चलते है, उनको अकेले आवागमन की अनुमति नहीं है। पाँच जैन साधुओं को एक साथ चलना चाहिए। यह प्रयास न कर सके—जब तक के वह सभी षडयंत्र न कर लें। और मैंने उनको षडयंत्र करते और कोकाकोला प्राप्त करते हुए देख लिया था। इसीलिए मुझे यह घटना याद है।

उनको रात में पानी तक पीने कि अनुमति नहीं है। और मैंने रात में कोक कोला पीते हुए देखा है। वास्तव में दिन में कोको कोला पीना खतरनाक था। क्योंकि यदि कोई देख ले तो, इसलिए केवल रात में केवल....मैं स्वयं ही लेकर गया था, इसलिए इसके बारे में कोई समस्या नहीं थी। उनके लिए और कौन लेकिन आता? कोई जैन ऐसा करने को तैयार नहीं होता, लेकिन वे मुझको जानते थे। और वे जानते थे कि कोई भी दुस्साहसी कार्य हो और मैं उसे करने को तैयार रहूंगा।

तो वहां पर पाँच आसन बने हुए थे। लेकिन एक साधु बीमार था, इसलिए जब मैं अपने पिता के साथ वहां गया तो मैं पांचवें आसन पर चला गया आरे उस पर बैठ गया। मैं अब भी अपने पिता को , और जिस ढंग से उन्होंने मुझको देखा था, याद कर सकता हूं.....उनको बोलने के लिए शब्द तक नहीं मिल सके; वे बोले, तुमसे क्या कहा जाए। और वे मेरे क्रियाकलाप में हस्तक्षेप नहीं कर सकें, क्योंकि मैंने किसी के साथ कुछ गलत नहीं किया था। बस एक मंच पर, लकड़ी के मंच पर बैठ कर मैं किसी व्यक्ति या किसी चीज को आहत नहीं कर रहा था। वे मेरे पास आए और उन्होंने कहा,ऐसा प्रतीत होता है कि समझौता हो या समझौता न हो तुम करने वाले हो जो तुम करना चाहते हो, इसलिए अब से आगे हम लोग समझौता नहीं करेंगे, क्योंकि यह नितांत अनावश्यक है।

मैंने उस साधु से कहा: आप दो बार सोचें फिर कुछ बोले। बोतल को याद कर लें।–क्योंकि उनको कोकाकोला मैंने ही लाकर दिया था।

उन्होंने कहा: हां, यह ठीक है, हमें बोतल याद है। तुम कृपया इस मंच पर जितनी देर बैठना चाहो उतनी देर बैठ सकते हो।

मेरे पिता ने कहा: बोतल क्या?

उन्होंने कहा: यह पूरी तरह से संतुष्ट है। तुम यहां बैठ सकते हो, कोई हानि नहीं है। लेकिन कृपया बोतल के बारे में चुप रहो।

अब वहां बहुत से लोग उपस्थित थे, और वे सभी उत्सुक हो उठे....कौन सी बोतल? जब मंदिर से बाहर निकला तो प्रत्येक व्यक्ति मेरे चारों और एकत्रित हो गया, उन सभी ने कहा: क्या है यह बोतल?

मैंने कहा: यह एक रहस्य है। और इन मूर्खों के ऊपर जिनके आप लोग चरणस्पर्श करते है। यहीं मेरी शक्ति है। यदि मैं चाहूं तो मैं उन लोगों से यह भी कह सकता हूं कि मेरे चरणस्पर्श करें, अन्यथा बोतल.....ये मूढ़ लोग है।

रास्ते में मेरे पिता ले मुझसे पूछा: तुम बस मुझको बता दो। मैं किसी को भी नहीं बताऊंगा: क्या है यह बोतल? क्या वे शराब पीते है?

मैंने कहा: नहीं। अभी मामला इतना नहीं बिगड़ा है, लेकिन यदि वे यहां कुछ दिन और रुके रहे तो मैं उसकी व्यवस्था भी कर दूँगा। मैं उनको शराब पीने के लिए बाध्य कर दूँगा....वरना मैं बोतल का नाम बता दूँगा।

सारा नगर बोतल के बारे में चर्चा कर रहा था। बोतल का मामला क्या है। और वे क्यों भय भीत हो गए थे। हमने तो हमेशा सोचा था कि ये लोग कितने आध्यात्मिक संत है। और इस लड़के ने उनको भयभीत कर दिया। और वे सभी सहमत हो गए थे। कि लड़का वहां मंच पर बैठ सकता है। जो कि शास्त्रों के विरूद्ध है। प्रत्येक व्यक्ति मेरे पीछे पडा था वे मुझे रिश्वत खिलाने को भी तैयार थे। चाहे जो कुछ भी मांग लो हमे बोतल का राज बात दो—इस बोतल की क्या कहानी है।

मैंने कहा: यह एक रहस्य बड़ा रहस्य है। और मैं आप लोगों को इसके बारे में कुछ भी नहीं बताऊंगा। आप वहां क्यों जाते और अपने साधुओं से क्यों नहीं पूछते कि बोतल क्या है? मैं भी वहां रह सकता हूं जिससे वे झूठ न बोल सकें—और तब आप जान लेंगे कि आप किस तरह के लोगों की पूजा करते है।

--ओशो

पहली सतोरी नदी तीर—(प्रकरण-15)

अपने बचपन के दिनों में मैं प्रात: काल जल्दी नदी पर जाया करता था। यह एक छोटा सा गांव का। नदी बहुत अधिक सुस्त थी। जैसे कि यह जरा भी प्रवाहित न हो रही हो। प्रति: काल जब सूर्योदय न हुआ हो। तुम देख ही नहीं सकते कि नदी प्रवाहित हो रही है या नहीं,यह इतनी मंद और शांत हुआ करती थी। और प्रात: काल मैं जब वहां कोई न हो,स्नान करने वाले अभी तक न आए हों। वह आत्यंतिक रूप से शांत रहती थी। प्रात: काल जब पक्षी भी अभी गा रहे हो—ऊषा पूर्व, कोई ध्वनि नहीं, बस एक सन्नाटा व्याप्त रहता है। और नदी पर इधर से उधर तक आम के वृक्षों के सुगंध फैली रहती है।

मैं नदी के दूरस्थ कोने तक बस बैठने के लिए,बस वहां होने के लिए जाया करता था। कुछ करने की अवश्यकता नहीं थी, वहां होना ही पर्याप्त था; वहां होना ही इतना सुंदर अनुभव था। मैं स्नान कर लेता, मैं तैर लेता और जब सूर्य उदय होता तो मैं दूसरे किनारे पर रेत के विराट विस्तार में चला जाता और वहां घुप में स्वय को सुखाता और वहां लेटा रहता। और जब कभी-कभी सो भी जाता।

जब मैं लौट कर आता,तो मेरी मां पूछा करती, सुबह के पूरे समय तुम क्या करते हो?

मैं कहता: कुछ भी नहीं,क्योंकि वास्तव में मैं कुछ भी नहीं करता था।

और वे कहती: यह कैसे संभव है कि तुम कुछ नहीं कर रहे थे। तुम अवश्य ही कुछ न कुछ कर रहे होओगे। और वे सही थीं, और में भी गलत नहीं था।

मैं कुछ भी नहीं कर रहा था। मैं बस नदी के साथ था। बिना कुछ करते हुए बातों को घटने दे रहा था। यदि तैरना भीतर से आता....याद रखें, यदि तैरना भीतर से आता, तो मैं तैरता,लेकिन यह मेरी और से कोई क्रिया नहीं थी। मैं कुछ कर नहीं रहा था। यदि मुझको सोने जैसा लगता तो मैं सो जाता। घटनाएं घट रही थी। लेकिन कोई कर्ता नहीं था। और सतोरी का पहला अनुभव नदी के किनारे से ही आरंभ हुआ था। मात्र वहां रहने से ही, लाखों चीजें घटित हो गई।

लेकिन वे जोर देकर पूछती,तुम अवश्य ही कुछ कर रहे होओगे।

तब मैं कहता,ठीक है, मैंने स्नान किया और मैंने स्वयं को धूप में सुखाया, और तब वे संतुष्ट हो जातीं। लेकिन मैं संतुष्ट न होता—क्योंकि वहां नदी पर जो कुछ भी घटित हुआ था उसे शब्दों से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता है। मैंने स्नान कर लिया। कितना कमजोर और असमर्थ प्रतीत होता है। नदी के साथ खेलते रहना, नदी पर बहते जाना नदी में तैरना, यह इतना गहन अनुभव था बस यह कह देना: मैंने स्नान किया है, इससे कोई अर्थ नहीं निकलता। बस इतना भर कह देना: मैं वहां गया, तट पर टेहला,वहां बैठा कुछ भी नहीं बताता।

ओशो

तैरना एक युक्ति है—(प्रकरण-16)

मेरे गांव में एक बहुत सुंदर वृद्ध भले व्यक्ति थे। उनको प्रत्येक व्यक्ति प्रेम करता था। वे बहुत सरल और बहुत भोले थे, यद्यपि वे अस्सी वर्ष के ऊपर के थे। और मेरे गांव के साथ में ही एक नदी बहा करती थी। उन्होंने उस नदी में अपना स्वयं को एक स्थान बना रखा था, जहां पर वे अपना स्नान किया करते थे। गांव में जहां तक कोई भी स्मरण कर पाता था उन्हें सदैव उनको वर्षो से प्रतिदिन वहीं पर देखा था। भले ही वर्षा हो, गर्मी हो या शीत ऋतु , इससे कोई अंतर नहीं आत था। भले ही वे अस्वस्थ हो या स्वस्थ , जरा भी भेद नहीं पड़ता था। वे प्रात: ठीक पाँच बजे अपने स्थान पर होते। और वह नदी का स्र्वाधिक गहरा स्थान था। इसलिए सामान्य: वहां कोई नहीं जाया करता था। और वह स्थान गांव से काफी दूर भी था।

लोग नदी पर जाया करते थे, वह मेरे घर से कोई आधा फर्लांग दूर थी—वह स्थान कोई दो मील दूर था। और जैसे कि हमारे यहां पहाड़ियां नदी को घेरे हुए है। तुमको एक पहाड़ पार करना पड़ता है, फिर एक और पहाड़, फिर एक और पहाड़ पर करना पड़ता है, तब तुम उस स्थान पर पहुंच सकोगे। लेकिन यह बहुत सुंदर स्थान था। जैसे ही मुझको इसके बारे में पता लगा मैंने वहां जाना आरंभ कर दिया। और हम तुरंत ही मित्र बन गए। क्योंकि.....तुम मुझको जानते हो कि मैं किस प्रकार का व्यक्ति हुं। यदि वे वहां प्रात: पाँच बजे पहुंचते थे तो

मैं वहां तीन बजे पहुंच जाता था। एक दिन, दो दिन, तीन दिन ऐसा हुआ। फिर उन्होंने कहा: मामला क्या है? क्या तुमने मुझको हराने की ठान ली है।

मैंने कहा: नहीं, यह बात नहीं है,लेकिन मैं यहां तीन बजे ही पहुंचने वाला हुं। जिस तरह आपने पाँच बजे यहां पहुंचने का निर्णय ले रखा है।

उन्होंने कहा: क्या तुम जानते हो कि तैरा कैसे जाए?

मैंने कहा: मुझे नहीं पता, लेकिन आप चिंता न करें। यदि दूसरे लोग तैर सकते है तो मैं भी तैर सकता हूं। यदि आप तैर सकते है तब इसमें समस्या ही क्या है? एक बात निश्चित है, यदि यह मानव के लिए संभव हो तो यह पर्याप्त है। अधिक से अधिक मैं डूब सकता हूं—तो क्या? एक दिन तो प्रत्येक को मरना ही है। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता।

उन्होंने कहा: तुम खतरनाक हो। मैं तुम्हें सिखाऊंगा कि कैसे तैरा जाए।

मैंने कहा: नहीं। मैंने उनसे कहां: आप बस यहां बैठे रहे और मैं कूद जाऊँगा। यदि मैं मर रहा होऊं तो मुझको बचाने का प्रयास मत करें, भले ही मैं चिल्ला कर आपको आवज दूँ। आप उसे सुनिए गा मत।

उन्होंने कहा: किस प्रकार के बच्चे हो तुम। तुम चिल्ला रहे होओगे: मुझे बचाओ ओ मुझको तुम्हें नहीं बचाना है।

मैंने कहा: जी हां,में नहीं चिल्लाऊंगा। मैं इस बात को पूरी तरह से निशचित ही कर रहा हूं। संभवत: जिस समय मैं डूब रहा होऊं, या मर रहा होऊं या पानी मेरे नाक में और मुंह मैं घुस रहा हो, मैं चिल्लाना आरंभ कर सकता हूं, मुझे बच्चाओं। लेकिन मैं स्पष्ट कह देता हूं: मैं किसी भी हालत में किसी के द्वारा बचाया जाना नहीं चाहता। या तो मैं जान से जाऊँगा कि तैरना क्या है या मैं यह जान लुंगा कि तैरना मेरे लिए नहीं है, इसे त्याग दूँगा।

और इससे पहले कि वे मुझे रोके सकें, मैने नदी में छलांग लगा दी। निश्चित रूप से मुझे दो या तीन बार पानी में डुबकी खानी पड़ी। और वे वहां प्रतीक्षा में खड़े हुए थे, जिससे कि यदि में उनको पुकारें....लेकिन मैंने बस अपना हाथ इनकार में हिलाया,बचाने के लिए पुकारने वाला नहीं हुं। तीन या चार बार मैं नीचे डूबा,ऊपर आया,अपने हाथ इधर-उधर फेंके, लेकिन मुझे कोई खयाल ही नहीं कि कैसे तैरा जाये। लेकिन तुम कर क्या सकते हो, जब तुम डूब रहे होते हो तो तुम वह प्रत्येक संभव कार्य करते हो जो तुम कर सकते हो। और पाँच मिनटों के भीतर ही मैंने तैरने की युक्ति जान ली।

और मैं वापस लौटा और मैंने उनसे कहा: आप मुझे यह सिखाने का आमंत्रण दे रहे थे—जिसे मैं पाँच मिनट में सीख गया। मुझे खतरों उठाना था, और यह तथ्य स्वीकार करना था: अधिक से अधिक इसका अर्थ है मृत्यु।

तैरना एक युक्ति है, यह कोई कला नहीं है जिसे किसी व्यक्ति को सीखना पड़े। तुमको बस पानी में फेंका भर जाना है। तुम अपने हाथों से छप-छप करोगे और तुम्हें अपने हाथ और अपने पैर इधर-उधर फेंकना ही पड़ेंगे। और शीध्र ही तुम पाओगें कि यदि तुम अपने हाथ और पैर एक लयबद्ध ढंग से, सम क्रमिकता में चलाते रहोगे तो पानी स्वयं तुम्हें ऊपर बनाए रखता है।

मैंने उन वृद्ध सज्जन से कहा: मैंने लाशों को नदी में बहते हुए देखा है। जब एक मुर्दा आदमी तैर सकता है, तो क्या आपको मुझसे कहने का यह अर्थ है कि मैं जिंदा हूं और मैं तैर नहीं सकता। मृत व्यक्ति भी तैरने की यह कला जानता है।

वर्षा काल में जब नदी में बाढ़ आती थी, ऐसा अनेक बार हो जाता कि पूरे के पूरे गांव नदी में समा जाते—अनेक लोग,पानी में आदमियों की लाशें,जानवरों की लाशें बहती हुई दिखती। इसलिए मैंने कहा: मुर्दा लोग भी तेजी से बहते पानी में डूबते नहीं तैरते चले जाते है। और मैं जीवित हूं इसलिए मुझको इसे अपने आप से सीख लेने का एक अवसर मिलने दो, क्योंकि मेरी अनुभूति यह है कि यह केवल एक युक्ति है, इससे कौन सी कला हो सकती है। यह कोई शिल्पकला नहीं है या कोई ऐसी कठिन कला नहीं है जिसे समझा जाए। जो मुझे दिख पड़ता है वह मामला कुल इतना है कि लोग अपने हाथ चला रहे है—इसलिए मैं भी अपने हाथ चला सकता हूं।

--ओशो

सौ फीट के पूल से छल्लांग—(प्रकरण-17)

मैंने इस जन्म में साहसी होने, प्रखर होने या होने या प्रति भावन होने के लिए आरंभ से ही कुछ अलग कार्य नहीं किया, और कभी इसे साहस प्रखरता प्रतिभा की भांति नहीं सोचा।

यह तो बाद में धीर-धीरे मैं इस प्रति के प्रति सजग हुआ कि लोग कैसे मंदमति है। यह केवल बाद में प्रतिबिंबित हुआ। पहले मैं जानता ही नहीं था। कि मैं साहसी हूं। मैं सोचा करता था कि प्रत्येक व्यक्ति ऐसा ही होना चाहिए। यह तो बाद में ही मुझे स्पष्ट हो पाया कि प्रत्येक व्यक्ति वैसा नहीं है।

अपने बचपन में लिए गए मजों में से एक है—नदी के किनारे की सबसे ऊंची पहाड़ी पर चढ़कर ओर कूद पड़ना। पड़ोस के अनेक बच्चे मेरे साथ आया करते थे। वे इसका प्रयास करते लेकिन वे बस छोर तक जा पाते और वापस लौट पड़ते; ऊँचाई को देख कर वे कहते, अचानक कुछ हो जाता है। मैं उनको बार-बार दिखाता था कि यदि मैं कूद सकता हूं—मेरे पास इस्पात की देह नहीं है। और यदि मैं कूदता रहता हूं, जिंदा बच जाता हूं, तो तुम क्यों नहीं कूद सकते।

वे कहा करते, भरपूर प्रयास करते है हम—और वास्तव में वे प्रयास करते थे। मेरे ठीक पड़ोस में एक ब्राह्मण लड़का रहा करता था जो इससे बहुत अपमानित अनुभव करता था, क्योंकि वह नहीं कूद पाया था। इसलिए उसने अवश्य अपने पिता से कहा होगा, क्या किया जाए? क्योंकि बहुत अपमानजनक लगता है। वह पहाड़ी के शिखर पर पहुंच जाता और वहां से छलांग लगा देता है। और हम बस देखते रह जाते है। हम देख सकते है कि यदि वह कूद सकता है तो हम भी कूद सकते है। कोई समस्या नहीं है इसमें। यदि ऊँचाई उसको नहीं मार पाती तो यह हमें क्यों मार डालेगी। लेकिन बस जैसे ही हम साहस एकत्रित करते है। हर संभव प्रयास करते है और हम कूदते के लिए दौड़ते है, अचानक अवरोध आ जाता है।

यह अवरोध कहां से आता है, हम नहीं जानते,लेकिन बस एक रूकावट है; हमारे भीतर से कोई कहता है, नहीं ये चट्टानें और यह नदी....यदि तुम किसी चट्टान पर गिर गए...या नदी गहरी है। और जब तुम ऊँचाई से गिरते हो तो पहले तुम नदी के बिलकुल निचले तल पर पहुँचेंगे, फिर तुम ऊपर आओगे; तूम और कुछ कर भी नहीं सकते।

उसके पिता ने कहा: यह कोई अच्छी बात नहीं है—क्योंकि उसके पिता अच्छे पहलवान थे, जिले के विजेताओं में से एक थे। वे एक व्यायामशाला चलाते थे। और लोगों को सिखाते थे कि भारतीय ढंग की फ्री

स्टाइल कुश्ती कैसे लड़ी जाए। यह मुक्केबाजी की तुलना में अधिक मानवीय, अधिक कौशल पूर्ण और अधिक कला पूर्ण होती थी।

यदि बच्चा किसी और का रहा होता तो उसने उससे कह दिया होता कि वहां बिलकुल मत जाओ, लेकिन यह आदमी उस प्रकार का नहीं था। उसने कहा: यदि वह कूद सकता है और तुम नहीं कूद सकते, तो यह मेरे लिए बदनामी की बात है। मैं तुम्हारे साथ आऊँगा, मैं वहां खड़ा हो जाऊँगा,और चिंता मत करना: जब वह कूदता है तुम भी कूद जाना।

मुझे ऐसा खयाल जरा भी नहीं था कि मेरे पिता आने वाले है। जब में पहुंचा तो मैंने पिता-पुत्र और कुछ अन्या लोगों को देखा जो इसे देखने के लिए एकत्रित हो गए थे। मैंने उन पर एक नजर डाली और अनुमान लगा लिया कि मामला क्या है। मैंने उस लड़के से कहा: आज तुमको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है—अपने पिता को छलांग मारने दो। वे एक महान पहल वाल है। और उनके लिए यह कोई समस्या नहीं होगी।

उसके पिता ने मुझको देखा, क्योंकि वे तो बस अपने लड़के को हौसला बढ़ाने के लिए आए थे, जिससे वह कायर न बने। उन्होंने कहा: तो मुझको कूदना पड़ेगा?

मैंने कहा: जी हां, तैयार रहिए।

उन्होंने नीचे देखा और वे बोले, मैं पहलवान हूं। ये चट्टानें और यह नदी...ओर तुमने कूदने के लिए एक स्थान पा लिया है। यहां पर तुम कूदने का अभ्यास करते रहे होओगे। कूदने की कोशिश करने वाले व्यक्ति का अपनी गर्दन या पैर या कुछ भी टूटने वाला है।

मैंने कहा: आप कूदने के लिए अपने पुत्र को ले आए है।

उन्होंने कहा: परिस्थिति को न जानने के कारण मैं उसको ले आया हूं। मैंने सोचा कि यदि तुम कूद सकते हो तो वह भी कूद सकता है। उसी आयु का है वह भी। लेकिन यहां पर परिस्थिति को देखते हुए मैं चिंतित था और सोच रहा था कि यदि तुम आज यहाँ नहीं आते तो यह एक बड़ी बात हो जाती, क्योंकि यहाँ से कूद कर मेरा लड़का बच नहीं सकता था। लेकिन तुम चतुर हो, तुमने बस मेरे बेटे को अलग कर दिया ओर मुझको फंसा लिया। में प्रयास करूंगा।

और वह घटना घट गई। वे पहलवान भी जो इतने साहसी थे—वे अपने जीवन भर प्रत्येक ढंग से लड़ते रहे थे...लेकिन छोर पर आकर अचानक अवरोध—क्योंकि वह ढाल ही इस प्रकार का था, कम से कम पचास फीट नीचे, नदी तीस फीट गहरी थी। और चट्टानें ऐसी थीं कि यह तुम्हारे नियंत्रण के बाहर कि तुम कहां जाकर गिरोगे, तुमको किस पत्थर से चोट लगेगी। और पहाड़ी के शिखर पर खड़े रहना...हवा इतना ताकतवर थी कि तुम बस मार ही डाले जाओगे।

वे बस वहीं पर ठहर गए। और उन्होंने कहा: मुझको क्षमा करो। और उन्होंने अपने पुत्र से कहां: बेटा घर चलो। यह हमारा काम नहीं है। उसी को यह करने दो—शायद उसे कुछ विशेष बात पता हे।

उस दिन मैनें अपने बारे में अनोखापन अनुभव किया: यह अवरोध मेरे लिए क्यों नहीं आता? और मैंने बहुत विचित्र स्थानों पर प्रयास किया।

नदी पर स्वभावत: रेलवे पुल सबसे उच्च स्थान था। क्योंकि बरसात में नदी विस्तृत होकर इतनी विराट हो जाती है। कि पुल को सदैव इससे ऊपर रहना चाहिए, इसलिए उसे उच्चतम स्थान पर बनाया गया था। और पुल पर सदैव दो रक्षक पहरा देते थे। दो कारण थे पहला कि वहां से कूद कर कोई आत्म हत्या न कर ले, क्योंकि वह लोगों के लिए आत्म हत्या करने का स्थान था...वहां से नदी में गिर पड़ना ही पर्याप्त था। तुम कभी नदी में

जीवत नहीं पहुंच सकते थे। बीच में कहीं तुम्हारी श्वास खो जाती। यह इतना ऊँचा था कि नीचे देखना ही तुम्हें घबड़ाने वाली अनुभूति देने के लिए पर्याप्त था।

और दूसरी बात, क्रांतिकारियों को भय था जो बम लगा रहे थे, पुल उड़ा रहे थे। ट्रेनें जला रहे थे। पुल को काट देना क्रांतिकारियों के लिए बहुत लाभदायक था, क्योंकि ये पुल प्रांत के दो भागों को जोड़ा करते थे। यदि पुल टूट जाता तो सेना न जा पाती, फिर क्रांतिकारी दूसरे भाग में जहां सेना को कोई मुख्यालय न था कुछ भी उपद्रव कर सकती थी। इसलिए ये रक्षक वहां चौबीस घंटे रहा करते थे। किंतु उन्होंने मुझको स्वीकार कर लिया था।

मैंने उनको समझाया, मैं न तो आत्महत्या करना चाहता हूं, न ही मैं तुम्हारे पुल को उड़ाने आया हूं। वास्तव में चाहता हूं कि पुल की सुरक्षा सावधानी से होती रहे। क्योंकि यह मेरा स्थान है। यदि यह पुल न रहा तो मेरा कूदने का उच्चतम बिंदू नष्ट हो जाएगा।

उन्होंने कहा: यह तुम्हारा अभ्यास है।

मैने कहा: यह मेरा अभ्यास है। आप देख सकते है। और एक बार आपने देख लिया तो आप समझ जाएंगे कि मेरी अन्य कोई इच्छा नहीं है।

उन्होंने कहा: ठीक है हम देखते है।

मैंने कहा: लो मैं कूद कर दिखाता हूं। और मैं कूद गया और वे इस पर विश्वास न कर सके। जब मैं लोट कर वापस आया तो मैंने उनसे पूछा: क्या आप कोशिश करना चाहेंगे?

उन्होंने कहा: नहीं,लेकिन तुम्हारे लिए यह सदा उपलब्ध है, तुम यहां किसी भी समय आ सकते हो। हमने तुमको बहुत सहजता से कूदते हुए देखा है, लेकिन हम नहीं कूद सकते—हमें पता है कि यहां से कूद कर लोग मर गए है।

वह पुल मौत के पुल के नाम से जान जाता था। और आत्महत्या करने का वह सरलतम,सहजतम उपाय था। यदि तुमने मरने के लिए जहर भी खरीदा हो, तो कुछ घन तो व्यय होगा ही, लेकिन पुल से कूद कर यह बस सरल था। वहां पर नदी अधिकतम गहरी थी और वह तुमको बहा कर दूर ले जाता। किसी को तुम्हारी देह भी नहीं मिलती, क्योंकि कुछ मील के बाद यह और बड़ी नदी, एक विशाल नदी से मिल जाती थीं—और तुम सदा के लिए विदा हो जाते।

उन दो रक्षकों के चेहरों पर भय देख कर,इस पहलवान में भय देख कर मैंने बस आश्चर्य करना आरंभ कर दिया, शायद मुझमें अवरोधक नहीं है। शायद उन अवरोधकों को होना चाहिए, क्योंकि वे रक्षा करते है। लेकिन जैसे-जैसे मैंने विकसित होना आरंभ किया—और मैं विकसित होता रहा हूं मैं विकसित होता रहा हूं,मैं बूढ़ा नहीं हो रहा था। अपने जन्म से मैं विकसित हुआ हूं, विकसित होता हूं, विकसित हो रहा हूं। ऐसा कभी मत सोचना कि मेरी आयु बढ़ रही हू। केवल मूढ़ों को आयु बढ़ती है। अन्य प्रत्येक का विकास होता है।

जैसे-जैसे मैंने विकसित होना आरंभ किया और में विगत जीवन और मृत्यु के प्रति सजग होने लगा, और मुझे स्मरण हो आया कि मैं कितनी सरलता से मर गया था। मेरी रूचि परमात्मा को नहीं बल्कि उत्साहपूर्वक उन ज्ञात से जिसको मैं देख चुका था। अधिक उस अज्ञात को जानते में थी जो आगे था।

मैंने कभी पीछे लौट कर नहीं देखा। और मेरे सारे जीवन का यही ढंग है—पीछे न देखना। कोई सार न रहा अब। तुम वापस लौट नहीं सकते,तो क्यों समय नष्ट करना? मैं सदा आगे देखता रहा हूं। अपने उस जन्म की मृत्यु के समय भी मैं आगे ही देख रहा था।

--ओशो

शिक्षक की शर्तें—(प्रकरण-18)

मेरे शिक्षकों में से एक प्रतिदिन अपनी कक्षा इस बात को कह कर शुरू किया करते थे। पहले मेरी शर्तों को सुन लो। मुझे सिर में दर्द होना स्वीकार नहीं है, मुझे पेट में दर्द होना स्वीकार नहीं है। मैं उन चीजों को स्वीकार नहीं करता जो मुझे ज्ञात न हो सकें। हां, यदि तुम्हें बुखार है, तो मैं इसको स्वीकार करता हूं, क्योंकि मैं जांच कर सकता हूं कि तुम्हारा तापमान बढा हुआ है। इसलिए याद रहे कोई भी ऐसी बात के लिए छुटटी नहीं मिलेगी जो सिद्ध न कि जा सके। कोई डाक्टर भी यह सिद्ध नहीं कर सकता कि सिर में दर्द है या नहीं। उन्होंने करीब-करीब प्रत्येक बात पर रोक लगा दी, क्योंकि तुमको दिखने वाली बीमारी प्रस्तुत करनी थी। केवल तब ही तुम बाहर जा सकते हो; लेकिन मुझे कुछ उपाय खोजना था, क्योंकि यह स्वीकार योग्य बात नहीं थी।

वे एक वृद्ध व्यक्ति थे, इसलिए मुझे जो भी करना था वह रात में करना था....वे वृद्ध थे लेकिन बहुत शक्तिशाली थे, और व्यायाम करने के बारे में टहलने के बारे में बहुत नियमित थे, इसलिए वे सुबह जल्दी पाँच बजे उठ जाया करते थे। और अंधेरे में ही दूर तक टहलने के लिए निकल जाते थे। इसलिए मुझे बस उनके दरवाजे पर केले के छिलके रखने पड़े। सुबह-सुबह वे गिर पड़े और उनकी पीठ में चोट लग गई। मैं तुरंत वहां पहुंच गया, क्योंकि मुझे इस बारे में पता था।

उन्होंने कहा: मेरी पीठ में बहुत दर्द हो रहा है।

मैंने कहा: ऐसी किसी बात का उल्लेख मत कीजिए जिसको आप सिद्ध न कर सकें।

उन्होंने कहा: लेकिन में इसे सिद्ध कर सकूं या नहीं, मैं आज स्कूल आने योग्य नहीं रहा।

तब मैने कहा: आपको कल से अपनी शर्ते बंद करनी पड़ेगी, क्योंकि मैं सारे स्कूल में पूरी बात फैलाने जा रहा हूं, कि यदि पीठ दर्द स्वीकार किया जा सकता है....क्या सबूत है आपके पास इसका। तो सिर का दर्द क्यो नही?

उन्होंने कहा: मैं सोचता हूं कि यहां पड़े हुए केले के छिलकों से तुम्हारा कोई संबंध है।

मैंने कहा: शायद आप सही है, लेकिन आप सिद्ध नहीं कर सकते, और मैं केवल उन बातों में ही विश्वास करता हूं जिनको सिद्ध किया जा सके।

उन्होंने कहा: कम से कम तुम मेरे लिए एक काम तो कर सकते हो, तुम मेरा आवेदन प्रधानाध्यापक तक पहुंचा सकते हो।

मैंने कहा: मैं आपका आवेदन पत्र ले लुंगा, लेकिन स्मरण रखें, कि कल से आप उन शर्तों को बंद कर देंगे, क्योंकि कभी-कभी मेरे सिर में दर्द होता है, कभी-कभी मेरे पेट में दर्द होता है। क्योंकि मैं हर प्रकार के कच्चे फल खाने का आदी हूं। जब आप दूसरे के बग़ीचे से फल चुरा रहे होते है तो आप यह नहीं कह सकते कह फल पका हुआ होना चाहिए। और पकने से पहले ही वो फल आप को मिल जाए। जैसे ही वे पक जाते है। उनको लोग ले जाते है। इसलिए मुझे पेट की परेशानी रहती है। और निशिचत रूप से उन्होंने उस दिन से इन शर्तों को समाप्ति कर दिया। उन्होंने बस मेरी और देखा, मुस्कुराए और अपनी कक्षा आरंभ कर दी।

छात्र तो बस अचंभित रह गए: इनको क्या हो गया? शर्तों का क्या हुआ, मैं उठ खड़ा हुआ और बोला,मेरे पेट में बहुत जोर से दर्द हो रहा है।

तुम जा सकते हो। ऐसा पहली बार हुआ था....संध्या को जब वे मेरे पिता से मिलने आए तो उन्होंने बताया,ऐसा पहली बार हुआ है कि मैंने किसी को पेट दर्द के कारण अवकाश दिया हो.....क्योंकि ये लोग इतने कल्पनाशील है और नये बहाने खोजने वाले है। और उन्होंने मेरे पिता जी से कहा: आपका पुत्र खतरनाक है।

मैंने कहा: पुन: आप कुछ ऐसा करने का प्रयास कर रहे है जिसे आप सिद्ध नहीं कर सकते,बस आप कल्पना कर सकते है। मैं बस सुबह घूमने जा रहा था और मैंने आपको गिरे हुए देखा,और मैं उठने में आपकी सहायता करने चला गया। क्या आप सोचते है कि किसी की सहायता करना गलत है।

मैंने कहा: उसकी खोज आपको करना पड़ेगी—यह आपका मकान है यह बस संयोग है कि मैं सुबह टहलने जा रहा था और मेरे पिता जानते है कि रोज मैं सुबह घूमने के लिए जाता हूं।

मेरे पिता ने कहा: यह सच है, यह प्रतिदिन टहलने जाता है। लेकिन यह संभव है कि उसने यह किया हो। लेकिन जब तक आप इसे सिद्ध न कर दें, इसका कोई उपयोग नहीं है: हमें उसके सामने चीजों को सिद्ध करना पड़ता है। यदि तर्क से वह जीत जाता है तब भले ही हम सही हों, वह विजेता है और हम पराजित है। इसने हमें आपकी पीठ की चोट के बारे में पूरी बात बता दी थी और यह भी बताया था के आपने तब से अपनी दोनों शर्तों को वापस ले लिया है।

मेरे पिताजी भी उनके छात्र रहे थे। उन्होंने का: यह अजीब है, क्योंकि आपने कभी भी उन शर्तों के बीना पढ़ाना आरंभ नहीं क्या था।

मेरे शिक्षक ने कहा: पहले कभी मेरे पास इस प्रकार का विद्यार्थी नहीं रहा। मुझको अपनी पूरी योजना बदलनी पड़ी, क्योंकि उसके साथ विवाद में पड़ना खतरनाक है, उसने मुझे मार डाला होता।

--ओशो

मौन की सुगंध—(प्रकरण-19)

मैं बहुत छोटा था, शायद बारह वर्ष का रहा होऊंगा, जब एक बहुत विचित्र व्यक्ति हमारे घर में आया। मेरे पिता उनको लेकर आए थे। क्योंकि वे विद्वान थे। और न केवल विद्वान थे बल्कि उनके अपने कुछ प्रमाणिक अध्यात्मिक अनुभव भी थे। संभवत: उस समय तक वे संबुद्ध नहीं थे। मेरे लिए बिलकुल ठीक से उनको याद रख पाना संभव नहीं है। मैं उनका चेहरा भी याद नहीं कर पा रहा हूं। उन्होने सोचा कि शायद ये रहस्यदर्शी कुछ कर पाएंगे, कुछ सुझाव दे पाएंगे, मुझे किसी बात पर राज़ी कर पाएंगे, क्योंकि मेरे बारे में प्रत्येक व्यक्ति चिंचित था। यद्यपि मैं उनके घर में रह रहा था। लेकिन उन सभी को लगता था कि मैं उनके मध्य एक अजनबी था। और वे गलत भी नहीं थे। और अंतत: मेरी उपस्थिति कुछ इस भांति की थी नहीं जैसे कि कोई उपस्थित हो।

मेरे पिता उन सूफी रहस्यदर्शी को यह सोच कर घर पर लाए थे कि संभवत: कुछ सहायक हो सकेंगे। और मेरे पिता तो हैरान हो गए,मेरा परिवार भी हैरान हुआ, क्योंकि उन सज्जन ने जो किया...उन्होंने मुझको एक अलग कमरा दे रखा था। जिससे कि मैं उनके लिए सतत उपद्रव न बना रहूँ, क्योंकि बस वहां पर बैठे रहना,कुछ भी न करना,उनको बेचैन करने के लिए पर्याप्त था—वे सभी कुछ न कुछ कर रहे है, प्रत्येक व्यक्ति कार्य कर रहा है, और मैं आंखें बंद किए बैठा हूं, ध्यान कर रहा हूं।

इस लिए उन्होंने मुझे ऐसा कमरा दे रखा था। जिसका प्रवेश द्वार अलग था। वे सूफी मेरे पिता के साथ आए और वे दीवालों को सूँघते रहे, इस कोने पर उस कोने पर मेरे पिता ने कहा: है भगवान, मैं उन्हें लेकर आया था कि वे तुम्हें ठीक करे दें। लेकिन वे तुमसे बहुत आगे प्रतीत हो रहे है।

मेरा पूरा कमरा खाली था। मैंने सदैव खालीपन को प्रेम किया है। क्योंकि केवल खालीपन ही नितांत निर्मल हो सकता है। तुम अपने कमरे में चाहे जो कुछ भी एकत्रित करते चले जाओ, आज नहीं तो कल व्यर्थ हो जाता है। इसलिए मेरे कमरे में कुछ भी न था।

मेरे पिता ने उनको देखा,मुझ पर निगाह डाली और उन्होंने कहा: मैंने उनको आमंत्रित किया है, इसलिए मुझे देखना चाहिए कि वे क्या करते है।

फिर वे आए और मुझको सुगंध पता चल रही है। और उसकी सुगंध भी पता चल रही है। यह मौन की सुगंध है। मौन की महक है। आपको अनुगृहीत होना चाहिए कि आपको ऐसा पुत्र मिला है। मुझे दोनों को सुधना पडा। जिससे में यह जान सकूं कि यह क्या उसकी उपस्थिति से संबंधित है। यह कमरा उसकी उपस्थिति से आपूरित है। उसके लिए बाधा उत्पन्न न करें। और उन्होंने मुझसे यह कह कर क्षमा मांगी: मुझको माफ कर दो, तुम्हारे कमरे में आकर मैंने तुम्हें बाधा पहुँचाई है।

मेरे पिता उनको लेकर बाहर चले गए और वे वापस लौटे और कहा: मैं सोचता था कि केवल तुम ही पागल हो, और अधिक पागल लोग भी है—कमरे को सूंघने वाले।

लेकिन मैंने उनसे कहा: आपका आवास आपका विस्तर है। सूक्ष्म ढंग से यह आपका प्रतिनिधित्व करता है। और आप जिन सज्जन को लेकर आए थे, वे निश्चित रूप0 से एक महान व्यक्ति, अंतर्दृष्टि और समझ के व्यक्ति है।

--ओशो

मुहर्रम का त्योहार—और मेरी सूई—(प्रकरण-20)

मेरे बचपन में मेरे गांव में...जब कभी भी मुसलमानों द्वारा मुहर्रम का त्यौहार मनाया जाता है, कुछ लोगों पर पवित्र आत्मा सवार हो जाती है। इस पवित्र आत्मा को वली कहा जाता है। कुछ लोग ऐसे है जिनको बहुत संत स्वभाव का समझा जाता है—उन पर वली सवार हो जाते है। और वे नृत्य करते है और चिल्लाते है, चीखते है और उनसे तुम सवाल भी पूछ सकते हो।

और वे भाग कर दूर न चले जाएं, इसलिए उनके हाथ रस्सी से बांध दिए जाते है, और दो लोग उनको नियंत्रण में रखते है। बहुत सारे वली होते है। और प्रत्येक वली के साथ उसकी अपनी भीड़ होती है। और लोग मिठाइयों और फल उन्हें भेंट करने के लिए आते है—किसी को पिछले साल आशिष मिला था और उसके यहां बच्चे का, लड़के का जन्म हो गया है, किसी को विवाह हो गया है और कोई भविष्य के लिए आर्शीवाद लेने आया है।

इसमें केवल मुसलमान भागीदारी करते है। लेकिन मैंने हमेशा हर प्रकार के मनोरंजन का मजा लिया है। मेरे माता-पिता मुझको कहा करते थे। सुनो यह मुसलमानों का त्योहार है और तुमको वहां नहीं होना चाहिए।

मैं कहता: मैं न हिंदू हूं, न मुसलमान, न जैन और न कुछ और। यह कहने से आपका क्या अभी प्राय है कि मैं किसी चींजे का मजा नहीं ले सकता हूं। सभी त्यौहार किसी न किसी धर्म के होते है। वस्तुत: मैं किसी धर्म का नहीं हूं, इसलिए में सभी त्योहारों में भागीदार हो सकता हूं। इसलिए मैं वहाँ जाता हूं।

एक बार मैंने एक ऐसे वली की रस्सी पकड़ने मे कामयाबी हासिल कर ली जो बस एक साधारण व्यक्ति था और धोखेबाज था। मेंने उससे पहले ही कह दिया था, यदि तुम मुझको अपनी रस्सी नहीं पकड़ने दोगे तो मैं तुम्हारी पोल खोल दूँगा।

उसने कहा: तुम मेरी रस्सी पकड़ सकते हो, और तुम इन मिठाइयों का कुछ हिस्सा ले सकते हो, लेकिन किसी से कुछ कह मत देना।

हम दोनों एक ही व्यायामशाला में जाया करते थे—इसी प्रकार से हम मित्र बन गए थे। और उसने स्वयं ही मुझको बताया था कि यह सभी कुछ दिखावटी था। तो मैंने कहा: इसका अर्थ हुआ कि मैं वहां आर हा हूं, यदि सब कुछ दिखावटी है तो मुझको इससे भागीदारी करनी पड़ेगी।

मैं एक लंबी सूई लेकर वहां पहुंच गया, जिससे मैं उसको उछल-कूद करवा सकूं। वह सबसे प्रसिद्ध वली बन गया क्योंकि कोई और वली इतना ऊँचा नहीं कूद रहा था।

जो कुछ भी घटित हो रहा था उसके बारे में वह कुछ कह भी नहीं सकता था—क्योंकि वह तो वली की गिरफ्त में था और वली एक सूई से भयभीत नहीं हो सकता था। इसलिए वह कुछ कह भी नहीं पाया और मैं उसको सूई चुभोता रहा। उसको करीब-करीब चार गुना अधिक मिठाई, अधिक फल और अधिक रूपये चढ़ावे में मिल गए....उससे दुआ चाहने वाले अधिक लोग आए।

उसने कहा: यह भी खूब रही, लेकिन तुमने मुझको बहुत सताया।

उस दिन से मेरी इतनी मांग हो गई, प्रत्येक वली चाहता ता कि उसकी रस्सी मुझे दे दी जाए, क्योंकि जो भी मुझे अपने सहायक के रूप में पा जाता तुरंत उसी दिन महानतम वली बन जाता।

दस दिन तक उत्सव चलता रहा, और कोई भी वली दुबारा अगले दिन मुझे अपने साथ रखना चाहता था। वे कहा देते, यदि तूम दुबारा आ गए तो मैं यह शहर छोड़ कर भाग जाऊँगा।

मैंने कहा: इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। अन्य मूढ़ों के द्वारा जो यह नहीं जानते कि क्या हो रहा है, मेरी मांग इतनी अधिक है......तुम बस मुझे को अपने हिस्से के चढ़ावे में से आधा दे दो—क्योंकि फिर भी तुम्हारे पास दो गुना शेष रह जाएगा।

और मैंने पाया कि करीब-करीब प्रत्येक व्यक्ति धोखेबाज था—क्योंकि में प्रत्येक को अपनी सूई द्वारा कुदवा रहा था। पूरे नगर में एक भी प्रमाणिक व्यक्ति नहीं था जो कि अवशिष्ट या ऐसा कुछ हो। वे बस दिखावा कर रहे थे—चिल्ला रहे थे, चीख रहे थे, ऐसी बातें कह रहे थे जिनको तुम समझ न सको, लेकिन तुमको इसमें से मतलब निकालना पड़े।

मौलवी लोग , मुस्लिम विद्वान तुमको समझाए गे कि इस बात का अर्थ है: तुम पर कृपा हो रही है। तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी। और कौन फ़िकर करता है कि किसकी इच्छा पूरी हुई या नहीं? यदि सौ लोग आते है तो कम से कम पचास लोगों की इच्छा तो पूरी होने वाली है। यह पचास लो वापस लौट कर आएंगे और ये पचास लोग इच्छा पूरी होने वाली इस बात का प्रचार करेंगे। शेष पचास लोग भी लौट कर आएंगे—उसी वली के पास नही, लेकिन अन्य वली यों के पास लौटेंगे जो वहां है, क्योंकि पहला वली जिसके पास वे गए काम न आया: शायद वह इतना शक्तिशाली न हो।

और मेरे वली सर्वाधिक शक्तिशाली थे। उनकी शक्ति इस बात से तय की जाती थी कि वे कितना ऊँचा कूदे है। वे कितना चीखे है। वे कितना चिल्लाए है। सो ये तो में कर ही रहा था।

और प्रत्येक व्यक्ति ने मुझसे पूछा कि मेरे वली मेरी और ऐसी विचित्र मुख मुद्राएं क्यों बना रहे थे.....

मैंने कहा: वह एक अध्यात्मिक भाषा है, उसको तुम नहीं समझोगे।

--ओशो

मुझे सुझाव दे—आदेश नहीं—(प्रकरण-21)

मेरे बचपन में मेरे माता पिता के साथ यह प्रतिदिन की समस्या थी। मैंने उनसे बार-बार कहा, एक बार आप लोगों को समझ लेनी चाहिए कि यदि आप चाहते है कि मैं कुछ करू, तो मुझको वह करने के लिए कहें मत, क्योंकि यदि आप कहेंगे कि मुझको इसे करना पड़ेगा, तो मैं ठीक उलटा कर देने वाला हूं—चाहे जो भी हो।

मेरे पिता ने कहा: तुम ठीक उलटा कर ड़ालोगे।

मैंने कहा: बिलकुल सही—ठीक उलटा। मैं किसी भी दंड के लिए तैयार हूं, लेकिन वास्तव में इस स्थिति के लिए आप उत्तरदायी है, मैं नही; क्योंकि मैंने आरंभ से ही इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि यदि आप वास्तव में कोई बात मुझसे करवाना चाहते है तो उसे करने के लिए मुझसे मत कहिए। उसे मुझे स्वयं ही खोजने दें।

एक बार मुझको कुछ करने का आदेश दे दिया गया, तो मेरे द्वारा उस कि अवज्ञा होना निशिचत है। भले ही मैं जानता होऊं कि आप जो कह रहे है वह सही है। किंतु यहां पर यह प्रश्न ही नहीं है। यह छोटी सी बात और उसके ठीक होने का कोई बहुत अधिक महत्व नहीं है। यह मेरे सारे जीवन का प्रश्न है। कौन नियंत्रण में होना चाहता है। इस छोटे से उचित और अनुचित को मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था। न ही इससे कोई अंतर पड़ता था।

मेरे लिए जिसका महत्व है—और यह जीवन और मृत्यु का प्रश्न है—वह है कि नियंत्रण में कौन रहने वाला है। क्या आप नियंत्रण में रहेंगे, या मैं नियंत्रण में रहने वाला हूं। यह मेरा जीवन है या आपका जीवन?

कई बार उन्होंने प्रयास किया और उन्होंने पाया कि मैं अपने निर्णय पर अडिग था। मैं ठीक उलटा कर डालुगां। निस्संदेह यह ठीक नहीं था। जो वे चाहते थे वह निश्चित रूप से उचित था। और इस तथ्य का मेरी ओर से कोई इनकार भी नहीं था। मैं कहता: जो आप चाहते थे ठीक था। लेकिन आप चाहते थे इसीलिए मेरे लिए यह ठीक नहीं था, आपने मुझको अवसर दिया होता। आप अधीर थे, आपने मुझको विपरीत कृत्य करने के लिए बाध्य कर दिया। अब ये चीजें गलत हो गई है। तो उनके लिए कौन उत्तर दायी है।

उदाहरण के लिए मेरे दादा अस्वस्थ थे। मेरे पिता बाहर जा रहे थे। और उन्होंने मुझसे कहा: तुम यहां हो और तुम अपने दादा के इतने अच्छे मित्र भी हो इसलिए जरा थोड़ा सा खयाल रखना। यह दवा तीन बजे दी जानी है और वह दवा छह बजे दी जाने वाली है।

मैंने ठीक उलटा कर डाला—और मैने वह दवा छह बजे वाली थी वी बजे दे दी, और वह दवा जो तीन बजे दी जाने वाली थी वह छह बजे दे डाली। पूरी व्यवस्था बदल दी। स्वभावत: मेरे दादा और बुरी तरह से अस्वस्थ हो गए। और जब मेरे पिता लौटे ति उन्होंने कहा: यह तो हद हो गई। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि तुम ऐसा कर दोगे।

मैंने कहा: आपको कल्पना कर लेना चाहिए थी। आपको कल्पना में देखना आरंभ कर देना चाहिए। जब मैंने यह कह दिया है। तो मुझको यही करना पड़ेगा, भले ही उसका अर्थ अपने दादा को खतरे में डालना हो। और मैंने उनसे कह दिया था कि मैंने दवा का क्रम उलटा कर दिया है। क्योंकि मुझको इसे इस ढंग से करना पड़ेगा। और वे मेरे साथ सहमत हो गए।

मेरे दादा मनुष्यों में एक रत्न थे। उन्होंने कहा: तुम ठीक वैसा ही करो जैसा तुमने कहा है। अपने निर्णय पर अडिग रहो। अपना जीवन मैं जी चुका हूं, तुम्हारा जीवन जिया जाना शेष है। किसी के द्वारा नियंत्रित मत होओ। यदि मैं मर भी जाता हूं, तो कभी इसके बारे में अपराध बोध अनुभव मत करना।

वे नहीं मरे। लेकिन मैंने एक खतरनाक निर्णय लिया था। मेरे पिता ने उस दिन से मुझको कोई भी काम कहने के लिए बंद कर दिया। मैंने कहा: आप सुझाव दे सकते है, आप आदेश नहीं दे सकते। आपको अपने पुत्र के प्रति विनम्र होना सीखना पड़ेगा, क्योंकि जहां तक कि हमारे अस्तित्व का प्रश्न है। कौन पिता, और कौन पुत्र है? आपकी मुझ पर मालियत नहीं है। मेरी आपके ऊपर मालियत नहीं है। यह तो बस दो अजनबी यों का आकस्मिक मिलन मात्र है। आपको जरा भी खयाल न था, कि आप किसको जन्म देने जा रहे है। मुझको भी कोई खयाल न था कि कौन मेरा पिता और माता बनने जा रहे है। सह बस रास्ते पर होने वाला आकस्मिक मिलन है।

परिस्थिति का शोषण करने का प्रयास मत करिए। इस बात का लाभ मत उठाईये कि आप शक्तिशाली है, आपके पास धन है, और मेरे पास कुछ भी नहीं है। और मुझको बाध्य मत कीजिए, क्योंकि ऐसा करना कुरूपता है। आप मुझको सुझाव दें। आप सदा मुझको सुझाव दे सकते है। यह मेरा सुझाव है—तुम इस पर विचार कर सकते हो। यदि तुम्हें लगे कि यह उचित है तो तुम उसे करो, यदि तुमको लगता है यह उचित नहीं है, मत करो।

और धीरे-धीरे यह निर्धारित हो गया कि मेरे परिवार ने केवल सुझाव देना आरंभ कर दिया, लेकिन उनको भी हैरानी हुई, क्योंकि मैंने भी उनको सुझाव देना आरंभ कर दिया। मेरे पिता ने कहा: यह कुछ नया मामला है। तुमने हमें इसके बारे में नहीं बताया था।

मैंने कहा: आसान है यह। यदि आप मुझको सुझाव दे सकते है क्योंकि आप अनुभवी हैं, परिपक्व है, मैं भी आपको सुझाव दे सकता हूं क्योंकि मैं गैर अनुभवी हूं। और यह कोई अयोग्यता हो ऐसा अनिवार्य नहीं है। क्योंकि संसार के सभी महान अविष्कार गैर-अनुभवी लोगों के द्वारा संपन्न हुए है। अनुभवी लोग वही बात दोहराए चले जाते है—क्योंकि अपने अनुभव से उनको ठीक ढंग पता होता है; वे कोई अविष्कार नही कर सकते है।

अविष्कार करने के लिए तुम्हें उन ढंग से अनजाना रहना पड़ता है जो सदा अपनाया गया है। तब ही तूम नया मार्ग खोज सकते हो। केवल गैर अनुभवी व्यक्ति में ही अज्ञात में जा पाने की क्षमता हो सकती है।

इसलिए मैंने कहा: आपके पास अनुभव की योग्यता है, मेरे पास गैर अनुभव की योग्यता है। आप परिपक्व है, लेकिन परिपक्वता का अर्थ यह भी है कि आपका दर्पण उतना स्वच्छ नहीं रहा जितना मेरा है। उसके उपर धूल जम गई है हो आपने जीवन में बहुत कुछ देख लिया है, इसलिए वह आपकी योग्यता है।

मेरी योग्यता है, मैंने जीवन का कुछ भी नहीं किया है देखा है। मेरे दर्पण पर कोई धूल एकत्रित नहीं हुई है—मेरा दर्पण और स्पष्टता से और ठीक ढंग से प्रतिबिंबित करता है। आपका दर्पण शायद कल्पना भर कर सकता है कि वह प्रतिबिंबित कर रहा है। यह कोई तैरती हुई पुरानी स्मृति भी हो सकती है। वस्तुगत यथार्थ सा सच्चा प्रतिबिंब नहीं।

इसलिए ऐसा होना ही है: यदि आप मुझको सुझाव दे सकते है, मैं भी आपको सुझाव दे सकता हूं। मैं आपको उनका पालन करने के लिए नहीं कह रहा हूं। यह कोई आदेश नहीं है। आप उस पर विचार कर सकते है जिस भांति मैं आपके द्वारा दिए सुझावों पर विचार करता हूं।

--ओशो

मेरा पुस्तक प्रेम—(प्रकरण-22)

मेरे पिता जी वर्ष में कम से कम तीन या चार बार बंबई जाया करते थे। और वे सभी बच्चों से पूछा करते थे, तुम अपने लिए क्या पसंद करोगे। और वे मुझसे भी पूछा करते यदि तुमको किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो में उसको लिखा सकता हूं और बंबई से ला सकता हूं।

मैंने कहा कभी कुछ लाने के लिए नहीं कहां। एक बार मैंने कहा, मैं केवल यह चाहता हूं कि आप और अधिक मानवीय, पिता पन से कम भरे हुए अधिक मैत्रीपूर्ण,कम अधिनायक वादी, अधिक लोकतांत्रिक, होकर वापस लौटिए। जब लौट कर आएं तो मेरे लिए अधिक स्वतंत्रता लेकर आइएगा।

उन्होंने कहा: लेकिन बाजार में यह वस्तुएं उपलब्ध नहीं है।

मैंने कहा: मुझको पता है। ये बाजार में उपलब्ध नहीं है। लेकिन ये ही वे चीजें है जिनको मैं पसंद करूंगा: जरा सी और स्वतंत्रता,कुछ और बड़ी अनुशासन की रस्सी, कुछ कम आदेश कुछ कम आज्ञाएं ओर थोड़ी सा सम्मान।

कभी किसी बच्चे ने सम्मान नहीं मांगा था। तुम खिलौनों, मिठाईयों, कपड़ों,साईकिल और ऐसी ही वस्तुओं की मांग करते हो। वे तुमको मिल जाती है। लेकिन ये वास्तविक चीजें नहीं है जो तुम्हारा जीवन आनंदित करने जा रही हों।

मैंने उनसे घन केवल तभी मांगा जब मैं पुस्तकें खरीदना चाहता था। मैंने कभी किसी और वस्तु के लिए धन नहीं मांगा। और मैंने उनसे कहा: जब मैं पुस्तकों के लिए धन मांगु तो बेहतर है कि आप मुझको दे दें।

उन्होंने कहा: क्या अभी प्राय है तुम्हारा।

मैंने कहा: मेरा अभिप्राय बस यह है कि यदि आप मुझको यह धन नहीं देते है तो मुझको इसे चुराना पड़ेगा। मैं चौर बनना तो नहीं चाहता लेकिन यदि आप मुझको बाध्य करते है तो कोई उपास नहीं है। आप जानते है कि मेरे पास धन नहीं है। मुझको उन पुस्तकों की आवश्यकता है और मैं उन्हें खरीदने जा रहा हूं, यह आप जानते है। इसलिए यदि मुझको धन नहीं दिया गया जाएगा,तो मैं उसे ले लूगा और अपने मन में यह बात स्मरण कर लें कि वह आप थे जिसने मुझको चोरी करने के लिए बाध्य किया था।

उन्होंने कहा: चोरी करने की आवश्यकता नहीं है। तुमको जब कभी धन की आवश्यकता हो तुम बस आओ ओ उस ले लो।

मैंने कहा: आप आश्वस्त रहें कि यह केवल पुस्तकों के लिए है। लेकिन आश्वस्त होने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वे घर में मेरे बढ़ते हुए पुस्तकालय को देखते रहते थे।

धीरे-धीरे घर में मेरी पुस्तकों के अतिरिक्त किसी और वस्तु के लिए स्थान ही नहीं बचा।

और मेरे पिता ने कहा: पहले हमारे घर में एक पुस्तकालय था, अब पुस्तकालय में हमारा घर है। और हम सभी को पुस्तकों को खयाल रखना पड़ता है। क्योंकि यदि तुम्हारी किसी पुस्तक के साथ कुछ गड़बड़ हो जाती है। तो तुम इतना शोर मचाते हो,तुम इतना उपद्रव कर डालते हो कि प्रत्येक व्यक्ति तुम्हारी पुस्तकों से भयभीत है। और वे हर कहीं है; तुम उनसे टकराने से बच नहीं सकते हो। और यहां पर छोटे बच्चे है.....

मैंने कहा: छोटे बच्चे मेरे लिए कोई समस्या नहीं है, समस्या है बड़े बच्चे। छोटे बच्चे—मैं उनका इतना सम्मान करता हूं कि वह मेरी पुस्तकों की रक्षा करते है।

यह मेरे घर में देखे जाने वाली विचित्र बात थी। मुझसे छोटे भाई ओर बहनें अभी जब मैं घर में नहीं होता था तो मेरी पुस्तकों को सुरक्षा करते थे। कोई मेरी पुस्तकें छू भी नहीं सकता था। और वे उनको साफ करते

थे और उनको सही स्थान पर रख दिया करते थे। भले ही मैंने उनको कहीं रख दिया हो। इसलिए जब कभी मुझको किसी पुस्तक की आवश्यकता हाथी थी वे मुझे मिल जाती थी। और यह एक आसान मामला था क्योंकि मैं उनके प्रति इतना सममान पूर्ण था। और वे मेरे प्रति अपना सम्मान सिवाय इसके कि वे मेरी पुस्तकों के प्रति सम्मानपूर्ण हो जाएं, वे किसी और ढंग से व्यक्त कर भी नहीं सकते थे।

मैंने कहा: वास्तविक समस्या बड़े बच्चे है—मेरे चाचा लोग मेरी चाचियां, मेरे पिता की बहनें मेरे पिता के जीजा लोग—ये लोग थे जो समस्या थे। मैं नहीं चाहता कि कोई मेरी पुस्तकों पर निशान लगाए, मेरी पुस्तकों में अंडरलाइन करे। और ये लो यही किए चले जाते है। मुझको इस खयाल से ही धृणा थी की कोई व्यक्ति मेरी पुस्तकों में अंडरलाइन करे।

मेरे पिता के एक जीजाजी प्रोफेसर थे। इसलिए उनमें अंडरलाइन करने की आदत होनी ही थी। और उनको इतनी सारी सुंदर पुस्तकें मिल गई थी, इसलिए जब कभी वे आया करते वे मेरी पुस्तकों पर टिप्पणियां लिख देते थे। मुझको उन्हें बताना पड़ता था: यह न केवल असभ्यता पूर्ण है, गलत आचरण है बल्कि यह भी प्रदर्शित करता है कि आपके पास किस भांति का मन है।

मैं पुस्तकालयों से पुस्तकें लाकर पढ़ना नहीं चाहता, मैं पुस्तकालयों से लाकर पुस्तकें नहीं पढ़ता हूं। बस इसी कारण से कि वे अंडरलाइन की हुई चिह्नित की गई होती है। किसी और व्यक्ति ने किसी बात पर बल दिया हुआ है। मैं ऐसा नहीं चाहता हूं,क्योंकि आपके जाने बिना वह उस बात पर दिया हुआ बल आपने मन में प्रविष्ट हो जाता है। यदि आप कोई पुस्तक पढ़ रहे है और कोई बात लाल रंग से अंडरलाइन है तो यह पंक्ति एक अलग प्रभाव छोड़ती है। आपने पूरा पृष्ठ लिया है लेकिन वह पंक्ति अलग प्रभाव डालती है। यह आपके मन पर एक भिन्न प्रकार की छाप छोड़ जाती है।

मुझको किसी और द्वारा अंडरलाइन,चिन्हित पुस्तकें पढ़ने से अरूचि है। मेरे लिए यह बस उसी प्रकार से है जैसे को वेश्या के पास जा रहा हो। एक वेश्या उस स्त्री के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है जिसे अंडरलाइन और चिन्हित कर दिया गया हो उसके प्रत्येक स्थान पर विभिन्न लोगों द्वारा भिन्न-भिन्न भाषाओं में टिप्पणियां लिख दि जाती है। आप एक अनछुई स्त्री चाहेंगे, किसी और के द्वारा रेखांकित की हुई नहीं।

मेरे लिए कोई पुस्तक मात्र एक पुस्तक नहीं है। यह एक प्रेम संबंध है। यदि आप किसी पुस्तक पर अंडरलाइन कर देते है तो आपको उसका मूल्य चुकाना पड़ेगा और उसे ले जाना होगा। फिर मैं उस पुस्तक को यहां पर रखना नहीं चाहता हूं। क्योंकि एक गंदी मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है। मैं वेश्या बन चुकी पुस्तक को रखना नहीं चाहता—इसको ले लें।

वे बहुत क्रोधित हो गए, क्योंकि वे मेरी बात समझ न सके। मैंने कहा: आप मुझे नहीं समझते हैं क्योंकि आप मुझको नहीं जानते है। आप जरा मेरे पिता के बात करें।

और मेरे पिता ने उनसे कहा: यह आपका दोष है। आपने उसकी पुस्तक में रेखाएं क्यों खींच दीं। आपने उसकी पुस्तक में टिप्पणी क्यों लिख दी। इससे आपका कौन सा उद्देश्य पूरा हो गया—क्योंकि पुस्तक तो उसी के पुस्तकालय में रहेगी। पहली बात यह कि आपने उससे अनुमति कभी नहीं मांगी—कि आप उसकी पुस्तक पढ़ना चाहते थे।

यदि यह उसकी चीज है तो यहां उसकी अनुमति के बीना कुछ नहीं होता। क्योंकि यदि आप उसकी चीज बिना अनुमति लिए ले लेते हैं, तो वह प्रत्येक व्यक्ति की वस्तुएं बिना अनुमति के ले जाना आरंभ कर देता है। और इससे परेशानी निर्मित हो जाती है। अभी उस दिन मेरे एक मित्र ट्रेन पकड़ने जा रहे थे और वह उसका सूटकेस लेकर चला गया.....

मेरे पिता के मित्र पगलाए जा रहे थे: मेरा सूटकेस कहां है?

मैंने कहा: मुझे पता है कि वह कहां है, लेकिन आपके सूटकेस के भीतर मेरी पुस्तकों में से एक पुस्तक है। मुझको आपने सूटकेस में कोई रूचि नहीं है। मैं तो बस अपनी पुस्तकों में से एक पुस्तक बचाने का प्रयास कर रहा हूं।

मैंने कहा: उसे खोलों—देखो, लेकिन वो हिचकिचा रहे थे। क्योंकि उन्होंने पुस्तक चुराई थी—और उनके सूटकेस में पुस्तक मिल गई। मैंने कहा: अब आप अर्थदंड जमा कीजिए, क्योंकि यह असभ्यता पूर्ण है।

आप यहां पर एक अतिथि थे; हमने आपका सम्मान किया, हमने आपकी सेवा की। हमने आपके लिए सब कुछ किया—आपने एक गरीब लड़के की पुस्तक चुरा ली जिसके पास कोई पैसा नहीं है। एक ऐसा लड़का जिसे अपने पिता को धमकाना पडा कि यदि आप मुझे पैसे नहीं देंगे तो मैं चोरी करने जा रहा हूं। और फिर पूछिएगा मत कि मैंने ऐसा क्यों किया है? क्योंकि तब जहां कहीं से मैं चुरा सका, मैं चोरी कर लुंगा।

ये पुस्तकें सस्ती नहीं है—और आपने बस इसको अपने सूटकेस में रख लिया। आप मेरी आंखों में धूल नहीं झोंक सकते। मैं जब अपने कमरे में प्रवेश करता हूं तो मैं जान लेता हूं कि मेरी सभी पुस्तकें वहां पर है या नहीं,कोई गायब तो नहीं है।

इसलिए मेरे पिता ने उन प्रोफेसर से कहा जिन्होंने मेरी पुस्तक में अंडरलाइन की थी, उसके साथ वैसा कभी मत कीजिएगा। यह पुस्तक ले जाइए और इसके स्थान पर इसकी नई प्रति लाकर रख दीजिएगा।

--ओशो

भट्टाचार्य की भूत से भेट—(प्रकरण-23)

मेरे गांव मैं एक आश्रम था, जहां कबीर के एक बहुत प्रसिद्ध अनुयायी साहिब दास रहते थे। वे मुझसे काफी पहले हुए थे। लेकिन वे ध्यान करने वालों के लिए एक बड़ा आश्रम एक बड़ा सा मंदिर और बहुत सह गुफाएं छोड़ कर गए थे। वे बहुत सुंदर गुफाएं थी। क्योंकि उनका आश्रम नदी के बहुत निकट था। नदी के किनारे छोटी-छोटी पहाड़ियों में उन्होंने उन गुफाएं को बनाया था। और उन गुफाओं के भीतर पानी के छोटे-छोटे तालाब बने हुए थे। तुम गुफा के भीतर जा सकते थे, एक गुफा से दूसरी गुफा में जा सकते थे। यद्यपि कुछ गुफाएं बंद हो चुकी थी। या तो उनमें पूरी तरह पानी भर गया था या उनकी छत ढह चुकी थी। लेकिन उनको देखना ही अपने आप में सुदंर अनुभव था।

और उन गुफाओं में बैठ जाना....वे इतनी शांत थीं—वहां पर हवा का झोंका तक नहीं आता था। उन्होंने उन गुफाओं को ठीक उस अनुपात में बनाया था कि एक व्यक्ति उन गुफाओं में बिना आक्सीजन की कमी के रह सकता था, क्योंकि वहां बाहर से हवा नहीं आती थी। लेकिन इस गुफा का आकार तुमको कम से कम ती माह के लिए आक्सीजन दे पाने के लिए पर्याप्त था। इसलिए लोगों को उन गुफाओं में ध्यान करने के लिए भेजा जाता था।

मैं उस समय बहुत छोटा था। मेरे जन्म से कोई बीस या तीस वर्ष पूर्व ही साहिब दास गुजर चुके थे। लेकिन उनके उत्तराधिकारी, सत्या साहिब, मैं उनको अच्छी तरह से जानता था, और वे बिलकुल मूढ़ थे। किन्हीं खास कारणों से ऐसा धटित होता है, किसी भी प्रकार से ऐसा हो जाता है कि संत मूढ़ों को आकर्षित करते है।

मैं कोई संत नहीं हूं, इसलिए तुमको चिंता में पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन संत मूढ़ों को आकर्षित करते है, शायद यह एक संतुलन है जो प्रकृति को बनाए रखना पड़ता है। कि यदि संत है तो संतुलन बनाए रखने के लिए खास संख्या में मूढ़ों की जरूरत पड़ती है। प्रकृति का विश्वास संतुलन में है; यह लगातार प्रत्येक चीज को संतुलित करती चली जाती है।

सत्या साहिब निपट मूढ थे, लेकिन वे मेरे पिता के गहरे मित्र थे। इसलिए मेरे पिता के कारण ही ऐसा हो पाया कि मेंने वहां जाना आरंभ कर दिया और इधर-उधर घूमा और उन गुफाओं को देख पाया। यह वास्तव में एक विशाल आश्रम था और साहिब दास—इनके गुरु—अवश्य ही बहुत प्रभावशाली व्यक्तित्व रहे होंगे।

अब वहां पर उनके उत्तराधिकारी सत्या साहिब के अतिरिक्त और कोई न था, प्रत्येक व्यक्ति छोड़ कर जा चुका था। वहां पर विशाल बाग़ था। खेत थे, और यह आश्रम एक बहुत अलक एकांत स्थान पर था, बहुत हरा भरा और साथ में बहती नदी। सत्या साहिब के गुरु को आश्रम परिसर में ही दफ़ना दिया गया था।

भारत में अनेक धर्मों में अपने संतों का दाह संस्कार नहीं किया जाता है, अन्य सभी का दाह संस्कार किया जाता है। लेकिन कुछ धर्मों में—उदाहरण के लिए, कबीर पंथियों में—वे अपने संतों का दाह संस्कार नहीं करते क्योंकि उनके शरीर को नष्ट कर देना उचित नहीं है।

इसलिए उनके शरीरों को ठीक इसी भांति दफनाया जाता है जैसे ईसाई और मुसलमान करते है। एक समाधि, एक कब्र बना दी जाती है। इसको कब्र नहीं कहा जाता है, इसे समाधि कहा जाता है—यही शब्द चेतना की परम अवस्था के लिए प्रयुक्त किया जाता है। क्योंकि उस व्यक्ति ने समाधि उपलब्ध कर ली है, उसकी कब्र कोई साधारण कब्र नहीं है। यह समाधि का, परम चेतना का प्रतीक है।

आश्रम बहुत विशाल था और वहां पर केवल एक व्यक्ति रह रहा था। और कबीर पंथियों की समाधियां पूरी तरह से बंद नहीं होती है, उनमें एक और खुला भाग होता है। ताकि प्रत्येक वर्ष शरीर को बाहर लाया जा सके और प्रत्येक वर्ष वे संत की पुन: पूजा कर सके।

मेरे शिक्षकों में से एक नास्तिक थे। मैंने उनसे कहा: आपको नास्तिकता पूरी तरह सही है, लेकिन आप भूतों में विश्वास करते है या नहीं?

उन्होंने कहा: भूत! मैं तो भगवान तक में भरोसा नहीं करता, मैं भूतों में विश्वास क्यों करूंगा। वे होते ही नहीं है।

मैंने कहा: यह कहने से पहले, मुझको यह सिद्ध करने का अवसर दें कि उनका आस्तित्व है, क्योंकि मेरी एक भूत से भेंट होती रहती है—इसलिए मिलता हूं,उसके साथ बातचीत करता हूं, और वह एक महान व्यक्ति, साहिब दास का भूत है।

उन्होंने कहा: क्या बकवास करते हो, तुमको यह खयाल उस बेवकूफ सत्या साहिब से ही मिला होगा। वह अपने गुरु के बारे में बात करता रहता है। कोई सुनता ही नहीं किंतु वह बोलता रहता है। और मैंने देखा है कि तुम भी वहां जाया करते हो।

मैंने कहा: यह ठीक है कह आपने मुझको वहां जाते देखा होगा लेकिन आप यह नहीं जानते कि मैंने उनके गुरु से भेंट करने की व्यवस्था भी कर ली है, जो वे स्वयं भी आज तक नहीं कर पाए।

मेरे शिक्षक थोड़े शंकित दिखाई पड़े, लेकिन मैं उसी विश्वास से बोला जैसे कि मैं सदैव बोलता हूं—उसी निशिचत ता से। मैंने कहा: कोई समस्या नहीं है, इस पर चर्चा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। चर्चा बाद में होगी; पहले भूत से आमना-सामना हो जाने दो....

उनको थोड़ा सा भय लगने लगा। मैंने कहा: डरिय मत, मैं आपके साथ रहूंगा, और मेरे तीन या चार मित्र भी वहां रहेंगे, क्योंकि हमें साहिब दास की समाधि का दरवाजा सरकाना पड़ेगा, जो कि भारी है; फिर हमें उनकी देह को बाहर निकलना पड़ेगा।

उन्होंने कहा: ये सारे काम करने पड़ेंगे।

मैंने कहा: हां,ये सारे काम करने पड़ेंगे। देह को बाहर निकालना पड़ेगा; केवल तभी मैं साहिब दास से आकार ग्रहण करने के लिए कह सकता हूं। आपको केवल एक बात की सावधानी रखनी है: जरा भी आवाज नहीं करनी है। क्योंकि उसके उत्तराधिकारी सत्या साहिब जाग जाते है। तो समस्या हो जाएगी क्योंकि यह उनके धर्म के बिलकुल विरूद्ध है। वर्ष में केवल एक बार --उनके मृत्यु दिवस पर—उनके शरीर को समाधि से बहार निकाला जा सकता है। और जो हम करेन जा रह है, ये पूर्णत: उनके धर्म के विरूद्ध है। और उससे बहुत झंझट हो सकती है।

इसलिए बिलकुल खामोश रहिए और बहुत शांत रहें। यदि कोई परिस्थिति ऐसी उत्पन्न हो जाए कि आपको भागना पड़े तो किसी की प्रतीक्षा मत करें आरे न किसी को आवाज दे। बस दौड़ पड़ें। बस अपना खयाल रखिएगा,क्योंकि समस्या यह है: कभी-कभी भूत आपको, विशेष तौर पर आपके वस्त्रों को पकड़ लेता है। इसलिए बस खयाल रखें।

वे शिक्षक बंगाली थे—लंबा कुर्ता और धोती पहने पहनते थे—और बंगाली लोग बहुत ढीले कपड़े पहनते है, इसलिए कोई भी जो किसी काम न हो, जो भाग सके, जो किसी तरह को कठिन परिश्रम न कर सके,बंगाली बाबू कहलाता है। भारत में बंगाली बाबू पुकारा जाना अपमान है। ये दो अतियां है। यदि कोई तुमको ‘ सरदार जी’ कह कर पुकारें तो यह भी अपमान है। इसका अर्थ हो कि तुम्हारे पास दिमाग नहीं है—उस अर्थ में नहीं कि तुम ध्यानी हो, बल्कि उस अर्थ में कि तुम ऐ अयातुल्ला खोमैनी हो। या यदि कोई तुमको ‘‘बंगाली बाबू’’ कहता है, तो उसका अर्थ में कि तुम एक अनुपयोगी।

और बंगालियों की कुछ विचित्र आदतें होती है। उनकी धोती इतनी ढीली होती है कि यदि वे दौड़ें तो उनका गिर जाना निशिचत है। उनके पास सदैव साल के बारहों महीने एक छाता रहता है। बरसात हो रही है या नहीं, उससे कोई अंतर नहीं पड़ता; गर्मी है या गर्मी नहीं है। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। और भारत में ऋतुएं बहुत निश्चित है; तुम्हें पूरे साल छाता लिए घूमने की कोई आवश्यक नहीं है। सारे भारत में कोई भी पूरे साल छाता लेकिर नहीं घूमता, लेकिन बाबू—किसी भी तरह से यह उनकी वेशभूषा का एक भाग बन चुका है। वे लगातार छाता लेकिन घूमते है बिना किसी कारण के, अनावश्यक सामान।

इसलिए मैंने अपने शिक्षक से—भट्टाचार्य था उनका पारिवारिक नाम, मैंने कहा, सर अपना छाता छोड़ कर आइएगा, क्योंकि यदि उसने आपका छाता पकड़ लिया तो—ये भूत लोग चीजों को पकड़ लेते है।

उन्होंने कहा: मैं अपना छाता नहीं सकता अपने छाते के बिना मुझको ऐसा लगता है। कि मैं नंगा हूं या कोई ऐसी चीज हैजा सतत छूटी हुई है।

और मैंने कहा: आपको अपनी धोती कस कर बंधनी पड़ेगी, क्योंकि यदि यह खुल कर गिर पड़ी तो आपको नंगा ही भागना पड़ेगा। और ये भूत तो भूत होते है: वे आपके रीति-रिवाजों,आपके शिष्टाचारों में विश्वास नहीं करते। यह आपकी धोती पकड़ सकते है और आपको अपनी धोती के बिना भागना पड़ जाएगा।

उन्होंने कहा: लेकिन वे तो संत है।

मैंने कहा: वे संत है, लेकिन अब वे भूत भी है। लेकिन अब ये आपके ऊपर निर्भर है: आप जैसे चाहें उस ढंग से आ सकते है।

वे आए। अपनी धोती को वे जितना कस सकते थे उतना कसे हुए थे। जिस ढंग से वह पहनते थे....धोती अनेक ढंगों से पहनी जा सकती थी। महाराष्ट्र के लोग सबसे अच्छी ढंग से पहना करते है। तब यह पाजामे की तरह काम करती है—दो भागों में विभाजित। इसको पहन कर तुम भाग सकते हो, तुम कार्य कर सकते हो।

बंगाली लोग सबसे बुरे ढंग से पहनते है। वह भाग जिसे वे अपनी कमर के पिछले भाग में खोंसते है वह इतना ढीला होता है कि वह भूमि को स्पर्श करता रहता है। और दूसरा भाग जो वे अपने सामने खोंसते है वह भी फर्श को छूता रहता है। ढीले-ढालें लोग।

हम आधी रात को वहाँ गए। हमने अंधेरी रात को चुना था, जब चाँदनी नहीं थी, क्योंकि यदि साहिब दास का उत्तराधिकारी हमें देख भी लेता तो.....। और मुझे भूतों के लिए अंधेरी रात की आवश्यकता थी—क्योंकि मैंने एक युवक को भूत बनने के लिए तैयार कर लिया था। यदि भट्टाचार्य अपने छाते के बिना आते है तो उनकी धोती को पकड़ने के लिए राज़ी कर लिया था।

कब्र बडी थी क्योंकि कबीर पंथियों को साहिब दास के शरीर को बाहर निकालना पड़ता था; यक एक शव पेटिका थी, जिसको तुम्हें बाहर निकालना होता था। लेकिन कब्र काफी बड़ी थी। इस लिए मेरा भूत उस शव पेटिका के साथ में लेटा हुआ था। इसलिए व्यवस्था यही थी कि हम अपने आदमी को बाहर खींच लेंगे और उसी क्षण हममें से कोई एक किसी वस्तु को गिरा देगा और कोई चीख मार कर दौड़ पड़ेगा। और इसके पहले कि भट्टाचार्य यह देख पाएँ कि भूत कौन बना हुआ है। भूत उसकी कोई वस्तु पकड़ लेगा। और ठीक ऐसा ही हुआ।

सब कुछ यथावत हुआ। भूत ने उनकी धोती पकड़ ली, और भट्टाचार्य....तुम विश्वास नहीं कर सकते कि जब कोई वास्तव में भयभीत होता है। तो वह व्यक्ति क्या कर डालता है: उन्होंने स्वयं अपनी धोती खोल डाली। उन्होंने धोती की अपने आप ही खुल जाने की प्रतीक्षा नहीं की: उन्होने अपने आप ही उसे खोल डाला धोती छाता....। भूत छाता पकड़ ही नहीं सकता था, क्योंकि भूत नीचे लेटा था और छाता भट्टाचार्य की बगल में दबा हुआ था कुछ उच्चाई पर। लेकिन भट्टाचार्य ने सोचा कोन जाने, वह भूत शायद छाते के लिए उछल पड़े ओर जब उन्होने अपनी कुर्ता उतारना आरंभ किया तो मैंने कहा, भूत संतुष्ट हो गया है—चले आइए।

दो दिन बाद मैंने उनसे पूछा: आपकी नास्तिकता का क्या हुआ।

उन्होंने कहा: वह सब बेवकूफी थी, मैं मूर्ख था। तुम सही थे—ईश्वर है। लेकिन कैसी अजीब रात थी वह।

मैंने कहा: कम से कम आपको मुझे धन्यवाद देना चाहिए—मैंने आपका कुर्ता बचा लिया था।

उन्होंने कहा: मुझे याद है वह। मैं उसे फेंक रहा था। क्योंकि यदि भूत ने मेरे वस्त्रों को पकडना आरंभ कर दिया तो मैं पकड़ लिया जाऊँगा। मैंने सोचा: मैं सभी कुछ छोड़ दूँगा जिससे कम से कम मैं अपने घर तो पहुंच सकूं। अधिक से अधिक लोग हंसेगे और यह लज्जाजनक होगा। और यह लज्जाजनक था: जग मैं अपने कुरते में वहां पहुंचा.....

हमने सभी व्यवस्थाएं कर ली थी जिससे कि लोग वहां रहें; वरना आधी रात में कौन देखेगा? एक नगर, छोटे से नगर में सभी लोग नौ बजे तक,अधिक से अधिक दस बजे ते सो जाते है। इन दिनों में न तो सिनेमा थे, न सिनेमा घर थे, इसलिए नौ बजे तक सारा नगर वीरान हो जाता था। इसलिए हमने व्यवस्था की थी। कुछ असली मजेदार होने जा रहा है; आप बस प्रतीक्षा करें। लगभग बारह बजे आप भट्टाचार्य को नग्नावस्था में घर आता देखेंगे।

उन्होंने कहा: नग्नावस्था में।

हमने कहा: लेकिन किसी को बताएं मत। वे अपने छाते तक के बिना आएंगे।

इसलिए लोग वास्तव में उत्सुक थे और वे प्रतीक्षा कर रहे थे प्रत्येक व्यक्ति अपने बिस्तर पर जागता हुआ लेटा था। भारत में गर्मियों में लोग गलियों में बिस्तर लगा कर सोते है। प्रत्येक व्यक्ति लेटा हुआ था, जगा हुआ, और जैसे ही भट्टाचार्य वहां पहुंचे वहां बहुत भीड़ इकट्ठी हो गई थी—मशालें, टॉर्चों, लालटेन, और लोग।

भट्टाचार्य पसीने से लथपथ थे बस थरथर कांप रहे थे। इसलिए हमें लोगो से कहना पडा यह उचित नहीं है—आपको वापस लोट जाना चाहिए। वे एक भूत से मिल कर आए है। और अब आप लोग उनको परेशान कर रहे है। उनको ऐसा धक्का पहुंचा है कि वह मर भी सकते है।

हमने उनको भीतर ले गए, हमने उनको भलीभाँति ठंडे पानी से स्नान कराया, होश में लाने के लिए जितना हो सका उतनी बाल्टी पानी उन पर डाला। उनको होश में लाने के लिए यह बहुत कठिन था। लेकिन आखिर कार उन्होने कहा, हां अब मुझे बेहतर लग रहा है। लेकिन भूत कहां है।

मेंने कहां: वह भूत चला गया है। हमने शव पेटिका बंद कर दी है।

और मेरा छाता और धोती, उन्होनें कहा।

मैंने कहा: उनको हम ले आए है, क्योंकि भूत एक संत है। हमारी प्रार्थना सुन ली की: बेचारे भट्टाचार्य बहुत गरीब आदमी है। और आप एक संत है, एक नास्तिक के लिए इतना दंड पर्याप्त है; इससे अधिक की आवश्यकता नहीं है—तो उन्होंने उसे वापस दे दिया है।

उस दिन से हम प्रतिदिन बेचारे भट्टाचार्य को प्रात: काल समाधि पर जाते हुए और फूल चढ़ाते हुए और प्रार्थना करते हुए और कुछ पूजा करते हुए देख करते थे।

मैंने कहा: क्या आप कबीर पंथी हो गए है?

उन्होने कहा: मुझको कबीर पंथी होना पडा। मैं कबीर पंथियों के शास्त्र, कबीर के बचन कबीर के गीत पढ़ करता हूं—वे वास्तव में सुंदर है। लेकिन मुझको तुम्हें धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि मुझको कहा: यदि तुमने भूत से मेरा आमना-सामना न कराया होता तो मैं नास्तिक ही मर जाता।

--ओशो

महेश

प्रश्न--शिष्य गुरु के साथ गद्दारी क्यों करता है? विजया नंद और महेश भट्ट अभी आपके विशेष में कहते है। और एक संन्यासी, स्वामी चिन्मय ने करंट में लिखा है कि जब मेरे गुरु राजनीति के विरूद्ध में बोलते है तब वे धर्म से नीचे गिरते है; और साथ-साथ के मैं जीवित शिष्य हूं इसलिए अपने गुरू के विरूद्ध कह सकता हूं।

शिष्यों की चार कोटियां है। पहली कोटि—विद्यार्थी की है, जो कुतूहल वश आ जाता है। जिसके आने में न तो साधना की कोई दृष्टि है, न कोई मुमुक्षा है न परमात्मा को पाने की कोई प्यास है—चलें देखें, इतने लोग जाते है, शायद कुछ हो। तुम भी रास्ते पर भीड़ खड़ी देखो तो रूक जाते हो, पूछने लगते हो क्या मामला है। भीतर प्रवेश करना चाहते हो भीड़ में देखना चाहते हो कुछ हुआ होगा....। नहीं की तुम्हें कोई प्रयोजन है। अपने काम से जाते थे, आकस्मित कुछ लोग आ जाते है। कोई आ जाता है, तुमने उसे आते देखा; उसने कहा; क्या करते हो बैठे-बैठे, आओ मेरे साथ चलो, सत्संग में ही बैठेंगे। खाली थे, कुछ काम भी न था,चले आये। पत्नी आयी,पति साथ चला आया; पति आया,पत्नी साथ चली आई। बाप आया, बेटा साथ चला आया।

ऐसे बहुत से लोग आकस्मिक रूप से आ जाते है। उनकी स्थिति विद्यार्थी की है। वे कुछ सूचनाएं इक्कठी कर लेंगे,सुनेंगे तो कुछ सूचनाएं इक्कठी हो जाएगी। उनका ज्ञान थोड़ा बढ़ जायेगा। उनकी स्मृति थोड़ी सघन

होगी। ऐसे आने वालों में से सौ में से दस ही रूकेंगे; नब्बे छिटक जायेंगे। दस रूक जाते हैं यह भी चमत्कार है, क्योंकि वे आये न थे किसी सजग-सचेत प्रेरणा के कारण—ऐसे ही मूर्च्छित-मूर्च्छित किसी के धक्के में चलें आए थे। पानी बहती हुई लकड़ी की तरह किनारे लग गये थे। किनारे की कोई तलाश नहीं थी। कितनी देर लगा रहेगा लकड़ी का टुकड़ा किनारे से? हवा की कोई लहर आयेगी, फिर बह जायेगा; उसका रूकना-न रूकना बराबर है। लेकिन ऐसे लोगों में से भी दस प्रतिशत लोग रूक जाते है। जो दस प्रतिशत रूक जाते है वे ही दूसरी सीढ़ी में प्रवेश करते है।

दूसरी सीढ़ी साधक की है। पहली सीढ़ी में सिर्फ बौद्धिक कुतूहल होता है—एक तरह की खुजलाहट, जैसे खाज खुजाने से अच्छा लगता है। हालांकि लाभ नहीं होता है। मीठा लगता है। यह पूँछें, वह पूँछें, यह जान लें वह जान लें; अहंकार की तृप्ति होती है। मैं कोई अज्ञानी नहीं हूं, बिना ज्ञान के ज्ञानी होने की भ्रांति पैदा हो जाती है। इसमें से दस प्रतिशत लोग रूक जाते है। यह दस प्रतिशत साधक हो जायेंगे।

साधक का अर्थ है; जो अब सिर्फ सुनना नहीं चाहता, समझना नहीं चाहता,बल्कि प्रयोग भी करना चाहता है।

झूठा ब्रह्मज्ञान—(प्रकरण-24)

मैं जब छोटा था तो मेरे गांव में एक बहुत बड़े विद्धवान पंडित रहते थे। वह मेरे पिता के मित्र थे। मैं अपने पिता के उलटे सीधे प्रश्न पूछ कर सर खाता रहता था। पर मेरे पिता ईमानदार आदमी थे। जब वह किसी प्रश्न का उत्तर न दे पाते तो कह देते मुझे मालूम नहीं है। आप मेरे मित्र इन पंडित से कोई भी प्रश्न पूछ सकते है। यह ज्ञानी ही नहीं बह्म ज्ञानी भी है।

मेरे पिता की इस ईमानदारी के कारण उनके प्रति अपार श्रद्धा है। मैं पंडित जी के पास गया। उन पंडितजी के प्रति मेरे मन कोई श्रद्धा कभी पैदा नहीं हुई। क्योंकि मुझे दिखता ही नहीं था कि जो वह है उसमें जरा भी सच्चाई है। उनके घर जाकर बैठ कर मैं उनका निरीक्षण भी किया करता था। वह जो कहते थे उससे उनके जीवन में कोई ताल मेल भी है या सब उपरी बातें है।

लेकिन वह करते थे बहुत ब्रह्म ज्ञान की बातें। ब्रह्मा सूत्र पर भाष्य करते थे। और मैं जब उनसे ज्यादा विवाद करता तो वह कहते, ठहरो; जब तुम बड़े हो जाओगे, उम्र पाओगे, तब यह बात समझ में आएगी। मैंने कहा: आप उम्र की एक तारीख तय कर दें। अगर आप जीवित रहे तो मैं निवेदन करूंगा उस दिन आकर। मुझे टालने के लिए उन्होंने कह दिया होगा—कम से कम इक्कीस साल के हो जाओ।

जब मैं इक्कीस साल का हो गया। मैं पहुंचा उनके पास। मैंने कहा, कुछ भी मुझे अनुभव नहीं हो रहा जो आप बताते है। इक्कीस साल का हो गया। अब क्या इरादा है? अब कहिएगा बयालीस साल के हो जाओ। बयालीस साल का जब हो जाऊँगा तब कहना चौरासी साल के हो जाओ। बात को टालो मत। तुम्हें हुआ हो ता कहो कि हुआ है;नहीं हुआ हो तो कहो नहीं हुआ। उस दिन न जाने वह कैसी भाव दशा में थे। कोई और भक्त उनका था भी नहीं। नहीं तो उन के भक्त उन्हें हमेशा घेरे बैठे रहते थे। भक्तों के सामने और भी कठिन हो जाता। उस दिन उन्होंने आंखे बंद कर ली। उनकी आंखों में दो आंसू गिर पड़े। उस दिन मेरे मन में उनके प्रति श्रद्धा पैदा हुई।

उन्होंने कहा मुझे क्षमा करो, मैं झूठ ही बोल रहा था। मुझे भी कहां हुआ है। टालने की ही बात थी। उस दिन भी तुम छोटे थे लेकिन तुम पहचान गए थे। क्योंकि मैं तुम्हारी आंखों से देख रहा था। तुम्हारे मन में श्रद्धा पैदा नहीं हुई थी। तुम भी समझ गए थे। मैं टाल रहा हूं, कि बड़े हो जाओ। मुझे भी पता नहीं है। उम्र से इसका क्या संबंध। सिर्फ झंझट मिटाने को मैंने कहा था। मैंने कहा आज मेरे मन में आपके प्रति श्रद्धा भाव पैदा हुआ। अब तक मैं आपको निपट बेईमान समझता था।

--ओशो

रंगरेज खुदा बख्श—(प्रकरण-25)

मेरे गांव में एक मुसलमान रंगरेज रहता था। शायद अब भी हो। कोई पाँच साल पहले जब मैं गांव में गया, तब वह जिंदा था। बहुत बूढ़ा हो गया था। सौ के पास उसकी उम्र अवश्य गई होगी। जब मैं छोटा था तब भी कोई सत्तर साल का था। सामने ही उसकी दुकान थी। खुदा बख्श नाम था उसका। बड़ा प्यारा आदमी था। आंखे उसकी कमजोर हो गई थी। तो मैं उसके सामने अक्सर उसकी दुकान पर बैठ जाता था। कपड़े रंगने का ही कमा था। मैं बैठा-बैठा यही सब देखता रहता था। मुझे उसके काम करते देखने में बहुत रस आता था। एक बात से मैं हैरान होता था कि जब भी कोई स्त्रीयां आती, स्त्रीयों का ही आना जाना था। ओढ़नी, कपड़े, साँड़ियाँ रंगवाने, तो कोई कहती कि इंद्रधनुषी रंग में रंग दो। कोई कहती प्याजी, कोई कहती कि मोरपंखी। मगर वह बूढ़ा खुदा बख्श कहता कि मेरी बहू-बेटी को तो लाल, हरा,पीला, काला यहीं रंग सोहेगा। वैसे तुम जो कहो वह रंग-रंग दें।

वह मैंने बहुत बार सुना। मैंने उससे पूछा कि बाबा, अब ये लोग कहते है तो तुम इसी रंग में रंग क्यों नही देते? उसने कहा, अब तुमसे क्या कहें? मुझे दिखाई पड़ता नहीं। और चार रंग ही मुझे रंगने आते है। बहू-बेटियों से इसका कोई लेना-देना नहीं है।

तो जो भी आये, वह कहता कि जंचेगा तो हरा, मेरी बहू-बेटी को। वैसे तुम जो कहो वह रंग दें। कभी-कभी यह भी देखा कि वह बहू बेटी ज़िद्द करती, न सुनती बूढ़े की; वह कहती कि नहीं तुम तो प्याजी रंग दो। तो वह कहता, ठीक है। लेकिन जब रंग के आती ओढ़नी तो हरी, लाल, पीली......ही होती। वह उतने ही रंग जानता था।

तुम अगर हिंसा का रंग ही जानते हो, तुम हिंसा का रंग ही जानते हो, तुम अहिंसा को भी उसी रंग में रंग लोगे। तुम अगर क्रोध का रंग ही जानते हो , तुम्हारी करूणा में भी क्रोध आ जायेगा।

इस धोखे से बचना। यह पाखंड ही बड़े से बड़ा खतरा है धार्मिक यात्रा पर।

भीतर से बदलों तो बहार रंग बदल जाते है। बाहर से रंग मत बदलना, भीतर कुछ भी नहीं बदलता। क्योंकि भीतर बलशाली हो तुम। बाहर तो परिधि है। कुछ भी नहीं है।

अंतरात्मा से आचरण बदले, तो शुभ, तो साधु। आचरण से अंतरात्मा बदलने की चेष्टा करो, तो साधु नहीं, शुभ भी नहीं; साधु और शुभ होना तो दूर तुम बुद्धिमान भी नहीं।

वह काम साधु है जिसे करके पीछे पछताना न पड़े।

--ओशो

एस धम्मो सनतंत

मेरा शरीर से अलग होना--सूक्ष्म शरीर का अनुभव—(प्रकरण-26)

एक अद्‌भुत अनुभव मुझ हुआ। वह मैं कहूं। अब तक उसे कभी कहा नहीं। अचानक ख्याल आ गया तो कहता हूं। कोई 12-13 साल पहले की बात है। रातों को मैं वृक्ष के ऊपर बैठ कर ध्यान करता था। ऐसा बार-बार अनुभव हुआ कि जमीन पर बैठकर ध्यान करने पर शरीर बहुत प्रबल होता है। शरीर बनता है पृथ्वी से और पृथ्वी पर बैठकर ध्यान करने से शरीर की शक्ति बहुत प्रबल होती है। वह जो ऊँचाइयों पर, हाइट्स पर, पहाड़ों पर, और हिमालय जाने वाले योगियों की चर्चा है, वह आकारण नहीं है। बहुत वैज्ञानिक है जितनी पृथ्वी से दूरी बढ़ती है शरीर की उतना ही शरीर तत्व का प्रभाव कम होता चला जाता है। तो एक बड़े वृक्ष पर ऊपर बैठकर मैं ध्यान करने लगा। रोज रात के समय। एक दिन ध्यान में कब कितना लीन हो गया,मुझे पता ही नहीं चला और कब शरीर वृक्ष से गिर गया, वह मुझे पता नहीं। जब नीचे गिर पडा शरीर , तब मैंने चौंक कर देखा कि यह क्या हो गया। मैं तो वृक्ष पर ही था और शरीर नीचे गिर गया—कैसा हुआ अनुभव कहना बहुत मुश्किल है। मैं तो वृक्ष पर ही बैठा था और शरीर नीचे गिर गया है। सिर्फ एक रजत-रज्जु एक सिलवर कार्ड नाभि से मुझ तक जूड़ी हुई थी। एक अत्यंत चमत्कार शुभ्र रेखा। कुछ भी समझ के बाहर था कि अब क्या होगा। कैसे वापस लौटूंगा?

कितनी देर यह अवस्था रही होगी, यह पता नहीं, लेकिन अपूर्व अनुभव हुआ। शरीर के बाहर से पहली दफा देखा शरीर को और शरीर उसी दिन समाप्त हो गया। मौत उसी दिन से खत्म हो गई। क्योंकि एक और देह दिखाई पड़ रही था जो शरीर से भिन्न थी। एक और सूक्ष्म शरीर का अनुभव हुआ। कितनी देर यह रहा, कहना मुश्किल है। सुबह होते-होते दो औरतें वहां से निकली दूध लेकर किसी गांव से, और उन्होंने आकर पडा हुआ शरीर देखा। वह मैं सब देख रहा हूं, ऊपर से कि वे करीब आकर बैठ गई है। कोई मर गया लगता है। और उन्होंने सिर पर हाथ रख और एक क्षण में जैसे तीव्र आकर्षण से मैं वापस अपने शरीर में आ गया और आँख खुल गई।

तब एक दूसरा अनुभव भी हुआ। वह दूसरा अनुभव यह हुआ कि स्त्री पुरूष के शरीर में एक किमिया और केमिकल चेंज पैदा कर सकती है। और पुरूष स्त्री के शरीर में एक केमिकल चेंज पैदा कर सकता है। यह भी ख्याल हुआ कि उस स्त्री का छूना और मेरा वापस लौट आना, यह कैसे हो गया। फिर तो बहुत अनुभव हुए इस बात के और तब मुझे समझ में आया कि हिंदुस्तान में जिन तांत्रिकों ने समाधि पर और मृत्यु पर सर्वाधिक प्रयोग किए थे। उन्होंने क्यों स्त्री को अपने साथ बाँध लिया था। गहरी समाधि के प्रयोग में अगर शरीर के बाहर तेजस शरीर चला गया, सूक्ष्म शरीर चला गया तो बिना स्त्री की सहायता के पुरूष के तेजस शरीर को वापस नहीं लौटाया जा सकता है। स्त्री और पुरूष के शरीर के मिलते ही एक विद्युत वृत, एक इलेक्ट्रिक सर्किल पूरा हो जाता है। और वह जो बाहर निकल गई है चेतना,तीव्रता से भीतर वापस लौट आती है।

फिर तो छह महीने में कोई छह बार यह अनुभव हुआ निरंतर,और छह महीने में मुझे अनुभव हुआ कि मेरी उम्र कम से कम दस वर्ष कम हो गई है। कम हो गई का मतलब, अगर मैं सत्तर सात जीता तो साठ साल ही जी सकूंगा।(ओशो जी सच ही साठ साल जीए 1931, 19 जनवरी, शरीर छोड़ा-11 दिसम्बर 1990 में) छह महीने में अजीब-अजीब से अनुभव हुए। मेरे छाती के सारे बाल सफेद हो गए इन छह महीनों में, ये सब मेरी समझ के बहार हुआ। मेरे शरीर की आयु कम हो गई इस सब विद्यि के कारण।

और तब ये भी ख्याल आया की इस शरीर ओर उस शरीर के बीच के संबंध में व्याधात पड़ गया है तो उन दोनों का जो तालमेल था वह टुट गया है। तब मुझे यह भी समझ में आया कि शंकराचार्य का तैंतीस साल की उम्र में मर जाना या विवेकानंद का छत्तीस साल की उम्र में मर जाना कुछ और ही कारण रखता है। अगर इन दोनों का संबंध बहुत तीव्रता से टूट जाये तो जीना मुश्किल है। और तब मुझे ये भी ख्याल आया कि राम कृष्ण का बहुत सी बीमारी से घिरे रहना और रमण का कैंसर से मर जाने का भी कारण शारीरिक नहीं हे। उस बीच के तालमेल का टूट जाना ही कारण है।

लोग आम तौर से कहते है कि योगी का स्वास्थ अच्छा होता है। लेकिन सचाई बिलकुल उलटी है। सच्चाई आज तक यह है कि योगी हमेशा रूग्ण रहा है और कम उम्र में मरता रहा है। और उसका कुल कारण इतना है कि उन दोनों शरीरों के बीच में जो एडजेस्टमेंट चाहिए, जो ताल मेल चाहिए उसमे विध्न पड़ जाता है। जैसे ही एक बार शरीर बहार हुआ,फिर ठीक से पूरी तरह कभी भी पूरी अवस्थ में भीतर प्रविष्ट नहीं हो पाता है। लेकिन उसकी कोई जरूरत नहीं रह जाती। उसका कोई प्रयोजन नहीं रह पाता। उसकी कोई अर्थ नहीं रह जाता।

मेरे एथिक्स के प्रोफेसर और मेरे पंचानवे प्रतिशत अंक—(प्रकरण-27)

जब मैं विश्वविद्यालय में विद्यार्थी था। मैंने एथिक्स, निति शास्त्र लिया था। मैं उस विषय के प्रोफेसर के केवल एक ही लेक्चर में उपस्थित हुआ। मुझे तो विश्वास ही नहीं आ रहा था कि कोई व्यक्ति इतना पुराने विचारों का भी हो सकता है। वे सौ साल पहले जैसी बातें कर रहे थे। उन्हें जैसे कोई जानकारी ही नहीं थी। कि नीति शास्त्र में क्या-क्या परिवर्तन हो चुके है। फिर भी उस बात को में नजर अंदाज कर सकता था। वे प्रोफेसर एकदम उबाऊ आदमी थे। और जैसे कि विद्यार्थियों को बोर करने की उन्होंने कसम खा ली थी। लेकिन वह भी कोई खास बात न थी। क्योंकि मैं उस समय सौ सकता था। लेकिन इतना ही नहीं वे झुंझलाहट भी पैदा कर रहे थे। उनकी कर्कश आवाज उनके तौर-तरीके,उनका ढंग, सब बड़ी झुंझलाहट ले आने वाले थे। लेकिन उसके भी अभ्यस्त हुआ जा सकता था। लेकिन वह बहुत उलझे हुए इंसान थे। सच तो यह है मैंने कभी कोई ऐसा आदमी नहीं देखा जिसमें इतने सारे गुण एक साथ हो।

मैं उनकी कक्षा में फिर कभी दुबारा नहीं गया। निश्चित ही, वे इस बात से नाराज तो हुए होंगे। लेकिन उन्होंने कभी कुछ कहा नहीं। वे ठीक समय का इंतजार करते रहे। क्योंकि उन्हें मालूम तो था ही कि एक दिन मुझे परीक्षा में भी बैठना था।

मैं परीक्षा में बैठा। वे तो और भी चिढ़ गये, क्योंकि मेरे पंचानवे प्रतिशत अंक आये। उन्हें तो इस बात पर भरोसा ही नहीं आया।

एक दिन जब मैं युनिवर्सिटी की कैनटीन से बहार आ रहा था। और वे कैनटीन के भीतर जा रहे थे। उन्होंने मुझे पकड़ लिया। मुझे रोककर वे बोले, सुनो। तुमने यह सब कैसे मैनेज किया? तुम तो केवल मेरे एक ही लेक्चर में आए थे। और पूरे साल मैंने तुम्हारी शक्ल तक नहीं देखी। आखिर तुम पंचानवे प्रतिशत अंक पाने में सफल कैसे हुए?

मैंने कहा, ऐसा आपके पहले लेक्चर के कारण हुआ।

वे थोड़े से परेशान से दिखाई दिये। वे बोले, मेरा पहला लेक्चर? मात्र एक लेक्चर के कारण? मुझे धोखा देने की कोशिश मत करो; वे बोले, मुझे सच-सच बताओ कि आखिर बात क्या है?

मैंने कहा: आप मेरे प्रोफेसर है, अत: यह मर्यादा के अनुकूल न होगा।

वे बोल: मर्यादा की बात भूल जाओ। बस मुझे सच-सच बात बताओ। मैं बुरा नहीं मानूँगा।

मैंने कहा: मैंने तो सच बात बता दी है, लेकिन आप समझे नहीं। अगर मैं आपके पहले लेक्चर में उपस्थित न हुआ होता तो मुझे सौ प्रतिशत अंक मिले होते। आपने मुझे कन्फ्यूज कर दिया, उसी के कारण मैंने पाँच प्रतिशत अंक गंवा दिए।

पतंजलि : योग-सूत्र, भाग-चार, प्रवचन-1

--ओशो